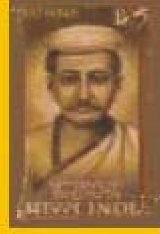
विदेह: मैथिली साहित्य आंदोलन





मानुषीमिह संस्कृताम्

वर्ष 2 मास 13 अंक 25 विदेह : सदेह : 1

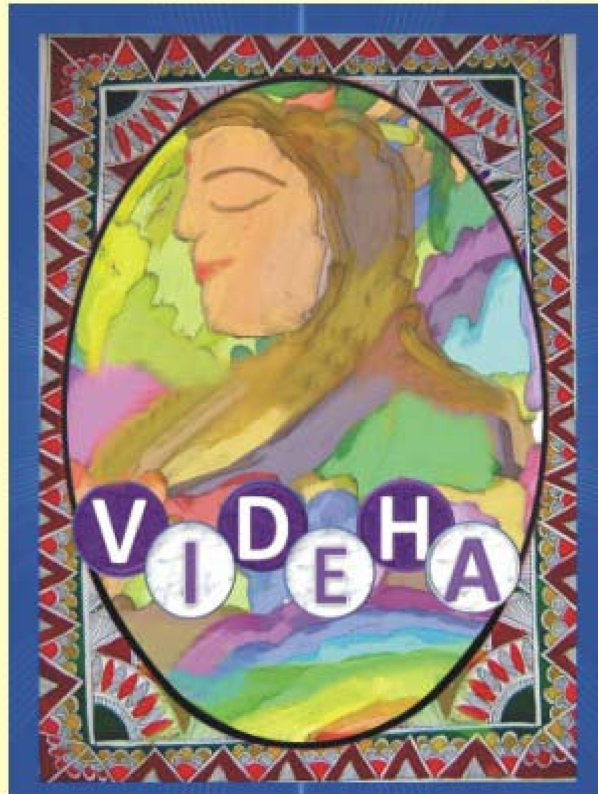
विदेह
विदेह

प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका

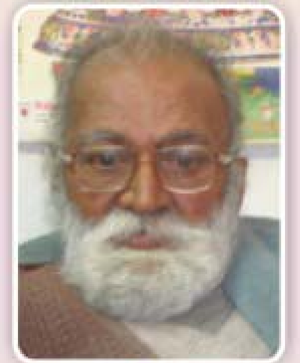
साक्षात्कार



स्व. रामाश्रय झा 'रामरंग'
01 जनवरी 2009 कैं दैहिक अन्त



साक्षात्कार



राजमोहन झा
प्रबोध सम्मान 2009

मैथिली अंग्रेजी शब्दकोश

खण्ड 1 - 16

(कंप्यूटर / इन्टरनेट / साइंस शब्दावली सहित संगणक / अन्तर्जाल / विज्ञान शब्दावली सहित)

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर
नागेन्द्र कुमार झा
पञ्जीकार विद्यानन्द झा

मैथिली अंग्रेजी शब्दकोश
(संयुक्त ISBN No. 978-81-907729-2-1)

पञ्जी प्रबंध

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर
नागेन्द्र कुमार झा
पञ्जीकार विद्यानन्द झा

शोध सम्पादन, डिजिटल इमेजिंग आ तिरहुतासँ देवनागरी लिप्यांतरण

(Combine ISBN No. 978-81-907729-6-9)

ENGLISH MAITHILI DICTIONARY

Vol. 1 - 16

(Including Computer / Internet / Science Terminology)

Authors

Gajendra Thakur
Nagendra Kumar Jha
Panjikar Vidyanand Jha

English Maithili Dictionary
(Combine ISBN No. 978-81-907729-3-8)

अनुक्रम

संपादकीय

01.01.2009

मान्यवर,

विदेहक नव अंक (वर्ष २ मास १३ अंक २५) ई पब्लिश भऽ गेल अछि। एहि हेतु लॉग ऑन करू http://www.videha.co.in ई अंक प्रिंट फॉर्ममे सेहो अहाँक समक्ष अछि। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रारम्भ हम कएने रही 2000 ई. मे अपन भेल एक्सीडेंट केर बाद, याहू जियोसिटीजपर 2000-2001 मे ढेर रास साइट मैथिलीमे बनेलहुँ मुदा ओ सभ फ्री साइट छल से किछु दिनमे अपने डिलीट भऽ जाइत छल। 5 जुलाई 2004 केँ बनाओल ''भालसरिक गाछ'' जे www.videha.com पर एखनो उपलब्ध अछि, मैथिलीक इंटरनेटपर प्रथम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। फेर आएल ''विदेह'' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका www.videha.co.in पर। ''विदेह'' देश-विदेशमे रहनिहार मैथिली भाषीक बीच विभिन्न कारणसँ लोकप्रिय भेल। ''विदेह'' मैथिलक लेल मैथिली साहित्यक नवीन आन्दोलनक प्रारम्भ कएने अछि। प्रिंट फॉर्ममे, ऑडियो-विजुअल आ सूचनाक सभटा नवीनतम तकनीक द्वारा साहित्यक आदान-प्रदानक लेखकसँ पाठक धरि करबामे हमरा सभ जुटल छी। नीक साहित्यकेँ सेहो सभ फॉरमपर प्रचार चाही, लोकसँ आ माटिसँ स्नेह चाही। ''विदेह'' एहि कुप्रचारकेँ तोड़ि देलक, जे मैथिलीमे लेखक आ पाठक एके छथि।कथा, महाकाव्य,नाटक, एकाङ्की आ उपन्यासक संग, कला-चित्रकला, संगीत, पाबनि-तिहार, मिथिलाक-तीर्थ,मिथिला-रत्न, मिथिलाक-खोज आ सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक समस्यापर सारगर्भित मनन। ''विदेह'' मे संस्कृत आ इंग्लिश कॉलम सेहो देल गेल, कारण ई ई-पत्रिका मैथिलक लेल अछि, मैथिली शिक्षाक प्रारम्भ कएल गेल संस्कृत शिक्षाक संग। रचना लेखन आ शोध-प्रबंधक संग पञ्जी आ मैथिली-इंग्लिश कोषक डेटाबेस देखिते-देखिते ठाढ़ भए गेल। इंटरनेट पर ई-प्रकाशित करबाक उद्देश्य छल एकटा एहन फॉरम केर स्थापना जाहिमे लेखक आ पाठकक बीच एकटा एहन माध्यम होअए जे कतहुसँ चौबीसो घंटा आ सातो दिन उपलब्ध होए। जाहिमे प्रकाशनक नियमितता होए आ जाहिसँ वितरण केर समस्या आ भौगोलिक दूरीक अंत भऽ जाय। फेर सूचना-प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे क्रांतिक फलस्वरूप एकटा नव पाठक आ लेखक वर्गक हेतु, पुरान पाठक आ लेखकक संग, फॉरम प्रदान कएनाइ सेहो एकर उद्देश्य छल। एहि हेतु दू टा काज भेल। नव अंकक संग पुरान अंक सेहो देल जा रहल अछि। पुरान अंक pdf स्वरूपमे देवनागरी, तिरहुता वा ब्रेलमे डाउनलोड कएल जा सकैत अछि आ जतए इंटरनेटक स्पीड कम छैक वा इंटरनेट महग छैक ओतहु ग्राहक बड्ड कम समयमे 'विदेह' केर पुरान अंकक फाइल डाउनलोड कए अपन कंप्युटरमे सुरक्षित राखि सकैत छथि आ अपना सुविधानुसारे एकरा पढ़ि सकैत छथि। विदेह भाषापाक रचनालेखन स्तंभ मे MS-SQL सर्वर आधारित मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली सर्चेबल ऑनलाइन डिक्शनरी सेहो अछि।

एहि अंकसँ डॉ शम्भु कुमार सिंहक आलेख प्रतियोगी परेक्षार्थीक लेल शुरु कएल गेल अछि।

रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्ति: एहि महत्वपूर्ण नाट्यवृत्तिक संचालनक भार मैलोरंग केँ देल गेल। प्रमीला झा मेमोरियल ट्रस्ट,घोंघौर आ ओकर प्रबंध न्यासी श्री श्रीनारायण झा द्वारा।

रंगकर्मी प्रमीला झा नाट्यवृत्तिक स्थापना प्रथम महिला बाल नाट्य निर्देशक प्रमीला झाक स्मृतिमे भेल अछि। प्रमीला जी जीवन पर्यंत भंगिमा, पटना संग जूड़ि बाल रंगकर्म के बढ़ावा दैत रहलीह। प्रमीलाजीक स्मृति मे स्थापित प्रमीला झा मेमोरियल ट्रस्ट, घोंघौर हुनकर बाल रंगमंच मे अविस्मरणीय योगदानक लेल एहि नाट्यवृत्तिक स्थापना केलक अछि। एकर मूल मे मैथिली रंगमंच पर महिला रंगकर्मीक प्रोत्साहन संग हुनकर सामाजिक सम्मान अछि। एहि नाट्यवृत्तिक संचालनक भार ट्रस्ट द्वारा लोक कलाक लेल समर्पित संस्था मैलोरंग के प्रदान कयल गेल अछि। वर्ष 2006 सँ नियमित रूप सँ ई नाट्यवृत्ति ज्योति वत्स (दिल्ली), रंजू झा (जनकपुर), स्वाति सिंह (पटना), प्रियंका झा (पटना), वंदना डे (सहरसा) के प्रदान कयल गेल छनि।

वर्ष 2008क लेल समूचा मिथिला (भारत+नेपाल) मे चालीस गणमान्य रंगकर्मी/संस्कृतिकर्मी केँ नामक अनुशंसाक लेल पत्र पठाओल गेल छलनि। ओही अनुशंसाक आधार पर प्रथम: मधुमिता श्रीवास्तव (मधुबनी), द्वितीय: वंदना ठाकुर (कोलकाता), तृतीय: नेहा वर्मा (दिल्ली), आ चतूर्थ : विजया लक्ष्मी शिवानी (पटना) अयलीह। किछु पारिवारिक कारण सँ वंदना जी एहि बेर वितरण समारोह मे अयबा सँ असमर्थ भ' गेलीह तेँ ई क्रम बदलि गेल आ वंदना जीक स्थान अगिला बेरक लेल सुरक्षित राखल गेल अछि।

तृतीय: विजया लक्ष्मी शिवानी : पटना

शिवानीक जन्म दरभंगाक रसियाड़ी गाम मे भेलनि। ई पछिला तीन साल सँ लगातार मैथिली रंगमंच सँ जुड़ल छथि। शिवानी अरिपन, भंगिमा सन चिर-परिचित रंग संस्था सँ जुडल छथि। एहि बीच अहाँ नदी गोंगियायल जाय, मिनाक्षी, घुघ्घू, आगि धधकि रहल अछि, से कोना हेतै ?, अलख निरंजन आदि महत्वपूर्ण नाटक मे अभिनय करैत अपन नीक छवि बनओलन्हि अछि। मनोज मनुज, कौशल किशोर दास आ अरविन्द अक्कू जीक निर्देशन मे काज करैत शिवानीक इच्छा छनि जे वरिष्ठ रंग निर्देशक कुणाल जीक निर्देशन मे सेहो

नाटक करी। वरिष्ठ रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र जी सन रंगकर्मी बनबाक हिनक मोन छनि। विजया लक्ष्मी शिवानीजीक कहब छनि जे-समकालीन समस्या मैथिली नाटक मे अएबाक चाही जकर एखन तक कमी अछि। पारिजात हरण हिनकर प्रिय नाटक छनि आ शिवानी नब तुरिया कँ कहए चाहैत छथि जे इमानदारी सँ रंगकर्म करबाक चाही।

द्वितीय: नेहा वर्मा: नई दिल्ली

नेहाक जन्म बेगूसरायक न्यू चाणक्य नगर मे भेलनि। ई बच्चे सँ रंगमंच सँ जूड़ल रहलीह अछि। नवतरंग, इप्टा, यात्रीक संग कार्य करैत एखन मैलोरंग दिल्ली सँ रंगकर्म कए रहल छथि। नेहा अनिल पतंग, परवेज़ यूशुफ, संतोष राणा, विजय सिंह पाल, अभिषेक, मनोज मधुकर आ प्रकाश झाक निर्देशन मे नाटक केलीह अछि। हिनका द्वारा कएल गेल प्रमुख नाटक अछि सामा-चकेवा, जट-जटिन, डोम कछ, गोरखधंधा, काठक लोक, कमल मुखी कनिया, एक छल राजा आदि। आगू लगातार मैथिली रंगमंच सँ जुड़ल रहबाक हिनकर इच्छा छनि। हिनकर प्रिय नाटककार आ निर्देशक महेन्द्र मलंगिया छथिन आ रंजू झा (जनकपुर) क अभिनय हिनका प्रभावित करैत छनि। काठक लोक प्रिय नाटक आ प्रगतिशील सोचक संग बेसी युवा कँ होएबाक कारण मैलोरंग नेहाक मनपसंद रंग संस्था छनि। अपन आत्मसमर्पण आ संस्कारक संग रंगकर्म सँ जुड़बाक हिनकर आग्रह छनि नबका कलाकारक लेल। नेहा सी. सी. आर. टी. द्वारा जूनियर स्कॉलर्शिप प्राप्त कएने छथि। एखन राष्ट्रीय कथक केन्द्र सँ कथक मे पोस्ट डिप्लोमाक संग खैरागढ़ विश्वविद्यालय सँ एम. ए. क' रहल छथि।

प्रथम:
मधुमिता श्रीवास्तव: मधुबनी

मधुमिताक जन्म मधुबनीक सूरत गंज मुहल्लामे भेलनि। बचपने सँ हिनका नृत्य आकर्षित करैत छलनि। विगत दस साल सँ ई मैथिली रंगमंच पर सक्रिय छथि। मधुबनीक इप्टा संग रंगकर्म करैत अहाँ इप्टाक राज्य आ राष्ट्रीय स्तरक महोत्सव मे सेहो शिरकत कएने छी संगहि अहाँ सॉंग आ ड्रामा डिभीजन संग सेहो संबद्ध छी। मुकाभिनयक लेल अहाँ इंटर कॉलेज यूथ फेस्टीवल-03 मे तेसर आ वर्ष 06 मे लोक नृत्यक लेल पहील स्थान प्राप्त कएने छी। अहाँ ओकरा आङनक बारहमासा, ओरिजनल काम, टूटल तागक एकटा ओर, छुतहा घैल, गोनूक गबाह, दुलहा पागल भ' गेलै, बिजलिया भौजी, बिरजू-बिलटू संग कतेको हिन्दीक नाटक कएने छी। मंचीय नाटक संग नुक्कड़ नाटक मे सेहो मधुमिता बढ़ि चढ़ि क' भाग लैत रहलीह अछि। झिझिया, झड़नी, जट जटिन डोम कछ एहन कतेको लोक नृत्य, एकल अभिनय, फिल्म सिरियल आदि मे अभिनय क'चुकल मधुमिता नेहरू युवा केन्द्र, एस.एस.बी संग कतेको संस्था सँ सम्मानित कयल गेल छथि।

(आर्काइव- पछिला अंक सभक संपादकीय केर संक्षिप्त अंश)

01.01.2008

एहि प्रथमांक कँ प्रस्तुत करैत हम हर्षित छी। एहि मे मिथिला पेंटिंग आ संस्कृत शिक्षासँ संबंधित समग्री समयाभावक कारणे नहि देल जा सकल। पाठक एहि संबंधित लेख ggajendra@yahoo.co.in कँ अटैचमेण्टक रूपमे पठा सकैत छथि।

15.01.2008

एहि दोसर अंकमे 1. मिथिला पेंटिंग, 2. रचना लिखबासँ पहिने छन्द,संस्कृत-मैथिलीक ज्ञान आ' अन्यान्य शिक्षा 3. संस्कृत शिक्षाक आ' 4. 'बालानाम् कृते' नामसँ छोट बच्चा संबंधित सामग्री सम्मिलित कएल जा' रहल अछि। जे मेल सभ प्राप्त भेल ताहि मे oldmani@umainc.com,iipkarna@yahoo.com,jyotiprakash.lal@gmail.comआ'bibhutithakur2000@yahoo.com केर मेल उत्साहवर्द्धक छल आ एहिमे किछु महत्त्वपूर्ण सुझाव सेहो प्राप्त भेल। ओहि आधार पर उपरोक्त लिखित चारि स्तंभक अतिरिक्त 5. पंजी-प्रबंध 6. संस्कृत आ' मिथिला संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासंगिकता आ' 7. Computers, softwares, interfacing of the old & new (restoring old photographs, songs on disks, tapes, etc) पर सामग्रीक प्रारम्भ कए देल गेल अछि।अगला अंकसँ संगीत-शिक्षाक आरंभ कएल जायत।पाठक एहि सभसँ संबंधित आ अन्यान्य रचना सभ ggajendra@yahoo.co.in कँ अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .txt किंवा .pdf फॉर्मेटमे पठाए सकैत छथि। पछिला साल तीन महिना मीराम्बिका आ मदर इंटरनेशनलक शिक्षक-शिक्षिकाकँ संस्कृत संभाषणक शिक्षा देबाक हेतु श्री अरविन्द आश्रम,नव देहली मे हमरा बजाओल गेल छल। ओहि क्रममे जे नोट बनओलहुँ तकरे संस्कृत शिक्षाक अंतर्गत हम दए रहल छी।

01.02.2008

विदेहक एहि अंककँ प्रस्तुत करैत हम हर्षित छी।।एहि अंकसँ संगीत-शिक्षाक आरंभ कएल जा रहल अछि।

विकीपीडिया पर मैथिली पर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल,कारण मैथिलीक विकीपीडियाक स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही,आ' सूचित करैत हर्षित छी जे 27.01.2008 कँ भाषाकँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे,विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपँ कार्य करथि तखने योजनाकँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक। नीचाँ लिखल लिंक पर जाय एडिट कए एहि प्रोजेक्टमे अहाँ सभ सहयोग करब, से आशा अछि। पछिला अंकमे देवनागरी कोना लिखू, एहि पर हम लेख लिखने रही। इंगलिश कीबोर्ड पर ओहि तरहेँ लिखने विकीमे सेहो मैथिली लिखि सकैत छी। एम. गेरार्डक माध्यमसँ श्री अंशुमन पाण्डेयक, जिनकर मैथिलीक युनीकोडमे स्थानक आवेदन लंबित अछि, अनुरोध भेटल छल, ओ' सूचना मँगलन्हि

जाहि सँ स्पष्ट रूपसँ बंगला लिपि आ' मैथिली लिपिक मध्य अंतर ज्ञात भए सकए। ई सूचना हम एम. गेरार्डक माध्यमसँ हुनका पठा देलिअन्हि। विकीमे पूर्ण स्वीकृतिक हेतु एहि लिंक सभ पर राखल प्रोजेक्टकँ आगाँ बढ़ाऊ।

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

अपनेक प्रतिक्रिया आ' रचनाक प्रतीक्षा अछि।

15.02.2008

विश्वक कोन-कोनसँ ई-मेल प्राप्त भेल, आ' हम आह्लादित भए गेल छी। ई पत्रिका बिना कोनो विलंबक सालक- साल चलैत रहत, से हम अपने लोकनिकँ विश्वास दैत छी, आ' ओ' आबए बला काल सिद्ध करत।

चित्रक पौतीकँ दू भाग कए देल गेल अछि, मिथिलाक खोजमे चित्रकलाक संग पुरातत्त्वक वस्तु सभक आ' दर्शनीय स्थान सभक संकलन अछि। मिथिला रत्नमे ऐतिहासिक आ' वर्त्तमान महापुरुषक चित्रक प्रदर्शनी अछि। एहि संकलनकँ एहिना सहयोग दए बढ़ाऊ। मैथिलीमे एनीमेशनक घोर अभाव अछि, आ' जँ कही जे अछिये नहि, तँ झूठ नहि होएत। संगीत आ' संस्कृत शिक्षा सेहो ध्वन्यात्मक सामग्रीक बिना अपूर्ण लगैत अछि। अहू दुनू दिश हमर प्रयास शीघ्रे जायत। हमर इच्छा अछि, जे बालानां कृतेमे देल गेल खिस्साकँ एनीमेट करी।

श्री गंगेश गुंजनक ईमेल आ' मार्ग निर्देशन प्राप्त भेल, ओ' अपन रचना पठएबाक आश्वासन सेहो देलन्हि अछि। विद्यानंद जी पञ्जीकार जी अपन निबंध पठओने छथि, से आब बुझना जाइत अछि जे रचनाक भरमार लागए बला अछि। सभटा रचना उच्चस्तरीय रहत आ' पत्रिका पाक्षिक आधार पर नियमित चलैथ रहत से आशा करैत छी।

साइटक खोज सर्च इंजन पर आसानीसँ होआए ताहि हेतु किछु विशेष प्रयास कएल गेल अछि। एहि संबंधमे कोनो तकनीकी सुझाव जँ अपनेक समक्ष होआए, तँ से आमंत्रित अछि।

अपनेक रचनाक आ' प्रतिक्रियाक प्रतीक्षामे।

01.03.08

पछिला पक्षमे हम दरभंगा गेल छलहुँ, अपन भतीजीक विवाहमे। ओतए मिथिला रिसर्च इंस्टीट्युट आ' संस्कृत विश्वविद्यालयक भ्रमण कएलहुँ। सर्वश्री भीमनाथ झा, मैथिलीपुत्र प्रदीप, रघुवीर मोची (अध्यक्ष, मैथिली अकादमी), विश्वनाथ झा(प्रतिकुलपति का. सि. दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय), देवनारायण यादव (अध्यक्ष, मिथिला रिसर्च इंस्टीट्युट) लोकनिक दर्शनक सुअवसर प्राप्त भेल। फेर बिदेश्वरस्थानसँ आँगा गौरीशंकर स्थान (हैंठी बाली) गेलहुँ, आ' ओतय पालवंशक मूर्त्ति आ' ओहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल अभिलेखक चित्र खिंचलहुँ (फोटो मिथिलाक खोज स्तंभमे देखू)। ई मूर्ति भव्य अछि, आ' 1500 वर्ष पूर्व मिथिलाक्षरक प्रभुता देखबैत अछि। एहि पर शोध लेख आँगाक कोनो अंकमे देल जायत। मिथिलाक इतिहासमे एहि स्थलकँ आइसँ पहिने स्थान नहि देल जा' सकल छल, आ' ईहो तथ्य अछि जे इतिहासक विद्वान श्री डी.एन. झा एही गामक छथि, ओना हैठी बाली हमर मामा गाम सेहो छी।

15.03.2008

विदेह द्वारा किछु पुरान अलभ्य किताबक डिजिटलाइजेशनक कॉर्पोरा सेहो शुरू कएल गेल अछि। पञ्जीक स्कैनिंग आ' सर्च करबा योग्य डिक्शनरी जाहिमे पाठक नव-नव शब्द जोड़ि सकताह केर आधार किछु मनोयोगी विदेह कार्यकर्त्ता सभक द्वार शुरू भेल अछि। ई सभटा सभ केओ नि:शुल्क कए रहल छथि आ' अपन मातृभाषाक आ' मातृभूमिक अनुरागी होयबाक प्रमाण दए रहल छथि।

01.04.08

रचना लिखबासँ पहिने. स्तंभमे मैथिली अकादमी द्वारा निर्धारित भाषाक अंकन कएल गेल अछि,एहिमे विशेष वृद्धि कएल गेल अछि। श्री उदय नारायण सिंह नचिकेता, निदेशक, केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर केर मेल प्राप्त भेल आ' ओ' लिखलन्हि जे ओ' एकरा डॉ. श्री बी मल्लिकार्जुनकँ अग्रसारित कए देलन्हि, जे केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूरमे भाषा प्रौद्योगिकी विभागक अध्यक्ष छथि। श्री मल्लिकार्जुनजीक ई-मेल सेहो प्राप्त भेल आ' ओ' लिखलन्हि अछि, जे एकरा कमेटीक समक्ष राखल जायत। बी. मल्लिकार्जुन मैथिली स्टाइल मनुअल बनएबाक कार्यकँ आगाँ बढ़ा रहल छथि।

प्रीति द्वारा कला आ' चित्रकला स्तंभ चित्रित कएल गेल अछि।

मिथिलाक रत्नमे साहित्यकारक अतिरिक्त खेलकूद आ' अन्यान्य विधासँ संबंधित (संगीत, फिल्म, पत्रकारिता, इतिहास, संस्कृत आ' अंग्रेजी, अर्थशास्त्री, डिप्लोमेट, राजनीतिज्ञ आदि) मिथिलाक विभूतिक चित्र प्रदर्शित अछि। वेबसाइट खोलला अनन्तर विद्यापतिक 'बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे'क वाराणसीक गंगातट पर शहनाइ पर भारत रत्न बिस्मिल्लाह खान द्वारा बजाओल, आ' तबला पर किसन महाराज आ' वायलिन पर श्रीमति एन. राजम द्वारा बजाओल संगीत बाजि उठैत अछि। संपर्क_खोज स्तंभ पर मिथिला आ' मैथिलीक साइट सभक संकलन/लिंक देल गेल अछि।विदेहक अपन सर्च इंजिनसँ विदेहक नव-पुरान अंककँ ताकल जा' सकैत अछि। दोसर सर्च इंजिनसँ मैथिलीक विशेष संदर्भमे वेबकँ ताकि सकैत छी। पुरान किताब सभक डिजिटल इमेजिंग विदेह कॉर्पोराक अंतर्गत करबाओल जा' रहल अछि। वेब सर्चेबल डिक्शनरी जाहिमे पाठक नव-नव

शब्द जोडि सकताह केर कार्य सेहो आरंभ कएल गेल अछि। मैथिलीमे बालानांकृतेक एनीमेशन सेहो शुरू कए देल गेल अछि। पजीक मिथिलाक्षरक पत्रक सेहो स्कैनिग शुरू भ' गेल अछि। ई सभ शीघ्र आर्काइवक अंतर्गत देल जायत। विदेहक पुरान अंक सामान्य pdf फॉर्मेटमे आर्काइवक अंतर्गत राखल गेल अछि। पाठक पाक्षिक पत्रिकाक pdf संस्करण डाउनलोड सेहो कए सकैत छथि। प्रथम पृष्ठ पर देवनागरी टाइप करबाक हेतु किछु सहयोगी लिंक देल गेल अछि। एहि तरहक लिंक पर ऑनलाइन टाइप क' कॉपी क' ई-मेल किंवा वर्ड डॉक्युमेंटमे पेस्ट क' सकैत छी।

15.04.2008

एहि अंकमे नचिकेता अपन 25 सालक चुप्पी तोड़ि नो एंट्री: मा प्रविश नाटक मैथिलीक पाठकक समक्ष विदेह ई-पत्रिकाक माध्यमसँ पहुँचा रहल छथि। धारावाहिक रूँपे ई नाटक विदेहमे ई-प्रकाशित भ' रहल अछि।

श्री गंगेश गुंजन जीक वैचारिक मंथन एहि बेर पाठकक समक्ष अछि। अगिला अंकसँ पाठक हुनकर कविताक वैचारिक रस ल' सकताह। बालानां कृतेमे ज्योति पँजियारक लोकगाथा प्रस्तुत कएल गेल अछि।

01.05.2008

13 मई केँ एहि बेर जानकी नवमी अछि। एहि अवसर पर एहिसँ संबंधित निबंध देल जा' रहल अछि। एहि निबंधक लेखिका छथि श्रीमति नूतन झा।

बालानां कृतेमे दानवीर दधीचीक वैदिक स्वरूप प्रस्तुत कएल गेल अछि, अंतमे सूत्रधारसँ ईहो कहबएलहुँ जे कोना बादमे तथाकथित पंडित लोकनि ओहि कथाक बंटाधार कए देलन्हि।

मिथिला रत्नमे बैकग्राउन्ड संगीत सेहो अछि, आ' ई अछि विश्वक प्रथम राष्ट्रभक्ति गीत (शुक्ल यजुर्वेद अध्याय 22, मंत्र 22) जकरा मिथिलामे दूर्वाक्षत आशीश मंत्र सेहो कहल जाइत अछि।

'विदेह' ई पत्रिकाक प्रचार सर्च इंजिन द्वारा, गूगल आ' याहू ग्रुप द्वारा, वर्डप्रेस आ' ब्लॉगस्पॉटमे देलगेल ब्लॉग द्वारा, फेसबुक, आउटलूक, माय स्पेस, ओरकुट आ' चिट्ठाजगतक माध्यमसँ कएल गेल। मुदा जखन डाटा देखलहुँ तँ आधसँ बेशी पाठक सोझे http://www.videha.co.in पता टाइप कए एहि ई-पत्रिकाकेँ पढ़लन्हि।

15.05.2008

३ जूनकेँ एहि बेर वट सावित्री अछि। एहि अवसर पर एहिसँ संबंधित निबंध देल जा' रहल अछि। एहि निबंधक लेखिका छथि श्रीमति नूतन झा।

बालानां कृतेमे बगियाक गाछ शीर्षक लोककथाकेँ ज्योतिजीक चित्रसँ सुसज्जित कएल गेल अछि।

श्री गंगेश गुंजन जीक कविता पाठकक समक्ष अछि।

विश्वक प्रथम राष्ट्रभक्ति गीत (शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२) जकरा मिथिलामे दूर्वाक्षत आशीश मंत्र सेहो कहल जाइत अछि, एकर अर्थ विदेह आर्काइव स्तंभमे अभिनव रूपमे देल गेल अछि, आ' ग्रिफिथक देल अर्थसँ एकर भिन्नता देखाओल गेल अछि। बैकग्राउन्ड संगीत विद्यापतिक बड़ सुख सार तँ अछिये पहिनेसँ।

नचिकेताजीक नाटक नो एंट्री: मा प्रविश दोसर कल्लोलक दोसर खेप ई-प्रकाशित भ' रहल अछि। गंगेश गुंजन जीक कविता आ विस्मृत कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि।

एहिमे कोनो संदेह नहि जे २०म शताब्दीमे जतेक मिथिला विभूति भेलाह ओहिमे श्री रामाश्रय झा 'रामरंग' सर्वोपरि छथि। विदेह हेतु हुनकर पठाओल संदेशक आधार पर हुनक जीवनी आ कृतिकेँ विदेहक संगीत शिक्षा स्तंभमे पाठकक समक्ष अनबामे हमरा सभ गर्व अनुभव कए रहल छी।

01.06.2008

गंगेश गुंजन जीक कथा आ विस्मृत कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर सेहो हैकू लिखलन्हि, मुदा मैथिलीमे जापानी पद्य विधाक आधार पर "विदेह" प्रस्तुत कए रहल अछि ई विधा।

15.06.2008



२७ जून २००८ केँ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक सभागारमे मैथिली कवि सम्मेलनमे अएबाक नोत विदितजी द्वारा भेटल, से ओतए साँझ छह बजे पहुँचलहुँ। हॉलक सभटा कुर्सी भरल छल, हम आ कैमरामेन दू गोटे छलहुँ।



नजरि घुमेलहुँ तँ एकटा कुर्सी खाली छल, से कैमरामेनकेँ विदा कए स्वयं कैमरा लए ओतए बैसि गेलहुँ।



अमरनाथ माइक पकड़ि घोषणा उद्घोषणा कए रहल छलाह, लागल जेना अशोक चक्रधर हिन्दी छोड़ि मैथिली बाजि रहल छथि। सभसँ पहिने संजीव तमन्ना जीकेँ काव्य-पाठक लेल बजाओल गेल। ओ "पीयर पोस्टकार्ड" शीर्षक कविताक पाठ कएलन्हि। ताहि पर उद्घोषक टीप देलखिन्ह जे एहि मोबाइलक युगमे पोस्टकार्डक एतेक चरचा पर डाक विभाग हुनका धन्यवाद देतन्हि। फेर उद्घोषणा

भेल जे पंकज पराशरजी अपन कविताक पाठ करताह, मुदा ओ तावत धरि पहुँचल नहि छलाह, मुदा वीडियोमे बादमे देखलहुँ जे ओ आयल रहथि, मुदा प्रायः कतहु एम्हर-ओम्हर चलि गेल रहथि।



से रमण कुमार सिंहजी कें बजाओल गेल। ओल्ड होममे वृद्ध आ एना किएक होइत छैक लोक शीर्षक पद्य सुनओलन्हि रमण जी।

फेर श्रीमति सुनीता झाकेँ ब्रजेन्द्र त्रिपाठी जीक विशेष अनुरोध पर बजाओल गेल।



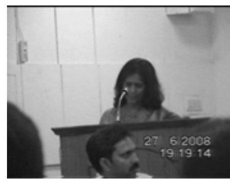
ओ अपन कविता निवेदन मिथिला आ भारत देश महान पर सुनओलन्हि। संगे ईहो कहलीह जे ई प्रथम अवसर छन्हि हुनका लेल मंच पर पद्य पाठ करबाक।



फेर मंजर सुलेमान पढ़लन्हि, मोन पड़ैत अछि गाम, आ अविनाशजी पढ़लन्हि विद्यापति स्मृति



समारोहक उपलक्षमे दू टा कविता- ई हुनकर ब्लॉग पर सेहो बहुत दिनसँ अछि।



कामिनी कामायनीकेँ गाम मोन पड़लन्हि आ विस्थापित लोक सेहो।



बिलट पासवान 'विहंगम' जी जौँ पुछू तँ सभसँ बेशी प्रभावी रहथि, कारण ओ देखि कए नहि पढ़लन्हि।



तावत पकज पराशर जी आबि गेल छलाह, आ ओ ''समयकेँ अकानैत'' जे हुनकर पहिल पद्य संग्रह छन्हि, सँ ''हम परिनाम निरासा' शीर्षक पद्य पढ़लन्हि। हुनका एक बेर फेर आबय पड़लन्हि विहंगमजीक विशेष अनुरोध पर ''महापात्र'' शीर्षक रचना पढ़बाक लेल। 'विदेह' केर एहि अंकसँ 'समय कें अकानैत' पोथीक समीक्षा/ परिचय देल जा रहल अछि।



धीरेन्द्र कुमार मिश्र महोदय एकटा पद्य पढ़लन्हि, दोसर पद्यक सस्वर पाठ करबाक अनुमति माँगि रहल छलाह, मुदा उद्घोषक जी समयाभावक कारणेँ से अनुमति नहि देलखिन्ह आ प्रभात झा, मध्य प्रदेशसँ राज्यसभा सांसद, मुख्य अतिथिकेँ पद्य पाठक लेल आमंत्रण देलन्हि। मुदा ओ तावत धरि पहुँचल नहि छलाह, बादमे जखन पहुँचलाह तँ कहलखिन्ह जे ओ कविता नहि लिखैत छथि, हिन्दी गद्य लिखैत छथि। हुनका एतए अएबाक छलन्हि दू टा किताबक लोकार्पण करबाक हेतु, मैथिलीमे ''इतिहास'' दर्शन- लेखिका वीणा ठाकुर आ हिन्दीमे के.बी. प्रसादक ''दुर्योधन के रहते कहीं महाभारत रुका है'' पद्य संग्रहक।



फेर देवशंकर नवीन जी अएलाह। ओ हिन्दी, मैथिली आ अन्य भाषाक कवि सम्मेलनक चर्च कएलन्हि आ कहलन्हि जे एतेक बेशी मात्रामे श्रोता-दर्शकक उपस्थिति विलक्षण अछि, कारण पहिने जे ओ विभिन्न प्रदेशमे एहि तरहक आयोजन कएने रहथि ओतए संस्था अपन दस टा लोककेँ बैसा कए कुरसी भड़ैत छल। प्रभात झा जाधरि पहुँचितथि तावत रमण कुमार सिंह आ अविनाश जीकेँ दोसर राउन्डक लेल बजाओल गेल।



फेर विदित जी पद्य पाठक लेल पहुँचलाह, मुदा यावत शुरू करितथि तावत प्रभात झाजी आबि गेलाह से ओ उतरि कए हुनकर स्वागत कएलन्हि। विदित जी मैथिलीमे दैनिक 'मैथिली समाद' केर कोलकातासँ



ताराकान्त झा द्वारा अगस्तसँ शुरू कएल जएबाक शुभ सूचना सेहो देलन्हि आ पद्य पाठ सेहो कएलन्हि।



फेर प्रभात जी अपन संस्मरण सुनओलन्हि आ दुनू पुस्तकक लोपार्पण भेल।







चित्रकार सचिन्द्रनाथ झा द्वारा श्री प्रभात झा आ श्री विदित जीकेँ विद्यापतिक चित्र प्रदान कएल गेल, एहि चित्रमे बैकग्राउन्डमे मिथिला चित्रकलाक योग सेहो देल गेल छल। विदित जी प्रसन्न छलाह एहि सफल आयोजनसँ, जखन हम बधाइ देलियन्हि तँ कहलन्हि जे मैथिली आब रोड पर आयत, कोठलीमे नहि रहत।

01.07.2008

श्री मौन जी, मैथिलीपुत्र प्रदीप, श्री सुभाषचन्द्र यादव, श्री पालन झा आ श्री आद्याचरण झा जीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

श्री मायानन्द जीक इन्टरव्यू लेलन्हि श्री डॉ. शिवप्रसाद यादव। तकर पहिल भाग सेहो प्रस्तुत अछि।

शेष स्थायी स्तंभ यथावत अछि।

15.07.2008

एहि अंकमे नचिकेताजीक नाटक नो एंट्रीः मा प्रविश अन्तिम खेप ई-प्रकाशित भ' रहल अछि। गंगेश गुंजन जीक पद्य आ विस्मृत कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि। श्री मौन जी, मैथिलीपुत्र प्रदीप, श्री पालन झा श्री पंकज पराशर आ परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर सिंहजीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

श्री मायानन्द जीक इन्टरव्यू लेलन्हि श्री डॉ. शिवप्रसाद यादव। तकर दोसर भाग सेहो प्रस्तुत अछि।

नेपाल १ टी.वीक मैथिली कार्यक्रमक विषयमे विवरण दए रहल छथि जितेन्द्रजी आ भक्ति-गीत प्रस्तुत कएने छथि जितमोहनजी।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

01.08.2008

एहि अंकसँ श्री गगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत शुरू भए रहल अछि, "विदेह" मे पहिल खेप पढ़ू। विस्मृत कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि। श्री मौन जी, श्री पंकज पराशर, श्री सुशान्त, प्रकाश, ज्योतिप्रकाश लाल, जितमोहन, विनीत उत्पल शैलेन्द्र मोहन झा आ परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर सिंहजीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।एहि अंकमे नचिकेताजीक टटका लिखल कविता सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि।

मैथिली रिपोर्ताजक नव विधाक प्रारम्भ कए रहल छथि पुण्यधाम जनकपुरधामक युवा पत्रकार श्री जितेन्द्र झा।

श्री हरिमोहन झाजीक सम्पूर्ण रचना संसारक अवलोकन सेहो शुरू भए रहल अछि।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

15.08.2008

मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ आइ काल्हि जूझि रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९७८-७९ केर बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाऊ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भए गेल। मुदा ओहि क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नहि अबैत अछि, कहियो अबितो रहए तँ मात्र ई दुष्प्रचार जे ई सभटा पानि नेपालसँ छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। ओतुक्का लोक एहि नव संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेलाह। हमरा मोन अछि ओ दृश्य जखन कुशेश्वरस्थानसँ महिषी उग्रतारास्थान जएबाक लेल हमरा बाढ़िक समयमे अएबाक लेल कहल गेल छल कारण ओहि समयमे नाओसँ गेनाइ सरल अछि, ई कहल गेल। रुख समयमे खत्ता, चभच्चामे नाओ नहि चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तँ पुछू जुनि। फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन जेना तेना कए ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक। कौशिकी महारानीक एहि बेरक प्रकोप ओहि दुष्प्रचारकेँ खतम कए पाओत आकि नहि से नहि जानि!

पहिने हमरा सभ ई देखी जे कोशी आ गंडकपर जे दू टा बैराज नेपालमे अछि ओकर नियन्त्रण ककरा लग अछि। ई नियन्त्रण अछि बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक लग आ एतए बिहार सरकारक अभियन्तागणक नियन्त्रण छन्हि। पानि छोड़बाक निर्णय बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक हाथमे अछि। नेपालक हाथमे पानि छोड़बाक अधिकार तखन आएत जखन ओतुक्का आन धार पर बान्ह/ छहर बनत, मुदा से ५० सालसँ ऊपर भेलाक बादो दुनू देशक बीचमे कोनो सहमतिक अछैत सम्भव नहि भए सकल। किएक?

सामयिक घटनाक्रम- कोशीपर भीमनगर बैरेज, कुशहा, नेपालमे अछि। १९५८ मे बनल एहि छहरक जीवन ३० बरख निर्धारित छल, जे १९८८ मे बीति गेल। दुनू देशक बीचमे कोनो सहमति किएक नहि बनि पाओल? छहरक बीचमे जे रेत जमा भए जाइत अछि, तकरा सभ साल हटाओल जाइत अछि। कारण ई नहि कएलासँ ओकर बीचमे ऊंचाई बढ़ैत जाएत, तखन सभ साल बान्धक ऊँचाई बढ़ाबए पड़त। एहि साल ई कार्य समयसँ किएक नहि शुरू भेल? फेर शुरू भेल बरखा, १८ अगस्तकेँ कोशी बान्धमे २ मीटर दरारि आबि गेल। १९८७ ई.क बाढ़ि हम आँखिसँ देखने छी। झंझारपुर बान्ध लग पानि झझा देलक, ओवरफ्लो भए गेल एक ठामसँ, आ आँखिक सोझाँ हम देखलहुँ जे कोना तकर बाद १ मीटरक कटाव किलोमीटरमे बदलि जाइत अछि। २७-२८ अगस्त २००८ धरि भीमनगर बैरेजक ई कटाव २ किलोमीटर भए चुकल अछि। आ ई करण भेल कोशीक अपन मुख्य धारसँ हटि कए एकटा नव धार पकड़बाक आ नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकेँ तहस नहस करबाक। नासाक ८ अगस्त २००८ आ २४ अगस्त २००८ केर चित्र कौशिकीक नव आ पुरान धारक बीच २०० किलोमीटरक दूरी देखा रहल अछि। भीमनगर बैरेज आब एकटा कोशीक सहायक धारक ऊपर बनल बैरेज बनि गेल।

राष्ट्रीय आपदा: जाहि राज्यमे आपदा अबैत अछि, से केन्द्रसँ सहायताक आग्रह करैत अछि। केन्द्रीय मंत्रीक टीम ओहि राज्यक दौरा करैत अछि आ अपन रिपोर्ट दैत अछि जाहिपर केन्द्रीय मंत्रीक एकटा दोसर टीम निर्णय करैत अछि, आ ओ टीम निर्णय करैत अछि जे ई आपदा राष्ट्रीय आपदा अछि वा नहि। बिहारक राजनीतिज्ञ अपन पचास सालक विफलता बिसरि जखन एक दोसराक ऊपर आक्षेपमे लागल छलाह, मनमोहन सिंह मंत्रीक प्रधानक रूपमे दौरा कए एकरा राष्ट्रीय आपदा घोषित कएलन्हि। कारण ई लेवल-३ केर आपदा अछि आ ई सम्बन्धित राज्यक लेल असगरे, नहि तँ वित्तक लिहाजसँ आ नहिए राहतक व्यवस्थाक सक्षमताक हिसाबसँ, एहिसँ पार पाएब संभव अछि। आब राष्ट्रीय आकस्मिक आपदा कोषसँ सहायता देल जाऽ रहल अछि, किसानक ऋण-माफी सेहो सम्भव अछि।

उपाय की हो? कुशेश्वर स्थानक आपदा सभ-साल अबैछ, से सभ ओकरा बिसरिए जेकाँ गेलाह। मुदा आब की हो? दामोदर घाटीक आ मयूराक्षी परियोजना जेकाँ कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किएक सम्भव नहि भेल? विश्वेश्वरैय्याक वृन्दावन डैम किएक सफल अछि। नेपाल सरकारपर दोषारोपण कए हमरा सभ कहिया धरि जनताकेँ ठकैत रहब। एकर एकमात्र उपाए अछि बड़का यंत्रसँ कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ध बान्हल गेल अछि तकरा तोड़ि कए हटाएब आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण। नेपाल सरकारसँ वार्ता आ त्वरित समाधान। आ जा धरि ई नहि होइत अछि तावत जे अल्पकालिक उपाय अछि, जेना बरखा आबएसँ पहिने बान्हक बीचक रेतकेँ हटाएब, बरखाक अएबाक बाट तकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करब। आ एहि सभमे राजनीतिक महत्वाकांक्षाकेँ दूर राखब। कोशीकेँ पुरान पथपर अनबाक हेतु कैकटा बान्ह बनाबए पड़त आ ओ सभ एकर समाधान कहिओ नहि बनि सकत।

कमला धार

नहरिसँ लाभ हानि- एक तँ कच्ची नहरि आ ताहूपर मूलभूत डिजाइनक समस्या, एकटा उदाहरण पर्याप्त होएत जेना-तेना बनाओल परियोजना सभक। कमलाक धारसँ निकालल पछबारी कातक मुख्य नहरि जयनगरसँ उमराँव- पूर्वसँ पछबारी दिशामे अछि। मुदा ओतए धरतीक ढ़लान उत्तरसँ दक्षिण दिशामे अछि। बरखाक समयमे एकर परिणाम की होएत आकि की होइत अछि? ई बान्ह बनि जाइत अछि आ एकर उत्तरमे पानि थकमका जाइत अछि। सभ साल एहि नहर रूपी बान्हसँ पटौनी होए वा नहि एकर उतरबरिया कातक फसिल निश्चित रूपेण डुमबे टा करैत अछि। फलना बाबूक जमीन नहरिमे नञि चलि जाए से नहरिक दिशा बदलि देल जाइत अछि!

कमला नदीपर १९६० ई. मे जयनगरसँ झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ एहिसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भए गेल। झंझारपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल से तँ हम कुशेश्वरक वर्णन कए दए चुकल छी। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया एहि सभक खिस्सा कुशेश्वरसँ भिन्न नहि अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जेना-जेना रेत भरैत गेल ताहि कारणेँ एहि तटबन्धक निर्माणक बीस सालक भीतर सभ किछु तहस-नहस भए गेल। कमला धार जे बलानमे पिपराघाटमे १९५४ मे मिलि गेलीह, हिमालयसँ बहि कए कोनो पैघ लक्कड़क अवरोधक कारण। आब हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर एहि धारमे २ मीटरसँ बेशी तक बढ़ि जाइत अछि। १९६५ ई.सँ बान्ह/ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भए गेल आ ई माँग शुरू भए गेल जे बान्ह/ छहरकेँ तोड़ि देल जाए!

स्कूल कौलेजमे छुट्टी गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समय देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि?

वरिष्ठ साहित्यकार वैकुण्ठ झाजीक पद्य सेहो अछि। कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि। श्री कैलाश कुमार मिश्र जीक "यायावरी", मित्रनाथ झा जीक पद्य, नूतन जीक चौठचन्द्र पूजापर लेख, श्याम सुन्दर शशि आ कुमार मनोज कश्यपक लघु-कथा आ श्री शम्भू कुमार सिहक आ अनलकान्त जीक कथा सेहो अछि। श्री शम्भू कुमार सिह जीक पद्य सेहो ई-प्रकाशित भऽ रहल अछि। बी.के कर्णक मिथिलाक विकासपर लेख, श्री ओमप्रकाश जीक लेख., श्री मौन जी, श्री पंकज पराशर, श्री सुशान्त, प्रकाश, जितमोहन, विनीत उत्पल शैलेन्द्र मोहन झा आ परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर

सिंहजीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

मैथिली रिपोर्ताज लिखने छथि पुण्यधाम जनकपुरधामक युवा पत्रकार श्री जितेन्द्र झा संगमे ज्योतिजी सेहो लंदनसँ रिपोर्ताज पठेने छथि।

श्री हरिमोहन झाजीक सम्पूर्ण रचना संसारक अवलोकन सेहो आगाँ बढ़ल अछि।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

पोथी समीक्षा:

बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज- एहि नामसँ १० टा गीतक संग्रह लए श्री बिनीत ठाकुर- शिक्षक, प्रगति आदर्श ई. स्कूल, लगनखेल, ललितपुर प्रस्तुत भेल छथि। ई एहि शताब्दीक पहिल पोथी छी जे देवनागरीक संग मिथिलाक्षरमे सेहो आयल अछि, आ एकरा हम अंशुमन पाण्डेयकेँ पठा देलियन्हि, यूनीकोडक मैपिंगक लेल, कारण विनीतजी हमरा एहि पोथीकेँ ई-मेलसँ पठेबाक अनुमति देने छथि, ताहि लेल हुनका धन्यवाद।

''भरल नोरमे'' शीर्षक पद्यमे की सुतलासँ भेटलै अछि ककरो अधिकार आ ''गाम नगरमे''- लोकतंत्रमे अपन अधिकार लऽ कऽ रहत मधेसी, ई घोषणा छन्हि कविक तँ ''कोरो आ पाढ़ि'मे गरीब छोड़िकऽ के बुझतै गरीबीके मारि- ई कहि कवि अपन आर्थिक चिन्तन सेहो सोझाँ रखैत छथि। चहुँदिश अमङ्गलमे जङ्गलक विनाशपर मुश्किलेसँ सुनी चिड़ियाके चिहुं-चिहुं- कहि कवि अपन पर्यावरण चिन्तन सोझाँ रखैत छथि। ''जे करथि घोटाला'' मे भ्रष्टाचारपर आ ''जाइतक टुकड़ी''मे जाति प्रथापर कवि निर्ममतासँ चोट करैत छथि तँ ''बेटीक भाग्यविधान''मे कविक भावना उफानपर अछि। ''कम्प्युटरक दुनिया'' आ ''अङ्गरेजिया'' मे कवि सामयिकताकेँ नहि बिसरल छथि तँ अन्तिम पद्य ''ताल मिसरी'' मे वरक सासुर प्रेम कनेक व्यंग्यात्मक सुरमे कवि कहि अपन एहि क्षेत्रमे सेहो दक्ष होएबाक प्रमाण दैत छथि। ओना तँ कविक ई प्रथम प्रकाशित कृति छन्हि, मुदा कवि जाहि लय सँ कविता कएने छथि ओ अभूतपूर्व रूपेँ प्रशंसनीय अछि।

01.09.2008

कोशी:

कोशीक पानि माउन्ट एवेरेस्ट, कंचनजंघा आ गौरी-शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलासँ अबैत अछि। नेपालमे सप्तकोशी, जाहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी (भोट कोसी), तांबा कोसी, लिक्षु कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी आ तामर कोसी सम्मिलित अछि।

एहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी, तांबा कोसी, लिक्षु कोसी आ दूध कोसी मिलि कए सुनकोसीक निर्माण करैत अछि आ ई मोटा-मोटी पच्छिमसँ पूर्व दिशामे बहैत अछि, एकर शाखा सभ मोटा-मोटी उत्तरसँ दक्षिण दिशामे बहैत अछि। ई पाँचू धार गौरी शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलाक पानि अनैत अछि।

अरुणकोसी माउन्ट एवेरेस्ट (सगरमाथा) क्षेत्रसँ पानि ग्रहण करैत अछि। ई धार मोटा-मोटी उत्तर-दक्षिण दिशामे बहैत अछि।

तामर कोसी मोटा-मोटी पूबसँ पच्छिम दिशामे बहैत अछि आ अपन पानि कंचनजंघा पर्वत श्रृंखलासँ पबैत अछि।

आब ई तीनू शाखा सुनकोसी, अरुणकोसी आ तामरकोसी धनकुट्टा जिलाक त्रिवेणी स्थानपर मिलि सप्तकोसी बनि जाइत छथि। एतएसँ १० किलोमीटर बाद चतरा स्थान अबैत अछि जतए महाकोसी, सप्तकोसी वा कोसी मैदानी धरातलपर अबैत छथि। आब उत्तर दक्षिणमे चलैत प्रायः ५० किलोमीटर नेपालमे रहला उत्तर कोसी हनुमाननगर-भीमनगर लग भारतमे प्रवेश करैत छथि आ कनेक दक्षिण-पच्छिम रुखि केलाक बाद दक्षिण-पूर्व आ पच्छिम-पूर्व दिशा लैत अछि आ भारतमे लगभग १३० किमी. चललाक बाद कुरसेला लग गंगामे मिलि जाइत छथि। कोसीमे बागमती आ कमलाक धार सेहो सहरसा- दरभंगा-पूर्णिया जिलाक संगमपर मिलि जाइत अछि।

कोसीपर पहिल बान्ह १२म शताब्दीमे लक्ष्मण द्वितीय द्वारा बनाओल वीर-बाँध छल जकर अवशेष भीमनगरक दक्षिणमे एखनो अछि।

भीमनगर लग बैराजक निर्माणक संगे पूर्वी कोसी तटबन्ध सेहो बनि गेल आ पूर्वी कोसी नहरि सेहो।

कुँअर सेन आयोग १९६६ ई. मे कोसी नियन्त्रणक लेल भीमनगरसँ २३ किमी. नीचाँ डगमारा बैराजक योजनाक प्रस्ताव देलक जे वाद-विवाद आ राजनीतिमे ओझरा गेल। एहि बैराजसँ दू फायदा छल। एक तँ भीमनगर बैरेजक जीवन-कालावधि समाप्त भेलापर ई बैरेज काज अबितए, दोसर एहिसँ उत्तर-प्रदेशसँ असम धरि जल परिवहन विकसित भऽ जाइत जाहिसँ उत्तर बिहारकेँ बड़ फायदा होइतए। मुदा एहि बैरेज निर्माण लेल पाइ आवंटन केन्द्रीय सिंचाई मंत्री डॉ के.एल.राव नहि देलखिन्ह। पश्चिमी कोसी नहरि एकर विकल्प रूपमे जेना तेना मन्थर गति सँ शुरू भेल मुदा एखनो धरि ओहिमे काज भइये रहल अछि।

मुदा कोसी लेल ई नहि भऽ सकल। विचार आएल तँ योजना अस्वीकृत भए गेल। जतेक दिनमे कार्य पूरा हेबाक छल ततेक दिन विवाद होइत रहल, डगमारा बैराजक योजनाक बदलामे सस्ता योजनाकेँ स्वीकृति भेटल मुदा सेहो पूर्ण हेबाक बाटे ताकि रहल अछि!

विश्वेश्वरैय्या पड़ैत छथि मोन: हैदराबादसँ ८२ माइल दूर मूसी आ ईसी धारपर बान्ह बनाओल गेल आ नगरसँ ६.५ माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे तटबन्ध बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्हक हुनकर प्रस्तावित १३० फुट ऊँच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल तँ वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए ८० फीट कए देलन्हि। विश्वेशरैय्या निचुलका भागक चौड़ाई बढ़ा कए ई कमी पूरा कए लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तँ

अतिरिक्त मजदूर लगा कए आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाज लए डॉक्टर बहाली कए, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कए आ व्यक्तिगत निगरानी द्वारा केलन्हि। देशभक्त तेहन छलाह जे सीमेन्ट आयात नहि कएलन्हि वरन् वालु, कैल्सियम पाथर आ पाकल ईटाक बुकनी मिला कए निर्मित सुरखीसँ एहि बान्हक निर्माण कएलन्हि। बान्ह निर्माणसँ पहिनहि द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कए लेल गेल।

दिल्ली अछि दूर एखनो! प्रधानमंत्री आपदा कोष आ मुख्यमंत्री आपदा कोषक अतिरिक्त स्वयंसेवी संगठन सभक कोषमे सेहो दिल्लीवासी अपन अनुदान दए सकैत छथि। मुदा दीर्घ सूत्री काज होएत निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब।

१. स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समय छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि? सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नहि कए सकल। दिल्लीवासी सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई.सँ एहि तरहक कार्यान्वयन कराबी तँ लाजे बिहार बोर्ड ओकरा लागू कए देत।

२. भारतमे डगमारा बैराजक योजनाक प्रारम्भ कएल जाए कारण भीमनगर बैरेज अपन जीवन-कालावधि पूर्ण कए लेने अछि। एहिमे फन्ड रेलवे आ सड़क दुनू मंत्रालयसँ लेल जाए कारण एहिपर रेल आ सड़क सेहो बनि सकैछ/ आ बनबाक चाही।

३. बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए।

४. कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कए हटा देल जाए आ पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए।

५. बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य होए जेना देखि परि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कए युद्ध-स्तरपर काज एहि सभपर कार्य शुरू कएल जाए।

उपरोक्त बिन्दु सभपर दिल्लीमे लॉबी बना कए केन्द्र सरकारपर/ मंत्रालयपर दवाब बनाएब तखने बिहार अपन नव छवि बना सकत। १२म शताब्दीमे शुरू कएल बान्ह तखने पूर्ण होएत आ धारसभ मनुक्खक सेविका बनि सकत।

श्री रामभरोस कापड़ि भ्रमरजीक कोसी बाढ़िपर निबन्ध आ कोसीक बाढ़िपर स्व. राजकमल द्वारा लिखित कथा अपराजिता देल गेल अछि।

श्री गंगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत, केर दोसर खेप पढ़ू संगमे हुनकर विचार-टिप्पणी सेहो। कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि। श्री कैलाश कुमार मिश्र जीक "यायावरी", अंकुर झा जीक पद्य, श्याम सुन्दर शशिक रिपोर्ताज आ कुमार मनोज कश्यपक लघु-कथा आ श्री शम्भू कुमार सिहक कथा-निबन्ध सेहो अछि। बी.के कर्णक मिथिलाक विकासपर लेख, श्री पंकज पराशर, जितमोहन, विनीत उत्पल, नवेन्दु कुमार झा आ परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर सिंहजीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि। गुंजन जीक गजल आ' विचार टिप्पणी सेहो अछि।

श्री राजकमल चौधरीक रचनाक विवेचन कए रहल छथि श्री देवशंकर नवीन जी। उदाहरण आ नो एण्ट्री: मा प्रविश पर समीक्षा देल गेल अछि।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

गोपेशजी स्वर्गीय भए गेलाह हुनकर संस्मरण हम लिखने छी पद्य स्तंभमे, संगमे देने छी हुनकर एकटा पद्य सेहो।

15.09.2008

श्री गंगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत, केर दोसर खेप पढ़ू संगमे हुनकर विचार-टिप्पणी सेहो। सुभाष चन्द्र यादव जीक कथा, कुमार मनोज कश्यपक लघु-कथा, महेश मिश्र "विभूति"-श्री पंकज पराशर-विनीत उत्पल- श्यामल जीक पद्य आ प्रेमशंकर सिंह, मौनजी, जितमोहन, ओमप्रकाश, शक्ति-शेखर, नूतन झा जीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

श्री राजकमल चौधरीक रचनाक विवेचन कए रहल छथि श्री देवशंकर नवीन जी।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

01.10.2008

जीन मेरी गुस्ताव ली क्लाजियो (1940-)केँ एहि सालक साहित्यक ८ लाख १५ हजार पौंडक साहित्यक नोबल पुरस्कारसँ सम्मानित कएल जएबाक घोषणा भेल अछि। मानवतापर राज कए रहल सभ्यतासँ नीचाँ आ आगू जाऽ कए देखबाक प्रवृत्ति छन्हि क्लाजियोक। न्यू-डिपार्चर्स, पोएटिक एडवेंचर आ सेंसुअल एक्सटेसीक लेखक छथि क्लाजियो।

ली क्लाजियो मूलतः फ्रांसीसी भाषाक उपन्यासकार छथि, ओना हिनकर पिता अंग्रेज आ माता फ्रांसीसी छथिन्ह, दुनू गोटे मारीशससँ सम्बन्धित। आ क्लाजियो नाइजीरियाक समुद्री यात्रासँ नेनपनहिमे साहित्यिक जीवनक प्रारम्भ कएलन्हि। १९६३ ई. मे हिनकर पहिल उपन्यास प्रकाशित भेल जे आधुनिक समाजक प्रति एक तरहक विद्रोह छल। फ्रेंच लेखक सभमे क्लाजियो स्वीकृत नहि भऽ सकलाह आ एखन ओ न्यू मेक्सिकोमे रहैत छथि।

थर्ड वर्ल्डक नजरिसँ देखब हिनकर रचनाक एकटा विशिष्टता छन्हि। मारीशसक उपन्यासकार अभिमन्यु उनुथक आ ताहि क्रममे रामायणक चरचा सेहो क्लाजियो करैत छथि।

हिनकर पहिल उपन्यास ले-प्रोसेस-वर्बल- द इनटेरोगेशन (जांचक पूछताछ)

१९६३ ई. मे आयल जे अस्तित्ववादक बादक समयक उपन्यास छल। दिन-प्रतिदिनक भाषणबाजीक बदला सत्यताकेँ देखबय बला शक्ति ओ शब्द सभकेँ देलन्हि। फेर आयल हुनकर दू टा कथा संग्रह ला-फीवर आ ला-देल्यूज, एहि दुनू संग्रहमे पाश्चात्य नगरक समस्या आ ओतुक्का डरक यथार्थ चित्रण भेल अछि। टेरा-अमाटामे हुनकर पारस्थितिकी-तंत्रसँ जुड़ाव स्पष्ट अछि तँ डेजर्टसँ ओ उपन्यासकारक रूपमे स्थापित होइत छथि, एहिमे ओ उत्तर अफ्रीकाक लुप्त होइत संस्कृतिक चित्रण करैत छथि। क्लाजियो दार्शनिक लेख सेहो लिखने छथि आ बच्चा लोकनिक लेल लुलाबी सेहो। अमेरिकी साहित्य जाहि प्रकारेँ अनुवादसँ दूर आ अपनामे मग्न भऽ गेल अछि सएह कारण अछि फिलिप रॉथक एहि रेसमे हाइपक रूपमे शामिल होएबाक बावजूद पाछू छूटि जएबाक। अर्थशास्त्रमे अमेरिकाक मोनोपोलीक विपरीतक ई साहित्यक क्षेत्रक घटनाक्रम अछि।

एहि अंकमे:

श्री गंगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत, केर पाँचम खेप पढ़ू संगमे हुनकर विचार-टिप्पणी सेहो। सुभाष चन्द्र यादव आ विभा रानी जीक कथा, महेश मिश्र "विभूति"-श्री पंकज पराशर- विनीत उत्पल- श्यामल जीक पद्य आ प्रेमशंकर सिंह, मौनजी, जितमोहन, प्रकाश झा, ओमप्रकाश जीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि।

श्री राजकमल चौधरीक रचनाक विवेचन कए रहल छथि श्री देवशंकर नवीन जी। सुभाषचन्द्र यादव जी पर श्री महाप्रकाश लिखि रहल छथि। जितेन्द्र झा, नवेन्दु आ प्रीतिक रिपोर्ताज छन्हि तँ युवा प्रतिभा अंशुमालाक विषयमे लिखने छथि जितेन्द्र।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

मधुप जीक "घसल अठन्नी" आ तारानन्द वियोगी जीक "मूलभूत" केर अग्रेजी अनुवाद सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि।

15.10.2008

पहिल कीर्तिनारायण मिश्र सम्मान कवि हरेकृष्ण झाकेँ ११.११.२००८ केँ विद्यापति पर्वक अवसरपर देल जएतन्हि। एहि बेरक यात्री चेतना पुरस्कार श्री मन्त्रेश्वर झाकेँ भेटलन्हि।

कीर्तिनारायण मिश्रक जन्म १७ जुलाई १९३७ ई. केँ ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बेगूसरायमे भेलन्हि। हुनकर प्रकाशित कृति अछि सीमान्त, हम स्तवन नहि लिखब (कविता संग्रह)। आखर पत्रिकाक लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक।

मंत्रेश्वर झा-जन्म ६ जनवरी १९४४ ई.ग्राम-लालगंज, जिला-मधुबनीमे। प्रकाशित कृति: खाधि, अग्निहार गाम, बहसल रातिक इजोत (कविता संग्रह); एक बटे दू (कथा संग्रह), ओझा लेखे गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा संग्रहक हिन्दी अनुवाद ‘‘कुंडली’’ नामसँ प्रकाशित। दि फूल्स पैराडाइज (अंग्रेजीमे ललित निबन्ध), कतेक डारि पर।

हरेकृष्ण झा, जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कोइलखमे। अभियंत्रणक अध्ययण छोड़ि मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। एना कतेक दिन (कविता संग्रह)।

बुकर पुरस्कार: आस्ट्रेलियन पिता आ भारतीय माताक सन्तान ३३ वर्षीय बैचेलर श्री अरविन्द अडिग ऑक्सफोर्डसँ शिक्षा प्राप्त कएने छथि आ सम्प्रति मुम्बईमे रहैत छथि। हिनकर पहिल अंग्रेजी उपन्यास छन्हि द ह्वाइट टाइगर जाहि पर ब्रिटेन, आयरलैण्ड आ कॉमनवेल्थ देशक वासी केँ देल जा रहल अंग्रेजी भाषाक उपन्यासक ५०,००० पौन्डक ‘‘मैन बुकर’’ पुरस्कार भेटलन्हि अछि आ बेन ओकेरीक बाद ई पुरस्कार प्राप्त केनिहार ई सभसँ कम उम्र केर लेखक छथि।

द ह्वाइट टाइगर- ई उपन्यास हार्पर कॉलिन्स-रैन्डम हाउस द्वारा प्रकाशित भेल आ प्रकाश आ अन्हारक दू तरहक भारतक ई वर्णन करैत अछि। एकटा फर्मक मालिक बलराम जे शुरूमे गयासँ आयल बलराम हलवाई छलाह चीनी प्रधानमंत्री वेन जिआबाओक भारत आगमनपर अपन अनुत्तरित सात पत्र (हरिमोहन झाक पाँच पत्र आ ब्यासजीक दू पत्र जकाँ) केर माध्यमसँ अपन खिस्सा कहैत छथि। ओ एकटा रिक्शा चालकक बेटा छथि जे चाहक दोकानपर किछु दिन काज केलाक बाद दिल्लीमे एकटा धनिकक ड्राइवर बनैत छथि। फेर ओकरा मारि कए उद्योगपति बनि जाइत छथि।

ड्राइवर सभ गप मालिकक सुनैत रहैत अछि, कलकत्ताक रिक्शाबला सभक खिस्सा सेहो अडिग सुनलन्हि आ दिल्लीक ड्राइवर लोकनिक सेहो आ खिस्साक प्लॉट बना लेलन्हि।

समालोचनाक स्थिति: हिन्दीक अखबार सभ ई पुरस्कार प्राप्त भेलाक बादो एहि पुस्तकक समीक्षा एकटा चीप टी.वी. सीरियलक पटकथाक रूपमे कएलन्हि। मैथिलीक समालोचनाक तँ गपे छोड़ू, अंग्रेजीक अखबार सभ मुदा नीक समीक्षा कएलक।

दिल्लीक चिड़ियाघरमे एकटा ह्वाइट टाइगर छैक गेनेटिक म्युटेशनक परिणाम जे एक पीढ़ीमे एक बेर अबैत छैक नहियो अबैत छैक। बलराम हलवाईक खिस्सा सेहो ह्वाइट टाइगर जकाँ विरल भेटत बेशी तँ कमाइ-खाइमे जिनगी बिता दैत छथि। एकर हार्डबाउन्ड किताब २०,००० कॉपी बिका चुकल अछि। पेन्गुइन इण्डिया जे ई किताब छपबासँ इन्कार कएने छल कहलक जे क्रॉसवर्ड पुरस्कारसँ किताबक बिक्रीमे १००० कॉपीक वृद्धि होइत छैक, बुकर भेटलापर १०,००० कॉपी बेशी बिकाइत छैक आ साहित्य अकादमी

भेटलापर अंग्रेजी किताब १० कॉपी बेशी बिकाइत अछि!

श्री गंगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत, केर छठम खेप पढ़ू। सुभाष चन्द्र यादव आ भ्रमर जीक कथा, महेश मिश्र "विभूति"-श्री पंकज पराशर- विनीत उत्पल- श्यामल जीक पद्य आ प्रेमशंकर सिंह जीक शोध लेख अछि।, जितमोहन, रामलोचन ठाकुर, निमिष झा, राजेन्द्र विमल, रेवतीरमण लाल, दिगम्बर झा "दिनमणि", रूपा धीरू, ज्योति, विद्यानन्द झा, नवीननाथ झा, विनीत उत्पल, वृषेश चन्द्र लाल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विभूति, महेन्द्र मलंगिया, कुमार मनोज कश्यप, कृपानन्द झा. रामभरोस कापड़ि रोशन जनकपुरी, पंकज पराशर, वैकुण्ठ झा, प्रकाश झा आ हिमांशु चौधरी जीक रचनासँ सुशोभित ई अंक अछि।

श्री राजकमल चौधरीक रचनाक विवेचन कए रहल छथि श्री देवशंकर नवीन जी।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आ सहस्त्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

शिवशंकर श्रीनिवास केर मैथिली कथाक अग्रेजी अनुवाद सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि।

भारतक विश्वनाथन आनन्द वर्ल्ड चेस प्रतियोगिता जितलन्हि तँ भारत अपन चन्द्रयान-१ यात्रा सेहो शुरु कएलक। मुदा संगमे असमक बम विस्फोट, उड़ीसाक नन बलात्कार आ मालेगाँव विस्फोट मोरक पएर सिद्ध भेल।

01.11.2008

४०म ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोह ६ नवम्बर २००८: संसदक लाइब्रेरीक बालयोगी ऑडिटोरियममे कश्मीरी कवि श्री रहमान राहीकेँ प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह द्वारा प्रदान कएल जाएबला ४०म ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोहक आमंत्रण पाबि ओतए नियत समयसँ सायं छह बजे हम पहुँचलहुँ। अपन प्रतिष्ठाक अनुरूप प्रधानमंत्री निर्धारित समय ६.३० सायं पदार्पण कएलन्हि। स्टेजपर श्री रवीन्द्र कालिया, निदेशक भारतीय ज्ञानपीठ, रहमान राही, डॉ. मनमोहन सिंह, सीताकान्त महापात्र, पुरस्कार चयन समितिक अध्यक्ष आ अखिलेश जैन, प्रबन्ध ट्रस्टी रहथि। दर्शकमे श्री टी.एन.चतुर्वेदी, अशोक वाजपेयी, आलोक पी. जैन आ ब्रजेन्द्र त्रिपाठी रहथि। ब्रजेन्द्रजी हमरा संग बैसल रहथि। स्व. साहू शान्ति प्रसाद जैन आ स्व. श्रीमति रमाजैन, एहि पुरस्कारक प्रारम्भ कएने रहथि आ हुनकर दुनू गोटेक फोटो पाछाँमे लागल रहन्हि। आइ काल्हि ४०म सालक महत्व एहि कारणसँ बढ़ि गेल अछि कारण ५०म वर्षगाँठक इन्तजारमे बहुत गोटे आयु बेशी भेने जीवित नहि रहैत छथि। सरला माहेश्वरी माइक पकड़ि कार्यक्रमक शुरुआतसँ पहिने अनिता जैनकेँ निराला रचित सरस्वती वन्दना गएबाक लेल अनुरोध कएलन्हि आ ओ मंचक दोसर भागमे महर्षि अगस्त्यक या कुन्देन्दुसँ शुरु कए निरालाक रचना शास्त्रीय पद्धतिमे गओलन्हि। फेर फूलसँ प्रधान मंत्रीक स्वागत प्रबन्ध न्यासी अखिलेश जैन द्वारा भेल, फेर रवीन्द्र कालिया फूलसँ रहमान राहीक स्वागत कएलन्हि। फेर श्री सीताकान्त महापात्र अंग्रेजीमे उद्गार व्यक्त करैत कहलन्हि जे राहीकेँ सम्मानित कए भारतीय ज्ञानपीठ अपनाकेँ सम्मानित कएलक अछि। फेर प्रधानमंत्री द्वारा राहीकेँ शॉल ओढ़ा कए आ १०३५ ई.क राजा भोजक सरस्वतीक प्रतिमाक कांस्य अनुकृति जाहिमे ज्ञानपीठ द्वारा प्रभामण्डल जोड़ल गेल (मूल प्रतिमा लंदनक ब्रिटिश म्यूजियममे अछि) आ प्रशस्ति पत्र आ ५ लाख टाकाक ड्राफ्ट दए सम्मानित कएल गेल। राही उद्गार व्यक्य कएलन्हि आ महान जवाहरलाल नेहरूक जाहि पदपर छलाह ओहि पदपर आसीन मनमोहन सिंहसँ पुरस्कार प्राप्त कए विशेष प्रसन्नता प्रकट कएलन्हि। फेर रवीन्द्र कालिया धन्यवाद ज्ञापन कएलन्हि। राहीक प्रतिनिधि कविताक ज्ञानपीठ द्वारा कएल हिन्दी अनुवाद राही द्वारा प्रधान मंत्रीकेँ देल गेल।

अब्दुल रहमान राहीक जन्म ६ मई १९२५ ई.कँ भेल। हुनकर पहिल कविता संग्रहकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार देल गेल। भारत सरकारक पद्म श्री आ मानव संसाधन विकास मंत्रालयक एमिरेट्स फेलोशिप हिनका भेटल छन्हि। हिनकर कविता संग्रहमे सनवुन्य साज, सुबहुक सोदा, कलाम-ए-राही प्रमुख अछि। हिनकर आलोचना आ निबन्धक पोथी अछि, कहवट आदि।

प्रस्तुत अछि हिनकर कविता "परछाइयाँ" (कश्मीरीसँ अंग्रेजी एस.एल. सन्धु, अंग्रेजीसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर)

छाह सभ

अपन नियतिसँ वाद आ अमरताक आशा आब छोड़ि दिअ,

यदि जुटा ली किछु क्षण, तँ भेर भऽ जाऊ ताहिमे।

बस्तीक जाहि पथमे चलैत रहलहुँ, ओ धँसि गेल घनगर बोनमे,

जेना हमर आस्थाक कवच भेल भेद्य केलक शंकासभ।

आँखि खुजिते हमर स्वप्नकेँ लागल आँखि

सभटा बासन्ती युवा छाती झरकि कए भऽ गेल सुनसान।

देखू तँ देखायत आस-पड़ोसमे लावण्यमयी मेला,

हाथमे आएत मात्र एकाध विचार, आऽ

असगर एकटा कौआ उजाड़मे।

कखनो हमर इच्छा रहए चान-तरेगन गढ़बाक,

आब माथ भुका रहल छी अपन कोनो नामकरण तँ करी।

सभटा विश्वास घाटीक मौलायल हरियरी सन,

सभटा चैतन्य खिसियायल साँप सन।

सभटा देवता हमर अपन छाह छथि,

सभटा दानव हमर अहं केर कनिया-पुतड़ा सन।

सभा भवन भरल बुझू बानरक खौं-खौं सँ,

सन्तक पहिरनक लेल ताकू बोने-बोन।

केहन अछि नाओक खेबनाई, कतए तँ अछि किनार!

देशांस भोथलेलक नाओकेँ अन्हारमे।

हे रौ नटुआ, नाच निर्वस्त्र चारू कात ओकर,

राही तँ आगि-खाएबला बताह अछि।

समारोह एक घण्टामे खतम भेल आ घुरैत रही तँ एफ.एम.पर समाचार भेटल जे सचिन तेन्दुलकर अपन टेस्ट जीवनक ४०म शतक दिनमे पूर्ण कएलन्हि।

भीमसेन जोशीकेँ भारत रत्न पुरस्कार देल गेल। आ चन्द्रायण-१ चन्द्रमाक १०० किलोमीटरक वृत्ताकार कक्षामे स्थापित भऽ गेल जतए ओ २ वर्ष धरि रहत।

15.11.2008

ई अंकक समर्पण गर्वक-संग ओहि 16 बलिदानीक नाम जे मुम्बईमे देशक सम्मानक रक्षार्थ अपन प्राणक बलिदान देलन्हि।

१. एन.एस.जी. मेजर सन्दीप उन्नीकृष्णन्
२. ए.टी.एस.चीफ हेमंत कड़कड़े
३. अशोक कामटे
४. इंस्पेक्टर विजय सालस्कर
५. एन.एस.जी हवलदार गजेन्द्र सिंह "बिष्ट"
६. इंस्पेक्टर शशांक शिन्दे
७. इंस्पेक्टर ए.आर. चिटले
८. सब इंस्पेक्टर प्रकाश मोरे
९. कांस्टेबल विजय खांडेकर
१०. ए.एस.आइ.वी. अबाले
११. बाउ साब दुर्गुरे
१२. नानासाहब भोसले
१३. कांसटेबल जयवंत पाटिल
१४. कांसटेबल शेघोष पाटिल
१५. अम्बादास रामचन्द्र पवार
१६. एस.सी.चौधरी

01.12.2008

विदेहक नव अंक (अंक २४, दिनांक १५ दिसम्बर २००८) ई पब्लिश भऽ गेल अछि। एहि हेतु लॉग ऑन करू http://www.videha.co.in |

४१म आ ४२म ज्ञानपीठ पुरस्कारक घोषणा- हिन्दीक नवीन कविता आन्दोलनक सशक्त कवि श्री कुँवर नारायणकेँ ४१म ज्ञानपीठ पुरस्कार (२००५) आ कोंकणीक श्री रवीन्द्र केलेकर आ संस्कृतक श्री सत्यव्रत शास्त्रीकेँ संयुक्त रूपसँ ४२म ज्ञापीठ पुरस्कार (२००६) देबाक घोषणा भेल अछि।

श्री कुँवर नारायणक जन्म १९२७ ई. मे भेलन्हि। अज्ञेय द्वारा सम्पादित "तीसरा सप्तक"क सशक्त कवि कुँवर नारायणकेँ एहिसँ पहिने साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटि चुकल छन्हि।

श्री रवीन्द्र केलेकरक जन्म १९२५ ई. मे भेलन्हि, हिनकर कोंकणी भाषा मण्डलक निर्माणमे प्रमुख भूमिका रहल छन्हि।

श्री सत्यव्रत शास्त्री संस्कृतमे तीन गोट महाकाव्यक रचना कएने छथि। रवीन्द्र केलेकर आ सत्यव्रत शास्त्रीकेँ सेहो साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटि चुकल छन्हि।

संगहि "विदेह" केँ एखन धरि (१ जनवरी २००८ सँ ३० दिसम्बर २००८) ७० देशक ६७३ ठामसँ १,३६,८७४ बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा)- धन्यवाद पाठकगण।

15.12.2008

अपनेक रचना आ प्रतिक्रियाक प्रतीक्षामे। वरिष्ठ रचनाकार अपन रचना हस्तलिखित रूपमे सेहो नीचाँ लिखल पता पर पठा सकैत छथि।

गजेन्द्र ठाकुर
389, पॉकेट सी, सेक्टर-ए,वसंतकुंज, नई दिल्ली- 110070
फोन- 9811382078
http://www.videha.co.in
ggajendra@videha.com
ggajendra@yahoo.co.in



गजेन्द्र ठाकुर

संदेश

१. श्री प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए रहल छी तकर चरचा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे होएत। आनन्द भए रहल अछि, ई जानि कए जे एतेक गोट मैथिल "विदेह" ई जर्नलकेँ पढ़ि रहल छथि।

२. श्री डॉ. गंगेश गुंजन- एहि विदेह-कर्ममे लागि रहल अहाँक सम्वेदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत रंग, इतिहास मे एक टा विशिष्ट फराक अध्याय आरंभ करत, हमरा विश्वास अछि। अशेष शुभकामना आ बधाइक सङ्ग, सस्नेह|

३. श्री रामाश्रय झा "रामरंग"(आब स्वर्गीय)- "अपना" मिथिलासँ संबंधित...विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ।...शेष सभ कुशल अछि।

४. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, साहित्य अकादमी- इंटरनेट पर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" केर लेल बधाई आ शुभकामना स्वीकार करू।

५. श्री प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कनेक चकित मुदा बेसी आह्लादित भेलहुँ। कालचक्रकेँ पकड़ि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि लेल हमर मंगलकामना।

६. श्री डॉ. शिवप्रसाद यादव- ई जानि अपार हर्ष भए रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल अछि। पत्रकारितामे एहि प्रकारक नव प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक शुभकामना।

७. श्री आद्याचरण झा- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे के कतेक सहयोग करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे हमर श्रद्धापूर्ण आहूति प्राप्त होयत- यावत ठीक-ठाक छी/ रहब।

८. श्री विजय ठाकुर, मिशिगन विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि। पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

९. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ई-पत्रिका 'विदेह' क विषयमे जानि प्रसन्नता भेल। 'विदेह' निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारए से कामना अछि।

१०. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ई-पत्रिका 'विदेह' केर सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग रहत।

११. डॉ. श्री भीमनाथ झा- 'विदेह' इन्टरनेट पर अछि तेँ 'विदेह' नाम उचित आर कतेक रूपेँ एकर विवरण भए सकैत अछि। आइ-काल्हि मोनमे उद्वेग रहैत अछि, मुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब।

१२. श्री रामभरोस कापड़ि भ्रमर, जनकपुरधाम- "विदेह" ऑनलाइन देखि रहल छी। मैथिलीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ तकरा लेल हार्दिक बधाई। मिथिला रत्न सभक संकलन अपूर्व। नेपालोक सहयोग भेटत से विश्वास करी।

१३. श्री राजनन्दन लालदास- 'विदेह' ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी, नातिक एहिठाम देखलहुँ। एकर वार्षिक अंक जखन प्रिंट निकालब तँ हमरा पठाएब। कलकत्तामे बहुत गोटेकेँ हम साइटक पता लिखाए देने छियन्हि। मोन तँ होइत अछि जे दिल्ली आबि कए आशीर्वाद दितहुँ, मुदा उमर आब बेशी भए गेल। शुभकामना देश-विदेशक मैथिलकेँ जोड़बाक लेल।

१४. डॉ. श्री प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल पत्रिका "विदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषानुरागक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुरागसँ प्रेरित छी, एकर निमित्त जे हमर सेवाक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी। इंटरनेटपर आद्योपांत पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भ' गेल।

'विदेह' द्वारा धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित कएल जा रहल गजेन्द्र ठाकुरक

उपन्यास, गल्प-कथा संग्रह,पद्य संग्रह, बालानां कृते, एकाङ्की-नाटक, महाकाव्य, शोध लेख आ यात्रा वृत्तांत विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्मेमे ''कुरुक्षेत्रम्: अन्तर्मनक'' नामसँ श्रुति प्रकाशन, द्वारा छापल जा रहल अछि। विदेह डाटाबेसक आधारपर नचिकेताजीक नाटक, पंकज पराशर आ विनीत उत्पलक पद्य संग्रह, मौन आ प्रेमशंकर सिंह जीक निबन्ध संग्रह आ 'विदेह' द्वारा कएल गेल शोधक आधार पर १. मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश २. अंग्रेजी-मैथिली शब्द कोश आ ३. मिथिलाक्षरसँ देवनागरी पाण्डुलिपि लिप्यान्तरण-पञ्जी-प्रबन्ध डाटाबेश श्रुति पब्लिकेशन द्वारा प्रिन्ट फॉर्ममे छापल जा रहल अछि-शोध, संकलन, डिजिटल इमेजिंग आ लिप्यांतरण- विद्यानन्द झा ''पञ्जीकार'', नागेन्द्र कुमार झा आ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेल।

श्रुति प्रकाशनक e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com आ website: http://www.shruti-publication.com अछि। रमानन्द झा ''रमणक'' जीक ''सगर राति दीप जरए'' केर इतिहास जाहिमे एक-एकटा कथाक पाठक वर्णन अछि सेहो विदेहमे ई-प्रकाशित भेल। संगहि 20,000 विभिन्न आइ.एस.पी. सँ पाठक द्वारा डेढ़ लाखसँ बेशीबेर ''विदेहकँ अंतर्जालपर पढ़ल गेल आ आब एकर सदेह अंक तिरहुता आ देवनागरीमे संगहि आबि रहल अछि। एकर ब्रेल वर्सन सेहो डाउनलोड आ प्रिंट लेल उपलब्ध अछि। कवर-पृष्ठक डिजाइन लेल श्रीमति ज्योति झा चौधरी आ प्रूफ देखबाक लेल डॉ. पालन झाक विशेष रूपमे आभारी छी। 25 अंकक 2500 पृष्ठक दस प्रतिशत एहि सदेह संस्करणमे आबि रहल अछि शेष अंतर्जालपर डाउनलोड आ प्रिंट लेल उपलब्ध अछि। --सम्पादक।

Published by
Shruti Publication, 8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: 25889656, 25889658
Fax: 011-25889657

SOLE DISTRIBUTORS: Ajay Arts, 4393/4A, Ist Floor, Darya Ganj, New Delhi-110002

COMBINED ISBN of VIDEHA-SADEHA SERIES : 978-81-907729-5-2 (Price:Devnagari Version INR 100/- Tirhuta Version INR Rs.200/-)

Printed by Ajay Arts, 4393/4A, Ist Floor, Darya Ganj, New Delhi-110002

साक्षात्कार

रामाश्रय झा "रामरंग" प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जीक १ जनवरी २००९ कँ निधन भऽ गेलन्हि। डॉ. गगेश गुजन मृत्यु पूर्व हुनकासं साक्षात्कार लेने छलाह। प्रस्तुत अछि ओ अमूल्य साक्षात्कार- पहिल बेर विदेहमे।



पं0 रामाश्रय झाक इन्टरव्यू।

प्रश्नः 1. अपनेक दृष्टि सं विद्यापति गीत-संगीत परंपरा कें कोन रूप मे देखल-बूझल जयवाक चाही? विद्यापति-संगीत परिभाषित कोना कएल जयवाक चाही? एतत्संबंधी कोनो स्वर-लिपि उपलब्ध अछि?

उत्तरः हमरा विचार सँ विद्यापतिक अधिकांश गीत पद; भजनबद्धगायन शैली एवं किछु गीत ग्रामीण गीत शैलीक अंतर्गत् बूझल जयवाक चाही। उदाहरण स्वरूप पद-गायन शैली मे-

1. नन्दक नन्दन कदम्बक तरुतर धिरे धिरे मुरली बजाव।

2. जय जय भैरवि असुर भयाउनि।

एवं अन्य श्रृंगार रस सँ सम्बन्धित पद। जेना-

क. कामिनी करय असनाने
ख. सुतलि छलौं हम घरवा रे
ग. अम्बर बदन झपाबह गोरी
घ. ससन परस खसु अम्बर रे,इत्यादि।

टइ तरहक पद व गीत मिथिला प्रदेश मे लगभग 60 व 70 वर्ष सं जे गाओल जाइत अछि एकर धुन अर्धांशस्त्रीय संगीतक अंतर्गत् एवाक चाही। परन्तु अइ पदक जे मिथिला मे गायन शैली छैक ओकर एक अलग स्वरूप छैक। जेकरा प्रादेशिक संगीत कहवाक चाही। जहांतक लोक संगीत तथा ग्रामीण संगीत सं संबंधित विद्यापतिक गीत अछि, जेना-

क. आगे माइ हम नहि आजु रहब एहि आंगन जो। बुढ़ होयता जमाय,
ख. हे भोलानाथ कखन हरब दुख मोर,
ग. उगना रे मोर कतय गेलाह,
घ. आज नाथ एक व्रत मोहि सुख लागत हे, इत्यादि।

ई गीत सब लोक संगीतक धुनक अंतर्गत गाओल जाइत अछि। यद्यपि अहू लोकधुन मे रागक दर्शन छैक मगर राग शास्त्र केर अभाव छैक। तें हेतु ई सब गीत लोक संगीत शैली मे अयवाक चाही।

उत्तर-1-ए. विद्यापति संगीतक कोनो भिन्न स्वरूप नहि अछि, केवल विद्यापति गीत मिथिला प्रादेशिक संगीत शैलीक अंतर्गत गाओल जाइत अछि। राग आओर ई

अर्धांशस्त्रीय एवं धुन प्रधान लोक संगीत राग गारा,राग पीलू, राग काफी, राग देस, राग तिलक कामोद इत्यादि राग सं सम्बन्धित अछि। अभिप्राय ई जे जेना सूर, तुलसी, कबीर इत्यादि संत कविक पद भिन्न-भिन्न तरह सं गाओल जाइत अछि अइसंत कवि सबहक कोनो खास अपन संगीत नहि छैन्हि जे कहल जाय जे ई सूर व तुलसी तथा कबीरक संगीत थीक, एही रूप सं विद्यापति संगीतक रूप मे बुझवाक चाही।

प्रश्नन-2. विद्यापति संगीत-परंपराक विषय मे आइध्रिक स्थिति पर अपनेक की विचार-विश्लेषण अछि ?

उत्तर-2. विद्यापति पदक सम्बन्ध मे हमर ई विचार अछि जे विद्यापतिक पद मैथिली भाषा मे अछि तें हेतु केवल मिथिला प्रदेश मे अइ पदक गायन प्रादेशिक संगीतक माध्यम सं होइत अछि। हँ, यदा कदा बंगाल प्रदेश मे बंगला कीर्तन मे अवश्य प्रयोग हाइत अछि। कहवाक अभिप्राय ई जे कोनो प्रादेशिक भाषा मे लिखल काव्य केर गुणवत्ताक आकलन ओइ काव्यक श्रृंब्द व साहित्य तथा भाव पर निर्भर करैत छैक। संगीत आकइ काव्य के रसमय एवं सौंदर्यवर्धन करइक हेतु परम आवश्यक तत्व अवश्य थिक परन्तु प्राथमिकता पदक थिकइ। मैथिली भाषा अत्यन्त सुकोमल भाषा अछि एवं अइ मे लालित्य अछि।आर संगीत सुकोमल भाषा मे अधिक आनन्द दायक होइत छैक।अही हेतु विद्यापति पद संगीतक माध्यम सं मिथिलाक संस्कृति मे विद्वान जन सं ल' क' जनसाधारण तकक मानस के प्रभावित क' क' अपन एक सुदृढ़ परम्परा बनौने अछि एवं मिथिलावासीक हेतु परिचय पत्र समान अछि। तें हेतु समस्त मैथिल समाजक ई परम कर्तव्य थीक जे अइ अमूल्य धन कें धरोहर जकां जोगा क' राखी।

प्रश्न-3. विद्यापति-संगीत आओर विद्यापति-गीत कें एकहि संग बूझल जयवाक चाही बा फराक क'? यदि हं तं किएक आ कोना ?

उत्तर : एहि प्रश्नक उत्तर उपरोक्त पहिल तथा दोसर क्रमांक मे लिखल गेल अछि। कृपया देखल जाय।

प्रश्नन-4. विद्यापति-संगीतक प्रतिनिधि गायक रूप मे अपने कें कोन-कोन कलाकार स्मरण छथि आ किएक ?

उत्तर : विद्यापति पदक गायक आइ सं किछु वर्ष पूर्व बहुत नीक नीक छलाह, जेना पंचोभक पं0 रामचन्द्र झा,पंचगछियाक श्री मांगन, तीरथनाथ झा, बलियाक पं0 गणेश झा, लगमाक पं0 अवध पाठक, श्री दरबारी ; नटुआ द्ध श्री अनुठिया; नटुआद्ध पं0 गंगा झा बलवा, श्री बटुक जी, आर पं0 चन्द्रशेखर खाँ, अमताक पं0 रामचतुर मलिक, पं0 विदुर मलिक, लहटाक पं0 रामस्वरूप झा, खजुराक पं0 मधुसूदन झा एवं नागेश्वर चैधरी, बड़ा गांवक पं0 बालगोविन्द झा, लखनौरक पं0बैद्यनाथ झा इत्यादि। वर्तमान मे जे गायक छथि हुनका सबहक नाम अइ प्रकार छनि-पं0 दिनेश झा पंचोभ, श्री उपेन्द्र यादव, अमताक पं0 अभयनारायण मलिक, पं0 प्रेमकुमार मलिक इत्यादि। उपरोक्त जतेक गायकक हम नाम लिखल अछि ई सब गायक अधिकारपूर्वक विद्यापतिक पद कें गबै वला छलाह एवं वर्तमान मे छथि। कियेक तं ई सब मिथिलावासी छथि। विद्यापति पदक अर्थ भाव पूर्ण रूप सं बूझि क' तहन प्रश्नकरैत छलाह व वर्तमान मे करैत छथि। तें हेतु ई सब गायक स्मरण करवा योग छथि।

प्रश्नन-5. पं0 रामचतुर मल्लिक, प्रो0 आनन्द मिश्र प्रभृत्ति तं इतिहास उल्लेखनीय छथिहे। किछु अन्यो गायकक नाम अपने कह' चाहब ?ओना मल्लिकजी तथा आनन्द बाबूक विद्यापति-गीत गायकी मे की किछु विशेष लगैत अछि जे अन्य गायक मे नहि ?

उत्तर : हम जतेक गायक क नाम लिखल अछि सब अपना-अपना स्तर सं नीक छलाह एवं नीक छथि। विद्यापतिक पद गायन मे राग गायकीक जेना बड़का बड़का आलाप व तान तें गाओल नहि जाइत छैक। विद्यापति पद गायन मे पदक अर्थ भाव ध्यान मे राखि सरसतापूर्वक गाओल जाइत छैक। अइ सम्इन्ध मे एक सं दोसर गायकक तुलना करइक आवश्यकता नहि। तथापि पं0 रामचन्द्र झा व श्री मांगनजी तथा पं0 रामचतुर मलिकजी,श्री बटुक जी,पं0 रामस्वरूप् झा,श्री दरबारी इत्यादि गायक बहुत प्रसिद्ध छलाह।

चूंकि प्रोफेसर आनन्द मिश्रजीकें हम कहियो गायन नहि सुनल तथा मिथिलाक गायक पंक्ति मे हुनक नाम हम नहि सुनल तें हेतु हुनका संबंध मे किछु लिखइ सं असमर्थ छी।

प्रश्न-6. विद्यापति-गीत मैथिली लोकगीत ध्रि कोना पहुंचल हेतैक ?एहि विषय मे अपनेक विश्लेषण की अछि?

उत्तर : विद्यापति गीत मैथिलीक दू तरहक भाषा मे रचल गेल अछि। एकटा मैथिलीक परिष्कृत भाषा मे रचल गेल अछि जेना-

1. नन्दक नन्दन कदम्बक तरुतर
2. अम्बर बदन झंपावह गोरी
3. उधसल केस कुसुम छिड़िआयल खण्डित अधरे। इत्यादि।

अइ तरहक मैथिलीक परिष्कृत भाषा मे जे गीत छैक से लोकगीत; ग्रामीण अंचलद्धधरि बहुत कम पहुँचलै।

जे गीत ग्रामीण भाषाक माध्यम सं रचल गेल छैक।जेना-

1. आ गे माइ हम नहि आजु रहब एहि आँगन जं बुढ़ होयता जमाय....
2. हे भोलानाथ कखन हरब दुख मोर
3. जोगिया भंगिया खाइत भेल रंगिया हो भोला बउड़हवा.
4. उगना रे मोर मोरा कतय गेलाह.

इत्यादि।

अइ तरहक जे गीत छैक से लोकगीत; ग्रामीण अंचलद्धधरि अधिक सं अधिक पहुँचलए। एक बात आर ई जे लोकभाषाक अधिक समकक्ष छैक तकरा जनाना सब अधिक गबैत छथि। हमरा बुझने विद्यापति गीत कें लोकगीत; ग्रामीण अंचलद्धधरि पहुँचइके यैह कारण थीक। दोसर बात ई जे अपन मातृभाषा

स्वभावतः बहुत प्रिय होइत छैक आर अपना मातृभाषाक माध्यम सं जे काव्य रचल जाइत छैक आर ओइ मे लालित्य आ आकर्षण छैक तं ओ अपनहि आप विद्वान जन सं ल' क'जनसाधारण तक प्रचारित भ' जाइत छैक। आर विद्यापति पद तं लौकिक व पारलौकिक दुनू दृष्टिसं अत्यन्त उच्च कोटिक रचल गेल अछि, तथा सब तरहक गीत रचल गेल अछि जेना-भक्ति, भक्ति श्रृंगार, लौकिक श्रृंगार, श्री राधाकृष्णकें विलासक अत्यन्त मधुर गीत, भगवान श्रृंकरक विवाह सं सम्बंधित जनसाधारण भाषाकके गीत एवं नचारी, समदाउनि, बटगवनी, तिरहुत इत्यादि तरहक गीतक रचना केने छथि जे लोकरंजनके हेतु उच्चकोटिक एवं गायन के वास्ते बनल छैक। ई तें बिना प्रयासहिं लोक मानस एवं लोकगीत धरि पहुँचि गेल गेल हेतैक।

प्रश्न-7. विद्यापति पदक मैथिली व्यवहार-गीत मे विलय होयवाक प्रक्रिया अपनेक दृष्टियें कोना आ की रहल हेतैक ?

उत्तर : हमरा बुझने इहो प्रश्न 6ठमे प्रश्न सं संबंधित अछि। तें ओही पर विचार कएल जाय।

प्रश्न-8. विद्यापतिक पद यदि मिथिलाक सर्वजातीय माने-सभ वर्ग आ समाजक लोक मे स्वीकृत छैक ? तं तकर कारण विद्यापति-पदक साहित्यिक गुण बा ओकर सांगीतिकता छैक आकि एकरा मे निहित कोनो आन तत्व आ विशेषता छैक ?

उत्तर : विद्यापति पद जे मिथिला समाजक सब वर्ग मे स्वीकृत छैक तकर मुख्य कारण विद्यापति पदक साहित्यिक गुण एवं सांगीतिक गुण दुनू छैक। मिथिला मे कवि विद्यापतिक पहिन्हुं तथा बादहु मे बहुत कवि भेलाह मगर जनसाधारण मे तं हुनकर क्यो नाम तक नहि जनैत अछि। परंतु विद्यापति एवं विद्यापति गीत के तं एहेन क्यो अभागल मिथिलावासी हेताह जे नहि जनइत हेताह। विद्यापति पदक प्रचार-प्रसार मे साहित्यिक व संगीतक गुण के अतिरिक्त आन कोनो तत्व व कारणक जे अपने चर्चा कएल अछि, अइ सम्बन्ध मे हम ई कहब जे कवि विद्यापति भगवान के परम भक्त छलाहं हुनका भक्ति सं प्रभावित भ' क' भगवान शंकर जिनका घर मे नौकर के काज करैत रहथिन एहेन भक्त कविक कावय मे तं प्रचार-प्रसार हेबाक सब सं महत्वपुर्ण तत्व एवं कारण हुनका आराध्यदेवक कृपा बुझवाक चाही। भगवानक भक्ति सं हुनकर हृदय ओतप्रोत छलन्हि तें ओ अपन काव्य मे लिखैत छथि-

क. बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे,

ख. हे भोलानाथ; बाबाद्धकखन हरब दुख मोर, इत्यादि।

ग. खास क' भगवान राधाकृष्णक भक्ति व भक्ति-शाृंगार रस जे ओ अपना काव्य मे दरसओ-लन्हि अछि ओ अत्यन्त हृदयस्पशर्ी तथा संगीतमय अछि।

प्रश्न-9. लोकगीत एवं व्यवहार-गीत मे तत्वतः की-की भेद मानल जयवाक चाही?

उत्तरः लोकभाषा एवं लोकधुन मे जे गीत गाओल जाइत छैक तकरा लोकगीत कहल जाइत छैक। आर व्यवहार गीत क जे अपने चर्चा कएल अछि इउ सम्बन्ध मे हमर कहब ई जे एकरा अंतर्गत संगीतक सब शैली आबि जाइत छैक। परंतु हमरा बुझना जाइत अछि जे व्यवहा गीत सं अपनेक अभिप्राय संस्कार गीत सं अछि। हमरा विचार सं लोकगीत एवं व्यवहार गीत दुनू के लोकसंगीत कहल जाइत छैक, अइ मे कोनो विशेष अंतर नइ छैक।

प्रश्न- 10. विद्यापति-संगीतक वर्तमान जे निश्चिते निराश कयनिहार अतः खेदजनक अछि। अपने कें तकर कारण की सब लगैत अछि ?

जखन कि बंगालक रवीन्द्र-संगीत-कला मे विद्यापति संगीत जकां कोनो प्रकारक पतनोन्मु-खता आइ पर्यन्त देखवा मे नहि अबैत अछि। तकरो कारण की आजुक उपभोक्तावाद, ब्जारवाद भू-मण्डलीकरण मात्रकें मानल जयवाक चाही बा आनो आन ऐतिहासिक, समाजा-आर्थिक परिस्थिति आ सामाजिक कारण आ परिवर्तन कें?

उत्तर : अइ सम्बन्ध मे हम ई कहब जे संपूर्ण भारत मे अपना संस्कृति के छोड़ै मे जतेक मैथिल अगुआयल छथि तेना अन्य कोनो प्रदेश नहि। जे मैथिल मिथिला सं बाहर अन्य प्रदेश मे आबि गेलाहय सब सं पहिने ओ अपन मातृभाषाक प्रति उदासीन भ' जाइत छथि आ अत्यंत हर्षपूर्वक ई कहैत छथि जे हमरा बच्चा के तं मैथिली बाजहि नहि अबैत छैक। अपना घर मे मैथिली नहि बजैत छथि। जखन अपना मातृभाषाक प्रति एहेन उदासीन छथि तहन अपना संस्कृति सं अपनहि आप दूर भ' जेताह। अपना माँ-बा पके डैडी व मम्मी अन्य के अन्टी व अंकल कहैक रेवाज भ' गेलै अछि तं हिनका सब सं की आश कयल जाय जे ई अपना संस्कृतिक रक्षा करताह। बंगाली, मद्रासी, पंजाबी, मराठी इत्यादि प्रदेशक लोक सब अपना संस्कृति के एखनहुं धरि संजोय क' रखने अछि। मगर पश्चिमी सभ्यताक प्रभाव सब सं अधिक मैथिल पर छन्हि ते हेतु मिथिला संस्कृति मे एहेन हानिकारक परिवर्तन देखाय पड़ैत अछि।

प्रश्न-11. अपनेक स्मृति मे कोनो गायकक गायन बा अन्य कोनो संदर्भ हो जेकर वर्णन अपने कर' चाही? हुनक विषय मे किछु सुनयवाक इच्छा हो।वर्तमान समेत आगां पीढ़ीक लाभ हेतैक। संगहि अपनेक किछु विशेष अभिमत जे देब'-कह' चाही।

उत्तर : हम शास्त्रीय संगीतक उपासक छी आर अत्यंत उदासीन भ' कहि रहल छी जे अपन मिथिला वर्तमान समय मे शास्त्रीय संगीत सं शून्य भ' रहल अछि। वर्तमान समय सं पहिने पं0 रामचतुर मलिक, पं0 बिदुर मलिक, पं0 सियाराम तिवारी, चूंकि पं0 सियाराम तिवारीक शिक्षा अमता गाम मे भेलन्हि तें हेतु हुनका मैथिल मानइ छियनि। पं0

चन्द्र शेखर खां,पं0 रघू झा, ई सब बहुत उच्च स्तरक गायक छलाह। खास क'क' पं0 रामचतुर मलिक, व पं0 सियाराम तिवारी तं इतिहासिक गायक छलाह ध्रुवपद शैलीक गायन मे। भावी पीढ़ीक शिक्षार्थी एवं जिज्ञासु के अइ गायक सबके जानइ के प्रयास व हिनका गायन व कार्यक सम्बंघ मे श्रोध करवाक चाही ताकि भावी पीढ़ी लाभान्वित एव धुरुवपद शैली गायनक विशेषता सं परिचित होथि।

जय मिथिला जय मैथिली, जय जय जानकी अम्ब।

जेहि रज मे मन्डन भेला, हरलन्हि शिव के दम्भ।

राजमोहन झा (प्रबोध सम्मान २००९) सँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार

खुलल दृष्टिसँ नहि भऽ रहल अछि समीक्षा : राजमोहन झा

साहित्यकार भाइ-साहेब राजमोहन झाक कैक टा कथा संग्रह आ चारि टा समालोचनात्मक पोथी लिखल छन्हि। मैथिली भाषामे हुनकर एहि योगदानकैं देखैत २००९ सालक प्रबोध सम्मान हुनका देल जाऽ रहल छन्हि। हुनकासँ मैथिलीक भूत, वर्तमान, भविष्य आ समीक्षाक गप, संग-संग पारिवारिक आ सामाजिक जिनगीक ताना-बानाक गप वरिष्ठ पत्रकार विनीत उत्पल बातचीत मे बुनलन्हि।



विनीत उत्पल : अहांक जन्म कतय भेल, दिन-वर्ष की छल?

राजमोहन झा : हमर जन्म गाम मे भेल, कुमार बाजितपुर (वैशाली)। साल छल १९३४, अगस्त माहक २७ तारीख।

विनीत उत्पल : आ प्रारंभिक लालन-पोषण ?

राजमोहन झा : प्रारंभिक लालन-पोषण गाम मे भेल। किछु दिनक बाद पटना आबि गेलहुं, आगू पटनेमे भेल।

विनीत उत्पल : शिक्षा-दीक्षा कतय भेल?

राजमोहन झा : प्रारंभिक शिक्षा तँ गाममे भेल। पटना अएलाक बाद टी.के. घोष एकेडमी मे आठवां मे नाम लिखेने रहि, जतय सऽ मैट्रिक पास केलहुं। एकर बादक पढाई पटना कालेज, पटनासँ भेल। हमर विषय मनोविज्ञानक संग-संग लाजिक, हिन्दी आ अर्थशास्त्र छल।

विनीत उत्पल : पितामह कतेक मोन छथि ?

राजमोहन झा : हमर पितामह जनार्दन झा संस्कृतक विद्वान छलाह। हुनकर मृत्यु १९५१ मे भेलनि। गाम मे हमर पढाई हुनकर संरक्षण मे भेल छल। मिडिल स्कूल तकक पढाई तँ हम गाम मे केने रहि। ओ मैथिली मे सेहो लिखैत रहथि। ताहि लेल हमहूँ मैथिलीमे लिखबाक लेल प्रेरित भेलहुँ। मैथिली साहित्य मे रूचि जागल। ओ कतेक ठाम घुमि-घुमि कऽ रचना केलथि। महावीर प्रसाद द्विवेदीक सरस्वतीक संपादन करैक संग ओ मिथिला मिहिरक संपादक सेहो रहथि। करीब एक सौ टा बंगला उपन्यासक हिन्दी मे अनुवाद केलथि, जाहि मे विषवृक्ष, देवी चौधराइन उपन्यास प्रमुख अछि।

विनीत उत्पल : साहित्यक प्रारंभिक प्रेरणा केकरा सँ भेटल ?

राजमोहन झा : प्रारंभिक प्रेरणा तँ पितामह सँ भेटल। पितामहे शिक्षाक आरम्भ करोलथि। गाममे मिडिल तक पढाई काल तक पितामहे गार्जियन रहथि। पटना एलहुं तऽ बाबूजीक (हरमोहन झा) संग रहलहुं।

विनीत उत्पल : घर मे किनका सँ अहां बेसी नजदीक रही ?

राजमोहन झा : पितामह संग पितामहीक सबसँ नजदीक रहि।

विनीत उत्पल : संस्कृत परंपरा सँ अंगरेजी परंपरा दिस कोना प्रवृत भेलहुँ?

राजमोहन झा : समय बदलैत गेल, पहिने लोक संस्कृत पढैत रहथि। संस्कृत धीरे-धीरे लुप्त होइत गेल। अंगरेजी शिक्षा स्थान लेलक आओर प्रभाव बढ़ैत गेल। तखन अंगरेजी आ हिन्दी दिस लोक झुकए लागल। हमहुं ओही दिस प्रवृत भेलहुँ।

विनीत उत्पल : साहित्य कए अतिरिक्तेक की पेशा छल ?

राजमोहन झा : इम्प्लायमेंट आफिसर रही। आब रिटायर्ड छी।

विनीत उत्पल : कोन-कोन शहर मे रहल छी ?

राजमोहन झा : जमशेदपुर, मुजफ्फरपुर, रांची, बोकारो, पटना, दिल्ली मे नौकरी काल रहलहुं। पाँच साल दिल्ली मे जनशक्ति भवन मे डिप्युटेशन पर रही।

विनीत उत्पल : कनि भाई-बहिनक संबंध मे बताऊ ?

राजमोहन झा : चार भाई आ एक बहिन छलहुं। दू भाईक मृत्यु भए गेल आ दू भाई छी एखन। सबसे पैघ हम छी। हमारा सऽ छोट कृष्ण मोहन झा रांची विश्वविद्यालय मे मनोविज्ञानक शिक्षक रहथि। तेसर भाई विश्वमोहन झा गाम मे रहथि। सबसे छोट मनमोहन झा सी.एम. कालेज, दरभंगा मे मनोविज्ञानक शिक्षक छथि। सबसँ जेठ बहिन ऊषा झा छलीह, जे दरभंगा मे छथि। बहनोई शैलेन्द्र मोहन झा १९९४ मे दिवंगत भए गेलाह। ओ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक अध्यक्ष छलाह।

विनीत उत्पल : बाल-बच्चा कए टा आ की करैत अछि ?

राजमोहन झा : तीन टा बेटी अछि। ब्याह केकरो नहि भेल अछि। सबसे

छोट मिनी झा टीचर छथि। जेठ बेटी ग्रेजुएशन क संग ब्यूटी-आर्ट एंड क्राफ्टक- ट्रेनिंग लेने छथि।

विनीत उत्पल : अहांक मनपसंद रचनाकार के छथि ?

राजमोहन झा : एकर निर्णय करब मुश्किल अछि। ललित, मायानंद, राजकमल चौधरीक लिखब लोक पसिन कए रहल अछि। आधुनिक मैथिली कए प्रारम्भ ओतहिसँ मानल जाइत छैक ।

विनीत उत्पल : अहांक अपन नीक रचना कोन ?

राजमोहन झा : सँ तँ आने लोक कहत। एकर निर्णय करब मुश्किल अछि। रचनाकार कोनो रचना करैये तँ अपन तरहे बेस्ट करैत अछि। जेकरा दिलसँ करब कहबै, ओ करैत छैक। सबसँ नीक देबाक कोशिश करैत छैक। कोनो रचना सुपरसीड करैत छैक, कोनो नहि करैत छैक। ई सब बहुत रास फेक्टर पर निर्भर करैत छैक।

विनीत उत्पल : अहांक पहिल रचना कोन छल ?

राजमोहन झा : रचनाक शुरुआत हम कविता सँ कएने रही। तखन हम बी.ए. मे रही, १९५४ क ई गप छी। ओकर बाद कविता लिखब एक तरहेँ बंद भए गेल। कविता लिखब छुटि गेल। हमर लेखकीय जीवनक दोसर फेज १९६५सँ शुरू भेल। एखन कथा हमर मुख्य विधा भए गेल अछि।

विनीत उत्पल : कोनो कविता सुनेबई ?

राजमोहन झा : कविता कए मन पारब नहि चाहब। ओहि ट्रेडिशन मे हम लिखैत रही जे ओहि समय मे लिखल जाइत रहय। हमर लेखनक शुरुआती दौर छल, ओहि समयक जे साहित्य प्रभाव सँ लिखल गेल, से रहए। अपने हमरा बुझाएल जे ई कोनो कर्मक नहि छैक, तकरा बाद हम ई लिखब बंद कए देलहुं।

विनीत उत्पल : कविता कोनो पत्रिका मे छपल ?

राजमोहन झा : कविता 'वैदेही' मे छपल। 'मिथिला मिहिर' आ 'मिथिला दर्शन' मे सेहो छपल.

विनीत उत्पल : आ कहानी ?

राजमोहन झा : मिथिला मिहिर मे मुख्यतः कहानी छपल। मिथिला दर्शन मे सेहो।

विनीत उत्पल : अपनेक रचना लिखब आ छपल मे बाबूजी (हरिमोहन झा) कए कतेक सहयोग रहल?

राजमोहन झा : बाबूजीक सहयोग किछु नहि रहल, प्रभाव रहल। बाबूजीक संग रचनाक गप करबाक प्रश्न नहि उठैत छल। हमर लेखन हुनकर प्रभावक अंतर्गत नहि छनि। हुनकर लेखन सँ इतर हमर लिखब शुरू भेल। एकरा मे दूनू गप अछि। हुनकर प्रभाव रहल आ नहियो रहल। हुनकर क्षेत्र सँ हम अपना कए अलग कए लेलहुं। ओना प्रभाव सँ अलग कोना कए सकैत छी।

विनीत उत्पल : 'आई-काल्हि-परसू' पर अकादमीक पुरस्कार ठीक समय पर भेटल वा नहि?

राजमोहन झा : ठीके समय पर भेटल। ई महत्वपूर्ण नहि छल की पहिने भेटबाक चाही छल या बाद मे भेटबाक चाही छल। मन मे एहन कोनो गप नहि छल।

विनीत उत्पल : साहित्यक अभियान मे पत्नीक कतेक सहयोग रहल ?

राजमोहन झा : साहित्य सँ ओतेक संप्रक्ति नहि छन्हि। सहयोग-असहयोग कए ताहि द्वारे प्रश्न नहि छैक।

विनीत उत्पल : हुनकर नहियर कतए भेलन्हि ?

राजमोहन झा : हमर सासुर तँ दिल्ली भेल। ससुरक पिता अलवर महाराजक चीफ जस्टिस रहथि। विवाह हमर दिल्ली मे भेल।

विनीत उत्पल : अहां कोन-कोन भाषा मे रचना केलहुं आ कतेक पोथी लिखलहुं?

राजमोहन झा : हिन्दी आ मैथिली मे हमर लेखन भेल। दस टा पोथी कथा संग्रह आ चारि टा समालोचनात्मक पोथी छैक.

विनीत उत्पल : भविष्यक की योजना अछि ?

राजमोहन झा : संस्मरण लिखबाक अछि। सुमनजी आ किरणजी पर लिखबाक बाकी अछि।

विनीत उत्पल : साहित्यक दावं-पेंच कए कतय तक बुझलियइ ?

राजमोहन झा : दांव-पेंच मैथिली मे नहि सभ भाषा मे चलैत रहैत छैक। ई कोनो नब गप नहि छी। एहि अर्थ मे प्रभावित भेलहुँ। ई तँ स्वाभाविक प्रक्रियाक रूप अछि। ओहिनो ई गप बेसी मेटर नहि करैत छैक।

विनीत उत्पल : कोन रचना एहन अछि जेकरा मे अहां केँ अपन आत्मकथ्य हुअए ?

राजमोहन झा : सभ रचना मे जीवनक अंश आबिए जाइत छैक। किया कि अनुभवक आधार पर लोक लिखय यै। अनुभवक अंश तँ रहबे करत। आत्मकथात्मकता तँ आबिये जाइत छैक।

विनीत उत्पल : 'निष्कासन' कथा तँ नहि छी आत्मकथात्मक ?

राजमोहन झा : स्पेशिफिक नहि करए चाहब। सभटा कथा मे कोनो-ने-कोनो रूपेण आत्मकथा भेटत।

विनीत उत्पल : समीक्षा लेल की कहब अछि ?

राजमोहन झा : समीक्षा खुलल दृष्टि सँ नहि भऽ रहल अछि। लोक अपन ईर्ष्या-द्वेष सँ रचना कए समीक्षा कए रहल अछि। निष्पक्ष व निर्भय भए कए समीक्षा नहि भए रहल अछि। आई-काल्हि जे समीक्षा भए रहल अछि ओहि मे धैर्यक अभाव अछि। ऑब्जेक्टिव नहि रहैत छैक लोक। जकरासँ रूष्ट रहए छथि तकर ठीक सँ समीक्षा नहि करैत छथि आ जकरा सँ नीक संबंध छैक ओकर

प्रसंग खूब उठाबैत छथि। समीक्षा लेल दृष्टि काज करैत छैक।

विनीत उत्पल : की समीक्षा करबा मे व्यक्तिगत आक्षेप आवश्यक अछि ?
राजमोहन झा : समीक्षक बुझैत छथि, जे हम समीक्षा कए रहल छी, तँ लेखक पर उपकार कए रहल छी, हुनका हम उपकृत कए रहल छी। एकांगी दृष्टिकोण बड़का फेक्टर अछि। समीक्षा मे रचनाक समीक्षा होएबाक चाही नहि कि व्यक्तिगत आक्षेप।

विनीत उत्पल : ई गप कहिया सँ छैक?
राजमोहन झा : पहिनो रहए, आबो छैक। संकीर्णता बेसी भए गेल अछि। हमर विचारे पहिने एतेक नहि छल जे एखन भए रहल छैक। अपन लोक कए घुसाबैक लेल मारामारी भए रहल छैक। हालत जेहन भए रहल छैक तकर विरोध होएबाक चाहि।

विनीत उत्पल : नवतुरुआक लेखनकेँ कोन दृष्टि सँ देखैत छी ?
राजमोहन झा : नबका लोक भाषाक दिस उदासीन छथि। बेसी लोककेँ भाषाक प्रति मोह नहि छनि, अपनत्व नहि छनि। जहिना-जहिना जेनरेशन आगू भेल, भाषाक उदासीनता बढ़ल गेल। बेसी लोक मैथिली बाजब छोडि देने छथि।

विनीत उत्पल : मैथिली मे दलित साहित्य लेल अहांक मंतव्य की ाछि ?
राजमोहन झा : साहित्य मे वर्गीकरण प्रवृति जे भए रहल अछि, ओ विखण्डित कए रहल अछि। साहित्य सृजनात्मकता सँ ध्यान हटा कए विशेष वर्ग पर ध्यान देबासँ साहित्य विखण्डित होएत। दलित कए लेखन मे अएबाक चाही।

विनीत उत्पल : स्त्री लेखक लेल की कहब अछि ?
राजमोहन झा : स्त्रीगण कए साहित्य लेखन मे जरूर अएबाक चाही। कोनो वर्गक लेल समग्र साहित्य कए विखण्डित नहि करबाक चाहि। खंडित दृष्टि नहि हेबाक चाहि। एकरा लेल चाही समग्र दृष्टि।

विनीत उत्पल : मैथिली भाषा मे स्त्री लेखकक संख्या किएक कम अछि ?
राजमोहन झा : सबहक मूल मे शिक्षा अछि। मिथिला मे स्त्री शिक्षाक प्रचार-प्रसार नहि भेल। सहभागिता आ सहृदयताक कमी रहल।

विनीत उत्पल : मैथिली केँ संविधानक आठम अनुसूचीमे शामिल हेबासँ विकासक लेल की कहब अछि ?
राजमोहन झा : जतय तक भाषाक प्रश्न छैक, संविधान संगे यूपीएससी परीक्षा मे शामिल होयबाक गप छैक, एकरा सँ किछु खास बल भेटहि बला नहि छैक। भाषाक समृद्धिक लेल समर्पण चाही। तकर ह्रास भए रहल अछि।

विनीत उत्पल : तखन की कएल जाए?
राजमोहन झा : मूल गप भाषामे प्रवृत बच्चा सभ हुअए। स्कूल सँ पहिने परिवार छैक। परिवार मे भाषाक समुचित स्थान देल जाए, तखने बच्चा सबहक विकासक संग भाषाक विकास होएत। ई गप धीरे-धीरे कम भए रहल अछि।

विनीत उत्पल : नवलोकक लेल कि कहब अछि ?
राजमोहन झा : हुनका सभ कए साहित्य सँ ओ लगाव नहि छनि जे पहिलुका लोक कए छल। जखन धरि नवलोक कए साहित्य सँ लगाव नहि होएत तखन धरि किछु नहि होइत। एकर बादे मैथिली कए उज्ज्वल भविष्य छैक।

विनीत उत्पल : एखुनका समीक्षा लेल की कहब अछि ?
राजमोहन झा : मूल वस्तु लोक छैक। समीक्षाक लेल यैह छैक। जाऽ तक लोक नहि बदलत, दृष्टिकोण नहि बदलत, ऑब्जेक्टिव नहि होएत, तखन धरि किछु नहि होएत। समीक्षाक लेल तटस्थता चाही, निरपेक्षता चाही।

विनीत उत्पल : मैथिली भाषाक प्रचार-प्रसार लेल की करबाक चाही ?
राजमोहन झा : ई निर्भर करत सरकार पर, ई काज बेसी नीक जकाँ कए सकैत अछि। सामूहिक प्रयास लोकक होएत, संस्था आगू आएत, तखन होएत। मैथिलीक नाम पर जे तमाशा होइत अछि, ओकरा बंद कई पड़त। लोक रुचि जगाबक लेल काज करए पड़त।

विनीत उत्पल : प्रचार-प्रसार लेल नवलोककेँ कोन दृष्टि सँ देखैत छी ?
राजमोहन झा : समय-समय पर सभ किछु बदलल। नव जनरेशन आयल। समय मे परिवर्तन भेल। अपन संस्कृति लेल, भाषाक लेल पहिलुक लोक मे समर्पण बेसी छल। जेना-जेना जनरेशन बदलल, समर्पण कम भए गेल। एक तरहे कहि सकैत छी जे वैश्विक सम्पूर्णता दिस बेसी बढ़ल गेल अछि, स्थानीयक विशिष्टता पाछु छुटि रहल अछि। ग्लोबल बेसी हुअए लागल लोक, लोकल गौण भए गेल। एकरा मे सामंजस्य रखबाक चाही। एकरा बूझए पड़त। विशिष्टता आ सारभौमता स्थानीयता मे छैक। सभ संग हेबाक चाही। अपन जे विशिष्टता छैक तकरा बिसरि जाइ सेहो उचित नहि छैक। सबहक संग-संग चलैत अपन विशिष्टता नहि छोड़बाक चाही।

विनीत उत्पल : लेखन में जीवनानुभवक की स्थान छैक ?
राजमोहन झा : जीवनानुभव लेखनक समस्त आधार छैक। अनुभव पक्ष शून्य रहत तँ अहां की लिखब। अहांक लिखब साहित्य नहि रहत।

विनीत उत्पल : आजुक युगक बाजारवादी दुनिया आ साहित्यक लेल की कहब अछि ?
राजमोहन झा : जावत अहां बेसिक नीड्स मे अपना कए सीमित राखब तखन की होएत। साहित्य आगूक चीज छैक। भौतिक साधना मे अपनाकेँ सीमित राखब तँ साहित्य दिस विमुखता उत्पन्न हेबे करत। ई मूल जरूरत छैक,

ई आवश्यक छैक, तकरा संग-संग नैतिक मूल्य साहित्यक लेल आवश्यक छैक। नैतिक मूल्यों उपेक्षित नहि रहए, ई पक्ष सबल हुअए। मूल जरूरत दिस लोकक बेसी ध्यान छैक, ई ट्रेंड चलि रहल छैक आ आगुओ ई रहत। जहिना-जहिना भौतिक सुख-सुविधा बढ़ल उच्च मूल्य मे ह्रास होइत गेल। ओहि दिस सँ देखब तँ राजनीति प्रमुख होइत गेल। दोसर पक्ष ई जे अध्यात्म पक्षक ह्रास होइत गेल, जखन विकास बढ़ल। भाषा मे तकनीकक विकास तँ भेल, मुदा जे मूल्य बेसी रहनि ओहिमे ह्रास भए रहल अछि। बाहरी विकास बढ़ला सँ जे विशिष्टता, जे स्मिता छैक ओ कम भेल। बहुत लोक कहि रहल छथि जे भाषा मरि रहल अछि, से ठीक कहैत छथि। घर सँ निष्कासित भए रहल छैक ई भाषा। पारिवारिक भाषा नहि रहल ई, मरबाक लक्षण छैक।

विनीत उत्पल : एकर उपाय की ?

राजमोहन झा : समयक धार कए कोनो प्रयास सँ बंद नहि कए सकैत छी। शिक्षाक विकास भेल अछि। पढ़ए बलाक संख्या बढ़ल। स्कूलक संख्या बढ़ल। जाहि अनुपात मे ई बढ़ल ओहि अनुपात मे आंतरिक मूल्य घटल। जानकारी तँ बेसी बढ़ि गेल अछि, सूचनात्मक ज्ञान बच्चामे जतेक बेसी छैक, ओहि उम्र मे ओहि जमाना मे नहि रहै। मुदा, ज्ञान धरले रहि गेल। शिक्षा मे जे विकास भेल अछि, ई वृद्धि संख्यात्मक अछि, गुणात्मक विकास नहि भेल अछि। ई बात सही छैक, जतेक स्कूलक संख्या बढ़ल, ज्ञान ओतबेक कम भए गेल।

विनीत उत्पल : तखन विकास ख़राब गप अछि ?

राजमोहन झा : स्त्री शिक्षा पहिने नहि रहए, काफी वृद्धि भेलए। मुदा, बहुत रास साइड इफेक्ट भेल। दवाई बढ़ल, साइड इफेक्ट मे वृद्धि भेल। ओकरा रोकबाक कोनो उपाय नहि भेल अछि।

विनीत उत्पल : अहां श्रेष्ट रचना ककरा कहब ?

राजमोहन झा : सर्वश्रेष्ट रचना ओ होयत अछि, जे ओहि युग बीत गेलाक बादो श्रेष्ट रहत अछि। कालजयी छैक। कायम रहैक छैक पोथी आ रचनाकार। सुमनजी, किरणजी, आरसी बाबू श्रेष्ट रचनाकार रहथि। हुनकर रचना एखनो श्रेष्ट मानल जाइत अछि।

विनीत उत्पल : एहन कोन रचना छैक जकरा फ़ुर्सत भेटला पर अहां बारंबार पढैत छी ? जखन मानसिक परेशानी रहैत अछि तखनो ?

राजमोहन झा : एहन कोनो पोथी नहि अछि। जखन जे भेट जाइत छैक, तकरे पढैत छी। मानसिक सुधाक शांति लेल जे पोथी उपलब्ध रहैत अछि सैह भऽ जाइत अछि।

विनीत उत्पल : मानसिक शांति लेल की करैत छी ?

राजमोहन झा : एहन कोनो काज नहि छैक। उपलब्धता पर हम कोनो काज करैत छी। लिखबाक मन होइत अछि तँ लिखियो लैत छी। मनक अनुरूप काज ताकि लैत छी।

विनीत उत्पल : साहित्यक रचनाक लेल की योजना अछि ?

राजमोहन झा : बाबूजीक रचनावली निकालबाक लेल सोचने छी। तीन खंड निकालि चुकल छी आ तीन खंड बाकी अछि। अपन तीन टा पोथी दिमाग मे अछि। पहिल-संस्मरण संग्रह आ दोसर आलोचनात्मक/समीक्षात्मक लेख संग्रहित करबाक अछि। तेसर ई जे कथा सभ छूटल छैक, लेख सभ सेहो छूटल छैक, ओकरा निकलबाक अछि।

विनीत उत्पल : जीवनक लेल की योजना अछि ?

राजमोहन झा : प्लानिंग क हिसाब सँ जीवन नहि चलैत छैक। पानि जहिना बाट ताकि लैत छैक, तहिना जीवन चलैत छैक। प्लानिंग सँ बहुत काजो नहि होइत अछि। एकर आवश्यकता सेहो नहि होइत अछि। प्लानिंगक अनुसार सभ काज भए जाइत, एहनो नहि होइत अछि। Men proposes God disposes. हम तँ सोचैत छी जे propose नहि कएल जाएत। एहिना जीवन छैक।

विनीत उत्पल : जीवन आ साहित्यक दृष्टि सँ अपनेक कोन समय सभसँ बेसी नीक छल?

राजमोहन झा : 1965 सँ 1975 धरि समय सबसँ नीक रहल, साहित्य दृष्टि सँ सेहो आ सामान्य दृष्टि सँ सेहो। ओकरा बाद खराबे कहि सकैत छी. कहिया धरि चलत नहि जनैत छी।

विनीत उत्पल : रचना करैत काल की ध्यान रखबाक चाही ?

राजमोहन झा : कालजयी रचना लेल कोनो सिद्धांत वा प्रशिक्षण नहि होइत अछि। साहित्य रचनाक लेल कोनो पाठ नहि होइत अछि। एकर कोनो उपयोगिता नहि होइत अछि। आन कलाक लेल स्कूल छैक। साहित्य लेल नहि छैक। कोनो एहन ट्रेनिंग स्कूल नहि छैक जे साहित्यकार बनायत। कोनो विज्ञापन नहि छैक जे छह मास मे ई चीज सिखा देत।

विनीत उत्पल : मैथिली सहित्य मे नव लेखक कें की सुझाव देब ?

राजमोहन झा : मार्गदर्शन आ सुझावक पक्ष मे हम नहि छी। जिनका मे ओ प्रतिभा/योग्यता होएत, ओ अपन बाट ताकि लेताह। सिखओने सँ कियो सीखबो नहि करत। मूल वस्तु अनुभव छैक. अनुभव संपन्न छी, अनुभवक संवेदनाक पकड़बाक हुनर अछि। से लेखक मे अंतर्निहित रहैत छैक । रचनाक लेल अनुभव करबाक तागति जरूरी छैक। तकरा बिना लेखन नहि होएत। अभिव्यक्तिक देबाक लेल कौशल आ भाषा हेबाक चाही। जतय ई विकास होएत, सफ़ल होएत। प्रशिक्षण वा मार्गदर्शनक जरूरत नहि छैक।

***विनीत उत्पल : प्रबोध सम्मान 2009 प्राप्त करबाक लेल बधाई।**

आभाष लाभ

अन्तर्वाता

(२०२८ सालमें डा.राजेन्द्र विमल आ श्रीमति विणा विमलक सन्तानक रुपमें जनकपुरक देवीचौकक निवासमें जन्म लऽ २२ वर्ष पहिने सँ निरन्तर मैथिली गीत सँगितक आकाशमें ध्रुवतारा जकाँ चमकैत रहऽबला एकटा मिथिलाक बेटा छथि, गायक आभाष लाभ। बाल्येवस्था सँ विभिन्न मँच सबपर अपन आवाज सँ दर्शक श्रोता सबके हृदयमें वास कयनिहार आभाष लाभ, मैथिली आ मिथिला सँ सम्बन्ध रखनिहारकलेल चीरपरिचीत नाम अछि। प्रस्तुत अछि, गायक आभाष लाभ सँगक भेल बातचीतक प्रमुख आश)

१. आभाष जी गीत सँगीतमें कहिया सँ लगलहुँ?

कहिया सँ लगलहुँ से त नईं बुझल अछि, मूदा बच्चे सँ जनकपुर आ लऽग परोसक गाँव सबहक एकौटा मञ्च हमरासँ नई छुटैत छल।

२. पहिलबेर आहाँक रेकर्डेड गीत कोन अछि

पहिलबेर हम नेपाल सँ बहराएल अशोक चौधरीक मैथिली कैसेट पानस में गीत गएने छलहुँ।

३. मैथिली गीत सँगीतक अवस्था केहन बुझा रहल अछि?

जतेक होयबाक चाही ओतेक सँतोष जनक नहि अछि। नव नव प्रतिभा जाहि तरहें एबाक चाही, नई आबि रहल छैक। दोसर बात अखन प्रविधि एतेक परफेक्ट भऽगेल छैक जे पाइ सेहो वड खर्च होइत छैक ।

४. की बुझाइया, मैथिली गीत सँगीतमें लागिकऽ अखनुक युगमें बाँचल जा सकैत अछि

एकदम नीक जकाँ बाँचल जा सकैया एही क्षेत्रमें लागिकऽ। मैथिलीक क्षेत्र बहुत पैघ छियै। जौं मेहनतिसँ नीक काज कएल जाए त मैथिलीयो सँगीतक क्षेत्रमें बहुत पाई छै। उदाहरण लऽ सकैत छी, हमरे सबहक कैसेट ''रे छौंडा तोरा बज्जर खसतौ''के जे १५ लाख प्रति बिकाएल छल। तहिना ''गीत घरघर के'' जे जहिया सँ बहरायल तहिया सँ आइयोधरि बिकाइते अछि। हँ, काज नीक होयबाक चाही।

५. प्यारोडीके प्रभाव केहन पडि रहल छैक मैथिली गीत सँगीत पर?

प्यारोडी मौलिकके साफ साफ खतम कऽ दैत छैक। गीत सँगीतक क्षेत्रमें लागल श्रष्टा सबके मनोवलके तोडिकऽ राखिदेने छैक प्यारोडी गीतसब।

६. प्यारोडी गीत सँगीत सँ पिण्ड छुटबाक उपाय की

देखियौ, जखन अपन सँगीत या गीत नई हुए तखन प्यारोडीके किछु हद धरि पचाओल जाऽ सकैया, मूदा मैथिलीमे अपन मौलिक सँगीतक आभाव त कहियो नई रहलै। जहाँतक प्यारोडी गीत सँगीत सँ पिण्ड छुटेवाक बात छई त अइमे आम जे श्रोता सब छथि, जे वास्तविक रुपमें चाहैत छथि की अप्पन मौलिक सँगीतक विकास होइ, हूनका सबके प्यारोडी गीतके निरुत्साहित करबाकलेल ताहि प्रकारक क्यासेट किनऽसँ परहेज करऽ पडतन्हि आ सँचार माध्यम सबके सेहो ओहन गीत बजेवा सँ बचऽ पडतन्हि, तखने ई सँभव अछि।

७. नेपालीय आ भारतीय मिथिलाञ्चलमें मैथिलीक बहुत रास काज भऽ रहल छैक, की अन्तर बुझाऽ रहल अछि दूनु देशक मैथिलीक काजमे

हम त मात्र एतबा बुझैत छियै जे एकटा हमर सहोदरा विदेशमे कमाऽरहल अछि आ हम नेपालमे। दूनु ठाम अपना अपना तरहें काज भऽरहल अछि एतबे बुझु।

८. अखन सऽभ भाषाक गीतमे रिमिक्सके बाढि आएल बुझाति छई, एकरा कोन रुप सँ आहाँ देखैत छियै?

बहुत नीकबात छई रिमिक्स गीत औनाई। समय अनुसार आधुनिकीकरण होयबाके चाही। समाजकलेल आ बजारकलेल गीत गौनाई दूनु दूटा बात छियै, ताहिमें गीत सँगीतक व्यावसायीकरणमे रिमिक्स बहुत नीक सँकेत छई। रिमिक्स गीत बहरेवाक चाही बशर्ते अपन सँस्कार नई लुप्त भऽ जाई ताइके ध्यानमें रखैत।

९. अखनधरि कतेक गीत गएलहुँ जे रेकर्डेड अछि?

अखनधरि लगभग साढे तीनसय गीत हम गाबि चुकल छी जे रेकर्डेड अछि।

१०. क्यासेटके अलावा कोन फिल्ममें अपन स्वर देने छी आहाँ ?

मैथिलीमे दहेज,ममता,प्रितम,आशिर्वाद फिल्ममे, तहिना भोजपुरी फिल्मसब सजना के आगना, ममता, तहार गलिया आदिमे ।

११. स्टेज शो के सीलसीलामे कतऽ कतऽ गेलहुँ?

अपन देश नेपालक लगभग सबठामके अलावा, कतार (४बेर), दूवई (२बेर), मलेशिया, पाकिस्तान, बंगलादेश, भारतक विभिन्न शहरमें अखन धरि जाऽचुकल छी।

१२. नव की आबि रहल अछि मैथिल श्रोता सबहक लेल?

बहुत जल्दिए निखिल राजेन्द्रक सँगीतमे भेनस क्यासेट सँ रिलिज भऽ रहल अछि....

(सौजन्य: मनोज मुक्ति)



डा. राम दयाल राकेश

अन्तर्वार्ता

सरकारके ध्यान छठि पावनिपर देवाक चाही.....डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)

छठि पावनि मधेसक संस्कृति किएक मानल जाईत अछि ?

छठि पावनिक अपने मौलिक विशेषता छइ,, ई पावनि शुरु होबऽ सँ एकमहिना पहिने सँ पावनि कयनिहार सब तैयारी मे लाईग जाईत छथि । एकर तैयारी आ पूजाके जौं देखल जाय त अईमे विशुद्ध मधेसी संस्कृति पाओल जाईत अछि। पावनि केनिहार सँ लएकए ओहि तैयारीमे लागल हरेक व्यक्ति ओ संस्कृतिमे भीजल रहल पाओल जाइत अछि। ओकर प्रसाद सँ लऽक हरेक सामगी्रमे मधेसक संस्कृति देखल जाईत छक, ओ पावनिके अवसरमे गावै वाला विभिन्न धुन तथा गीत सब मैथिल संस्कृतिमे गाओल जाईत अछि।

ई पावनि कियाक मनाओल जाईत अछि ?

एकर अपने पहिचान आ विशेषता छैक। सब पावनि सँ अई पावनिके अपने इतिहास छैक किया त कोनो पावनि एसगरे अपना घर परिवार मे रहिकऽ मनाओल जाइत अछि मुदा ई एकटा एहन पावनि अछि जे खुला जगहमे सामूहिक रुप सँ मनाओल जाइत अछि। अई पावन के मात्रे लोकतान्त्रीक पावनि कहल जा सकैय कियाक त अई पावनि मे कोनो भेदभाव उच्च नीच, जात भात नई देखल जाइत अछि। अई पावनिमे सूर्यके पुजा भेलाके कारण आओर एकर गरीमा के उच्च देखल जा सकैय। सूर्य जहिना ककरो पर भेदभाव नई क कऽ सम्पूर्ण जगतके रोशनी प्रदान करैत अछि, तहिना छठि पावनि सब के एक समान रुप सँ देखैत आईव रहल छैक।

ई पावनि अपना परीवार के सुख समृद्धिके लेल तथा कोनो रोग व्यधा नई लागै से मनोकामना सँ मनाओल जाइत अछि। भोर आ साँझक सूर्यके किरणमे एक प्रकारके गरीमा होईत अछि जकरा रोशनी सँ शरीरमे रहल विभिन्न विमारी फैलाब वाला किटाणु सबके नष्ट सेहो करैत चर्मरोग सँ बचाबैत अछि। चर्म रोगके अचुक दवाई मानल जाईत अछि छठि पावनि।

छठि पर्व मे महिला सब अपना आचरा पर नटुवा कियाक नचवैत छैथ?

एकरा एकटा श्रद्धाके रुपमे लेल जा सकैय, छठि माताके ध्यानमे राखि क कोनो किसीमके मनोकमना केला सँ जौं ओ पुरा भ जाईछै त ओई देवता पर आरो श्रद्धा बैढ जाईछै आ ओहि किसीमके कौबुला क क अपना आँचर पर नटुवा नचवैत छैथ।

छठिक घाट पर चमार जाईत सब ढोल(डुगडुगीया) बजावैत छथि, ओकर कि विशेषता अछि ?

ओकरो जातिय तथा संस्कृति परिचयके रुपमे लेल जा सकैय, ओ जाईत सब अपन संस्कृति आ संस्कारके बचएबाक लेल ओ काज क रहल अछि। ओ ढोल बजला सँ घाट पर कतेक मधुरता आ रौनक महशुस होईत रहैत अछि, ओना त कते लोक सब अग्रेजी वाजा बाजा क पावैन मानावैत छैथ मुदा जतेक ढोल पीपही के आवाजमे संस्कृति के झलक भेटैत अछि ओते कोनो बाजामे नई।

अई पावनि मे सूर्यके पुजा होईतो पर छठि माता या छईठ परमेश्वरीके नाम सँ कियाक जानल जाईत अछि ?

सूर्यके अर्थ उषा होईत अछि, उषा भगवतिके रुपमे पुजलाके कारण एकरा छठी माताके रुपमे सम्बोधन कायल जाइत छैक। ओना त स्पष्ट रुपमे कतौ ने अई विषयमे चर्चा भेल अछि लेकीन किछ शास्त्रमे महाभारत के कुन्ति शुरुमे छठि पावनि केने रहैथ ओही दिन सँ छठि पावनि शुरु भेल अछि से कतौ कतौ उल्लेख पाएल जाईत अछि।

दिनकर के आ जलके कि सम्बन्ध अछि ? जल के आ दिनानाथके बहुत गहिर सम्बन्ध अछि, बिना जलके दिनकरके पुजे नई भऽ सकैय हुनका खुश करबाक लेल जल चाहबेटा करी। छठिएके उदाहरणके रुपमे लऽ लिय, ओ पावनि बिना जल के नई भऽ सकैय कोनो जलासय नई भेला पर अपना घरमे खधिया खनि क ओइमे जल राईख क पावनि सम्पन्न करैत अछि, कियाक त दिनानाथे सूर्य छथि। एकटा एहो कहि सकै छि कि सूर्य मे बहूत गर्मी भेला के कारण जल के अर्घ देला सँ ओ किछ ठन्ढा होइत छैथ।

लोकतान्त्रिक गणतन्त्रमे छठि पावनिके संस्कृतिके बारे मे अपने कि कहब अछि ?

हम गणतन्त्र नई कहिक लोकतन्त्रके चर्चा करैत ई कहव कि छठि एकटा विशुद्ध लोकतान्त्रिक पावन अछि, समानुपातिक ढगं सँ एकरा मनाओल जाइत अछि। सामूहिक रुपमे मनबाक सँगहि अई मे कोनो भेद भाव नई होइत अछि। गरीब सँ लक धनीक तक सब एकरा समान ढगं मनावैत अछि।जनता गणतन्त्रके रस्ता चलनाई शूरु कदेलक मुदा सरकार अखुनो पाछा परल अछि। अखनो मधेसी पहाडी बीच दलित गैर दलित बीच, गरीब धनीकके बीच भेदभाव अछि, कि एकरे गणतन्त्र कहबै ? नवका नेपाल बनाबऽ लागल नेतागण सबके छठि पावनि सँ किछ सिखवाक चाहि।

(सौजन्य: मनोज मुक्ति)



शिव प्रसाद यादव

साहित्य मनीषी मायानन्द मिश्रसँ



साक्षात्कार

शिव प्रसाद यादव द्वारा। डॉ. श्री शिवप्रसाद यादव, मारवाड़ी महाविद्यालय भागलपुरमे मैथिली विभागाध्यक्ष छथि।

भागलपुरक नामी-गामी विशाल सरोवर 'भैरवा तालाब'। जे परोपट्टामे रोहु माछक लेल प्रसिद्ध अछि। कारण एहि पोखरिक माँछ बड़ स्वादिष्ट। किएक ने! चौगामाक गाय-महींसक एक मात्र चारागाह आर स्नानागार भैरबा पोखड़िक महाड़। दक्षिणबड़िया महाड़ पर मारवाड़ी महाविद्यालय छात्रावास। छात्रावासक प्रांगणमे हमर (अधीक्षक) निवास। आवासक प्रवेश द्वार पर लुक-खुक करैत साँझमे बुलारोक धाप। हॉर्नक ध्वनि सुनि दौड़ि कए घरसँ बहार भेलहुँ। दर्शन देलनि मिथिलाक त्रिपूर्ति, महान विभूति- दिव्य रूप। सौम्य ललाट। ताहि पर चाननक ठोप, भव्य परिधान। ताहि पर मिथिलाक पाग देखितहि मोन भेल बाग-बाग। नहुँ-नहुँ उतरलनि- साहित्य मनीषी मायानन्द, महेन्द्र ओऽ धीरेन्द्र। गुरुवर लोकनिक शुभागमनसँ घर-आँगन सोहावन भए गेल। हृदय उमंग आ उल्लाससँ भरि गेल। मोन प्रसन्न ओऽ प्रमुदित भए उठल। गुरुवर आसन ग्रहण कएलनि, यथा साध्य स्वागत भेलनि। तदुपरान्त भेंटवार्ताक क्रम आरम्भ भए गेल। प्रस्तुत अछि हुनक समस्त साहित्य-संसारमे समाहित भेंटवार्ताक ई अंश:-

प्र. 'मिथि-मालिनी' कें अपने आद्योपान्त पढ़ल। एकर समृद्धिक लेल किछु सुझाव?

उ. 'मिथि मालिनी' स्वयं सुविचारित रूपें चलि रहल अछि। स्थानीय पत्रिका-प्रसंग हमर सभ दिनसँ विचार रहल अछि जे एहिमे स्थापित लेखकक संगहि स्थानीय लेखक-मंडलकें सेहो अधिकाधिक प्रोत्साहन भेटक चाही। एहिमे स्थानीय उपभाषाक रचनाक सेहो प्रकाशन होमक चाही। एहिसँ पारस्परिक संगठनात्मक भावनाक विकास होयत।

प्र. 'मिथिला परिषद' द्वारा आयोजित विद्यापति स्मृति पर्व समारोहमे अपनेकें सम्मानित कएल गेल। प्रतिक्रिया?

उ. हम तँ सभ दिनसँ मैथिलीक सिपाही रहलहुँ अछि। सम्मान तँ सेनापतिक होइत छैक, तथापि हमरा सन सामान्यक प्रति अपने लोकनिक स्नेह-भाव हमरा लेल गौरवक वस्तु भेल आ मिथिला परिषदक महानताक सूचक। हमरा प्रसन्न्ता अछि।

प्र. अपने साहित्य सृजन दिशि कहियासँ उन्मुख भेलहुँ?

उ. तत्कालीन भागलपुर जिलाक सुपौलमे सन् ४४-४५ मे अक्षर पुरुष पं रामकृष्ण झा 'किसुन' द्वारा मिथिला पुस्तकालयक स्थापना भेल छल तकर हम सातम-आठम वर्गसँ मैट्रिक धरि अर्थात् ४६-४७ ई सँ ४९-५० ई.धरि नियमित पाठक रही। एहि अध्ययनसँ लेखनक प्रेरणा भेटल तथा सन् ४९ ई. सँ मैथिलीमे लेख लिखऽ लगलहुँ जे कालान्तरमे भाङक लोटाक नामे प्रकाशितो भेल सन् ५१ ई. मे। हम तकर बादे मंच सभपर कविता पढ़ऽ लगलहुँ।

प्र. अपने हिन्दी एवं मैथिली दुनू विषयसँ एम.ए. कएल। पहिल एम.ए. कोन विषयमे भेल?

उ. मैट्रिकमे मैथिली छल किन्तु सन् ५० ई. मे सी.एम. कॉलेज दरभंगामे नाम लिखेबा काल कहल गेल जे मैथिलीक प्रावधान नहि अछि। तँ हिन्दी रखलहुँ। तँ रेडियो, पटनामे काज करैत, सन् ६० ई. मे पहिने हिन्दीमे, तखन सन् ६१ ई. मे मैथिलीमे एम. ए. कएलहुँ।

प्र. हिन्दी साहित्यमे प्रथम रचना की थीक आ कहिया प्रकाशित भेल।

उ. हिन्दीक हमर पहिल रचना थिक, 'माटी के लोक: सोने की नया' जे कोसीक विभीषिका पर आधारित उपन्यास थिक आ जे सन् ६७ ई. मे राजकमल प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल।

प्र.अपनेक हिन्दी साहित्यमे १. प्रथम शैल पुत्री च २. मंत्रपुत्र ३. पुरोहित ४. स्त्रीधन ५. माटी के लोक सोने की नैया, पाँच गोट उपन्यास प्रकाशित अछि। एहिमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपन्यास कोन अछि आओर किएक?

उ. अपन रचनाक प्रसंग स्वयं लेखक की मंतव्य दऽ सकैत अछि? ई काज तँ थिक पाठक आ समीक्षक लोकनिक। एना, हिन्दी जगतमे हमर सभ ऐतिहासिक उपन्यास चर्चित रहल अछि। अधिक हिन्दी समीक्षक प्रशंसे कएने छथि। गत वर्षसँ हिन्दीक सम्राट प्रो. नामवर सिंह जी हिन्दीक श्रेष्ठ उपन्यास पर एकटा विशिष्ट कार्य कऽ रहल छथि, जाहिमे हमर प्रथम शैल-पुत्री नामक प्रगैतिहासिक कालीन उपन्यास सेहो संकलित भऽ रहल अछि। एहि उपन्यास पर विस्तृत समीक्षा लिखने छथि जयपुर युनिवर्सिटीक डॉ शंभु गुप्त तथा हम स्वयं लिखने छी एहि उपन्यासक प्रसंग अपन मंतव्य। ई पुस्तक राजकमल प्रकाशनसँ छपि रहल अछि। असलमे प्रथम शैलपुत्री' मे अछि भारतीय आदिम मानव सभ्यताक विकासक कथाक्रम- जे कालान्तरमे हड़प्पा अथवा सैंधव सभ्यताक निर्माण करैत अछि जकर क्रमशः अंत होइत अछि। हम स्वयं एकरा अपन सफल रचना मानैत छी, समीक्षको मानि रहलाह अछि। एना, पुरोहित अपना नीक लगैत अछि। 'स्त्रीधन' मिथिलाक इतिहास पर अछि।

अबू सुथार

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

गृहमोह

गंध पहिल बुन्नीक
आ हम
बैसि आ
पसारी एक-दोसराक दिस

भेदित पड़पड़ाइत बुन्नीक बुन्द
बलुआही माटि भेल
यथार्थ छननी

आएल प्रखर रौदक फोका
पाथरक चामपर

अविलम्ब
झझायत
छातक खपराक भूर
धारक संग उगडुम करत
नवतुरिआ बरद कछेरपर नाचत।
सभटा गलीमे
बरद सभ आनत पानि
सोलह टा पालो बान्हि गरदनिमे
सभ घरमे
धरनि सभ नहाएत जी भरि
देबालपर
गाछक छातीपर
स्मृतिक शिलालेखपर
हदसैत पानि
खोलत
हस्ताक्षर भगवानक पूर्वजक।

बरखाक संगे
चमकैत आकाश
माएक कोमल तरहत्थी।
सूर्य करत आच्छादित
वृक्षक
शाखाक
पातक
पँखुडिक।
टाँगल पक्षिक आवास
सभ गृहक बाहर
मयूर सभ करत नृत्य।
जेना प्रिय नव वधु
मयूरीक माथपरक जलक घट
गामक दोगहीसँ निकलत
अनबा लए पानि
छिटैत नहक आकारक झील
वैतरणी डुमाएत
रीढ़युक्त नागफनीक पात।

संग
जीव आ शिव
करत अष्टमी आ एकादशी
चन्द्रमा उगत
चुट्टीक कटगर पीठपर
आ
चाली सभ बहराएत
आडम्बरसँ राजसी मुकुट धेने

सत्ये
किछु अकठ अछि हमरा सभक भाग्यमे
आइ

आइ
गंध पहिल अछारक
आ हम
बैसि आ
पसरैत एक दोसरामे।



श्री आद्याचरण झा (१९२०-) ।

मंगरौनी। संस्कृतक महान विद्वान। मैथिलीमे मिहिर, बटुक, वैदेहीमे रचना प्रकाशित। दरभंगा संस्कृत वि.वि. केर प्रतिकुलपति। राष्ट्रपतिसँ सम्मान प्राप्त।

भगवत्याः सीतायाः संरक्षकोजनकः- "विदेह"- एकं महनीयं विवरणम्

१. मिथिला राजधान्यां जनकपुरे एकदा महर्षिः अष्टावक्रः समायातः। तेषां वकॄ शरीरं दृष्ट्वा तत्र समुपस्थिताः जनाः हसितवन्तः। तं दृष्ट्वा महर्षिः उक्तवान्- अत्रत्याः जनाः केवलं व्आह्य रूपं शरीरं पश्यन्ति।आत्मानं न जानन्ति। एतेषां नागारिकाणां भवान् कथं "विदेहः" इति ज्ञातुं न शक्नोति।

२. महाराजः जनकः उक्तवान्- यथार्थता इयं नास्ति। केवलं वक्र शरीरम् अवलोक्य विद्वांसः हसितवन्तः, किन्तु सर्वे महान्तः ज्ञानिनः सन्ति।

३. "विदेह" उक्तवान्- भवन्तां मस्तके जटायां एकस्मिन् पात्रे जलं प्रपूर्य स्थापयामि। भवता सह एकः मनीषी गच्छति। भवन्तः सम्पूर्णं राजभवनं भ्रमन्तु (पश्यन्तु)। किन्तु पात्रस्थं जलं यदि एकं विन्दुं यत्र पतिष्यति ततः एव परावर्तयिष्यति स विद्वान्।

४. महर्षिः अष्टावक्रः समग्रं राजप्रासादं पश्यन्-भ्रमन् परावर्तितः। महाराजेन जनकेन पृष्टम्। किं राजभवनं दृष्टवन्तः भवन्तः? महर्षिणा कथितम्- 'राजभवनं न भ्रमितं, किन्तु मम ध्यानं जलविन्दु पतने आसीत्, न किमपि दृष्टम्।

५. विदेहः जनकः कथितवान्- 'भवन्तः जिज्ञासायाः समाधानं तु जातम्। भवन्तः समग्रं राजभवनं भ्रमन्तः न किमपि दृष्टवन्तः। तर्थेवाहं सर्वाणि कार्याणि कुर्वन् न तत्र मनसा- आत्मना च संलग्नः अस्मि।

महर्षिः समायाचनां कृत्वा परावर्तितवान्। उपर्युक्त घटनाचक्रं प्रमाणयति यत् मनः एव सर्वं करोमि। 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः"- श्रीमदभगवद्गीता.."

अजय सरवैया

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

अहाँक तामस हमर स्वागतपथ

''अहाँ आवेष्टित छी प्रतिध्वनि आ मोहक स्वरसँ''. पाब्लो नेरुदा
चक्रधर आ पीयुषक लेल

''कहाँ धरि हम खिचैत रहब एना''? ओ पूछत
आद्र मुखसँ
हेराएल आँखिसँ
हम राखब सोझाँ शब्दकेँ, ओ रखतीह नियमावली
हम करब सोझाँ अपन इच्छा,
ओ भ्रमकेँ
हम देबन्हि मेघ, ओ चक्र
हम आनब प्रश्न, ओ पलायन
हम प्रतिभाक प्रेमी, ओ बन्धनक
हम स्वप्नक आकांक्षी, ओ
निर्जनताक
कहिया धरि? हम बुझलहुँ नीक जकाँ
हमर भाग्य रहए फराक
हमरा सभक दिन राति सेहो
ऋतु आ पाबनि तिहार जकाँ
समय काल हमरा सभक अन्तर
हमरा सभक विभिन्नता रहए
विभिन्न

हमरा सभ प्रेम करैत रही
कतेक दिन धरि?



अजीत कुमार झा

गोवराही, दुहबी-6, धनुषा, कनकपुर नेपाल। सम्प्रति, हानवेल, यूके.मे अध्ययन

काका काकी दहेज लेलथि

कक्का भोरे बिदा भेलाह
जीट-जाट आ कान्हि छटा
पुछलहुँ कक्का एना कतए
कहल जे जाइ काल टोक नञि ने
अबए छी कने बजार भेने
मीठ पकवान आ मिठाई नेने
एम्हर काकी घरकेँ नीपल
सर सफाई कका चमका रहल
कोन अवसर जे एना भ' की रहल
पुछलहुँ जे काकीसँ कहलनि
बौआ आइ घटक आबि रहल
अच्छा तँ दोकानक सजावट छी ई
ग्राहकक स्वागतक तैयारी छी ई
सभ किछु आइ नव तँ लागि रहल
भाइजीयोक मुँह चमकि रहल
कान्हि छटाक' केश रँगा क'
पान चबाबैत कुर्तामे बान्हल
जतेक बढ़िया समान ततबे बढ़िया दाम
बनीमाक राज कक्काक' खूब नीकसँ बुझल
घटक जी अएला निहारि क' देखला
ठोकि बजा क' सभ किछु परखला
भाइजीपर ओ' फेर बोली लगेलथि
मोल तोल कँ ल' क' खूब भेल घमर्थन
सवा चारि लाखमे भेल बात पक्का
देखू आजु हम्मर भैप्पा बिकेलथि
लागनिक सूद-मूर सभ उप्पर भेलन्हि
जमा-पूँजीकेँ खूब नीकसँ भजओलथि
कक्का काकी आइ हमर दहेज लेलथि
निमुख बरद जेकाँ भैय्या बिकेलथि
कक्का काकी आइ हमर दहेज लेलथि



अमित कुमार झा,

चैनपुर, सहरसा

बुढ़ी माता

अपन परिवार- माँ, बाबूजी, भाइ, बहिन) संग पटनाक शेखपुरामे रहैत रही, बाबूजी पी.डब्लू. डी. मे एस.डी.ओ. एकटा प्रसिद्ध ईमानदार अधिकारी रहथि, सभसँ पैघ भैया पी.एच.ई.डी.दुमकामे पोस्टेड रहथि। हम सेंट जेवियर्स स्कूल, गाँधी मैदानसँ बारहमा करैत रही, पढ़ाइ-लिखाइमे बहुत नीक रही, पढ़ाइ-लिखाइक अलावा कोनो काज नहि रहए, ओइ पढ़ाइ-लिखाइक कारण हम बहुत कम उम्रमे नीक पद- मैनेजर बिरला ग्रुप- पर छी, हमर किछु दोस्त रहए जे ओहि समयक पैघ राजनीतिक परिवारसँ संबंधित छलाह- एहि विषयमे बादमे कहब-आइक तिथिमे सेहो बहुत पैध स्थानपर छथि। बारहमाक संगहि राम मनोहर राय, एस.पी.वर्मा रोड, पटनासँ मेडिकल एन्ट्रेंसक तैयारी सेहो करैत रही।

मुख्य घटना मोन पड़ैत अछि जनवरी १९९५ क कोचिंग क्लास ५.३० बजे भोरे सँ होइत रहए, हम घरसँ अन्हारे-४.३०-४.४५ निकलैत रही। पटनामे जनवरी मासमे बहुत ठण्डी पड़ैत छैक, ओहि समयमे आर बेशी ठंडी पड़ैत रहए। ठंडा, ऊपरसँ अन्हार सुनसान रस्ता, बहुत डर सेहो लगैत रहए, लेकिन एक नया जोशमे सभ किछु बिसरि जाइत रही। ११ जनवरी १९९५ कें कोचिंगमे 'मोड्युल टेस्ट' रहए, ई कारण हम ४ बजे घरसँ कोचिंग निकलि पड़लहुँ- कारण ठंढाक कारण लेट नहि होए। हम जहिना पुनाइचक-हड़ताली मोड़क बीच मेन रेलवे लाइन लग पहुँचलहुँ, अचानक एक टा घोघ तनने, करिया कम्बल ओढ़ने बुढ़ी माता सामना आबि गेलि, हम तँ डरसँ साइकिलसँ खसि पड़लहुँ, देखलहुँ तँ ओ बहुत बुढ़ आरो डॉँर लगसँ झुकल लागल। हम उठि कऽ ठाढ़ भेलहुँ, गरदा सभ झाड़ि कऽ जहिना चलय लऽ चाहलहुँ तँ ओऽ आवाज देलक,..सुन..अ..बौवा...

डरसँ हालत खराब भऽ गेल..चारू दिससँ सनसन जेकाँ आवाज महसूस हुअ लागल। डरल-डरल ओकरा लग गेलहुँ..।

पुछलक...कतए जा रहल छी!!! ताऽ तक ओ अपन घोघ नहि हटेने रहए।

डरसँ अबाज तँ जल्दी नहि निकलल...;लेकिन हिम्मत कऽ कए जवाब देलहुँ, कोचिंग जाइ छी।

फेर पुछलक..कथी के पढ़ाइ करैत छी..!! बातसँ अपनापन लागल।

हम कहलहुँ-डॉक्टरीक तैयारी करैत छी..

अच्छा बैस..दोसर पढ़ाइमे मोन नहि लगैत छौ- निर्देश दैत-..कनी देर रुकि जो तखन जहिएँ

ताऽ तक समय लगभग ४.४५ भऽ गेल रहए..एक दू टा आदमी सभ सड़कपर सेहो नजरि आबए लागल। लेट होइत रहए एहि कारण हिम्मत कए कऽ कहलहुँ...हमरा लेट भऽ रहल य..हमर आइ परीक्षा अधि अछि।

कोनो बात नहि..जवाब भेटल

बड़ असमंजसमे पड़ि गेलहुँ..की करी..नञि .करी..एक मोन होइत रहए, चलैत लोककेँ अवाज दी, मुदा सड़क फेर सुनसान भ गेल।

तखने ओऽ अपन घोघ हटेलक..हुनकर...चेहराकेँ देखिते लगभग आवाज बेहोश भऽ गेलहुँ..बुढ़–झुर्रीदार चेहरा...ओहिपर मर्द जेकाँ...दाढ़ी...मौँछ...हे भगवान आइ-धरि एहन नञि देखने रही...हमर हाव-भावकेँ देखि ओऽ बजली...हमरा देखि कए डर लागए छौ..नञि डर। हम दोसर किओ नञि छियौ...पता नञि किए ओऽ किछु अपन जेकाँ लागए लागल...ताऽ तक लगभग ५ से ऊपर टाइम भऽ गेल...रोडपर दूध/ न्यूजपेपर बला हॉकर सभ नजरि आबए लागल...

किछु कालक बाद अवाज भेटल- आब तू जो..घुरैत काल अबिहेँ...हम हवाक भाँति/ तीर सँ बेशी तेजीसँ निकललहुँ...बहुत लेट भऽ गेल रही...साइकिलकेँ अपन क्षमतासँ बेशी तेजीसँ चलबए शुरू कए देलहुँ, जहिना गाँधी मैदान/ सब्जी बागक मुँहपर पहुँचलहुँ...देखलहुँ जे जबरदस्त एक्सीडेन्ट भेल रहए, पूरा रस्ता पुलिस ब्लॉक क देने रहए- एक्सीडेंट लगभग २० मिनट पहिने भेल रहए, जाहिमे चारि टा लोक आ

एकटा चाहक दोकानदार मारल गेल...ओऽ चारू टा हमरे इंस्टीट्यूटक छात्र रहए जे नीक चाह पीबए खातिर रुकल रहए लेकिन...!!

हमहुँ ओहि चाहबलाक दोकानपर रोज रुकैत रही- अगर बूढ़ीमाता नञि भेटितए तँ हमहुँ ओहि समयमे चाहक दोकानेपर रहितहुँ ...फेर पता नञि...)- चाह पिबैक तँ आदति नहि रहए मुदा ठंढ़ाक चलते पीबि लैत रही।

कहुना इंस्टीट्यूट पहुँचलहुँ..ओहिठाम घटनाक सूचना पहुँचि गेल रहए...इंस्टीट्यूट दू दिनुका लेल बन्द कऽ देल गेल। छात्रक घरबलाकँ सेहो सूचित कए देल गेल, हमहुँ बुझल मोनसँ घर घुरए लगलहुँ, घर घुरैत काल ओएह बुढ़िया ओहीठाम भेटल...ओहिना घोघ तनने...लग जाऽ कए सभ घटना सुनेलाक बादो ओ कोनो जवाब नहि देलक...किछु कालक बाद कहलक...

बौआ हमरा भूख लागल यऽ!!

की खाएब !!! हम पूछलियनि

चूरा आ शक्कर..जवाब भेटल।

संयोग एहन रहए जे ताऽ तक हम सभ तरहक समान किनबाक वास्ते कोनो दोकानपर नहि गेल रही, कारण घरमे काज करए लेल बहुत आदमी रहए दोसर घरक सभसँ छोट रही। तैयो दोकानपर गेलहुँ आरो बुढ़ी-माता लऽ चूरा-गुड़ कीनि कए अनलहुँ।

किछु देरक बाद हम पुछलहुँ..कतए जेबही, हम पहुँचा देबौ।

"कतहु नञि", जवाब भेटल।

"रहबीहीं कतए", हम पुछलहुँ।

इएह जगह" सीधा जवाब भेटल।

"खाना कतए खेबही"...पुछलापर जवाब भेटल- " तूँ खुआ, बेशी बक-बक नञि कर, खाइ लेल दे फेर तू पुछिहँ जे पूछए के छौ"- बिल्कुल रुखल जवाब सेहो भेटल। संगहि स्नेहसँ कहलक- "तूँहो खो"।

हम तँ अजीब मुश्किलमे पड़ि गेलहुँ..ओकरा अकेले छोड़ि कए जाइ के मोन सेहो नञि करैत रहए...आखिर की करी...बहुत सोचलाक बाद निर्णय लेलहुँ..जे हुअए एकरा अपना संग लऽ जाइ...रिक्शापर बुढ़िया आरो साइकिलपर हम, घर पहुँचि ओकरा गेटपर ठाढ़ कऽ बाहर ठाढ़ कऽ हम घर गेलहुँ, सभ कहानी अपन माताजीकँ बतेलहुँ, बुढ़िया बाहरमे ठाढ़ छै, सेहो कहि देलहुँ। सभसँ पैघ समस्या जे बुढ़ियाकँ आखिर कतए राखी...माताजी कहलखिन- नीचाँमे एकटा रूम खाली छै- ओहिमे जगह देल जाए, सभ बेबस्था-बिछोना, कम्बल, साफ साड़ी- कऽ कए ओकरा घरमे बैसेलहुँ। साँझमे बाबूजी ऑफिससँ अएलाह तँ हुनका सभ कहानी बतेलहुँ।

बाबूजी कहलन्हि-"बुढ़िया कहिया तक रहतहु"।

"नञि पता"- हम कहलहुँ।

फेर माताजी सभ सम्हारि लेलन्हि ..आरो बाबूजीकँ समझा देलखिन। बुढ़ी-माताक सेवा करब हमर रोजक ड्यूटी भऽ गेल। कोचिंग जाइसँ पहिने आधा घण्टा, आबए के बाद १ सँ डेढ़ घण्टा हमर समय बुढ़ी माता लग बीतए लागल। भोजनक अलग-अलग फरमाइश होइत, सभ किछु पूरा करैत एक सप्ताह बीतल, एक दिन अपना लग बैसा हमर बारेमे पूछए लागल- जेना अपन दादी-दादा-अग्रज- बुढ़ी माता दिससँ कहल गेल- तूँ दोसर पढ़ाइ- मेडिकल छोड़ि कऽ कर। बहुत नाम हेतौ, खूब पैसा कमेबे, माँ-बाप तोरापर नाज करतौ, दसम दिन रातिमे बिना किछु बतेने पता नञि कतए चलि गेलय- आइ तक नहि भेटलीह...एखन तक हम इन्तजार करए छी जे बुढ़ी माता एकदिन जरूर भेटतीह।

बुढ़ी माताक बात बिल्कुल सही भेल जखन १४-१५ घण्टा पढ़ाइ करबाक बावजूद सी.बी.एस.ई. मेडिकलमे वेटिंग आबि गेल। बी.सी.ई.ई.मे डेयरी ब्रान्च भेटल, एम.डी.ए.टी.मे १००% चान्स रहए- ९०% एक्यूरेट प्रश्न सही कएने रही- मुदा परीक्षा-केन्द्र मिल्लत कॉलेज, दरभंगा केन्सिल भऽ गेल..एहि कारणसँ हम फ्रस्ट्रेशनमे रहए लगलहुँ। पढाइ-लिखाइ बन्द कए देलहुँ...जे एतेक पढ़ाइ करए के बाद जखन सफलता नहि भेटल तँ आब कहियो नहि हएत।

फेर हमरा बुढ़ी-माताक बात याद भेल, संगहि बाबूजी सेहो कहलन्हि- अपन ट्रैक चेन्ज करू, लगभग ओही समय यू.जी.सी.सँ ३ टा नया कोर्स पटना आ मगध विश्वविद्यालयकँ भेटल- बायो-टेक्नोलोजी, जल आ पर्यावरण प्रबंधन आ बी.सी.ए.। एन्ट्रेन्स परीक्षापर नामांकन प्रक्रिया शुरू भ गेल। बी.सी.ए. हमरा किछु ढंगक कोर्स बुझाएल, एन्ट्रेन्स देलहुँ आ पास क गेलहुँ। यू.जी.सी. बी.सी.ए.क प्रथम बैचक पहिल छात्र हम रही जे अन्तिम परीक्षा ८९% सँ पास केलहुँ। बाबूजी कहलन्हि- आब यू.पी.एस.सी.क तैयारी करू, ढंगक सरकारी नोकरी लिअ, लेकिन हमर सोच किछु आरे रहए। "अगर अपन प्रतिभा/ क्षमताक उपयोग करबाक अछितें सरकारी नोकरी नञि करू"। फेर एम.सी.ए. केलहुँ, मोन भेल जे एम.बी.ए. कएल जाय- बहुत कठिन रहए आइ.टी.सँ एम.बी.ए. करब। मुदा बुढ़ी माताक कृपासँ एम.बी.ए. सेहो कऽ लेलहुँ। केम्पस सेलेक्शनमे रिलायन्सक ऑफर भेटल। जोइन केलहुँ, फेर एच.डी.एफ.सी. बैंकसँ ऑफर भेटल तँ बैंक जोइन कऽ लेलहुँ। हृदयमे इच्छा रहए जे टाटा-बिड़लामे नोकरी करबाक चाही। बुढ़ी माताक कृपासँ इच्छा पूरा भऽ गेल आ बिड़ला ग्रुपसँ नीक स्थानक ऑफर आबि गेल। जोइन सेहो कऽ लेलहुँ आ एखन तक एतहि छी..आब इच्छा अधि दिल्ली/ मुम्बइक बहुत सेवा केलहुँ...आब अपन बिहार/ मिथिलाक सेवा कएल जाय..बुढ़ी माताक कृपासँ ओहो भऽ जदूतए मुदा सभसँ पैघ इच्छा अछि बुढ़ी-माताक दर्शनक..पता नञि होएत कि नञि...

अमरेन्द्र यादव

(दिधवा, सप्तरी)

हमर मैथिली

डाक्टर चन्देश्वरजी,
अहाँक बाबूजी पियौने हेथिन्ह
उठौना दूध
अहाँकेँ पोसने हेथिन्ह भाड़ापरक माए
लेकिन हमरा नओ महिनाधरि गर्भमे
मैथिलीए केलखिन्ह सम्हार
सोइरी घरमे सेहो मैथिलीए केलखिन्ह दुलार
हम कनियाँक स्पर्श विना जीबि सकैत छी
हस्थमैथुनक उत्कर्ष विना जीबि सकैत छी
लेकिन मैथिलीक आकाश विना नहि
मैथिलीक श्वासप्रश्वास विना नहि
डाक्टर चन्देश्वरजी,
हमर खाँडो, खुट्टी आ बलानमे बहैत अछि मैथिली ।
हमर दिनाभदरी आ सलहेशक दलानमे रहैत अछि मैथिली।

कल्पना आ यथार्थ

जिनगीक हड़हड़ खटखटसँ दूर
मृत्युक तगेदासँ अन्जान बनल
जिनगीक अति व्यस्त समयसँ
किछ पलखति चोराकऽ
अहाँक यादक उडनखटोलामे
उडि जाइ छी हम
प्रेमक अन्तरिक्षमे।
नदीक ओहि पार
दू गछिया तऽर
हमर कोरामे औङ्गठल
हमरासँग हँसैत बजैत
खाइत छी अहाँ सप्पत
खाइत छी हमहूँ सप्पत
अहाँक तरहत्थीकेँ चुमिकऽ
खोसि दैत छी हम
एकटा गेनाक फूल
अहाँक खोपामे।
तखने हमर नाकमे अचानक
ढकैत अछि जरल तरकारीक गन्ध
आ अकचकाइत उठैत छी हम
मिझबय लेल स्टोभ
तखने हमर नजरि पडैत अछि
टेबुलपर राखल चिट्ठीपर
जे काल्हिए एलै हमर गामसँ
आ हमर आगा नाचय लगैत अछि
भरना लागल खेत
बाबूक फाटल बेमाय
बहिनक कुमारि सींथ
भायक पढाइ खर्च
आ मायक दम्मा बेमारी।



अनलकांत

मैथिली त्रैमासिक पत्रिका अंतिकाक सम्पादक। हिन्दीमे गौरीनाथ नामसँ लेखन दू टा हिन्दी कथा-संग्रह प्रकाशित।

तर्पण

गामक छिच्छा आब एकोरत्ती नीक नइँ लागि रहल छै डॉक्टर कामना यादव कैँ।

लोके अधक्की होइ छै, वंशउजाड़ौन होइ छै! अपने हाथ-पयर भकोसि कृतमुख बनि जाइ छै!...मुदा एना तँ नइँ जे गामक कोनो चीन्हे-पहिचान नइँ रहय? कत' गेल ओ गाम जे उजड़ि-उपटि गेल अपन भूतपूर्व गौआँ लोकनिक स्वप्ने टा मे अबै अछि?...

तखन ओ अपना आँगनक क'ल लग बाथकीट आ कपड़ा राखि पछुआड़ि धरि आयल छलि। ई पछुआड़ि ओकरा पोखरिक पूबारि महार पर छलै। जत' एक टा कागजी नेबोक गाछ छलै आ ओहि मे मारतेरास नेबो लुधकल छलै। किछु पीयर-पीयर नेबो खसि क' सड़ि गेल छलै। कने हटि पतियानी सँ पाँच टा अड़रनेबा गाछ रहै। ओहू मे कैक टा अड़रनेबा तेहन पीयर सँ ललौन जकाँ भ' रहल छलै जे खसेला पर भक्काक-भक्का भ' जयतै। किछु मे तँ चिड़ै-चुनमुनी भूर सेहो तेना पैघ-पैघ क' देने छलै जे भितरका लाली लखा दै छलै। ओ भूर सब कैँ ध्यान सँ देखि रहलि छलि। कि एक टा अड़रनेबाक भूर देखि ओ चिड़ैक कलाकारी पर मुग्ध भ' गेलि। ओहि अड़रनेबा मे ऊपर-नीचाँ पातर आ बीच मे कने चाकर भूर तेहन ढंग सँ बनायल छलै जेना अंग्रेजीक एक टा 'वी' अक्षर पर दोसर 'वी' उनटि क' राखल हो!...ओहि पर एक गो बगिया राखि देने पूरा भूर मुना जयतै!

ओहि भूर देखि बगिया मोन पड़ला सँ ओकर अरुआयल-अरुआयल सन मोन ओस नहायलि दूबि जकाँ लहलहा गेलै। एहि बेर गाम अयलाक बाद पछिला तीन दिन मे ई एहन पहिल क्षण छलै जखन ओकर ठोर पर मुस्कीक पातर-सन रेह जगजियार भ' अयलै।

पछिला तीन दिन सँ ओ एक टा ढंगक रखबार आकि चौकीदार लेल परेशान छलि। कैक टा एजेंसीक दलाल सँ गप्प क' चुकलि छलि। सब कैक टा ने रखबार ल' क' आयलो छलै, मुदा कामना यादव कैँ जेहन ग्रामीण टाइपक काजुल आ अनुभवी रखबार चाही छल, से नइँ भेटि पाबि रहल छलै।

ओकर दादा कारी यादवक अमल सँ रहि रहल बुढ़बा रामजी मंडल आब अपन बेटा-पोता लग रहय चाहै छल। ओकर पैरुख सेहो थाकि गेल छलै। जेना-तेना कारी यादव सँ मंगनी यादव धरिक जीवन तँ पार लगा देलकै, मुदा तकरा बाद कामना लग हाथ जोडि देलकै, ''नइँ बुच्ची, आब पैरुख नइँ छौ। किछु दिन हमरो बेटा-पोता संग रहैक सख पुरब' दे।''

एहि पर की कहैत कामना?...तँ ओ ससम्मान बुढ़वाक विदाइ कर' चाहै छलि, मुदा कोनो दोसर रखबार भेटतै तखने ने?...

पछिला दू मास मे ई ओकर तेसर यात्रा छलै। लगले लागल ई यात्रा ओकरा परेशान कयने छलै, मुदा ओकर समस्याक निदान नइँ भ' रहल छलै। ओम्हर पूना मे ओकर क्लीनिक एक-एक दिन बन्न भेला सँ जे परेशानी आबि रहल छलै, से अलगे।

बापक जीबैत कामना गामक बाट बिसरिए जकाँ गेलि छलि। कैक बेर तीन वा चारि साल सँ बेसी पर आयलि छलि। तहिना दू मास पहिने मंगनीलाल यादवक मुइलाक बाद जे ओ गाम आयलि छलि सेहो प्रायः दू साल सँ बेसीए पर। ई रच्छ रहलै जे ओकर बाप ओकरा क्लीनिकमे मुइलै आ तत्काल गाम अयबाक झंझटि सँ बचि गेलि। नइँ तँ एसगरि जान की-की करितय? एहने ठाम भाय-भातीज, कक्का-पीसा, बहिन-गोतनी आकि जाउत-जयधी बला पुरना परिवार मोन पडि जाइ छै लोक कैँ। जे-से, ओ एसगरुआ छलि तँ कहियो ओकरा पर कोनो दबावो नइँ देलकै ओकर बाप। तीन सँ चारि मास नइँ बीतै कि बुढ़वा अपने पहुँचि जाइ पूना। फोन पर तँ गप्प होइते रहै छलै।...

बापक मादे सोचैत-सोचैत कामनाक ठोर ओकर नजरि चारूभर सँ भटकि क' पोखरिक अँगनी दिस झुकल लताम गाछ पर चलि गेल छलै। एहि गाछक रतबा लताम तेहन ने लाली लेने रहैत रहै जेना सुग्गाक लोल कि ओकर अपने तहियाक ठोर बुझाइत रहै।

लताम गाछक पात कोकड़िया गेल छलै। फूल-फर एखन नइँ छलै। मुदा

किछुए मास मे, कने गरमी धबिते, एकर पात फेर नव तरहेँ लहलहा जयतै आ फूल-फर सँ लदि जयतै एकर डारि। फेर-फेर एहि पर लुधकि जयतै डम्हा आ पाकल लताम। तखन फेर बहरेतै एहि रतबा लतामक भीतर सँ वैह लाली। मुदा ओकर ठोर? नइँ, आब तँ बाजारक महँग-सँ-महँग लिपिस्टिको नइँ सोहाइ छै ओकरा। गाछक आत्मा डिब्बा मे के भरि सकैए?

पछुआड़िक मारतेरास अड़हर-बड़हर, अत्ता-शरीफा, अनार-बेल, केरा-मुनिगा सन गाछ पर सँ नजरि हटा कामना यादव पोखरिक पानि मे खेलाइत माछ दिस ताक' लागलि। चारि-पाँच टा रोहुक एक टा झुंड पैघ-पैघ सुंग डोलबैत झिहरि खेला रहल छलै। पानिक सतह पर दूर धरि खूब-खूब हलचल पसरि रहल छलै। एहि हलचल मे हेरायलि कामना दू डेग आगू बढि दूबिक निर्मल ओछाओन पर टाँग पसारि बैसि गेलि। ओहि दूबि पर कचनारक किछु फूल खसल छलै। एक फूल उठा हाथ मे तँ ल' लेलक, मुदा ओकर नजरि पानिक हलचले पर रहलै। ई हलचल ओकरा भीतर एक टा नव हलचल अनलकै। ओहि हलचल संग बहैत-भसिआइत कामनाक भीतर कतेक ने अतीतक पन्ना फडफ़ड़ाब' लगलै।...

...ई पोखरि ओकर दादाक खुनायल छलै। अपन पूरा जीवन गाय-महीसक बीच गुजार' बला ओकर दादा एहि परोपट्टाक अंतिम अँगुठाछाप छलै। ओना रोज-रोज गाय-महीस दूहैत ओकर अँगुठाक निशान मेटा जकाँ गेल छलै। ताहि पर, गोबर-गोंत गिजलाक बाद, सदिखन ओ तीन किलोक हरौती आकि गेन्हवाँ लाठी जे पकड़ने रहैत छल, से ओकर हाथक रेखा खाय गेलै। मुदा ओकर कपारक रेखा जगजियारे होइत गेलै। खदबद करैत पंडित-पजियार आकि बाबू-बबुआन सभ सँ भरल गामक एक मात्र 'अहूठ गुआर' कहाब'बला कारी यादव ओहिना 'मड़र' नइँ कहाब' लागल छल! दूध-घीक पैसा आकि गाछ-बाँस आ उपजा-बारी सँ कै गोटे सुभ्यस्त भेल अछि? ओहि सँ पैत-पानह बचि जाय, तँ बड़का बात!...से जेना-तेना पैत-पानह बचबैत कारी यादव स्वयं अँगुठाछाप होइतो अपन एकमात्र मँगनिया बेटा मंगनी यादव कैँ शहर-नगरक कॉलेज-यूनिवर्सिटी धरि पढ़ै मे कोनो कमी नइँ होअय देलक।

कारी यादव सुधंग लोक छल। ओकरा नजरि मे दरोगा आ बीडीओ सँ बढि दुनिया मे कोनो हाकीम नइँ छलै आ सैह ओ अपन बेटो कैँ बनब' चाहै छल। मुदा मंगनी यादव से नइँ बनि सकल। ओ काशीक नामी विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर बनल तँ की? बापक लेल मास्टरे छल!...ओ रंगमंचक मशहूर कलाकार भेल तँ की? बापक लेल नचनिञे छल!...बियाहो ओम्हरे कयलक। मुदा कारी यादव लेल धनसन।

मायक चेहरा मोन नइँ छलै मंगनी कैँ। बापेक रान्हल खाइत अपना हाथें बनायब सीखलक। तँ बापक दुःख ओकरा बेसी छटपटाबै, मुदा बाप लेल ओ किछु क' नइँ पाबय। ई फराक जे हरसाइत मंगनी बाप कैँ खुश करैक खूब प्रयास क' रहल छल। ओ जखन-जखन गाम आबय, बाप लेल मारतेरास कपड़ा-लत्ता आ अनेक सामान आनय। मुदा ओकर बाप कैँ तकर दरकारे ने रहै छलै! खरपा पहिरय बला कारी यादव कैँ चप्पल-जूता सँ गोड़ मे गुदगुदी लागै। गोलगला छोडि कुर्ता पहिरब ओकरा कोनादन ने बुझाइ। मंगनीक आग्रह पर बाबा विश्वनाथक दर्शन करबाक लोभ ओकरा बनारस जयबा लेल उसकाबै तँ जरूर, मुदा माल-जाल आ गाछ-बिरिछक चिन्ता पयर रोकै। तँ ओ बेटा लग बनारस कहियो ने जा सकल।

गाछ-बिरिछ सँ बुढ़वाक बेसी लगावक एक टा खास कारण ईहो छलै जे बेसी गाछ बुढियाक लगायल छलै। फेर बुढियाक सारा सेहो सरौली आम आ बुढ़वा धात्री गाछक बीच मे छलै जे गोहाल सँ ओकरा सुत' बला मचानक ठीक सोझाँ पड़ैत छलै तहिया। ओइ सारा पर एक टा ने एक टा तुलसी गाछ सब दिन रहै छलै। गाय-महीस दुहलाक बाद बुढवा ओही तुलसी गाछ दिस घुरिक' धार दैत छल। फेर नहेलाक बाद ओहि तुलसी आ धात्रीक जड़ि मे पानि ढारब सेहो नइँ बिसरै छल।

मंगनी जहिया ठेकनगर भेल छल तहिया सँ बाप कैँ अपने हाथैं भानस करैत देखने छल। ओकर कनियाँक गौनाक बाद ई सब किछु दिन लेल छुटबो कयलै, मुदा कामनाक जन्मक किछुए मास बाद ओ अपन परिवार बनारस आनि लेलक। फेर बुढ़वाक वैह हाल भ' गेल रहै। मंगनी एक टा चाकर रखबाब' चाहलक, तँ बुढ़वा डाँटि-धोपि थथमारि देलकै, "धुर बुडि! हमरा देह मे कोन घुन लागल जे हम दोसरा सँ चाकरी खटायब?... एहने ठाम कहै छै, माय करय कुटौन-पिसौन बेटाक नाम दुर्गादत्त!..."

किछु दिनुका बाद मंगनी तातिल मे गाम आयल तँ बुढ़वा कैँ कने बीमार देखलक। बुढ़वा डाँड़ कने टेढ़ क'क' चलै छल आ सूतल मे कुहरैत रहै छल। दिन मे कैक ने बेर लोटा ल' बहराइत छल आ ढंग सँ किछु खाइतो ने छल। मंगनी कतबो पूछै, "हौ, की होइ छअ?", मुदा बुढ़वा सही-सही किछु बतबैते ने छलै। बुढ़वा कैँ शहरक डॉक्टर लग चलै लेल मंगनी कतबो जिद्द करै, बुढ़वा तैयारे ने होइ। अंत मे मंगनी खायब-पीबि छोडि रुसि रहल।

तखन बुढ़वा मंगनी कैँ मनबैत कहलकै, "रौ मंगनी, चल खाय ले। तों किऐ जान दै छही! हम मरिये जेबै तँ की बिगड़तै? आब जीविक' कोनो बान्ह-पोखरि देबाक छै हमरा?"

"किऐ हौ बाबू, मरिक' तों हमरा कपूत कहबेबहक? कह' तँ जीविक' बान्ह-पोखरि किऐ ने दए सकै छहक तों?" मंगनीक स्वर भखरि गेलै।

"रौ मंगनी, ओइ लेल एक बोरा टाका चाही। से ने हमरा दूध-घी सँ हैत, आ ने गाछ-बाँस आकि उपजा-बारी सँ। तोहर मास्टरियो सँ नहिऐं हेतौ। कोनो दरोगा-बीडीओ भेल रहितय तखन ने!..." कारी यादव गंभीर स्वर मे बाजल।

"हौ बाबू, तों नइँ बुझै छहक! हम

दरोगा-बीडीओ सँ पैघे छिऐ है। तों बाज' ने जे कोन बान्ह देबहक आकि पोखरि खुनेबहक!..."

"ठीके कहै छही रे?"

"हँ हौ!...हम तोरा फूसि कहबह?"

"बान्हक तँ एहि जमाना मे कोनो खगते नइँ छै। एक टा पोखरिए खुना तँ बड़की टा, अपना घरक पश्चिम दू बिगहा मे। मरियो जायब तँ, जुग-जुग धरि नाम तँ रहतै जे कारी जादब पोखरि खुनेलक।..." बुढ़वा भावना मे बह' लागल छल।

"चलह, पहिने तोहर दवाइ करा दै छियह। ठीक होइते तों मटिकट्टा मजूर सब सँ बात करह। जहियाक दिन तों ठीकबहक तहिए सँ काज शुरू भ' जेतै।"

आ से ठीके भ' गेलै। आ ओही संग एक टा चौकीदार, टेहलुक, भनसिया आकि मैनेजर जे बूझी, ताहि रूप मे रामजी मंडल कैँ ओ रखबौने छल। ई फराक जे तकरा बादो बूढ़वा जावत जीयलै माल-जाल रोमब, दुहब-गारब आकि गोबर-करसी; किछु ने छोड़लक। रामजी मंडल ओकरा घर-परिवारक अपन समाँग जकाँ भ' गेल छलै।...आ कारी यादवक मान-मर्यादा ततेक बढ़ि गेलै जे ओ पूरा परोपट्टा मे 'मड़र' कहाबय लागल छल।

कामना कैँ ई सब बेसी सुनले छै। ओहि पोखरिक जाग जे भेल छलै तकर भोज कने-मने मोन छै ओकरा। मुदा दादाक हाथक तीन किलोक लाठीक ओ लाली एखनो खूब मोन छै ओकरा। ओहि लाठी मे चुरु भरि तेल पचाबैत कालक दादाक मालिश सेहो ओकरा मोन छै। ओ लाठी एखनो ओकरा घरक कोनो कोन मे राखल छै ठीक सँ, जुगताक'।

ओकर दादा कारी यादवक मुइलाक बादे एत' फूसिघरक जगह पक्का मकान बनल छलै। मुदा ओहि मे रह'बला रामजी मंडल टा छलै। ओकरा सँ मारते बबुआनक बीच एक गुआरक घरक ठीक सँ देखभाल नइँ भ' पबै। ताहि पर किछु मालोजाल छलै। सभ छुट्टी मे मंगनी अबै तँ किछु ने किछु नव बिदैत भ' गेल रहै। हारिक' ओ आँगन-दलान संगे पोखरि-गाछ-माने पूरा सात बिगहाक रकबाक चारू कात खूब ऊँच देबाल द'क' तकरा ऊपर खूब ऊँच धरि काँटबला तारक बेढ़ सँ बेढ़बा देलक। एक जोड़ा करिया गाय छोड़ि बाकी मालजाल हटा देलक। तकरा संग रामजी मंडल कैँ सख्त आदेश भेटलै जे गाछक कोनो फल आकि तीमन तरकारी ओ जते चाहय खाय सकैत अछि, मुदा एक्कोपाइक किछु बेचि नइँ सकै अछि। तकर पालन करैत रामजी मंडल ओकर बाग-बगीचा, बाड़ी-झाड़ी सँ पोखरि धरि कैँ सब दिन खिलखिल हँसैत जेना बनौने रहल। अपने मंगनी दू-तीन मास पर आबि तकतान क' जाय। ओना ओकरा सभक सब छुट्टी गामे मे बीतै छलै आ ओहि छुट्टी मे माय-बापक संग कामना सेहो अबै छलि।

जे-से, समय-साल बीतैत गेलै। आ एक दिन मंगनी यादव विश्वविद्यालय सँ सेवामुक्त भ' सपत्नीक गाम आबि गेल। तखन कामना अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली मे एमबीबीएस फाइनल क' रहलि छलि आ दुनियाँ साधारण सँ साधारण आदमीक मुट्ठी मे अँट' लागल छलै।

ओहि समय धरि दुनियाँक सब शहर मे एक तरहक बसात बह' लागल छलै आ अपना ठाँक गाम-घर खाली भ' रहल छलै। ककरो बेटा शहर बसलै, तँ बापक मरिते डीह पर नढ़िया भुक' लगलै। किओ चारो दिसक कर्ज आ उकबा मे घेराय आकि दबंगक प्रताड़ना सँ डराय राता-राती गाम छोड़ि देलक, तँ किओ भूखक आवेग मे जत'-तत' पड़ा गेल। बाबू-भैया लोकनि कोनो ने कोनो कंपनीक स्थानीय मैनेजर भ' अपना कैँ शहरी बनाब' लगलाह, तँ किछु गोटे वातानुकूलित लाक्षागृह मे सेन्ह लगेबाक प्रयास मे धोती-कुर्ता उज्जर कर' लगलाह। गाम-गामक खेत-पथार बड़का-बडक़ा कंपनीक फॉर्म हाउस मे बदल' लागल छल। सस्ता कार सनक कारखाना आ केमिकल्स हौज लेल पैघ-पैघ रकबा हथियाओल जा लागल छल। किसान नामक प्राणी मे सँ किछु अपने अपन लीला खत्म क' लेलक, किछु शहर-नगरक मशीन चलब' चलि गेल आ जे बचल छल तकरा मे सँ किछु मारल गेल, किछु केर जीन बदलि एहन मजूर बना देल गेल जे ने शहरी रहल आ ने देहाती आ जकर ने कोनो भाषा रहल आ ने कोनो आने चीन्ह-पहिचान। सगरे नव-नव कन्वेंट, नव-नव ढाबा, नव-नव चकलाघर मिल्क-बुथ आ टेलीफोन-बुथ जकाँ खुज' लागल छलै। आ साधारण लोक 'मैन-पावर' कहाब' लागल छलै। एहने सन आफत-बसात मंगनी यादवक गाम मे सेहो आयल छलै। एही आफत मे रामजी मंडलक बेटा-पोता ओकर काजुल घरवाली धरि कैँ ल'क' दिल्लीक झुग्गीवास कर' चलि गेल।

मंगनी यादव जहिया सेवामुक्त भ' बनारस सँ गाम घूरल छल, ओकरा अपन स्टेशन कातक दोकान मे बेसी अपरिचिते लोक भेटल छलै। साँझक झलअन्हारी मे घर पहुँच' धरि कतौ किओ एहन नइँ भेटलै जकरा सँ दूटप्पियो कुशल-क्षेम भ' सकैत। रामजी मंडल कैँ छोड़ि ओकर आगमन ककरो लेल कोनो खबरि नइँ छलै।

अगिला भोर गामक सड़क धयने टोलक एहि कात सँ ओहि कात गुजरि गेल मंगनी, केओ हाल-चाल नइँ पुछलकै। ओत' कतहु ओकरा अपन ओ गाम नइँ भेटलै जकरा ओ चिन्है छल। जत' पहिने पंडित दीनबंधु झाक घर छलै, ओहि ठाम शून्य-सपाट एक टा मैदान बनि गेल छलै आ तकरा चारूकात खूब ऊँच देबाल रहै जकरा गेट पर एक टा पैघ सन बोर्ड टाँगल छलै, 'भटिंडा फार्म हाउस'। पंडितजीक बेटा आब जामनगर मे बैसि गेल छनि। बेटी अमेरिकी नागरिकता ल' लेने छनि।

मंगनी कने आरो आगू बढ़ल, तँ देखलक जेम्हर पहिने धनुकटोली छलै, ओत' पैघ सन कोनो फैक्टरी खुजि गेल छलै जकरा छतक ऊपर तीन टा मोट-मोट चीमनीनुमा पाइप मारतेरास धुआँ छोड़ैत आसमान कारी करबाक अभियान मे लागल छलै। आ टोलाक कात सँ

कलकल हँसैत बह'बला स्वच्छ-निर्मल जलधारा बला मिरचैया मे जमुना सन गन्हाइत कारी पानि तेना जमकल छलै जेना कोनो नाला।

मंगनी कें थकान भेलै आ घर घुरय लागल। घर घुरैत ओ जगह ध्यान मे अयलै जत' पहिने विशाल-विशाल बर आ पाकड़िक गाछ छलै। ओहि ठाँ लगे-लग कोनो दू गोट मोबाइल कंपनीक विशाल-विशाल टावर ठाढ़ छलै। ओ रुकिक' चारूभर ताक' लागल। दूर-दूर धरि देखलाक बादो ओकरा नजरि पर अपना घर लगक गाछ छोडि कतहु एक्कोटा तेहेन पैघ गाछ नइँ अयलै। जेम्हरे देखलक सब किछु एकदम उजड़ल-उजड़ल सन बुझेलै। बीच टोल मे आबि एक ठाम ठमकल। बगलक दासजीक डीह पर कोनो टैंट हाउसक बोर्ड लागल छलै। कने हटि एक टा ट्रैवेल एजेंटक साइन बोर्ड टँगल छलै जकरा नीचाँ शीशाक गेटक भीतर एक टा पगड़ीवला सरदार जी कुर्सी पर बैसल छलै। तकरा दस डेग आगुक ग्राम देवता स्थान पर बजरंगबलीक एक टा पैघ सन मंदिर ठाढ़ छलै जकर दछिनबरिया देबाल पर कामोत्तेजना जगब'बला कोनो टिकियाक विज्ञापन छलै। तकरा बाद मंगनी किछु ने देखलक आ सोझे अपना घर आबि गेल। घर मे ओकर पत्नी मुनिगाक तरकारी रान्हि रहल छलि। ओ ओकरा लग जाय अकबका गेल।

रसे-रस मंगनी अपन घर आ सात बिगहाक रकबा मे घेरायल पोखरि-गाछ, पछुआडि-महार धरि अपना कें समेटि लेलक। बेटी कामना आ बाकी हित-मित सँ संपर्क लेल ओकरा घर मे फोन आ मोबाइल छलै, रंगीन स्क्रीनबला कंप्युटर छलै जकर तार संपूर्ण दुनियाँ सँ जुड़ल छलै। घरक पाछाँ पैघ सन आयताकार आँगन छलै। आँगनक पश्चिम-उत्तर कोन मे चापाकल छलै। तकर पछुआडि मे पोखरिक महार पर मारते गाछ-बिरिछ छलै। ओहि पर सँ कखनो कोयली, तँ कखनो पड़ौकी केर सुपरिचित स्वर आबै।...माने ओकर गाम ओकरा सात बिगहाक रकबा मे बन्हायल छलै।

जेना-तेना समय कटि रहल छलै। कामना दिल्ली छोडि पूना मे प्रैक्टिस शुरू क' देने छलि। मुदा मंगनीक घर पर एक टा एहन कार कौआ बैसि गेल छलै जे जखने ओ दुनू प्राणी शांति सँ आराम कर' चाहय कि ओ जोर-जोर सँ टाँहि मार' लागै। भोर होइ कि साँझ, दिन होइ कि राति-कार कौआक टाँहि मारब बन्न नइँ भेलै। आ एक राति कामनाक मायक छाती मे तेहेन ने दर्द उठलै जे डॉक्टरक अबैत-अबैत बेचारी चलि गेलि। आ तकरा बाद एसगर मंगनी कारी यादव जकाँ बाड़ी-झाड़ी मे लागल रहय आ बीच-बीच मे कामना लग पूना चलि जाय।...मुदा रामजी मंडल तँ एहन शापित यक्ष छल जकरा लग ने किओ अबै छलै आ ने ओ कतौ जाय छल।...

अनचोके कामनाक भक टूटलै। पोखरिक उतरबरिया महार परक कोनो गाछ पर नुकायल कोयली बाजि रहल छलै। कामनाक भीतर किछु उमड़ि अयलै। मुदा ओ तत्काल उठि गेलि। स्नान कें अबेर भ' रहल छलै।

भोजनक बाद ओ आराम क' रहलि छलि कि ओकर मोबाइल बजलै। एक टा नव एजेंटक कॉल छलै, "मैडम, ऐसा कीजिए कि चौकीदार और माली के रूप में दो अलग-अलग आदमी को रख लीजिए। यहाँ ऐसा कोई चौकीदार नहीं मिल रहा जो आपकी प्रॉपर्टी के साथ पेड़-पौधों की भी देखरेख कर सके। यूँ पोखर की मछली की देखरेख के लिए मछुआरे की जरूरत फिर भी रह जाएगी।"

"नहीं, तीन-तीन आदमी रखना मुश्किल है हमारे लिए।", कामना बाजलि।

"चौकीदार तो नेपाली ही है मगर माली जो मिल रहा है, वह एक उड़िया भाई है। ये दोनों हमारे पटना सेंटर के मार्फत आ रहे हैं और उनकी शर्त है कि वेतन के अलावा हाउसिंग फैसिलिटी भी चाहिए।"

बिना कोनो जवाब देने कामना कॉल डिस्कनेक्ट क' देलक। मुदा भीतर सँ ओकर परेशानी आरो बढ़ि गेल छलै। आब एहि गाम मे गाम भने नहि रहि गेल हो मुदा ओकर बाप-दादा, माय-दादी सभक स्मृतिक गाम सात बिगहाक एहि रकबा मे बेड़हल घर-आँगन, गाछ-बिरिछ, पोखरि-कल सभक बीच छै। कारी यादव सँ मंगनी यादव धरिक नाल एतहि गड़ल छै। कारी यादवक माल-जालक गोबर-गोंत एत'क माटिक कोनो ने कोनो कण मे एखनो खादक रूप मे बचल हेतै। प्रोफेसर मंगनी यादवक कलाकार मोन एहि रकबा मे जाहि गामक लघु संस्करण कें समेटने छल, से जरूर एही ठाम कतहु ने कतहु नुकायल हेतै।... की एकरा सब कें ओ लुटा देत?...की ओ अपन जिनगी भरिक कमाइ सँ एकर रक्षा नइँ क' पाओत?

कामना कें मोन पड़ै छै जे एक बेर ओकर पिता मंगनी यादव बड़ व्यथित मोन सँ कहने छलै, "गाम मे जेहो गाम देखाइ छलै, से तोरा मायक मुइलाक बाद नइँ बुझाइ छै। कखनो-कखनो तँ मोन करैए जे हमहूँ सब किछु बेचि-बिकीनि ली। मात्र घर-आँगन आ गाछ-पोखरि सँ गाम नइँ होइ छै, बौआ। जखन पहिने जकाँ केओ गौएँ नइँ रहल तँ कोन गाम आ की गाम?..."

कामना किछु जवाब नइँ द' सकलि छलि तखन। मुदा एखनो मोन छै ओकरा जे ओ अपन बापक ओहि हेरायल-बेचैन आकृति कें बड़ी काल धरि देखैत परेशान भ' रहलि छलि। एक्को शब्द एहन नइँ भेटल छलै तखन ओकरा जाहि सँ अपन कलाकारमना बापक मोन कें राहत द' सकैत छलि। तखन ओकरा अपन डॉक्टरीक ज्ञान अकाजक बुझायल छलै।

सहसा एक कोन मे राखल अपन दादा कारी यादवक कारी खटखट लाठी देखा पड़लै ओकरा। ओ उठलि ओहि लाठी कें छुबिक' देखबाक लेल, मुदा तखने कॉलबेल जोर सँ बजलै। ओ गेट दिस पलटलि। गेट पर सी सी मिश्रा नामक एक टा मैथिली भाषी सेक्युरिटी एजेंटक दलाल छलै जे पछिला दू दिन सँ नव-नव रखबार ओकरा लेल ताकि रहल छलै।

ओहि दलाल कँ ड्राइंग रूम मे बैसा ओ दू मिनट बाद दू गिलास पानि ल' घुरलि। कि विनम्र सन बनैत ओ दलाल बाजल, ''डॉक्टर यादव, सुनियौ! अहाँ बड़ सौभाग्यशालिनी छी जे एखनो अपन बाप-दादाक डीह पर अबै छी। हम तँ नोकरीयेक क्रम मे एम्हर आबि गेलहुँ। कोशीक पूबे सही, मुदा ईहो कहाइ तँ छै आइयो मिथिले ने। हम डीही छी कमला कातक। हमर जनम भेल हिमाचल मे व्यास नदी कातक एक टा अस्पताल मे। बचपन बीतल दिल्लीक यमुनापार मे आ नोकरी भेल कोलकाता मे। मैथिली तँ हम कोलकाता आबि सिखलहुँ सेहो एहि लेल जे हमर दादा मैथिलीक प्रसिद्ध लेखक छलाह आ हुनकर किताब सभक अंग्रेजी अनुवाद एखनो खूब लाभ दै अछि।...एखन कोलकतेक एजेंसीक काजें तीन मास लेल एहि क्षेत्र मे अयबाक अवसर भेटल। एहि क्षेत्र मे कैक टा कंपनी अपन कल-कारखाना शुरू क' रहल छै, से बहुत जल्दी एत'क प्रॉपर्टीक कीमत उछल'बला छै।...''

कामनाक धैर्य चुकि रहल छलै। ओ बाजलि, ''अहाँ कह' की चाहै छी?... साफ-साफ बाजू!''

''अहाँ अन्यथा तँ नइँ लेबै?''

''बाजू ने!...''

''अहाँ यैह ने चाहै छी जे अहाँक ई गाछ-पोखरि बचल रहय, सुरक्षित रहय आ अहाँक बाप-दादाक नाम...''

''तँ?...'', कामनाक माथ पर बल पड़लै।

''देखू, ओहेन रखबार बड़ महँग पड़त जे अहाँक इच्छा अनुकूल हो। एहि लेल रखबार, माली, मल्लाह आ मारतेरास मजदूर पर खर्च कयलाक बादो भेटत तँ किछु ने, उनटे चिन्ता आ परेशानी बेचैन कयने रहत।''

''तँ की करी?... हम बड़ परेशान छी। ओझराउ जुनि।''

''सैह ने कहै छी!...आ लाभक बात कहै छी।...'' क्षण भरि बिलमि ओ बाजल, ''एहि ठाम एक टा भव्य रिजार्ट खोलै केर अनुमति जँ दी तँ अहाँ कँ एक खोखा पूरा भेटि जायत। संगे पोखरि-गाछक सुरक्षाक गारंटी सेहो। मात्र एहि घर-आँगन कँ तोड़ि नव बहुमंजिला बनब'क अनुमति देब' पड़त। गाछ सब लग मुक्ताकाश मे टेबुल-कुर्सी लगा देल जयतै आ डारि सब पर जगमग लाइट टँगा जयतै। पोखरि मे दू-चारि टा छोटका नाह खसा देल जयतै जाहि पर लोक सब अन्हरियो मे इजोरिया रातिक मजा लैत नौका-विहार करत। पोखरिक बीच मे जाठिक जगह एक टा छोट सनक सुइट बनि जायत, जकर डिमांड पर्यटन स्थल सभ पर सब सँ बेसी होइत छै। से एतहु हेबे टा करतै। किएक तँ एतहु रसे-रस बड़का-बड़का कंपनीक डायरेक्टर, सीईओ, एनआरआई आ विदेशी मेहमानक आगमन शुरू होबए बला छै।...''

''हम अहाँक गप्प खूब नीक जकाँ बुझि गेलहुँ।... अहाँ तँ बड़ बुधियार लोक छी यौ!...तत्काल अहाँ जा सकै छी, दान-पत्र हम शीघ्रे पठा देब!...'' कामना अपन आवाज सप्रयास संयत रखलक।

कनेक सकपका जकाँ गेल मृदुभाषी मैथिल दलाल सी सी मिश्रा चालीस सँ बेसीक नइँ छल। गेट पार क' ओ एकबेर ठमकल, ''कने इत्मीनान सँ विचार करबै मैडम। डॉक्टर छी अहाँ, ओल्ड थिंक आ भावुकता सँ किछुओ फायदा नइँ हैत। हानिए-हानि!...''आ हीं-हीं क' ठिठिआब' लागल।

चालीस पार क' चुकलि डॉक्टर कामना यादव मे प्रौढ़ता आ धैर्य आबि गेल छलै, मुदा तैयो ओ अपना जगह पर बैसलि नइँ रहि सकलि। ओ उठिक' दुआरि दिस आयलि। तेज-तर्रार दलाल सी सी मिश्रा लपकिक' अपन विदेशी मॉडलक गाड़ी मे बैसि गेल छल। कदमक गाछ तर थोड़ेक गरदा उड़ियाबैत ओकर गाड़ी तुरंते फुर्र भ' गेलै।

कामना बाहरक ओसारा पर नहुँ-नहुँ बुल' लागलि छलि। कदम गाछक बाद देबालक काते-कात लागल जिम्हड़, अमड़ा आ अशोक पर बेरियाक रौद खसि रहल छलै। ओहि रौद मे गाछ सभक पात-पात पर जमल गरदाक मोटका परत नीक आर की हेतह?''

रामजी मंडलक बूढ़ चेहरा पर लाजक संग हँसीक फाहा छिड़िया गेलै। ओ खिलखिलाइत उठिक' आँगन चलि गेल।

तखने घर मे राखल कामनाक मोबाइल बजलै। पूना सँ ओकर क्लीनिकक फोन छलै। ओ उठबैते बाजलि, ''डोंट वर्री! सुबह की फ्लाइट से आ रही हूँ। एक-डेढ़ बजे तक क्लीनिक में रहूँगी।'' आ एतबा कहैत ओकर नजरि एकबेर फेर अपन दादा कारी यादवक तीन किलोक हरौती लाठी पर चलि गेलै। ओ लपकिक' लाठी उठौलक।

लाठी मे पहिनेक लाली आ चमकि नइँ छलै। कारी खटखट ओहि लाठी पर झोल-गरदा जमि गेल छलै। भावावेश मे कामना ओहि लाठी कँ चूम' चाहलक। मुदा रुकि गेलि।...

कामनाक हाथ चीन्ह' जोग नइँ छलै। पूरा हाथ कारी भ' गेल छलै। तखने ध्यान अयलै जे ओकर ओजनो आब तीन किलो तँ नहिये टा हेतै। कि एक ठाम लाठी पर कनेक दबाव पड़िते ओकर आँगूर धँसि जेना गेलै! कि ओकरा बुझेलै जे ई लाठी कोकनि क' फोंक भ' गेल छलै आ जोर सँ पटकि देने टुकड़ी-टुकड़ी भ' जयतै!... अचांचके डरा गेलि ओ। डराइते-डराइत ओ ओहि लाठी कँ पूर्ववत घरक कोन मे राखि हाथ धोअ' कल पर चलि गेलि।

बड़ी काल धरि बेर-बेर हाथ धोयलाक बादो ठीक सँ हाथ साफ नइँ भेलै। साबिकक तेल पीयल लाठी सँ आओल एक टा अजीब तरहक गंध हाथ मे समा गेल छलै। हारिक' तोलिया सँ हाथ पोछैत क्षण भरिक लेल पछुआडि दिस गेलि कामना। ओत' ओकरा लगलै, सब गाछ पर जोर-जोर सँ केओ कुड़हरि चला रहल छलै। पोखरि दिस तकबाक साहस नइँ भेलै ओकरा। ओ सोझे पड़ायलि घर आ जल्दी-जल्दी अपन ब्रीफकेस सैंत' लागलि।



अंकुर काशी नाथ झा

गाम-कोइलख, जिला-मधुबनी, मिथिलांचल

सरकारी योजना

माथ पर लेने जारैनक पथिया,

घुमि रहल छै, कलमें गाछीये

एकटा बुढ़िया ।

सब कहै छै ओ हरजिन छै,

सरकार ओकरा देने संरक्षण छै,

महिला वला सेहो ओकरा आरक्षण छै,

तइयो अभगली के गंजन छै।

सरकार के ओकर जाति पर बहुत छै ध्यान,

ओकरा लेल घर बनेबाक सेहो छै प्रावधान,

अन्न आ कपड़ा में वैह सब छै प्रधान,

तइयो ओ खाइ लेल छै पेरशान।

इंदिरा आवास आ अन्नपूर्णा के योजना एलै,

बुढ़िया के ई सब भेटब सपना भेलै,

नेता सब के अन्न भेटलै, घर बनलै,

सरकार बुझलकै गरीबक कल्याण भेलै।

एक बेर फेर ओ योजना सऽ वंचित रहि गेलै,

पूछलीयै जे ओकरा कियैक नहि भेटलै,

मुखिया जी कहलैन,

जगह कम आ बेसी भीड़ छै,

मुदा सत्त बात तऽ काका कहला,

बेचारी बुढ़िया शरिफ छै॥



आशीष अनचिन्हार

मनुख

मनुख काज करैत जान अरोपि कए
आफिसमे, रोडपर
वा कतौ
भरि लैए टका जेबीमे
निकलि जाइए मार्केटिंग करबाक लेल
कीनि लबैए
रेडीमेड खुशी वस्तु-जातक रूपमे
की मनुख
रेडीमेड भेल जा रहल अछि?

गजल

जीवनमे दर्दक सनेश शेष कुशल अछि
नहि कहब विशेष शेष कुशल अछि

अन्हरा सरकार चला रहल राजकाज
छैक बौकक ई देश शेष कुशल अछि

देह बदलैए आत्मा नहि सूनि लिअ
एहने छैक सरकारक भेष शेष कुशल अछि

मुक्का आ थापड़क उपयोग के करत
खाली आँखिए लाल टरेस शेष कुशल अछि

गजल कहब असान नहि एतेक आशीष
आब चलैत छी बेश शेष कुशल अछि

अशोक दत्त

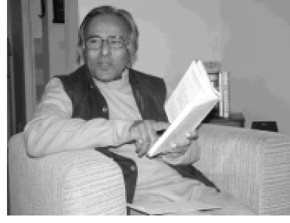
जनकपुर, नेपाल

दू टप्पी

पतुरियासन मुस्की मगरसन नोर नेने
भोरसं सांझधरि फुसिएटा परसैए
गिरगिट त दुनियांमे ब्यर्थे बदनाम अछि
गिरगिटसं बेशी मनुक्ख रंग बदलैए

लुत्ती

करेजपर चोट लगै छै त लुत्ती जनमै छै
केओ जं घात करै छै त लुत्ती जनमै छै
फ़ाटल चाहे जत्ते हो देहके वस्त्र मुदा
चीर पर हाथ बढै छै त लुत्ती जन्मै छै
रहओ केहनो अपन मडैया बडा नीक लगैछ
बास उपट' लगै छै त लुत्ती जनमै छै
ल कर्मक रङकुच्ची बनबैया अपन फ़ोटो
ओ फ़ोटो डहै छै त' लुत्ती जनमै छै
सोनित या पानि धरती होइछै समान सभके
भेदके रङ चढ़ैछै त लुत्ती जनमै छै
बुझि छाउर सर्द चाहे जत्ते खेल करए
बात जं हकके अबैछै त लुत्ती जनम छै



डॉ. गंगेश गुंजन (१९४२-)।

जन्म स्थान- पिलखबाड़, मधुबनी। एम.ए. (हिन्दी), रेडियो नाटक पर पी.एच.डी.। कवि, कथाकार, नाटककार आ' उपन्यासकार।१९६४-६५ मे पाँच गोटे कवि-लेखक ''काल पुरुष''(कालपुरुष अर्थात् प्रभास कुमार चौधरी, श्री गंगेश गुन्जन, श्री साकेतानन्द, श्री बालेश्वर तथा गौरीकान्त चौधरीकान्त) नामसँ सम्पादित करैत मैथिलीक प्रथम नवलेखनक अनियमितकालीन पत्रिका **''अनामा''**-जकर ई नाम साकेतानन्दजी द्वारा देल गेल छल आ बाकी चारू गोटे द्वारा अभिहित भेल छल- छपल छल। ओहि समयमे ई प्रयास ताहि समयक यथास्थितिवादी मैथिलीमे पैघ दुस्साहस मानल गेलैक। फणीश्वरनाथ ''रेणु'' जी अनामाक लोकार्पण करैत काल कहलन्हि, '' किछु छिनार छौरा सभक ई साहित्यिक प्रयास *अनामा* भावी मैथिली लेखनमे युगचेतनाक जरूरी अनुभवक बाट खोलत आ आधुनिक बनाओत''। ''किछु छिनार छौरा सभक'' रेणुजीक अपन अन्दाज छलन्हि बजबाक, जे हुनकर सन्सर्गमे रहल अछि आ सुनने अछि, तकरा एकर व्यञ्जना आ रस बूझल हेतैक। ओना ''अनामा''क कालपुरुष लोकनि कोनो रूपमे साहित्यिक मान्य मर्यादाक प्रति अवहेलना वा तिरस्कार नहि कएने रहथि। एकाध टिप्पणीमे मैथिलीक पुरानपंथी काव्यरुचिक प्रति कतिपय मुखर आविष्कारक स्वर अवश्य रहैक, जे सभ युगमे नव-पीढ़ीक स्वाभाविक व्यवहार होइछ, आओर जे पुरान पीढ़ीक लेखककेँ प्रिय नहि लगैत छनि आ सेहो स्वभाविके। मुदा अनामा केर तीन अंक मात्र निकलि सकलैक। सैह अनामा बादमे ''कथादिशा''क नामसँ स्व.श्री प्रभास कुमार चौधरी आ श्री गंगेश गुंजन दू गोटेक सम्पादनमे -तकनीकी-व्यवहारिक कारणसँ-छपैत रहल। कथा-दिशाक ऐतिहासिक कथा विशेषांक लोकक मानसमे एखनो ओहिना छन्हि। श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोर (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका- बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)।

प्रस्तुत अछि गुञ्जनजीक *मैगनम ओपस* "राधा" जे मैथिली साहित्यकेँ आबए बला दिनमे प्रेरणा तँ देबे करत सँगहि ई गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित *सभ दुःख सहए बाली-* राधा शंकरदेवक परम्परामे एकटा नव-परम्पराक प्रारम्भ करत, से आशा अछि। पढ़ू पहिल बेर "विदेह"मे **–सम्पादक**

गुंजनजीक राधा

विचार आ संवेदनाक एहि विदाइ युग भू- मंडलीकरणक बिहाड़िमे राधा-भावपर किछु-किछु मनोद्वेग, बड़ बेचैन कएने रहल।

अनवरत किछु कहबा लेल बाध्य करैत रहल। करहि पड़ल। आब तँ तकरो कतेक दिन भऽ गेलैक। बंद अछि। माने से मन एखन छोड़ि देने अछि। जे ओकर मर्जी। मुदा स्वतंत्र नहि कए देने अछि। मनुखदेवा सवारे अछि। करीब सए-सवा सए पात कहि चुकल छियैक। माने लिखाएल छैक।

आइ-काल्हि मैथिलीक महांगन (महा+आंगन) घटना-दुर्घटना सभसँ डगमगाएल-

जगमगाएल अछि। सुस्वागतम!

लोक मानसकें अभिजन-बुद्धि फेर बेदखल कऽ रहल अछि। मजा केर बात ई जे से सब भऽ रहल अछि- मैथिलीयेक नाम पर शहीद बनवाक उपक्रम प्रदर्शन-विन्याससँ। मिथिला राज्यक मान्यताक आंदोलनसँ लऽ कतोक अन्यान्य लक्ष्याभासक एन.जी.ओ.यी उद्योग मार्गे सेहो। एखन हमरा एतवे कहवाक छल। से एहन कालमे हम ई विहन्नास लिखवा लेल विवश छी आ अहाँकेँ लोक धरि पठयवा लेल राधा कहि रहल छी। विचारी।



राधा

ऑगी हेराएब कोनो तेहन दुर्घट बात नहि। राधा तें उदासो नहि भेलीह। उदास तें ओ आनो आन कए कारणें छलीह। जेना,शरीरे दुखित पड़लि छलीह। कोनो टा सखि, क्यो बहिना कए दिन सं देख' पर्यंत नहि अयलनि। हुलकियो देब' नहि। दुखित कें होइत छैक आशा आग्रह। बल्कि स्पृहा। स्पृहा ई जे क्यो आबए, आबि क' दू क्षण लग मे बैसय, दु:ख पूछय। गप करय। किछु कहय, किछु सुनय। मन कें बहटारय।

सैह तकरे अभाव आ संबन्धक जोर।जे अप्पन नहि तकरा पर अधिकारे कोन? जे अपनो अछि आ अधिकारो बुझाइत अछि, वास्तव मे से कतेक अपन?

ई अधिकार आ प्रयोजनक प्राथमिकताक अपन-अपन वृत्त होइत छैक। मनुक्ख-मनक ई लाचारी छैक। ओकरा अपन एहि सीमाक ध्यान राख' पड़ैत छैक आ तहिना संपर्कित-संबंधित समस्त समाजक ध्यान राख' पड़ैत छैक। से जकरा बुतें एकर, एहि बुद्धिक संतुलन नहि रहल,तकर जीवन कनीक आर मोशकिल।अर्थात् जीवनक मोशकिली धरि अपरिहार्य।

राधाक ई सोचब आ दुखी हएब स्वाभाविके जे जीवन मोशकिलीक सवारी थिक। चिक्कन चुनमुन बाट पर पहिया सब गुड़कैत आगां बढ़ैत रहल तं बड़ दिब। सबटा मन विरुद्धो अनुभव पाछां छुटैत गेल आ मनलग्गू अनुभव अपना संग आगां बढ़ैत रहल। कतहु कोनो ठाम पहुंचि गेलाक बाद कए तरहें संतुष्ट कयलक आ कए तरहें अतृप्त राखि देलक।

आब फेर एत' सं अनुभवक अतृप्त प्रसंग जे एकहि क्षण पहिने मात्र नगण्य बुझाइत छल, से भ' जाइत अछि खोंचाड़ल मधुमाछी... खोंचाड़ल मधुमाछीमक खोंता। बिना बिन्हनहुं अनेरे ठेहुन सं मूड़ी धरि घनघनौने रहत बड़ी-बड़ी काल। हरदम डेरायल मन-काटत,आब काटत...। कोनो क्षण लुधकत आ काटि लेत। यद्यपि कि काटियो लेत तं कोन ओ अहांक गर्दनि छोपि लेत? दंश देत। से मुदा भने मधु जकां नहि, विष विशाइत दंश। कोनो गर्दनिकट्ट नहि होइत अछि- मधुमाछी !

-बरु गर्दनियें काटब सुभीतगर, ओ सोचलनि। भने मनुक्ख कें छुटकारा तं भेटि जाइ छैक। आ दिन दिनक विस विसाइत भोग-अनुभूतिक अनवरत क्रम जे संपूर्ण अस्तित्वे के बेचैन कयने रहत। देह-प्राणक किछु टा आन वातावरण नहि बनब' देत। घिसियौर कटबैत रहत। ओही अपन स्वभावक परिधि आ तकर प्रयोजन मे बन्हने रहत। मात्र बन्हनहुं टा रहि जाय, तैयो सुकुर, मुदा ओ तं अहांक बुद्धि सं आर सब किछु कें काटि-बारि क' फराक क' देत। अहीं कें अपन तेहल्ला बना क' छोड़त। लैत रहू।

आब एहि मन मे किछुओ क्षण रहि गेलौं कि ओ अहां सं अहींक परिचय तलब करत। यावत-यावत तैयार भ' क' अहां उपयुक्त सोचब आ बाजब, तावत-तावत ई बात, अहांक मनक ई मामूली घटना एकटा समाचार बनि जायत। ई समाचार बिना कोनो माध्यम कें रौद आ बसात पर सवार भ' क' पहुंचि जायत ओत' धरि जत' अहां सोचियो ने सकैत छी। आब बैसि क' कपार पीटैत रहू। ककरा-ककरा आ की-की बुझयबैक? आ से जकरा बुझयबैक से कतेक दूर धरि,की मानत? जतवा मानियो लेत तकरा सं अहांक जीवन कें की सुभीता आ कोन सुख?

हँ, सुख? की थिक? केहन होइत छैक? कोना होइत छैक? कतवा होइत छैक? ककरा होइत छैक?

मुदा... मुदा, किछु छैक तं अवश्ये ई सुख! सुखक अनुभव अवश्ये छैक एहि पृथ्वी पर-मनुक्ख सं ल' क' सब जीवधारी मे।तें रहैए एकरा पाछां व्याकुल-बेहाल! परंतु से केहन छैक-लाल,पीयर, हरियर,उज्जर, कारी - केहन? अर्थात् सुखक कोनो रंगो होइत छैक? कोनो खास रंग?

-की स्वाद छैक? केहन स्वाद? कोनो फलक स्वाद? चाउर-दालि-गहूमक स्वाद? तीमन-तरकारीक?इनारक टटका जलक स्वाद? एक संगे दू गोटेक इजोरियाक चन्द्रमा बा एकान्त अन्हरिया मे तारा गनवाक स्वाद? कोनो अनचिन्हार चिड़ैक अपरिचित बोल अकानि चीन्हवाक कोसिसक स्वाद? बा भोरे भोरे जन्मौटी बच्चाक मिलमिलाइत आंखि जकां बाड़ीक कोनो नान्हि टा गाछ मे नव पनगल दिव्य ललाओन दुपत्ती कें देखि अह्लाद होयवाक स्वाद?....घन अन्हार मे ककरो कंठ सं अपन नामक सम्बोधन सुनवाक?

कोनो गंध होइत छैक? अत्तर-गुलाब सन, बेली-चमेली सन, तेजपात सं छौंकल दालि, कढ़ी पातक बा औंटवा काल लोहिया लागि गेल दूध सन, सोन्हायल डाबा सन,-कथी सन? जन्मौटी बच्चा सन, तुरंत बियाहलि स्त्री सन आ कि बाध सं घुरल हरवाह-गृहस्थ सन, यमुना जल मे खीचल नूआ-वस्त्र सन बा पाकल कदंब सन बा श्रीकृष्णक सांस सन?

सांस मे केहन निसां छैक ! कृष्णक सांस मे केहन निस्सां छनि? कृष्ण मे अपने केहन निसां छनि ! कृष्ण निस्सें छथि। कृष्ण माने निसां...।

बेचैनी राधाक,बेबस मनक प्रवाह मे,

बहैत रहल, यमुना धार सन,

राति, रातुक अन्हार काल मे। सब सूतल अपन-अपन ठाम।

धेने सब रातुक विश्रामक स्थान।

चिड़ै चुनमुन्नी अपन-अपन खोंता।

माल जान अपन थैर-बथान।

आ मनुक्ख अपन-अपन चौकी-खाट-मचान !

निसभेर निन्न मे डूमल जीयैत।

मात्र ई एकटा एकसर मनक विकल नियति, चुपचाप

सूतल रातिक अन्हार मे अपन निस्बद्द चलैत रहल-बहैत गेल!

राधाक मनक प्रवाह यमुना भ' गेल।

एतवो पर रच्छ छल, मुदा

कहां बांचल समयक इहो एहनो सुभीता,

सेहो तं आंजुरक जल भेल।

कतबो यत्ने बचा क' रखवा मे कहां भेलहुं सकारथ?
सबटा बहि गेल। कनीक काल रहल भने
भीजल तरहत्थी-माने स्निग्ध,
सेहो अगिले पल ऋतुक उष्ण प्रभावक वेग मे निङ्गाहे सुखा गेल।

जानि नहि ओ आंजुर आ आंजुरक जल कोन क्षण अलोप भेल
कोना बिला गेल,
कत' गेल?
सूर्य लग गेल? चन्द्रमा लग गेल कि तारा लग? वा माटि मे,
पोखरि-इनार-धार, कोनो मे फेर सं घुरि गेल, जा क' मीलि गेल जल-
अपन उद्गम सं, उत्स सं वा भाफ बनि क' बन' गेल मेघ? कर' गेल बरखा,?
जल कत'गेल? आंजुर भरि जल कत' गेल?

ई किछु विलाप जकां
राधाक मनक परिताप अपनहि अभ्यंतर मे
मुखर चलि रहल-
अपनहि कहैत-अपने कें सुनैत। अपने सं सभटा पूछैत।
ई केहन विचित्र आत्म सम्बोधन?
अपनहि मन सोर पाड़य अपने मन !
सौंसे गाम-टोल अछैत,
टोलक लोक, संबंधी, सखि-बहिनपाक एहि
पसरल समाज आ संसार मे कोनो एकटा मन,
एहन असकर
एतेक एकान्त
काटि रहल व्याकुल पल-पल जीवन।
अपनहि विडंबना कें स्वयं करैत
आत्म सम्बोधन....
-"राधा'' ....!!
एं ई की भेल कत' सं कोन आकाशवाणी

-"आब केहन मन अछि अहांक राधा !''
के पूछल? बाजल के? के आयल पूछ'-कुशलक्षेम,
ककर थिक ई प्राणबेधी वाणी?
दुर्लभ स्वर्गिक संगीत स्वर थिक ककर?
रातिक एहि निस्बद्द एकान्त अन्हार मे के बाजल,
ककरा भेलैक हमर चिन्ता?
के आयल पूछय-हालचाल,...

अच्छा, तं... ई थिक
हुनके ताल?

राधा कें कानमे स्पष्टे क्यो पुछलकनिहें। किछुओ संदेह नहि,

सत्य छैकः
'केहन मन अछि अहांक राधा...'
ई थिक सद्य : अनुभव, कोनो टा भ्रम नहि।
मुदा तखन राधा कें कियेक लगलनिहें ई जिज्ञासा,
पुरुष-कंठक नारी-स्वर मे प्रतिध्वनि?
यदि पुछलनिहें कृष्ण तं पछाति
सैह प्रश्न करैत स्त्री के छल ई जकर स्वर छल?
ई अछि कोना संभव?
मुदा थिक तं ई सत्य,संदेह कथमपि नहि।
सत्य तं होइत अछि सत्ये।
ज्वरे परजरित एहि देहक ताप पर
जमुना जल भीजल पीतांबरी जकां के
एना पसरि रहल-ए,

आलसे निनियाइल बसात...
जमुना मे झिलहरि खेलाइत,

निस्बद्द राति।
गंगेश गुंजन/राधा- सातम खेप/ प्रेषित २३ अक्तूबर-२००८.

बाढ़िक त्रासदी-पर डॉ. गंगेश गुंजन जीक मैथिली गजल

दु:खे टा चारू कात छै आ जी रहल-ए लोक
ताकैत आसरा कोनो दुःख पी रहल-ए लोक !
घर-द्वारि दहि गेलैक सब बच्चा टा छै बांचल
रेलवेक कात, बाट-घाट जी रहल-ए लोक !
सांझो भरिक खोराक ने छैक अगिला फसिल धरि
जीबा लए ई लाचार कोना जी रहल-ए लोक !
सबटा गमा क' जान बचा आबि त' गेलय
आब फेकल छुतहर जकां हद जी रहल-ए लोक !
जले पहिरना, बिछाओन जले छैक ओढना
जबकल गन्हाइत पानि-ए खा पी रहल-ए लोक !
सब वर्ष जकां एहू बाढ़ि मे कारप्रदार
रिलीफ नामें अपन झोरी सी रहल किछु लोक !
चलि तं पड़ल-ए जीप-ट्रक-नावक से तामझाम
आब ताही आसरा मे बस जी रहल-ए लोक !
कहि तं गेलाह-ए परसू-ए दस टन बंटत अन्न
एखबार-रेडियो भरोसे जी रहल-ए लोक !
घोखै तं छथि जे देच्च मे पर्याप्त अछि अनाज
सड़ओ गोदाम मे, उपास जी रहल-ए लोक !
उमेद मे जे आब आओत एन जी ओ कतोक
द' जायत बासि रोटी, वस्त्र, जी रहल-ए लोक !
अछि कठिन केहन समय ई राक्षस जकां अन्हार
किछु भ' रहल अछि तय, तें तं जी रहल-ए लोक !

॥ किछु एहनो बात विषय॥

यद्यपि एहि बात 'सगर राति दीप जरय' पर हम सिद्धांततः प्रभासजीसँ सहमत नहि रहलौँ, परन्तु एम्हर पछिला दशकमे ई तिमाही-कथा गोष्ठी- 'सगर राति दीप जरय'- आजुक मैथिली कथा-विधामे की योगदान कएलक अछि, से तथ्य आब इतिहासमे दर्ज अछि। ई बात सही छैक जे एहन कोनो कार्य कोनो एक गोटेक नहि होइछ। मुदा सभ वर्त्तमानकेँ ओहि एक संस्थापना-कल्पक व्यक्ति-लेखककेँ अवसरोचित रूपेँ कृतज्ञतासँ स्मरण अवश्य कयल जयबाक चाही। से लेखकीय नैतिकता थिक। आ' हमरा जनतबे, से रहथि- स्व. प्रभास कुमार चौधरी।

हमरा तखन दुखद निराशा भेल जखन एहि बेरक मैथिली साहित्य अकादेमी पुरस्कार पओनिहार प्रदीप बिहारीजी साहित्य अकादेमी-सभागारमे लेखक-सम्मिलन-अवसर पर अपना वक्तव्यमे सगर राति दीप्प जरयक उपलब्धिक चर्चा तँ कएलन्हि, मुदा स्व. प्रभास जीक नामोल्लेखो नहि कयलखिन। एकरा हम साधारण घटना नहि मानि सकैत छी। गंभीर बात बुझैत छी। कारण हमरा लोकनि रचनाकार छी। औसत कोटिक कोनो राजनीतिक नहि। संभव हो नाम अनावधानतामे छूटि गेल होनि। मुदा हमरा सभ लेखक छी तँ एहन असावधानी करबा लेल स्वाधीन नहि छी। यद्यपि अपन खेद हम हुनका प्रकट कयलियनि।

हमरा लगैये जे अपन-अपन सकारात्मक इतिहासक प्रति सभ पीढ़ीक मनमे कृतज्ञताक भाव अंततः लेखकक ऊर्जा आ' प्रेरणे बनैत रहैत छैक। बतौर कवि हम मैथिलीमे जाहि काल-बिन्दु पर ठाढ छी, तकर जड़ि विद्यापतिसँ ल' सुमन-किरण-मधुप- आ यात्रीएमे। ई सोचि क' मन कृतज्ञ होइत अछि! बल्कि गौरांवित। ओना, एकटा लेखक रूपमे हम एहिमे सँ क्यो नहि छी। जेना सभ, सभक कारयित्री प्रस्थान छथि, तहिना हमहुँ नागार्जुन-यात्रीक कारयात्री प्रस्थान छी। आ' ई भाव हमरा रचनाकर्ममे अग्रसर करबाक उत्तरदायित्व द' गेलय।

तर्पण तिल-कुश अंजलि बला कर्मकाण्डकेँ तँ हम नहि मानैत छी, मुदा पुरखाक तर्पण हमरा प्रिय अछि। अपना शैलीमे। अपन जीवन-मूल्यक एकटा अभिन्न तत्त्व बुझाइत अछि।

तकर बाट की हो? अवसर पर कृतज्ञ स्मृति! अवसर पर- तिथि पर नहि।

भोज परक आँटी- सत्तरिक नव-खाढ़िक युवा नवतुरिआसँ

"भोज परक आँटी" अवश्य सुनल हएत बन्धु! हमरा लोकनि ते आब आयु-अवरोहणक प्रक्रियामे छी। मुदा पराभव अछि अपन एहि मैथिल मानक ओ स्वप्न जे मिथिलांचलक समग्र सामाजिक परिवर्तनक अर्थात्- जनपथक निर्माण (राजपथ नहि) आकांक्षामे सौँसे बातपर उत्कट डेगे चलिते रहबा लेल विवश छी। हमर गाम पिलखबारो ताहि से जुटल अछि, जाहिसँ हितेन्द्रजी अहाँक गाम केओटी।

हमरा पीढ़ीकेँ तँ इतिहास "भोज परक आँटी" बना लेबाक बेर-बेर उपाय कएलक, जेना-तेना बँचबामे सफल रहलियैक, मुदा भऽ कहाँ कोनो खास सकलैक। तेकरे टा अफसोच। एक बोझक रूपमे फसिलकेँ खरिहानधरि कहाँ पहुँचा सकलियैक। तेकरे टा दुःख! मुदा टिकल रहलियैक अपन जीवन-मूल्य आ समाज दर्शनक भूमिपर। एक टा कवि-लेखक जे संघर्ष असकरो कऽ सकैत छी। से रस्ता चलबाक यत्न। जे से।

पूरा बिहार- आन्दोलनक परिणति एहन आ एतए धरि भऽ जेतैक से क्यो सोचियोसकैत छलैक? अवश्ये बुझल हएत जे ताहि आन्दोलनक उपज- आमद भरि देश कैक टा महापद आसीन सी.एम. समेत कतोक एम.पी., एम.एल.ए. महोदय छथि। अहाँक पीढ़ीमे यदि सत्येक (सन्देह नहि सत्तरिक कारवाँक भव से कहि रहल छी जे) सत्ये मिथिलाक दर्द अछि तँ राजनीतिकेँ चिन्हैत जाइ जाऊ। पोलीटिक्स कऽ एहि नव अवतारकेँ। से भाषाक। ताहूमे मैथिलीक नव-नव ब्रांडक नेता आ एहन राजनीतिकेँ चीन्हि जाऊ। कारण जे राजनीतिक ई एकदम नव अवतार ठीक विश्व-बाजारी अवतार! कोनो औसत सुख लेल ककरो "भोज परक आँटी" नहि बनब। एहि वाष्पीकरणक प्रवाहमे एहन लोक नीक समय अर्थात् कोनो प्रतिगामी व्यवस्था रोकि नहि सकैत अछि। स्वयं राजनीतिक विचारधारा-अवधारणामे सेहो युगक अनुसार सकारात्मक पुनर्विचार चलि रहल छैक। जाति, धर्म, सम्प्रदय, क्षेत्रीयता सभसँ ऊपर सोचैत। समग्रतासँ एक होऊ। अपन मिथिलाँचलो तँ देशेमे ने अछि।

अपम माँ मैथिली तँ अवश्ये महान। मुदा अन्य लोकक मातृभाषा सेहो तुच्छ नहि। अपना देशक सभ भाषा श्रेष्ठ अछि। मुदा दुर्भाग्यसँ किछु मूढ़ मैथिल मानसिकताक लोक आर तँ आर हिन्दी तककेँ अपमान जेकाँ कऽ देबाकेँ अपन मैथिल प्रेम बुझि लैत छथि, ई नकारात्मक प्रवृत्ति उचित नहि। हम तँ तेहन समयकेँ सहन कएने छी, जे किछु परम् विद्वान् अत्यन्त आदरणीय लोक लिखैत तँ मैथिली नहि तँ इंग्लिश। हिन्दी नहि। ई बहुत विचित्र लागए। आखिर हिन्दी अपन बहुत गौरवशाली लोकतन्त्र राष्ट्र-भाषा थिक। बन्धु! से मानसिकता बदलि जरूर रहल अछि मुदा अहाँ खाढ़िक (पीढ़ीक) युवा नवतुरिआमे आओर तेजीसँ परिवर्तन चाही। बात नहि रुचए तँ बिसरि जाएब, आग्रह!



हिमांशु चौधरी

पिता : स्वर्गीय कामेश्वर चौधरी,माताः श्रीमती चन्द्रावती चौधरी,जन्मः वि स २०२०/६/५ लहान, सिरहा,शिक्षाः स्नातकोत्तर(नेपाली),पेशाः पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति),कृति : की भार सांठू ? (मैथिली कविता संग्रह), विगत दू दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध।–**सम्पादक**

की भार साँठू ?.........

लाते लातसँ घायल
लाशे लाशसँ गन्हाएल
सङक्रान्तिक पीडामे
की भार सांठू ?.........
थुराएल चानी
फुफ़डिआएल अहिबक फ़ड
शोकाएल चाउर, पीपाएल आँजुर
दन्त्यकथाक पात्र जकाँ
कचोट द' रहल अछि
गत्र गत्रमे बेधल भाला-गडाँस
टीसे-टीसे द' रहल अछि
फ़ाटल चिटल कपडा-लत्ता
मूँह कतहु, हाथ कतहु स्ट्रेमे राखल
सिगरेटक ठुट्टीसन
लावारिस भ' गेल इतिहासमे बहल नोर
फ़ेर एहिबेर सेहो बहि गेल
गन्हाएल लाशक भार कोनाक' साठू
?.........
अनिष्टकारी अमरौती पीने अछि
ओकरा लेल सत्यम,शिवम आ सुन्दरमक
सर्जक बाधकतत्व
बाधकतत्व मरि जाए/माहुरे माहुर भ' जाए
अन्यायक अमरलत्ती/द्रोपदीक चिरसन
नमरैत चलि जाए
एहन सनकमे सनकैत ओकर अमरौती
कखनो बारुद फ़ेकैए/कखनो धराप रखैए
बारुद आ धरापमे पोस्तादाना कत' ताकू
जे अनरसा बनाएब आ भार सांठब
क्यानभासमे फ़ाटल गाछ देखि
अन्हडि-बिहाडि अएबे करत
विश्वासक जयन्ती अङकुरित भेल अछि
परन्च बहुतो धोएल सींथक सेनुरक
कारुणिकताक भार कोनाक' साठू ?
....

नियति

बिछानरुपी मशानमे अर्थहीन भ'
अपन लाशक कठियारी स्वयमसन भ'
गेल छी
इच्छासभमे पूर्णविराम लागि गेल अछि
तें
एकटा नियति भ' गेल छी
हॅसलासँ मात्र नंहि
कनएटा पडैत अछि
कनैत कनैत थाकि जाइत छी
तखनो
शान्ति नहि
किछु मनोविनोद करएटा पडैत अछि
बनाबटी मुस्की छोडएटा पडैत अछि
धन्य कथा !
धन्य यथार्थ !!
तें
जीवन मृत्युमे लीन होइत जा रहल अछि
जीवन आ मृत्यु मन्जिल होइत जारहल
अछि



हृदय नारायण झा

आकाशवाणीक बी हाइग्रेड कलाकार। परम्परागत योगक शिक्षा प्राप्त।

लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत

प्राती, गोसाउनिक गीत भगवतीगीत झूमरा, सोहर, खेलउना, कुमार, परिछन, चुमान, डहकन, बिषहारा गीत, झूमरि, बटगमनी, मलार चैमासा, लगनी, समदाउन आ एकर अतिरिक्त नदी संस्कृति मे कोशी गीत आदि कतेको मैथिली लोकगीत लुप्तप्राय अछि। जतए कतहु एखनहु लोककण्ठ मे ई गीत सभ बाचल अछि तकरा संग्रहित कऽ ओहि गीतक प्रकाशन आ ओहि धुन कें सुरक्षित रखबाक लेल ओकर ऑडियो वीडियो रूप मे दस्तावेजीकरण करबाक आवश्यकता विचारणीय अछि। संवैधानिक मान्यता प्राप्त भारतीय भाषा बनलाक बाद मैथिलीक संस्कार, रीति रिवाज, पर्व त्योहार ओ) तु पर आधारित गीतक समृ (परंपरा वर्तमान आ भविष्यक पीढ़ी लेल कोना सुरक्षित कएल जाय ई संपूर्ण मैथिली जगतक लेल चिन्ताक विषय बनल अछि। मिथिला महान रहल अछि अपन विशेषताक कारणें। मिथिलाक प्रशंसा में वृहद्विष्णुपुराणक उक्ति अछि

धन्यास्ते ये प्रयत्नेन निवसन्ति महात्मुने।
विचरेन्मिथिला मध्ये ग्रामे ग्रामे
विचक्षणः।।

सदाम्रवन सम्पन्ना नदीतीरेषु संस्थिता।
तीरेषुभुक्तियोगेन तैरभुक्ति रितिस्मृता।।

अर्थात् हे मुनीश्वर! ओ धन्य छथि जे मिथिला में यत्नपूर्वक निवास करइ छथि आ मिथिलाक गामे गाम

घूमइ छथि। ई मिथिला सदैव आमक वन सँ सम्पन्न नदीक तट पर स्थित अछि आ तीर में भोगक लेल प्रसिद्ध अछि। तैँ तीरभुक्ति अर्थात् तिरहुत नाम सँ सेहो जानल जाइत अछि मिथिलांचल।

पुराणोक्त कपिलेश्वर, हरिलाखी, पिप्पलीवन, फुलहर, गिरिजास्थान, विलावती, हरित्वेकी, कूपेश्वर; कुशेश्वरस्थान द्ध, सिंहेश्वर, जनकपुर, वनग्राम, सिन्दूरेश्वर, त्रपनायनवन, विषहर, मंगला, मंगलवती विरजा, पापहारिणी, सुखेलीवन आदि तीर्थ सँ पावन मिथिलाक महिमा वृहद्विष्णुपुराणक मिथिला माहात्म्य में वर्णन कएल गेल अछि।

मिथिलाक लोकगीत में धर्म आ लोक बेवहारक प्रधानता अछि। ब्राह्मवेलाक, पराती, श्रमगीत; लगनीद्ध, गोदना, भगवतीक आवाहन गीत; गहबर मे प्रचलित गीत झूमराद्ध, कोशी संस्कृति में विकसित गीत सहित परंपरागत संस्कार गीतक कतेको प्रकार मिथिलाक नव पीढ़ीक बीच लुप्तप्राय अछि।
ओहि लुप्तप्राय गीत सभक शब्द रचना, धुन, स्वर, लय आ भाव एखनहुँ सबकें आकर्षित करइत अछि। सब तरहेँ ज्ञान कँ बढ़ाब बला, संस्कारक संग रीति नीतिक बोध कराब बला आ सुनबा मे मनोरंजक अछि ओ गीत सभ। एखनहुँ जतए कतहु परातीक स्वर कान में पड़ैछ मन भाव विभोर भ जाइत अछि। प्रस्तुत अछि साहेबदासक लिखल पराती मौलिक पारंपरिक भास में -

अजहुँ भजन चित चेत मुगुध मन अजहु भजन चित चेत।।

बालापन तरूणापन बीतल, केस भये सभ सेत मुगुध मन। अजहुँ।।

जा मुख राम नाम ने आबत, मानहु सो जन प्रेत मुगुध मन। अजहुँ।।

हरि विमुखी सुख लहत न कबहुँ, परए नरक के रेत मुगुध मन। अजहुँ।।

साहेबदास तोहि क्या लागत, राम नाम मुख लेत मुगुध मन अजहुँ भजन चित चेत।।

परातीक संबंध में श्रेष्ठ जन कहइ छथि - जखन पराती गाओल जाइ छल त एक कोस धरि ओर ध्वनि पहुँचइत छल। परातीक भास आ भाव लोकसभ के जगा क मंगल विहानक आनन्द दैत छल। ओहि भासक पराती केहन होइत अछि, देखल जाय -

प्राण रहत नहि मोर श्याम बिनु प्राण रहत नहि मोर।।

काहि पुछओ कोई मोहि ने बताबए, कहाँ गेल नन्द किशोर। श्याम बिनु।।

छल कए गेल छलिक नन्दनन्दन , नैन झझाइछ नोर। श्याम बिनु।।

साध्यौ मौन कानन पशु पंछी, कतहु ने कुहुकए मोर। श्याम बिनु।।

हमहुँ मरब हुनि बहुरि न आएब, साहेब जीवन दि न थोर। श्याम बिनु प्राण रहत नहि मोर।।

मधुबनी में श्री दुर्गास्थान,कोइलख में भद्रकाली, श्री दुर्गाशक्तिपीठ, मंगरौनी में बूढ़ी माई, डोकहर मे

राजराजेश्वरी, जितवारपुर मे सि(काली पीठ, ठाढ़ी मे परमेश्वरी स्थान, खोजपुर में तारामंदिर, सहरसा के वनगाॅव मे उग्रतारा, विराटपुर मे चण्डिका, बदलाघाट मे कात्यायनी, पचगछिया मे श्री कंकाली, पटोरी आ गढ़बरूआरी मे दशमहाविद्या, देवनाडीह मे वनदुर्गा, दरभंगा मे श्यामामंदिर, म्लेच्छमर्दिनी, गलमा मे तारास्थान, पचही मे चामुण्डा, अहल्यास्थान, ककरौल मे शीतला स्थान, पूर्णियां मे पूरनदेवी, अररिया मे दक्षिण कालिका मंदिर, मुजफ्फरपुर मे त्रिपुरसुन्दरी, सखरा मे सखलेश्वरी, उच्चैठ मे छिन्नमस्तिका, चम्पारन मे वैराटी देवी, चण्डी स्थान, सहोदरा स्थान सन कतेको देवी तीर्थ सँ सम्पन्न मिथिलाक जन जन मे देवी शक्तिक उपासनाक परंपरा समृ(अछि।

मिथिलाक घर घर मे कुलदेवी रूप मे पूजित हेबाक कारणेँ विविध भावक देवीगीतक परंपरा विकसित भेल। संपूर्ण भारत वर्ष मे मिथिला एकमात्र क्षेत्र अछि जतए भगवती गीतक सर्वाधिक धुन पाओल जाइछ। कोनो मंगल कार्यक आरंभ में गोसाउनिक गीत गेबाक जे परंपरा अछि ओहि मे प्रचलित अधिकांश गीत आ धुन लुप्तप्राय अछि। लोककंठ में एखनहुँ कतहुँ कतहुँ सूनल जा सकैछ एहन किछु गीत। यथा

1. पारंपरिक

जय वर जय वर दिअ हे गोसाउनि हे मा तारिणी त्रिभुवन देवी।

सिंह चढल मैया फिरथि गोसाउनि हे मा अतिबल भगवती चण्डी।।

कट कट कट मैया दन्त शबद कएलि हे मा गट गट गिरलनि काँचे।
घट घट घट मैया शोणित पिबलनि हे मा मातलि योगिन संगे।।

2. म0म0मदन उपाध्याय

जय जय तारिणी भव भय हारिणी दुरित निवारिणी वर माले।

परम स्वरूपिणी उग्र विभूषिणी दनुज विदूषिणी अहिमाले।।

पितृवन वासिनि खल खल हासिनि भूत निवासिनि सुविशाले।

त्रिभुवन तारिणि त्रिपुर विदारिणि वदन करालिनि अहिमाले।।

शतभख फल दे दिविशत शुभ दे अरिकुल भय दे धननिले।

अति धन धन दे हरि हर जय दे अनुपम वर दे वर शिले।।

मदन विलासिनी विदित विकासिनि कर कृतपाशिनि जगदीशे।

हरिकर चक्रिणि हरिकर वज्रिणि हरिकर शूलिनि परिमिशे।।

रवि शशि लोचिनि कलुष विलोचिनि वर सुख कारिणि शिव संगे।

श्रुति पथ चारिणि महिष विदारिनि क्षितिज विपोथिनि रण संगे।।

अतिशय हासिनि कमल विलासिनि तिमिर विनासिनि वर सारे।

हर हृदि हर्षिणि रिपुकुल घर्षिणि धन रव वरसिनि हे तारे।।

जय जय तारिणि भव भव हारिणि दुरित निवारिनि वर माले।।

3. पारंपरिक

करू भव सागर पार हे जननी करू भवसागर पार।

के मोरा नैया के मोर खेबैया के मोरा उतारत पार हे जननी।।

अहीं मोर नैया अहीं मोर खेबइया अहीं उतारब पार हे जननी।।

के मोरा माता के मोर पिला छथि के मोर सहोदर भाई हे जननी।।

अहीं मोर माता अहीं मोर पिता छी अहीं सहोदर भाई हे जननी।।

4. कालिकान्त

अखिल विश्व के नैन तारा अहीं छी हे जगदम्ब हम्मर सहारा अहीं छी।।

अनल वायु शशि सूर्य सभ मे अहीं मा, नदी के विमल मंजुधारा अहीं छी।।

रज सत्व तम केर उदभव अहीं मा, प्रगट मे तदपि शंभुधारा अहीं छी।।

विपत धार मे सुत जौं डुबि रहल हो तकर हेतु निकटक किनारा अहीं छी।।

विनय कालिकान्तक सुनत आन के मा दया के सकल सृष्टि सारा अहीं छी।।

5. पारंपरिक

सुर नर मुनि जन जगतक जननी हमरो पर होइयौ ने सहाय हे मा।।

जनम जनम सँओ मुरूख बनल छी, आबहु देहु किछु ज्ञान हे मा।।

केओ ने जगत बीच अपन लखित भेल, हमहुँ अहींक सन्तान हे मा।।

दुखिया के जिनगी माता देखलो ने जाइए, सुखमय जग करू दान हे मा।।

काम क्रोध लोभ मोह माया जाल बाझलहुँ, मुक्तिक देहु वरदान हे मा।।

6. पारंपरिक

हे जगदम्ब जगत माता काली प्रथम प्रणाम करै छी हे।।

प्रथम प्रणाम करै छी हे जननी हम त किछु ने जनै छी हे।।

नहि जानी हम पूजा जप तप अटपट गीत गबइ छी हे।

अटपट गीत गबई छी हे जननी हम त किछु ने जनै छी हे।।

विपतिक हाल कहू की अहाॅ के सबटा अहाॅ जनै छी हे।

सबटा अहाॅ जनै छी हे माता,हम त किछु ने जनै छी हे।।

मात पिता हित मित कुल परिजन माया जाल बझल छी हे।

जगतारिणी जगदम्ब अहीँ कें गहि गहि चरन कहै छी हे।।

7. पारंपरिक

हे अम्बे माता हमरो पर होइयौ सहाय।। हमार जगजननी हमरो पर होइयौ सहाय।।

युग युग सॅ भटकल छी जीवन भॅवर मे आबहुॅ उबारू हे माय।।

दुःखहि जनम बाल यौवन मे पाओल सुख के ने भेटल उपाय।।

अज्ञानी शक्तिहीन लोभी बनल छी,एहन ने जिनगी सोहाय।।

8. महाकवि विद्यापति

आदि भवानी विनय तुअ पाय,तुअ सुमिरइत दुरत दूर जाय।।

सिंह चढ़ल देवि देल परवेश बघछाल पहिरन जोगिन भेष।।

बाम लेल खपर दहिन लेल काति, असुर के बधए चललि निशि राति।।

आदि भवानी विनय तुअ पाय,तुअ सुमिरइत दुरत दूर जाय।।

तुअ भल छाज देवि मुण्डहार, नूपूर शबद करए छनकार।।

भनई विद्यापति कालीकेलि सदा ए रहू मैया दहिन भेलि।। आदि भवानी

9. कवीश्वर चन्दा झा

तुअ बिनु आज भवन भेल रे घन विपिन समान।।

जनु रिधि सिधिक गरूअ गेल रे मन होइछ भान।।

परमेश्वरी महिमा तुअ रे जग के नहि जान। मोर अपराध छेमब सब रे नहि याचब आन।।

जगत जननी कॉ जग कह रे जन जानकि नाम। नहर नेह नियत नित रे रह मिथिला धाम।।

शुभमयी शुभ शुभ सब दिन रे थिर पति अनुराग। तुअ सेवि पूरल मनोरथ रे हम सुलित सभाग।।

इ नवो गीत नौ धुन मे अछि। एकर अतिरिक्त कतोक गीत अछि मुदा आबक नब पीढ़ीक बीच एकर परंपरागत शिक्षाक व्यवहार नहि देखल जाइछ। परिणामतः फिल्मी गीतक धुन मे भगवती गीत सभक चलन

मैथिली परंपरागत गोसाउनिक गीत भगवती गीतक परंपराक समक्ष अस्तित्वक संकट अछि।

एकर अतिरिक्त गाम गाम मे गहबर बीच भगतक मंडली मे झूमरा गाबक समृद्ध परंपरा रहल अछि। मुदा कालक्रमे इहो परंपरा अस्तित्वक संकट झेलि रहल अछि। नौ सदस्यक समवेत स्वर मे झालि आ मॉडर के संगति मे प्रस्तुत झूमरा गायन सॅ भगवतीक आवाहन होइत अछि आ भगतक शरीर मे देवी

प्रगट होइत छथि। बीज रूप में एखनहुॅ बचल अछि ई परंपरा मुदा लुप्तप्राय अछि। बतहू यादव सन भगत चिन्तित छथि जे हुनक बाद इ परंपरा कोना बाँचत ? हुनकहि सॅ सूनल अछि इ झूमरा गीत

अरही जे वन से मइया खरही कटओलियइ हे मइया खरही कटओलियइ हे।

मइया जी हे बिजुबन कटओलियइ बिट बाँस जगदम्बा रचि रचि महल बनओलियई हे।।

गोड़लागूॅ पैयॉ पड़ूॅ मइया जगदम्बा आइ मइया गहबर अबियउ हे।

मइया जी हे राखि लिअउ भगत केर लाज जगदम्बा कलजोरि पैयाँ पड़इ छी हे।।

जहिना बलकबा खेलइ माता के गोदिया हे, भवानी माता के गोदिया हे।

मइया जी हे तहिना खेलाबहु जग बीच जगदम्बा आब मइया गहबर अबियउ हे।।

नामो ने जनइ छी मइया पदो ने बूझै छी हे मइया पदो ने बूझै छी हे।

मइया जी हे सेवक बीच कण्ठ लियउ बास जगदम्बा आब मइया लाज रखियौ हे।।

गोड़ लागूॅ पइयॉ परूॅ आद्या जलामुखी हे मइया अद्या जलामुखी हे।

मइयाजी हे राखि लिअउ अरज केर लाज जगदम्बा सेवक कलजोड़इए हे।।



जितेन्द्र झा

पताः जनकपुरधाम, नेपाल एखन; नई दिल्ली

स्वरक माला गँथती अंशु-



हम सभ अपने भाषाकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छी तें हमर भाषासाहित्य, गीतसंगीत आ संस्कृति पछुआ रहल अछि। ई कहब छन्हि अंशुमालाक। अंशु दिल्ली विश्वविद्यालयमे संगीतमे एम फ़िल कऽ रहल छथि। मैथिली गीत संगीतकेँ गुणस्तरीय बनएबाक लक्ष्य रखनिहारि अंशु मैथिलकेँ अपन भाषा-संगीत प्रतिक दृष्टिकोण बदलबापर जोड दैत छथि।

अंशुमाला संगीतक विद्यार्थी छथि। दिल्ली विश्वविद्यालयमे एम. फ़िल.मे अध्ययनरत अंशुक माय हिनक पहिल गुरु छथिन्ह। ई माय शशि किरण झासँ मैथिली लोक संगीतक शिक्षा लेने छथि। तहिना एखन किछु बर्षसं ई रेडियो कलाकार हृदय नारायण झासँ संगीत शिक्षा ल' रहल छथि। बाल कलाकारक रुपमे सीतायण एलबममे गाबि चुकल अंशु बिभिन्न रेडियो कार्यक्रम आ स्टेज प्रोग्राममे सहभागी भ' क' मैथिली गीत गाबि अपन स्वरसं प्रशंसा बटोरने छथि।

एखन दिल्लीमे रहिकऽ संगीत साधनामे जुटल अंशु दिल्लीमे आयोजित विभिन्न कार्यक्रममे मैथिली गीत संगीत परसल करैत छथि।

मैथिली भाषीमे अन्य भाषाक गीत संगीतक प्रति बढैत रुचि मैथिली गीतसंगीत लेल हितकर नञि रहल हिनक कहब छन्हि। दिल्लीमे आयोजित एकटा कार्यक्रमकेँ याद करैत ई कहैत छथि जे जाहि कार्यक्रममे लगभग ८ हजार मैथिल रहथि ताहि कार्यक्रममे चाहियोकऽ मैथिली गीत नहि गाबि सकलहुं। ओहि कार्यक्रममे भोजपुरीक डिमाण्ड पुरा करैत अंशुके मैथिली डहकन गेबाक लेल मोन मसोसिक' रह' पडलनि। मुदा अंशु स्वीकारैत छथि जे गायक स्रोताक रुचिक आगु विवश होइत अछि, 'जनता जे सुनऽ' चाहत हमरा सएह गाबऽ पडत अंशु कहलनि। पटनामे मैथिली गीत गाबिक स्रोताक तालिक गडगडाटिसं खुश हएबाक आदति पडि चुकल अंशुकेँ दिल्लीमे आबिकऽ मैथिल भाषीक बदलल सांगीतिक स्वादसं अकच्छ लागि गेल रहनि।

मैथिलीमे लोकप्रिय धुनक अभाव रहबाक बात अंशु किन्नहु मान' लेल तैयार नहि छथि। धुन वा लयक अभाव नहि, स्रोता एहिसं अनभिज्ञ रहल हिनक दाबी छन्हि। मैथिली संगीतकर्मी एखनो आर्थिक समस्यासँ लडि रहल छथि, अंशु कहैत छथि। एहिक अभावक कारण प्यारोडी गीतक सहारा लेबालेल संगीतकर्मी बाध्य बनल अछि। मौलिक गीत,संगीतमे लगानीकर्ताक अभाव रहलासँ सेहो प्यारोडी संगीत लोकप्रिय भऽ रहल अछि, हिनक कहब छनि। 'सभसँ पैघ कमजोरी श्रोत छै कलाकार तँ सभ ठाम हारल रहैया' प्यारोडी प्रेमीपर रोष प्रकट करैत अंशु कहैत छथि। मुदा मैथिलीमे स्तरीय गीत संगीत स्रोताकेँ भेटक चाही से अंशुक विचार छन्हि। मैथिली लोकरंग मन्चद्वारा दिल्लीमे आयोजित कार्यक्रममे श्रोता भेटल वाहवाहीक उदाहरण दैत अंशु कहैत छथि जे स्रोताक मनोरन्जनक लेल स्तरीय कार्यक्रम सेहो हएबाक चाही।

मैथिली रंगकर्ममे लगनिहारकेँ उचित सम्मान तक नञि भेटि सकल, अंशुमालाक अनुभव छन्हि। मैथिली कलाकारकेँ आब' बला दिनमे बहुत मान सम्मान भेटक चाहि, हम इएह चाहैत छी अंशु कहैत छथि। मैथिली संगीतकेँ एकटा ऊँचाई पर पंहुचएबाक लक्ष्य रखनिहारि अंशु मैथिली रंगकर्ममे एखनो लडकी लेल बहुतो कठिनाई रहल बतबैत छथि।

अंशु आगु कहलनि-मैथिल समाजसँ जाधरि कलाकारकेँ सम्मान नञि भेटतै ताऽ धरि एहि क्षेत्रमे लडकी अपन प्रतिभा देखाब' लेल आगु नञि आओत।

नेपाल वन आ मधेश स्पेशल

टेलिभिजनमे जँ मैथिलीक मादे बात करी त नेपाल वन टेलिभिजनके एकटा

अलग स्थान बनि चुकल अछि। नेपाल वन टेलिभिजन राति पौने ८ बजे प्रसारित होब' बला मधेश स्पेशलक माध्यमसं मैथिली बहुतो मैथिल धरि पंहुच रहल अछि। नेपालमे सभसं बेशी बाजल जाए बला दोसर भाषा मैथिली रहितंहु ओत्त ताहि अनुपातमे संचारमाध्यममे मैथिलीके स्थान नई भेट सकल छइ। एहन अवस्थामे पडोसी देश भारतसं सन्चालित नेपाल वन टेलिभिजन मैथिलीमे कार्यक्रम प्रसारण क मैथिलीभाषा भाषी मध्य अपन अलग स्थान बनालेने अछि। नेपालमे सरकारी स्तरपर संचालित नेपाल टेलिभिजन सहित निजी टेलिभिजन च्यानलमे मैथिली एखनो उपेक्षिते अछि। यद्यपि बेर बेरके मधेश आन्दोलन आ संचारमाध्यमपर लाग बला साम्प्रदायिकताक आरोपक कारणे काठमाण्डुकेन्द्रित टेलिभिजनसबमे आब मैथिलीके स्थान भेट लागल छइ। काठमाण्डुसं प्रसारित सगरमाथा टेलिभिजन सेहो सभदिन मैथिलीमे समाचार देल करैत अछि।

नेपाल वन टेलिभिजनक मधेश स्पेशल नामक 1 घण्टाक कार्यक्रममे समाचार, नेपालक समसामयिक राजनीति, नेपालक प्रमुख मुद्दापर बातचित आ गीत संगीत समेटल गेल अछि। समसामयिक वस्तुस्थिति पर लोक अपन धारणा द क परिचर्चाके महत्वपूर्ण बना देल करैत अछि। ई कार्यक्रम राति पौने आठ बजेसं पौने नओ बजेधरि प्रसारित होइत अछि। नेपाल केन्द्रित समाचार रहितो नेपाल सं बाहर इ कार्यक्रम देखिनिहार मैथिल कमी नई अछि। नेपालक सीमावर्ती मधुवनी, दरभंगा, सीतामढी, सुपौल, सहरसासहितके जिल्लासभमे सेहो एकर दर्शकके कमी नहि अछि। नेपालक मैथिल जत्त मैथिलीमे समाचार, गीत, आ परिचर्चा सुनि क सुसूचित होइत छैथ ततई भारत आ आन ठामक दर्शक मैथिली गीत आ संचारमाध्यममे मैथिलीक बोली सुनि हर्षित भेल करैत अछि।

मधेश स्पेशल नेपालक मधेशीके एकटा अन्तर्राष्ट्रिय संचारमाध्यममे मुंह खोलि क बजबाक अवसर देलकै, सेहो अपने भाषामे। नेपालक संचारमाध्यमसं सेहो कटल कट्ल रहबला मधेशके छोट छिन घटना सेहो प्रमुख समाचार बन लागल। मधेशीक मुद्दापर खुलिक बहस शुरु भ गेल। मधेशक नेता सेहो धोती कुर्ता पहिरिक काठमाण्डुएमे बैसि क कोनो टेलिभिजन पर प्रत्यक्ष रुपँ जनतासँ बातचित कर लगला। टेलिभिजनमे जत्त मैथिली शुन्यप्राय छल ताहि अबस्थामे एक्कहिबेर एक घण्टा मैथिलीक कार्यक्रमके लोकप्रिय होब मे बेशी समय नइ लगलै। एखन इ कार्यक्रम दू बर्ष पुरा कर लागल अइ।

नेपाल 1 टेलिभिजन डिस टिभी आ टाटा स्काइपर उपलब्ध हएबाक कारणे इ देश विदेशमे रह बला मैथिललग सहजहिं पंहुच बनालेने अछि। एहिद्वारे लगभग ७० टा देशमे रहबला मैथिल भाषी मधेश स्पेशलके माध्यमसं मैथिलीमे सुचना आ मनोरन्जन ल रहल छैथ। मधेश स्पेशल मैथिली आ भोजपुरीक मिश्रित कार्यक्रम अछि। एहिमे मैथिली भाषाक गीत नादक अतिरिक्त भोजपुरीक चौकी तोड आ आधुनिक गीत सेहो प्रसारण होइ छै। ई कार्यक्रम तीन भागमे बाटल अछि। पहिलमे नेपाल आ अन्तर्राष्ट्रिय समाचार रहैछै त दोसरमे समसामयिक चर्चा(टक शो) आ तेसरमे मैथिली/भोजपुरी गीत।

दृश्य संचारमे मधेश स्पेशल मैथिलीके जगजियार करमे बड पैघ भूमिका निर्वाह क रहल अछि आ क सकैत अछि से कहनाई अतिशयोक्ति नई हएत। डोम कछ आ जट जटिनक नाचसं जं माटिक सुगन्ध लेब चाहैत हुवए त हुनका सभहक लेल मधेश स्पेशल सहायक भ सकैत छै।

मेधेश केन्द्रित कार्यक्रम होइतो इ मिथिलान्चलके सर्वाङिण विकासमे कत्तेक सहायक हएत से त आव बला दिने बताओत मुदा एतवा निश्चित जे टेलिभिजनमे मैथिलीक नियमित प्रसारणसं मैथिलके अपन बोली अपन भाषा याद दियबैत रहतै।

नेपालक (किछु भारतक) मिथिला मैथिल मैथिलीक सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक समाचार

भाषा हित कि भोट्क लोभ

नयी दिल्लीक मैथिली भोजपुरी एकेडमीक अध्यक्ष एवं दिल्लीक मुख्यमन्त्री शीला दीक्षित मैथिली भोजपुरी एकेडमीकेँ आन एकेडमीसँ आगू बढल देखऽ चाहैत छी, से कहलनि अछि। मैथिली भोजपुरी एकेडमी द्वारा आयोजित भिखारी ठाकुरक विदेशिया नाटक मन्चन कार्यक्रममे दीक्षित ई बात कहलनि। मैथिलीक लेल अलग एकेडमीक माँगक प्रति दीक्षित कहलनि जे हमरा सभकेँ जोड़क बात करक चाही तोडक नञि। एकताक दोहाइ दैत मुख्यमन्त्री भने अलग एकेडमीक् बातसँ कन्नी कटने होथि मुदा मैथिली भाषा साहित्यमे लागल प्रबुद्धबर्ग मानैत छथि जे अलग एकेडमीसँ मात्र मैथिलीक वास्तविक विकास भऽ सकत। ओना एकेडमी भोट बटोरबाक साधन मात्र नञि बनए ताहि दिश सेहो ध्यान देब जरुरी अछि। एकेडमीक आयोजनमे ६ अगस्त मंगलक राति विदेशिया आऽ ७ अगस्त **बुधक राति महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक मन्चित** कएल गेल छल। मैथिली भोजपुरी एकेडमी आन एकेडमीसँ आगू बढय से दीक्षितके कहब रहनि। सरकारी ढिलासुस्तीकेँ स्वीकारैत ओऽ एक दिन सबहक आवाज सुनल जायत, कहलनि। नव दिल्लीमे एकेडमी द्वारा आयोजित कार्यक्रममे भोजपुरी नाटक विदेशिया देखलाक बाद दीक्षित नाटक खेलनिहार रंगकर्मीकेँ प्रशंसा केने रहथि। नाटयशालामे भोजपुरी आऽ मैथिली भाषीक भीड़ लागल छल। तहिना मैथिली भोजपुरी एकेडमीक उपाध्यक्ष अनिल मिश्र, एकेडमी, विहारक समृद्ध

संस्कृतिकेँ बखानैत एहन प्रस्तुति निरन्तर होइत रहत, से जनतब देलनि।









"हमर सिंहासन अटल अछि" मलंगिया

'जाधरि हमर कलम चलैत रहत ताधरि मैथिली नाटककारक रुपमे हमर ऊँचाइ धरि कियो नञि पहुँचि सकैत अछिए। ई सिंहनाद छनि मैथिलीक प्रख्यात नाटककार महेन्द्र मलंगियाक। समकालीन मैथिली साहित्यकारकेँ चुनौती दैत, ओ नाटककार अपन **सिंहासन** किनको बुते डोलाएल पार नञि लगतए से दाबी करैत छथि। मैथिली नाटककार महेन्द्र मलंगिया एखन मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय आऽ ख्यातिप्राप्त नाटककारमे चिन्हल जाइत छथि। चुनौतीपुर्ण शैलीमे मलंगिया कहैत छथि, हमर हाथमे जाधरि कलम अछि, हम अपन स्थानपर टिकले रहब, हमर सिंहासन अटल अछि। मैथिली नाटकक भीष्मपितामह कहल जाए तँ केहन लगैए, ताहि जिज्ञासामे मलंगिया मुस्कियाइत कहलनि जे हमर नाटक लोककेँ पसिन छञि हमरा ताहि पर गर्व अछि, हम जाहि स्तरक नाटक लिखैत छी, तेहन रचना एखन नञि भऽ रहल छञि। ओऽ जनकपुरक रंगकर्मीक खुलिकऽ प्रशंसा करैत छथि। मैथिली रंगकर्ममे लागल जनकपुरक कलाकारक मलंगिया प्रसंशा करैत कहलनि, जनकपुरक कलाकारसँ बहुत आशा कएल जाऽ सकैत अछि। मैथिली नाटकमे शेक्सपियर कहल जाएबला मलंगिया ४ दशकसँ बेशी समय नेपालमे बिता देने छथि। ओऽ नेपालमे मैथिली साहित्यक संरक्षण लेल सन्तोषप्रद काज नञि भऽ सकल, बतौलनि। नेपालमे दोसर सभसँ बेशी बाजल जाएबला भाषा मैथिलीमे रंगकर्मक समयसापेक्ष बिकास नञि भऽ सकल मलंगियाक कहब छनि। लोकतन्त्र बहालीक बाद सेहो नेपाल सरकार मैथिलीक लेल किछु नञि कऽ सकल हुनक आरोप छन्हि। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा मैथिली भाषा, साहित्यक लेल भेल काजके ओऽ कौराके संज्ञा देलनि। प्रतिष्ठानद्वारा मैथिलीलेल भऽ रहल काज प्रति मलंगिया असन्तुष्टि ब्यक्त कएलनि। मैथिली रंगकर्ममे निरन्तर कार्यरत संस्थाकेँ सरकार दिशसँ कोनो तरहक सहयोग नञि भेट रहल बतबैत, ताहि प्रति खेद ब्यक्त कएलनि। सरकारी उपेक्षाक कारण सेहो मैथिली रंगकर्म ओझराहटिमे पडल, मलंगिया मानैत छैथ।

मैथिली साहित्यमे नाटककार आऽ निर्देशकक रुपमे ख्यातिप्राप्त मलंगिया रंगकर्मकेँ रोजीरोटीसँ जोडल जाए, से कहैत छथि। जाऽ धरि रोजीरोटीसँ रंगकर्म नञि जुटत ताऽ धरि बिकास सम्भव नञि, मलंगिया स्पष्ट कहैत छथि। जनकपुरमे मिथिला नाट्य कला परिषदसँ आबद्ध भऽ मैथिली नाटककेँ जन-जन धरि पंहुचएबाक अभियानमे लागल मलंगिया राजतन्त्रमे मैथिली भाषा संस्कृतिक संरक्षणक लेल कोनो काज नञि भेलाक कारणे सेहो मैथिली पछुआएल अछि, से कहलनि।

मैथिली भाषामे आम दर्शकक मोनमे गडि जाएबला नाटक लिखिकऽ मैथिली साहित्यक श्री बृद्धिमे योगदान देनिहार मलंगिया नाटककार नाटक लिखैत काल दर्शकक मानसिकता, उमेर , शिक्षा आऽ पेशाकेँ ध्यानमे राखए से सलाह दैत छथि। 'हम दर्शककेँ लक्षित कऽ नाटक लिखैत छी, तँ हमर लिखल नाटक लोककेँ नीक लगैत छञि, मलंगिया अपन सफ़लताक रहस्य बतबैत कहलनि।

बिदेशिया नाटक:*बिदेशिया घुरि जो*

विदेश जएवाक बाध्यता समाजक एकटा कटु सत्य अछि। अपन गामघर छोडिकऽ कियो विदेश जाय नञि चाहै-ए, मुदा परिस्थितिक आगू ककरो किछु नञि चलए छञि। किछु एहने परिवेशकेँ पर्दापर देखेबाक प्रयास कएल गेल विदेशिया नाटकमे। मैथिली भोजपुरी एकेडमीद्वारा दिल्लीमे आयोजित विदेशिया नाटकमे किछु एहने देखल गेल। वियाह भेलाक किछुए दिनक बाद विदेशिया गाम छोडि दैत छञि, विदेश जाऽ कऽ पैसा कमाय लेल। गाम संगहि विदेशियाकेँ छुटि जाइत छञि, अपन नवकी कनियाँ, गामक संगी-साथी आऽ याद सेहो। ओ पाईक लोभसँ घर छोडने रहैया, मुदा ओऽ पाई तँ नईहे कमासकल शहरमे अपन जीवनके एकटा आओर साथी बनालैयऽ। एम्हर ओकर पहिल कनियां विदेशियाके बाट जोहैत रहैयऽ। विदेशियाक यादमे ओऽ कखनो बटुवाके पुछैयऽ तँ कखनो बारहमासा गबैयऽ। नाटकक निर्देशक संजय उपाध्याय विदेश जएबाक ग्रामीण प्रबृतिकेँ सुखान्त बनेलहुँ से कहलनि। गामक सोझ आऽ सुशील कनियाकेँ छोडि विदेशिया विदेशमे रइम जाइयऽ। ओकरा आब शहरिया संगी निक लगै छइ, जे दुगोट बच्चाक माय सेहो अइ। विदेशिया अपना आपके बिसरि जाइयऽ। गामक कनिया नइ शहरक छम्मकछल्लो आब ओकर प्राण भऽ गेल छञि। एहिबीच भिखारी

विदेशियाकेँ निन्नसँ जगबैत अछि। नाटकमे भिखारी बनल रंगकर्मी अभिषेक शर्मा नाटकक माध्यमसँ लोक अपन गाम घरके याद करलेल विवश भऽ जाइयऽ, से कहलनि। विहारक सुपौल जिलाक रंगकर्मी शारदा सिंह नाटकमे देखाएल गेल विषय बस्तु समाजक सत्य रुप रहल बतौलनि। विदेशिया गाम तँ घुरैयऽ मुदा असगरे नई चारि गोटेक संगे , दूटा बालगोपाल आऽ तकर माय। किछु झोंटाझोंटी आऽ कलहक बाद दुनू सौतिन आऽ विदेशिया गामेमे रहऽ लगैयऽ। नाटक अन्ततः सुखान्त भऽ कऽ समाप्त होइत अछि। ई कथा गामसँ बाहर रहनिहार एकटा निम्न मध्यमबर्गीय युवककेँ जिनगीक मात्रे नञि अछि। बहुतो युवक गाम देहात छोडिते अपन माटि पानिकेँ बिसरि जाइत अछि। शरीरसँ मात्र नञि मोनसँ सेहो विदेशिया भेनिहारकेँ ई नाटक अपन गाम अपन वास्तविक पहिचानक याद दियबैत रहत।

आब चलू नेपाल दिस







सशस्त्रक सनसनी

मधेश एखन दू दर्जनसँ बेशीक संख्यामे रहल सशस्त्र समूहसँ आक्रान्त अछि। कहियो सशस्त्रक विरोधमे जनकपुरक जानकी मन्दिरमे पत्रकार रैली निकालैत अछि तँ कहियो सिरहाक कर्मचारी कार्यालयमे ताला लगाकऽ सशस्त्रक विरोध प्रदर्शन करैत अछि। तहिना सर्लाहीमे बस चालकक हत्या भेलासँ शुरु भेल यातायात बन्दसँ जनजीवन कष्टकर भऽ रहल अछि। मधेशक माँगकेँ अपन नारा बनाकऽ खुलल दू दर्जनसँ बेशी संगठनकेँ एखन मधेशमे तीब्र बिरोधक सामना करऽ पड़ि रहल छन्हि।

चालकक हत्या

सर्लाही। राजमार्गमे एखनो शान्ति सुरक्षाक अबस्था बेहाळे अछि। सर्लाही जिलामे हथियारधारी लुटेरा समुह ७ तारिखक रातिमे एकटा बस चालकक गोली मारि हत्या कऽ देलक। राजधानी काठमाण्डू जाऽ रहल बसक चालक कृष्ण खवासक गोली लागि मृत्यु भेल छल। पूर्व पश्चिम राजमार्ग अन्तर्गत सर्लाहीक जंगलमे राति ९ बजे ओऽ समूह बसमे लूटपाटक प्रयास कएने रहए। बस नञि रोकि भागऽ लगलाक बाद लुटेरा समूह गोली चलौने छल। गोली लागि घायल भेनिहार चालक खवासकेँ उपचारक बास्ते लालबन्दी अस्पताल लऽ जाइत अबस्थामे बाटेमे मृत्यु भेल, से स्थानीय प्रहरी जनौलक अछि। चालकक गोली लगलाक बाद खलासी बसकेँ नियन्त्रणमे लऽ कए दुर्घटना होबऽ सँ बचौने छल। प्रहरी घटनामे संलग्न होएबाक आशंकामे सात गोटेकेँ पकडलक अछि। दोसर यातायात व्यवसायी आऽ मजदुर चालक हत्याक बिरोधमे चक्काजाम जारी रखने अछि। सरकार समस्या समाधान लेल आगू नञि आएल, कहैत यातायात मजदूर देशव्यापि आन्दोलनक चेतावनी देलक अछि। मजदूर आऽ व्यवसायी पुर्वान्चलक तीन अन्चल आऽ जनकपुर अन्चलमे चक्काजाम कएलाक बाद जनजीवन प्रभावित भेल अछि। बन्दक कारण उपभोग्य वस्तुक अभाव होबऽ लागल अछि।

नेपालक (किछु भारतक) मिथिला मैथिल मैथिलीक सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक समाचार

"रे नोर एना तोँ नञि टपक"





कोशी नेपाल आऽ भारतक जनता लेल एकटा अभिशापसँ कम नञि। १८ अगस्तक कोशी नदी पुर्वी तटबन्धकेँ पश्चिम कुशहा लग तीन सय मीटर भत्थन करैत बाट बदलने छल। तञि

के बाद नेपालक लगभग १ लाख जनता विस्थापित भेल। वएह पानि जहन बिहारमे आएल तँ आओर विकराल रुप ल लेलक। बिहारमे पानिसं ३० लाखसं बेशी जनता प्रभावित अछि, जाहिमे २० लाख कोशी इलाकाके अछि। मृतकक संख्या हजारोमे हेबाक आशंका कएल जाऽ रहल अछि। बिहार सरकारक तथ्यक अनुसार कोशी बाढिसँ ७ सय ७५ गामक २२ लाख ७५ हजार जनता प्रभावित अछि।**कोशीक कोप**



–

चीनक तिब्बत उदगमस्थल रहल कोशी नेपाल होइत बिहार कुर्सेला धरि सात सय २० किलमीटर दुरी पार करैत गंगानदीमे मिलैत अछि। कोशी नदी वार्षिक ५० अरब घन लिटर पानि गंगानदीमे पंहुचाबै-ए। कोशी नदीक वर्तमान जलाधर क्षेत्र ९२ हजार ५ सय ३८ वर्ग फ़िट मिटर अछि, जाहिमेसँ ४१ हजार ३ सय ३३ वर्ग किलोमीटर नेपालक भीतर पड़ैत अछि। कोशी योजना संचालनक ४५ वर्ष होइतो कोशी पीडितक समस्या जहिनाक तहिना अछि।

नेपाल आऽ भारत दुनु देशकेँ एहि प्रश्नक उत्तर देव आवश्यक अछि- किए टुटल बान्ह ? बाढिसँ गरीब किसान भूमिहीन भऽ गेल अछि, ने लत्ता कपडा ने पेटमे अन्न आऽ ने पीबालेल पानि। किसान टकटक्की लगौने अछि कोशीक पानि पर, जे कखन घटत? जमिनदार पानिदार भऽ गेल, गाय महिष सबटा दहाऽ गेल छैक, आव बाँकी छञि मात्र जीवाक आश,,,,,। **दोष ककर**

नेपाल आऽ भारत दुनु पक्ष एक दोसराके दोषारोपण कऽ रहल अछि। 'भारतीय प्राविधिक तटबन्ध मरम्मतिक लेल गेल छल मुदा, ओत्त काज करबाक वातावरण नञि बनलाक बाद तटबन्ध निर्माण नञि भऽ सकल, भारतीय पक्ष कहैत अछि। कोशी नदीक समझौता अनुसार नेपाल किछु नञि कऽ सकैत अछि, तेँ हमसभ मुक दर्शक छी, दोष भारतक अछि नेपाली पक्षके दाबी। भारतीय प्रधानमन्त्री डा मनमोहन सिंह बाढ़िक बिभीषिका देखिते राष्ट्रीय विपत्तिक घोषणा कऽ देलनि। बहुत रास पाई आऽ खाद्यान्न सहयोग करबाक आश्र्वासन सेहो। मुदा कोशी तटबन्ध टुटल किए, एकर सरकारी स्तरपर कोनो तरहक जाँच-बुझक आदेश नञि देल गेल अछि। हँ नेपालसँ एहि बिषयमे बातचीत करबालेल एकटा उच्चस्तरीय कमिटीक गठन कएल गेल अछि। ओऽ समिति की बातचीत करत आऽ की निष्कर्ष निकालत भविष्यक गर्भमे अछि।**क्षतिपुर्ति**

कोशी समझौताक अनुसार कोशी तटबन्धक सभ तरहक काज भारतक जिम्मामे अछि। तटबन्धक मरम्मति मात्रे नञि तटबन्ध टूटलासँ होबऽ बला क्षतिपुर्ति सेहो भारते देत, से सन्धिमे उल्लेख अछि। नेपालक परराष्ट्रमन्त्री उपेन्द्र यादव कोशी समझौता अनुसार भारत सरकारकेँ सभ तरहक क्षतिपुर्ति देबऽ पडतै, से कहैत छथि। सन्धिक अनुसार इलाज, पुनर्वास आऽ खाद्यान्न जेहन सहयोग भारत सरकारकेँ करक चाही। भारतीय प्रधानमन्त्री आऽ विदेशमन्त्रीसँ सहयोगक आग्रह कएल गेल आऽ ओऽ सभ एहि प्रति सकारात्मक रहल, मन्त्री यादव कहलनि। आब देखऽ के बाँकी अछि, कोशी पीडित धरि कहिआ पडोसी देशसँ सहयोग पहुँचैत छञि।**नञि रुकल कटान**

कोशी कटान नियन्त्रणलेल एखन धरि कएल गेल सभ प्रयास असफ़ल भेल अछि। कोशीक सभसँ महत्त्वपुर्ण मानल जाएबला स्पर बहऽ लागल अछि। नेपाल आऽ भारतीय प्राविधिक टोलीद्वारा कटान नियन्त्रणलेल कएल गेल प्रयास निरर्थक भऽ गेल अछि। संयुक्त प्राविधिक टोलीक निगरानीमे बीस हजार बोरा बालु, गिटी राखि कऽ नदिकेँ पश्चिम दिश घुमएबाक प्रयास निरर्थक भऽ गेल अछि। बर्षाक कारण सेहो बाढि नियन्त्रण दुरुह बनल अछि। नेपाल सरकार कोशी कटानसँ बिस्थापित भेनिहारक प्रति परिवार १५ हजार टका सहयोग देत। ई १५ हजार ब्यथित कोशीपीडितके कत्तेक सहयोग भऽ सकत ओऽ सहजहि अनुमान लगाओल जा सकै-ए।**किछु मरल बहुतो निपत्ता**

सप्तकोशी नदी गामेक बाटसँ बह लगलाक बाद विस्थापित भेनिहारसभ एखनो अपन परिजनक खोजिमे अछि। हरिपुर, श्रीपुर आऽ पश्चिम कुशाहासँ विस्थापित सभ अपन घर परिवारक सदस्यके ढुंढि रहल अछि। सुनसरी प्रशासन एखनधरि ५ गोटेक मृत्युक पुष्टि कएलक अछि। मुदा एखनो चारि सय गोट सम्पर्कविहीन अछि।

दोसर दिश कोशी बाढ़िसँ विस्थापित आब पेटझरीक चपेटमे आबि गेल अछि। पानि गन्दा भऽ गेलाक बाद विस्थापित शिविरमे पेटझरी आऽ मुँहपेट जाएव विकराल रुप लऽ लेने अछि। विस्थापित एक बालक सहित दु गोटक पेटझरीसँ मृत्यु भेल अछि। मृत्यु भेनिहारमे श्रीपुर-३ के ५६ वर्षीयय तेजन सदा आऽ ६ वर्षिय रम्बा सदा अछि। सुनसरीक विभिन्न २९ शिविरमे एक हजार ५ सय गोट एखन बिमार अछि। अधिकांशमे पेटझरी, निमोनिया, बोखार आऽ छातीमे इन्फ़ेक्सन देखल गेल अछि। रोगीमेसँ १२ गोटक अवस्था चिन्ताजनक रहल, उपचारमे संलग्न चिकित्सक जनौलक अछि।

कत्तेक बिपत्ति !

बाढ़िसंगहि सप्तरी जिलामे सर्पदंश बढि गेल अछि। सर्पदंशसँ शुक्रक राति

आओर एक गोटेक मृत्यु भेल अछि। भादव महिनामे सांप कटलासँ मरनिहारक संख्या ६ भऽ गेल स्थानीय जनस्वास्थ्य कार्यालय जनौलक। खेतमे काज कऽ रहल स्थानीय रामकृष्ण यादवकेँ सांप कटने रहन्हि। इलाजक लेल सगरमाथा अंचल अस्पताल लऽ जाइत काल हुनक मृत्यु भेल। एहिसँ पहिने फ़किरा ३ क ४५ बर्षीय रामअशिष यादव, पत्थरगाडा ७ क १४ बर्षिय बमभोला यादव आऽ महादेव ८क १२ बर्षीय घनश्याम इसरक मृत्यु भऽ चुकल अछि।

बिहारक बाध्यता

कोशीक जलस्तर बढ़लाक बाद बिहारक स्थिति आओर असहज भऽ गेल अछि। बिहार सरकार वायु सेनाक ४ हेलिकप्टर, ८ सय ४० नाव आऽ सेनाक मदतिसँ युद्ध स्तरमे राहत कार्य भऽ रहल बतौलक अछि। मुदा बाढिपीडित लाखो जनता एखनो बाढिमे फ़ंसल अछि। सरकारी सहयोग समेत अपर्याप्त रहल, बाढिपीडितक कहब छत्रि। बिहार सरकार एखन धरि कोशी क्षेत्रमे २८ आऽ समुचा राज्यमे ७६ गोटेक मृत्यु भेल जनौलक अछि। मुदा प्रभावित इलाकामे स्थानीयवासी बहुतो शव दहाइत देखल गेल कहैत अछि। बिहार सरकारक तथ्यांकमे कोशी बाढ़िसँ ७ सय ७५ गामक २३ लाख जनता प्रभावित भेल कहल गेल अछि।

बिछियाक आर्तनाद

पेटमे अन्न नईं, राहतलेल आकाशमे टकटकी लगौने आंखि, आङमे लत्ताकपडाक अभाव आ भोक्कासी ...। सभ अपन अपन पीडा सुना रहल अछि। पेटके राक्षस शान्त नई भेलाक बाद ओ त सौंसे आदमीएके खा लेलक। नवजात शिशु कत्तेक काल भुक्खे रहैत, ओकरा कोशीक कोरमे छोडिदेल गेल।

कोशी सन बेदर्दी जगमे कोइ नइ लघुनाटकमे किछु एहने देखल गेल। मैलोरंगक आयोजनमे दिल्लीमे सेप्टेम्बर १२ क' मन्चित लघुनाटकमे कोशीक बिभीषिका देखएबाक प्रयास कएल गेल। नाटकमे राहतलेल मारामारी कएनिहार जनता भुखसं मृत्युवरण करबाक बाध्यताके जीवन्त रुपमे प्रस्तुत कएल गेल। पीडितके रोदनसं दर्शक भावविह्वल बनल छल। मैलोरंग सेप्टेम्बर १२ सं १४ तारिखधरि मैथिली लोकरंग महोत्सव स्थगित कएलक अछि। कोशी क्षेत्रमे घुरैत मुस्कानकसंग महोत्सव आयोजन हएत मैलोरंग जनौलक अछि।

संघर्षक कठिन बाट

मैथिली साहित्यकार व्रजकिशोर बर्मा मणिपद्मक स्मृतिमे नयां दिल्लीमे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन कएल गेल। एहि कार्यक्रममे मैथिली नाटक मन्चन हएबाक संगहि मिथिलांगन संस्थाक स्मारिका सेहो विमोचन कएल गेल। मिथिलांगन साहित्यकार मणिपद्मक स्मृतिमे 'उगना हल्ट' नामक मैथिली नाट्क मन्चन कएने छल।



ब्रज किशोर बर्मा मणिपद्म मैथिली साहित्यक चर्चित नाम अछि। लोक साहित्यक संरक्षणमे हुनक योगदान उल्लेखनीय मानल जाईत अछि। इएह योगदानक सम्मान करैत हुनका मैथिलीक वाल्टर स्काट सेहो कहल जाईत छन्हि। लोरिक, राजा सल्हेश, नैका बन्जारा जेहन लोकगाथाक संरक्षण करबामे हुनक योगदान सराहनीय रहल कार्यक्रममे कहल गेल। मिथिलांगन एहिसँ पहिने सेहो मणिपद्मक स्मृतिमे विभिन्न कार्यक्रम आयोजन करैत आएल अछि। तहिना त्रैमासिक मिथिलांगन पत्रिका सेहो प्रकाशनके निरन्तरता देल गेल संस्था जनौलक अछि। उगना हॉ/ल्टक लेखक कुमार शैलेन्द्र आ निर्देशक संजय चौधरी छैथ। नाटकमे दिल्लीमे संघर्षरत मैथिली रंगकर्मीक जीवनक कटु सत्य देखएबाक प्रयास कएल गेल अछि। उगना हल्ट बिहारक मधुवनी जिलाक एक रेल्वे स्टेशनक नाम अछि , यद्यपि नाटकके परिवेश नयां दिल्लीक रंगकर्मीक अडडा मण्डी हाउसपर केन्द्रित अछि। स्थानीय पण्डौल आ सकरी बीचक स्टंशन अछि उगना हॉल्ट। नाटकमे मैथिली भाषा संस्कृतिक संरक्षणलेल अपस्यांत नवतुरियाक कथा ब्यथा समेटल गेल अछि। ओएह युवाक संघर्षक इतिबृत मे नाटक घुमैत अछि।। कियो संगीतकार बन' चाहैत अछि त कियो गीतकार, ककरो फ़िल्ममे हिरो बनबाक धुन सबार छइ त ककरो हिरोइन। अन्ततः कठिन संघर्षक बाद सभ अपन लक्ष्य प्राप्त करबामे सफ़ल होइत अछि। नाटकमे संगठने शक्ति अछि आ एहिँस सफ़लता पाबि सकैत छी से पाठ सिखएबाक प्रयास कएने छैथ नाटककार। छिरिआएल आ दिग्भ्रमित जँका बुझाईत पात्रक अभियान अन्तमे सफ़ल होइत अछि। अन्ततः नाटक सुखान्त अछि।



जितमोहन झा घरक नाम "जितू"

जन्मतिथि ०२/०३/१९८५ , श्री बैद्यनाथ झा आ श्रीमति शांति देवीक सभ सँ छोट (द्वितीय) सुपूत्र। स्व.रामेश्वर झा पितामह आ स्व.शोभाकांत झा मातृमह। गाम-बनगाँव, सहरसा जिला। एखन मुम्बईमे एक लिमिटेड कंपनी मे पद्स्थापित। रुचि : अध्ययन आ लेखन खास कS मैथिली ।**–सम्पादक**

कन्या भूण हत्या प्रकृतिक संग खिलवार

पिछला छुट्टीमे एक सालपर हम गाम गेल छलहुँ। जहिया गाम पहुँचलहुँ ओकर दोसरे दिन पता चलल की हमर बचपनक दोस्तक बहुत जोर मोन ख़राब छनि! आर ओ अस्पतालमे भरती छथि! खबर जहिना हम सुनलहुँ अस्पतालक लेल चलि देलहुँ! हमरा संग हमर पत्नी सेहो चलि देलीह, अस्पताल पहुंचला पर पता चलल जे कुनू चिंताक बात नै सब ठीक ठाक अछि! एक घंटाक बाद हुनका (हमर दोस्तकेँ) छुट्टी मिल जेतनि, बहुत दिनक बाद अस्पताल आयल छलहुँ, इच्छा भेल कनी चारू दिस घुमि - फिरि ली। मनमे अस्पतालक लेल बहुत जिज्ञासा छलए! हम आर हमर पत्नी जहिना दोस्तक वार्डसँ बाहर निकललहुँ, हमर नज़रि अपन चचेरा भैया - भाभी पर पड़ल, अचानक हुनका सभकेँ अस्पतालमे देखिकेँ हम चौक गेलहुँ! हमर नज़र एकाएक भाभीक उदास, कनमुँह चेहरा पर परल .....पुछलियनि की बात ... मुदा ओ किछु जबाब नञि देलीह। हमर पत्नी कातमे बजा कए हुनकर पीड़ा सुनलन्हि! दुबारा पुछलासँ भाभी अपन पीड़ा नञि रोकि सकलीह, हुनकर पीड़ा हुनकर आँखिसँ छलकि उठलनि, पता चलल जे दू गोट कन्याक जन्मक बाद आब तेसर बेर फेरसँ कन्याकेँ नञि बर्दाश्त करैक चेतावनी भैया हुनका पहिने दए चुकलखिन-ए ....पता चलल गर्भ परीक्षण लेल भैया भाभीकेँ अस्पताल अनने छथि! गर्भमे पोसा रहल बच्चाक प्रति पिताक खौफनाक इरादासँ उपजल भयक भाव भाभीक चेहरा पर साफ - साफ देख्अलहुँ! बादमे हमरा आर हमर पत्नी कँ कतेक बुझेलापर भैया भाभीकेँ वापस घर लए गेलखिन! संयोगवश अगला संतानक रूपमे हुनका बालकक प्राप्ति भेलनि ....

ओना भ्रूण परीक्षण प्रतिबंधित अछि आर सरकार एकरा लेल बाकायदा कानूनो बनेने छथि! मुदा ई की ? लागैत अछि पछिला दरवाजाक संस्कृति अस्पतालों के नञि छोड़ने अछि, तखने तँ भैया बहुत आसानीसँ भाभीकेँ गर्भ परीक्षण करबाबए लेल चलि देने छलथि। हम तँ कहए छी चाहे सरकार लाखो कानून बनबथि, लाखो कड़ासँ कड़ा सजा तय करथि लेकिन जा तक हम सब स्वयं अपना तरफसँ कोनो कदम नञि उठायब ई कानूनक हेब नाहे हाएबाक समान अछि! आइ तक भ्रष्ट्राचार, बालश्रम, शोषणक विरुधो सरकार बहुत कानून लागू केलथि मुदा कि समाजमे एकर रोकथाम भS सकल ? नञि! आर यदि अपने ई नञि हेबाक कारणक पता करब तँ पायब कि शायद हम खुद कतहु ने कतहु कोनो ने बगंनो प्रकारे एकर दोषी छी! हम सब परिस्थितिक संग कोनो तरहक समझौता करबाक

वजाय ओकरा सदिखन बदलबाके फेरमे नहि रहैत छलहुँ चाहे ओकरा लेल हमरा सभ के कोनो तरहक हथकंडा कियेक नञि अपनाबए परए .... हम सब चुकय नञि छी! हम तँ पूछैत छी जे की कारण अछि जे लड़कीक जन्म भेला पर आइयो मूह सिकोरल जाइत अछि ? शायद हुनकर परवरिश, शिक्षा, विवाह आदिमे आबै वाला तमाम मुश्किलक कारण एहि तरहक व्यवहार कएल जाइत अछि! मुदा कि लड़काक जन्म भेनेसँ ई तमाम समस्या समाप्त भऽ जाइत अछि ? लड़कोकेँ तँ परवरिश करैये पड़ैत अछि।? हुनकरो शिक्षा,नौकरीक लेल दर-दर भटकए पड़ैत अछि! आर विवाह ....!

यदि एहि गतिसँ कन्या भ्रूण हत्या होइत रहत तँ बूझि लिअ जे सब लड़काकेँ कुंआरे रहए पड़त! उदाहरण स्वरूप अपने हरियाणामे लड़कीक संख्यामे लगातार दर्ज कएल गेल कमी देख सकैत छी, हरियाणामे विवाह लेल लड़की नञि भेटैन छनि। ओहि ठामक लोकिनकेँ दोसर राज्यमे लड़कीक तलाश करए पड़ैत छनि .....

कनी सोचू अगर पूरा देशमे
ईएह स्थिति भऽ जाएत तँ की
होएत ?

हम नीक जेकाँ जनैत छी जे अपने एहि बातकेँ ध्यानमे नञि राखब आर यदि राखबो करब तँ दोसर केँ उदाहरण देबाक लेल! लेकिन कि अपने स्वयं कन्या भ्रूण हत्या रोकएमे दोसरकेँ जागरूक करब ? अपनेकेँ नञि लागैत अछि जे प्रकृति द्वारा निर्धारित जीवनकेँ सुचारू रूपसँ चलबै लेल एहि गाड़ीक दुनु पहियाक समान रूपसँ आवश्यक अछि! आर कन्या भ्रूण हत्या यानी कि प्रकृतिक संग खिलवाड़ अछि! एहि खिलवाड़केँ रोकए लेल हमरा सभकेँ एकजुट होबए पहत आर एतबे नञि एहि मानसिकतोकेँ बदलए पड़त कि वंशबेल खाली आर खाली लड़के चलेता, तखने हम सही खपमे आधुनिक कहाएब ....

भक्तिगीत

मात पिता गुरु प्रभु चरणमे प्रणवत बारम्बार

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।

माताजी जे कष्ट उठेलखिन्ह ओऽ
ऋण कहियो नञि चुकलऔं,
आंगुर पकड़ि कऽ चलब सिखेल्खिन्ह
ममताक देलखिन शीतल छाया,
जिनकर कोरामे पलिकए हम कहेलहुँ होशिया॥

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।

पिताजी हमरा योग्य बनेलथि कमा-कमा कऽ अन्न खुएलथि,
पढा लिखा गुणवान बनेलथि, जीवन पथ पर चलब सिखेलथि,
जोड़ि-जोड़ि अपन सम्पति कँ बनाऽ देलथि हक़दार।

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।

सत्य ज्ञान गुरूजी बतेलथि, अंधकार सभ दूर हटेलथि,
ह्रदयमे भक्तिक दीप जरेलथि,हरी दर्शनक मार्ग बतेलथि,
बिना स्वार्थ्क कृपा केला ओऽ कतेक पैघ उदार।

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।

प्रभु कृपासँ नर तन पेलहुँ संत मिलनक साज सजेलहुँ,
बल बुद्धि आर विद्या दऽ कऽ सभ जीवमे श्रेष्ठ बनेलहुँ,
जे कियो हिनकर शरणमे एलिखन,भेलन्हि हुनकर उद्धार।

हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार।



ज्योति

www.poetry.comसँ संपादकक चॉयस अवार्ड (अंग्रेजी पद्यक हेतु) ज्योतिकेँ भेटल छन्हि। हुनकर अंग्रेजी पद्य किछु दिन धरि www.poetrysoup.com केर मुख्य पृष्ठ पर सेहो रहल अछि। ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आऽ हिनकर मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शनी ईलिंग आर्ट ग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रॊडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि।

मिथिला पेंटिंगक शिक्षा सुश्री श्वेता झासँ बसेरा इंस्टीट्यूट, जमशेदपुर आऽ ललितकला तूलिका, साकची, जमशेदपुरसँ। नेशनल एशोसिएशन फॉर ब्लाइन्ड, जमशेदपुरमे अवैतनिक रूपेँ पूर्वमे अध्यापन।

ज्योति झा चौधरी, जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९७८; जन्म स्थान -बेल्हवार, मधुबनी ; शिक्षा- स्वामी विवेकानन्द मिडिल स्कूलटिस्को साकची गर्ल्स हाई स्कूल, मिसेज के एम पी एम इन्टर कालेज़, इन्दिरा गान्धी ओपन यूनिवर्सिटी, आइ सी डबल्यू ए आइ (कॉस्ट एकाउण्टेन्सी); निवास स्थान- लन्दन, यू.के.; पिता- श्री शुभंकर झा, ज़मशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा झा, शिवीपट्टी।--**सम्पादक**

बर्फ ओढ़ने वातावरण !
मानू आकाश टूटि क बिखरि गेल ,
अपने आप के छिरियाकऽ
सबके एक रंग में रंगि गेल ॥

थरथराबैत सरदी स भयभीत
सब जीव अपन जगह धेलक;
प्रकृति के इहो अवरोध मुदा,
मनुष्य के नहि बाँधि सकल ॥

भाँति प्रकारक साधन जोगारलक
विकट परिस्थिति पर विजय लेल;
अपन सर्वश्रेष्ठ बुद्धिबल स
मनुष्य अंतत: सफल भेल॥

गामक सूर्यास्त

गामक_सूर्यास्त
एक अद्भुत दृष्य यादि पाड़ि चकित भेलहुँ,
पोखरिक भीड़ पर हम ठाढ़ छलहुँ
आसमानक नीलवर्ण भेल रंगमय
दिया बातीक मुहुर्तमे सूर्य सबस ँ विदा लय
क्षितिजमे विलीन हुअ लागल
संग ओकर प्रकाशपुंज सेहो भागल
सबहक खरिहानमे लालटेन टिमटिमाय छल
पक्षी सब समदाओन गाबि रहल छल
सेहो ध्वनि मन्द पड़ि गेल
साँझ रातिमे बदलि गेल
फेरि स अगिला भोर मे पक्षिगण
गायत प्राती सब मिलि एक संग।

विशाल समुद्र

समुद्रक लहरिक तरंग
अनगिनत बेर दोहरा रहल अछि ।
उद्देश्यहीन अपने मुदा ओकर गान
कहिया कत' सँ चलि रहल अछि ।
बेर बेर रेत पर बनल पदचिह्न
मेटा क' तटस ँ घुरि जाइत अछि ।
जलक सभस ँ शक्तिशाली संगठन
सागरक रूपमे उपस्थित अछि ।
रातिक अन्हारोमे ओकर गर्जन
ओकर विशालताक आभास कराबैत अछि ।

आधुनिक जीवनदर्शन

अतिशयोक्ति सँ विरक्ति अछि
जाबे ओ' दोसरक प्रशंसा में होय
परञ्च निंदामे किएक कंजूसी
जखन अनकर करबाक होय ।

असभ्य तऽ ओकरा बुझब
जे हमर प्रशंसकके रोकयए,
ने हम्मर कियो प्रशंसक अछि
ने समाजमे कियो असभ्य बुझाइए ।
परोपकार करनिहारके आशिष
जे हमर काज बना गेल
अन्यथा ओ सब बेरोजगार
जे आनक काजमे लागि गेल ।
.मनुष्य आ' ओकर भावना
कठोर हृदयमे भावुकता नुकायल भेटल,
पुछलियै, " तोहर आब कोन स्थान ?"
बड़ निर्मलतास ँ उत्तर देलक,
"हमरा स ँ नहिं तोरा सबके त्राण।

क्रोध, प्रेम, दु:ख, दया आदि जीवनक अंश
अहिस ँ पूर्णत: विमुक्त भेनाई कठिन;
परन्तु गलतकेँ बिसरा कऽ नीक विचारकेँ
आश्रय देनाय अछि अपन आधीन ।

दया परोपकारक अधिष्ठात्री अछि ,
दु:ख खुशीक महत्त्व बुझाबए छै।
क्रोध स ँ हठ, प्रेमसँ त्याग जनमैत अछि,

बस उचित दिशा निर्देशन आवश्यक छै।

मानवक बुद्धि भावनासँ प्रभावित होइत अछि;
भने ओ स्वयम्‌कँ विधाता बनओने फिरैए।
आधुनिकताक होड़मे निष्ठुरता ओढ़ने अछि,
भावनाहीन भऽ कऽ जीवित नहि रहि सकैए।

हम्मर गाम

गरमी में सूर्योदय के समय कतेक शान्त आ' शीतल,
लू आ उमस सँ ओत प्रोत दुपहरिया तेहने बिगड़ल;
साँझ हुअ सऽ पहिने धूल धक्कड़ आ' बिहारि,
राति होइत होति देरी अन्हार, ताहि पर मच्छड़क मारि।

अहि सबहक बीच बसल बस एक मात्र मिठास
अप्पन भाषाक ज देने अछि गाम जायक प्यास
जतऽ सभ्यता के लाज में अपनापन नहिं नुकाइत छल
लोक हाक दऽ कऽ हाल पूछऽ में नहिं सकुचाइत छल

अनार, शरीफा, खजूर, लताम, पपीता, जलेबी, केरा सहित लीचीक बगान
केसौर, कटहर, बेल, धात्री, जामुन, बेरक संग अप्पन पोखरिक मखान
फेर आमक गाछी सेहो अछि जतऽ गर्मी बितौनाई नहिं अखड़ल
हवा बिहारि में खसल आम बीछऽ लेल भगनाई नहिं बिसरल

विकास

विकासशीलताक उच्चतम् शिखर
कतऽ आऽ कतेक दूर पर भेटत।
ई एकमात्र मृगमरीचिका तऽ नहि
जे लग गेला पर बिला जायत ।
प्यासलकँ लोभ दऽ बजाबए लेल
फेर कनिक दूर पर देखायत।
मनुष विज्ञान आर तकनीकक नशामे
आर कते दिन ओकरा खिहाराइत रहत।
यात्रा मात्रसँ प्रकृति दूषित भेल
भेटऽ मे की जानि कतेक हानि हएत।
परन्तु अपन ज्ञानक सीमा संकुचित कऽ
बुद्धिकँ स्थूल तऽ नहि कएल जायत।
गति निर्धारण आ' सामनजस्य चाही
जतऽ विकासक मार्ग नहि रोकल जायत।
संगहि प्रगति आऽ प्रकृति दुनुक भैयारी
विज्ञानक नाम पर नहि तोड़ल जायत।

बालश्रम

बालपनक किलकारी भूखक ताप सऽ भेल मूक,
पोथी बारि कोदारि पाडैत हाथक मारि अचूक।
कादो रौद बसातमे श्रम केनाइ भेल मजबूरी;
गरीबीक पराकाष्ठा ! पेट आ पीठक घटैत दूरी,
किछु धनहीनता आ' किछु माता पिताक मूर्खता,
मुदा, सभसँ बेसी स्वार्थी समाजक संवेदनहीनता,
जे बालक कँ माताक आश्रय सँ वञ्चित केलक,
लेखनि के छीन कोमल हाथमे करची धरेलक,
माल जालक सेवा करैत बाल्य जीवन कुदरूप,
अपने भविष्यकँ दरिद्र करैत अज्ञान आ' अबूझ,
विद्योपार्जनक ककरा फुर्सति ? स्थिति तऽ तेहन भेल,
चोर बनक आतुर अछि बालपन दू दाना अन्न लेल।

(१)
तारा दूरसँ
बुझाइत कतेक शीतल
वास्तवमे जड़ैत

(२)
शाखासँ लागल
पुष्प आऽ पत्रसँ आच्छादित
अछि झूलैत लता

(३)
पक्षी विश्राम कएल
बड़का यात्राक उपरान्त
एखनो जे अपूर्ण

(४)
अद्‌भुत अपवाद छैक
नागफनीक काँटक बीच
कुसुम खिलायल

(५)
नीलांबरमे मेघ
विचरैत अछि कोना जेना
सागरमे होए शार्क

(६)
भावी संकट केर
पशु पक्षीमे पूर्वाभास
प्रभुक दिव्य आशिष

(७)
कोमल पंखुड़ी
सुगन्धक संग सजाओल
एक पुष्पक रूपमे

(८)
नदीक तरंग
ओहिना लागैत अछि जेना
ओकर घुरमल केश

(९)
दू टा पसरल पाँखि
बाज उड़ऽ लेल तैयार अछि
पूर्ण रूपसँ जागरूक

(१०)
पहाड़ीक ढलान
ताहि पर एकमात्र गाछक छाह
भेल यात्रीक विश्राम

(११)
संध्याक बेला
सुनसान आऽ शान्त पोखरिक कात
एक एकान्त स्थान

(१२)
मेघ रूपी बर्फमे
अछि हवाई जहाज पिछड़ैत
आकाशमे विचरैत

(१३)
कठोरतम भूमि
समुद्रक छोर पर बसल
अछि पाथरक किनार

(१४)
विलक्षण अपवाद

आकाश जरैत संध्याकाल
समुद्रक उपरि

(१५)
पहाड़सँ उदित
सूर्यसँ आकाश भेल जागृत
ज्वालामुखी सन

(१६)
उगैत सूर्य संगे
आयल अंधकारक उपरान्त
अंतहीन दिनक आस

(१७)
दिवस आब थकल
रातिक स्वागतमे लीन साँझ
मिझाइत सूर्य दीप

(१८)
गाछ भने हरियर
ग्रीष्मोमे देखु पतझड़
भोरक आकाशमे

(१९)
पक्षीक चहक
आऽ आकाशक लाली संग
प्रकृति जागल

(२०)
अतिसुन्दर जाड़
मेघक घिस घिस छिड़यौलक
हिमपातक रूपमे

(२१)
तैयार उड़ऽलेल
पक्षी विश्रामसँ जागल
वा अछि शुरूआत

(२२)
पक्षीक निरीक्षण
छूटल अन्नक फेरमे
कटनी भेलाक बाद

(२३)
फूलक हुँजक बोझ
शाखा कँ झुका रहल
बसंत आयल अछि

(२४)
तितलीक पंख
अंकित रंग बिरंग आकार
प्रभुक चित्रकला

(२५)
मनुष लेल कठिन
किन्तु जीवन ओतहु अछि
शीतलतम स्थान

(२६)
उच्चतम शिखरसँ
धुन्ध भरल हरियर घाटी
निहारक इच्छा

(२७)
विभिन्न प्रकारक
घास पात जमीन पर उगल
आइरसँ दूर बँचल।

(२८)
ओसक बूँद पाबि अछि
घासक फुनगी आह्लादित
हीरा सन चमकैत

(२९)
बाहर घूमऽ निकलल
बतख अपन बच्चा संग
गर्मीक दिनमे

(३०)
बतख हेल रहल अछि
पानिक ऊपरी सतह पर
लक्ष्यक दिस निरंतर

(३१)
स्प्रेसो
आस्ते पिब लेल
गर्म देल गेल

(३२)
ईश्वर कँ तकनाइ
नहि कठिन पाबू ओकरा
पवित्र हृदयमे

(३३)
दृष्टि भ्रमणमे
घाटी पर दूर दूर धरि
भटकि सकैत अछि

(३४)
घोड़ा भटकि रहल
उद्देश्यहीन बिन घुड़सवार
भेल अनुशासनहीन

(३५)
स्थिर पानिमे
प्रकृतिक प्रतिबिम्ब
साफ लेकिन उलटा

(३६)
प्राकृतिक दृष्य
पानिक प्रतिरूप बिना
अपूर्ण बुझाइत अछि।

(३७)
पतझड़क पात
पसारलक अप्पन सतरंजी
हरियर घास बदला।

(३८)
समुद्रक तहमे
विभिन्न आकार प्रकारक
रंग बिरंग जीवन।

(३९)
नटखट समुद्र
तटक आरामसँ वंचित
कएने बेर बेर तंग।

(४०)
पहाड़क चोटी
आर बेसी ऊँच लागैत अछि
गहींर घाटीक बीच

(४१)
पोखरिमे देखु
प्रकृतिक प्रतिबिम्ब
उलटल बुझाइत अछि

(४२)
तितलीगण उतरल
पंखरूपी पैराशूट लऽ
फुलक झुण्ड पर।

(४३)
उच्चतम शिखर पर
गुफासँ दृष्टिगोचर
होइत रमणीय दृष्य

(४४)
बच्चाक संग खेलमे
एकेटा खुशीक आभास
ओकर किलकारी

(४५)
टेढ़ मेढ़ रेखा अछि
बरसातक बहैत पानिसँ
खिड़कीक काँच पर बनल

(४६)
बादलसँ छनल
समुद्रक लहरिक तरंग
उपर चमकैत किरण

(४७)
पानिक तरंग कँ
पक्षी बदलि रहल अछि
कलरवक लयमे

(४८)
मरुस्थलमे रेत
अछि हवासँ बहारल
सतह भेल समतल
(४९)
कतेक बेसी ध्यान
पातक प्रारूप देबऽमे
ईश्वर देने छथि
(५०)
बरसात खतम भेल
पानि तइयो झरि रहल अछि
गाछक पात सब सऽ
(५१)
समुद्रक लहरि
लगातार टकरा रहल
पाथर तइयो स्थिर
(५२)
मनोरम दृष्य
जेना चिन्नीक चाशनीमे लिप्त
अछि गाछ जाड़मे
(५३)
अपने रंगहीन अछि
गाछ कँ रंगीन बनौलक
नीचा गड़ल जड़ि
(५४)
शीतल प्रकाश युक्त
सुर्योदयक पहिनेक समय
सर्वोत्तम काल
(५५)
पाँखिक शाल ओढ़ने
प्रकृतिक भ्रमण हेतु
पक्षी निकलल जाड़मे
(५६)
चिडैय़ाक बच्चा
माए बाप संगे अछि ताबञ
जाबञ पंख नहिक छैक।
(५७)
प्रवासी पक्षी
मीलक मील उड़िक आयल
गर्मीक आनन्द लय।
(५८)
उछलैत पानि
नदीसँ भैंट लेल
खसल झरनाक रूपमे ।
(५९)
नागफणीक गाछ सभ
मरुस्थल्मे सेहो अछि
मजबूतीसँ ठाढ़।
(६०)
कठोर पातसँ लिप्त
नागफनीक चोटी पर अछि
कोमल फूलक ताज
(६१)
आर सजायल गेल
कैक रंगक फूल आऽ लाइटसँ
क्रिसमसक साँझमे
(६२)
एक नारिकेरक फल
कठोर केशयुक्त कवचमे
मीठ उज्जर फल अछि
(६३)
भुखाएल बगुला
नदीक कातमे ठाढ़ अछि
माछक ताकिमे
(६४)
अतिथिक आगमन
कौआक कर्कश काँव काँवसँ
पूर्वसूचित भेल अछि
(६५)
सागरमे डॉलफिन
खतरनाक जीवक बीचमे
मनुषक साथी
(६६)
जिग ज़ैग ध्वनि कँ
गाड़ी दोहरा रहल अछि
भीजल सड़क पर
(६७)
भूकम्पक श्राप अछि
अज्ञात अपराधक सजा
मनुषकँ भेटल
(६८)
छोट किन्तु तेज अछि
अपन लक्ष्य चिनहऽमे
भड़ल भीड़क बीच
(६९)
समुद्रक नीचाँ
कतओ जायकाल रहैअ
छोट माछ सब झुण्डमे
(७०)
अंगूरक फल अछि
मीठ जेल जमाकऽ रखने
छोट छोट आकारमे
(७१)
स्वर्ग सदृश दृश्य
हरियर प्राकृतिक संग
चिड़ैआक कलरव
(७२)
राति हुअक पहिने
आकाश दहकि रहल
सूर्यास्तक पहिने
(७३)
खिलखिलाइत झरना
मधुर ध्वनि घोरि रहल
चारू दिशामे
(७४)
सूर्यक अएलापर
रातिक अन्हार भागि गेल आऽ
भोर शुरु भऽ गेल
(७५)
छाया उपर्युक्त अछि
गोबरछत्ता कँ उगऽ
आऽ पसरऽ लेल
(७६)
एकटा पओलाक बाद
खरहा फेर भागि रहल अछि
आर भोजन लेल
(७७)
गाछक स्वर्णिम रंग
पतझड़क आगमनक
घोषणा अछि करैत ।
(७८)
गरमीक ऋतु
कहाँ ओतेक दुखद अछि
शुरुक दिनमे
(७९)
स्वयम् सिद्ध मकरा
अपन सुरक्षा हेतु
जाल अछि बुनैत
(८०)
कोनो आकारमे
ढलि जाएत पानि मुदा गहराई
एकर अपन गुण
(८१)
आकाश अखनो ऊँच
बादल पहुँचमे बुझाएल
ई धुन्धक रूपमे
(८२)

रातिमे इजोत दैत
बर्फसँ परावर्तित होइत
प्रकाशपुँज जाड़मे
(८३)
लुक्खी सब निकलल
अपन घड़सँ आलस त्यागि
वसन्त ऋतुमे
(८४)
सोन सन सूरज भेल
उज्जर चमकैत हीरा सन
दिनकँ अएला पर
(८५)
गाछ सब अछि होड़मे
सबसँ पहिने पाबऽ लेल
सूरजक रोशनी
(८६)
एकटा मन्दिर अछि
खजूरक गाछ भीड़मे
एक पोखरि कातमे
(८७)
सुखाएल छोट पातसभ
गाछसँ नीचाँ खसैत अछि
नबकँ अवसर दैत
(८८)
गाछक शाखासभ
अतेक ऊँचाई पर पसरल
जड़ि ततब्बे गहिँर
(८९)
भोरक अयला पर
गाछ पर लादल ओस भेल अछि
चमकैत हँसी सन
(९०)
सोन सन कम्बल अछि
ओढ़ने गहुमक खेत सभ
कटाइक पहिने
(९१)
चक्रवातीय पवन
जीवनसंहारक बनि गेल
जीवनरक्षक छल।
(९२)
प्रदान करैत अछि
पक्षी आऽ हिरण सभकँ
गाछ आऽ वृक्ष आश्रय
(९३)
फूलसँ भरल अछि
एकटा घाटी एहन अछि
जेना खुशी मुस्काइत।
(९४)
पानि बढ़ि रहल
रस्ताक गाछ आऽ पाथर सभ
विदा करैत ठाढ़
(९५)
जाड़क गाछ अछि ठाढ़
वसन्तक प्रतीक्षामे
पात सभसँ भिन्न भऽ
(९६)
Illusion of eye
Colourful appearance of
Rainbow in the sky
आँखिक भ्रम,
आभास वर्णमय
पनिसोखा द्यौ

(९७)
Rainbow declares
Beginning of bright days and
End of rainy ones
पनिसोखाक,
शुभ्र दिन आबह
खिचाहनि जाऽ
(९८)
Filled with smoky fog
The wood seems to be
burning
Thou' it is winter
धुँआ कुहेस
जेना जड़ैत काठ,
अछि ई जाड़
(९९)
The words sound so sweet
imitated by parrots
Like baby babbles
गुञ्ज मधुर
सुग्गाक अभिनय,
तोतराइत स्वर
(१००)
The sky is bright
The wind has cleared the
clouds
Some still needs force
अकाश श्वेत
वायु टारैत मेघ,
कनेक बल
(९६ सँ १०० धरि इंग्लिशसँ मैथिली अनुवाद संपादक द्वारा कएल गेल)

मेघक उत्पात

कनिक काल दऽ पानिक फुहार
फेर लेलक अपन आँजुर सम्हारि
देखू मेघक उत्पात
लोकक आशाक उपहास करैत
कखनो दर्शन दऽ बेर-बेर नुकाइत
मौलाऽगेल गाछ आऽ पात
कखनो गरजि भरि कऽ रहि गेल
कखनो बरसि-बरसि कऽ भरि गेल
डूबल पोखरिक कात
कोसीक प्रवाह सब बाँन्ह तोड़लक
गामक गाम जलमग्न कएलक
ततेक भेल बरसात
किसानक भविष्य मेघपर आश्रित
मेघक इच्छा पूर्णतः अप्रत्याशित
सभसालक अनिश्चित अनुपात

बरखा तू आब कहिया जेबैं

1
बरखा तू आब कहिया जेबै
अकच्छ भेलौ सब तोरा सँ
बुझलियौ तू छै बड जरूरी
लेकिन अतीव सर्वत्र वर्जित छै
आर कतेक तंग तू करबैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं
२
बेंग सब फुदकि फुदकि कऽ
घुसि रहल घर - आँगन में
ओकरा खिहारैत साँपो आयत
तरह - तरह के बिमारीक जड़ि
मच्छड़ सभके खुशहाल केलैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं
३
कतौ बाढ़ि सँ घर दहाइत अछि
कतौ गाछ उखड़ि खसि पड़ल

कतेक खतरा तोरा संग आयल
आन-जान दुर्लभ तोरा कारण
आढ़ि सभ कादो सऽ भरलैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं

४

टूटल फूटल खपरी सऽ छाड़ल
गरीबक कुटिया कोनाक सहत
तोहर निरन्तर प्रावाहक मारि
पशु-पक्षी सेहो आश्रयहीन भेल
नञहर के तू सासुर बुझलैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं

५

तोहर जाइत देरी शीतलहरी
अप्पन प्रकोप देखाबऽचाहत
मुदा पहिने आयत शरद ऋतु
कनिके दिनक आनन्दी लऽ कऽ
पनिसोखा देखेनाई नञ बिसरिहैं
बरखा तू आब कहिया जेबैं।

मिथिलाक विस्तार

हम सब ओहि समूहक लोक
इतिहास छानब जकर भाग
संस्कृति बड़ धनी
मुदा संरक्षणक अभाव
जहिया सभक नींद खुजत
तहिया करब पश्चाताप
ओहि सभ्यताकँ ताकब
जे अखन लगैअ श्राप
उन्नतिक पथ पर चलऽ लेल
पहिरलहुँ आधुनिकताक पाग
जिनकासँ ई सुरक्षित अछि
से गाबैत बेरोजगारीक राग
जे गरीबीक सीमा पार कएलाह
से व्यस्त प्रतियोगितामे दिन राति
एक संजीवनी बुटीक अभिलाषा
जे सभ्यताकँ दिअए सुरक्षित आधार
विश्वस्तरीय संस्थाक निर्माण होए
एकर विशेषताक जे करए विस्तार

ईशक अराधना

1

हे ईश एहन हाथ दिअ
जे कर्मठ आ कुशल होई
अहाँ लग मात्र जोड़िक
कर्म के तिलांजली नहि दई
पूजाक संग काजक संगम
जकरा लेल ग्राह्य होई

२

हे ईश एहन पैर दिय
जे अपन भार सहि सकय
आनक जहन प्रयोजन होई
तऽ सभसँ आगाँ बढ़ि सकै
औचित्य सँ विचलित जकरा
कोनो बाधा नञ कऽ सकै

३

हे ईश एहेन वाणि दिअ
जाहि में निवास करैथ शारदा
मिठास होए आ' शीतल होय
नहिं होए भय आ' लोलुपता
अहाँक अराधना भक्तिभावसऽ
देववाणिमे करक दिअ क्षमता

४

हे ईश एहेन दृष्टि दिअ
अहाँक रूपके कराबै चिन्हार
अहाँक बास जखन घट-घट मे
फेर कियै जाउ हिमालय पहाड़
सत्कर्मके हम पूजा मानी
नहिं रहै अज्ञानताक अन्हार

५

हे ईश एहन बुद्धि दिअ
अहाँ पर सदैव रहै विश्वास
संतोष आ' शान्ति पाबि
बेसी के नहिं हुए आस
प्राणिमात्रक कल्याण लेल
कऽ सकी आमरण प्रयास

खरहाक भोज

खरहा सब भामि-भामि
बाड़ीमे अछि भोज करैत
जतेक छल रोपल साग-पात
कुचरि-कुचरि कऽ चरैत
एहन असहति दृष्य देख
गृहस्थक तामसे मोन जरैत
प्रतिदिनक निरंतर प्रयास
बाड़ी छल फूलैत-फलैत
अतेक दिनका कएल धैल
पर ई सभ पानि फेरैत
भीड़ल सब ओकरापर
चारू दिससँ खिहारैत
कियै ओ ककरो हाथ आयत
नहि देरी भेल ओकरा पड़ाइत।
बिन मेहनति आ' बिन धैर्य
मनुषकँ अछि किछु नहि भेटैत
पशु - पक्षी सब लुझिकऽ
अपन जीवन अहिना बिता लेत।

कल्पनालोक

कल्पनालोकमें विचरण करै छलहुँ उन्मुक्त
सबतरहक विषाद जतऽ भऽ गेल छल लुप्त
आह्लादित हृदय सेहो रहय विस्मयसँ युक्त
प्रशंसा में स्वर्ग शब्द लागल सबसऽ उपयुक्त

कोनो भूमि नहि भेटल जे छल कलह सँ लिप्त
थम्हलहुँ जत कतौ छल स्नेहक जलसँ सिक्त
आरोग्यक कचोर रंग सर्वत्र छल पल्लवित
ताहि पर खुशी कोमलतापूर्वक रहय पुष्पित

शान्ति तेहेन जे देलक अपूर्व आत्मसंतोष
दूर-दूर तक नहिं कतौ देखायल आक्रोश
एहनो दुनिया हैत कतौ से नहिं छल भरोस
जाहि सँ दुखी छलहुँ से मेटायल सब रोष

वास्तविकता अछि अलग से तऽ स्वयंसिद्ध
समस्या सँ जूझैत सब, की बच्चा की वृद्ध
कल्पनाक साकार भेनाई अछि अहिमें निमित्त

घर-घर जहन लोक हैत शिक्षित आ समृद्ध।

कोसीक प्रकोप

प्राकृतिक प्रकोप मिथिलामे
देखि के नहि हैत अधीर
देहाइत डूबैत जन जीवन
सरकार बनल अछि बहिर
कहिया सऽ अछि बनल
कोसी नदी बिहारक शोक
पर्यावरणके सतत हनन
कियेक नहि लागल रोक
घमैत हिमनद बढ़ैत जलस्तर
सृष्टिके दिनोदिन बढ़ैत तापमान
पर्यावरण पर गम्भीर चिन्तन आवश्यक
पहिने वर्त्तमान संकट स पाबि निदान
अतेक सालक समय देलाक बाद
फेर रस्ता बदलि लेलक कोसी नदी
अहि महाप्रलय सऽ बचनाइ छल संभव
समय पर सरकारी कोष खुजितै यदि
मज़बूत बान्ह आ प्रवाहक मार्गदर्शन लेल
भूगोलवेत्ता आ अभियंता आगू आबैथ
जलसंचयसऽ सिंचाइक समस्या भगा
जलशक्ति सऽ विद्युत निर्माण करैथ।

असल राज

लन्दन शहरमे भोरक भीड़सऽ
भागैत दिनचर्याके आढ़िसऽ
ठाढ़ भेलहुं कात भऽ॥१॥
लागल सबके प्रेत रेवारने छल
आकि कोनो लॉटरी फुजल
सबके तेना पड़ाहि लागल छल॥२॥
समय सँ छलै सब पैबन्ध
विदा काज दिस एक बैगक संग
ओवरकोटमे बन्द॥३॥
मिथ्या अभिमान भेल विलीन
सब काजक सुरमे तल्लीन
स्वावलम्बी आऽ आत्माधीन ॥४॥
कानूनन ठीक अछि जे कोनो काज
तकरा करैमे जे नहि केलक लाज
सैह कऽ रहल अछि असल राज॥ ५॥

पतझड़क आगमन

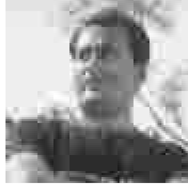
पतझड़क आगमन
दहैक रहल वातावरण
संतरा, पीयर, लाल, भूरा
रंग सऽ भरल पूरा
प्रकृति जेना भेल जीर्ण
मौलाएत झड़ैत तृण-तृण
विविध रंगके त्यागिकऽ
गेरूवा वस्त्र धारिकऽ
विदा भेल लेबऽ सन्यास
ताहि पर सुर्योदयक आकाश
धरतीपर जे आगि छल
ताहिमे ओहो लिपटल
आकि अछि दर्पण जकाँ
पृथ्वीक रूप देखाबैत जेना
अकरा शीतल करैलेल
साधु तपस्यामे लीन भेल
जहिया हिमक बरखा हैत
अस्वच्छता जखन दूर हैत
तहिया सऽनवजीवनक प्यास
लायत सुखद वसंतक अभिलाष।

वृद्धक अभिलाषा

एक वृद्ध रोपि रहल छल गाछ आमके
कियो पुछलकै जे की लाभ हैत अहाँके
अपने छी जीवनक अंतिम छोर पर
फरनाइ तऽ हैत अहाँक मरलापर
ओ वृद्ध जवाब देलैथ विनम्रता सऽ
अपन काज सऽ बिना अडिग भऽ
बाप दादाक रोपल कलम जे भोग केलहुं
बस सैह ऋणके लौटाबक प्रयास केलहुं
आगामी पीढ़ीके अपन हाथे खुआयब की नहिं
कम सऽ कम ई गाछ फरैत रहत जा धरि
अपन बाल बच्चामे मिठास घोरैत रहब
भने ताबे अपने जीवैत रहब नहिं रहब

टेम्स नदीमे नौकाविहार

टेम्स नदीमे कर चललौं नौकाविहार
स्टीमरमे उपरिक मंजिल पर सवार
मन्द - मन्द चलैत शीतल बयार॥
वस्तुकलाक कते उत्कृष्ट उदाहरण
तकनीकी विकासक प्रत्यक्ष दर्शन
तटमे ठाढ़ ऊंच - ऊंच भव्य भवन॥
कलकलाइत जल स डोलैत नाव
मानव प्रयाससऽ अनुशासित बहाव
जगा देलक अपन बिसरल घाव॥
कतेक पाँछा अछि अपन प्रान्त
नैसर्गिक आपदा स आक्रान्त
कहिया हैत बाढ़िक समस्या शान्त॥
रातिक बात तऽ आरो अद्भुत
बस मंत्रक उद्घोष छल विलुप्त
स्थानो नहिं छल ओहेन भक्तियुक्त॥
अन्यथा कहितौं अकरा हरिद्वार
बत्तीक प्रतिबिम्ब स चमकैत धार
जेना होय छठिक अर्घ्यदीपक भरमार॥



ज्योति प्रकाश लाल

ग्राम-जगतपुर, सुपौल, (भारत)।ज्योतिप्रकाश लाल विप्रो टेक्नोलोजी, हैदराबादमे सॉफ्टवेअर अभियन्ता छथि, स्पेन आ यू.एस.ए.मे पहिने काज कए चुकल छथि। एप्लिकेशन आ वेब आधारित सॉफ्टवेअरक निर्माणमे संलग्न। माइक्रोसॉफ्ट कॉरपोरेशन, वाशिंगटनमे विन्डोज ऑपेरेटिंग सिस्टमपर शोध आ विकासमे योगदान। स्कूल, कम्प्युटर इंस्टीट्यूट आ सरकारी पोलीटेकनिकमे शिक्षणक पूर्व अनुभव। वर्तमानमे साक्षातकार आ व्यक्तित्व विकासपर पोथी लिखबामे व्यस्त।

श्री लालमे संगठनात्मक शक्ति छन्हि आ ओऽ विभिन्न ग्रुप आ फोरमसँ जुड़ल छथि। किछु आर अनुभवी सहयोगीक संग ओऽ www.jyoticonsultant.com द्वारा मुफ्त कैरिअर सुझाव दए रहल छथि। सम्पादक

आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व

कम्प्युटर: कि आ किएक?

आजुक दिन मेड कम्प्युटर शब्द किनको सँ बाँचल नहि अछि। ओना तँ हिन्दी वा मैथिली मे कम्प्युटरक नाम अछि "*संगणक*" मुदा ऍहि नाम सँ बहुतो लोकनि अनभिज्ञ होयब आओर ई शब्द किछु अनगराईल बुझायल जायति। खैर.... अपन मातृभाषा मैथिली मे एहेन ढेर अंग्रेजी शब्दक प्रयोग करैत छी जे विशुद्ध मैथिली मे विचित्र बुझाएल जायति छैक। आइ कँ दिन मे सभ कँ 'कम्प्युटर साक्षर' (Computer Literate) होवाक चाही। 'कम्प्युटर साक्षरता' (Computer Literacy) सँ मतलब जँ कोनो भी आदमी 'कम्प्युटर अनुप्रयोग' (Computer Applications) कँ प्रयोग मे लाबि सकैथि। दोसर तरहेँ यदि एहि बात कँ कही तँ एकटा ऐहेन आदमी जँ कम्प्युटर कँ प्रयोग कड कँ कोनो काम कड सकैथि।

कम्प्युटर सँ लगभग सभ काम भड सकैति अछि। जाहि कारणे वर्तमान समय मे कम्प्युटर एकटा महत्वपुर्ण अंग बैनि गेइल छैक। आजुक छोट मोट व्यापारीयो एकटा कम्प्युटर खरीदबाक आ कम्प्युटर ऑपरेटर रखवाक हिम्मत करैत छैथि। एकर लोकप्रियता आ माँगक पाँछा ढेर कारण अछि। उदाहरणक तौर पर देखि तड: जेना कोनो दरख्वास्त वा चिट्ठी कोनो ओफिस मे देबाक जरुरत होयत अछि तड दरख्वास्त कँ टाइपराइटर (Typewriter) पर टाइप करा कँ देति छी, मुदा इ टाइप करायल दरख्वास्त मे बहुतो कमी आ अपुर्णताक संभावना रहैति छैक, जेना Spelling Mistakes के संभावना, पाराग्राफक Alignment मे समस्या, पृष्टक Margins मे समस्या, इत्यादि।

इ सभटा समस्याक समाधान अपने कम्प्युटर सँ बिना बहुत कठिनाई सँ कँ सकैत छी। कम्प्युटर मे Spelling Checking कँ सुबिधा अछि जँ अपने आप बता दैत जे कोन कोन शब्दक हिज्जै (Spelling) गलत अछि। एकर अलावा कम्प्युटर Grammatical Errors सेहो पकैर सकैति अछि। इ सब सुविधा पकरि (Facilities) सँ लिखल दरख्वास्त वा चिट्ठी मे कोनो Spelling Mistakes आ Grammatical Errors कँ संवाभना कम अछि। पाराग्राफक Alignment आ Margins कँ तरीका बहुत सुविधाजनक अछि। एकर अलावे एकटा दरख्वास्त वा चिट्ठी लिखवाक आ ओकर छायाप्रति (Printouts) निकलवाक तक जे जे सुविधा (Facilities) होएबाक चाही वो सभटा कम्प्युटरक सोफ़्टवेयर पैकेज (Software Package) मे छैक।

वर्तमान समय मे कम्प्युटर बहुत आगाँ बढि गेल अछि। Banking Sector मे जहिना धुम धडाका सँ प्रयोग मे अछि तहिना Medical क्षैत्र मे। जहिना रेलक सवारी आरक्षण मे कम्प्युटरक Whistle बाजि रहल अछि तहिना हवाई जहाज कँ सेहो उड़ा रहल अछि। मोटा मोटी यदि एक लाईन मे कही तँ नवयुग मे कम्प्युटर ओहिना सब क्षैत्रमें मे जरुरी अछि जहिना तरकारी मे नोन।

वर्तमान समय मे कम्प्युटरक आवश्यकता कँ आधार पर इ कहल जा सकैति अछि जे यदि अहाँ कम्प्युटर नहि जानैत छी तँ अहाँ निरभर छी। अंग्रेजी मे सेहो मुहावरा (Proverb) बनि गेल अछि

"*If you are not a computer literate it means you are illiterate.*"

आइ केर समय मे जिनका संगमे Internet के सुविधा उपलब्ध अछि तँ हुनका लेल बहुतो चीज बदैलि गेल छैकि। यदि आइ कँ समय सँ दस बारह साल पाँछा कँ समय मे जाई आ पत्राचारक माध्यम कँ बारे मे सोची तँ पहिले स्मृति-पट्ल पर थोक मे पोस्टकार्ड, अन्तरदेशी आ लिफाफाक खरीदवाक बात आबि जायति। एकर पाँछा एकटा कारण अछि जे ओहि समय मे पत्राचारक माध्यम लेल जे पोस्ट कँ ऑफिश छलेक प्रखर भुमिका छलैक। आओर सबहक लेल डाकक माध्यमे सुगम आ सरल छलि। पत्र कँ अलावे गाम गाम मे मनीओडर पहुँचेबाक मे सेहो डाक अग्रणी छल। एवम प्रकारे डाक पत्राचारक आ मनीओडर वास्ते एक मात्र साधन बुझला जायति छलि। मुदा नहुँए नहुँए समय आ दुनिया मे परिवर्तनक लीला जारी रहैत अछि। ई पत्राचारक परिवर्तनक लीला मे कूरियर (Courier) आ ई-मेल (E-mail / Electronic - Mail) आयलि आ धुम धड़ाका सँ पत्राचारक माध्यम पर कब्जा कँ लेलक। आजुक दिन मे जिनका कूरियर वा ई मेलक सुविधा अछि वो सब पोस्ट ऑफिश केर रास्ता पेरा बिसरि गेल छैथि। सब लोकनि जँ प्रत्येक दिन डाकिया केर इंतजार मे दरवाजा पर एकटक लगा कँ बैठल रहैति छलाह वो सब आई डाकिया कँ चिन्हेतो नहि छैथि। कारण बहुतो पत्राचार ई मेल सँ ही सम्भव भड जायति अछि, खास कड कँ शहरी परिवेश मे। क्रमश:



डॉ कैलाश कुमार मिश्र

(८ फरबरी १९६७-) दिल्ली विश्वविद्यालयसँ एम.एस.सी., एम.फिल., ''मैथिली फॉकलोर स्ट्रक्चर एण्ड कॊग्निशन ऑफ द फॉकसांग्स ऑफ मिथिला: एन एनेलिटिकल स्टडी ऑफ एन्थ्रोपोलोजी ऑफ म्युजिक'' पर पी.एच.डी.। मानव अधिकार मे स्नातकोत्तर, ४०० सँ बेशी प्रबन्ध -अंग्रेजी-हिन्दी आ मैथिली भाषामे- फॉकलोर, एन्थ्रोपोलोजी, कला-इतिहास, यात्रावृत्तांत आ साहित्य विषयपर जर्नल, पत्रिका, समाचारपत्र आ सम्पादित-ग्रन्थ सभमे प्रकाशित। भारतक लगभग सभ सांस्कृतिक क्षेत्रमे भ्रमण, एखन उत्तर-पूर्वमे मौखिक आ लोक संस्कृतिक सर्वांगीन पक्षपर गहन रूपसँ कार्यरत। यूनिवर्सिटी ऑफ नेब्रास्का, यू.एस.ए. केर ''फॉकलोर ऑफ इण्डिया'' विषयक रेफ़ेरी। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालयक पुरस्कारक रेफरी सेहो। सय सँ ऊपर सेमीनार आ वर्कशॉपक संचालन, बहु-विषयक राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमे सहभागिता। एम.फिल. आ पी. एच.डी. छात्रकेँ दिशा-निर्देशक संग कैलाशजी विजिटिंग फैकल्टीक रूपमे विश्वविद्यालय आ उच्च-प्रशस्ति प्राप्त संस्थानमे अध्यापन सेहो करैत छथि। मैथिलीक लोक गीत, मैथिलीक डहकन, विद्यापति-गीत, मधुपजीक गीत सभक अंग्रेजीमे अनुवाद।

''रचना'' मैथिली साहित्यिक पत्रिकामे ''यायावरी'' स्तंभक प्रशस्त स्तंभकार श्री कैलास जीक ''विदेह'' लेल प्रारम्भ कएल गेल ई यायावरी स्तंभ दीर्घ काल तक स्थायी रहत ताहि कामनाक संग प्रस्तुत अछि । सम्पादक

यायावरी



नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग डॉ कैलाश कुमार मिश्र

-हमर अंग्रेजीमे लिखल लेख पढ़ि लोक सभ हमरासँ मैथिलीमे लिखबाक हेतु अनुरोध करैत छथि। स्पष्ट कए दी जे अंग्रेजी हमर व्यवसाय केर भाषा थिक। कहियो मिथिलामे नहि रहलहुँ, संस्कृत आ सोतियामी मैथिली नहि तँ पढ़लहुँ आ ने लिखलहुँ। तञि मैथिलीमे लिखक कल्पना जखने करैत छी तँ हाथ काँपय लगैत अछि। तीन वर्ष पूर्व डॉ विश्वनाथ झा अपन त्रैमासिक पत्रिका **रचना** हेतु लिखबाक लेल भावनात्मक रूपेँ हमरा बाध्य कऽ देलन्हि। डराइत-डराइत हम **रचना**मे **''यायावरी''** नामसँ अपन यात्रा-वृत्तान्त लिखनाइ प्रारम्भ केलहुँ। पाँच अंकमे लगातार लिखलाक बाद कार्यक अत्यधिक व्यस्तताक कारणेँ यायावरी लिखनाइ बन्द कऽ देलहुँ। घुमब आ अंग्रेजीमे लिखबसँ समय कहाँ बचैत अछि।

एम्हर नौ-दस माससँ गजेन्द्र बाबू अपन पत्रिकाक हेतु पुनः मैथिलीमे लिखबाक हेतु कहि रहलाह अछि। अतेक चेरियेलन्हि जे अन्ततः यात्रा-वृत्तान्तक ''यायावरी'' प्रारम्भ कऽ रहल छी। पाठक लोकनिसँ नम्र निवेदन जे हमर लेखक विषय आ वर्णनकेँ पढ़थि आ भाषा-विन्यासक गलतीपर बेशी ध्यान नहि देथि।



यायावरीक प्रारम्भ हम असम केर एक छोट भव्य, रम्य, आकर्षक, कठिन परन्तु अनेक रंग आ उल्लाससँ भरल भूखण्ड, नार्थ कछार हिल्ससँ कऽ रहल छी।

अपन संस्था इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्रक सदस्य सचिव डॉ कल्याण कुमार चक्रवर्ती महोदय केर निर्देश एवं कार्यशैलीसँ प्रभावित भऽ हम समस्त उत्तर-पूर्व भारत एवं सिक्किममे विभिन्न क्रियाकलाप प्रारम्भ केलहुँ, जाहिसँ स्थानीय संस्कृति आ विरासत केर रक्षा कएल जा सकय। असममे कार्यक श्रीगणेश हमरा लोकनि ''श्रीमंत शंकरदेव कला क्षेत्र'' गुआहाटी केर सचिव श्री गौतम शर्माक संग कएल।







लगभग ६४ बीघा पहाड़ी धरतीमे बनल श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र बड़ड रमनगर जगह बुझना गेल। जे कियो गुआहाटी घुमए जाथि आ हुनका कलासँ थोरेकबो प्रेम होइन तँ श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र अवश्य जाथि, ई हमर निवेदन। कलाक्षेत्रमे पानिक फब्बारा, फुलबारी, विशाल आ कलात्मक अनेको भवन, दू टा अतिथि गृह, आर्टिस्ट विलेज; कलाकार सभकेँ रहबाक हेतु डॉरमेटरी; संग्रहालय, कला दीर्घा, बच्चा सभक लेल टॉय रेल एवं अन्य व्यवस्था; असम केर इतिहासक सम्बन्धमे "लाइट एण्ड साउंड" कार्यक्रम; पुस्तकालय, शिवसागर जिलाक ऐतिहासिक रंगघर केर रिप्रोडक्शन इत्यादि बरवश कुनो घुमए बलाकेँ मोन मोहि लैत छैक।



असम केर अधिकांश ऑफिस आ घरसभमे लोक अपन जुत्ता-चप्पल आदि घरक बाहरे खोलि प्रवेश करैत छथि। हमहूँ एहि परम्पराक पालन जखन-जखन असम जाइत छे, तखन-तखन करैत छी।



स्पष्ट कऽ दी जे श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र सोलहम शताब्दीक महान वैष्णव सन्त शंकरदेव केर नामपर असम राज्य सरकार, भारत सरकारक आर्थिक सहायतासँ समस्त उत्तर-पूर्व भारत, विशेषरूपेण असम केर संस्कृति, विरासत तथा गौरवक संरक्षण एवं सम्वर्धन करबाक दृष्टिसँ बनल छैक।



शंकरदेव जातिसँ कायस्थ छलाह। श्री बाल्मीकि प्रसाद सिंह जे असम काडर केर आइ.ए.एस.पदाधिकारी छलाह; बादमे भारत सरकारक गृह सचिव भेलाह आ अन्ततः विश्वबैंक केर कार्यकारी निदेशक पदसँ अवकाश प्राप्त कएलन्हि, हमरा कहलाह जे शंकरदेव मैथिल छलाह। हुनकर पितामह मिथिलासँ असम प्रवास कऽ गेलथिन्ह। पञ्जीसँ ईहो पता चलैत छैक, जे शंकरदेव तँ नहि परन्तु हुनकर पिता तीन-चारि बेर मिथिला आयल छलाह। एहि बातक एतय उल्लेख करब केर पर्याय ई जे एहि विषयपर गहन शोध करबाक आवश्यकता थिक। यदि ई बात प्रमाणित भऽ गेल जे शंकरदेव मैथिल छलाह तँ आइ हमरा लोकनि विद्यापतिक मैथिल होएबापर गर्व करैत छी, तहिना शंकरदेवोपर गर्व करब। हमरा हिसाबे तँ प्रबुद्ध मैथिल सभ बिहार सरकारसँ शंकरदेवपर एक गहन शोध करबाक परियोजना प्रारम्भ करबाक हेतु निवेदन करथि। गजेन्द्रजी एहि दिशामे आगाँ बढ़थि तँ नीक बात। संयोगसँ वाल्मीकि बाबू आइ-काल्हि सिक्किम प्रदेशक राज्यपाल थिकाह। हुनकर मदतिसँ परियोजनाक प्रारम्भ कएल जा सकैत अछि। ओऽ हमरा कतेको बेर एहिपर कार्य करक हेतु कहि चुकल छथि। एक समय एहनो छलैक जखन बंगाली सभ विद्यापतिकेँ बंगाली बुझैत छलाह। परन्तु आब प्रमाणित भऽ गेल जे विद्यापति मैथिल छलाह। यदि एहने किछु सबरा परम्परा केर जनक श्रीमंत शंकरदेवक उतेढ़पोथीसँ चलि जाय तँ बुझू जे हमरा लोकनि धन्य भऽ जाएब।



श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्रक सचिव गौतम शर्मा आ सुलझल व्यक्ति छथि। लगभग पचास वर्षक गौर वर्ण आ मध्यम कद-काठीक आकर्षक व्यक्तित्व। स्थिर चित्त। प्रथम दृष्टिमे लागत जे ओहिना कियो छथि। परन्तु मुदा डायनेमिक लोक। कलाक्षेत्रक १२५ आदमी हुनकर इशारापर नचैत रहैत अछि। सदिखान ओऽ अपन सहयोगी सभकेँ परिवारक सदस्य जेकाँ स्नेह करैत छथि।

गौतम शर्माक सहयोगक कारणेँ हमरा लोकनि गुआहाटी आ तेजपुरमे बहुत सफलतापूर्वक अनेक कार्यक्रम कऽ चुकल रही। हमरा लोकनि असम केर किछु एहन क्षेत्रमे ओहि क्षेत्रक संस्कृति आ विरासतपर कार्य करए चाहैत रही, जाहिपर विशेष कार्य नहि भेल हो।

शर्माजीसँ पता चलल जे सांस्कृतिक दृष्टिएँ असम प्रदेशकेँ मोटा-मोटी चारि क्षेत्रमे बाँटल जा सकैत अछि:

१.अपर असम
२.लोअर असम
३.बराक घाटी
४.नॉर्थ कछार घाटी

शर्माजीसँ इहो पता चलल जे नॉर्थ कछार हिल्स सांस्कृतिक वैविध्यतासँ भरल अनुपम स्थान थिक, जाहिपर कोनो विशेष कार्य नहि भेलैक अछि। परन्तु ई घाटी उपद्रव, विभिन्न घटना, बन्द आदिक कारणेँ बेशी जानल जाइत अछि। लोक सभ सामान्यतया एतय जाएसँ बचए चाहैत छथि। मुदा सौन्दर्य आ सांस्कृतिक विभिन्नताक कारणे ई थिक असम केर शृंगार-नकमुन्नी।





शर्माजीक बात सुनि हमरा मोनमे ई भावना प्रबल भऽ गेल जे नॉर्थ कछार घाटीमे अवश्य कार्य करब।

गौतम शर्मा हमर मनोदशाकेँ बुझैत कहलाह: "कैलाशजी, अगर अहाँ एतए कार्य करए चाहैत छी तँ हम व्यवस्था कए देब। एतए केर जिला अधिकारी आ नॉर्थ कछार घाटी ऑटोनोमस काउन्सिल केर प्रिंसिपल सचिव अनिल कुमार बरुआ हमर मित्र छथि। एस.पी.केँ हम सेहो जनैत छियन्हि। ऑटोनोमस काउन्सिल केर संस्कृति विभागक अधिकारीगण हमरा लग बराबर अबैत रहैत छथि। सभ कियो मदति करताह।





गौतम शर्माक बातसँ हमर मोन प्रसन्न भऽ गेल। तुरतहि डॉ कल्याण कुमार चक्रवर्तीसँ अनुमति लए २३ नवम्बर २००७ ई. सँ ८ दिनक संस्कृति एवं विरासत केर प्रलेखन केर कार्यक्रम नॉर्थ कछार धारी केर मुख्यालय हाफलौंगमे करबाक प्लान बना लेलहुँ। ई कार्यक्रम गौतम शर्माक सहयोगसँ करक छल। तदनुसार पूर्व निर्धारित् योजनाक अनुसार हम २१ नवम्बरकेँ साँझे दिल्लीसँ सँझुका हवाई-जहाजसँ गोवाहाटी पहुँचि गेलहुँ। गुआहाटीसँ हाफलोंग केर दूरी सड़कमार्गसँ २६१ किलोमीटर छैक। हमरा लोकनि (हम आ शर्माजीक ३ सहयोगी) टाटा सूमो (जीपसँ) २२ नवम्बरक साढ़े चारि बजे प्रातः गुआहाटीसँ हाफलौंगक लेल प्रस्थान कऽ देलहुँ। शर्माजी बड़ड पारिवारिक व्यक्ति छथि। ओऽ पूरा टीमक लोक सभक लेल भोजन, टेन्ट, जलखै, जेनरेटर आदिक व्यवस्था गुआहाटीसँ कए ट्रकमे लादि हॉफलोंग लऽ गेलाह।





समय दुर्गापूजाक छलैक। रास्तामे अनेक ठाम स्थानीय युवक सभ हमरा लोकनिकेँ चन्दा लेल रोकैत रहल। एक ठाम हमरा लोकनि केर राशन-पानि आ करीब २५ आदमीसँ भरल बड़का बसक चक्का सड़कक कात माँटिमे धसि गेल।

चारि घन्टाक इन्तजारक बाद सेनाक सहायता लए चक्काकेँ दलदलसँ बाहर निकालल गेल। अन्ततः साढ़े एगारह बजे रातिमे हाफलौंग पहुँचलहुँ। मोनमे डर छल। हेबो किएक नहि करैत! हमरा सभकेँ अएबासँ दू दिन पहिने पाँच आदमीक बीच हाफलौंग शहरमे गोलीसँ मारि देल गेल रहैक।





खैर! शर्माजीक प्रयास आ डॉ के.के.चक्रवर्ती जीक असम केर मुख्य सचिव केर नाम लिखल चिट्ठीक कारण हमरा हाफलौंग सर्किट हाउसमे रहबाक व्यवस्था भऽ गेल। सर्किट हाउस शहरक सभसँ ऊँच स्थानपर बनल अंग्रेजी हुकुमतक समयक भव्य मकान छैक। एतएसँ प्रकृति केर अवलोकन तथा समस्त हाफलौंग शहर एवं अगल-बगलक इलाकाकेँ देखल जा सकैत अछि।





हमर कोठरी काफी पैघ आ साफ सुथरा छल। हँ, पानिक कनिक दिक्कत अवश्य छलैक। कपड़ा बदलिते सुति रहलहुँ। भेल जे रातिमे भोजन नहि करब। परन्तु गौतम शर्मा कतऽ मानऽ बला छलाह! कनिकबे कालक बाद एक स्थानीय कलाकारकेँ लए आबि गेलाह। हम शिष्टतावश नहिओ चाहैत बैसि रहलहुँ। शर्माजी कहलन्हि, ''जल्दी चलू। भोजन तैयार अछि''। नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस काउन्सिल केर कला एवं संस्कृति विभागक निदेशक श्री लंगथासा सेहो शर्माजीक संग छलथिन्ह। हुनके प्रयाससँ संस्कृति भवन केर प्रांगणमे हमरा लोकनिकेँ कार्यक्रम करबाक अनुमति भेटल छल। लंगथासा उदार आ संस्कृति प्रेमी छथि। स्वयं दिमासा जनजातिक छथि। कहलन्हि ''हमरा सभ लेल ई गौरव केर बात थीक जे अहाँ लोकनि दिल्लीसँ आबि एहि इलाकामे जतए कियोक नहि आबए चहैत अछि, अयलहुँ अछि आ हमरा लोकनिक संस्कृति एवं धरोहरक रक्षाक प्रति कृतसंकल्पित छी। एतए तँ ओना असम राइफल्स, सैनिक, पुलिस आदिक जमघट लागल रहैत अछि, परन्तु संस्कृति आ विरासतक चिन्ता ककरा छैक? अहाँ सभकेँ केना धन्यवाद दी''।





हम लंगथासा महोदय दिस तकैत बजलहुँ: ''अहाँ सभ यदि चाही तँ हमरा लोकनि एहि क्षेत्रक सांस्कृतिक धरोहरकेँ संरक्षण एवं संवर्धनक हेतु बेर-बेर आएब''।

हमरा बातपर उत्साहित भऽ लंगथासाजी बजलाह: हमरा लोकनि सभ तरहक सहयोग करबाक हेतु तैयार छी। एतय केर तमाम अलगाववादी, सरकार विरोधी जत्था समूह संस्कृति रक्षणक विरोधी नहि थिक। तमाम लोसभ अहाँक निर्णयसँ प्रसन्न अछि। जावत धरि अहाँ सभ एतए रहब तावत धरि अतए कुनो मार-काट नहि हैत। अहाँ जे जाहि तरहक स्थानीय सहयोग चाही, हमरा लोकनि करबाक हेतु तत्पर छी''।



एकर बाद हमरा लोकनि रात्रिक भोजन हेतु विदा भेलहुँ। चटगर भोजन- भात, माछ, दालि, सजमनि केर तरकारी, सलाद, मिठाई, चटनी- केलाक बाद पुनः सर्किट हाउस आबि सुतबाक तैयारीमे लागि गेलहुँ। सुतएसँ पहिने अपन पत्नीकेँ दूरभाषसँ आश्वस्त कए देलियन्हि। जे चिन्ताक कोनो बात नञि। हम एतए ठीक छी"। एकर तुरत बाद सुति रहलहुँ।

अगिला दिन प्रातः पाँच बजे उठि बाहर अएलहुँ तँ मनोरम दृश्य देखि मोन मस्त भऽ गेल। सर्किट हाऊससँ एना बुझना गेल जेना सुरुज अपन लालिमा लए लाल गेन जकाँ उगैत छथि। हरियर जंगल, कलकल करैत छोट परन्तु घुमावदार नदीक प्रभाव, दूरमे बनल जंगलक मध्य आदिवासी सबहक छोट-छोट घर, सभ किछु मनमोहक लगैत छल।





किछु कालक बाद गौतम शर्मा सम्वाद पठओलन्हि जे हमरा लोकनिक कार्यक्रम साँझ ६ बजे प्रारम्भ हैत। किछु कालक बाद सत्यकाम आ कुशा महन्त किछु स्थानीय लोक संग हमरा लग आबि कहलन्हि जे खाली समयमे हॉफलौंग आ अगल-बगलक क्षेत्रकेँ देखबाक चाही। हमरा ई विचार नीक लागल। तुरत तैयार भऽ गेलहुँ।





स्थानीय लोकसभसँ पता चलल जे हाफलोंग मूलतः "हंगक्लौंग" सँ बनल छैक जकर अर्थ थीक सम्पन्न आ रत्नगर्भा धरती। बादमे किछु दोसर विद्वान लोकनि कहलन्हि जे "हॉफलौंग" शब्द दिमासा जनजातिक शब्द "हाफलाऊ" (HAFLAU)क विकृत रूप थीक। "हाफलाऊ" शब्दक अर्थ भेल वाल्मीक पहाड़ी (Ante hill)। हाफलौँग शहरक निर्माण अँग्रेज प्रशासन द्वारा १८९५ ई. मे बोराइल रेंजपर एकटा छोट छिन हिल स्टेशनक रूपमे कएल गेलैक। प्रारम्भमे चीर, देवदारक पाँतिसँ लागल गाछ, नौ छेदक गोल्फ कोर्स, छोट परन्तु आकर्षक आ कलात्मक बंगला, हाफलौंग लेक, रेलवेक कर्मचारी सभ लेल स्टाफ क्वार्टर, छोट बजार, रेलवे स्टेशन आदि सुविधाक संग एहि शहरक विकास प्रारम्भ कएल गेलैक।





अंग्रेज सबहक हिम्मतिक प्रशंसा करए पड़त। ३६ खोह (tunnels) कऽ बना रेल लाइन लऽ गेनाइ ओहि जमानामे अर्थात् १८९५-९८ मे की छोट बात छैक? रेलवेक निर्माण कार्यक हेतु ठीकेदार, मजदूर, कर्मचारी, व्यापारी आदि सभ उत्तर-प्रदेश, बिहार, बंगाल आ असम केर अन्य स्थानसँ आनल गेल। पुनः आपसमे वार्तालापक हेतु एक नव तरहक बजारु हिन्दी विकसित कएल गेलैक। एहि हिन्दीकेँ *हॉफलौंग-हिन्दी* कहल जाइत छैक। ई हिन्दी व्याकरणक निअमक पालन स्वतंत्र भऽ करक अधिकार दैत छैक। हाफलौंग हिन्दी रोमन लिपिमे लिखल जाइत छैक। स्थानीय बुद्धिजीवी लोकनिक कठिन संघर्षक फलस्वरूप आइ-काल्हि हॉफलौंग हिन्दीक मान्यता साहित्य अकादमीसँ भऽ गेल छैक।

नार्थ कछार हिल्स असम केर बहुरंगी चुनरी थीक। एतए निम्नलिखित एगारह जनजातिक लोक रहैत छथि:





१. दीमासा (Dimasa or Cachari)

२. ह्मार (Hmar)

३. जेमि नागा (Zeme Naga)

४. कुकी (Kuki)

५. बंइते (Baite)

६. कार्बी (Karbi)

७. खासी अथवा प्नार (Khasi or Pnar)

८. ह्रांगखल (Hrangkhals)

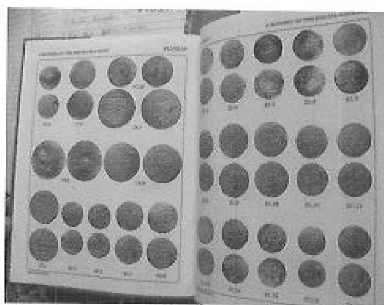
९. वइफी (Vaiphies)

१०. खेलमा (Khelma)

११. रोंगमई (Rongmei)







एकर अतिरिक्त अन्य समुदाय जेना कि बंगाली, असमी, नेपाली, मणिपुरी, मुसलमान, देसवाली आदि सेहो एतए रहैत छथि। सभ समुदायक बीच हमरा भावनात्मक एकताक कड़ी बुझना गेल। भारतक अनेकतामे एकताक स्वरूप बुझाएल जेना अपन मनिएचर धारण कए एहि छोट धरामे मोडेल बनि "संगे-संगे चली", "संगे-संगे खाई", "संगे-संगे रही" कैँ चरितार्थ करैत छल।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद भारतक अन्य शहर जकाँ हॉफलौंग सेहो शनैः-शनैः विकसित भऽ रहल अछि। १९७० ई. मे एकरा जिलाक मुख्यालय बना देल गेलैक। आब नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस काउन्सिल केर मुख्यालय, विभिन्न सरकारी विभागक दफ्तर आ मकान, आवासीय परिसर, पार्क, जेहल, खेल परिसर आ मैदान, दू टा रेलवे स्टेशन, सिविल अस्पताल, प्राइमरीसँ हाइयर सेकेण्डरी स्तर केर विभिन्न विद्यालय, सभ सुविधासँ परिपूर्ण सरकारी महाविद्यालय जाहिमे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय केर अधिकांश विषयक पढ़ाई केर सुविधा सहजतासँ उपलब्ध छैक; पानिक सुविधा, डाक, टेलीग्राम, टेलीफोन आदिक सुविधा, बैंक, चर्च, मन्दिर, मस्जिद, पुस्तकालय अनेक तरहक सामाजिक-सांस्कृतिक क्रिया-कलापमे संलग्न संस्था; सिनेमा हॉल, बस स्टेण्ड आदि सुविधासँ भरल अछि।

अगर रेलसँ हाफलौंग आबय चाही तँ गुआहाटीसँ नॉर्थ प्रन्टीयर हिल सेक्शन केर मीटरगेज द्वारा लम्डींगक रस्ते लोअर हाफलौंग स्टेशन आबि सकैत छी। एकर दूरी गुआहाटीसँ २८५ किलोमीटर छैक। सिलचरसँ बदरपुर होइत हिल हाफलौंग स्टेशन केर दूरी ९२ किलोमीटर छैक।

रेलक डिब्बामे बैसि नॉर्थ कछार हिल्स केर नील पहाड़ीक अवलोकन केनाई स्वर्ग केर अवलोकनसँ कम नञि छैक। जीग-जैग (टेढ़-मेढ़) रस्ता नगाँवसँ प्रारम्भ भय समस्त नॉर्थ कछार हिल्सक उत्तरसँ दक्षिण दिशामे जिलाक तीन प्रमुख नदी- माहुर, दीयूंग आ जटिंगा- कऽ संग-संग चलैत रहैत छैक। बुझाएत जेना पानि, रेलक पटरी आ मनुक्खक मोन तीनू आपसमे तालसँ ताल मिला गतिमान भेल होए।

उपरोक्त तीन नदीक अतिरिक्त एहि धरामे चारि छोट-मोट नदी आरो थीक। एहि नदी सबहक नाम छैक: जीनाम, लंगटींग, कोपिली, डिलेयमा। सभसँ पैघ नदी दीयूंग छैक जकर लम्बाई २४० किलोमीटर छैक।

१८६६ मीटर केर ऊँचाई पर अवस्थित थुंगजांग पहाड़ी सभसँ ऊँच स्थान छैक।

नॉर्थ कछार हिल्स पूबसँ असम केर पड़ोसी प्रदेश नागालैण्ड आ मणिपुर; पश्चिममे मेघालय आर कार्बी अंगलौंग जिला; उत्तरमे नगांव आ कार्बी अंगलौंग जिला तथा दक्षिणमे बराक घाटीक कछार जिलासँ घेरल अछि। ४८९० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रमे पसरल नॉर्थ कछार हिल्स केर सामान्य ऊँचाई समुद्र तलसँ ३११७ फीट छैक।

नॉर्थ कछार हिल्स जिलामे ६१९ गाम; पाँच प्रखण्ड, दू सब डिवीजन (हाफलौंग आ मइबांग)मे विभक्त अछि।

अतए केर आदिवासी मूल रूपसँ झूम खेती करैत छथि। झूममे एक भागक जंगल-झाड़कैँ काटि ओहिमे आगि लगा पुनः खेती कएल जाइत छैक। तीन-चारि वर्षक बादओहि भूमिमे पुनः जंगल झाड़कैँ बढ़ए देल जाइत छैक आ जंगल-झाड़सँ भरल जमीनकैँ आगि लगा साफ कय ओहिमे खेती कएल जाइत छैक। एतए १७,२९३ हेक्टेअर जमीन झूम खेतीक रूपमे, टोटल फसल हेतु उपयुक्त जमीन ३६७५८ हेक्टेअर आर

बीया रोपए बला समस्त जमीन २९२०५ हेक्टेअर छैक। एहि जनपद केर करीब ४५२९वर्ग किलोमीटर धरती जंगलसँ भरल छैक। ६१०.५१ वर्ग किलोमीटर सुरक्षित आ बाकी हिस्सा राज्य सरकार द्वाराघोषित। तीन सुरक्षित जंगल क्षेत्रक नाम क्रमशः

(क) लांगटींग-मूपा सुरक्षित जंगल (४९७.५५ वर्ग कि.मी.)

(ख) कूरुंग सुरक्षित जंगल (१२४.४२ वर्ग किलोमीटर)

(ग) बोराइल सुरक्षित जंगल (८९.८३ वर्ग किलोमीटर)

ओहि दिन लगभग साढ़े बारह बजे भोजन कयल। तत्पश्चात् नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस हिल्स काउन्सिलक कला एवं संस्कृति विभागक निदेशक लंगथासा महोदय, उप-निदेशक श्री संजय जी दूंग एवं किछु अन्य लोकनि हमरा लग अयलाह आ कहलन्हि जे ''चलू अहाँकेँ पहाद्ई दिस लऽ चलैत छी। यदि समय बचत तँ जटींगा पहाड़ी आ गाम सेहो चलब''।

गुआहाटीमे किछु लोक सभ जानकारी देने छलाह जे जटींगा पहाड़ीपर चिड़ै सभ रातिमे रोशनी देखलापर झुण्डक-झुण्डाअबि रोशनीपर प्रहार करैत छथि तथा सामूहिक रूपेण आत्महत्या कऽ लैत छैक। इहो पता चलल छल जे पक्षीशास्त्री लोकनि एहिपर गहन शोधमे बहुत दिनसँ लागल छथि परन्तु एखन धरि कोनो ठोस निष्कर्षपर नहि आबि सकल छथि जे आखिर एकर रहस्य की छकि? आ एकर सत्यता की थिकैक? गुआहाटीमे मोन बना लेने रही जे जटींगा पहाड़ी अवश्य जायब। आइ ई अवसर हमरा लंगथासाजी देलन्हि तँ मोन गद् गद् भऽ गेल। हम तुरत हुनका लोकनिक संग जटींगा गाम जयबाक लेल तैयार भऽ गेलहुँ।

जटींगा पहाड़ी आ गामक रस्तामे विभिन्न प्रकारक बेंतक झाड़ी आ बांस भेटल। नॉर्थ कछार हिल्सक टोटल धरती (४८९००० हेक्टेअर)मे लगभग ३०७९०० हेक्टेअरमे बांस लागल छैक। बांस अनेक प्रकारक अनेक प्रजातिक, असम प्रदेशमे ३३ नस्ल केर बांस होइत छैक, जाहिमे लगभग २० नस्ल वा प्रजाति एहि क्षेत्रमे उपलब्ध छैक। प्रमुख प्रजातिमे काको/ पीछा वा पीछा, जाति, डालू, मूली, हिलजाति, कता, मकालू, काली-सूण्डी, टेराई आदिक नाम सामान्यो मनुक्खक जीभमे रचल-बसल छैक। बांस एहि क्षेत्रक लोकक जीवनक प्रमुख आधार छैक। एकर प्रयोग झोपड़ी, जाफरी, जारनि, पूल आदि बनेबाक लेल कएल जाइत छैक। बांसक कोपड़सँ तरकारी, अचार आदि सेहो बनायल जाइत छैक। बांसकेँ स्थानीय चाऊर, मकई आदिसँ बनल दारु पीबाक हेतु बर्तन (ग्लास-कप)क रूपमे कएल जाइत छैक। जमीनक कटाव रोकबाक हेतु बांसक आधार देल जाइत छैक। एकर अलावे बांसक प्रयोग बर्तन, फर्नीचर, कृषियन्त्र एवं उपकरण, धनुष-वाण, सजेबाक कलात्मक वस्तु, हस्तकला, बत्ती, सीढ़ी इत्यादिमे उपयोग होइत छैक। बादमे हम अनेको वाद्य या लोकवद्य यंत्र देखलहुँ जाहिमे बांसक प्रयोग कएल गेल रहैक।

अन्ततः हमरा लोकनि जटींगा गाम पहुँचलहुँ। ई गाम बोराइल रेंज केर पादगिरि (foothills) पर बसल छैक। ई पहाड़ी तरह-तरहक प्रवासी एवं देशी चिड़ै सबहक विश्राम-स्थली थिकैक। एहि स्थानमे अंग्रेजी मास सितम्बर-अक्टूबरमे चिड़ै सभ अन्हरिया पक्षक रातिमे रोशनीक कोनो स्रोत जेना कि टॉर्च, मशाल आदि देखि झुण्डक-झुण्डमे आबि खसि पड़ैत छैक आ आत्महत्या कऽ लैत छैक। जटींगा गाम हॉफलौंग शहरसँ आठ किलोमीटर केर दूरीपर बसल छैक। लोक सभसँ ज्ञात भेल जे चिड़ै सभ अन्हरिया रातिमे रोशनी देखि झलफलाक खसय लगैत छैक; जकर फायदा उठा कऽ चिड़ैमार सभ बांसक लग्गी अथवा बत्तीसँ चोन्हरायल चिड़ै सभपर प्रहार करय लगैत छैक एवं पकड़ि लैत छैक।

अन्हरिया रातिक संग-संग एक निश्चित वातावरणक भेनाई चिड़ै सबहक सामूहिक आत्महत्याक लेल सेहो कारण बनैत छैक। ई वातावरण छैक हवाक बहबाक दिशा। हवाक दिशा दक्षिण-पश्चिमसँ उत्तर-पूबमे हेबाक चाही। बोराइल पहाड़ीक अगल-बगलमे धूंध आ शीत लागल रहनाई सेहो जरूरी। धूंधमे कनीक झलफलाईत रोशनी हेबाक चाही। एहन स्थितिमे जखन दक्षिण दिशासँ धूँध चलैत छैक तखने चिद्ऐ सभ जटिंगा दिस आगाँ बढ़ैत अछि। सामूहिक आत्महत्या करय बला चिड़ै सभमे लाली चिड़ै (Indian ruddy), कौड़िल्ला (King fisher), भारतीय नौरंग (Indian pitta), हारिल, ब्लैक ड्रोंगो, उजरा बगुला, चितकबरी पौरकी, बटेर आदि प्रमुख छैक।

आश्चर्यक बात ई जे अधिकांश चिड़ै जे कृत्रिम रोशनीक चकाचौंधसँ सामूहिक रूपसँ झुण्डक-झुण्डमे झलफला या चौंधिया कऽ खसैत छैक ओ सभ देशी चिड़ै छैक। प्रवासी चिड़ै सभ संगे ई घटना घटित नहि होइत छैक। स्थानीय लोकसभसँ ईहो पता चलल जे ई प्रवृत्ति समस्त जटींगा पहाड़ीमे नहि भऽ कऽ किछु खास क्षेत्र जे कि मात्र डेढ़ किलोमीटर केर लम्बाई आ २०० मीटर केर चौड़ाईक सीमामे बन्हल छैक।

जटींगा गामक एक पच्चासी बर्षक वृद्ध जे प्रार (खासी) जनजातिक छथि सँ पता चलल जे चिड़ै सबहक जटींगामे कृत्रिम रोशनीसँ सामूहिक आत्महत्याक प्रवृत्ति केर जानकारी सर्वप्रथम १९१४ ई.क आसपास चललैक। भेलैक ई जे एक राति ककरो चारि-पांच बरद जंगल दिस भागि गेलैक। बरदक मालिककेँ भेलैक जे अगर बरदकेँ रातियेमे नहि पकड़ल गेलैक तँ बाघ-शेर सभ खाऽ जेतैक। तञि पाँच आदमी एकटा टोली

बना बांसक फट्टीमे कपड़ा बान्हि ओहिमे मटिया तेल डालि ओकर मशाल बना कऽ तथा हाथमे लालटेन लय बरद सभकेँ ताकक लेल जंगल दिस बिदा भेल। कनीक कालक बाद आश्चर्यजनक ढ़ंगसँ चिड़ै सभ झुण्डमे आबि मशाल लग आबि खसय लगलैक। परन्तु ई लोकनि ओहि चिड़ै सभकेँ नहि पकड़लकैक। यद्यपि ओऽ सभ चिड़ै मांसक प्रयोगमे लाबए जोग रहैक। एकर कारण ई छलैक जे स्थानीय जेमि नागा समुदाय (जनजाति) क लोकक बीच ई भ्रान्ति रहैक जे जटींगा क्षेत्रमे रातिक भूत-प्रेत विचरण चिड़ै बनि करैत रहैत छैक। हुनका लोकनिकेँ तञि डर भेलन्हि जे चिड़ै केँ पकड़लासँ कतहु कोनो अनिष्ट ने भऽ जाए।

१९१७ ई.क आसपास लाखन-सारा नामक एक व्यक्ति कृत्रिम रोशनीसँ झलफलाएल चिड़ै सभकेँ सर्वप्रथम पकड़ि घर अनलाह एवं ओकर मांसकेँ भुजि पका कऽ खयलन्हि। आ ओकर कोनो दुष्प्रभाव हुनका सभकेँ नञि भेलन्हि। एकर बाद चिड़ै सभपर आफत शुरू भऽ गेलैक। लोकसभ अन्हरिया रातिमे कृत्रिम रोशनीक मदतिसँ चिड़ै सभक संहार प्रारम्भ कऽ देलक। हालाँकि जखन अंग्रेज प्रशासनकेँ एहि बातक जानकारी भेटलैक तँ एहि परम्परापर रोक लगा देल गेलैक।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद लोक पुनः नुका-चोरा कऽ शिकार करए लगलाह। आब पर्यावरणविद्, पक्षीशास्त्री, पत्रकार एवं अन्य लोकनिक अथक प्रयासक बाद प्रशासन पुनः कृत्रिम रोशनीसँ चिड़ै मारबाक प्रथापर प्रतिबन्ध लगा देलकैक अछि। हम ओहि स्थानपर गेलहुँ। ओतए रंग-बिरंगक चिड़ै सबहक आकर्षक फोटो टांगल रहैक। एक मूल वाक्य नीक लागल। वाक्य ई रहैक: “shoot these birds with your camera, not with bullets:.

घड़ी देखलहुँ तँ साँझ भऽ गेल छल। आब हमरा लोकनि जटींगासँ सोझे सर्किट हाउस आबि गेलहुँ। मुँह हाथ धोलाक बाद कार्यक्रम स्थलीपर पहुँचलहुँ। ओतए पाँच हजार लोक सभ आयल छलाह। सभ जनजाति केर स्त्री-पुरुष, बच्चा सीयान सभ कियो अपन समुदायक परम्परागत रंग-बिरंगक वस्त्र पहिरने सुसज्जित भेल पहुँचल छलाह। प्रशासन केर सहयोग तँ छले। डिप्युटी कमिश्नर, नॉर्थ कछार हिल्स ऑटोनोमस काउन्सिल केर चेअरमेन, सदस्य, प्रमुख सचिव, एस.पी., स्थानीय कॉलेजक शिक्षक एवं छात्र सभ कियो पहुँचल छलाह। स्थानीय पत्रकार सभ सेहो उत्साहित छलाह।

सभ कियो हमरा माध्यमसँ आ गौतम शर्माक माध्यमसँ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र केर प्रति धन्यवाद दैत छलाह। हम सोचलहुँ जे केहेन विडम्बना छैक। जे क्षेत्र सांस्कृतिक सम्पन्नताक खान थिक ओकर एहेन अपमान! मुख्यधारासँ एहि क्षेत्रकेँ वंचित किएक कएल गेल छैक! हमरा भेल जे समस्त विश्वमे नॉर्थ कछार हिल्ससँ शान्त आर सांस्कृतिक वैविध्यसँ भरल आर कोनो जगह नञि भऽ सकैत अछि। हम अपन भाषणमे बजलहुँ: “हमरा लोकनि अहाँ सभकेँ सिखाबए नहि अएलहुँ अछि। हमरा लोकनि अएलहुँ अछि अहाँ लोकनिकेँ जाग्रत करक हेतु जे अहाँ सभ अपन सांस्कृतिक वैविध्यता तथा गरिमाकेँ बुझू आ एकरा सास्वत राखू। हमरा लोकनि एतए केर सांस्कृतिक विरासतकेँ जानए आ ओकर डॉक्युमेन्टेशन करए आएल छी। अगर अहाँ सबहक सहयोग रहल तँ बेर-बेर आएब। हमर कार्यक्रममे आ एक्शनमे कौमा (,) वा अर्धविराम भऽ सकैत अछि, पूर्ण विराम कखनहुँ नहि हैत”।

लोक सभ हमर बातकेँ सही अर्थमे लेलन्हि। पहिल दिनक कार्यक्रम लगभग साढ़े-नौ बजे राति धरि चललैक।

जखन रातिमे भोजनक उपरान्त विश्राम करए गेलहुँ तँ एक आदमीक देल एक पुस्तक पढ़य लगलहुँ। पुस्तक नॉर्थ कछार हिल्सपर छलैक। ओहि पोथीमे रातु हकमओसा नामक स्थानीय कविकेँ नॉर्थ कछार हिल्सपर लिखल किछु पंक्ति बड्ड उपयुक्त बुझना गेल: पंक्ति यथावत अंग्रेजीमे पाठक लेल लिखि रहल छी:

A harmonious game of hide and seek

Behind the bushes, marshy meadow

Under shadow with clouds view,

Ever ready for worthwhile, cherish at dawn,

The blues make enchanting heart of lovers

Midst of covers white

Changing scene that lively for romance

Beauty and bounty of brooks that flow.

Moments of joy, love to cherish

Insight the harmony game of hide and seek

Behind thick trespasses of white and blue

With narrow path of zig-zag.

The beauty of hills under cover

Orchids, white fall, violet at hills

Every moment thrilled with behalf

Nature disposal at North Cachar Hills



कमलानन्द झा,

हिन्दी विभाग, सी.एम. कॉलेज,दरभंगा

मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन : उदाहरण

पछिला चारि बर्खमे कोनो पैघ आ महत्वपूर्ण प्रकाशनसँ मैथिलीक तीन गोट कथा-संकलनक प्रकाशन मैथिली भाषा लेल एकटा शुभ-संकेत मानल जा सकै'छ। नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा सम्पादित मैथिली कथा संचयन(सन् २००५) आ सन् २००७मे तारानन्द वियोगी द्वारा सम्पादित देसिल बयना(सन् २००७) पाठकक बीच लोकप्रिय भ'ए रहल छल कि प्रकाशन विभागसँ देवशंकर नवीन द्वारा सम्पादित टटका मैथिली कथा-संग्रह उदाहरण छपि क' आबि गेल। प्रसन्नताक बात थिक जे उदाहरणक प्रकाशनसँ प्रकाशन विभागमे साहित्यिक रचनाक प्रकाशनक बाट फूजल, जे स्वागत योग्य अछि।

उदाहरणमे ललितसँ सियाराम सरस धरिकक कुल छत्तीस गोट कथा संकलित अछि। एहि संकलनसँ मैथिली कथा-संसारक परिदृश्य स्पष्ट होइत अछि। संकलनक कतोक कथा समस्त भारतीय भाषासँ कान्ही मिलान लेल तत्पर अछि, जे संकलनकर्त्ताक चयनकौशलक सूचक थिक। श्रेष्ठ कथाकार राजकमल चौधरीक कथा ÷एकटा चम्पाकली एकटा विषधर' घाघ मैथिल समाजक टोप-टहंकारकें अद्भुत रूपें अनावृत्त करैत अछि। सवर्ण मैथिलक गरीबी, ओहि गरीबीसँ उत्पन्न दयनीयता, आ तकर खोलमे दुबकल बेटीक शातिर माइ-बापक घिनौन आचरण घनघोर तनावक संग पाठककें झकझोरैत अछि। दशरथ झा आ हुनकर घरबाली अपन तेरह बर्खक बेटी चम्पाक विवाह बासैठ बर्खक वृद्ध शशि बाबू संग करेबाक षड्यंत्रापूर्ण योजना बनबैत अछि। दुनू प्राणीक गिद्ध दृष्टि शशि बाबूक सम्पति पर टिकल छनि, जकर मलिकाइन विवाहोपरान्त हुनक तेरह वर्षीया चम्पा बनैबाली छनि। अतिशयोक्ति सन लगैबला एहि घटनाक मर्मकें ओएह बूझि सकत जे मिथिलांचलक बहुविवाह प्रथासँ नीक जकाँ परिचित छथि। बीसम-एकैसम विवाहक बाद पति अपन पूर्व पत्नी सभक मुँहो बिसरि जाइ छलाह।

पत्राकारिता दुनियाक महत्वपूर्ण आ सम्वेदनशील पक्षसँ मायानन्द मिश्रक कथा ÷भए प्रकट कृपाला' साक्षात्कार करबैत अछि। मीडिया-तन्त्र पर बनल सार्थक हिन्दी सिनेमा ÷पेज थ्री' जे किओ देखने छथि, से एहि कथाक मर्मकें बेसी नीक जकाँ बुझि सकै छथि। शीघ्रतासँ नामी पत्राकार बनि जाएबाक हड़बड़ीके कथामे कलात्मक ढंगसँ उकेरल गेल अछि। कॉरपोरेट दुनियाँक बादशाह श्याम बोगलाक मृत्युक खबरि सबसँ पहिने देबाक होड़ लागल अछि। पत्रकार लोकनिक नजरिमे ओएह सभसँ पैघ खबर अछि, दुनियामे किछु भ' जाउ।

लिलीरे मैथिलीक सशक्त कथालेखिक। छथि। हुनकर कथा ÷विधिक विधान'मे कामकाजी स्त्रीक संघर्षकें यथार्थतः देखबाक, आ यथार्थक मर्मकें कलात्मक कौंध संग उभारबाक सफल चेष्टा अछि। उषाकिरण खान अपन कथा ÷त्यागपत्रा'मे ग्रामीण युवतीक अदम्य जिजीविषाकें व्यक्त करबामे पूर्ण सफल नहि भ' सकलीह। घोर आदर्शवादी आ कठोर अनुशासित परिवारमे पालित-पोषित चम्पा कॉलेजमे पढ़' चाहैत अछि, अपन मर्जीसँ विवाह कर' चाहैत अछि। मुदा आजीवन विवाह नहि करबाक घोषणा करैत चम्पा स्वयंकें ओही परंपराक केंचुलमे समेटि लैत अछि। चम्पा विवाहक लक्ष्मण रेखा पार करैत ÷और भी ग़म हैं' कें आधार मानि अपन व्यक्तित्वकें विस्तृत आयाम नहि द' पबैत अछि। मनमोहन झाक कथा फायदा÷फयदा'मे स्त्री जातिक मोलभाव बला प्रवृत्तिक रेखांकन खूब जमल अछि, मुदा वो एहि प्रवृत्तिक वर्णन क' स्त्री जाति कोन पक्षक उद्घाटन करै छथि, से बूझब कठिन। कोनो व्यक्तिक स्वभावमे नीक आ खराब दूनू भाव रहैत अछि। कथाक हेतु कोन तरहक भावक चुनाव कयल जाए, ई महत्वपूर्ण अछि। इएह चुनाव मैथिली कथामे स्त्री चेतनाक दर्शन करा सकैत अछि।

स्त्री चेतनाक दृष्टिएँ प्रदीप बिहारीक कथा ÷मकड़ी' अपेक्षाकृत मेच्योर्ड आ बोल्ड कथा कहल जा सकैछ। बेराबेरी कथानायिका सुनीता दू बेर विवाह करैत अछि, दुनू बेर ओकर पति मरि जाइछ, मुदा ओ जिनगीसँ हारि नहि मानैत अछि। सिलाई मशीन चला क' ओ गुजर-बसर करैत अछि। एतबे नहि, ओ एकटा अनाथ आ बौक बच्चाक लालन-पालनक दायित्व ल' क' अपन व्यक्तित्वकें विस्तार दैत अछि। कथामे मोड़ तखन अबैत अछि जखन ओ बौका समर्थ भेला पर सुनीताक स्वीकृतियेसँ सही, ओकरा गर्भाधान क' क' भागि जाइत अछि। सुनीताकें एहि बातक अपराधबोध नहि छै, जे ओ बौका संग किऐ ई कृत्य

केलक, ओ देहक विवशतासँ परिचित अछि, मुदा बौकाक भागि जेबाक दंश ओकरा व्यथित करै छै। देवशंकर नवीनक कथा ÷पेंपी' पति-पत्नीक सम्बन्ध विच्छेदक परिणामस्वरूप बेटीक मनोमस्तिष्क आ व्यक्तित्व पर पड़ैबला कुप्रभाव आ बेहिसाब उपेक्षाभावकें करुणापूर्ण ढंगसँ व्यक्त करैत अछि। मुदा एहिमे सभटा दोष स्त्री पर फेकि देब पूर्वाग्रह मानल जा सकैछ। ई सामाजिक सत्य नहि भ' सकैत अछि। वरिष्ठ कथाकार राजमोहन झा अत्यंत

कुशलतापूर्वक ÷भोजन' कथाक बहन्रे स्त्रीक बाहर काज करबाक विरोध क' जाइत छथि। राजमोहनजीक दक्षता इएह छन्हि जे ई सभ बात कहिओ क' ओ प्रगतिशील बनल रहै छथि।

राजकमल चौधरीक ÷एकटा चम्पाकली एकटा विषधर', धूमकेतुक ÷भरदुतिया', गंगेश गुंजनक ÷अपन समांग'(ई कथा देसिल बयनामे सेहो संकलित अछि), तारानन्द वियोगीक ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' आ अशोकक ÷तानपूरा' एहि संग्रहक श्रेष्ठ कथा मानल जा सकैछ। धूमकेतुक कथा ÷भरदुतिया' व्यक्ति स्वार्थ हेतु भाई-बहिनक पावन पाबनिकँ दुरुपयोग करबैत देखबैत अछि। आजुक मनुख अहू पाबनिकें नहि छोड़लक। ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' वियोगीक सफल राजनीतिक कथा कहल जा सकैछ। कथाक ई निष्पति एकदम ठीक लगैत अछि जे सवर्णक पार्टी एहि दुआरे जीतैत रहल जे निम्नजातिक आर्थिक स्थिति बहुत खराब छल। स्वामीक पार्टी दासोक पार्टी होइछ। दोसर पार्टीक मादे सोचब मृत्युकें आमन्त्रण देब छल। आओर नहि किछु तँ आवास आ रोजगार छीनि बेलल्ला बना देब उच्चवर्गक हेतु बाम हाथक काज छल। दिल्ली-पंजाब प्रवाससँ निम्नवर्गक आर्थिक, सामाजिक स्थितिमे सुधार भेल। परिणामस्वरूप ओहि वर्गमे आत्मसम्मान आ राजनीतिक चेतनाक अंकुरण भेल। भक्तिकाव्यक उन्मेष आ ओहिमे निम्नजातिक कविक बाहूल्यक पृष्ठभूमिमे सुप्रसिद्ध इतिहाकार इरफमान हबीब मुगलकालीन विकास कार्यकँ लक्षित केलनि अछि। ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' कथाक विलक्षणता बिहारमे बनल निम्नजातिक पार्टीक आत्मालोचन थिक। कहबा लेल त' ई पार्टी निम्नजातिक-निम्नवर्गक छल, मुदा अइ पार्टीमे छल, प्रपंच, भ्रष्टाचार, अपराध आओर पाखण्ड पहिनहुँसँ तेजगर और धारदार भ' गेल छल। कथाकारक इएह द्वन्द्व कथाकें गरिमा प्रदान करैछ। चाहक दोकान चलबैबला मुदा बहुत प्रारम्भहिसँ सक्रिय मूल्यपरक राजनीति करैबला हीरा महतोक धैर्य जखन संग छोड़ि दै छनि त' ओ पार्टी प्रमुख बासुदेव महतो पर बिफरैत कहै छथि-- रे निर्लज्जा, एतबो सरम कर! जे कुकर्म करै छैं से अपन करैत रह, लेकिन एना समाजमे नहि कहिहें जे कुकर्मे करब ठीक छिऐ। एतबो रहम कर बहिं...।''

अशोकक कथा ÷तानपूरा' मध्यवर्गीय हिप्पोक्रेसीक घटाटोपकँ तार-तार क' देबामे पूर्ण सफल भेल अछि। बिना कोनो उपदेश आ नैतिक आग्रहक कथा मध्यवर्गीय कुत्सित मानसिकताक दुर्ग भेदन करैत अछि। कथानायक विनोद बाबूक संगीत-प्रेमकँ हुनक पिता घोर अभाव आ द्ररिद्रयक बीच जेना-तेना पूरा करैत छथि, मुदा जखन विनोद बाबूक पुत्रा संगीत सिखबाक इच्छा प्रकट करै छनि त' दुनू प्राणीकें साँप सूँघि जाइत छनि। एहि दुआरे नहि, जे हुनका कोनो तरहक अभाव छनि। बल्कि एहि दुआरे जे संगीतक स'ख हुनक बेटाकँ रुपैया कमबैबला मशीन नहि बना सकत। जे दम्पति कोनो विषय पर कहियो एकमत नहि भेल, एहि विषय पर एकमत भ' पुत्राक एहि अव्यावहारिक स'ख'क कठ मोंकबाक साजिशपूर्ण योजना बनबए लगै छथि।

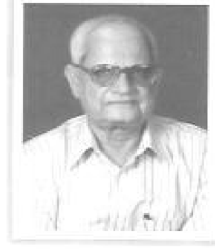
संग्रहक किछु कथा जेना अवकाश, अयना, खान साहेब, जंगलक हरीन आदि यथार्थक मोहमे शुष्क गद्य बनि क' रहि गेल अछि। एहिमे किछु कथा ततेक सरलीकृत भ' गेल अछि जे ओ नवसाक्षर हेतु लिखल कथा बुझि पडैछ। एहन कथा सभक मूल संरचना इतिवृत्तात्मक अछि। यद्यपि इतिवृत्त कोनो कथाक सीमा नहि होइछ, मुदा जखन कोनो कथा घटनाक स्थूल आ तथ्यात्मक विवरण टा दैछ, कथामे समय वा क्षणक मर्म नहि आबि पबैछ, त' एहन इतिवृत्त निपट गद्य बनि क' रहि जाइछ। यथार्थ कोनो कथाकें विश्वसनीयता देबाक बदलामे ओकरा भीतरसँ संवेदना निचोड़ि अनैत अछि, कथाकें प्रमाणिक बनेबाक फेरमँ पड़ल नहि रहैत अछि। कथाकार रमेश अपन कथा ÷नागदेसमे अयनाक व्यवसाय'मे अतियथार्थ आ इतिवृत्तक फ्रेमकें तोड़ि प्रतीक वा फैंटेसीक प्रयोगसँ कथा बुनबाक प्रयास त' केलनि, मुदा कथाक विन्यासमे एकरसता आबि गेल। एहि फ्रेम हेतु हमरा लोकनिकँ राजस्थानी कथाकार विजयदान देथा (दुविधा) आ हिन्दी कथाकार उदय प्रकाश (वारेन हेस्टिंग्स का सांढ़) आदिकँ पढ़बाक चाही। हिनका लोकनिक कथा यथार्थक फ्रेमकँ तोड़ियो क' यथार्थ बनल रहल अछि।

मैथिलीमे प्रकाशित उक्त तीनूँ कथा संकलनसँ मैथिली कथाक प्रसार राष्ट्रीय स्तर पर भ' रहल अछि, एहिमे दू मत नहि। मुदा उक्त संकलनकँ पढ़ि

आम पाठकक राय इएह बनत जे मैथिलीमे कुल इएह तीस-चालीस गोट कथाकार आइ तक भेलाहे। कारण तीनूँ संग्रहमे कथाकारक सूचीमे अद्भुत साम्य अछि। कथा पढ़ि बुझना जाइछ जे कथा चयनमे कथाक अपेक्षा कथाकारकँ महत्व देल गेल अदि। ई कहब सर्वथा अनुचित जे संकलनक कथाकार महत्वपूर्ण नहि छथि, मुदा अन्य श्रेष्ठ कथाकँ सेहो प्रकाशमे अएबाक प्रयास हेबाक चाही। हमरा लोकनि ई नीक जकाँ जनै छी जे मैथिलीमे श्रेष्ठ कथाक अभाव नहि अछि। किन्तु प्रकाशनक अभावमे पत्र-पत्रिकाकें छानि मारब कठिनाहे नहि समय-साध्य कार्य थिक। वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक पहिचान भने श्रेष्ठ कविक रूपमे छनि, मुदा हुनकर मैथिली कथा ÷चितकबड़ी इजोरिया' आ ÷रूपांतर' कतोक दृष्टिएं महत्वपूर्ण अछि। रेणुजी सेहो मैथिली कथा लिखलनि अछि। ई दीगर बात थिक जे बादमे ओ हिन्दिए टामे लिखए लगलाह। ÷नेपथ्य अभिनेता' आ ÷जहां पमन को गमन नहीं' आदि लीकसँ हटि क' लिखल गेल कथा थिक। ÷उदाहरण'मे कथाक प्रकाशन वर्ष आ सन्दर्भक अनुपस्थिति खटकैत अछि। समय-सीमा जनने बिना कोनो कथाक सम्यक मूल्यांकन सम्भव नहि। नवीनजी सदृश दक्ष आ अनुभवी सम्पादकसँ ई आशा नहि कएल जा सकै छल। एहि कमीकँ पूरा करैत अछि हुनकर चौदह पृष्ठीय भूमिका। सम्पादक मैथिली कथाक सीमा आ सम्भावनाक विस्तृत पड़तालअपन एहि भूमिकामे केलनि अछि। मैथिली कथाक इतिहासकें बुझबा लेल ई भूमिका निश्चित रूपें रेखांकन योग्य अछि।

उदाहरण

पुस्तकक नाम - उदाहरण
सम्पादक - देवशंकर नवीन
प्रकाशक - प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार
पृष्ठ - २७४ मूल्य - २०० टाका मात्रा



केदारनाथ चौधरी

जन्म 3 जनवरी 1936 ई नेहरा, जिला दरभंगामे। 1958 ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, 1959 ई.मे लॉ। 1969 ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, 1971 ई.मे सानफ्रांसिस्को वि.वि.सँ एम.बी.ए., 1978मे भारत आगमन। 1981-86क बीच तेहरान आ प्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई पुने होइत 2000सँ लहेरियासरायमे निवास। मैथिली फिल्म ममता गाबय गीतक मदनमोहन दास आ उदयभानु सिंहक संग सह निर्माता।तीन टा उपन्यास 2004मे चमेली रानी, 2006मे करार, 2008 मे माहुर। सम्पादक।

माहुर

..1..

दृ''आह! भैया आबि गेला। हाथ मे पोटरी छनि। अबस्से ओहि मे 'मीट', अरे! नहि माता दुर्गाक परसाद हेतनि!''

रंजना बाजलि छलीह। ओ दौड़ैत आंगन सँ बाहर एलीह। हुनका भाइजीक हाथ मे ठीके पोटरी छलनि जाहि मे 'मीट' रहैक। भाइजी अपन हाथक पोटरी रंजनाक हाथ मे देब' चाहलनि। फेर, ने जानि हुनका की मोन पड़लनि जे अपन पोटरी बला हाथ कँ पाछाँ घीचि लेलनि। ओ बूत बनि ठार भ' गेला। भाइजीक ठोर मे कंपन होब' लगलनि, आँखि सँ ढबढब नोर बह' लगलनि आ हुनक समग्र शरीर थर-थर काँपए लगलनि।

भाइजी अर्थात आकाश सँ हुनक एकमात्रा छोट बहिन रंजना हुनका सँ बारह बर्खक छोट छलथिन जे आब पन्द्रहम मे पयर रखने छलीह। ओ सलवार-कुर्ती पहिरने छलीह। हाथ मे चूड़ीक स्थान पर घड़ी बान्हल छलनि। पुछू किएक? रंजना विधवा छलीह।

पछिला आषाढ़ मे रंजनाक विवाह कमीशन प्राप्त सेकेण्ड लेफ्टिनेन्ट भास्कर चौधरी सँ भेल रहनि। एक महिनाक अवकाश समाप्त भेला पर भास्कर चैधरी अपन ड्यूटी पर कश्मीर पहुँचल छला। ओतहि आतंकवादीक संग मुठभेर मे शहीद भ' गेलाह। रंजना विधवा भ' गेलीह।

आकाश लगक शहर दरिभंगाक एक बैंक मे कार्यरत रहथि। ओ गामहि सँ स्कूटर पर बैंक जाथि आ आबथि। अष्टमी रहैक आ बैंक दशहराक छुट्टी मे बन्द छलै। गामेक दुर्गा स्थान मे बलिप्रदान कएल छागरक भड़ाक माँउस पुजेगरीक आदेश सँ बिकाइत छलै। ओही ठाम सँ आकाश एक किलो 'मीट' आ की परसाद जे कहियौ कीनि क' अनने रहथि।

सम्प्रति जे दृश्य उपस्थित भेल छलै ओहि मे आकाश हाथ मे मीटक पोटरी टंगने थरथराइत ठार रहथि। हुनका आँखि सँ दहो-बहो नोर बहि रहल छलनि। हुनक पत्नी, पांच बर्खक बेटी सुजाता, माता-पिता सभ कियो ढलानक एक कात

ठार डबडबाएल आँखिए देखैत चुपचाप आकाश दिस ताकि रहल छलथिन। रंजना ठीक आकाशक सामने छलीह। हुनक बाल सुलभ सदृश मुख-मंडल पर बड़ी टा प्रश्न चिन्ह बनि गेल छल। काजर पोतल आँखि मे रंजनाक समग्र भविष्य धह-धह धधकि रहल छल। तँ नोरक एकोटा बून्न देखाइ नहि पड़ि रहल छल। परिवारक क्रंदन बीच रंजना एक अजीबे दृष्टि सँ अपन भ्राता, आकाश कँ निहारि रहल छलीह।

बड़ी काल सँ अंटकल आकाशक कंठ सँ कुहरैत शब्द बाहर भेलदृ''हे भगवान! हम ई की कएल? कियक हम 'मीट' कीनल?'' एतबा बाजि आकाश मीट'क पोटरी कँ नाला मे फेकि, दुनू हाथे माथ पकड़ि, नीचा जमीन पर बैसि हबोढेकार कान' लगलाह।

आब रंजना कँ छोड़ि परिवारक सामूहिक क्रंदन सँ स्थान पीड़ादायक बनि गेल। माता रंजना अविचल ठार रहलीह आ शून्य नजरि सँ सभ किछु देखैत रहलीह।

हम कोन तरहक खिस्सा सुनाब लगलहुँ। इहो कोनो खिस्सा भेलै? रंजनाक विवाह लड़ाइक सिपाही संग भेल छलनि। ताहू मे एहन सिपाही सँ जनिक नियुक्ति कश्मीर मे आतंकवादी सँ भिड़न्त मे भेल होअय। तखन त' प्राण जायब करीब-करीब निश्चिते छलै। तैँ रंजना विधवा बनलीह। अहि मे अजगुत बला कोनो बात नहि भेलै। दुखक बात जँ रहै त' एतबेटा जे जाहि जाति मे रंजनाक जन्म भेल रहनि ओहि जाति मे पुनर्विवाहक नियम नहि रहैक। ओहि जातिमे आ सनातन सँ आयल परम्परा मे विधवाक निदान हेतु कोनो टा व्यवस्था नहि रहैक। रंजना विधवा भेलीह त' भेलीह। पूर्वजन्मक पाप ओ नहि भोगती त' के भोगत? तैँ ई मात्रा ओहने आ ओतबेटा बात भेल जेना मनता मानल कोनो पाठीक बलि पड़ल होअय। आब अहाँ कहबै जे ई कोन तरहक मिलान भैलै? नहि अरघै अछि, त' सुनू।

मनता मानल पाठी-छागरक बलि पड़ै काल बलि देनिहार, कबुला केनिहार एवं बाँकी सभटा तमाशा देखनिहार एतबे ने सोचैत छथि यौ जे हरदि, मिरचाइ आ मसल्ला मे भूजल एकर माँउस मे कतेक सुआद हेतै? तहिना विधवा भेलि रंजना द' सभ सोच' लागल छथि जे ई आब सासुर त' जेतीह नहि, गामहि मे रहतीह। गाम मे सभहक टहल-टिकोरा करतीह, अदौरी-कुम्हरौरी खोंटतीह, अँगने मे भानस-भात करतीह, एकरा-ओकरा संग तीर्थाटन जेबा काल भनसिया बनि क' जेतीह आ छौंड़ा सँ लगाति बूढ़बा तकक करेजक तपन मेटौती। तँ बरसामबाली काकी कहने रहथिन यौ, भगवान सभहक सभटा इन्तजाम बैसले-बैसल 'क' दैत छथिन। दूर जो, मनसा सभहक लप-लप करैत जिह्वा आ आँखिक खोराकक पूर्ति सदिकाल सँ बाल-विधवे सँ पूर्ति होइत रहलै अछि। ई कोनो नुकायल गप्प छैक?

आब अहीं कहू जे मनता मानल पाठी आ विधवा भेलि रंजना मे की फर्क? कोनो तरहक शिकायत करब सेहो युक्ति संगत नहि होयत। तैँ आब नीक होयत जे अहि खिस्सा कैँ अही ठाम विराम द' क' ओही गाम मे ओही दिन घटल दोसर घटनाक जानकारी प्राप्त करी।

गामक नाम भेल पानापुर। पानापुर मे सभ जाति, समुदाय एवं सम्प्रदायक लोकक निवास। गाम आर्थिक रूपे सम्पन्न। ओहि गाम मे छल एकटा दुर्गा मंदिर, जे दस-बीस कोस दूर तक प्रसिद्ध छल। पैघ पोखरिक पूबरिया भीड़ पर तीन-चारि बीघा मे पसरल मंदिर आ मंदिरक परिसर। मंदिर मे दुर्गाक भव्य प्रतिमा। तकरबाद मंडप, पुजारीजीक आवास आ सदिकाल खल-खल हँसैत, स्वच्छ, विशाल समतल भूमि। दशहराक समय मे अही स्थान पर मेला, नौटंकी, नाच-गान आदि आयोजित होइत छल।

दुर्गा मंदिरक पुजारी छलाह काली कान्त ओझा। दुब्बर-पातर, साँची धोती, खोंसल ढेका, छाती पर उगल पंक्तिबद्ध हड्डीक उपर दू भत्ता फहराइत जनउ, गौ-खूँर बरोबरि टीक, पयर मे खराम आ ललाट पर सेनुरक ठोप। पुजारीजी सज्जन आ मृदुभाषी छलाह। वैष्णव त'ओ छलाहे आ सप्ताह मे अधिक दिन उपासे मे रहैत छलाह। मुदा हुनक पत्नी अढ़ाइ मोनक पट्टा छलथिन। थुलथुल देह, खुजल कारी केश, नाक सँ मांग तक पतिव्रताक निशानी स्वरूप सेनुरक डरीर, पान-जर्दा दुआरे कारी भेल दाँत आ बीड़ी त' ओ नैहरे सँ पिबैत आयल रहथि। जँ जुमनि त' नित्य माँउस-माँछ चाहबे करी। दू अगहनी जोड़ दू रब्बी गुण दू बरोबरि मंदिरक बर्ख भरिक अन्न-टाकाक आमदनी पर हुनक पूर्ण एकाधिकार छलनि।

पुजारीजी पत्नीक सोझा मे आब' मे कँपैत छलाह। शारीरिक दुर्बलता अथवा धार्मिक अजीर्णता, कारण जे हौउ, पुजारी जी सदिकाल पत्नी सँ डेरायल रहैत छलाह। तखन पुजारीजी के संतान स्वरूप पुत्रक प्राप्ति भेलनि कोना? ई रहस्यक विषय अवस्से छल। मुदा अहि रहस्यक छेदन नीति शास्त्रा ज्ञाता कइएक बेर क' चुकल छथि। हुनका लोकनिक अनुसारे पति-पत्नीक ग्रह-नक्षत्रा कतबो उल्टा-पुल्टा किएक ने हौउक, प्रचुरता एवं परिपक्वता बेला मे कखनहुँ काल अर्द्ध-विराम पूर्ण विराम भैए जाइत छैक। पुजारीजीक पुत्रक नाम रहनि यदुनाथ ओझा। पैघ भेला पर यदुनाथक उपनयन भेलनि आ बर्ख भरिक भीतरे विवाह सेहो भ'गेलनि।

यदुनाथक पत्नी अर्थात पुजारीजीक पुतहु जखन दुरागमन भेला पर सासुर अयलीह त' हुनक अनुपम सौन्दर्यक दुआरे सम्पूर्ण पानापुर गाम महमही सँ गमकि उठल। यदुनाथ त' अपन बापक कार्बन कॉपी छलाह। मुदा हुनक पत्नी जनिक नाम छल कामिनी, तनिका जे देखलक सैह विभोर होइत बाजल छलदृ" माइ गे माइ! एतेक रूप पुजारी जीक सन्दुक-पेटार मे झाँपल कोना रहतैक? कोनो अनहोनी ने भ' जाइक?"

अष्टमीक निस्तब्ध राति। पानापुर गामक सभटा मनुक्ख भरि दिन नाच तमासा देखलक, इच्छा भरि नशा केलक आ भरि पेट माँउस-भात खाए थाकि क' झुरझमान भ' सुति रहल। मुदा चोर-उचक्का, अत्याचारी एवं व्यभिचारी किस्मक लोक कैँ राति मे निन्न होइते ने छैक। ओहन लोक रातिए मे अपन इच्छा-पूर्तिक जोगार करैत अछि। ओहने राक्षस प्रवृतिक

श्रेणी मे छल बिदेसरा कुएक। गाम मे एकटा अस्पताल अवस्से छलै। मुदा डाक्टर महिना, दू महिना मे कहिओ काल अबैत छलाह। गामक स्वास्थ्य विभाग कुएकक जिम्मा छल। ओना सड़क-छाप बहुतो कुएक छल। मुदा बिदेसरा कुएक सभ सँ तेज-तर्रार मानल जाइत छल। ज्वर-धाह राति-विराति कखनो-ककरो भ' सकैत छलै। ताहि कालक भगवान छल बिदेसरा कुएक। ककरा मे एतेक साहस रहै जे बिदेसरा कुएक सँ तकरार करितय। नाड़ी देखै लेल अथवा सूइया भोंकै लेल बिदेसरा कुएक ककरहु आंगन मे कखनहुँ प्रवेश क' जाइत छल। ओकरा कोनो रोक-टोक नहि रहैक।

जहिया सँ यदुनाथ दुरागमन करा क' अयलाह आ सुन्दर कनिआँक कारणें गाम भरिक छौंड़ा सभहक बीच इर्खाक मूर्ति बनलाह तहिया सँ बिदेसरा कुएक हुनका मे अधिक काल सटले रहैत छल। चाह-नास्ताक संग चोटगर-मिठगर गप-सप कहि बिदेसरा कुएक यदुनाथक मोन कँ मोहैत रहल आ अन्ततः हुनकर अभिन्न मित्रा बनि गेल। एहना मे जिगरी यार बिदेसरा कुएकक फर्माइस यदुनाथ पूर्ति कोना नहि करितथि? ओही अष्टमीक राति बुझू निशा पूजा निमित्ते, दुनू यार बैसल रहथि। स्थान छल यदुनाथक शयन-कक्ष। पुजारीजीक आवास मे पहिने छल कनेटा खुजल दरबज्जा। तकरबादक कोठली मे पुजारीजी पत्नीक संग रात्रि विश्राम करैत छलाह। तकर सटले भंडार आ भनसाघर। सभ सँ अन्त मे जे कोठली छल सैह भेल यदुनाथक शयन-कक्ष। दुरगमनिआँ पलंगक एक कात टेबुल आ कुर्सी। देवाल पर सिनेमाक अभिनेत्रीक नयनाभिराम फोटोक बीच भगवतीक फोटो। खिड़की-केबाड़ पर्दा सँ झाँपल।

दू गोट कुर्सी पर यदुनाथ आ बिदेसरा कुएक आमने-सामने बैसल छल। बीचक टेबुल पर एकटा फूलदार विदेशी शराबक खुजल बोतल, पानि सँ भरल जग आ दू गोट शीशाक गिलास राखल रहैक। ताही काल यदुनाथक कनिआँ कामिनी छिपली मे भुजल माँउस टेबुल पर रखलनि आ पतिक अगिला आदेशक प्रतीक्षा मे एक कात ठार भ' गेलीह। हुनक गोरकी बाँहि मे सटल करिका ब्लॉउज ककरो एक बेर आरो देखिकए लोभ मे पटकि सकैत छल। बिदेसरा कुएक अपन नजरिक नोक कँ कामिनीक उठल ब्लॉउज मे भोंकैत बाजलदृ''यार, एतय सभ ठर्रा पिबैत अछि। मुदा अहाँ लेल हम दरिभंगा सँ सय टाका मे असली अस्सी प्रतिशत प्रूफ अल्कोहलबला 'जीन' मंगौलहुँ अछि। आब बिलम्ब नहि क' एकरा टेस्ट करियौ।''

दू टा गिलास मे शराब ढारल गेल, पानि मिलाओल गेल, गिलास टकराओल गेल आ तखन दुनू यार पिअब शुरू केलनि। माँउस निघंटि गेल। कोनो बात ने, कामिनी छिपली भरी भूजल माँउस फेर सँ अनलनि।

यदुनाथ पहिले पैग मे डोलि गेल छलाह। शराब पचेबाक ने हुनका काया रहनि आ ने प्राइटिस। दोसर पैग समाप्त करैत-करैत यदुनाथक आँखिक डिम्हा सँ टर्चक फोक्सिंग बाहर होब' लगलनि। तेसर पेगक आरम्भे मे कामिनी फेर सँ भूजल माँउस आन' चलि गेल रहथि। जाबे ओ घूमि क' एलीह ताबे हुनक नाथ पलंग पर चित बेहोश पड़ल रहथिन आ हुनकर थुथून सँ साँ-सौंक अबाज प्रसारित भ' रहल छल।

कामिनीक हाथ मे तेसर खेपबला भूजल माँउसक छिपली छलनि। ओ थकमकाइत ठार भ' गेलीह आ पलंग पर पड़ल अपन स्वामी कँ टकटक देख' लगलीह। किछु समय लेल कामिनीक मस्तिष्कक सोचक यंत्रा मे ब्रेक लागि गेलनि।

बेगूसराय सँ खगड़िया जेबाक 'हाइ वे'क दक्षिण गंगाक तटपर बसल छल पिहुआ नामक गाँव। ओही गामक मंदिरक पुजारीक कन्या छलीह कामिनी। गंगाजल सँ घोअल मंदिरक पवित्र परिसर मे कामिनीक जन्म आ पालन-पोषण भेल रहनि। सासु-ससुरक सेवा एवं पतिक आदेशक पालन करबाक बीज मंत्रा ल'क' कामिनी सासुर आयल रहथि। मुदा सासुरक वातावरण किछु अलगे तरहक रहैक। सासुक बीड़ी पिअल मुँहक गंध सँ कामिनी कँ मितली होब' लागनि, असरधा होनि। मुदा ओ अपना कँ रोकथि आ बुझबथिईकोनो बात नहि। नव स्थान मे एना प्रायः होइते छै। सभटा अपने आप ठीक भ' जेतै! केवल धैर्यक निर्वाह चाही। यद्यपि ई बात हुनका कियो सिखौने नहि छलनि। मुदा आन-आन नव विआहलि कन्या जकाँ एकर विश्वास हुनकर संस्कार मे पहिने सँ छलनि जे पति हुनकर रक्षक छथि, परमेश्वर छथि। तखन चिंता कथिक? मुदा एखन त' हुनकर रक्षक, परमेश्वर बेसुध भेल पड़ल छथि। एखुनका बयस तक कामिनी कँ नीक-बेजायक कोनो टा ज्ञान नहि भेल छलनि। तँ कामिनीक लेल एखुनका परिस्थिति अप्रत्याशित आ ओझरायल सन छल। ओ काठ बनलि ठार रहि गेलीह।



कृपानन्द झा (1970-),

जन्म- समौल, मधुबनी, मिथिला। गणितमे स्नातकोत्तर (एल.एन.एम.यू, दरभंगा), बी.लिब. (जामिया मिलिया इस्लामिया) आ सोचाना विज्ञानमे एसोसिएटशिप, आइ.एन.एस.डी.ओ.सी., नई दिल्ली। कृपानन्द जी मीरा बाइ पोलीटेकनिक, महारानी बाग, नई दिल्लीमे व्याखाता छथि। कृपानन्दजी यूथ ऑफ मिथिलाक अध्यक्ष छलाह आ एखन अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदक जेनरल सेक्रेटरी छथि। हिनकर ६ टा शोध पेपर सूचना प्रबन्धनक क्षेत्रमे प्रकाशित छन्हि, संगहि हिन्दी आ अग्रेजीमे एक-एकटा कविता सेहो प्रकाशित छन्हि।–**सम्पादक**

चौकपर आणविक समझौता:

साँझ काल गामक चौकपर गहमा-गहमी छलैक। टोनुआँक दोकानपर चाहक गिलास खनखना रहल छलैक मंडलजी पान लगेवमे व्यस्त छलाह। कनीक दूरपर दुर्गा मन्दिरक पुवरिया कात बनल चबुतरापर दस-बारह युवा आ वृद्ध सम सामयिक चर्चामे मग्न छलाह। बीचमे मन्नू भाइक आवाज जोड़सँ आयल। "हौ! एहन कोन आफद आबि गेलैक अपन देशपर जे प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंहजी अपन देशक वैज्ञानिकक लगभग पछिला पचास वर्षक तपस्या आ अनुसंधान तथा भविष्यक आणविक सामरिक अनुसंधानकेँ अमेरिकाक हाथ बंधकी रखबापर उतारु भय गेल छथि।

गगनजी चबुतरापर सँ उचकि पानक पीक कातमे फेकैत कहि उठलाह, "कक्का! एहन बात नहि छैक। ई समझौता मात्र अपन देशक महज ऊर्जा आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखि कएल गेल-हँ!..

मन्नू भाई तम्बाकू ठोढ़मे दैत कहलखिन, "है। ई ऊर्जा आवश्यकता महज बहाना छैक। अमेरिका एहि बहाने अपन देशक स्वतन्त्र आणविक कार्यक्रममे टाँग अड़ेबाक फिराकमे बहुत दिनसँ छल। आब ओ अपन मनशामे १२३ समझौता आ ओहिमे हाइड एक्टक प्रावधान सँ सफल भय रहल अछि"।

गगन जी थोड़ेक चिन्तित मुद्रामे कहलखिन- "देखियौ कक्का, जहाँ तक १२३ समझौता आ भारतक आणविक सामरिक कार्यक्रमक प्रश्न छैक तँ मात्र ओ सब रियेक्टर अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सीक देखरेखमे आनल जेतैक, जे सब रियैक्टर, भारत सरकार चाहतैक। तँ बाकी कार्यक्रमपर एकर असर नहि परतैक"।

"हाँ हौ! लेकिन ई अनबाक कोन जरूरी छैक?" मन्नू भाई आवेशमे बजलाह। ताधरि बैंकर सैहैब सेहो सहटि कय चबुतरा दिश आबि गेल छलाह। गम्भीर आवाजमे मन्नू भाईकेँ सम्बोधित कय कहलथिन- "भाई, किछु एहन प्रावधान सभ जरूरी छैक एहि समझौतामे, परन्तु ई सभ निर्भर करैत छैक जे भविष्यमे भारतक स्थिति अंतर्राष्ट्रीय स्तरपर कतेक मजबूत रहैत छैक आ हमर राजनीतिज्ञ सब परिस्थितिसँ कतेक फायदा उठबैत छथि। कारण जे ड्राफ्ट एखन प्रस्तुत कएल गेल छैक ताहिमे कोनो कन्फ्लिक्टक स्थितिमे की कदम उठायल जायत आ ओ भारतक फायदामे होयत वा नुकसानमे से ओहि समयक देशक कूटनीतिज्ञ एवं अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितिपर निर्भर करत। परंच, वर्तमान परिस्थितिकेँ अगर देखल जाय तँ हमर देशक आणविक विद्युत उत्पादनक वर्तमान क्षमता मात्र ४०-५०% उत्पादन भय रहल अछि बाँकी आगू जे योजना छैक ओकरो अगर ध्यानमे राखल जाय तँ कहल जा सकैत अछि जे आणविक इन्धन एवं शान्तिपूर्व आणविकौपयोगसँ जुड़ल किछु तकनीककेँ यथाशीघ्र आवश्यकता छैक।

"हौ बैंकर! ई पक्ष तँ छैक परंच एखनहु अगर सरकार आंतरिक संसाधनकेँ सही ढंगसँ दोहन करय तँ ई आणविक इंधनक समस्या अल्पकालिक साबित होयत"। मन्नू भाई किछु शान्त मुद्रामे बजलाह। अपन बातकेँ आगू बढ़बैत कहलखिन जे "हौ, एखनहु जे योजना सब झाड़खण्डक (जादूगुड़ा, बन्दूहुरंग, तुरमडीह) आन्ध्र प्रदेशक (तुम्मालापल्ली) कर्णाटक, मेघालय आ राजस्थान आदि राज्यमे चलि रहल छैक ओ अगर सही ढंगसँ कार्यान्वित कयल जाय तँ आणविक इन्धनक ई वर्तमान समस्याक समाधान आसानीसँ कयल जा सकैछ"।

चबुतराक उतरवरिया-पछवरिया कोनापर बैसल टुन्ना बाजि उठल, "यौ कक्का, मंडलजी पानक दोकान आब बन्द करताह! ८ बाजि रहल छैक"।

बैंकर सैहैब जोड़सँ कहलखिन- ''यौ मंडलजी! आठटा पान लगाकऽ एमहर पठाऊ''।

चबुतराक पछवरिया कातमे मजहर सोचपूर्ण मुद्रामे साँझेसँ बैसल सबहक गप सुनि रहल छलाह। बैंकर सैहैब मजहरकँ कहलखिन- ''हौ मजहर! तूँ तँ एखन कम्पीटिशन सबहक तैयारी कए रहल छह। तूँ एहि सम्पूर्ण प्रकरण पर बहुत मंथन कयने हेब। आखिर तोहर सोच की छह''?

खखसि गरदनि साफ कय खखाड़ कातमे फेकैत बजलाह- ''भाईजी! अंतर्राष्ट्रीय आ आर्थिक नीति काफी संकीर्ण विषय छैक। पहिल बात अछि जे हमरा लोकनि एन.पी.टी.पर हस्ताक्षर केने बिना अंतर्राष्ट्रीय आणविक बाजारमे सेन्ह (सेन्ध) मारवाक कोशिश कय रहल छी। एहि हालतमे किछु ने किछु अंतर्राष्ट्रीय बंधन तँ स्वीकार करहिये परत। परन्तु हम एकरा एकटा अवसरक रूपमे देख रहल छियैक। आणविक क्षेत्रक किछु एहन पक्ष छैक जाहिमे हमर देशक अनुसंधान शायद अमेरिकोसँ ऊपर अछि। हालमे एकटा रिपोर्ट पढ़ने रही, जाहिमे कहल गेल छैक जे भारतक वैज्ञानिक २००५ आ २००६ मे प्रकाशित अनुसंधान रिपोर्टक आधारपर तकनीकी रूपसँ समृद्ध देश सबकेँ सेहो पाछू छोड़ि आगू बढ़ि गेल अछि। एहि स्थितिमे आणविक इन्धन आ किछु तकनीकक आयात तँ महज अल्पकालिक छैक। दीर्घकालिक असर हमरा जनैत ई हेतैक जे भारत किछु दिनका बाद आणविक क्षेत्रमे एकटा पैघ निर्यातक भऽ कऽ उभरत। एकरामे तकनीकी क्षमता छैक आ आन्तरिक आणविक साधन, जे किछु काल पहिने चर्चा भेल जेना, झारखण्ड, आन्ध्रप्रदेश, मेघालय आदिमे उपलब्ध छैक तथा अंतर्राष्ट्रीय आणविक सहयोगक माध्यमसँ एकटा पैघ निर्यातक भेनाइ सम्भव छैक।

तँ हेतु हमर तँ एतबय कहब अछि जे जौँ एहि समझौताकेँ सही ढंगसँ उपयोग कयल जाय तँ ई अपन देशक लेल वरदान साबित होयत''।



कृष्णमोहन झा (1968-)

जन्म मधेपुरा जिलाक जीतपुर गाममे। ''विजयदेव नारायण साही की काव्यानुभूति की बनावट'' विषयपर जे.एन.यू. सँ एम.फिल आ ओतहिसँ ''निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में प्रेम की परिकल्पना'' विषयपर पी.एच.डी.। हिन्दीमे एकटा कविता सँग्रह ''समय को चीरकर'' आ मैथिलीमे ''एकटा हेरायल दुनिया'' प्रकाशित। हिन्दी कविता लेल ''कन्हैया स्मृति सम्मान''(1998) आ ''हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार'' (2003)। असम विश्वविद्यालय, सिल्चरक हिन्दी विभागमे अध्यापन।–**सम्पादक**

दुनूकेँ

माछकेँ देखैत अछि स्त्री

स्त्री केँ देखैत अछि माछ

अहाँ दुनू केँ देखि रहल छी



कुमार मनोज कश्यप

जन्म : १९६९ ई मे मधुबनी जिलांतर्गत सलेमपुर गाम मे। स्कूली शिक्षा गाममे आ उच्च शिक्षा मधुबनी मे। बाल्य काले सँ लेखनमे आभरुचि। कैक गोट रचना आकाशवाणी सँ प्रसारित आ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित। सम्प्रति केंद्रिय सचिवालयमे अनुभाग अधिकारी पद पर पदस्थापित।–**सम्पादक**

हारल मनुक्ख

बरी काल सँ प्रतीक्षा कऽ रहल छलहु बसए के। गामक कोनो बस आबिये नहिं रहल छलै। एक तऽ प्रतीक्षा ओहिना कष्टप्रद, तहु मे जेठक दुपहरिया मे। रौद आ पब्लिक ट्रांसपोर्टक स्थिति ---- खिन्न भऽ गेल मोन। समय बितेबाक आर कोनो साधन नहिं देखि, मोन नहिंयो रहैत ठंढा पिबाक लेल बढि गेलहु सामने के रेस्टोरेंट दिस -- छाँह तऽ भेटबे करत, सँगहि प्रतीक्षा के घड़ी सेहो बितत। बस एबा मे एखन आधा घंटा सँ कम समय नहिंये लगतैक।

रेस्टोरेंट के तजबीज करैत आगू बढल जाईत छलहुँ कि केयो रस्ता रोकलक - जिर्ण, मलिन, बृद्ध नहिंयो रहैत बृद्ध सन - लाठी लेने " भैया! दू रुपैया हुअय तऽ दऽ दियऽ, ट्रेकर पकड़ि गाम चल जायब। पायरे नहिं गेल भऽ रहल आछ ।" आबाज मे एकटा संकोचक सँग दयनियता साफ झलकैत छलैक । तखने हमरा आगू मे नाचि गेल भीख माँगबाक नव-नव ढ़ब़ मोन परऽ लागल पढ़ल आ सुनल खिस्सा सभ जे कोना लोक ठका गेल ई सभ ढ़ब पऱ। ओकर याचना के अनसुना करैत हम बढ़ि गेलहुँ रेस्टोरेंट दिस ।

बस अयला पर खिड़की कात सीट पर बैसि सुभ्यस्त भेलहुँ। कने काल मे बस चलि पड़ल। रस्ता कात मे सहसा ककरो पर नजरि पड़ि गेल चौंकलहुँ - 'ई वैह आदमी तऽ नहिं जे हमरा सँ दू रुपैया मँगैत छल?' दिमाग पर जोर देलहुँ हँ ई तऽ वैह आदमी आछ़क़हुना-कहुना कऽ डेग बढबैत लगभग घिसियैत जँका --चलल जा रहल आछ गंतव्य दिस। ई दृश्य हमरा विचलित करऽ लागल हमर अंतरात्मा कचोटि उठल - 'दू रुपैया! मात्र दू रुपैयाक लेल बीमार - असक्क के पायरे जाय पड़ि रहल छैक आ तों मोन नहियो रहैत दस रुपैया ठंढा पी कऽ बर्बाद कऽ देलह! धिक्कार एहन मनुष्यता के!' अपराध बोध सँ हम आकाश दिस देखैत ओकर शून्यता मे विलिन भेल जा रहल छी।

थाकल बाट

''सर, हमर मीटरक फाईल कहाँ तक पहुचलई?''

''उपर सँ नहि लौटलै''-बिजली ऑफिसक कर्मचरीक ई चिरपरिचित उत्तर फेर हमर कानमे गेल। उत्तर जेना स्टीरियोटाईप, प्री-रिकोर्डेड, बिना कोनो जाच-पड़ताल, नाम-पता पुछने, पेप्रकल सन। १५ दिन भऽ गेल बिजली ऑफिसक चक्कर लगबैत आ यैह उत्तर सुनैत ।

''अरे ई सभ बड घाघ होईत छई। बिना 'सेवा' के किछु नहि हेतौक। परेशानी सँ बँचैक छहु तऽ सेवा करहि परतौ'' - अपन मित्र प्रभासक ई सलाह कचोटैतो मोन सँ मानहिं परल - विवसतामे। आखिर नोकरी छोड़ि कतेक दिन दौरैत रहब - अनायास, अनर्थक, आश्रत।

बिजली विभागक कर्मचारी 'सेवा' पबिते झट् दऽ हमरा आदेश-पत्र थम्हा देलक। जेना ओकरा सँपौती अबैत होईक- हमर मोनक आशय ओ पहिने बुझि गेल हो आ आदेश पहिने सँ तैयार रखने हो- हमरा देबाक हेतु। कायल भेलहुँ हम 'सेवा' महिमा सँ। विजयी भाव सँ आदेश-पत्र कैं देखैत हम बाहर निकलि रहल छलहु कि नजरि परल कातमे लटकल बोर्ड पर जाहि पर मोंट आखरमे लिखल छलै -''रिश्वत लेना एवं देना जुर्म है।'' भने लोक पानक पीक फेकि विकृत कऽ देने छलै ओकरा। उपयुक्त चिज उपयुत्त जगह रहक चाही। रस्तामे फेकना भेटल बड़का लग्गा सँ बिजलीक तारमे टोका फंसबैत। हमरा देख कऽ मुस्कियायल ओऽ। लागल जेना हमर मुँह दुसि रहल हो।

भावना

जेठ महिना मे तऽ सूरज जेना भोरे सँ आगि उगलऽ लगैत छैक। दुपहरिया तक तऽ वातावरण ओहिना जेना लोहा गलाबऽ बला भट्ठी। छुट्टी के दिन रन्ने भोर मे देरिये सँ उठलंहु; साईत तहु द्वारे कनिया भानस करबा मे अलसा रहल छलीह। अंततोगत्वा निर्णय भेल - भोजन बाहरे कएल जाय।

घर सँ बाहर निकललहुँ। बाहर एकदम सुनसान - एक्का दुक्का लोक

चलैत - सेहो साईत मजबूरीये मे। कियैक निकलत केयो घर सँ एहन समय मे? एहन रौद मे निकलनाई कोनो सजा सँ कम थोड़बे छैक। बड़ मसकत्ति के बाद एक टा रिक्सावला तैयार भेल लऽ जेबाक हेतु। रिक्सावला कि - अधबेसु, कृशकाय, हँपैत। रेस्टोरेंट पँहुचि भाड़ा पुछलियै। कहलक दस रुपैया। कनिया लड़ि पड़ली ओकरा सँ -"पांच रुपैया के दस रुपैया मंगैत छैंह! हमरा सभ कें बाहरी बुझैत छैं कि? ठक्क नहिंतन! एना जबर्दस्ती सँ बढिया होयतौक जे पौकेट सँ पाई निकालि ले। बजबियौ पुलिस के?" बेचारा रिक्सावला घबड़ा गेल। पसेना सँ मैल-चिक्कट भेल गमछा सँ अपन मुंह पोछैत, बिना किछु बजने पांचक सिक्का लऽ कऽ चलि गेल बिना किछु बजने निरीह।

रेस्टोरेंट मे भोजनोपरांत हमरा दस रुपैया टीप के रुप मे छोड़ैत देखि कनिया बजलिह - " अपना स्टेटस के तऽ कम-सँ-कम ध्यान राखू। की दसे रुपैया दैत छियई - पाछाँ सँ गरियाओत" एतबा कहि झट सँ पचासक नोट बिल-फोल्डर मे छोड़ैत हमरा चलबाक ईसारा केलनि। आकस्मात हमरा आंखिक आगाँ रिक्सावलाक चेहरा मूर्तिमान भऽ उठल। तुलना करऽ लगलँह - रेस्टोरेंटक वेटर आ रिक्सावला मे - एकटा वातनुवूलित कक्ष मे भोजन परसैत आ दोसर रौद मे कोंढँ तोरैत। भवनाक अंतर सँ सिहरि उठलँहु हम।

बी०डी०ओ०

ओकर असली नाम की छलैक से तऽ नहिं कहि; मुदा हम सभ ओकरा 'माने' कहि कऽ बजबैत छलियैक। कारण, ओ बात-बात पर 'माने' शब्दक प्रयोग करैत छलीह। से 'माने' ओकर नामे पड़ि गेलई भरि गामक लोक लै। बाल-विधवा, संतानहीन 'माने' हमर घरक सदस्या जकाँ छलीह। हमरा बाद मे बुझवा मे आयल जे 'माने' हमरा ओहिठाम काज करैत छलीह। बृद्धावस्था के कारणे आब काज तऽ नहिंये कऽ सकैत छलीह; हँ दोसर नोकर-चाकर पर मुस्तैद भऽ काज धरि अवश्य करबैत छलीह।

प्रधान मंत्रीक मधुबनी आगमन के लऽ कऽ लोक मे बेसी उल्लास आ उत्साह छलैक, सभ साक्षात दर्शनक पूण्य उठाबऽ चाहि रहल छल। लोकक एहि ईच्छा के पुरा करबा मे सहयोग दऽ रहल छलाह पार्टी कार्यकर्ता लोकनि जे बेसी-सँ-बेसी लोक के जुटा अपन शक्ति प्रदर्शन करबा लेल मुपत्त सवारी के व्यवस्था केने छलाह। हम मजाक मे 'माने' सँ पुछलियै- " प्रधान मंत्री मधुबनी मे आबि रहल छथिन। अपन गामक सभ केयो जा रहल अछि देखऽ। अहाँ नहि जायब?"

"के अबैत छथिन?"-माने पुछलनि।

"प्रधान मंत्री।"-हम उत्तर देलियै।

"धुर! ओ कोनो बी०डी०ओ० छथिन जे 'बिरधा-पेलसुम' (वृद्धावस्था पेंसन) देताह। हम अनेरे की देखऽ जाऊ हुनका ?"

हम अवाक रहि गेलंहु माने के उत्तर सँ।

नव-वर्ष

शहरी संस्कृति मे नव-वर्षक बड़ महत्त्व भऽ गेलैक आछ। चारु कात उल्लास, आनंद्द कोनो पाबनि-त्योहार सँ बेसिये। लोक पुरनका बितल साल सँ पिण्ड छोड़ा नवका साल कें स्वागत करय मे बेहाल एहि मे केयो ककरो सँ पाछाँ नहिं रहऽ चाहैछ । धूम-धड़क्का, नाच-गान आई जकरा जे मोन मे आबय कऽ रहल अछि नया सालक स्वागत मोन सँ कऽ रहल आछ । मुदा सब केयो थोड़बे?

शहरक एहि उल्लास के नहि बुझि पाबि; सुकना के सात सालक बेटा पुछिये देलकै ओकरा सँ -" बाबू, आई कि छियै जे लोक एना कऽ रहल आछ?"

"बाऊ, पैघ लोक सभक नया साल आई सँ शुरु भऽ रहल छै; तैं सभ पाबनि मना रहल आछ।"- बाल-मन कें बुझेबाक प्रयास केलक सुकना।

चोट्टहि प्रश्नक झड़ी लगा देने छलई छौंड़ा - "हम सभ नया साल कियैक नहिं मनबैत छी ? हमरा सभक नया साल कहिया एतैक? हम सभ कहिया मनेबई नया साल?"

सुकना एहि अबोध कें कोना बुझबौक जे गरीबक कोनो साल नया नहिं होईत छैक। बोनिहारक सभ सांझ नया साल आ सभ भिनसर पुरान साल जकाँ होईत छैक। बोनिहारी भेटलई तऽ नूने-रोटी सही, परिवारक सभ व्यत्तिक पेट भरलैक ; नहि तऽ भुखले रहि गेल सभ गोटे। एना मे कोन सीमा-रेखा मजूरक लेल नया आ पुरानक भऽ सकैछ जँ भऽ सकैछ तऽ एक मात्र मजूरी भेटब़ भेट गेल तऽ नया सालक खुशी; नहि भेटल तऽ पुरान साल सन दुख़ तै सभ सांझ नया साल आ सभ भिनसर पुरान साल।

बाप-बेटा दुनू चुप एक दोसराक मुँह देखि रहल छल साईत आँखि आँखिक भाषा बूझि गेल छलैक।

गजल

धज्जी रातुक श्याह आँचर मे,
अहल भोर के ताकि रहल छि।
अपन आंगन मे ठाढ़ हम, आई
अपने घर के ताकि रहल छि ।
आहत मोनक घायल तड़पन, पेग्ररो
आई कनाबऽ आयल।
जतऽ जलन के पीड़ा कम हो,
ओहन छाँह के ताकि रहल छी।
दोसरा कें कि दोष देबई हम,
अपनो सभ तऽ अंठिये बनला ।
याद ने कोनो बाँचल रहि जाय,
ओहन ठौर के ताकि रहल छी।
बगबाहो अपनहिं हाथें, आई कलम-
बाग सभ जारऽ आयल।
तड़पन जतऽ तड़पि रहि जायत,
ओहने कहर के ताकि रहल छि।
बिसरि गेल जे याद छलै, से सपना
कियैक याद दियौलक?
नोर ने ढ़रकय जाहि पलक सँ,
एहन आँखि के ताकि रहल छि।
निकलि गेलहुँ अछि सुन्न राह पर,
अन्हारेक टा सम्बल केवल।
अपन-आन केयो कतहु नहि, आई
ओहन दर के ताकि रहल छि।



अयोध्यानाथ चौधरी

धनुषा, नेपाल 1947-

मूलत: कविक रूपमे परिचित छथि। नेपालक आधुनिक कविताक क्षेत्रमे हिनक नाम उल्लेखनीय अछि। श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि। कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि। फड़िछाएल लेखन हिनक विशेषता थिकनि।धनुषा जिलाक दुहबी गामक रहनिहार श्री चौधरीक जन्म ६अक्टुबर १९४७कऽ भेल छनि। हिनक क्षितिजक ओहिपार नामसँ एक कविता-संग्रह प्रकाशित छनि। सम्पादक

दू पत्र

___________अयोध्यानाथ चौधरी

अन्तत; आइ हम दिनेशकेँ पत्र लिखवाक लेल उद्यत भेलहुँ अछि। कागत-कलम सब दुरुस्त १९६९, माने ठीक ३६ वर्षक बाद। एतेक नम्हर अन्तराल ! की बूझत ओ ? खीझ होइत अछि हमरा जे जीवनमे एंकटा उत्साही पत्र लेखक किएक नहि वनि सकलहुँ हम ? एकटा सफल दायित्व किएक नहि निभा सकलहुँ हम ? जकरा हम पत्र लिखाक हेतु उद्यत भेलहुँ ओ हो त कहियो लिखवाक वात सोचि सकैत छल। खैर शरुआत हमरेसँ रहओ। ओकरा हेतु हमर पत्र एकटा अप्रत्याशित घटना सावित हेतैक —'अ सरप्राइज' आ, जौं ओ जीवित नहि हो .... ? बहुत नम्हर अन्तराल भेलैक ने ! पत्र फिर्ता आबि सकैत अछि ....ओहि पर "डेड' जा मृत कोनो संकेत रहि सकैत छैक। एतेक निराशाजनक वात नहि सोचवाक चाही। ओहना स्थितिमे पोस्टमैन पत्र फारि-फेकिकऽ अपन मथ-दुक्खी सँ मृक्त भऽगेल रहत।

ई समय पत्र लिखवाक अनुकूल - बहुत अनुकूल वुझा रहल अछि। दशमीमे सब गाम अबैए- ओकरो जरुर गाम आवक चाही। तावत ओकर पत्नी, बेटा वा वेटी केओ ने के ओ पत्र सहेजिकऽराखि देने रहतैक। जाइ जमानामे हम सव — 'ग्रैजुएशन' केने रही, ओइ हिसाव सँ ओ जरुर कोनो नोकरी मे हैत किएक त' नीक विद्यार्थी रहय। पता नहि —पटना वोकारो, टाटा, दिल्ली कतऽ अइ..... आकि सुदुर दक्षिण केरला, मद्रास-नहि जानि कतऽ ?/

चारि वर्ष संगे अभिन्न रहवाक कारणे ओकरा पत्र लिखवामे एकटा 'पेन फ्रेन्ड' क मजा आओत। सबसँ पहिने तँ' ओकरा परिवाक हुलिया लेवऽ पडत। ओकरा परिवारमे के सब छैक ? के कतऽ की करैत छैक ? पत्रक सिलसिला जौ चालु भऽ जायत त कालान्तरमे इ हो बूझऽ मे आवि जायत जे ओकरा एकटा मनोनुकूल पत्नी भेटलैक की नहि..... आकी कोनो ना शेष जीवन वितावऽक क्रममे अइ।

याददाश्त वा फेहरिस्त रहत। तहिया सी. एम. कलेजक आलीशान आर्ट्स व्लक नव हेवाक कारणे विल्कुल कोनो सुन्दर कागज पर पारल रंगीन नक्शा वुझाइक — पार्क जकाँ। जतऽ जाउ जेना पक्षीक झुण्ड आ कलरव पसरल। विशाल पुस्तकालय। वागमतीक मनोरम आ खतरनाक किछेर। रहस्यमयं गर्ल्स-कामन-रुम। विभिन्न विषयक अलग 'डिपार्टमेन्ट' आ ओ रहस्यमय कोठली, उपर हेवाक कारणे, छात्रसब कौखन कार्यवश, कौखन अनेरो, कोनो 'सरसँ भेटवाक वहानामे उपर भीड कऽदैक। परन्तु' जखन 'हुसैन' साहव माने वाइस प्रिन्सपल अपन 'चैम्बर सँ ' बहार भऽ केवल तर्जनी उठवैत छलाह तखन सब सिड़हीसँ नीचा भगैत छल —कान —कपार फुटवाक —टांग टुटवाक कोनोटा डर नहि। हमरा सभक ग्रूपमे एकटा रीनिता नामक लड़की छलि 'जकरा मात्रे' कार प्रतिदिन कालेज पहुँचा जाइक। लक्ष्मी आ सरस्वतीक अपूर्व संयोग ! मांजल अंग्रेजी वजैत आ लिख्यैत छलि। फस्ट इयरमे 'विदेह'मे जे ओकर लेख छपैलक से लाजबाव रहैक —शीर्षक छल "Exclusively ours "| लेख मार्फत ओ ओकरा सभक कोठलीक पर्दा हटा भीतरक बहुत रास रहस्योदघाटन कएने छलि। मुदा ओ एक बर्षक बाद नहि जानि कतऽ चल गेलि ? धनीक बापक वेटी रहए। प्राय: ओ कलेज झुझाअन लागल हेतैक।" Exclusively ours" एखनो कहियो काल पढि लैतछी मुदा

शीर्षकक तात्पर्य वुझवामे एखनो माथमे बल देवऽ पडैत अछि।

एकटा और घटना जकर हम सब कहियो नहि विसरि सकब। हम सव विश्वस्त छी जे जऔं पत्र लेखनक शुरुआत मित्र दिनेश राय दिससँ होइत त ओहो ओइ घटनाक चर्च जरुर करैत। हम सव भाग्यवान रही जे ओहो कोनो 'नन्दी' टाइटलवाली हमरे सभक ग्रुपक छलि आ वंगालिने छलि। ओकरा आँखिमे वास्तवमे एहन एकटा चमक छलैक जे आई ३६ वर्षसँ कतौ अन्तऽ नहिं अभरल, पता नहि ओ आँखि कतऽ अधि ? ओइ बड़का — बड़का आँखिमे ओ चमक विद्यमाने छैक वा मलीन भेलैक अछि ? जे किछु। मुदा सारा कॉलेज ओ जादुई आँखि देखने छल — देखैत छल। अनहोनी भए गेलै। एकटा हमरे सवहक सहपाठी लड़का ओकरा नाम पर — ओकर नाम लैत जहर खा लेलक मुदा समये पर अस्पताल पहुचाओल गेल आ जान वचि गेलैक। जंगली आगि जकाँ वात सौसे पसरि गेल। मुदा ओकरा लेल धन-सन। कोनो प्रतिक्रिया ने कोनो हलचल ने — सव किछु विल्कुल सामान्य। असलमे एक तरफा प्रेम छलैक। वात ओकरो तक जरुर गेल हेतै — लेकिन ओ वेहद गम्भीर जे छलि। Eng. Hons. Group मे टॉप कैलक। मुदा ओ जमाना वड़ वेजाए छलैक। लड़का — लड़कीमे बार्ताक संचार नहि होइत छलैक। लाख कोशिशक वाद हमरा आ दिनेशक मुँहसँ कंग्राच्युलेसन शब्द नहि फुटल — नहिए फुटल।

कालेज आ संवेदनशील घटना — संवेदनशील घटना आ कालेज — जेना एक दोसरक पर्याय रहैक। कतेक वात भेल। कतेक घटना घटल। मुदा पहिने पत्राचारक क्रम त शुरु होवऽ। दिनेश वहुत वातक जानकारी करा सकैए — ओहि पानि क' जे अइ। जन्मभूमि आ कर्मभूमि नेपाल भेलाक कारने बहुत रास अपन लोक छुटि गेल। ओना सीमा नहि बुझाइत छैक मुदा सम्पर्क जे टुटिगेल अछि। मुदा एकटा वात। एहि सन्धि-स्थल पर जीवाक अपन मजा छैक। कौखन उत्तराभिमुख, कौखन दक्षिणाभिमुख। दूटा संस्कृति मिश्रित जीवनक उत्फुल्लता — जुनि पुछू। पहाड़क गीत खोलामे झहरिकऽ समुद्रक लहरिमे विलन भऽ जाइत अछि। भास दू-मुदा भाव एके — ऐन-मेन। "जहाँ जहाँ वान्छौ तिमी, म पाइला वनि पच्छयाई रहन्छु " तु जहाँ-जहाँ चलेगा, मेरा साया साथ होगा"।

पहाड़क गीतक सन्दर्भमे १९७१ ई. क एकटा सांझ मोन पडैत अछि। काठमान्डौ सँ दूर उत्तर वालाजुउद्यानसँ उपर पहाडीपर English Language Trainning Institute द्वारा आयोजित वनभोज समारोह। नाच करैए ओ सव। कोन लड़का-कोन लड़की-नाचमे फर्क नहि वुझायत। निर्विकार। निर्विकार भऽ नाचत आ गाओत। मुदा एम्हर, अपना समाजमे लज्ज कलाके प्रस्फुटिता नहि होवऽ दैत छैक। गीत गओलक राममणि। सम्पूर्ण मण्डली अभिभूत आ मंत्रमुग्ध भऽ गेल। पहाडमे केवल निर्जीव पाथरे नहि होइत छैक। एकटा प्रशिक्षार्थी — एकटा शिक्षिकाक आँखिसँ नोर झहड़ए लागल आ समस्त वातावरण जेना जड़ भऽ गेल।, ओ गीत एखनो कहियो काल हंमरा मन-प्राणके जेना आन्दोलित कऽ जाइत अछि — "कोई जव तुम्हारा हृदय तोड़ दे .... " दुर्गम पहाडी गाममे एहनो गीत गाओल जाइत अछि- आ ओतुक्को लोक ओकर तात्पर्य बूझि विभोर भऽ जाइत अछि — हमरा आश्चर्य लागि गेल।

ओइ दिन हम पहाडक आँखि नोरायल देखने रही। स्पस्ट। निस्सन्देह। हमरा जनैत सैकड़ौ-हजारो वर्ष पहिने, कोनो युगमे ओइ गीत सँ बहुत बेसी, कैएक गुना वेसी दर्द-भरल गीत सुनि पहाड जे करुण क्रन्दन केने हैत तकरे फलस्वरुप एतेकं नदी नालाक जन्म भेल हैत। बहुत सम्भव गायक स्वंय Adam छल होयत आ सुननिहार ओकर प्रेयसी Eve।

राममणि शर्मा ओहि दिन सँ हमर अभिन्न भऽ गेल। ओकर आओर कतेक साथी सभक पता हमरा डायरीमे ओहिना पड़ल अछि। आव त डायरीक पन्न जीर्ण-शीर्ण भऽ पीयर भऽगेल अछि। आइए ३४ वर्षक वाद एकटा पत्र हम और लिखव, एखने लिखव ....।

१ जनवरी ,'०५

जनकपुरधाम

दिनेश भाइ,

नव वर्षक हार्दिक मंगलमय शुभकामना। आशा अछि लिफाफ पर हमरनाम पढलाक बाद हमरा चिन्हऽ मे एको क्षण देरी नहि लागल हैत। ओना किछु चौंकल जरुर होएब। से त स्वभाविके ....। कोनो अपराध वोध नहि भऽ रहल अछि। एकटा प्रश्न पुछै छिय। जीवन एना जटिल किएक भेल जा रहल छैक ? कतेक वेर विचार करैत छलहुँ .... आई लिखैछी, काल्हि पक्के लिखव .... मुदा आई .... जावत दुनूपत्र हम लिखि नहिलेव, तावत हमराअ चैन नहि .... चैन नहि ....।

शान्ति सदन, ढुहवी-१
(धनुषा)

डॉ. बलभद्र मिश्र,

सेवा निवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सा पदाधिकारी, पूर्णियाँ

लब्ध धौत प्रतिष्ठ पंजीकार- स्व. पं मोदानन्द झाजी- एक संस्मरण

स्व. पंजीकार जी विलक्षण प्रतिभा संपन्न व्यक्ति छलाह। हिनक संपर्क भेलासँ पूर्वहि सुनैत आएल छलहुँ कि शिवनगर (पूर्णियाँ, संप्रति अररिया जिला) निवासी पं. मोदानन्द झा जी पुबारिपारक एकमात्र सर्वश्रेष्ठ पंजीकार तऽ छथिए, संगहि संपूर्ण मिथिलाक मूर्धन्य पंजीकारक श्रेणीमे हिनकहु नाम लेल जाइत छलन्हि।

पंजीकारजी प्रतिवर्ष सौराठ सभा गाछी जाइत पुबारि-पछबारि पारक भेल विवाहक सिद्धान्तक लिपिबद्ध आदान-प्रदान करैत छलाह, जाहिसँ हिनक पंजी-पुस्तिका वृहदाकार होइत वंश परिचयक विशाल भंडारसँ सुशोभित अछि।

पंजीकारजी महाराज दरिभंगाक अध्यक्षतामे आयोजित ''पंजीकार धौत परीक्षा'' मे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कऽ ''लब्ध धौत प्रतिष्ठ'' भेल छलाह, जकर निर्णायक मण्डलमे महामहोपाध्याय सर गंगानाथ झाजी सम प्रभृति विद्वान लोकनि छलाह।

पंजीकारजी कतेको ठाम सम्मानित भेलाह, जाहिमे ''अखिल भारतीय मैथिल महासभा''क विद्वत् मंडलीसँ आदृत होइत विशिष्ट स्थान पौने छलाह। हिनक कृति एवं विलक्षण प्रतिभाक आलोकमे हिनक जीवनहि कालमे ''चेतना समिति'' स्वयम् आमंत्रित कऽ पंजीकारजीकेँ सादर सम्मानित करैत भेल।

जखन हमर विवाह १९५५ ई.मे पोर्णियाँ भेल तहियासँ पंजीकारजीक मृत्युसँ तीनमास पूर्व तक संपर्क बनल रहल। एहि तरहेँ पंजीकारजीक प्रति जे सुनैत आयल छलहुँ तकर यथार्थ अनुभूति हमरा पंजीकारजीक संगतिमे भेटल।

कतेको विवाह सिद्धान्त लिखबाक अवसर हमरा बुझना गेल कि- भलमानुष (जाति-पाँजि) व्यक्तिक वंश परिचय पंजीकारजी केँ जिह्वाग्र छन्हि।

यद्यपि वर कन्याक अधिकार देखबाक क्रममे पंजीकारजी केँ ''पंजी पोथा'' उलटबाक आवश्यकता नहि छलन्हि, तथापि कतहु गलती नहि भऽ जाय ई बुझि पोथा उलटबाक उपरान्ते अपन लिखित निर्णय दैत छलाह।

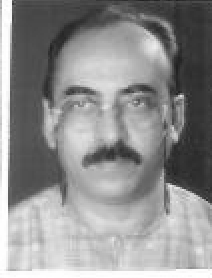
पंजीकारजी सदाचार सम्पन्न होइत सभ दिन अहं भावसँ निर्मुक्त रहलाह। हिनक रहन-सहन वेश-भूषा एवं टपकैत ओजस्विताकेँ देखि केओ अपरिचित व्यक्ति हिनक गुणसँ परिचित भऽ जाइत छल।

हम स्वयं पंजीकार जीक सद्विचार, सद्व्यवहार, सदाशयितासँ विशेष प्रभावित भेलहुँ। पंजीशास्त्रक गहन अध्ययन रहले सन्ताँ पूबारि-पछबारिक समन्वय करबाक स्तुत्य प्रयास जीवन भरि करैत रहलाह।

खुशीक गप्प जे पंजीकारजीक बालक श्री विद्यानन्द झा (मोहनजी) पंजीकारिताकक्षेत्रमे निष्ठापूर्वक अपन मनोयोग रखने छथि, जाहिसँ स्व. पं.मोदानन्द झा जीक आत्मामे अवश्ये शान्ति भेटैत होयतन्हि।

अन्ततः हम यैह कहब जे स्व. पंजीकारजीक प्रत्युत्पन्न मतित्वक आगाँ हम जे किछु कहि गेलहुँ से सूर्यकेँ दीप देखेबाक समान बुझल जाय।

एहन स्वनामधन्य पंजीकार स्व. पं. मोदानन्द झा जीकेँ मरणोपरान्त एक संस्मरणक रूपमे अपन श्रद्धा-सुमन अर्पित करैत हमर शतशः प्रणामा



श्री भालचन्द्र झा

ए.टी.डी., बी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अग्रेजी आ गुजरातीमे निष्णात। १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे निदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि १९८६ आ १९९९ मे। थिएटर वर्कशॉप पर अतिथीय भाषण आ नामी संस्थानक नाटक प्रतियोगिताक हेतु न्यायाधीश। आइ.एन.टी. केर लेल नाटक ''सीता'' केर निर्देशन। ''वासुदेव संगति'' आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ। निम्न टी.वी. मीडियामे रचनात्मक निदेशक रूपेँ कार्य- आभलमया (मराठी दैनिक धारावाहिक ६० एपीसोड), आकाश (हिन्दी, जी.टी.वी.), जीवन संध्या (मराठी), सफलता (रजस्थानी), पोलिसनामा (महाराष्ट्र शासनक लेल), मुन्नी उदाली आकाशी (मराठी), जय गणेश (मराठी), कच्ची-सौन्धी (हिन्दी डी.डी.), यात्रा (मराठी), धनाजी नाना चौधरी (महाराष्ट्र शासनक लेल), श्री पी.के अना पाटिल (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(नशा-सुधारपर), आहट (एड्सपर), बैंगन राजा (बच्चाक लेल कठपुतली शो), मेरा देश महान (बच्चाक लेल कठपुतली शो), झूठा पालतू(बच्चाक लेल कठपुतली शो),

टी.वी. नाटक- बन्दी (लेखक- राजीव जोशी), शतकवली (लेखक- स्व. उत्पल दत्त), चित्रकाठी (लेखक- स्व. मनोहर वाकोडे), हृदयची गोस्ता (लेखक- राजीव जोशी), हद्दापार (लेखक- एह.एम.मराठे), वालन (लेखक- अज्ञात)।

लेखन

बीछल बेरायल मराठी एकांकी, सिंहावलोकन (मराठी साहित्यक १५० वर्ष), आकाश (जी.टी.वी.क धारावाहिकक ३० एपीसोड), जीवन सन्ध्या(मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धनाजी नाना चौधरी (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरयल), मयूरपन्ख (मराठी बाल-धारावाहिक), हेल्थकेअर इन २०० ए.डी.) (डी.डी.)।

थिएटर वर्कशॉप- कला विभाग, महाराष्ट्र सरकार, अखिल भारतीय मराठी नाट्य परिषद, दक्षिण-मध्य क्षेत्र कला केन्द्र, नागपुर, स्व. गजानन जहागीरदारक प्राध्यापकत्वमे चन्द्राक फिल्मक लेल अभिनय स्कूल, उस्ताद अमजद अली खानक दू टा संगीत प्रदर्शन।

श्री भालचन्द्र झा एखन फ्री-लान्स लेखक-निदेशकक रूपमे कार्यरत छथि।–**सम्पादक**

दू गो कविता

१. अपन अस्तीत्वक असली मोल

बुझबाक हुअए
यदि अपन अस्तीत्वक असली मोल
त पुछियौक सुकरातकें
देखबियौक ओकरा
विश्वक नक्शा पर
पहिने अपन ''देसक'' अस्तीत्व
ओहि देस मे अपन ''राज्यक'' अस्तीत्व
राज्य मे अपन ''जिलाक'' अस्तीत्व
जिला मे अपन ''गामक'' अस्तीत्व
गाम मे अपन ''घरक'' अस्तीत्व
आ तहन घर महुक ''अपन'' अस्तीत्व
आ ई सभ
''विश्वक नक्शा'' पर
से बूझि लियौक...

२. हमर माय

गर्भगृहक सुखासन सँ बहरेलहुँ
त हमर जन्मदात्री अपसियाँत रहय
भनसिया घर मे
तीतल जारैन कें धूआँ मे
करैत रहय धधराक आवाहन
देहक धौंकनी कऽकऽ
आ तहिया सँ लऽ कऽ आइ धरि
ओकरा आन कोनो ठाम नहिं देखलियैक
देखलियैक
त बस कोनटा घरक ऍंठार पर
सभक ऍंठ पखारैत
कखनो अँगना बहारैत
त कखनो जारैन बीछैत
कखनो कपड़ा पसारैत
त कखनो नेन्नासभक परिचर्या करैत
खिन मे जाँत पर, त खिन मे ढेकी पर,
चार पर, चिनमार पर

अँगनाक मरबा पर, घरक असोरा पर
दिन-दुपहर, तीनू पहर जोतल
कखनो दाईक चाइन पर तेल रगड़ैत
त कखनो छौंरी सभक जुट्टी गूहैत
राति मे पहिने दाईकँ
आ तहन बाबूकें पएर दबबैत
एहि तरहें ओकर जीवनक आध्यात्म
भनसिया घर सँ शुरू भऽ कऽ
भनसिये घर मे समाप्त भऽ गेलैक

झुलसैत देखलियैक चूल्हिक आगि मे
नारीक स्वतंत्रता, ओकर अस्मिता
ओकर मान आ स्वाभिमानकें
कहाँ भेटलैक पलखतियो ओकरा
एहि सभ दिसि ताकहो कैं
आइ सोचै छी सेहो नीके भे्

अगिलुका पीढ़ी सचेत भऽ गेलैक
भलमनसियत सँ जँ नहिं भेटलैक

त छिनबाक ताकति भेटि गेलैक
मुदा तौंहिं की हमर मायक त्याग आ
बलिदान
ईब्सेन कें नोरा सँ अथवा गोर्कीक माय
सँ
रत्तियो भरि कम कहाओत?
हमरा जनितबे रत्ती भरि बेसिये बूझू

भरत माँझी

ओड़िया कवि

ओड़ियासँ अंग्रेजी अनुवाद शैलेन राउत्रॉय आ अंग्रेजीसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर द्वारा

हमर घुरलाक बाद

हमर घुरलाक बादो ओहि स्थानके
नहि छोड़ू रिक्त
पकड़ने रहू ओकरा।

फूल सभकैं नहि फेकू
की कोनो महत्व अछि एकर जे
ओ टटका फुलाएल अछि आकि
अछि मौलाएल?

खोलू हमर सभटा नुकाएल
भोथियाएल स्वप्न,
ओकरा अलंकृत कए।

उनटि दिअ सभ ठामक लैम्पकैं,
आ रोकि दिअ अन्हारक प्रति
घृणा

बिना घबरेने देखू समुद्र
आ तखनो नहि करू घृणा
अकाससँ।

नेहोरा अछि!!!

पृथ्वीकैं बुझू एकटा सममिश्रित
स्थान

प्रयास करू आ ठाढ़ रहू ओतए।

कृपया बाट ताकू अपन
आ से करए काल, रहू जागल!

मोन राखू, हम घुरब एहि पृथ्वीपर
जे एहन एकेटा अछि
राखू मोन कि हम घुरब
हम बाउग केने छी पथकैं
सरिसवक बीआसँ,
मोन राखू ओ पथ

भवनाथ 'दीपक'

अभियान गीत

उठह, उठह, उठह

चलह, चलह, चलह

बढह, बढह, बढह

घरक भेदभाव बूझि शत्रु आबि गेल

बुझा दियौक आन सँग एक बुद्धि भेल

विश्व मंच मध्य हम उचित जगह लेल

विशद विविध भेष

हरित भरित देश

जाति पाँति वर्ण धर्म भेद भाव हीन

राज पाट कर्म काज सब अपन अधीन

श्रमिक कृषक बुद्धिजीव, उद्यमी उदार

ग्रथित एक सूत्र मध्य व्यक्ति शत प्रकार

भुक्ति मुक्ति हेतु

वृत्त आइ एकताक सेतु

जनैत हित मिलैत माँटि

के सकत अनेर डाँटि !

सब प्रबुद्ध, सब सचेत

पैर पाछु क्यो न देत

देखाय देत शत्रुकेँ भैरवक स्वरुप

के अलच्छ निन्दमे रहत भसैत चूप ?

तिर्हुतिक माटिपर रहनिहार भाइ !

जन्म भूमि प्राण हेतु ठाढ हुअह आइ

लाख लाख कोटि कोटि केर प्रयाण

के कहैछ, मैथिलीक पुत्र अल्पप्राण ?

लक्ष्य चीन्हि लेल आब निधि चीन्हि लेल

शत्रु मित्र केर भेद विधि चीन्हि लेल

उठह, उठह, उठह

चलह, चलह, चलह

बढह, बढह, बढह.....।



श्री रामभरोस कापड़ि ''भ्रमर'' (१९५१-)

जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)। सम्प्रति-जनकपुरधाम, नेपाल। त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए., पी.एच.डी. (मानद)। **हाल:** प्रधान सम्पादक: गामघर साप्ताहिक, जनकपुर एक्सप्रेस दैनिक, आंजुर मासिक, आंगन अर्द्धवार्षिक (प्रकाशक नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी)।

मौलिक कृति: बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे नहि जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर बसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्ततः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सभक संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्गस), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)।

नेपाली कृति: आजको धनुषा, जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु (आलेख-संग्रह), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु (अनुवाद)।

सम्पादन: मैथिली पद्य संग्रह (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान), लाबाक धान (कविता संग्रह), माथुरजीक ''त्रिशुली'' खण्डकाव्य (कवि स्व. मथुरानन्द चौधरी ''माथुर''), नेपालमे मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोक नृत्य: भाव, भंगिमा एवं स्वरूप (आलेख संग्रह)। गामघर साप्ताहिकक २६ वर्षसँ सम्पादन-प्रकाशन, ''अर्चना'' साहित्यिक संग्रहक १५ वर्ष धरि सम्पादन-प्रकाशन। ''आँजुर'' मैथिली मासिकक सम्पादन प्रकाशन, ''अंजुली'' नेपाली मासिक/ पाक्षिकक सम्पादन प्रकाशन।

अनुवाद: भयो, अब भयो (''नहि आब नहि''क मनु ब्राजाकीद्वारा कयल नेपाली अनुवाद)

सम्मान: नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा पहिल बेर १९९५ ई.मे घोषित ५० हजार टाकाक मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कारक पहिल प्राप्तकर्ता। प्रधानमंत्रीद्वारा प्रशस्तिपत्र एवं पुरस्कार प्रदान। विद्यापति सेवा संस्थान दरिभङ्गाद्वारा सम्मानित, मैथिली साहित्य परिषद, वीरगंजद्वारा सम्मानित, ''आकृति'' जनकपुर द्वारा सम्मानित, दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाद्वारा सम्मानित, जिल्ला विकास समिति धनुषा द्वारा दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल पुरस्कृत एवं सम्मानित, नेपाली मैथिली साहित्य परिषद द्वारा २०५९ सालक अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्वई द्वारा ''मिथिला रत्न'' द्वारा सम्मानित, शेखर प्रकाशन ''पटना'' द्वारा ''शेखर सम्मान'', मधुरिमा नेपाल (काठमाण्डौ) द्वारा २०६३ सालक मधुरिमा सम्मान प्राप्त। काठमाण्डूमे आयोजित सार्कस्तरीय कवि गोष्ठीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व।

सामाजिक सेवा : अध्यक्ष-तराई जनजाति अध्ययन प्रतिष्ठान, जनकपुर, अध्यक्ष- जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुर, उपाध्यक्ष- मैथिली प्रज्ञा प्रतिष्ठान, जनकपुर, उपकुलपति- मैथिली अकादमी, नेपाल, उपाध्यक्ष- नेपाल मैथिली थाई सांस्कृतिक परिषद, सचिव- दीनानाथ भगवती समाज कल्याण गुठी, जनकपुर, सदस्य- जिल्ला वाल कल्याण समिति, धनुषा, सदस्य- मैथिली विकास कोष, धनुषा, राष्ट्रीय पार्षद- नेपाल पत्रकार महासंघ, धनुषा।नेपालक साझा प्रकाशनक पहिल मैथिल/ मधेसी चेयरमैन **–सम्पादक**

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल

रामभरोस कापडि 'भ्रमर'



चारिम वर्ष हम पटना गेल रही। चेतना समितिमे बैजू बाबू भेटलथि। विद्यापति स्मृति पर्व भ' गेल रहै। कोनो आने सन्दर्भमे रही। ओ आवेशपूर्वक दिल्लीमे आयोजन होब बला अन्तर्राष्ट्रि मैथिली सम्मेलनमे अएबाक हेतु आमंत्रण देलनि। हमरा सभ लेखें पहिल आयोजन रहैक__ हम आ डा. विमलकें जएबाक रहैक, मुदा जँ कि ओ बड हडबडीमे आ अस्पष्ट रुपँ अएबाक बात बाजल रहथि, हम सभ जा नहि सकल रही। बरु काठमाण्डूसँ धीरेन्द्र आ कमलेश झा गेल रहथि। 'मिथिलारत्न' सँ सम्मानित होइत गेलाह आ ओत्तहि घोषणा कएलनि__ अगिला साल ई समारोह काठमाण्डूमे होयत। तालीक गडगडाहटि भेल।

जे से हम सभा जा नहि सकलहुँ। बादमे बैजू बाबूकें भेलनि जे नेपाल सँ किछु आरलोकनि छुटि गेलाह, अएबाक चाहियनि। ओ जनकपुर अएलाह आ धीरेन्द्र आदिसँ सम्पर्क कएलखिन्ह जे एहि वर्ष काठमाण्डूमे आयोजनक की तैयारी अछि। जे हुनका संग रहनि हुनक कथन अनुसार धीरेन्द्र आदि जे केओ गछने रहनि साफ पाछाँ हटि गेलनि। ओ मर्माहत भ' जनकपुरसँ घूरि गेलाह। तखन ओम्हर जा मुम्वईमे आयोजन करबाक ब्योंत धरौलनि।

आब मुम्वईमे अएबालेल पुनः बैजू बाबूक आमंत्रण, आग्रह आ स्नेहपूर्ण दवाव आएल। रेवती जीकें सेहो आग्रह भ' गेल रहिन विद्यापति स्मृतिपर्वक अवसर पर दरिभंगेमे। ई तेसर सालक गप थिक। अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन नेपाल__ भारतक विद्वान, मैथिली सेवी सभक सझिआ मंच होएबाक हमर विश्वास मुम्वई चलबाले' प्रेरित कएलक आ तखन दरिभंगासँ टिकट रिजर्बक व्यवस्था चन्द्रेशजी जिम्मा देल गेल। जेना बैजु बाबूक मुँहकहबी कार्यक्रम तहिना अस्पष्ट चन्द्रेशजीक ओरिआओन। हम सभ दरिभंगा पहुंचि दोसर दिन भेने मुम्वईक हेतु प्रस्थान कएने रही। मुम्वईक सम्पूर्ण कार्यक्रमक सन्दर्भमे पुस्तकमे आनठाम हमर विचार आबि चुकल अछि।

तहिना गत वर्ष कलकत्ताक तैयारी रहैक। एहि बेर हमरा पर थप भार द' देलनि बैजू बाबू 'मिथिला रत्न'क हेतु व्यक्तित्व चयनक। रेवती जीसँ सलाह कएल ओ वदरी नारायणवर्माक नाम बतौलनि। हम डा. रामदयाल राकेशकँ एकरा लेल उपयुक्त वूझि दुनूक नाम बैजूबाबू लग पठा देलियनि। डा. राकेश कँ काठमाण्डूसँ बजाओल गेलनि। हम सभ निर्धारित तिथिकँ 'गंगासागर' सँ कलकत्ताक हेतु विदा भ' गेल रही। ओत्त पहुंचलाक बाद स्टेशन पर ठाढ बैजू बाबू मोनकँ गदगद क' देने रहथि।

तकरा बाद अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे नेपालक हमरा चारि गोटकैं फूटे कोठरीमे आवास देल गेल आ सम्मान सेहो। मैथिली सम्मेलनक अन्तर्राष्ट्रिय स्वरुप प्रदान करबा लेल हमरा सभक उपस्थिति जहिना अनिवार्य देखल गेल तहिना डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजूक व्यवहार ततबे सहज आ अपनत्व भरल।

आब चारिम चेन्नईमे अछि। तैयारी चलि रहल छैक। ओत्तहु नेपाल एकटा महत्वपूर्ण सहभागी रुपमे उपस्थित होयत तकर आशा करैत छी।

अनुभूति आ औचित्य

हमरा बूझल नहि अछि बैजू बाबू कोन उद्देश्य राखि ई अन्तर्राष्ट्रिय स्वरुपमे एकरा शुरु कएलनि। ओ एकर शुभारंभ मैथिलीकें अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटलाक बाद ताही तिथि २२ दिसम्वरकँ कएलन्हि। जकरा अधिकार दिवसके रुपमे मनाओल जाइछ __२२ ता.क' अधिकार दिवस आ २३ ता.क' अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन।

पहिल बेर दिल्लीक हेतु आमंत्रण भेटला पर हमरा सभक हिचकिचाहट, आयोजनमादे शंका ढेर सन छल। बैजू बाबूक संघर्षशील व्यक्तित्व प्रभावित त करैत छल, मुदा हरफन मौला काम काजसँ आशंका उठैत छल, पता नहि जे कहैत छथि, करबो करैत छथि वा नहि तए'' दिल्लीक ओ सम्मेलन छुटल तकर हमरा काफी अफशोच अछि।

बादमे मुम्वई आ कलकत्ताक अनुभब काफी सकारात्मक, प्रशंसनीय आ अनुकरणीय रहल। अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक समस्त गरिमाकँ निर्वाह करबाक प्रयास ओ करैत छथि। कतौ स्थानीय आयोजक अपनासँ उत्रैस वुझाइत छनि तँ कतौ वीस। तए ''परेशानी त हुनके उठब' पडैत छनि। मुदा हम सभ जे अनुभव कएलहुँ ओ अत्यन्त काजक छल। मैथिली संसारक बहुतो साहित्यकार, सेवी, भाषाशास्त्री, संगीत एवं नृत्यकलाकार सभसँ भेंटघांट होइत अछि। सभक विचारक आदान__ प्रदान होइत छैक। नव संसारक निर्माण होइत छैक।

भाषा, साहित्य, संस्कृतिक हेतु सेहो एहि सम्मेलनक उपादेयता स्पष्ट अछि। मैथिली भाषाक उत्थानक हेतु नव नव योजना बनैत छैक। नव नव पोथी प्रकाशित एवं विमोचित होइछ। विद्वान एवं प्रेमी लोकनि सम्मानित होइत छथि। सांस्कृतिक कार्यक्रममे नव नव प्रतिभा आगां अबैत छथि। सम्पूर्ण मैथिल समाजसँ ओ प्रतिभा जुडैत अछि, जाहिसँ बादमे ओकर विकासक अवसर प्रदान होइछ। 'राखी' एकटा अपाहिज लडकी एहने प्रतिभा अछि जे सभकें प्रभावित कएने रहए। अमता धरानाक कलाकार लोकनि मुग्ध करैत छथि।

नेपाल आ भारतक बिचक सम्वन्धक नीक सूत्रपात ई सम्मेलन करैत अछि। नेपालक प्रतिनिधिके मंचपर उपस्थितिसँ दुनू देशक प्राचीन सम्वन्धमे ताजापन अबैछ। मुम्वई आ कलकत्तामे पंक्ति लेखकक भाषणसँ हजारोंक दर्शक दीर्धामे भेल तालीक गडगडाहटि तकर प्रमाण छैक। नेपालमे होइत मैथिली गतिविधिसँ

सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलकँ, खास क' प्रवासी मैथिलकँ जानकारी करएबाक ई सुन्दर अवसर होइत अछि, जकर उपयोग मुम्वई आ कलकत्ता दुनूठाम कएल गेल। कलकत्तामे नेपालमे मैथिली, नामक वूकलेट छपा वांटल गेल रहय तं राम भरोस कापडि 'भ्रमर'क सद्यः प्रकाशित पुस्तक'' राजकमलक कथा साहित्यमे नारी' विमोचित भेल। ओत्त गामघर साप्ताहिक विशेष अंक, नेमिकानन'क अंक सभ वांटल व विक्रय लेल उपलब्ध कराओल गेल। बहुतो साहित्यकार रुचिसं नेपालक भाषा, साहित्यक वारेमे जानकारी लेलनि। जानकारीक आदान प्रदान भेल। ज्ञान समृद्ध भेल।

तखन एखन धरि सहभागी भ' जे किछु अनुभव कएल अछि ओ एकर औचित्यकँ स्वतः प्रमाणित करैत अछि। ई सम्मेलन निरन्तर जारी रहबाक चाही। वैजू बाबू जुझारु लोक छथि, आयोजनकें सफल बनएबा लेल अहर्निश खटैत छथि। हाथ, पएर, मुंह सभ धरबामे संकोच नहि करैत छथि मां मैथिलीक प्रतिष्ठाक हेतु। एहन विराट हृदयी, समर्पित आ लगनशील व्यक्तित्व भेने मैथिली समादृत भेलीह अछि।

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक अनुभूति किछु किछु सुझाव देबाक लेल हमरा उत्प्रेरित करैत अछि। जँ ई भ' जाइत त सोनमे सुगन्ध भ' जइतैक ____ ई हमरा लगैत अछि।

सूझाओ

१. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन हयबाक कारणेँ एकर वैनर जे बनैक ताहिमे नेपालक किछुओ प्रतीक चिन्ह अवश्य रहैक।

२. कार्यक्रम सभ व्यवस्थित आ पूर्व निर्धारित होएबाक चाही। कार्यक्रम चलैत बेरमे व्यवस्थापन करब अस्तव्यस्तता लबैत अछि।

३. सभ कार्यक्रम, सहभागी वीच एकदिन पूर्वे वितरीत भ' जाए तँ उत्तम

४. अधिकार दिवस दिन मात्र भाषण नहि, कार्यपत्र प्रस्तुति आ टिप्पणीक कार्यक्रम राखल जाए। नेपालक प्रतिनिधिकेँ कार्यपत्र आ बजबाक अवसर अवश्य देल जाइछ।

५. मूल समारोहमे नेपालक प्रतिनिधित्व मंच पर अवश्य होयबाक चाही। ओ उपस्थिति आ वक्ता दुनू रुपमे होए।

६. आवासक व्यवस्था प्रति सतर्क रहल जाए।

७ स्मारिकाक स्तरीय प्रकाशन हो, जाहिमे विगतक सम्मेलन सभक सन्दर्भमे आलेख आ चित्रवाली अवश्य देल जाए।

८. कलकत्ता सम्मेलनमे एकर निर्वाह भेल अछि, एकरा आगूओ एही रुपमे बढाओल जाए।

९. अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक सहभागि सभक सूची १५ दिन पूर्व अन्तिम रुप द' सार्वजनिक क' देल जाइक आ संगहि 'मिथिला रत्न' पौनिहारक जीवनी फूटसँ प्रकाशित क' औचित्य प्रमाणित कएल जाए।

नेपालक साहित्यकार, मैथिली प्रेमी सभकेँ अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनसँ बहुत किछु आशा छैक। दुनू देशमे मैथिली अपन अस्तित्व लेल लडि रहल अछि। एहनमे ई भैंटघांट, अप्पन____ अपनौती, दुख दुखक वंटवारा आपसी सम्वन्धकँ सुदृढ त करबे करैत अछि, लक्ष्य प्राप्तिक हेतु मोनकँ मजवूत सेहो बनबैत अछि।

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक महासचिव डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू एहि सम्वन्धक सूत्रकँ गसिआ क' पकडने छथि। हुनक इएह स्नेह, सद्भाव आ अपनैती नेपालीय राजनीतिक इतिहासमे मिथिलाराज्य'क स्थापनार्थ शक्ति आ वातावरण निर्माणमे सहायक भ' रहल अछि। हुनक जुझारु व्यक्तित्व एत्त प्रेरणाक स्रोत रहलए। हमसभ एहि सम्वन्धक निरन्तरताक अपेक्षा करैत छी। आ नेपाल भारत बिचक आपसी आ प्रेमक प्रतीक रुपमे चलैत आबि रहल एहि सम्मेलनक सफलताक कामना करैत छी।

फ्लैश बैक-रामभरोस कपडि भ्रमर

नरेश पाछाँ चलि गेल अछि, बहुत पाछां। प्रायः पचास वर्ष पाछां। गामक सहपाठी सभक संगे खेलए ओ। बहादुर नोकर रहैक ____वावूजी जंगलकातसँ लओने छलाह। एक बोलिआ, आदेश चाही, काम फत्तह कइएक दम लैत छल। से बाबूजीकें आदेश रहैक ____ गुरुजीलग पढ ल जएबाक छै से बहादुर लाख चिचिऔलो पर नरेशकँ कान्हपर बोकि कन्हाइ साहुक दलान पर गुरुजी लग दइए अबैक। ओत्त गेला पर गुरुजीक कांच करची अथवा खजूरक छडी ओकर सभ जीद हेरा दैक। ओ चुपचाप हाथमहक पाटीपर कारिख पोति कचरासँ साफ क चमकाब लागए आ तखन भठासँ लिखबाक प्रयास करए ____ क ख ग घ...।

''इस्स....'' गुरुजीक छडी जखन बाँहि पर पडैक तँ ओ लोहछि जाए। मन होइ भागि जाइ मुदा... वहादुरक डीलडौल आ पिताक आदेश मन पडितो मनमारि क पाटी पर आँखि गडा कखरा लिखबाक प्रयास कर लगए।

गुरुजीक ओहिठाम बटखरा कंठस्थ रहैक। ई कंठस्थ करब ओकर मजवूरी रहैक, ओना हिसावमे ओ ओहुना कमजोरी महशूस करए। चौठचन्दमे गुरुजीक संग घंटी बजबैत, काठक डंटाकँ बजबैत घरे घरे घुमनाई आ गुरुजीक डेरापर जा गुडचाउरक प्रसाद खएनाईक अपन आनन्द रहैक।

आनन्द तँ पानि नहि पडने हर हर महादेव बना गाम घुमबै काल सेहो अबैक। कोनो सहपाठीकँ सौंसे देहमे छाउर रगडि देल जाइत छलैक। माथपर आ बांहिमे सेहो अशोक पात सभ लपेटि देल जाइत छलैक। माथ पर जूट आ सनसँ जटा ताहिपर टीनकँ कैंचीसँ काटि चान लटका देल जाइक। हाथमे वावाजीके त्रिशूल आनि क ध देल जाइक। वस वनि जाइक महादेब। छौडा सभक हेंज पाछां पाछां हाक परैत जाइक ____हर, हर महादेव पानी देऊ अलिकती पुगेन, बढी देउ ! भाव रहैक महादेव पानी दीअ, कम सँ नहि भेल, बेसी दीअ....। जकरा दरबज्जा पर जाइक पानि उझलि दैक। मान्यता रहैक पानि देलापर वर्षाक संभावना बढि जाइत

छैक। वेचारे महादेव बनल बौआ बादमे थर थर कांपए, वच्चा सभ ताली पिटैत हंसैक। वाल सुलभ प्रताडना ओहि समयमे खूब प्रचलित रहैक। नरेश ओहि हेंजमे अगुवा रहय....।

नरेशक ठोढ पर अपने आप मुस्की दौडि जाइत छैक। वितलाहा क्षणक स्मरण कतौसँ गुदगुदा दैत छैक ओकरा। वालशोषणक विरुद्ध ओहो कतेक आलेख लिखि चुकल अछि, कतेको सेमिनार मे भाग ल भाषण छौंटि चुकल अछि। मुदा नेनामे नेनेद्वारा कएल ई अपराध शोषण नहि रहैक ! नरेश वाल सुलभताक ओ क्षण फेरसँ स्मरण करैत सिहरि उठैत अछि आ कतौ भोतिआ जाइछ पुन.......।

मुश्किलसँ ७ ८ वर्षक छल हयत। गामेक स्कूलमे पढए, मुदा संगति रहैक अपने टोल महल्लाक धीआपूतासँ। ताही मंडलीमे एकटा छौरी रहैक इजोतिया। ओकरे लगुआक वेटी। नीक रहैक कि अधलाह ओकरा तहिया ज्ञान नहि रहैक मुदा ओकरा संगे इजोरिया रातिमे अन्हरिया इजोरिया खेलैत ओ खूब प्रशन्न रहल करए। आंगनेमे दुनूपयर आगाँ पसारि वैसि , वाँहिके केहुनी लगसँ मोडि आगाँ पाछाँ करैत आ ताही लयमे दुनू पयरके सेहो आगाँ पाछाँ करैत पाछा मुँहे घुसकैत इजोतिया खेलल करए आ गाओल करए "आगेमाई ककरी के बतिआ..." त ओकरा नीक लगैक।

इजोरिया रातिमे चानक चारुकात बनल गोल घेराकैँ कौतुहल सँ देखैत काल माय रहस्यमय बोलीमे

समझबैक ई हमरा सभक पुरखा सभक वैसार छै इन्दर भगवान लग। कहै है निचाँ पानि विना अकाल पडल छै, पानि दिऔ। आब पानि हयबे करत....। नेनामे ई बात सत्य लगैक आ आश बन्हाई जरुर वर्षा हयत।

तेहने समयमे जट जटिन गीत होइक। टोलक महिला सभ जटा आ जटिन कनए आ गीत गाबि गाबि झूमए। ओहिमे पुरुष नहि, नेनाकैँ छुट रहैक। नरेश नियमित ओकर दर्शक रहए, ओकर संगी इजोतिया ओहि मंडली मे सामिक रहैक, ओ एकटक ओकरा सभकैँ झूकि क आगाँ बढैत आ तहिना माथ उठा क पाछाँ अबैत देखैत रहय.....।

नरेशकैँ फेर किछु मोन पडैछै, ठोढ पर हँसी अबैत अबैत रुकि जाइछै। भतखोखरि बुढिआक अंगनामे वेंग कुटि मैलाक संग पतली फेकि देल जाइ छल आ ओ वुढिआ भरि राति फेकनिहारिकैँ पुरा खनदानकैँ उराहि दैत छलैक। वेटी रोटी करैत रहैत छली। वास्तवमे वेंट कुटि क तए ओकरे आंगनमे फेकल जाइत छलै जे ओ बेसी गाडि पढि सकैत छलीह। राति भरि जुआन छौडी सभक धुमगज्जरिक संग वालसुलभ उत्सुकतासं पाछां पाछां दौगब महज खुशी दैत छलै। लगै दिनमे बहादुरक घीसिआ क गुरुजी के चटिसारमे ल जएबाक डरसँ मुक्त रातुक ई माहौल स्वच्छन्द छैक। ने वावूजीक डर, ने वहादुरके उठा ल जएबाक चिन्ता। वात वुझौक कि नहि, नरेश रमल रहैत छल ओहि खेलमे।

ओकरा तँ तखनो ने किछु बुझायल रहै जखन इजोतिया ओकर घरक पछुआर बला गाछी आ भुसा घरलग एकटा प्रस्ताव कएने रहैक नरेश,खेलबे अर्थ त ओकरा ओतेक नै वुझल भेलै मुदा ओकर इशारासँ आशय वुझने रहय आ डेरा गेल रहैक नहि, हम नहि खेलबौ। ठाढे ओ नासकार चलि गेल रहय। जँ कि इजोतिया ओकरा उमेर सँ बेसीक वुझाइक, ओ वातकैँ वुझैक, मुदा नरेश....।

पता नहि नरेशकैँ किए आइ पुरना बात मोन पड लागल छै। ओ भोरेसं अपन पोताक उदण्डपनीसं फिरिशान भेल अछि। एक तं भोरमे देरीसं उठत, उठि कत्त पडायत ठेकान नहि। स्कूल जएबाक कोनो जरुरी जेना नहि होइक। कुण्डलिया छौडा सभक संगत आ पता नहि गुटका, भांग, सिगरेट किंवा आनो कोनो नशा खाइत हो ,त मनमे आशंका उठल छै। खौंझायल मोने वरण्डाक खुरसीपर बैसि गेल। तखने ओकरा वुझएलै एक ई दिन अछि आ एक ओ दिन रहय।फेर भसिया गेल रहय। एखनो मोन थीर कहाँ भेलैए...।

माय जखन ओकरा दुनू मोडलहबा टांगपर लादि दुनू हाथ पकडि घुघुमना खेलबै तँ हिल्ला झुलबाक मजा ओ लेल करए। गीतकलय संगे झुलैत नरेशक वालपन महज देहमे गुदगुदी आ आनन्द मात्र उठा सकैत रहय वुझए किछु नहि।

मुदा जखन ओ टेल्हगर भेल त मायक नक्कल करबाक मोन होइक। अपन भातिजकैँ ओहिना टाँगपर ध झुलब लागय आ पढ लागय घुघुमना घुघुमना, बौआकैँ गढा देब दुनू कान सोना। ओकरो झुलबैत आनन्द लगैक आ बौआ सेहो हँसि, हँसि क अपन आनन्दक अनुभूति करबैत छल। ओना ओकर छोट छोट पयर हाथ बौआके बेसी काल सम्भारबाक अवस्थामे नहि रहैक, ओ उतारि दैक तुरते।

अपन नेनपनक उछल कुदक दूटा घटना मन पडिते सौंसे देह सीहरि जाइत छैक। बड मुश्किलसँ बचल रहैक आँखि ओकर..। आँगन मे दुनू भाइ खेलैत रहय। भैया तीर धनुष बना चलौल करए। एक बेर भेलै ई जे तीर सोझे नरेशकैँ आखिएमे लगलै वाम आंखिमे। सौंसे हाहाकार मचि गेलै, माय त बताह भ गेल छलीह। ओकरा कनैत कनैत बेहाल रहैक। गामेक टोटकासँ आँखि ठीक भेल रहैक। पता नहि माय कोन कोन दैब पीतरकैँ एहि लेल मानि देने छलीह। तहिना एकबेर गछुलीमे आम लुटए बेरमे अन्धाधुन्ध दौगल रहय नरेश, त गाछीमे गाडल एकटा खुट्टाक नोक सोझे कपारमे गरि गेल रहैक। माथ सुन्न भ गेल रहैक। मायके जखन पता लगलै त ओ हकासल पिआसल दौगलि रहय घराडी पर आ ओकरा समेटि क गामक बैद्य लग लए जाएकैँ उपचार करौने रहैक।

वाल सुलभ जीवन शैली, गार्मसँ जनकपुर धरिक यात्रा, पढाइ आ डिग्री सभक अपन अपन कथा रहैक। धन खेती जे होइक, शिक्षामे पछुआएल परिवारक प्रत्येक ओ संघर्ष ओकरा भोग पडलै जे एकटा सभ्य समाजक अंग बनबा ले जरुरी होइत छैक। आइ जखन उमेरक चारिम प्रहरमे जएबा ले तैयार अछि ओकरा लगैछै ओ फेरसं

बचपन दिश लौट चाहैए। दिन रातिक षडयन्त्र, राजनीतिक विद्रुपतता, चन्दा, अपहरण, हत्या किंवा दिन दिन बढैत असुरक्षाक भय आ आतंकसँ त्रसित समाजमे तनावक जिनगी जीबाक अर्थेकी?

मुदा फेरसँ ओ स्वयं प्रश्न करैत अछि की ओ नेनपनक स्वच्छन्द, सहज स्नेहसं भरल किछु साल घूरि सकत ! चलु ओ वितलहा वर्ष नहि घूरत ई सत्य थिक, अपने तँ ओहि युगमे जा सकैछी ने ! हँ, ई संभव छैक। भ सकैछ एना भेने तनावमे कमि अबैक, मुंहपर चापलुसीक वोल झाडैत, परोक्षमे चरित्र हत्याले उताहुल सरसमाजक व्यक्तित्वक दोगला मुँह देखबाक दुर्भाग्यसँ बंचि तँ सकै छी। हमहीं किएने अपनाकँ नेना बनाली !

नरेशकँ अपने सोचपर हँसी लगै छी। की ई संभव छैक। ओहुना साठिक बाद लोक नेनपनमे पुनः प्रवेश क जाइए कहाँदन। ओकरो अवस्था तँ आबिए रहल छैक। चलल जाए एक बेर सएह सही....।

नरेशकँ जेना सौंसे देह हल्लुक लगैत छैक। वरण्डासं उठैत अछि। आंगन मे अबैत अछि। पोता आबि गेल छै। ओकरा डँटबाक इच्छा रहितो ओ चुप रहैत अछि। प्रारंभ एत्तहिसँ हुअए तँ हर्जे की?

बिनीत ठाकुर

बाँहिके गोदना कविता

रैहगेल निशानी आब बाँहीके
गोदना
अनाहकमे मारल गेलै बुधनीके
बुधना

उमेरोनै बेसी भेलरहै मात्र बिस
मरैतकाल ए राम बजलैनै ईश
फटलैजे बम त शरीर भेलै चिथरा
दैवोनै गवाही त कहबै की ककरा

लागल छै गाराभुकुर बुधनिके
चिन्ता
के करतै आब पुरा ओकर
बच्चाके सिहन्ता

ऐ देशेके लागलछै सतीक श्राण
एत सिधा सोझा जनताके केउ नै
माई बाप

भरल नोर मे

केहन सपना हम मीता देखलौँ
भोर मे
माय मिथिला जगाबथि भरल
नोर मे
कहथि रने वने घुमी अपन
अधिकार लेल
छैं तूँ सुतल छुब्ध छी तोहर
बिचार लेल

कनिको बातपर हमरा तूं करै
विचार
की सुतलासँ ककरो भेटलै अछि
अधिकार
जोरि एक एक हाथ बनवै जो
लाखों हाथ
कर हिम्मत तूं पुत्र छियौ हम
तोहर साथ

अछि तोरापर बाँकी हमर दूधक
कर्ज
करै एहिबेर तूं पुरा सबटा अपन
फर्ज
लौटादे हमर आब अपन
स्वाभिमान
पुत्र तूं छै महान तोहर कर्म छौ
महान



बी.के कर्ण (1963-)

पिता श्री निर्भय नारायण दास गाम- बलौर, भाया- मनीगाछी, जिला-दरभंगा। पैकेजिंग टेक्नोलोजीमे स्नातकोत्तर आ यू.एन.डी.पी. जर्मनी आ इग्लैण्डक कार्यक्रमक फेलोशिप, २२ वर्षक पेशेवर अनुभव आ २७ टा पत्र प्रकाशित। डायगनोस्टिक मिथिला पेंटिंग आ मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक समस्यापर चिन्तन। सम्प्रति इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग, हैदराबादमे उपनिदेशक (क्षेत्रीय प्रमुख)।**–सम्पादक**

संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल

मिथिलाक विकास क़ेना आ कखन

विकासक बिना जिनगी बड कठिन। विकासक रस्ता बड उबड ख़ाबड।

संघर्ष सदिखन। डेग डेगपर। बिना संघर्षक विकासो संभव नहि।

सर्वांगीन विकासक हेतु व्यक्तिगत विकासे आधार होइछ।

बहुत किछु गमेलहुँ मुदा आब नहि।

मैथिल युवा मोर्चा तैयार भए रहल अछि। विकसित वा अविकसितक बिच-बिचवामे छी।एतवा तँ तए अछि जे आर्थिक विकासक लेल सुर सार भए रहल अछि। आर्थिक विकास एकटा गति होइछ जे कखनो कम वा बेशी।

आर्थिक उपार्जनक लेल हम सब सकारात्मक प्रयासमे सुतल छी। जहिया उठब़ तहिया सिंह जकाँ दहारब वा साँप जकाँ फूफकारब।

जय श्री हनुमानजी एक समयमे अपन शक्ति बिसरि गेल छलाह, तहिना हम सब मैथिल अपन शक्ति बिसरौने छी।

बहुतो मैथिल प्रवाशी जीवनम़े अपन आर्थिक सक्षमता मे वृद्धि केलाह, परञ्च हुनक धिया पूता मिथिला मैथिल सँ कोसो दुर !!! पैघ संकट। ग्रेट रिस्क!!!

मैथिलक सम्मान मैथिली थीक आओर एकर अपमान मैथिले कऽ रहल छथि। अपने परिवारमे मैथिलीपर मतांतर। मैथिली घरेमे टूअर।

मैथिल पलायनसँ मैथिलीक आकस्मिक अन्त। केऽ विलाप कडत।

पलायन दुइ स्थितिमे-

१. जीवन भरण पोषणक लेल

२. व्यक्तिगत उद्देश्यक पूर्तिक लेल

मिथिलामे की कमी

डेग डेग पर पोखरि

घर घरमे पतरा-पोथी।

गाम गाममे जाति पाँति

छोटका पाँति लैऽ कऽ एके परिवारमे शानक घमासान।

मैथिली संकटमे, आवश्यकता अछि कोमल स्पर्शक।

कतेको बेर बिहार सरकार द्वारा मैथिली भाषापर सीधा प्रहार भेल। परम दुखक बात ई अछि जे किछु मैथिल मैथिलीकँ तोड़यमे लागल रहल छथि। परञ्च चिंताक कोनो बात नहि। मैथिली अछि अटल-अविचल। मैथिलीक जड़ बड़ मजगूत।

हम मैथिलसब अपन मौलिक कर्तव्य बूझि आ अपन भाषा सँ अथाह लगन लगावी।

बंगाली-पंजाबी-मराठी कँ देखु जे अपन मातृभाषाक प्राणोंसँ ऊपर स्थान देने छथि। एतबाऽ नहि हर मंचपर अपन भाषाक प्रति स्नेह तथा सम्मान कन्रिको कट्टौती नहि करैत छथि। परञ्च़ हम मैथिल कतेक निष्ठा रखैत छी। एहन किछुए मैथिलके देखल जा सकैछ।

बंगालमे बंगाली, पंजाबमे पंजाबी। एहिना बहुतो प्रादेशिक राज्यम़े अपन-अपन भाषाकँ अपन जीऽ जान सँ पैध लगाव रखने छथि।

बंगालीक भाषा बंगाली

पंजाबीक भाषा पंजाबी

मराठीक भाषा मराठी

बिहारीक भाषा की?

हिन्दी-भोजपुरी आ मैथिली

हिन्दी तँ राष्ट्रभाषाक अस्तित्वमे अछि। भोजपुरी काफी लोकप्रियता हासिल कय रहल अछि। भोजपुरी सिनेमा उद्योगकँ काफी सफलता भेटल। मुदा मैथिलीक स्थिति बिहारमे केहन अछि से की कहल जा्इछ। मैथिलीक स्थिति मिथिलामे बड़ कमजोर।

गैरमैथिल बिहारी कतेक प्रतिशत मैथिलीक इज्जत करैत छी।अनुमानित प्रतिशत बड़ कम होयत।

मैथिल अपनाकँ गोद लेल मैथिल जेकाँ आचरित कहिआ धरि करताह?

मैथिली सशक्त भाषा अछि। एकर अपन इतिहास अछि। परञ्च हम सब मैथिली बाजय वालाकेँ आ लिखय वालाकेँ पिछड़ल बुझैत छी।अनेक भाषा सीखू बाजू मुदा मैथिलीकेँ छोड़ि कऽ नहि। मैथिलीकेँ बोझ नहि बुझियौक।

मैथिल जे कहियो मैथिली छोड़ लन्हि ओ मानसिक रूपसँ गरीब भए गेलाह। आर्थिक विकास भेलाक तदुपरान्तों अपन मनसँ बहुत गरीब। अमेरिकामे जे भारतीय मूलक स्थिति पर जे एकटा अमेरिकन पत्रकार अध्ययन केलाह जरूर देखल जाए।

Family Ties and the Entanglements of Caste http://www.nytimes.com/2004/10/24/nyregion/24caste.html

अमेरिकन क़ी मिथिलामे रहि सकैत अछि

नहि कथमपि नहि।

की अमेरिकन आ कोनो विकसित देश व राज्य के एकोटा लोक अपन मैथिली भाषा अपनायत

नहि कथमपि नहि।

बेसी मैथिले भेटताह ज़े मिथिला आ मैथिली छोड़ि ताहिमे सबसँ आगू ।

मैथिल मिथिलाक सीमाक बाहर बड मेहनती परञ्च मिथिलाक सीमाक अन्दर बड आलसी। मेहनती मैथिल कतौऽ रहथि धाक जमौने छथि परञ्च मैथिली पर जेना मतसुन। एको रति रू चि नहि रखैत छथि, हुनकर धिया पुताक बाते छोडु।

गिर्यसन जकाँ खोजी एहि पर अलग विचार रखैत छथि।

मैथिलीके बोझ बुझय वाला मैथिल सोचि विचारमे बड़ गरीब।

गरीबी झेलबाक मानसिकता मैथिल मे कियाक बेसी।

मिथिलामे मौलिक सुख सुविधाक कमी कोन कारणे। बहूतो कारण भए सकैछ। गरीबीमे ककरा नेऽ इ कष्ट झेल्ऽ पऽड़ैत।

मैथिल मेहनती तँ मिथिलामे गरीबी किएक

गरीबी झेलबाक मानसिकता किएक !!!ग्रेट रिस्क !!!

कतेक मैथिल कहताह जे भाग्यक लिखल कष्ट अछि। एहि प्रश्नक जबाब खोजि रहल छी जे पाँच करोड़क मैथिलक एके रंग भाग्य कियाक। गरीबीक झेलबाक मानसिकता कतेक दिन तक।

हम मैथिल सब वाक विवादमे बड प्रखंड छी। हरएक बातपर अपनाक अनुभवी प्रमाण दैत छी।

मनसँ वाक पटूतामे धनी। जीवनक मौलिक आवश्यकताक पूर्तिकक लेल हम सब मैथिल बड़ गरीब।

गरीब मानसिकता गरीबी झेलबाक लेल सदिखन तैयार।

स्वस्थ नेताविहीन मैथिल समाज अपन मौलिक हक सँ दूर कोसो दूर अछि।

जड़ जड़ हालतमे मैथिल समाज अपन देशक आजादीक बाद मिथिलामे आधारभूत ढाँचाक शूरूआतोऽ तँ नहि भेल।

ककरा कहबै के सूनत के सुधि लेत।

रिस्क आ मैथिल

मुद्दा व्यवसाय

विकसित देश वा विकसित राज्यक पाछु यदि सुक्ष्म रूपसँ देखू तँ भेटत जे ओहि क्षेत्रक व्यवसाय विकासक मुल कारण अछि। मिथिलामे विद्वान वा ज्ञानी मैथिलक कमी नहि। व्यापारी वर्ग नोइसो बराबरि नहि।

मैथिल व्यापारो करताह ?

सिन्धी माड़वारी आ पंजाबी समाज मिथिलामे अपन व्यवसायमे मैथिल जकाँ संस्कार अपनओने के साथ केवल ५० सालमे बढ़िया धाक जमा लेलाह, परन्तु हम मैथिल जे छी जे डींग हकैसँ फुर्सतेऽ नहि भेटि रहल अछि।

मैथिल मिथिलामे की करताह ?

मिथिलामे किछु मैथिलके देखबाऽ मे आयत ज़े मिथिलाक सिन्धी माड़वारी आ पंजाबी के व्यवसायमे नौकरी करताह।

हिन्दी अखबार माँगि कए पढ़ताह परञ्च मिथिलाक विद्वान वा ज्ञानी अखबार प्रिन्ट आ बाजार मे आनबाक जोखिम नहि ऊठैऽताह।

मिथिलामे चाहक दुकान पर प्रतिदिनक दिनचर्यामे लालु के लालूवाणी पर अखण्ड बहस करताह।

मिथिलामे सुइदसँ किछु मैथिल सुइदखोर व्यवसायमे वृद्धि केलाह हऽ। कोनो नियमके पालन नहि कए रहल छथि। अपन नियम बना कऽ अपराध मे रमल छथि। मिथिला बैंकक शुरआत होए अपराधी सुइदखोर मैथिल के झेलनाइ एकटा बढ़ पैघ अपराध अछि।

!!!!Great Risk !!!!

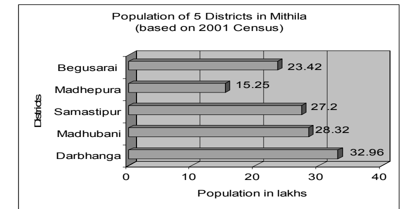
मुदा बहुतो अछि पर रिक्सो सँ ज्यादा भयावह।

सन २००१क जनगणणा के अनुसाऱ मिथिलाक आबादी करीब ६ करोड़ छल। जाहिमे व्यवसायिक वर्ग २ प्रतिशतो कम।

बहुतोसँ पुछलहु जे एतबा प्रतिशत किएक कम अछि परञ्च एकर कारण की से नहि जानि सकलहुँ।

मिथिलासँ आयात आ निर्यातक बातेऽ छोड़ू, व्यापार तँ बद सँ बदतर

मिथिलाक पाँच जिलाक केस स्टडी:



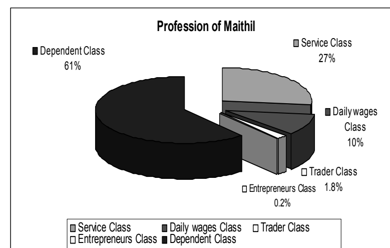
पांचो जिलाक कुल आबादी सन २००१ जनगणनामे करीब एक करोड़ अठाइस लाख छल। जनसंख्या अनुमानित ५ वा ७ प्रतिशतसँ प्रतिसाले वृद्धि भ रहल अछि। एकटा बात महसूस भऽ रहल अछि जे मिथिलामे गरीबी कम भेल अछि। यदि सन १९८० सँ पहिने हरेक गॉवमे हरेक दिन ४ या ५ घरमे उपवास रहैत छलैक़ परञ्च से उपवास आब

गरीबीक उपवास पूजा पाठक उपवास होइत अछि।

मुदा भौतिक सुविधाक पिछड़ापन तँ पराकाष्ठा पर अछि। जिनगी भगवानक भरोसे।

पांचो जिलाक मैथिल पर यदि ध्यान देल जाए तँ एकटाक सदस्य परिवारमे नौकरी करयबाला बॉकी आश्रित सदस्य किछु नहि करयबाला बल्कि गप छटय बाला आ शान बघारय वाला।

पर आश्रित भेनाए अपनेमे एकटा रिक्स एहन जे भावुक जरूरतसँ ज्यादा आ कर्मठहीन ज्यादा बनाबैत अछि। !!!!ग्रेट रिस्क !!!!



जनसंख्याक वृद्धि मानु जे कष्टक पहाड़। हर क्षण हरेक दिस स्थिति दयनीय हेबे कड़त।

मिथिलामे मैथिल रिक्स लेताह ?

मिथिलामे मैथिल तँ अपन जिनगीक रिक्स लेबाऽमे सर्वोपरि छथि। जेना की सोचु नदीक के ऊपर जड़ जड़ हालमे पूल ओहि पर खचाखच बस् आ रेल गाड़ी जाहिमे छत सेहो भड़ल। फोटो देखल जाए।

सोचु कनिऽ जे जिनगी आओर मौत के बीच केवल एकटा रिक्स फैक्टर अछि।

मैथिल जिनगीक रिक्स हर क्षण।

मिथिलामे जिनगीक रिक्स बड़ आसान पर व्यापारक रिक्स बड़ कठिन अछि।



वृषेश चन्द्र लाल

जन्म 29 मार्च 1955 ई. कँ भेलन्हि। पिताः स्व. उदितनारायण लाल,माताः श्रीमती भुवनेश्वरी देव। हिनकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि। मूलतः राजनीतिककर्मी । नेपालमे लोकतन्त्रलेल निरन्तर संघर्षक क्रममे १७ बेर गिरफ्तार। लगभग ८ वर्ष जेल । सम्प्रति तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष। मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित। आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पीं कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली रुपान्तरण तथा नेपालीमे संघीय शासनतिर नामक पुस्तक प्रकाशित। ओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक प्रजातांत्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि। नेपाली राजनीतिपर बरोबरि लिखैत रहैत छथि।-**सम्पादक**

फेकनाक दिआबाती

दिआबातीमे
फुलझडी, अनार भुइँपटका
आ कनफर्रा फटक्कासभसँ कात
आँखि बचा-बचाकय
फेकना ताकि रहल अछि तेल
बुताएल दिआसभमे
एक मुठि भातपर
सुअदगर तिलकोरक तरुआ लोभेँ!

क्षणक छनाक...!

१
चाही सभके
शासन चलबएला
अनुशासन !
२
लाल पहाड
महाभारतबला ?
खूनक ढेरी !
३
मीत अपने
हएबन्हि, ओ किछु
अओर छथि !

४
'एकता' माने
सभलेल नै खाली
'एकटा'लेल !

५
गढैअछि शब्द
काबिलसभ, बात
चिबबैलेल !

६
सफल भेल
अपनेस ? जरुर

फेरल हैत !

७
सनकी अछि
दोष देखोनिहार
धरतीपर !

८
बरिआतमे
छिटल गेल इत्र
गन्हाइ छलै !

९
पुरान मन
रचतै युग नव ?
नइ हेतै !

१०
गैंडाक खाक
ओकर शिकारक
कारण थिक !

छवि झा/ कुमुद सिंह

लेखिका छवि झा पिछला तीस वर्ष स मिथिला चित्रकला कए अर्थ पर काज कए रहल छथि। संप्रति ओ 'स्नेह छवि मिथिला स्कूल ऑफ आर्ट, दरभंगा क निदेशक छथि आ एकरा परिभाषित करबा मे लागल छथि।
लेखिका कुमुद सिंह मैथिलीक पहिल ई-पेपर समादक संपादक छथि।–**सम्पादक**

मिथिला चित्रकला : अर्थक अधिकता आ सार्थकता

1960 क दशक मे मिथिला चित्रकला कए दीवार स कागज पर उतारबाक प्रयास शुरू भेल छल आ तहिए स शुरू भ गेल एहि चित्र मे नव-नव प्रयोग। तहिये स शुरू भेल एकर अर्थक नव संसार जे मिथिलाक सोच आ संस्कृति स पूरा भिन्न अछि। नव प्रयोग आ पुरान अर्थक एहन मिश्रण भेल जे कलाक पूरा स्वरूप आ अर्थक औचित्य पर सवाल उठा देलक।

सब कलाकृतिक एकटा अर्थ होइत छैक। जेकर कलाकृति स घनिष्ट संबंध होइत अछि। कलाकृति आ ओकर अर्थ ओ कृतिक सार्थकता कए सिद्ध करैत अछि। मिथिला चित्रकलाक संबंध मे जखन विचार करैत छी त कएकटा गप सामने अबैत अछि, मुदा एकटा गप स्पस्ट होइत अछि जे मिथिला आ भारतक विद्वान् एहि कलाक प्रति आइ धरि अपन नजरिया नहि बना सकलथि अछि। पिछला पांच दशक मे विदेशी विद्वान जे एहि कलाक प्रति नजरिया स्थापित केलथि अछि, देशक विद्वान ओकरे आधार मानि कए आगू बढैत रहलथि अछि। च पूछु त देशी विद्वान कहियो अपन नजरिया प्रस्तुत करबाक प्रयास तक नहि केलथि। मिथिला चित्रकलाक एहि गुप्त आ जटिल वास्तविकता कए धुंध स निकालबाक पहिल प्रयास सेहो अमरीका मे कैल गेल। 1984 मे अमरीका स प्रकाशित मानव शास्त्र पर आधारित पत्रिका मे पहिल बेर एहि गप कए रोचक आ गंभीरतापूर्वक उठाउल गेल जे अर्थक अधिकता स केना एहि कलाक सार्थकता खत्म भ रहल अछि।

उत्तर बिहार आ नेपालक तराई मे पसरल मिथिला क महिला द्वारा अपन घरक दीवार आ आंगना मे बनाउल जाइवाला एहि चित्रक संबंध मे एखन धरि कसक बेर लिखन जा चुकल अछि आ कसक ठाम कहल जा चुकल अछि। एतबे नहि कई टा अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर एकर प्रस्तुति सेहो भ चुकल अछि। मुदा एकर संबंध मे लिखल साक्ष्य बेसी पुरान नहि अछि। 1949 मे पहिल बेर एहि पुरातन कलाक संबंध मे कागज पर किछु लिखल गेल। डब्ल्यू जी आरचर अपन किताब मे एहि चित्रकला कए अद्भुत आ आश्र्चर्यजनक कहने छथि। मुदा 1962 मे प्रकाशित लक्ष्मीनाथ झाक पुस्तक मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला सही मायने मे एहि चित्रकला पर पहिल आधिकारिक दस्तावेज अछि। देसी नजरियाक संग-संग एकर भाषा मे सेहो हिंदी आ मैथिलीक मिश्रण अछि, जाहि स अर्थक भाव अंगरेजी स बेसी साफ बुझबा मे अबैत अछि। देशी नजरियावाला एहन पुस्तक कए पाठक तक नहि पहुँचब एहि कलाक अर्थक अधिकताक मूल कारण कहल जा सकैत अछि।

मिथिला चित्रकलाक अर्थक संबंध मे समय-समय पुस्तक प्रकाशन होइत रहल अछि। 1952 मे ब्राउन आ लेन्यूइस, 1966 मे माथुर, 1977 मे इब्स विको (वैक्यूवाद) आ 1990 मे जयकर एहि कलाक अर्थक संबंध मे बहुत किछु लिखलथि। अविश्वसनीय मुदा सत्य अछि जे एहि किताब सब मे जे किछु लिखल गेल अछि ओ मिथिला मे प्रचलित अर्थक सँ सर्वथा भिन्न अछि। एहि संबंध मे अमरीकाक चीको विश्वविद्यालयक कैरोलिन ब्राउन लिखैत छथि जे मिथिला चित्रकलाक अर्थ कए हरदम गलत आ भ्रमक तरीका स विश्वक समक्ष राखल गेल अछि। एकर मुख्य कारण इ रहल जे एहि पर देशी खास कए मिथिलाक विद्वान गंभीर काज नहि केलथि, जे काज भेल ओ विदेशी विद्वानक शोध स भेल। मिथिलाक अंगना मे बनाउल गेल एहि चित्रक संबंध मे पुख्ता जानकारी लेब कोनो विदेशी लेल हरदम एकटा चुनौती रहल अछि। लोककला कए बुझलाक बाद ओकर सही अर्थ बुझब आ फेर ओकरा सही रूप मे परिभाषित करि अभिव्यक्त करब कोनो विदेशी शोधकर्ता लेल राई क पहाड़ सन काज अछि। 1986 मे एसैड, वैल, मारकस आ फिसर, 1988 मे क्लिवाड आ 1992 मे वूल्फ क आलेख स बुझबा मे अबैत अछि जे ओ किछु एहने सच्चाई स सामना केने हेताह। कैरोलिन ब्राउन एहि संबंध मे साफ तौर पर लिखैत छथि- हम पश्चिम कए लोक एहि चित्रकला कए परिभाषित नहि कए सकैत छी, ताहि कारण हम सब एहि अद्भुत विषय कए तोडि-मरोड़ी कए पेश करैत रहलहुं अछि। हालांकि

एहि मे कोनो संदेह नहि अछि जे एकटा समाज मे भिन्न-भिन्न लोकक अगल-अलग नजरिया भ सकैत अछि, ओ एकटा चित्रक भिन्न-भिन्न अर्थ कहि सकैत छथि, मुदा विभिन्न अर्थक बीच मे एकटा समानता होइत अछि, जे अर्थ कए कतहु ने कतहु जोड़ैत अछि। उदहारण लेल मिथिला मे पुरुख कर्मकांड, न्यायशास्त्र सन शास्त्रीय विधा मे नीक पकड़ रहैत छथि आ ओहि स जुड़ल पावैन-तिहार क व्याख्या नीक जेकाँ कए लैत छथि, ओतहि मौगी घरेलू पावैन-तिहार पर नीक पकड़ रखैत छथि आ ओकर अपन अनुसारे व्याख्या सेहो करैत छथि। एहि लेल कुलदेवीक पूजा या गौरी पूजा मे पुरुखक योगदान कम देखबा मे अबैत अछि।

एकर पाछु कारण इ अछि जे अत्यंत गूढ़ संसार आ अत्यधिक विकसित समाजक सबटा गपक ज्ञान राखब असंभव अछि। ओना मिथिला समाजकँ अत्यंत विकसित समाज बहुत कम विद्वान मानने छथि। जेना कि 1991 मे दरिदा आ 1994 मे वाल साफ तौर पर लिखने छथि जे एहि चित्रकलाक सही अर्थ मिथिला मे आब गिनल-चुनल लोक बता सकैत अछि। वेल क कहब अछि जे मिथिला मे जे चित्रक अर्थ कहि सकैत छथि ओ चुप रहय चाहैत छथि, जखन कि अर्थ नहि जननिहार लोक कए चुप राखब एकटा कठिन काज अछि। ओना एहि संबंध मे ब्राउनक मत किछु अलग अछि। ब्राउन कहैत छथि, 'इ सच अछि जे आम मैथिल एहि कलाक संबंध में कम जानकारी रखैत छथि, मुदा बहुत विद्वान लेल इ कोनो महत्व नहि रखैत अछि जे मैथिल एहि संबंध में कतेक बुझैत अछि आ की कहैत अछि। अधिकतर विद्वान मैथिलक भावना कए अपन शोध मे तोडि-मरोडि कए प्रस्तुत करबा स पाछु नहि हटला अछि। दुर्भाग्य अछि जे एखन तक कोनो देशी विद्वान एहि तथ्य कए रेखांकित नहि केलाह अछि, मुदा ब्राउन अपन मिथिला प्रवासक दौरान किछु एहने महसूस केलीह।

असल मे सबस पैघ गप इ अछि जे पाश्चात्य संस्कृति, व्यवहार आ शिक्षा हमरा लोकनि क सोच कैँ दबा देलक अछि या इ कहू जे सीमित कए देलक अछि। एकर अलावा हमरा लोकनि मे अनुवाद करबाक क्षमता सेहो कम भ चुकल अछि। आब सवाल उठैत अछि जे एतेक जटिल आ गुप्त तथ्यक कोनो एक व्यक्ति द्वारा कसल अनुवादकँ सर्वोच्च मानल जा सकैत अछि? एहि ठाम इ कहब जरूरी अछि जे एकटा चित्रक कई टा अर्थ भ सकैत अछि, मुदा ओकर सूत्र दूटा नहि भ सकैत अछि। वैह एकटा सूत्र ओकरा आन स भिन्न करैत अछि। एहि सूत्रक चारूकात ओकर अर्थ घुमैत रहैत छैक। एहन सूत्र मिथिला मे एखनो किछु महिलाकँ बुझल छैन, मुदा ओ निश्चित रूप स व्यावसायिक नहि छथि। ताहि लेल हुनका स ओ सूत्र बुझब कोनो देशी विद्वान लेल कठिन काज अछि, एहन मे विदेशी विद्वानक गप करब बेकार अछि। दरअसल मिथिलाक मौगी एहि सूत्रकँ अपन शरीरआ आत्मा मे बसा रखने छथि आ नव पीढ़ीकँ थोड़े-थोड़े कएकँ कए बुझाउल जाइत रहल अछि। एहन मे अल्प ज्ञानी स जानकारी लेलाक बाद विदेशी विद्वान मिथिलाक सूत्र जनिनिहार महिलाक नजरअंदाज कए दैत छथि।

मिथिला चित्रकला क सबस प्रचलित चित्र कोहबरक पुरैन कए ल कए सबस बेसी भ्रमक स्थिति अछि। अधिकतर विद्वान एकरा कोहबर नाम स परिभाषित केलन्हि अछि, जखन कि पुरैन कोहबरक अनेक चित्रगुच्छक एकटा सदस्य मात्र अछि। आइ जे पुरैनक स्वरूप देखबा मे आबि रहल अछि, ओ जानकार महिला मे भ्रम पैदा कए रहल अछि। हालांकि एतबा अवश्य अछि जे एकटा गोलाकार आकृतिक चारुकात छह टा मौगिक मुँह बनाउल गेल अछि, जेकर बीच मे सातम मुँह सेहो अछि जे छह टा मुँह स कनि पैघ आकारक अछि। एहि चित्रकँ रेखाचित्रक रूप मे बनाउल गेल अछि। पुरैनक सूत्र पर बनाउल गेल एहि रेखाचित्र स भ्रण हेबाक कईटा कारण अछि। मिथिला मे पुरैन रेखाचित्र नहि, बल्कि भित्तिचित्र अछि आ पाँचटा रंग सँ बनाउल जाइत अछि। हाँलाकि आइ अधिकतर कागज पर एहन चित्र बनाउल जा रहल अछि, लेकिन एहि चित्रक विशेष मे साफ तौर पर कहल गेल अछि जे एकरा दीवार पर बनाउल जाइत अछि। मिथिला मे रेखाचित्रकँ अरिपन कहल जाइत छैक आ ओ जमीन पर बनाओल जाइत अछि। ओनाओ मिथिला मे पुरैनक दू टा सूत्र अछि। एकटा ब्राह्मा ण आ दोसर कर्णकायस्त लोकनिक पुरैन। दूनू मे सूत्रक अंतर अछि। मुदा एहि चित्र मे एकर प्रारूपक कोनो चर्च नहि अछि। सातटा मौगिक मुँहक संग साँप, कछुआ, माछ आदिक चित्रक औचित्य जखन मिथिलाक लोक लेल बुझब कठिन अछि तखन विदेशी की बुझत? विदेशी विद्वान लेल इ मात्र एकटा भीड़वाला चित्र अछि, जाहि मे संदेशक कोनो स्थान नहि अछि। बहुत रास विदेशी विद्वान त एकरा जादू-टोना आ भूत-प्रेत लेल बनाउल गेल चित्र कहलथि अछि। मुदा ब्राउनक कहब अछि जे इ पुरैनक नव रूप अछि आ कायस्त प्रारूप स मिलैत-जुलैत अछि।

मिथिला मे पुरैन कमलक लत्तीकँ कहल जाइत अछि। ब्राह्मण प्रारूप मे नौ आ कायस्थ प्रारूप मे सातटा कमलक पात दर्शाउल जाइत अछि। चूंकि कमलक लत्ती पानि मे होइत अछि, ताहि लेल एकर संग-संग पानि मे रहैवाला वस्तु आ जीवक चित्र बनाओल जाइत अछि। लक्ष्मीनाथ झा एहि संबंध मे लिखैत छथि जे पुरैन मुख्य रूप स वंश वृद्धिक लेल नव दंपति स सांकेतिक अनुरोध अछि। जेना कमलक एकटा लत्ती पोखरि कए कहियो कमल विहीन नहि होआए दैत अछि, तहिना नव दंपति कए घर कए कहियो वंश विहीन नहि हुए देबाक कर्तव्य निभेबाक चाही। एतबा त जरूर अछि जे 20वीं शताब्दी मे पश्चिम मे पलल-बढ़ल कोनो व्यक्ति एहि स्त्रीत्व कए(स्त्री कए हृदय मे वास करैयवाला भावना) घेरा नहि बुझि पाउत। आइ जखन बियाह एकटा अलग अर्थ ल चुकल अछि, एहन मे पुरैनक औचित्य जरूर प्रासंगिक भगेल अछि।

1960 क दशक मे एहि चित्र कए कागज पर उतारबाक प्रयास शुरू भेल छल आ तहिए स शुरू भेल एहि चित्र मे नव-नव प्रयोग। तहियै स शुरू भेल एकर अर्थक नव संसार जे मिथिलाक सोच आ संस्कृति स पूरा भिन्न अछि।

नव प्रयोग आ पुरान अर्थक एहन मिश्रण भेल जे कलाक पूरा स्वरूप आ अर्थ क औचित्य पर सवाल उठा देलक। सच कहल जाए त मिथिलाक महिलाक एहि विलक्षण प्रतिभा कए परिभाषित करबा मे एखन धरि कोनो विद्वान सफलता नहि पाबि सकलथि अछि। समस्त मिथिला मे बनाउल जाइवाला एहि चित्र कए किछु चारि-पांच टा गाम मे समेट देबाक अलावा इ विद्वान लोकनि एहि चित्र कए कएटा अनपढ़-गँवार मौगी द्वारा बनाउल गेल चित्र सँ बेसी किछु नहि साबित कए सकलथि अछि। मिथिला मे एखनो कई टा महिला अपन फाटल पुरान कॉपी निकालि देखबैत छथि, जाहि मे कईटा विदेशी विद्वानक लिखल वाक्य अछि। दुख आ तामस तखन होइत अछि जखन कॉपी पर लिखल वाक्य पढ़ैत छी, जाहि मे लिखल रहैत छैक जे इ चित्र एकटा पिछड़ल समाजक गवांर, अनपढ़ आ मूर्ख महिला द्वारा बनाउल गेल अछि। विदेशी विद्वान मे इ सोच अचानक नहि आबि गेल अछि। हुनका कई प्रकार स इ बतेबाक बेर-बेर प्रयास भेल अछि। दुनिया मे इ धारण कए स्थापित करबाक श्रेय इब्स विको कए अछि। विको स बेसी शायद कोनो विद्वान एहि चित्रकला पर काज नहि केलथि अछि, मुदा ओ जतेक एहि चित्रक करीब अबैक कोशिश केलाह, एकर अर्थ स ओ ओतेक दूर होइत गेलाह। विको राय औवेन्स क संग एकटा फिल्म सेहो बनौलथि, जेकर नाम 'मुन्नी अछि। ओ एकटा फ्रेंच फिल्म सेहो बनउलथि, मुदा चित्रक अर्थ बुझबा आ बुझेबा मे सब बेर असफल भेलथि। विको तखनो हार नहि मानलथि, ओ 1994 मे एकटा विडियो फिल्म 'मिथिला पेंटरस... बनौलथि, मुदा नव किछु नहि कहि पाओलथि। आइ स्थिति एहन भ चुकल अछि जे समाजक सब लोक इ बुझबा मे लागल अछि जे आखिर इ परंपराक कोन वस्तुक बारे मे थिक।

एहि चित्रकलाक संबंध मे सबसँ लोकप्रिय स्रोत विकोक 1977 मे छपल किताब' द वीमेंस पेंटर ऑफ मिथिला... अछि। जखन कियो एहि पुस्तकक एक-एक टा चित्र कए गौर स देखैत अछि आ ओकर रूपरेखा कए पढ़ैत अछि त ओकर सामना एकटा आशचर्यजनक, अद्भुत आओर लगभग असंभव सन प्रतीत होइवाला संसार स होइत अछि।

विको लिखैत छथि जे मिथिला समाज मे मुख्यपात्र महिला छथि आ एहि ठाम पुरुषक भरमार अछि। एहि ठाम युवती हमउम्र युवक स विवाह करबा लेल तरह-तरह स प्रयास करैत छथि।(1977, पृष्ठ- 17)।

विको एहि गप कए बाजारू आओर रोचक बनबैत आगू लिखने अछि जे मिथिला मे एकटा युवती अपना लेल सुयोग्य युवक कए चुनैत अछि आ विवाहक प्रस्ताव स्वरूप ओकर सामने कोहबर रखैत अछि ।(1977, पृष्ठ- 17)। ओ लोक जे मिथिला कए नीक जेकाँ नहि चिन्हला अछि, हुनको इ वाक्य पढ़लाक बाद आश्र्चर्य हेतिन जे विको केना मिथिला समाज कँ अतेक चरित्रहीन बना देलथि। इ अद्भुत मुदा सत्य सन आलेख कए पढ़लाक बाद एहन प्रतीत होइत अछि जे विकोकँ कए एहन अनुवादक भेटलन्हि जेकरा मिथिला समाज, संस्कृति आ सभ्यता स कोनो वास्ता नहि रहैन, संगहि हुनका मिथिलाक रिति-रिवाज आ लोकाचार तक केर ज्ञान नहि रहैन। सच पूछु त अनुवादकलेल विको मात्र टका देनिहार विदेशी छलाह। ओना देखल जाए त विको क इ किताब एहि विषय पर लिखल गेल पहिल अथवा आखिरी किताब नहि थिक। इ पुस्तक एहि लेल महत्वपूर्ण भ गेल अछि, किराक कि मिथिला चित्रकला पर शोध केनिहार अधिकतर विद्वान एहि पुस्तक स प्रभावित छथि। एतबा धरि कि भारतीय विद्वान उपेंद्र ठाकुर तक अपन किताब मे विको क नजरिया कए नजरअंदाज नहि केलथि अछि। विको क एहि किताब क महत्व पर ब्राउनक कहब अछि जे पश्चिमक विद्वान जखन कोनो विषय पर काज शुरू करैत छथि तखन ओहि विषय पर लिखल गेल पूर्वक किताब स काफी प्रभावित होइत छथि। मिथिला चित्रकलाक संग सेहो किछु एहने भेल। अधिकतर विद्वान विकोक रूप-रेखा स प्रेरणा लेलथि, किछु त हुनकर नकल तक कैलथि। ताहि लेल इ अन्य पुस्तक बेसी महत्वपूर्ण भ जाइत अछि। दोसर इ जे विको बहुत दिन धरि एहि विषय पर काज केलथि अछि आ कई प्रकार स एकरा दुनियाक समक्ष अनलथि अछि, एहन मे विदेशी विद्वान लेल हुनका नजरअंदाज करब कठिन रहल अछि। एहि प्रकारे विको भ्रमक आओर सर्वथा गलत तरीका स अनुवाद कए झूठ कँ एकटा सत्य सँ बेसी सत्य रूप मे स्थापित केलथि अछि। ओना अधिकतर विदेशी विद्वानक कहब अछि जे मिथिला समाज विश्वक सबस चरित्रवान समाज मे स एक अछि। एकर संस्कृतिक संबंध मे प्राख्यात चिकित्सक डॉ कैमेल क कहब अछि जे आइ 'जीन (अणु) क संबंध मे दुनिया भरि मे शोध भ रहल अछि, जखनकि मिथिला मे पंजी व्यवस्था ओकरे एकटा रूप अछि। मिथिलाक ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ लग एखनो बीस-बीस पीढिक़ जानकारी उपलब्ध अछि।

विको कए शायद इ नहि बताउल गेल कि मिथिला मे युवतिक विवाह पंजीकारक राय स तय कैल जाइत अछि। युवतिक इच्छा एहि ठाम कोनो मायने नहि रखैत अछि। एहि तथ्य कए ब्राउन बहुत साफ तौर पर रखने छथि। ब्राउन कहैत छथि जे ओ मिथिला प्रवासक दौरान पंजीक विधिवत शिक्षा ल चुकल छथि। ओ एहि गप कए सेहो साफ करबाक प्रयास केलथि अछि जे मिथिला मे कहियो युवति कँ पति चुनबाक अधिकार नहि रहल अछि। सीताक संबंध मे सेहो ब्राउनक मत स्पष्ट अछि। ओ कहैत छथि जे सीताक स्वयंवर नहि छल ओ एकटा सशर्त विवाह छल। इ सच अछि जे ओहि विवाह मे पंजीक कोनो व्यवस्था नहि छल, मुदा धणुष रामक बदला मे रावण उठा लैत त कि सीताक इच्छा रहितो राम सँ विवाह संभव छल? सीताक इच्छा हुनक विवाह मे कोनो मायने नहि रखैत छल। ब्राउल इ तर्क देलाक बाद आखिरी फैसला मिथिलाक लोक पर छोड़ैत कहैत छथि जे हमर एहि मत स शायद मिथिलाक लोक सहमत नहि हेताह। वैकसेनेलक शब्द मे कहल जा सकैत अछि जे मिथिला चित्रकला एकटा आँखिक भाँति अछि जे समयक संग-संग अपना कए बदलैत

रहल अछि, मुदा अपन मूल सिद्धांत स कखनो समझौता नहि केलक अछि। इ कला जगतक एकटा अद्भुत औजार अछि जेकरा स कलाकार अपन समाजक संग-संग पूरा विश्वक गुढ़ गप आ रीति-रिवाज कए चित्रक माध्यम स प्रस्तुत करैत आइल अछि। (1972,पृष्ठ-38) जे किछु होआए एतबा त अवश्य भेल अछि जे मिथिलाक संस्कृति कँए दुनियाक सामने सर्वथा गलत तरीका स परिभाषित कएल गेल अछि। आइ मिथिला चित्रकला अधिकतर एहन चित्र बनाओल जा रहल अछि, जेकर एतुका संस्कृति स कोनो लेनादेना नहि अछि। आवश्यकता अछि एहि चित्र क गंभीरता स शोध करबाक आ एकर अर्थक अधिकता कए समाप्त करबाक, नहि त इ चित्र हरदम लेल हमरा लोकनिक अज्ञानताक द्योतक बनल रहत।



डॉ. देवशंकर नवीन (१९६२-)

ओ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक सर्जना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।

सम्पादन: प्रतिनिधि कहानियाँ: राजकमल चौधरी, अग्निस्नान एवं अन्य उपन्यास (राजकमल चौधरी), पत्थर के नीचे दबे हुए हाथ (राजकमल की कहानियाँ), विचित्रा (राजकमल चौधरीक की अप्रकाशित कविताएँ), साँझक गाछ (राजकमल चौधरी मैथिली कहानीयाँ), राजकमल चौधरी की चुनी हुई कहानियाँ, बन्द कमरे में कब्रगाह (राजकमल की कहानियाँ), शवयात्राक बाद देहशुद्धि, ऑडिट रिपोर्ट (राजकमल चौधरी की कविताएँ), बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, उत्तर आधुनिकता कुछ विचार, सद्भाव मिशन (पत्रिका)क किछु अंकक सम्पादन, उदाहरण (मैथिली कथा संग्रह संपादन)।**–सम्पादक**

अदद्दी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता

मिथिलाक सांस्कृतिक विरासत तकैत दूर धरि नजरि जाइत अछि, सबसँ पहिने देखाइत अछि जे उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक, गम्भीर चिन्तन-मनन करबाक, छोट-सँ-छोट बात पर पर्याप्त विचार-विमर्श करैत निर्णय लेबाक प्रथा मिथिलामे पुरातन कालसँ अबैत रहैत रहल अछि। मुदा तकर अतिरिक्त ÷परसुख देबामे परमसुख'क आनन्द लेबाक आ जीवनक हरेक आचार एवं आचरणमे लयाश्रित रहबाक अभ्यास मैथिल जनकँ निकेनाँ रहलनि अछि। स्वयं कष्ट सहिओ क', अपन सब किछु गमाइओ क', दोसरकँ अधिकसँ अधिक प्रसन्नता देबाक आदति मिथिलामे बड़ पुरान अछि। प्रायः इएह कारण थिक जे अतिथि सत्कारमे मिथिलाक लोक अपना घरक थाड़ी-लोटा धरि बन्हकी राखि देलनि। दोसरकँ सम्मान देबामे मैथिल नागरिक बढ़ि-चढ़ि कए आगू रहल अछि। भनसियाक काज कर'बला व्यक्तिकँ महराज अथवा महराजिन, केस-नह-दाढ़ी-मोंछ साफ कर'बला व्यक्तिकँ ठाकुर-ठकुराइन, घर-आँगनमे नौरी-बहिकिरनी आ सोइरी घ'रमे परसौतीक काज करबाब'वाली स्त्राकँ दाय कहि

क' सम्बोधित करबाक प्रथा मिथिलामे एहने धारणासँ रहल होएत। ध्यान देबाक थिक जे मिथिलामे दादीकँ, जेठ बहिनकँ आ घ'रक अत्यधिक दुलारि बेटीकँ दाय कहबाक परम्परा अछि।

अध्ययन, चिन्तन, मननक प्रथा मिथिलामे बड़ पुरान अछि। मुदा ई सत्य थिक जे अशिक्षेक कारणेँ मिथिला एतेक पछुआएलो रहल। गनल गूथल जे व्यक्ति अध्ययनशील भेलाह, से अत्यधिक पढ़लनि, जे नहि पढ़ि सकल, से अपन रोजी-रोटीमे लागल रहल। रोजी-रोटीक एक मात्रा आधार कृषि छल। विद्वान लोकनिक गम्भीर बहसमे बैसबाक अथवा ओहिमे हिस्सा लेबाक तर्कशक्ति, बोध-सामर्थ्य, आ पलखति रहै नहि छलनि, तँ जे उपदेश देल जाइन, तकरा आर्ष वाक्य मानि अपन जीवन-यापनमे मैथिल लोकनि तल्लीन रहै छलाह। ईश भक्तिक प्रथा अहू कारणें मिथिलामे दृढ़ भेल। मानव सभ्यताक इतिहास कहै'ए जे प्रकृति-पूजन, नदी-पहाड़-भूमि-वृक्ष-पशु आदिक पूजन एहि करणेँ शुरुह भेल जे प्रारम्भिक कालमे जीवन-रक्षाक आधार इएह होइत छल। लोक अनुमान लगौलक जे सृष्टिक कारण, स्त्री-पुरुषक जननांग थिक, तँ

ओ लिंग पूजा आ योनि-पूजा शुरुह केलक, जे बादमे शिवलिंग आ कामयोनि पूजाक रूपमे प्रचलित भेल। बादमे औजार पूजन होअए लागल।... तें पूजा पाठमे लीन हेबाक प्रथा पुरान अछि। मिथिलामे ओहि समस्त पूजन-पद्धतिक अनुपालन तँ होइते रहल; पितर पूजा, ग्रामदेव पूजा, ऋतु पूजा, फसल पूजा, कुलदेव-देवी पूजा आदिक प्रथा बढ़ल। हमरा जनैत विद्वान लोकनि द्वारा ईश भक्तिक उपदेश एहि लेल देल जाइत रहल हएत जे ईश भक्तिमे लागल लोक धर्म-भयसँ सदाचार अनुपालनमे लागल रहत, सद्वृत्तिमे लीन रहत, सामाजिक मर्यादाक ध्यान राखत, भुजबल-धनबलक मदमे निर्बल-निर्धन पर अत्याचार नहि करत।...लक्ष्यपूर्ति त' नहिएँ भेल, उनटे लोक धर्मभीरु, पाखण्डी अन्धविश्वासी आ निरन्तर लोभी, स्वार्थी, अत्याचारी होइत गेल, परिणामस्वरूप आजुक मैथिल-प्रवृत्ति हमरा सभक सोझाँ अछि।

कृषि जीवनसँ समाजक कौटुम्बिक बन्हन एते मजगुत छल, जे भूमिहीनो व्यक्ति सम्पूर्ण किसानक दर्जा पबै छल। हरेक गाममे सब वृत्तिक लोक रहै छल। डोम, चमार, नौआ, कुमार, गुआर, धोबि, कुम्हार, कोइरी, बाह्मण, क्षत्री... आदि समस्त जातिक उपस्थितिसँ गाम पूरा होइ छल। जमीन्दार लोकनि समस्त भूमिहीनकें जागीर दै छलाह, बाह्मण पुरहिताइ करै छलाह, नौआ केश कटै छलाह; कुमार ह'र-फार, चौकी केबाड़ बनबै छलाह; धोबि कपड़ा-बस्तर धोइ छलाह...। सम्पूर्ण समाज एक परिवार जकाँ चलै छल। सब एक दोसरा लेल जीबै छलाह, सब गोटए किसान छलाह, कृषि-सभ्यतामे मस्त छलाह।

सिरपंचमी दिनक ह'र-पूजा हो; दसमी, दीया-बाती, सामा-चकेबाक उत्सव हो; मूडन-उपनयन-विवाह-श्राद्ध हो; छठि अथवा फगुआ हो... बिना सर्वजातीय, सर्ववृत्तीय लोकक सहभाग नेने कोनो काज पूर नहि होइ छल। एहिमेसँ बहुत बात तँ एखनहुँ बाँचल अछि, होइत अछि ओहिना, ओकर ध्येय कतहु लुप्त भ' गेल अछि।

मिथिलाक विवाहमे एखनहुँ जा धरि नौआ ब'रक कानमे हुनकर खानदान लेल गारि नहि देताह (परिहास लेल); धोबिन अपना केस संगें कनियाँक केस धो क' सोहाग नहि देतीह, विवाह पूर्ण नहि मानल जाइत अछि। ध्यान देबाक थिक जे एहि तरहें ओहि नौआकेँ कन्याक पिता आ धोबिनकें कन्याक माइक ओहदा देल जाइत अछि। मिथिलाक छठि पाबनि तँ अद्भुत रूपें सम्पूर्ण विरासतक रक्षा क' रहल अछि। नदीमे ठाढ़ भ' कए सूर्यकेँ अर्घ देबाक ई प्रथा जाति-धर्म समभावक सुरक्षा एना केने अछि जे समाजक कोनहुँ वर्गक सहभागक बिना ई पाबनि पूर्ण नहि होएत। नेत अइ स'ब टामे एकता आ समानताक सूत्र स्थापित रखबाक रहैत छल। ई कलंक स्वातन्त्र्योत्तरकालीन मिथिलाक स्वाधीन मानवक नाम अथवा वैज्ञानिक विकास, बौद्धिक उन्नति, औद्योगिक प्रगतिक माथ जाइत अछि, जे समस्त विकासक अछैत मानव-मनमे लोभ-द्रोह, अहंकार एहि तरहें भरलक छूआछूत, जाति-द्वेष, शोषण-उत्पीड़न बढ़ैत गेल; आ आइ मिथिला-समाज, जे त्याग, बलिदान, प्रेम, सौहार्द लेल ख्यात छल, सामाजिक रूपें खण्ड-खण्ड भेल अछि। पैघसँ पैघ आपदा, विभीषिका ओकरा एक ठाँ आनि कए, एकमत नहि क' पबै'ए। मिथलाक उदारता आ सामाजिकता ई छल जे ककरो बाड़ी-झारीमे अथवा लत्ती-फत्तीमे अथवा कलम-गाछीमे नव साग-पात, तर-तरकारी, फूल-फल होइ छल तँ सभसँ पहिने ग्रामदेवक थान पर आ पड़ोसियाक आँगनमे पहुँचाओल जाइ छल; कोनो फसिल तैयार भेलाक बाद आगों-राशि कोनो परगोत्री देल जाइ छल; खेतमे फसिल कटबा काल खेतक हरेक टुकड़ीमे एक अंश रखबारकेँ देल जाइ छल...ई समस्त बात सामाजिक सम्बन्ध-बन्धक मजगूतीक उदाहरण छल।

कोनो स'र-कुटुमक ओतएसँ कोनो वस्तु सनेसमे आबए, तँ ओ सौंसे टोलमे लोक बिलहै छल।...कहबा लेल कहि सकै छी जे ई मैथिलजनक जीवनक नाटकीयता आ प्रशंसा हेतु लोलुपता रहल होएत... मुदा तकर अछैत एहि पद्धति आ परम्पराक श्रेष्ठता आ सामाजिक मूल्य हेतु एकर आवश्यकतासँ मुँह नहि मोड़ल

जा सकैत अछि। गाममे कोनो बेटीक दुरागसनक दिन तय होइ छल, तँ बेटीक सासुरसँ आएल मिठाइ भरि गाममे बिलहल जाइ छल। तात्पर्य ई होइ छल जे भरि गामक लोक बूझि जाए, जे ई बेटी आब अइ गामसँ चल जाएत। ओहि बेटीकेँ भरि गामक लोक धन-वित्त-जातिसँ परे, ओहि बेटीकेँ अपना घ'रमे एक साँझ भोजन करबै छल। सब किछुक लक्ष्यार्थ गुप्त रहै छल। एकर अर्थ ई छल, जे सम्पूर्ण गाम अपन-अपन थाड़ी-पीढ़ी देखा कए ओहि बेटीकेँ विवेककेँ उद्बुद्ध करै छल जे बेटी! आब तों ई गाम, ई कुल-वंश छोड़ि आन ठाम जा रहल छह, हमरा लोकनि अपन शील-संस्कृतिक ज्ञान तोरा देलियहु, सासुर जा कए, ओतुक्का शील-संस्कार देखि कए अपन विवेकसँ चलिह', आ अपन गाम, अपन कुल-शीलक प्रतिष्ठा बढ़बिह'। इएह कारण थिक जे पहिने कोनो बेटीक दुरागमनक दिन पैघ अन्तराल द' कए तय होइ छल। मुदा आब ई रिवाज एकटा औपचारिकता बनि कए रहि गेल अछि; गामक बेटीकें अपन बेटी मानिते के अछि?

मिथिलामे कोनो स्त्री संगें भैंसुर आ ममिया ससुरक वार्तालाप, भेंट-घाँट वर्जित रहल अछि, एते धरि जे दुनूमे छूआछूतक प्रथा अछि। आधुनिक सभ्यताक लोक एकरा पाखण्ड घोषित केलनि। परिस्थिति बदलै छै, त' मान्यताक सन्दर्भ बदलि जाइ छै, से भिन्न बात; मुदा एहि प्रथाकेँ पाखण्ड कहनिहार लोककेँ ई बुझबाक थिक जे ई प्रथा एहि लेल छल, जे एहि दुनू सम्बन्धमे समवयस्की हेबाक सम्भावना बेसी काल रहै छल। संयुक्त परिवारक प्रथा छल, कखनहुँ कोनो अघट घटि सकै छल। ई वर्जना एकटा शिष्टाचार निर्वहरण हेतु पैघ आधार छल। प्रायः इएह कारण थिक जे विवाह कालमे घोघट देबा लेल प्राथमिक अधिकार अही दुनू सम्बन्धीय व्यक्तिकेँ देल जाइ छनि। जाहि स्त्रीकेँ केओ भैंसुर अथवा ममिया

ससुर नहि छनि, हुनकहि टा ससुर स्थानीय कोनो आन व्यक्ति घोघट दै छनि। घोघट देबाक प्रक्रियामे कतेक नैतिक बन्हन रहैत अछि, से देखू, जे सकल समाजक समक्ष भैंसुर, नव विवाहित भावहुक उघार माथकेँ नव नूआसँ झाँपै छथि आ बगलमे ठाढ़ ब'र ओहि नूआकेँ घीचिकए माथ उघारि दैत अछि, ई प्रक्रिया तीन बेर होइत अछि, अन्तिम बेर माथ झाँपले राखल जाइत अछि। अर्थात्, सकल समाजक सम्मुख ओ व्यक्ति प्रतिज्ञा करैत अछि--हे शुभे! हम, तोहर भैंसुर (ससुर) प्रण लैत छी, जे जीवन पर्यन्त तोहर लाजक रक्षा करब! एते धरि जे अग्नि, आकाश, धरती, पवनकेँ साक्षी राखि जे व्यक्ति तोरा संग विवाह केलकहु अछि, सेहो जखन तोहर लाज पर आक्रमण करतहु, हम तोहर रक्षा लेल तैयार रहब!

अही तरहेँ उपनयनमे आचार्य, बह्मा, केस नेनिहारि, भीख देनिहारि, डोम, चमार, नौआ, धोबि, कमार, कुम्हार आदिक भागीदारी; आ एहने कोनो आन उत्सव, संस्कारमे सामूहिक भागीदारी सामाजिक अनुबन्धक तार्किक आधार देखबैत अछि।

कहबी अछि जे मैथिल भोजन भट्ट होइ छथि। अइ कहबीक त'हमे जाइ तँ ओतहु एकर सांस्कृतिक, पारम्परकि सूत्रा भेटल। मिथिलाक स्त्राी, खाहे ओ कोनहु जाति-वर्गक होथि, तीक्ष्ण प्रतिभाक स्वामिनी होइत रहल छथि। मुदा परदा प्रथाक कारणें हुनकर पैर भनसा घरसँ ल' क' अँगनाक डेरही धरि बान्हल रहै छलनि। अधिकांश समय भनसे घरमे बितब' पड़नि। सृजनशील प्रतिभा निश्चिन्त बैस' नहि दैन। की करितथि! भोजनक विन्यासमे अपन समय आ प्रतिभा लगब' लगलथि। आइयो भोजनक जतेक विन्यास, तीमन-तरकारीक जतेक कोटि, चटनी आ अचारक जेतक विधान मिथिलामे अछि, हमरा जनैत देशक कोनहुँ आन भागमे नहि होएत। वनस्पतिजन्य औषधिकेँ सुस्वादु भोजन बनएबाक प्रथा सेहो मिथिलामे सर्वाधिक अछि।... आब जखन एते प्रकारक भोजन ओ बनौलनि, तँ उपयोग कतए हैत?... घरक पुरुष वर्गकेँ खोआओल जाएत। सर्वदा एहिना होइत रहल अछि, जे कोनो क्रियाक विकृति प्रचारित भ' जाइत अछि, मूल तत्व गौण रहि जाइत अछि। मैथिल पेटू होइत अछि, से सब जनै'ए, मुदा मिथिलाक स्त्रीमे विलक्षण सृजनशीलता रहलैक अछि, से बात कम प्रचारित अछि। जे स्त्री कामकाजी होइ छलीह, खेत-पथार जा कए शरीर श्रम करै छलीह, गामक बाबू बबुआनक घर-आँगन नीपै, लेबै छलीह, तिनकहु कलात्मक कौशल हुनका लोकनिक काजमे देखाइ छल।

स्त्री जातिक कला-कौशलक मनोविज्ञानक उत्कर्ष तँ एना देखाइ अछि जे हुनका लोकनिक उछाह-उल्लास धरिमे जीवन-यापनक आधार आ घर-परिवारक मंगलकामना गुम्फित रहै छल। जट-जटिन लोक नाटिका विशुद्ध रूपसँ कृषि कर्मक आयोजन थिक, जे अनावृष्टिक आशंकामे मेघक आवाहन लेल होइ छल, होइत अछि; सामा भसेबा काल गाओल जाइबला गीतमे सब स्त्री अपन पारिवारिक पुरुष पात्राक स्वास्थ्यक कामना करै छथि; विवाह उपनयनमे अपरिहार्य रूपें वृक्ष पूजा (आम, महु), नदी पूजा, प्रकृति पूजा आदि करै छथि। विभिन्न वृत्तिक लोकक अधिकार क्षेत्र पर नजरि दी, तँ नौआ, कमार, कुम्हार, डोम, धोबि... सबहक स्वामित्व निर्धारित रहैत आएल अछि। जाहि गाम अथवा टोल पर जिनकर स्वामित्व छनि, हुनकर अनुमतिक बिना केओ दोसर प्रवेश नहि क' सकै छलाह। ई लोकनि आपसी समझौतासँ अथवा निलामीसँ गामक खरीद-बिक्री करै छलाह। एहि व्यवहारमे

जजमानक कोनो भूमिका अथवा दखल नहि होइ छल।

हस्तकलाक कुटीर उद्योग एतेक सम्पन्न छल, जे सामाजिक व्यवस्थामे सब एक दोसरा पर आश्रित छल। सूप, कोनियाँ, पथिया, बखाड़ी, घैल, छाँछी, सरबा, पुरहर, मौनी, पौती, जनौ, चरखा, लदहा, बरहा, गरदामी, मुखारी, उघैन, कराम, खाट, सीक, अरिपन... सब किछु लुप्तप्राय भ' गेल। एते धरि जे ई शब्द आ क्रिया अपरिचित भेल जा रहल अछि। ढोनि केनाइ, भौरी केनाइ, केन केनाइ, पस'र चरेनाइ, झिल्हैर खेलेनाइ सन क्रिया, आ सुठौरा, हरीस, लागन, बरेन, जोती, कनेल, पालो, चास, समार, फेरा, पचोटा, ढोसि, करीन सन शब्द आब आधुनिक साहित्योमे कमे काल अबै'ए।

मिथिलाक एहेन विलक्षण विरासत--कला, संस्कृति आ जीवन-यापन पद्धतिक उत्कृष्ट उदाहरण सम्भावनाविहीन भविष्यक कारणेँ आ सामाजिक कटुताक कारणेँ हेराएल जा रहल अछि। नवीन शिक्षा पद्धतिसँ सामाजिक जागृति बढ़ल, मुदा ओहि जागृतिक समक्ष ठाढ़ भेल वैज्ञानिक विकास आ आर्थिक उदारीकरणक प्रभावमे अहंकारग्रस्त समृद्ध लोककँ लोलुपता आ क्षुद्र वृत्ति। संघर्ष जायज छल। अपन पारम्परिक वृत्ति आ हस्तकलामे, पुश्तैनी पेशामे लोककें अपन भविष्य सुरक्षित नहि देखेलै। ÷रंग उड़ल मुरूत' कथामे मायानन्द मिश्र आ ÷रमजानी' कथामे ललित मिथिलाक परम्परा पर आघात देखा चुकल छथि।...

ख'ढ़क घर आब होइत नहि अछि, घरामीक वृत्ति एहिना चल गेल। सीक'क प्रयोजन, खाटक प्रयोजन समाप्त भ' गेल, बचल-खुचल माल-जाल लेल नाथ-गरदामी आब प्लास्टिकक बनल-बनाएल डोरिसँ होअए लागल, बच्चाक खेलौना प्लास्टिकक होअए लागल। नौआ, कमार, धोबि, डोमक जागीर आपस लेल जा लागल। ओ लोकनि अपन पुश्तैनी पेशा छोड़ि आन-आन नोकरी चाकरीमे जाए लगलाह। स्त्री जाति आब भानस करबा लेल किताब पढ़ए लगलीह, फास्ट फूड खएबाक प्रथा विकसित भेल। मिथिला पेंटिंगकें आफसेट मशीन पर छपबा कए पूँजीपति लोकनि री-प्रोडक्शन बेच' लगलाह। जट-जटिन आ सामा-चकेबाक खेलक विडियोग्राफी देखाओल जाए लागल। गोनू झा, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, कारू खिरहरि, लोरिकाइनि आदिक कथा छपा कए बिक्री होअए लागल, टेप पर रेकॉर्ड क' कए, अथवा सी.डी.मे तैयार क' कए, री-

मिक्ससँ ओकर मौलिकतामे फेंट-फाँट क' कए लाक सुन' लागल, आ एकरा अपन बड़का उपलब्धि घोषित कर' लागल। ... अर्थात् जे लोककला लोकजीवनक संग विकसित आ परिवर्द्धित होइ छल, तकर अभिलेखनसँ (डकुमेण्टेशन) ओकरा स्थिर कएल जा लागल। लोकजीवनक संग अविरल प्रवाहित रहैबाली सांस्कृतिक-धारा आब अभिलेखागारमे बन्द रहत, ओकर विकासक सम्भावना स्थगित रहत।

अइ समस्त वृत्तिमे जुड़ल लोकके सम्मानित जीवन जीबै जोगर वृत्ति द' कए एकर विकासमान प्रक्रियाकें आओर तीव्र करबाक आवश्यकता छलै, मुदा जखन मिथिलाक लोके ओ ÷लोक' नहि रहि गेल अछि, तखन लोक-संस्कृति आ लोक-परम्पराक रक्षा के करत?



धर्मेन्द्र विह्वल जन्म विक्रम सम्वत २०२३-१२-०४, बस्तीपुर सिरहा,शिक्षा: एम ए (मैथिली/राजनीतिशास्त्र), डिप्लोमा ईन डेभलपमेन्ट जर्नालिज्म, प्रकाशित कृति : एक समयक बात (वि स २०६१ मैथिली हाईकु संग्रह), रस्ता तकैत जिनगी (वि स २०५०/ कविता संग्रह),एक सृष्टि एक कविता (२०५७/दीर्घ कविता),हमर मैथिली पोथी (कक्षा 1 सं ५ धरिक पाठय पुस्तक),सम्प्रति: सभापति, नेपाल पत्रकार महासंघ–सम्पादक

किछु छौंक

१) बदनामी

प्रेम आ सिनेहकँ

सरेबजार

निलाम नहि करू

गौरवमय इतिहासकँ

एना बदनाम नहि करू ।

२) विज्ञापन

जानि नहि

आदमीक जंगलमे

हम कतय

हेरा रहल छी

अखवारक ढ़ेरमे

हम जिनगीक विज्ञापन

ताकि रहल छी ।

३) इज्जत

खुलेआम इज्जत

बिका रहल अछि

दाम दऽ

झट कीनि दिअ

जल्दि करू

स्टोक सीमित अछि ।



धीरेन्द्र प्रेमर्षि (१९६७-)

मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति आदि विभिन्न क्षेत्रक काजमे समान रूपें निरन्तर सक्रिय व्यक्तिक रूपमे चिन्हल जाइत छथि धीरेन्द्र प्रेमर्षि। वि.सं.२०२४ साल भादब १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि। सरल आ सुस्पष्ट भाषा-शैलीमे लिखनिहार प्रेमर्षि कथा, कविताक अतिरिक्त लेख, निबन्ध, अनुवाद आ पत्रकारिताक माध्यमसँ मैथिली आ नेपाली दुनू भाषाक क्षेत्रमे सुपरिचित छथि। नेपालक स्कूली कक्षा १,२,३,४,९ आ १०क ऐच्छिक मैथिली तथा १० कक्षाक ऐच्छिक हिन्दी विषयक पाठ्यपुस्तकक लेखन सेहो कएने छथि। साहित्यिक ग्रन्थमे हिनक एक सम्पादित आ एक अनूदित कृति प्रकाशित छनि। प्रेमर्षि लेखनक अतिरिक्त सङ्गीत, अभिनय आ समाचार-वाचन क्षेत्रसँ सेहो सम्बद्ध छथि। नेपालक पहिल मैथिली टेलिफिल्म मिथिलाक व्यथा आ ऐतिहासिक मैथिली टेलिश्रृङ्खला महाकवि विद्यापति सहित अनेक नाटकमे अभिनय आ निर्देशन कऽ चुकल प्रेमर्षिकें नेपालसँ पहिलबेर मैथिली गीतक कैसेट कलियुगी दुनिया निकालबाक श्रेय सेहो जाइत छनि। हिनक स्वर सङ्गीतमे आधा दर्जनसँ अधिक कैसेट एलबम बाहर भऽ चुकल अछि। कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता जोड़ी रूपा-धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अबाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत अछि। ''पल्लव'' मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ ''समाज'' मैथिली सामाजिक पत्रिकाक–**सम्पादक**

मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

रूप-रङ्ग एवं चालि-प्रकृति देखलापर गीत आ गजल दुनू सहोदरे बुझाइत छैक। मुदा मैथिलीमे गीत अति प्राचीन काव्यशैलीक रूपमे चलैत आएल अछि, जखन कि गजल अपेक्षाकृत अत्यन्त नवीन रूपमे। एखन दुनूकें एकठाम देखलापर एना लगैत छैक जेना गीत-गजल कोनो कुम्भक मेलामे एक-दोसरासँ बिछुड़ि गेल छल। मेलामे भोतिआइत-भासैत गजल अरबदिस पहुँचि गेल। गजल ओम्हरे पलल-बढ़ल आ जखन बेस जुआन भऽ गेल तँ अपन बिछुड़ल सहोदरकें तकैत गीतक गाम मिथिलाधरि सेहो पहुँचि गेल। जखन दुनूक भेट भेलैक तँ किछु समय दुनूमे अपरिचयक अवस्था बनल रहलैक। मिथिलाक माटिमे पोसाएल गीत एकरा अपन जगह कब्जा करऽ आएल प्रतिद्वन्दीक रूपमे सेहो देखलक। मुदा जखन दुनू एक-दोसराकें लगसँ हियाकऽ देखलक तखन बुझबामे अएलैक-आहि रे बा, हमरासभमे एना बैर किएक, हम दुनू तँ सहोदरे छी! तकरा बाद मिथिलाक धरतीपर डेगसँ डेग मिला दुनू पूर्ण भ्रातृत्व भावें निरन्तर आगाँ बढ़ैत रहल अछि।

गीत आ गजलक स्वरूप देखलापर दुनूक स्वभावमे अपन पोसुआ जगहक स्थानीयताक असरि पूरापूरा देखबामे अबैत अछि। गीत एना लगैत छैक जेना रङ्गबिरङ्गी फूलकें सैंतिकऽ सजाओल सेजौट हो। मिथिलाक गीतमे काँटोसन बात जँ कहल जाइछ तँ फूलेसन मोलायम भावमे। एकरा हम एहू तरहें कहि सकैत छी जे गीत फूलक लतमारापर चलबैत लोककें भावक ऊँचाइधरि पहुँचबैत अछि। एहिमे मिथिलाक लोकव्यवहार एवं मानवीय भाव प्रमुख भूमिका निर्वाह करैत आएल अछि। जाहि भाषाक गारियोमे रिदम आ मधुरता होइत छैक, ओहि भूमिपर पोसाएल गीतक स्वरूप कटाह-धराह भइए नहि सकैत अछि। कही जे गीतमे तँ लालीगुराँसक फूलजकाँ ओ ताकत विद्यमान छैक जे माछ खाइत काल जँ गऽरमे काँट अटकि गेल तँ तकरो गलाकऽ समाप्त कऽ दैत छैक।

गजलक बगय-बानि देखबामे भलहि गीतेजकाँ सुरेबगर लगैक, एहिमे गीतसन नरमाहटि नहि होइत छैक। उसराह मरुभूमिमे पोसाएल भेलाक कारणे गजलक स्वभाव किछु उस्सठ होइत छैक। ई कट्टर इस्लामीसभक सङ्गतिमे बेसी रहल अछि, तँ एकर स्वभावमे ''जब कुछ न चलेगी तो ये तलवार चलेगा'' सन तेज तेवरबेसी देखबामे अबैत छैक। यद्यपि गजलकें प्रेमक अभिव्यक्तिक सशक्त माध्यम मानल जाइत छैक। गजल कहितहिंदेरी लोकक मन-मस्तिष्कमे प्रेममय माहौल नाचि उठैत छैक, एहि बातसँ हम कतहु असहमत नहि छी। मुदा गजलमे प्रेमक बात सेहो बेस धरगर अन्दाजमे कहल जाइत छैक। कहबाक तात्पर्य जे गजल तरुआरिजकाँ सीधे बेध दैत छैक लक्ष्यकें। लाइलपटमे बेसी नहि रहैत

छैक गजल। मिथिलाक सन्दर्भमे गीत आ गजलक एक्कहि तरहेँ जँ अन्तर देखबऽ चाही तँ ई कहल जा सकैत अछि जे गजल फूलक प्रक्षेपणपर्यन्त तरुआरिजकाँ करैत अछि, जखन कि गीत तरुआरि सेहो फूलजकाँ भँजैत अछि।

मैथिलीमे संख्यात्मक रूपेँ गजल आनहि विधाजकाँ भलहि कम लिखल जाइत रहल हो, मुदा गुणवत्ताक दृष्टिएँ ई हिन्दी वा नेपाली गजलसँ कतहु कनेको झूस नहि देखबामे अबैत अछि। एकर कारण इहो भऽ सकैत छैक जे हिन्दी, नेपाली आ मैथिली तीनू भाषामे गजलक प्रवेश एक्कहि मुहूर्त्तमे भेल छैक। गजलक श्रीगणेश करौनिहार हिन्दीक भारतेन्दु, नेपालीक मोतीराम भट्ट आ मैथिलीक पं. जीवन झा एक्कहि कालखण्डक स्रष्टासभ छथि।

मैथिलीयोमे गजल आब एतबा लिखल जा चुकल अछि जे एकर संरचनाक मादे किछु कहनाइ दिनहिमे डिबिया बारबजकाँ लगैत अछि। एहनोमे यदाकदा गजलक नामपर किछु एहनो पाँतिसभ पत्रपत्रिकामे अभरि जाइत अछि, जकरा देखलापर मोन किछु झुझुआन भइए जाइत छैक। कतेकोगोटेक रचना देखलापर एहनो बुझाइत अछि, जेना ओलोकनि दू-दू पाँतिवला तुकबन्दीक एकटा समूहकेँ गजल बूझैत छथि। हमरा जनैत ओलोकनि गजलकेँ दूरेसँ देखिकऽ ओहिमे अपन पाण्डित्य छाँटब शुरू कऽ दैत छथि। जँ मैथिली साहित्यक गुणधर्मकेँ आत्मसात कऽ चलैत कोनो व्यक्ति एकबेर दू-चारिटा गजल ढङ्गसँ देखि लिअए, तँ हमरा जनैत ओकरामे गजलक संरचनाप्रति कोनो तरहक द्विविधा नहि रहि जएतैक।

तँ सामान्यतः गजलक सम्बन्धमे नव जिज्ञासुक लेल जँ किछु कहल जाए तँ विना कोनो पारिभाषिक शब्दक प्रयोग कएने हम एहि तरहेँ अपन विचार राखऽ चाहैत छी- गजलक पहिल दू पाँतिक अन्त्यानुप्रास मिलल रहैत छैक। अन्तिम एक, दू वा अधिक शब्द सभ पाँतिमे सझिया रहलहुपर साझी शब्दसँ पहिनुक शब्दमेअनुप्रास वा कही तुकबन्दी मिलल रहबाक चाही। अन्य दू-दू पाँतिमे पहिल पाँति अनुप्रासक दृष्टिएँ स्वच्छन्द रहैत अछि। मुदा दोसर पाँति वा कही जे पछिला पाँति स्थायीवला अनुप्रासकेँ पछुअबैत चलैत छैक।

ई तँ भेल गजलक मुह-कानक संरचनासम्बन्धी बात। मुदा खालि मुहँ-कानपर ध्यान देल जाए आ ओकर कथ्य जँ गोङिआइत वा बौआइत रहि जाए तँ देखबामे गजल लगितो यथार्थमे ओ गीजल भऽ जाइत अछि। तँ प्रस्तुतिकरणमे किछु रहस्य, किछु रोमाञ्चक सङ्ग समधानल चोटजकाँ गजलक शब्दसभ ताल-मात्राक प्रवाहमय साँचमे खचाखच बैसैत चलि जएबाक चाही। गजलक पाँतिकेँ अर्थवत्ताक हिसाबेँ जँ देखल जाए तँ कहि सकैत छी जे हऽरक सिराउरजकाँ ई चलैत चलि जाइत छैक। हऽरक पहिल सिराउर जाहि तरहेँ धरतीक छाती चीरिकऽ ओहिमे कोनो चीज जनमाओल जा सकबाक आधार प्रदान करैत छैक, तहिना गजलक पहिल पाँति कल्पना वा विषयवस्तुक उठान करैत अछि, दोसर पाँति हऽरक दोसर सिराउरक कार्यशैलीक अनुकरण करैत पहिलमे खसाओल बीजकेँ आवश्यक मात्रमे तोपन दऽकऽ पुनः आगू बढ़बाक मार्ग प्रशस्त्र करैत अछि। गजलक प्रत्येक दू-पाँति अपनहुमे स्वतन्त्र रहैत अछि आ एक-दोसराक सङ्ग तादात्म्य स्थापित करैत समग्रमे सेहो एकटा विशिष्ट अर्थ दैत अछि। एकरा दोसर तरहेँ एहुना कहल जा सकैत अछि जे गजलक पहिल पाँति कनसारसँ निकालल लालोलाल लोह रहैत अछि, दोसर पाँति ओकरा निर्दिष्ट आकारदिस बढ़एबाक लेल पड़ऽ वला घनक समधानल चोट भेल करैत अछि।

गीतक सृजनमे सिद्धहस्त मैथिलसभ थोड़े बगय-बानि बुझितहिँ आसानीसँ गजलक सृजन करऽ लगैत छथि। सम्भवतः तेँ आरसीप्रसाद सिंह, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ महेन्द्र, मार्कण्डेय प्रवासी, डॉ. गङ्गेश गुञ्जन, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र आदि मूलतः गीत क्षेत्रक व्यक्तित्व रहितहु गजलमे सेहो कलम चलौलनि। ओहन सिद्धहस्त व्यक्तिसभक लेल हमर ई गजल लिखबाक तौर-तरिकाक मादे किछु कहब हास्यास्पद भऽ सकैत अछि, मुदा नवसिखुआसभकेँ भरिसक ई किछु सहज बुझाइक।

मैथिलीमेकलम चलौनिहारसभमध्य प्रायः सभ एक-आध हाथ गजलोमे अजमबैत पाओल गेलाह अछि। जनकवि वैद्यनाथ मिश्र ''यात्री'' सेहो ''भगवान हमर ई मिथिला'' शीर्षक कविता पूर्णतः गजलक संरचनामे लिखने छथि। मुदा सियाराम झा ''सरस'', स्व. कलानन्द भट्ट, डॉ.राजेन्द्र विमल सन किछु साहित्यकार खाँटी गजलकारक रूपमे चिन्हल जाइत छथि। ओना सोमदेव, डॉ.केदारनाथ लाभ, डॉ.तारानन्द वियोगी, डॉ.रामचैतन्य धीरज, बाबा वैद्यनाथ, डॉ. विभूति आनन्द, डा.धीरेन्द्र धीर, फजलुर्रहमान हाशमी, रमेश, बैकुण्ठ विदेह, डा.रामदेव झा, रोशन जनकपुरी, पं. नित्यानन्द मिश्र, देवशङ्कर नवीन, श्यामसुन्दर शशि, जनार्दन ललन, जियाउर्रहमान जाफरी, अजितकुमार आजाद, अशोक दत्त आदिसमेत कतेको स्रष्टाक गजल मैथिली गजल-संसारकेँ विस्तृति दैत आएल अछि।

गजलमे महिला हस्ताक्षर बहुत कम देखल जाइत अछि। मैथिली विकास मञ्चद्वारा बहराइत पल्लवक पूर्णाङ्क १५, २०५१ चैतक अङ्क गजल अङ्कक रूपमे बहराएल अछि। सम्भवतः ३४ गोट अलग-अलग गजलकारक एकठाम भेल समायोजनक ई पहिल वानगी हएत। एहि अङ्कमे डा. शेफालिका वर्मा एक मात्र महिला हस्ताक्षरक रूपमे गजलक सङ्ग

प्रस्तुत भेलीह अछि। एही अङ्कक आधारपर नेपालीमे मैथिली गजल सम्बन्धी दूगोट समालोचनात्मक आलेख सेहो लिखाएल अछि। पहिल मनु ब्राजाकीद्वारा कान्तिपुर २०५२ जेठ २७ गतेक अङ्कमे आ दोसर डा. रामदयाल राकेशद्वारा गोरखापत्र २०५२ फागुन २६ गतेक अङ्कमे। छिटफुट आन्हु गजल सङ्कलन बहराएल होएत, मुदा तकर जानकारी एहि लेखककेँ नहि छैक। हँ, सियाराम झा ''सरस''क सम्पादनमे बहराएल ''लोकवेद आ लालकिला'' मैथिली गजलक गन्तव्य आ स्वरूप दऽ बहुत किछु फरिछाकऽ कहैत पाओल गेल अछि। एहिमे सरससहित तारानन्द वियोगी आ देवशङ्कर नवीनद्वारा प्रस्तुत गजलसम्बन्धी आलेख सेहो मैथिली गजलक तत्कालीन अवस्थाधरिक साङ्गोपाङ्ग चित्र प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि।
समग्रमे मैथिली गजलक विषयमे ई कहि सकैत छी जे मैथिली गीतक खेतसँ प्राप्त हलगर माटिमे गुणवत्ताक दृष्टिएँ मैथिली गजल निरन्तर बढ़िरहल अछि, बढ़िएरहल अछि।

गजल १

झुट्ठो जे नहि डाइन नचौलक ओ भगता ओ धामी की

एको गाम जँ डाहि ने सकलहुँ तँ ओढ़ने रमनामी की

अक्षत-चानन धूप-दीपसँ जतऽ यज्ञ सम्पूर्ण हुअए-

ततऽ जँ क्यो हड्डी रगड़ैए, ओ कामी ओ कलामी की

बाप-माएपर्यन्त परोसै स्नेह जखन बटखारासँ-

नकली सभक दुलार लगैए, से काकी, से मामी की

सोनित सेहो शराब बनै छै शासनकेर सनकी भट्ठी

दियौ घटाघटि जे भेटए से, फुसियाही की दामी की

पोखरिक रखबारी पएबालए कण्ठी खालि बान्हि लिअ

फेर गटागटि घोँटने चलियौ, से पोठिया से बामी की

पाग उतारिकऽ कूदि गेल ''प्रेमर्षि'' सेहो अखाड़ामे

ढाहि सकल ने जुल्म-इमारत करतै ओहन सुनामी की

(वि.२०६२/०५/३०)

गजल २

मोन जँ कारी अछि तँ चमड़ी गोरे की करतै?

ममते जँ अरुआएल तँ माएक कोरे की करतै?

गगनसँ उतरै मेघ नयनमे जखन साँचिकऽ शङ्का

केहनो अन्हार चीरिकऽ जनमल भोरे की करतै?

नीम पीबिकऽ माहुर सेहो पचाबैत आएल छी तँ

काँटकेँ धाङैत डेगकेँ थोड़े अङोरे की करतै?

घामक सिँचल धरती छोड़ि ने जकरा कतौ भरोसा

तकरा लेल बनसीक सुअदगर बोरे की करतै?

आगि पीबिकऽ बज्र बनौने छै जे अप्पन छाती

तकरा आगाँ गोहिया आँखिक नोरे की करतै?

तैयो लागल ''प्रेमर्षि'' अछि बस प्रेमक खेतीमे

प्रेमक धन भेल घरमे जाबिड़ चोरे की करतै?

(वि.२०६२/०५/२०)

शुभकामना दिआबातीक

चमकैत दीपकेँ देखिकऽ

जेना झुण्ड कीड़ा-मकोड़ा

कऽ दैछ न्यौछावर अपन अस्तित्व

दुर्गुण वा खलतत्त्वरूपी कीड़ा-मकोड़ाकेँ

नष्ट करबाक लेल चाही ने आओर किछु

अपना भीतरक मानवीय इजोतक टेमी

कने आओर उसका ली

अपनाकेँ सभक मन-मनमे मुसका ली

इएह अछि शुभकामना दिआबातीक-

देहरि दीप जरए ने जरए

मनधरि सदति रहए झिलमिल

किएक तँ अपना मात्र इजोतमे रहने

मेटा नहि सकैछ संसारसँ अन्हार

दिगम्बर झा 'दिनमणि'

१

चल रौ बौआ चलै देखऽले घुसहा सब पकड़ेलैए

घुसुर घुसुर जे घुस लैत छल,

से सब आइ धरैलैए

मालपोत, भन्सार, पुलिस कि, कर अदालत जेतौं

घूसखोरक संजाल पसारल छै बाँच नै पबितौं

अनुसन्धानक कारवाइमे

सवहक होस हेरेंलैए

विना घूसके कहियो ककरो, जे नै कानो काज करै

बैमानी सैतानी करबा, मे नै कनिको लाज करै

क्यो कानूनके चंगुलमे फँसने

परदेस पड़ेलैए

२

हम सुना रहल छी तीन धार

भारी सहैत अछि भार कहथि सभ खेती सहिते अछि उजाड़।

गिद्दड़ सन सुटकओने नाङरि आगू पाछू जे छल करैत।

जे भोर साँझ, दश लोक माझ, हमरे दिश छल रहि-रहि बढ़ैत।

हम आङुर पकड़ि जकरा पथपर अति शीघ्र चलाऽ देलौं

हमरे प्रगतिक पथकँ आगाँ, से ठाढ़ भेल बनिकऽ पहाड़॥

हम सुना

ककरा कहबै के सुनत आब, पओ कतौ छैक छै कतौ घाव,

हम भेलौं आब हड्डी समान, कहियो हमहीं रुचिगर कवाव।

हम घास खाअकऽ पालि-पोसि, जकरा कएलौं दुधगरि लगहरि,

तकरा लगमे जँ जाइत छियै, तऽ हमरे मारैए लथार॥ हम सुना,

हम तोड़ि देबै झिक-झोड़ि देबै शाखा फल-फूल मचोड़ि देबै,

स्वार्थक छै जे जड़िआएल बृक्ष तकरा जड़िस हम कोड़ि देबै।

मनमे जे चिनगी सुनगि रहल, से कहियाधरि हम झाँपि सकब,

तें ई मन जहिया लहरि जेतै, तहिया खएतै धोविया पछाड़॥ हम सुना

३

चलैमन जगदम्बाक द्वारि चलैमन जगदम्बाक द्वारि।

सब दुःख हरती झोड़ी भरती, बिगड़ल देती सम्हारि॥

चलै मन...

मधु कैटभक डरे पड़एला जटिया स्वयं विधाता।

पूजन ध्यान बन्दना कएलनि कष्टहरु हे माता॥

बोधल हरि मारल मधु कैटभ बिधिकँ कएल गोहारि।

चलै मन..

महिषासुरक त्राससँ धरती थर-थर काँपए लागल

छोड़ि अपन घर द्वारि देवता ऋषि मुनि जंगल भागल।

हुनका सबहक कष्ट हरि लेलनि महिषासुरकँ मारि। चलै मन..

हुँ कारक उच्चरित शब्दसँ धुम्र गेल सुरधाम।

चण्ड-मुण्ड आ रक्तवीजकँ मिटा देलनि माँ नाम।

शुम्भ-निशुम्भ मारि धरतीसँ दैत्य कएल निकटारि॥ चलै मन...

शशि कुज बुध गुरु शुक्र शनिश्रवर की दिनमणिक तारा।

सर, नर मुनि, गन्धर्व अप्सरा सबहक अहीँ सहारा।

हमरो नैया पार करु माँ, भबसँ दिय उबारि। चलै मन...



गजेन्द्र ठाकुर

(जन्म 30 मार्च 1971) कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-1 सँ 7 (लेखकक छिड़िआयल पद्य, उपन्यास, गल्प-कथा, नाटक-एकाङ्की, बालानां कृते, महाकाव्य, शोध-निबन्ध आदिक समग्र संकलन) प्रेसमे अछि। ई-मेल- ggajendra@airtelmail.in

केदारनाथ चौधरीक उपन्यास ''चमेली रानी'' आ माहुर

केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल । एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहेँ खतम भेल जे एकर दोसर भागक प्रबल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- ''...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबूकेँ ''कन्यादान''क पश्चात् ''द्विरागमन'' लिखए पड़लनि तहिना ''चमेलीरानी''क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए पड़तन्हि''।

ई दुनू खण्ड कैक तरहेँ मैथिली उपन्यास लेखनमे मोन राखल जाएत। एक तँ जेना रामलोचन ठाकुर जी कहैत छथि- ''..पारस-प्रतिभाक एहि लेखकक पदार्पण एते विलम्बित किएक?'' ई प्रश्न सत्ये अनुत्तरित अछि। लेखक अपन ऊर्जाक संग अमेरिका, ईरान आ आन ठाम पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहथि रोजगारमे रहथि मुदा ममता गाबए गीतक निर्माता घुमि कऽ दरभंगा अएलाह तँ अपन समस्त जीवनानुभव एहि दुनू उपन्यासमे उतारि देलन्हि। राजमोहन झासँ एकटा साक्षात्कारमे हम एहि सम्बन्धमे पुछने रहियन्हि तँ ओ कहने रहथि जे बिना जीवनानुभवक रचना संभव नहि,जिनकर जीवनानुभव जतेक विस्तृत रहतन्हि से ओतेक बेशी विभिन्नता आ नूतनता आनि सकताह। केदारनाथ चौधरीक ''चमेली रानी'' आ ''माहुर'' ई सिद्ध करैत अछि। चमेली रानी बिक्रीक एकटा नव कीर्तिमान बनेलक। मात्र जनकपुरमे एकर ५०० प्रति बिका गेल। लेखक ''चमेली रानी''क समर्पण ''ओहि समग्र मैथिली प्रेमीकेँ जे अपन सम्पूर्ण जिनगीमे अपन कैंचा खर्च कऽ मैथिली-भाषाक कोनो पोथी-पत्रिका किनने होथि'' केँ करैत छथि, मुदा जखन अपार बिक्रीक बाद एहि पोथीक दोसर संस्करण २००७ मे एकर दोसर खण्ड ''माहुर''क २००८ मे आबए सँ पूर्वहि निकालए पड़लन्हि तखन दोसर भागमे समर्पण स्तंभ छोड़नाइये लेखककेँ श्रेयस्कर बुझेलन्हि। एकर एकटा विशिष्टता हमरा बुझबामे आएल २००८ केर अन्तिम कालमे जखन हरियाणाक उपमुख्यमंत्री एक मास धरि निपत्ता रहलाह, मुदा राजनयिक विवशताक अन्तर्गत जाधरि ओ घुरि कऽ नहि अएलाह तावत हुनकापर कोनो कार्यवाही नहि कएल जा सकल। अपन गुलाब मिश्रजी तँ सेहो अही राजनीतिक विवशताक कारण निपत्ता रहलोपर गद्दीपर बैसले रहलाह,क्यो हुनका हँटा नहि सकल। चाहे राज्यक संचालनमे कतेक झंझटि किएक नहि आएल होए। उपन्यास-लेखकक जीवनानुभव एकर सम्भावना चारि साल पहिनहिए लिखि कऽ राखि देलक। भविष्यवक्ता कोनो टोना-टापरसँ भेनाइ संभव नहि होइत अछि वरन् जीवनानुभव एकरा सम्भव बनबैत अछि। एहि दुनू उपन्यासक पात्र चमत्कारी छथि, आ सफल सेहो कारण उपन्यासकार एकरा एहि ढंगसँ सृजित करैत छथि जेना सभ वस्तुक हुनका व्यक्तिगत अनुभव होइन्ह।

उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। ''चमेली रानी'' उपन्यासक प्रारम्भ करैत लेखक एकर पहिल परीक्षामे उत्तीर्ण होइत छथि जखन एकर लयात्मक प्रारम्भ पाठकमे रुचि उत्पन्न करैत अछि। कीर्तिमुखक पाँच टा बीटाक नामकरणक लेल ओकर जिगरी दोस कन्टीरक विचार जे ''पाँचो पाण्डव बला नाम बेटा सबहक राखि दहक। सुभिता हेतौ''। फेर एक ठाम लेखक कहैत छथि जे जतेक गतिसँ बच्चा होइत रहैक से कौरवक नाम राखए पड़ितैक। नायिका चमेली रानीक आगमन धरि कीर्तिमुखक बेटा सभक वर्णन फेर एहि क्रममे अंग्रेज डेम्सफोर्ड आ रूपकुम्मरिक सन्तान सुनयनाक विवरण अबैत अछि। फेर रूपकुम्मरिक बेटी सुनयनाक बेटी शनिचरी आ नेताजी रामठेंगा सिंह ''चिनगारी''क विवाह आ नेताजी द्वारा शनिचरीकेँ कनही मोदियानि लग लोक-लाजक द्वारे राखि पटना जाएब, नेताजीक मृत्यु आ शनिचरी आ कीर्तिमुखक विवाहक वर्णन फेरसँ खिस्साकेँ समेटि लैत अछि। तकर बाद चमेली रानिक वर्णन अबैत छथि जे बरौनी रिफाइनरीक स्कूलमे बोर्डिंगमे पढ़ैत छथि आ एहि कनही मोदियानिक बेटी छथि। कनही मोदियानिक मृत्युक समय चमेली रानी दसमाक परीक्षा पास कऽ लेने छथि। भूखन सिंह चमेली रानीक धर्म पिता छथि। डकैतीक विवरणक संग उपन्यासक पहिल भाग खतम भऽ जाइत अछि।

दोसर भागमे विधायकजीक पाइ आकि खजाना लुटबाक विवरण, जे कि पूर्व नियोजित छल, एहि तरहेँ देखाओल गेल अछि जेना ई विधायक नांगटनाथ द्वारा एकटा आधुनिक बालापर कएल बलात्कारक परिणामक फल रहए। आब ई नांगटनाथ रहथि मुख्यमंत्री गुलाब मिसिरक खबास जे राजनीतिक दाँवपेंचमे विधायक बनि गेलाह। २००८ ई.क अरविन्द अडिगक बुकर पुरस्कारसँ सम्मानित अंग्रेजी उपन्यास ''द ह्वाइट टाइगर''क बलराम हलवाइक चरित्र जे चाहक दोकानपर काज करैत दिल्लीमे एकटा धनिकक ड्राइवर बनि फेर ओकरा मारि स्वयं धनिक बनि जाइत अछि, सँ बेश मिलैत अछि आ चारि बरख पूर्व लेख एहि चरित्रक निर्माण कऽ चुकल छथि। फेर के.जी.बी. एजेन्ट भाटाजीक आगमन होइत अछि जे उपन्यासक दोसर खण्ड ''माहुर'' धरि अपन उपस्थिति बेश प्रभावी रूपेँ रखबामे सफल होइत छथि।

उपन्यासक तेसर भागमे अहमदुल्ला खाँक अभियान सेहो बेश रमनगर अछि आ वर्तमान राजनीतिक सभ कुरूपताकेँ समेटने अछि।

उपन्यासक चारिम भाग गुलाब मिसिरक खेरहा कहैत अछि आ फेरसँ अरविन्द अडिगक बलराम हलवाइकेँ मोन पाड़ैत अछि। भुखन सिंहक संगी पन्नाकेँ गुलाब मिसिर बजबैत अछि आ ओकरा भुखन सिंहक नांगटनाथ आ अहमदुल्ला अभियानक विषयमे कहैत अछि। संगहि ओकरा मारबाक लेल कहैत अछि से ओ मना कऽ दैत छैक। मुदा गुलाब मिसिर भुखन सिंहकेँ छलसँ मरबा दैत अछि।

पाँचम भागमे भुखन सिंहक ट्रस्टक चरचा अछि, चमेली रानी अपन अड्डा छोड़ि बैद्यनाथ धाम चलि जाइत छथि। आब चमेली रानीक राजनीतिक महत्वाकांक्षा सोझाँ अबैत अछि। स्टिंग ऑपरेशन होइत छथि आ गुलाब मिसिर घेरा जाइत छथि।

उपन्यासक छठम भाग मुख्यमंत्रीक निपत्ता रहलाक उपरान्तो मात्र फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाओल जएबाक चरचा होएबाक अछि जे कोलिशन पोलिटिक्सक विवशतापर टिप्पणी अछि।

उपन्यासक दोसर खण्ड ''माहुर''क पहिल भाग सेहो घुरियाइत-घुरियाइत चमेली रानीक पार्टीक संगठनक चारू कात आबि जाइत अछि। स्त्रीपर अत्याचार, बाल-विधवा आ वैश्यावृत्तिमे ठेलबाक संगठन सभकेँ लेखक अपन टिप्पणी लेल चुनैत छथि।

माहुरक दोसर भागमे गुलाब मिसिरक राजधानी पदार्पणक चरचा अछि। चमेली रानी द्वारा अपन अभियानक समर्थनमे नक्सली नेताक अड्डापर जएबाक आ एहि बहन्ने समस्त आन्दोलनपर लेखकीय दृष्टिकोण, संगहि बोनक आ आदिवासी लोकनिक सचित्र-जीवन्त विवरण लेखकीय कौशलक प्रतीक अछि। चमेली रानी लग फेर रहस्योद्घाटन भेल जे हुनकर माए कनही मोदियाइन बड़ड पैघ घरक छथि आ हुनकर संग पटेल द्वारा अत्याचार कएल गेल, चमेली रानीक पिताक हत्या कऽ देल गेल आ बेचारी माए अपन जिनगी कनही मोदियाइन बनि निर्वाह कएलन्हि। ई सभ गप उपन्यासमे रोचकता आनि दैत अछि।

माहुरक तेसर भाग फेरसँ पचकौड़ी मियाँ, गुलाब मिसिर, आइ.एस.आइ. आ के.जी.बी.क षडयन्त्रक बीच रहस्य आ रोमांच उत्पन्न करैत अछि।

माहुरक चारिम भाग चमेली रानी द्वारा अपन माए-बापक संग कएल गेल अत्याचारक बदला लेबाक वर्णन दैत अछि, कैक हजार करोड़क सम्पत्ति अएलासँ चमेली रानी सम्पन्न भऽ गेलीह।

माहुरक पाँचम भाग राजनैतिक दाँव-पेंच आ चमेली रानीक दलक विजयसँ खतम होइत अछि।

विवेचन: उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक ''डॉन क्विक्जोट'', जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ किछु समय पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवती चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, नीक- खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि।

जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

नचिकेता:नो एण्ट्री : मा प्रविश

विवेचन: भारत आऽ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक ''नाट्यशास्त्र'' आऽ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक ''काव्यशास्त्र''।

भरत नाट्यकेँ ''कृतानुसार'' ''भावानुकार'' कहैत छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहैत छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नहि। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतहु चरचा नहि अछि।

अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दैत छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आऽ गीत रहैत अछि। भरत कहैत छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आऽ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल

जाएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु होए से आवश्यक नहि, नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि तँ कोनो तेहन आधिकारिक कथावस्तु अछि आऽ नहिए कोनो प्रासांगिक, कारण एहिमे नायक कोनो सर्वमान्य नायक नहि अछि। जे बजारी उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ैत छथि से कनेक कालक बाद गौण पड़ि जाइत छथि। जाहि उच्क्काक सोझाँ चोर सकदम रहैत अछि से किछु कालक बाद, किछु नव नहि होइछ केर दर्शनपर गप करैत सोझाँ अबैत छथि। जे यमराज सभकेँ थर्रैने छथि से स्वयं निभाक सोझाँमे अपन तेज, मध्यम होइत देखैत छथि। भिखमंगनी हुनका दैवी स्वरूप उतारने देखैत हँसैत छथि तँ रमणी मोहन आऽ निभा सेहो हुनका आऽ चित्रगुप्तकेँ अन्तमे अपशब्द कहैत छथि। वामपंथीक आऽ अभिनेताक सएह हाल छन्हि। कोनो पात्र कमजोर नहि छथि आऽ रिबाउन्ड करैत छथि।

कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आऽ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आऽ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मिश्र इतिवृत्तिक होएबाक कोनो टा गुंजाइश तखने खतम भए जाइत अछि जखन चित्रगुप्त आऽ यमराज अपन नकली भेष उतारैत छथि आऽ भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहैत छथि जे ई भिखमंगनी सेहो हमरे सभ जेकाँ कलाकार छथि! मात्र यमराज आऽ चित्रगुप्त नामसँ कथा इतिहास-पुराण सम्बद्ध नहि अछि आऽ इतिवृत्ति पूर्णतः उत्पाद्य अछि। अरस्तू कथानककेँ सरल आऽ जटिल दू प्रकारक मानैत छथि। ताहि हिसाबसँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आकस्मिक घटना आदि जाहि सरलताक संग फ्लोमे अबैत अछि, से ई नाटक सरल कथानक आधारित कहल जाएत। फेर अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आऽ इतिहास एहि तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मनैत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश केँ काल्पनिकमूलक श्रेणीमे एहि हिसाबसँ राखल जाएत। अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र, यशस्वी आऽ कुलीन छथि- सत् असत् केर मिश्रण। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे जे चरित्र सभ छथि ताहिमे सभ चरित्रमे सत् असत् केर मिश्रण अछि। निभा उच्चवंशीय छथि मुदा रमणी मोहन जे बलात्कारक बादक पिटाई केर बाद मृत भेल छथि हुनकासँ हिलि-मिलि जाइत छथि। भिखमंगनी मिथिला चित्रकार अनसूया छथि। दुनू भद्रपुरुष बजारी आऽ चारू सैनिक एहि प्रकारेँ बिन कलुषताक सोझाँ अबैत छथि। भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आऽ ईर्ष्यालूकेँ धीरोद्धत्त कहैत छथि। बजारी आऽ दुनू भद्रपुरुष संगीतक बेश प्रेमी छथि तँ रमणी मोहन प्रेमी-प्रेमिकाकेँ देखि कए ईर्ष्यालू, सैनिक सभ शान्त छथि क्षत्रियोचत गुण सेहो छन्हि से धीरोदत्त आऽ धीरप्रशान्त दुनू छथि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि प्रकारक विभाजन सम्भव नहि अछि।

भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आऽ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत छथि। प्राप्त्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांत आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आऽ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे उलझन अबैत अछि, अन्तिम दू मे सुलझन।

कार्यावस्थाक पंच विभाजन- बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आऽ कार्य अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे बीया अछि एकटा द्वन्द मृत्युक बादक लोकक, बीमा एजेन्ट एतए बिनु मृत्युक पहुँचि जाइत छथि। यमराज आऽ चित्रगुप्त मेकप आर्टिस्ट निकलैत छथि। विभिन्न बिन्दु द्वारा एकटा चरित्र ऊपर नीचाँ होइत रहैत अछि। पताका आऽ प्रकरी अवान्तर कथामे होइत अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि अछि। बीआक विकसित रूप कार्य अछि मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे ओऽ धरणापर खतम भए जाइत अछि! अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आऽ अवसान कहैत छथि। आब आऊ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आऽ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आऽ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आऽ प्राप्त्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आऽ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आऽ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आऽ कार्यकेँ जोड़एबला। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मुख/ प्रतिमुख आऽ निर्वहण सन्धि मात्र अछि, शेष दू टा सन्धि नहि अछि।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आऽ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे स्थान एकहि अछि, समय लगातार आऽ कार्य अछि द्वारक भीतर पैसबाक आकांक्षा। दू घण्टाक नाटकमे दुइये घण्टाक घटनाक्रम वर्णित अछि नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कार्य सेहो एकेटा अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नहि होए आऽ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नहि होय। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कल्लोलक विभाजन घटनाक निर्दिष्ट समयमे भेल कार्यक आऽ नव कार्यारम्भमे भेल विलम्बक कारण आनल गेल अछि। मुदा एहि त्रिकक विरोध ड्राइडन कएने छलाह आऽ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओऽ समर्थन कएलन्हि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि तरहक कोनो समस्या नहि अबैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आपसी गपशपमे- जकरा फ्लैशबैक सेहो कहि सकैत छी- ककर मृत्यु कोना भेल से नीक जेकाँ दर्शित कएल गेल अछि।

भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आऽ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि तँ ड्राइडज नाटकक पठनीयताक समर्थन कएलन्हि। देसियर पठनीयता आऽ दृश्यत्व दुनूक समर्थन कएलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छलाह जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि मुदा पठनसँ सेहो

रसास्वाद भेटैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे पहिल कल्लोलक प्रारम्भमे ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एतए दृश्यत्वकेँ प्रधानता देल गेल अछि। पश्चिमी रंगमंच नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहैत छथि- इति शरसंधानं नाटयति। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भारतीय विधानकेँ अंगीकृत कएल गेल- जेना मृत्यु प्राप्त सभ गोटे द्वारा स्वर्ग प्रवेश द्वारक अदृश्य देबाड़क गपशप आऽ अभिनय कौशल द्वारा स्पष्टता। अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आऽ एतहु अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइत छल। नो एण्ट्री: मा प्रविश मैथिलीक परम्परासँ अपनाकेँ जोड़ने अछि मुदा संगहि इतिहास, पुराण आऽ समकालीन जीवनचक्रकेँ देखबाक एकटा नव दृष्टिकोण लए आएल अछि, सोचबाऽ लए एकटा नव अंतर्दृष्टि दैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय, कीर्तनिञा नाटक, अंकीयानाट, मुंशी रघुनन्दन दासक मिथिला नाटक, जीवन झाक सुन्दर संयोग, ईशनाथ झाक चीनीक लड्डू, गोविन्द झाक बसात, मणिपद्मक तेसर कनियाँ, नचिकेताजीक ''नायकक नाम जीवन, एक छल राजा'', श्रीशजीक पुरुषार्थ, सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी, महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक, राम भरोस कापड़ि भ्रमरक महिषासुर मुर्दाबाद, गंगेश गुंजनक बुधिबधिया केर परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत नचिकेताजीक नो एण्ट्री: मा प्रविश तार्किकता आऽ आधुनिकताक वस्तुनिष्टताकेँ ठाम-ठाम नकारैत अछि। वामपंथीकेँ यमराज ईहो कहैत छथिन्ह, जे वामपंथी देखि रहल छथि से सत्य नहि सपनो भए सकैत अछि। विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका अछि ई नाटक। सत्य-असत्य, सभ अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन करैत छथि। चोरक अपन तर्क छन्हि आऽ वामपंथी सेहो कहैत छथि कि चोर नेता नहि बनि सकैत छथि मुदा नेताक चोरिपर उतरि अएलासँ चोरक वृति मारल जाए बला छन्हि। नाटकमे आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आऽ नीक-खराबक भावना रहि-रहि खतम होइत रहैत अछि। यमराज आऽ चित्रगुप्त तक मुखौटामे रहि जीबि रहल छथि। उत्तर आधुनिकताक ई सभ लक्षणक संग नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एके गोटेक कैक तरहक चरित्र निकलि बाहर अबैत अछि, जेना उच्चवंशीय महिलाक। कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नहि लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भए जएत तकर कोनो ठेकान नहि। उत्तर आधुनिकताक सतही चिन्तन आऽ चरित्र सभक नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भरमार लागल अछि, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नहि अछि। यदि अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नहि कैक तरहेँ सोचए बला- विद्यमान छथि। कारण, नियन्त्रण आऽ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नहि वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास दर्शाओल गेल अछि। गणतांत्रिक आऽ नारीवादी दृष्टिकोण आऽ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास सोझाँ अबैत अछि। एहि तरहेँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण दर्शित होइत अछि, एतए पाठक कथानकक मध्य उठाओल विभिन्न समस्यासँ अपनाकेँ परिचित पबैत छथि। जे द्वन्द नाटकक अंतमे दर्शित भेल से उत्तर-आधुनिक युगक पाठककेँ आश्चर्यित नहि करैत छन्हि, किएक तँ ओऽ दैनिक जीवनमे एहि तरहक द्वन्दक नित्य सामना करैत छथि।

ई नाटक मैथिलि नाटक लेखनकेँ एकटा नव दिशामे लए जाएत आऽ आन विधामे सेहो नूतनता आनत से आशा कए सकैत छी।

कथा: पहरराति

''सुनू। प्रयोगशालाक स्विच ऑफ कए दियौक''।

चारि डाइमेन्शनक वातावरणमे अपन सभटा द्वि आ त्रि डाइमेन्शनक वस्तुक प्रयोग करबाक लेल धौम्य प्रयोगशालामे प्रयोग शुरू करए बला छथि। हुनकर संगी-साथी सभ उत्सुकतासँ सभटा देखि रहल छथि।

''दू डाइमेन्शनमे जीबए बला जीव तीन डाइमेन्शनमे जीबए बला मनुक्खक सभ कार्यकेँ देखि तऽ नहि सकैत छथि मुदा ओकर सभटा परिणामक अनुभव करैत छथि। अपन एकटा जीवन-शैलीक ओ निर्माण कएने छथि। ओहि परिणामसँ लड़बाक व्यवस्था कएने छथि। तहिना हमरा लोकनि सेहो चारि डाइमेन्शनमे रहए बला कोनो सम्भावित जीवक वा ई कहू जे तीनसँ बेशी डाइमेन्शनमे जिनहार जीवक हस्तक्षेपकेँ चिन्हबाक प्रयास करब''। धौम्य कहैत रहलाह।

एक आ दू डाइमेन्शनमे रहनिहारक दू गोट प्रयोगशालाक सफलताक बाद धौम्यक ई तेसर प्रयोग छल।

''एक विमीय जीव जेना एकटा बिन्दु। बच्चामे ओ पढ़ैत छलाह जे रेखा दू टा बिन्दुकेँ जोड़ैत छैक। नञि तऽ बिन्दुमे कोनो चौड़ाइ देखना जाइत अछि आ नहिये रेखामे। रेखा नमगर रहैत अछि मुदा बिन्दुमे तँ चौड़ाइक संग लम्बाइ सेहो नहि रहैत छैक। एक विमीय विश्वमे मात्र आगाँ आ पाछाँ रहैत अछि। नञि अछि वाम दहिनक बोध नहिये ऊपर नीचाँक। मात्र सरल रेखा, वक्रता कनियो नहि। आब ई नहि बुझि लिअ जे अहाँ जतए बैसल छी, ओतए एकटा रेखा विचरण करए लागत। वरण ई बुझू जे ओ रेखा मात्र अछि, नहि कोनो आन बहिः।

''द्वि बीमीय ब्रह्माण्ड भेल जतए आगू पाछूक विहाय वाम दहिन सेहो अछि मुदा ऊपर आ नीछाँ एतए नहि अछि। ई बुझू जे अहाँक सोझाँ राखल सितलपाटीक सदृश ई होएत, जाहिमे चौड़ाइ विद्यमान नहि अछि।'' ''मुदा श्रीमान् ई चलैत अछि कोना। गप कोना करत, एक दोसरकेँ संदेश कोना देत''।

''आऊ। पहिने एक विमीय ब्रह्माण्डक अवलोकन करैत छी''।

धौम्य एक विमीय प्रयोगशालाक लग जाइत छथि। ओतए बिन्दु आ बिन्दुक

सम्मिलन स्वरूप बनल रेखा सभ देखबामे अबैत अछि। ई जीव सभ अछि। एक विमीय ब्रह्माण्डक जीव जे एहि तथ्यसँ अनिभिज्ञ अछि जे तीन विमीय कोनो जीव ओकरा सभकेँ देखि रहल छैक।

"देखू। ई सभ जीव एक दोसराकेँ पार नहि कए सकैत अछि। आगू बढ़त तँ तावत धरि जा धरि कोनो बिन्दु वा रेखासँ टक्कर नहि भए जएतैक। आ पाछाँ हटत तावत धरि यावत फेर कोनो जीवसँ भेँट नहि होएतैक। एक दोसराकेँ संदेश सेहो मात्र एकहि पँक्तिमे दए सकत कारण पंक्तिक बाहर किछु नहि छैक। ओकर ब्रह्माण्ड एकहि पंक्तिमे समाप्त भए जाइत अछि।

"आब चलू द्वि बीमीय प्रयोगशालामे"।

सभ क्यो पाछाँ-पाछाँ जाइत छथि।

"एतय किछु रमण चमन अछि। पहिल प्रयोगशाला तँ दू तहसँ जाँतल छल, दुनू दिशिसँ आ ऊपरसँ सेहो। मात्र लम्बाइ अनन्त धरि जाइत छल। मुदा एतय ऊपर आ नीचाँक सतह जाँतल अछि। ई आगाँ पाछाँ आ वाम दहिन दुनू दिशि अनन्त धरि जा रहल अछि। ताहि हेतु हम दुनू प्रयोशालाकेँ पृथ्वीक ऊपर स्वतंत्र नभमे बनओने छी। एतुक्का जीवकेँ देखू। सीतलपाटी पर किछुओ बना दियौक। जेना छोट बच्चा जे आधुनिक चित्रकार बनबैत छथि। एतय ओ सभ प्रकार भेटि जाएत। मुदा ऊँचाइक ज्ञान एतए नहि अछि। एक दोसरकेँ एक बेरमे मात्र रेखाक रूपमे देखैत अछि ई सभ। दोसर कोणसँ दोसर रेखा आ तखन स्वरूपक ज्ञान करैत जाइत अछि। लम्बाइ आ चौड़ाइ सभ कोणसँ बदलत। मुदा वृत्ताकार जीव सेहो होइत अछि। जेना देखू ओ जीव वाम कातमे। एक दोसराकेँ संदेश ओकरा लग जा कए देल जाइत अछि। पैघ समूहमे संदेश प्रसारित होयबामे ढ़ेर समय लागि जाइत अछि"।

"श्रीमान, की ई संभव अछि, जेना हमरा सभक सोझाँ रहलो उत्तर ओ सभ हमरा लोकनिक अस्तित्वसँ अनभिज्ञ अछि तहिना हमरा सभ सेहो कोनो चारि आ बेशी विमीय जीवक अस्तित्वसँ अनभिज्ञ होइ"।

"हँ तकरे चर्चा आ प्रयोग करबाक हेतु हमरा सभ एतए एकत्र भेल छी। अहाँमे सँ चारि गोटे हमरा संग एहि नव कार्यक हेतु आबि सकैत छी। ई योजना कनेक कठिनाह अछि। कतेक साल धरि ई योजना चलत आ परिणाम कहिया जा कए भेटत, तकर कोनो सीमा निर्धारण नहि अछि"।

पाँच टा विद्यार्थी श्वेतकेतु, अपाला, सत्यकाम, रैक्व आ घोषा एहि कार्यक हेतु सहर्ष तैयार भेलाह। धौम्य पाँचू गोटेकेँ अपन योजनामे सम्मिलित कए लेलन्हि।

"चारि बीमीय विश्वमे तीन बीमीय विश्वसँ किछु अन्तर अछि। तीन बीमीय विश्व भेल तीन टा लम्बाइ, चौड़ाइ आ गहराइ मुदा एहिमे समयक एकटा बीम सेहो सम्मिलित अछि। तँ चारि बीमीय विश्वमे आकि पाँच बीमीय विश्वमे समयक एकसँ बेशी बीमक सम्भावना पर सेहो विचार कएल जाएत। मुदा पहिने चारि बीमीय विश्व पर हमरा सभ शोध आगाँ बढ़ाएब। एहिमे मूलतः समयक एकटा बीम सेहो रहत आ ताहिसँ बीमक संख्या पाँच भए जायत। समयकेँ मिलाकए चारि बीमक विश्वमे हमरा सभ जीबि रहल छी। जेना वर्ण अन्धतासँ ग्रसित लोककेँ लाल आ हरिअरक अन्तर नहि बुझि पड़ैत छैक ताहि प्रकारसँ हमरा सभ एकटा बेशी बीमक विश्वक कल्पना कए सकैत छी, अप्रत्यक्ष अनुभव सेहो कए सकैत छी"। धौम्य बजलाह।

सभा समाप्त भेल आ सभ क्यो अपन-अपन प्रकोष्ठमे चलि गेलाह। सैद्धांतिक शोध आ तकर बाद ओकर प्रायोगिक प्रयोगमे सभ गोटे लागि गेलाह। त्रिभुज धरातल पर खेंचि कए एक सय अस्सी अंशक कोण जोड़ि कए बनएबाक अतिरिक्त पृथ्वीकार आकृतिमे खेंचल गेल त्रिभुज जाहि मे प्रत्येक रेखा एक दोसरासँ नब्बे अंशक कोण पर रहैत अछि । मुदा रेखा सोझ नहि टेढ़ रहैत अछि। ओहिना समय आ स्थानकेँ टेढ भेला पर एहन संभव भए सकैत अछि जे हमरा सभ प्रकाशक गतिसँ ओहि मार्गे जाइ आ पुनः घुरि आबी। प्रकाश सूर्यक लगसँ जाइत अछि तँ ओकर रस्ता कनेक बदलि जाइत छैक।

श्वेतकेतु आ रैक्व एकटा सिद्धान्त देलन्हि- जेना कठफोरबा काठमे, वृक्षमे खोह बनबैत अछि, तहिना एकटा समय आ स्थानकेँ जोड़एबला खोहक निर्माण शुरू भए गेल। अपाला एकटा ब्रह्माण्डक डोरीक निर्माण कएलन्हि, जकरा बान्हि कए प्रकाश वा ओहूसँ बेशी गतिसँ उड़बाक सम्भावना छल। सत्यकाम एकटा एहन सिद्धान्तक सम्भावना पर कार्य शुरू कएने छलाह, जकर माध्यमसँ तीन टा स्थानिक आ एकटा समयक बीमक अतिरिक्त कताक आर बीम छल जे बड़ लघु छल, टेढ छल आ एहि तरहँ वर्त्तमान विश्व लगभग दस बीमीय छल। घोषा स्थान समयक माध्यमसँ भूतकालमे पहुँचबासँ पूर्व देशक विधिमे ई परिवर्त्तन करबाक हेतु कहलन्हि जाहिसँ कोनो वैज्ञानिक भूतकालमे पहुँचि कए अपन वा अपन शत्रुकेँ जन्मसँ पूर्व नहि मारि दए। घोषा विश्वक निर्माणमे भगवानक योगदानक चरचा करैत रहैत छलीह। जौँ विश्वक निर्माण भगवान कएलन्हि, एकटा विस्फोट द्वारा आ एकरा सापेक्षता आ अनिश्चितताक सिद्धांतक अन्तर्गत छोड़ि देलन्हि बढ़बाक लेल तँ फेर समयक चाभी तँ हुनके हाथमे छन्हि। जखन ओ चाहताह फेरसँ सभटा शुरू भए जायत। जौँ से नहि अछि, तखन समय स्थानक कोनो सीमा, कोनो तट नहि अछि, तखन तँ ई ब्रह्माण्ड अपने सभ किछु अछि, विश्वदेव, तखन भगवानक कोन स्थान? घोषा सोचैत रहलीह।

आब धौम्यक लेल समय आबि गेल छल। अपन पाँचू विद्यार्थीक सभ सिद्धांतकेँ ओ प्रयोगमे बदलि देलन्हि। आ आब समय आबि गेल। पहरराति।

पुष्पक विमान तैयार भेल स्थान-समयक खोहसँ चलबाक लेल। ब्रह्माण्डीय डोरी बान्हि देल गेल पुष्पक

पर। धौम्य सभसँ विदा लेलन्हि। प्रकाशक गतिसँ चलल विमान आ खोहमे स्थान आ समयकेँ टेढ़ करैत आगाँ बढ़ि गेल। ब्रह्माण्डक केन्द्रमे पहुँचि गेलाह धौम्य। पहरराति बीतल छल। आगाँ कारी गह्वर सभ एहि समय आ स्थानकेँ टेढ़ कएल खोहमे चलए बला पुष्पकक सोझाँ अपन सभटा भेद राखि देलक।

भोरुका पहरक पहिने धौम्यक विमान पुनः पृथ्वी पर आबि गेल। मुदा एतए आबि हुनका ई विश्व किछु बदलल सन लगलन्हि। श्वेतकेतु, अपाला, सत्यकाम, रैक्व आ घोषा क्यो नहि छलाह ओतए। विमानपट्टी सेहो बदलल सन। विश्वमे समय-स्थानक पट्टी सभ भरल पड़ल छल।

"यौ। समय बताऊ कतेक भेल अछि"।

"कोन समय। सोझ बला वा स्थान-समय विस्थापन बला। सोझ बला समय अछि, सन् ३१०० मास..."।

ओ बजिते रहि गेल छल मुदा धौम्य सोचि रहल छलाह जे स्थान-समय विस्थापनक पहररातिमे हजार साल व्यतीत भए गेल। ककरा बतओताह ओ अपन ताकल रहस्य। आकि एतुक्का लोक ओ रहस्य ताकि कए निश्चिन्त तँ नहि भए गेल अछि?

कथा - आर्या

विवाहक उपरान्त ढ़ेरी-ढ़ाकी लोक हमरासँ भेँट करबाक हेतु सासुरमे आबि रहल छलाह। ताहिमे छलि एकटा नवम् कक्षाक छात्रा आर्या आ ओकर पितामही आ माए।

ओ माएक संग नहि आबि असगरे आएल छलीह। खूब कारी, दुबर-पातर, आवश्यकतासँ बेशी अनुशासित आ शिष्ट आ नापि-जोखि कए बजनिहारि। हमरासँ सभ गपमे उलटा। हमर कनियाँ हुनकासँ हमर परिचय करओलन्हि आ ओकर प्रशंसा सेहो कएलन्हि। किछु कालक बाद ओकर पितामही आ माए हमरासँ भेँट करबाक हेतु अएलीह ।हमरा अनुभव भेल जे हुनकर पितामहीक तँ लेहाज राखल गेल छल मुदा हुनकर माएक अवहेलना सन हमर कनियाँ आ सासु केने छलखिन्ह। गप्प करबामे ओ नीक छलीह आ जाइत-जाइत कहि गेलीह जे हमरा सभ अहाँक ससुरक किरायादार छी आ उपरका महला पर रहैत छी। से भीड़-भाड़ कम भेला पर अवश्य आऊ।

ई गप्प जाइत-जाइत हमर सासु प्रायः सुनि लेलन्हि से हमर पत्नीकेँ स्थिरेसँ मुदा आज्ञार्थक रूपेँ कहलन्हि जे ऊपर जएबाक कोनो जरूरी नहि छैक। हम पत्नीसँ पुछलियन्हि जे बेचारी एतेक आग्रहसँ बजओलन्हि अछि। पत्नी कहलथि जे सुनलियैक नहि, माँ मना कएलन्हि अछि। कारण पुछला पर गप अन्ठा देलन्हि।

किछु दिनुका बादक घटना छी, अन्हरोखेमे गेटक झमाड़ि कए खुजबाक अबाज भेल। लागल जे क्यो पीबि कए बड़बड़ा रहल अछि। हमर अतिरिक्त क्यो ओहि अबाज पर ध्यान नहि देलन्हि आ अन्ठयबाक स्वांग कएलन्हि। हम बाहर अएलहुँ तँ एकटा अधवयसु झूमैत अबैत दृष्टिगोचर भेलाह। हमरा देखि डोलैत हाथसँ जमायबाबू कहि नमस्कार कएलन्हि। ओ अखन धरि हमरासँ भेँट नहि होएबाक कारण हमर पत्नीकेँ फड़िछओलन्हि आ डोलैत ऊपर सीढ़ीक दिशसँ चलि गेलाह। हमर पत्नी हाथ पकड़ि कए हमरा भीतर आनि लेलन्हि आ ईहो सूचना देलन्हि जे ईएह आर्याक पिता थीक। अनायासहि हमरा माथमे आएल जे रंग जे आर्याक छैक से बापे पर गेल छैक। बादमे हमर सासु ऊपर जा कए भाषण दए अयलीह आ एक महिनाक भीतर घर छोड़बाक अल्टीमेटम सेहो आर्याक परिवारकेँ दए देलन्हि। हमर सार कहलथि जे ई दसम अल्टीमेटम छैक मुदा हमर सासु अडिग छलीह जे किछु भए जाय एहि बेर ओ नहि मानतीह। जमाय की बुझताह जे केहन भाड़ादार रखने छी हम सभ। पहिने ठकिया-फुसिया कय बहटारि लैत छल।

पुछला पर पता चलल जे आर्याक पिता डॉक्टर छैक आ सेहो होमियोपैथिक, आयुर्वेदिक किंवा भेटनरी नहि वरन् एम.बी.बी.एस.। मुदा लक्षण देखियौक। ओना सासु ईहो गप कहलन्हि जे ई पीने रहबाक उपरान्तो गप्प एकोटा अभद्र नहि बजैत अछि, जेना आन पीनहार सभक संग होइत छैक। मनुक्खो ठीके अछि मुदा यैह जे एकटा गड़बड़ी छैक से बड़ड भारी।

अगला दिन नशा उतरलाक बाद पति-पत्नी दुनू गोटे नीचाँ अएलीह आ सासुकेँ कहलन्हि जे आर्याक बोर्डक बाद ओ सभ पटना चलि जयतीह से हुनका सभक खातिर नहि मुदा आर्याक खातिर तावत धरि रहए दिअ। घोँघाउजक बाद से मोहलति भेटि जाए गेलन्हि। तकरा बाद हुनकर पत्नीक नजरि हमरासँ मिलल तँ ओ कहलन्हि जे अहाँ तँ ऊपर नहिये आएब। आ एहि बेर ऊपर अयबाक आग्रहो नहि कएलथि।

किछु दिन बीतल आ फेर सासुर जयबाक अवसर भेटल। किछु दिनमे पता चलल जे किरायादार बदलि गेल छथि। घरक लोक मात्र एतबे कहलथि जे आर्याक पिताक मृत्यु भऽ गेलन्हि आ अनुकम्पाक आधार पर ओकर माएकेँ नौकरी भेटि गेलैक। आब ओ सभ क्यो पटनामे रहैत छथि।

घरक लोक आगाँ किछु नहि कहलन्हि मुदा कनियाँक एकटा पितयौत भाए आयल रहथि, से कहलथि जे डॉक्टरी रिपोर्टमे विष खा कए आत्महत्याक वर्णन रहए। फेर आगाँ पति-पत्नीक मध्य मचल तुमुलक चर्च भेल। कनियाँ कहइत रहथिन्ह जे ई डॉक्टर बड़ड पिबैत छथि ताहि लेल झगड़ा होइत अछि तँ डॉक्टर साहब कहथि जे झगड़ाक द्वारे पिबैत छी। अस्तु मृत्युक बाद हुनकर कनियाँक भाव एहन सन छल जेना मुक्ति भेटि गेल होअए आ एहि बातमे सभ क्यो एक मत रहथि।

फेर दिन बितैत रहल आ बादमे फोन पर समाचार भेटल जे आर्या सेहो आत्म हत्या कए लेलक। फेर बहुत रास बात मोनमे घूमि गेल। आर्या भावुक

छलि, किछु बेशी तनावमे रहिते छलि। गपकेँ गंभीरतासँ लैत छलि।

एकटा सारि रहथि, हुनकर गप सेहो मोन पड़ल। एक गोट युवकक विषयमे आर्या कहैत छलि । ओकरा संगीकेँ होइत छैक जे ओ युवक ओकरासँ प्रेम करैत अछि। मुदा आर्याक मत छल जे ओ युवक ओकर संगीसँ नहि वरन् आर्यासँ प्रेम करैत छल। हम सारिकेँ कहने रहियन्हि जे आर्या बच्चा अछि, ओहिना हँसी कएने होएत। मुदा ओ कहलन्हि, जे नहि यौ। बड़ड भावुक अछि आर्या। कहैत अछि जे ओहि युवकके प्राप्त करबाक हेतु किछुओ करत।

एहि बात पर हम तखन कोनो बेशी ध्यान नहि देने रहियैक। मुदा एहि बातक आब महत्त्व बढ़ि गेल छल। हम फोन दोबारा लगेलहुँ। पता चलल जे ओ युवक कोनो पुरान महारानीक बेटीक बेटा छी। ओकर माता शिक्षिका अछि आ बाप मेरीनमे काज करैत अछि। साल-छह मास पर अबैत अछि। आ जखन अबैत छल तँ जे मास-पंद्रह दिन रहैत छल से मारि-पीटमे बिता दैत छल। पूरा मोहल्लामे बदनामी छैक। माएक शील-स्वभाव बड़ड नीक, बोलीसँ फूल-झड़ैत छैक। बापकेँ तँ लोक चिन्हितो नहि छैक। खाली झगड़ाक अबाजे सुनैत अछि लोक।

एक बेर आर्याक संगीकेँ स्कूल बससँ उतरबा काल क्यो तंग कएने छल तँ ओ युवक सभकेँ मारि-पीटि कए भगा देने छल आ तकर किछु दिनुका बाद आर्या एहि शहरसँ दूर भऽ गेल। ओ माएकेँ कहैत रहलि जे परीक्षा धरि रहए दिअ मुदा माए विमुक्त भेलाक बाद एको पल पुरान कटु-स्मृतिकेँ देखए नहि चाहैत छलीह।

हम फोन पर पुछए गेलियन्हि जे ओहि युवकक विवाह आर्याक मृत्युसँ पहिने भऽ गेल छल से कतए भेल छल। तँ सासुरक लोक अचंभित भऽ पुछलन्हि, जे ओकर विवाह तँ भेल मुदा अहाँ कोना बुझलहुँ।

पता चलल जे सिलीगुड़ी-दिशक कोनो कन्यागत रहथि आ ओ युवक अपन बाप जेकाँ घर-जमाए बनि रहबाक नियार कएने अछि। एहि शहरक लोककेँ तँ विवाहक हकारो नहि भेटल।

हम आर्याकेँ एकटा दृढ़ बालिका बुझैत रही। मुदा ओकर 'किछुओ कड़य पड़त से करब' केर अर्थ आब जा कए बुझलहुँ। ओहि युवकक बियाह भऽ गेल होएतैक से हमर अन्दाज मात्र रहए आ से आर्याक आत्महत्याक घटनाक जानकारी भेलाक बाद ।

आ ओकर आत्महत्याक दोष ककरा पर अछि। ओ जे दारू पिबैत रहए से बाप। आकि ओ मी जे बापक संग तंग आबि गेल रहए। ओ प्रेमी।

हमरा जनैत एकर सभक कारण अछि आर्याक परिवारक सम्बन्धी आ परिवारिक दोस-महीम सभ जे एक तरहेँ आर्या सभकेँ बारि देने रहए। ओ समाज जे ओकर परिवारक घटनाक चटखारा लऽ कए चर्च करैत छल ।

ओ घटना सभ जे ओकर पिताक मृत्युक रहए । ओकर पिता द्वारा गेट पिटबाक घटनाक चरचा आकि आर कोनो गप।बालिका भावुक रहए कोना सहि सकैत छलीह। आत्महत्याक नाम दए ओकरा मृत्युदण्ड देलक समाज।

कविता

१.

देखैत दुन्दभीक तान
बिच शामिल बाजाक

सुनैत शून्यक दृश्य
प्रकृतिक कैनवासक
हहाइत समुद्रक चित्र

अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द
क्यो देखत नहि हमर चित्र एहि अन्हारमे
तँ सुनबो तँ करत पात्रक आकांक्षाक स्वर

सागरक हिलकोरमे जाइत नाहक खेबाह
हिलकोर सुनबाक नहि अवकाश

देखैत अछि स्वरक आरोह अवरोह
हहाइत लहरिक नहि ओर-छोर

आकाशक असीमताक मुदा नहि कोनो अन्त
सागर तँ एक दोसरासँ मिलि करैत अछि
असीमताक मात्र छद्म, घुमैत गोल पृथ्वीपर,
चक्रपर घुमैत अनन्तक छद्म।

मुदा मनुक्ख ताकि अछि लेने
एहि अनन्तक परिधि
परिधिकेँ नापि अछि लेने मनुक्ख।

ई आकाश छद्मक तँ नहि अछि विस्तार,
एहि अनन्तक सेहो तँ नहि अछि कोनो अन्त?
तावत एकर असीमतापर तँ करहि पड़त विश्वास!

स्वरकेँ देखबाक
चित्रकेँ सुनबाक
सागरकेँ नाँघबाक।
समय-काल-देशक गणनाक।

सोहमे छोड़ि देल देखब
अन्हार खोहक चित्र,
सोहमे छोड़ल सुनब
हहाइत सागरक ध्वनि।

देखैत छी स्वर, सुनैत छी चित्र
केहन ई साधक
बनि गेल छी शामिल बाजाक
दुन्दभी वादक।

*राजस्थानमे गाजा-बाजावलाक संग किछु तँ एहेन रहैत छथि जे लए-तालमे बजबैत छथि मुदा बेशी एहन रहैत छथि जे बाजा मुँह लग आनि मात्र बजेबाक अभिनय करैत छथि। हुनका ई निर्देश रहैत छन्हि जे गलतीयोसँ बाजामे फूक नहि मारथि। यैह छथि शामिल बाजा।

2

पक्काक जाठि

तबैत पोखरिक महार दुपहरियाक भीत,
पस्त गाछ-बृच्छ-केचली सुसुम पानि शिक्त।

जाठि लकड़ीक तँ सभ दैछ पक्काक जाठि ई पहिल,
कजरी जे लागल से पुरातनताक प्रतीक।

दोसर टोलक पोखरि नहि, अछि डबरा वैह,
बिन जाठिक ओकर यज्ञोपवीत नहि भेल कारण सएह ।

सुनैत छिऐक मालिक ओकर अद्विज छल,
पोखरिक यज्ञोपवीतसँ पूर्वहि प्रयाण कएल।

पाइ-भेने सख भेलन्हि पोखरि खुनाबी,
डबरा चभच्चा खुनेने कतए यश पाबी।

देखू अपन टोलक पक्काक जाठि ई,
कंक्रीट तँ सुनैत छी, पानियेमे रहने होइछ कठोर,
लकड़ीक जाठि नहि जकर जीवन होइछ थोड़।

3

पिताक स्वप्न

पिताक स्वप्न

पिताक छल आश
झूठ बजनाइ पाप,
गलत काजक सर्वदा त्याग ।

सभ होए समृद्ध,
साधारण जीवन उत्तम विचारक बीच।

करैत पालन देखल जे,
बुरबक बुझैत अछि लोक
तँ की बदली? अपन शिक्षाक अर्थ !

त्यागि रस्ता मुदा वैह लक्ष्य
आ रस्ता जिदियाहवला !
मुदा बजने की ? बस करैत रहू
सोझाँवलाकेँ बुझए दियौक,
जे छी हम बुरबक।

जावत बुझत तावत भऽ जएतैक हारि,
पिताक सत्यकेँ झुकैत देखने रही
स्थितप्रज्ञतामे
तहियै बुझने रही जे
त्याग नहि कएल होएत
रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

4

यौ शतानन्द पुरहित

यौ शतानन्द पुरहित

अगहन शुक्ल विवाह पंचमी,
विवाहक सभसँ नीक दिन,
पुरहित शतानन्द,
राम सीताक विवाह कएल सम्पन्न ।

खररख वाली काकीक विवाह,
सेहो विवाह पंचमीएकेँ भेल,
पुरहित सेहो कोनो पैघे पण्डित रहथि,
सीता दाइ कतेक कष्ट कटलन्हि,
मड़बापर चित्रकला लिखल रहए मिथिलाक,
परिछन, नैना-जोगिन सभटा भेल,
ओहिना जेना भेल रहए सीता दाइक विवाहमे ।

बाल-विवाह तँ भेले रहन्हि खररख वाली काकीक,
विवाहोक दिन सभसँ नीक,
नैना जोगिन, जोगक गीत,
किछुओ कहाँ बचा सकल,
भऽ गेलीह विधवा।

कहैत छथि हमर संगी,
जहिया लऽ जाइत छथि ओ भौजीकेँ,
पेंशनक लेल दानापुर कैण्ट,
विधवा भौजीकेँ देखि,
भीतरे-भीतरे कनैत रहैत छथि ।

बाबूकेँ कहलन्हि जे विधवा विवाह हेबाक चाही,
तँ मारि-मारिकेँ ओ उठलथि,
नेऊराक राजपूत बाबूसाहेबक ई खानदान,
बड़ काबिल भेलाह ई,
मुदा अछि बुझल हमरो,
कुहरैत रहैत छथि बापो ।

मुदा बोझ उठेने छथि समाजक कुरीतिक,
उपाय कतए छनि कोन दोसरो।

5

निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्

निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्

चन्द्रयाणक पूर्वापर,
आर्यभटक उद्घोष पड़ैत अछि मोन ।

एहि कुसुमपुरमे करैत छी ज्ञानक वर्णन,
नापल पृथ्वी,सूर्य आ चन्द्रक व्यास,
पृथ्वी अचला नहि
अछि गतिमान ई भू ।

भं अछि तरेगण जे अछि अचल,
ग्रहण नहि राहुक ग्रास, वरण अछि मात्र छाह।

चलू चन्द्रयाणक लेल बधाई,
इसरोक वैज्ञानिक लोकनिकेँ आ माधवन नायरकेँ,
आएल अर्यभट्टक पंद्रह सए साल बादो तँ की !

ओहि देशवासी लए नहि विलम्बित,
लीलावती पढ़ियो कए जे नहि गानि सकलाह तरेगण,
कुसुमपुर नहि तँ श्रीहरिकोटामे सैह ई दिन।

कुसुमपुरमे ज्ञानक वर्णन नहि तँ,
कमसँ कम कसुमपुरसँ दए तँ दियौक बधाइ,
चन्द्रमाकेँ छूबाक लेल थारीमे पानि नहि राखब आब,
आर्यभटस्त्विह निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्
कमसँ कम कसुमपुरसँ दए तँ दियौक बधाइ।

कुमार शुशान्त

डटिकए जलपान

एकटा कविताक भाव निश्चितरुपसँ स्मरण होयत,

''सात समुद्रक जलकँ स्याही बनादेलजाए,

वनक जँगलके लेखनी,

समस्त धर्तीकँ कागज बनादेलजाए,

तखनो भगवानक महिमा पूर्णरुपसँ नहि लिखल जाऽसकैया''

भगवानक महिमा त छोडि दिय एतबा में त डटकेजलपानेक महिमा नई अटत। डटकेजलपान हूनक वास्तविक नाम छन्हि दिबसलाल। जे हुनकर कर्मेन भेटल छन्हि हुनक किछु महिमा प्रस्तुत अइछ,

कीत्र परिक्षाक सेंन्टर गामसँ ७० कि.मि. दूर एकटा स्कूल में रहें, आवत जावत नई संभव हाएत ई विचार कऽक गामक १० टा जे परिक्षार्थी छल सबगोटे एके ठाम डेरा लेनहुँ। पहिलबेर अभिभावकके नजरसँ दूर स्वच्छंद लंगोटिया यार दोस्त संग रहबाक मौका भेटल। उमंग उत्साह त एते कि बर्णने उचित नई। ओम्हर अभिभावकके कि फुरौलनि से भगवान जानथि। देख रेखलेल संग लगौलनि डटकेजलपानके। एक त राकश मंडलि उपर स न्योत से भेट गेल, डेरामें समानसब राइखकऽ फ्रेश होयबाकलेल कोका कोला पिबाक निर्णय भेल मंइलिके। दोकानपर पहुँचिते हुकुम भेल दोकनदारके,

''दसटा खूब ठंढा कोका कोला दऽ''

डटकेजलपान लगा कुल संख्या छल एग्यारह, मुदा जानि बूझकऽ मंगनऊ दशेटा।

आवशुरु भेल विवेचन

एकटा मित्र ''जा हुनका नइ भेटलनि ''

दोसर ''नई नई हुनका देबो नइ करबनि ''

तेसर ''से किया ?''

चौथा ''बड़ कडा निशा होइत छैक अइ में''

सब गोटे जाहि मंशासँ गप्प नारने छलहुँ से पुरा भेल, डटकेजलपान बजलथि।

डटके ''उबारु सब, माँए बाप परिक्षा देबला पढएने छन्हि आ ईसब एतऽ दारु पिबइ छथि ''

एक मित्र ''तोहरा अपन ँबतजभच के शपथ छह, कतौ बजिहऽ नई ''

अंगूठा द्दाप, ँबतजभच के मतलब नई बूझलथि ताएँ झगड़ा नई कएलथि, एतबे बजलनि

''ठिकछई २ नइ कहब ''।

किछुदेर सऽबके पिबैत देख नइ रहलगलन्हि, पूछि बैसलथि,''कते कड़ा होइछै एकर निशा ?''

मित्र ''नइ पूछह, झूमा देतौ ''

डटके ''(मूंह बिचकबइत) हूँह, केहन २ भाँग धतूर के त सिधें घोंटि जाइ छियनि त ई कि झूमाओत ?''

मित्र ''कहैत छिओ ने , भूलियोकऽ नई पिविहऽ ''

डटके ''एहन बात छइ तहन लबही तरे ''

लेलथि कोका कोला; मुश्किलसँ आधा बोतल पिने रहथि कि लड़बड़ाईत आवाजमें कहैछथि ''हमरा

कान में फहऽहऽहऽ करईया ''

एक मित्र ''हौ, ई कोन बिमारी भेल ''

दोसर मित्र ''बिमारी नई, हिनका निशा लागि गेल छन्हि ''

हौजी एतवा सुनिते आधा बोतल कोका कोला हाथमें नेने ओङ्राए लगलथि रोडपर। आबत भेल भीड़, जे तुरत्ते आएल रहथि हूनक एकैटा प्रश्न रहन्हि ''कि भ गेल छन्हि ''

''निशा लागल छन्हि ''

''कि लऽ लेलथि ''

''कोका कोला ''

''बड़ नौटंकियाह लोक छथि, ओइसँ कोनो निशा लगइ छइ ''

जइन एतबे जवाब धिरे धिरे जम्मा भेल पचासटा लोकसँ सुनलथि तइन ठाढ भऽ क देहपर लागल माटि झाड़ैत बजलथि,''उबारु सब, झूठे किया बजैजाइत गेले हऽ जे निशा बला चिज छइ से, करा देले ने बेइज्जति''।

एकटा मित्र ''तों किया चिंता करैत छऽ बेइज्जतिके?, ओकरा करऽ दहक ने जकरा ठाम इज्जत छई ''।

''बोनि निक भेटल'' चर्चा करैत सब गोटे पहुँचनऊ डेरामें।

आब निर्णय भेल भोजन लेल जएबाक।बेरा बेरी भोजन कऽक आएल जाए।

२ रुपैयामे भरिपेट भोजन पहिनहिं एकटा होटलमे तय कऽ क एडभान्स १० रुपैया जमा सेहो करा चुकल छलहुँ। होटलके नाम कहिकऽ सबसँ पहिने भोजन करबाकलेल पठाओलगेल डटके जलपानकँ। घन्टा दू घन्टा, चारि घन्टा भऽगेल मूदा डटके जलपान अएलथि नहि। चिन्ता सँ बेसी कौतुहुलतावश हुनक तलाशमे सबगोटे निकललहुँ। होटल आगा पहुँचलहुँ त फेर सँ नजर पडल किछु लोकक भीडपर। पहुचिते देखैत छी जे डटकेजलपान आओइ होटल मालिक बीच गर्मागरम बहश भऽरहल अछि।

होटल मालिक ''हम कोनहुँ किमतपर नईं खुवा सकैत छी''

डटके ''अपने मने नई खुएबे, पाई देने छियौ, फोकटमे नईं''

बीच बचाव करैत होटल मालिकसँ प्रश्न पुछि बसिलहुँ ''की बात ''

जबावमे खाना बनाबऽवला महराज बडका हण्डाके करछुसँ पिटैत पहुँचल ओतऽ जतऽ हमसब ठाढ छलहुँ।

दोकानदार (खाली हण्डा दिस ईशारा करैत)''आब बुमाएल बात''

किछुदेरक चुप्पीक बाद, फेरसँ हाथ जोडिकऽ बजलथि ''सरकार हम मनुख्खक भोजनके बात कएने छलहुँ''

हमसब कहलियैन्हि ''ई त ऊचीत नई भेल ! हमसब त एडभान्स देने छी''

दोकानदार गल्लामेसँ १२ टका निकालिकऽ, लगमे आबि हाथमे पकडा देलक आ कानमें धिरेसँ कहैया ''बारह टका देलहुँ, १० टका जे अपने एडभान्स देने छलहुँ से आ सुनु ऊ जे सामनेके होटल अछि(सामनेके होटल दिस ईशारा करैत) ओकरा मालिकसँ बड कसिकऽ दू दिन पहिने हमरा मगडा भेल छल, उपरका जे फाजिल दू टका अछि ओ हमरा तरफसँ घूसभेल, अई आदमिके काल्हिसँ ओही होटलमें पठाऊ''

दोकानदार सँगे सब मित्रके हँसैत ___ हँसैत पेट दुखाए लागल।

डटकेजलपान अर्थात दिवसलालजीक एक एकटा काजक वर्णन लिखऽमे जौं समुद्रक पानिके मसी बनादेल जाए त भलेही समुद्र सुखा जाए मूदा दिवसलालजीक कारनामा नई लिखा सकत। धन्यछथि....दिवसलालजी!



श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर

उम्र 60 वर्ष, ग्राम- हैँठी-बाली, जिला मधुबनी।षडदल अरिपन

मिथिलामे भगवती पूजाक अवसर पर ई अरिपन पाड़ल जाइत अछि।एतय देवी भागवत पुरानक षटकोण यंत्र पारल गेल अछि। छः टा कमल दल एहिमे अछि। आदिशक्ति भुवनेश्वरीक पद चिन्ह आ पञ्चोपचार पूजाक सामग्रीसँ युक्त ई अरिपन अछि।





काशीकान्त मिश्र "मधुप" (1906-1987)

'राधाविरह' (महाकाव्य) पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता 'झंकार' कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । 'घसल अठन्नी कविताक लेल कथ्य आ शिल्प-संवेदना– दुहू स्तर पर चरम लोकप्रियता भेटलनि।

मधुप जीक कवितामय चिट्ठी (अप्रकाशित पद्य-डॉ.पालन झाक सौजन्यसँ)

चि. श्री चन्द्रकान्त मिश्र शुभाशीर्वाद पाबि
अहाँकेँ कुशल थिकहुँ सह्लाद
गामहुमे परिवार अपन आनन्द
अहींक हेतु छल चिन्तित चित्त अनन्त।
घेंट-पेट ओ तैठ पेटसँ हीन
उदय रहए अछि मनहि मन किछु खिन्न।
मंगलमय श्री मंगल झा सूरधाम
काशीवासी 'तजि वनता' आराम।
अहूँ हुनक सेवामे मेवा छी चखैत
छी तहिठाम जतए केओ नहि अछि झखैत।

(चन्द्रकान्त मिश्र-मधुप जीक छोट भाइ
उदय- चन्द्रकान्त मिश्रक बालक
चन्द्रकान्त मिश्रक विवाह मंगलदत्त झा, गाम हरौलीक कन्यासँ।
मंगल झाक काशी प्रवासमे लिखल पत्र, सूर्यक उत्तरायणमे गेलापर मृत्युक वरण, संगमे उदय आ मंगल झाक पौत्र श्री प्रद्युम्न (कुमार झा सेहो संगमे रहथि।)



महाप्रकाश (१९४६-)

जन्म वनगाँव, सहरसा। १९७२ ई. मे पहिल कविता संकलन "कविता संभवा"।

सुभाषचन्द्र यादव

आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यमे एकटा नाम जे सर्वाधिक स्वीकृत आ प्रसिद्धि पौलक अछि, ओ थिक- सुभाष चन्द्र यादव। सुभाषक कथा-यात्रा पर दृष्टिपात करैत ई लगैत अछि जे ओ कथाक अन्वेषण कयलनि अछि। प्रायः लेखनक आरम्भ करिते ओ अनेक स्थान आ अनेक भाषाक यात्रा शुरू कयलनि। ई यात्रा वा भटकाव, जे हुनक नियति सेहो रहल अछि, हुनका अनुभव सँ लैस कयलक, तीक्ष्ण दृष्टि देलक आ अपन समकालीन सँ अलग विशिष्ट सांचामे ढालि देलक।



महेन्द्र कुमार मिश्र (पूर्व सांसद, नेपाल)

आतंकवाद महत्वाकांक्षाक खेतमे आकुरण होइत अछि

आतँक प्राणी जगतमे आदिम प्रत्युषा सँ चलैत आवि रहल अछि। प्राणीके अपन अपार, शक्ति आ कार्यक्षमताक कारणे आतँकक परिणाम आ प्रकार सभमे विविधता देखल जा सकैत अछि। पुराणादिमे वर्णित देवासुर संग्रामसभ आतँकवादीक श्रृंखलाक महागाथा अछि। महिषासुरक क्रिया कलाप सँ आतँककीत देवतागण शक्तिक आराधनामे लागि नारी द्धारा छल प्रपञ्च रचना कऽ ओकरा समाप्त कयलगेल प्रसँग दुर्गा सप्तशतिमे वर्णित अछि। रावणक आतँक समाप्त करवालेल राम अनेक जातिक सहयोग ल समाजके मुक्ति दिलौलनि। तहिना कंशक उन्माद अती भेलाक पश्चात एकटा सामान्य गोपाल कृष्णक रुपमे अवतरीत भेलाह।

कहवी छैक, बीनु बीज वृक्षक आकुरण नहि होइत छैक। अमेरिकाक जन्माओल सद्दाम आ ओसामावीन लादेन अमेरिका विरुद्ध कियाक आततायी भ प्रगट भेल ? इन्दिरा गाँधीद्धारा पालीत सन्त जर्नेल सिंह भिण्डेरबाला इन्दिराक प्राणे ल लेलक। ओसामावीन आ ओमार आजुक युगक विश्वके सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न अमैरिकाक निन्न आ भूख उडादेने अछि। आतँकवाद कहियो महत्वाकाँक्षाक खेतमे अंकुरण होइत अछि आ अन्याय अत्याचार, शोषण आ दमनक वर्षामै वढैत या त ताही श्रृंखला तोडैत अछि कि त अपने समाप्त भ जाइत अछि। संसारक आतंकके इतिहास ओएह परिणाम देखवैत अछि। हिंसामे प्रतिहिंसा जकां आतंकवादी सभ मात्र अपने हत्या हिंसा, लुटपाट आ अगिलग्गी नहि करैत छैक दोसर पक्षके सेहो ओहने काज करवालेल वाध्य करवैत अछि। संसारक द्धन्द्वरत पक्षके गहींर सं अध्ययन, मनन कयला उपरान्त एकरा सभहक क्रिया कलापक परिणति, इएह प्रमाणित होइत अछि।

आतंक शब्द सँ कोनो हैजाक प्रकोप आ कठोर अत्याचार आदिसँ उत्पन्न होवए बला भयके वोध करवैत अछि। आतंकमे वाद जोडिदेलाक बाद एकर अर्थ मनुष्यकै डेरा क धमका क या त्रास सृजन क क हिंसात्मक विद्रोहक रुपमे अपन प्रभुत्व स्थापित क काज सिद्ध करवाक विचार आ सिद्धान्त बुझना जाइत अछि। दोसरके सम्पति लुटव, घरमे आगि लगाएव, पर स्त्रीसंग बलात्कार करब, समाजमे उत्पाद मचाएव एहन दुष्कर्मीकै दुराचारी कहल जाइत अछि।

तानाशाही चाहे जेकर होउक, जॉर्जबुशक हौउक वा मुसर्रफकै एकरा कौनो दृष्टिए नीक नहि मानल जायत। कानो राष्टक तानाशाही आ दादागिरीके एक न एक दिन विनाश होयबेटा करैत अछि। आव ओ युग नहि रहिगेल जे लोक बुझौक परमेश्वरक अनुकम्पासँ गर्भ धारण भेल, ई लोक मानए लेल तैयार नहि रहिगेल। ककरोलेल तोपक सलामी आ केओ लाठी,बुट आ गरमे गोली खाई, आजुक मानव समाजक चेतना एकरा सह लेल तैयार नहि अछि। विश्वक कोनो ठाम जे विद्रोह भेलैक तकर

समाधान करवाक काजक दायित्व वाहक अपना आपके विशिष्ट नहि सामान्यस्तरक खण्डमे राखय तखने ई समस्याक समाधान भ सकैत अछि। २००७ साल सँ पालीत, पोषित आ वढैत आएल सामाजिक विद्रोहक स्तरके माओवादी लगायत तथाकथित प्रजातन्त्रवादी दलसब तराई समस्याकेँ जाइन बुझि क अखनो कार्यान्वयन पक्षकेँ कमजोर बनाविक रखने अछि। पिडीत पक्ष अखनो विश्वस्त भ नहि पाविरहल अछि। नेपालक सन्दर्भमे माओवादी १० वर्षधरि हथियार उठा जनविद्रोह कएलो उपरान्त सबपक्षके समेट नहि सकल। संगहि आन पार्टी सैहो पिडीत,उत्पीडीत,राज्यक संरचना सँ दूर रहए बला वर्गक प्रति इमान्दार नहि रहल त दौसर विद्रोहक सम्भावना अवश्सम्भावी अछि।

विद्रोहक अनेक शैलीआ पद्धति मध्ये कम सँ कम जनआतंक आ जनधनक क्षति होइक एहने शैली एवं आचरण मात्र विशवमे अनादिकालसँ सामाजिक मान्यता पबैत अछि। सामाजिक रूपान्त्ररण हथियार नहि विचार सँ कएल जाइक तखने टिकाउ भ सकैत अछि। आसुरी ताल या वृति एकटा स्वाभाविक कमजोरी अछि। सहिष्णुता संस्कारक उदात्तीकरण अछि। मनोविज्ञान ओही तथ्यकेँ मान्यता दैत छैक जकर प्रशस्त प्रमाणसब छैक।

३० वर्षे पञ्चायती शासन स्वेच्छाचारी, हुकुमी, निरंकुश सामन्ती प्रवृतिक छलैक त २०४६ सालक जनआन्दोलन व्यवस्थामे परिवर्तन लौलक तथापि प्रवृतिमे कोनो परिवर्तन नहि दैखलगेल। पूर्व राजा ज्ञानेन्द्रद्धारा फेर सँ अएह शासन प्रणालीकेँ पुनरावृति कर चाहलक मुदा सफल नहि भ सकल। ज्ञानेन्द्रक महत्वाकांक्षा बढैतगेल जकर फलस्वरुप देशक जनता गणतन्त्रोन्मुख होइत आई दैशमे गणतन्त्र स्थापना भ गेल अछि। आव जौ कोनो प्रकारक वाधा व्यवधान उत्पन्न करबाक कोशिश कायलगेल त विद्रोह बढवेटा करत। संविधानसभा मूद्दा नहि समाधाने मूद्दा अछि। संविधान सभाक विर्वाचन पश्चात मधेशक साथ कोनो दल धोखा देवाक धृष्टता करत त परिणाम अनिष्टकारी होयत। राष्ट दोसर दुर्गतिकेँ आमन्त्रण करत। मधेशक जनता अखनधरि उपेक्षित, उत्पीडित रहल, समान अधिकार आ समान पहिचानकलेल लालाइत रहल मधेशक मूद्दापर यदि राजनीति करबाक धृष्टता करत त स्वाभिमानी मधेशी जनता फेर विद्रोहमे उतरत, मधेशी जनता मधेशवादी अछि, मात्र मधेशवादी गणतन्त्रवादी नहि। गणतन्त्रवादी कहि जनता भोंट नहि देलक आइ किछु नेता कहैत छथि, ''हामी गणतन्त्रवादी हौं'' हुनका ''हामी मधेशवादी'' कह मे लाज किएक ? आबक संविधान जनआन्दोलन २०६२।०६३ तथा मधेश आन्दोलनद्धारा प्राप्त जनाधिकारक सन्दर्भमे एकटा एहन संविधानक आवश्यकता छैक जाहि संविधानक माध्यम सँ नेपालक जनता सही अर्थमे समावेशी लोकतन्त्र, प्रतिस्पर्धात्मक बहुदलीय, बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक स्वरुपक संगहि सम्बन्धित अधिकार सबहक उपभोग क सकय। एकरा संगहि, एहि देशमे सैकड़ो वर्ष सँ शोषित रहल मधेशी समुदाय, दलित, अल्पसंख्यक, आदिवासी एवं जनजाती आव निर्माण होवए बला नया संविधानद्धारा एकटा कुण्ठारहित समुन्नत, समावेशी आ विकाशशील समाजक निर्माण भ सकै आ तकर यथार्थ अनुभूति अनुभव जनता कए सकय।



महेन्द्र मलंगिया

प्रकाश चन्द्र झा : मैथिली रंगकर्ममे

थ्री-इन-वन-

मैथिलीक सुपरिचित **नाटककार, रंग निर्देशक** एवं **मैलोरंग**क संस्थापक **अध्यक्ष** । लोक साहित्य पर गंभीर शोध आलेख । मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसारित । **सीनियर फेलोशिप (भारत सरकार), इंटरनेशनल थिएटर इंस्टिच्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान** आदि सँ सम्मानित । संप्रति **ज्योतिरीश्वर** लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक **वर्णरत्नाकर** पर शोध कार्य । श्री महेन्द्र मलगियाक जन्म २० जनबरी १९४६ मे मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे भेलन्हि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक जानकार आ थियेटर शिक्षण, पटकथा लेखन आ तत्सम्बन्धी शोधक फ्रीलान्स शिक्षक छथि। सम्मान, उपाधि आ पुरस्कार: २००६(सीनियर फ़ेलो, मानव ससाधन विकास विभाग, भारत सरकार), २००५ ई. मे मैथिली भाषाक सर्वाधिक प्रतिष्ठित प्रबोध सम्मान, उनाप सम्मान, परवाहा (उवा नाट्य परिषद, परवाहा), भानु कला पुरस्कार (कला जानकी संस्थान, जनकपुर), २००४- पाटलिपुत्र पुरस्कार (प्रांगन थिएटर, पटना), इप्टा पुरस्कार (कटिहार इप्टा, कटिहार), २००३- गोपीनाथ आर्यल पुरस्कार (इन्टरनेशनल थिएटर इन्स्टीट्यूट, नेपाल), यात्री चेतना पुरस्कार (चेतना समिति, पटना), बैद्यनाथ सियादेवी पुरस्कार (बी.एस.डी.पी. काठमाण्डू), २०००- चेतना समिति सम्मान (चेतना समिति, पटना), जिला विकास धनुषा साहित्य पुरस्कार (जिला विकास समिति, जनकपुर), १९९९- विद्यापति सेवा संस्थान सम्मान (विद्यापति सेवा संस्थान सम्मान, दरभंगा), १९९८- रंग रत्न उपाधि (अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य परिषद, राँची), १९९७- सर्वोत्तम निर्देशक पुरस्कार (सांस्कृतिक संस्थान, काठमाण्डू), १९९१- भानु कला पुरस्कार, विराटनगर (भानु कला परिषद, बिराटनगर), १९९०- सर्वनाम पुरस्कार (सर्वनाम समिति, काठमाण्डू), १९८५- आरोहण सम्मान, काठमाण्डू, १९८३- वैदेही पुरस्कार (विद्यापति स्मारक समिति, राँची),

शोध कार्य: सलहेस: एकटा ऐतिहासिक अध्ययन, विरहा: मिथिलाक एकटा लोकरूप, सामा चकेबा: लोकनाट्यक एक अवलोकन, सलहेसक काल निर्धारण, विद्यापतिक उगना, शिवक गण, मधुबनी एकटा नगर अछि, हम जनकपुर छी, ई जनकपुर अछि।

हिनकर दू टा पोथी ''ओकरा आँगनक बारहमासा'' आ ''काठक लोक'' ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक मैथिली पाठ्यक्रममे अछि। हिनकर दू टा पोथी त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू केर एम.ए. पाठ्यक्रममे अछि। हिनकर कैकटा आलेख आ किताब सेकेण्डरी आ हायर सेकेण्डरी पाठ्यक्रममे अछि।

प्रकाशित पोथी: नाटक: ओकरा आँगनक बारहमासा, जुआयल कंकनी, गाम नञि सुतय, काठक लोक, ओरिजनल काम, राजा सलहेस, कमला कातक राम, लक्ष्मण आ सीता, लक्ष्मण रेखा खण्डित, एक कमल नोरमे, पूष जाड़ कि माघ जाड़, खिच्चड़ि, छुतहा घैल, ओ खाली मुँह देखै छै। ई सभटा कैक बेर आ कैक ठाम खेलाएल गेल अछि। एकाङ्की: टूटल तागक एकटा ओर, लेवराह आन्हरमे एकटा इजोत, गोनूक गबाह, हमरो जे साम्ब भैया, ''बिरजू, बिलटू आओर बाबू'', मामा सावधान, देहपर कोठी खसा दिअ, नसबन्दी, आलूक बोरी, भूतहा घर, प्रेत चाहे असौच, फोनक करामात, एकटा बताहि आयल छलय, मालिक सभ चल गेलाह, भाषणक दोकान, फगुआ आयोजन आ भाषण, भूत, एक टुकड़ा पाप, मुहक कात, प्राण बचाबह सीता राम, ओ खाली घैल फोड़य छै। ई सभटा मंचित भऽ चुकल अछि। २५ टा चौबटिया नाटक: चक्रव्युह, लटर पटर अहाँ बन्द करू, बाढ़ि फेर औतय, एक घर कानन एक घर गीत, सेर पर सवा सेर, ई गुर खेने कान छेदेने, आब कहू मन केहेन लगैए, नव घर, हमर बौआ स्कूल जेतए, बेचना गेलए बीतमोहना गबए गीत, मोड़ पर, ककर लाल आदि। ई सभटा चौबटिया वीथीपर खेलायल गेल अछि। ११ टा रेडियो नाटक: आलूक बोरी, ई जनम हम व्यर्थ गमाओल, नाकक पूरा, फटफटिया काका आदि। ई सभटा टा पटना, दरभंगा आ नेपालक रेडियो स्टेशनसँ प्रसारित भेल अछि। सम्पादन: मैथिली एकाङ्की (साहित्य अकादमी, नई दिल्ली), विदेहक नगरीसँ (कविता संग्रह), मैथिली भाषा पुस्तक (सेकेण्डरी स्कूल पोथी), लोकवेद (मैथिली पत्रिका)। कथा: प्रह्लाद जड़ि गेल, धार, एक दिनक जिनगी, बनैया सुगा, बालूक भीत, बुलबुल्ला आदि। लघुकथा: डपोरशंख, मुहचिड़ा आदि। सदस्यता: अध्यक्ष, मैथिली लोक रंग, सदस्य कार्यकारी बोर्ड, मिनाप, जनकपुर, यात्री मधुबनी, मिथिला सांस्कृतिक मंच, मधुबनी। राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार सभमे सहभागिता।**–सम्पादक**

१९७५ ई. मे हम जुआयल कनकनी नामक एकटा नाटक लिखने रही, जे ओही साल प्रकाशित भेल रहय। एहि नाटकक प्रसंगमे मैथिलीक सुप्रसिद्ध साहित्यकार जीवकांतजी अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत लिखने रहथि —— मलंगियाजी, मिथिलांचलमे एखन ओहन अभिनेता नहि जन्म लेलक अछि, जे एकर तेजकेँ सम्हारि सकत। ई बात हम अपनहुँ महसूस कएने रही आ तहिए सँ हमर आँखि एहि बातक खोज करैत रहल, जे ओहि नाटकक अनुरूप कोनो अभिनेता भेटितए।

ओना मिथिलांचलमे अभिनेताक कमी नहि रहलैक अछि, मुदा सभक जिनगी अल्पकालीन। किएक तँ एहिठाम एकरा टाइमपासक रूपमे देखैत अछि। तँ जहाँ कतहु नोकरी भेटि गेलैक कि ओ रंगकर्म केँ तिलांजली द' दैत अछि। दोसर कोनो गार्जियन ई नहि चाहैत छैक, जे हमर बेटा रंगमंचसँ जुड़ल रहय। किएक तँ मैथिली रंगमंच केँ ओ सामर्थ्य नहि छैक जे ओकरा रोजी —— रोटी द' सकतै। तँ रंगमंच के छोड़' बाला नाम अनगिनत अछि आ जुटल रह' बाला नाम आँगुरे पर गनल। एहन आँगुरेपर गन' बाला नाम अछि —— अभिषेक, चन्द्रशेखर, मुकुल, संतोष (मधुबनीसँ), रवीन्द्र, ओमप्रकाश, रंजू, प्रियंका (जनकपुरसँ), संजीव, किशोर केशव, गुड़िया, स्वाति, जितेन्द्रनाथ, प्रियंका (पटनासँ), मुकेश, उत्पल, प्रकाश, ज्योति, जीतू, कमल, दुर्गेश, भास्करानंद (दिल्लीसँ) आदि।

एहि सभमे प्रकाश कहिया हमरा भेटल - स्मरण नहि अछि, मुदा एतेक धरि अवश्य स्मरण अछि, जे ओ कहने रहय-

"सर, हमर घर घोंघौर अछि आ हम आर. के. कॉलेज मधुबनी में पढैत छी"।

"कोन कक्षामे ?"

"बी.एस सी.क फर्स्ट पार्टमे "। हमरा दिससँ कोनो प्रतिक्रिया नहि अएबाक कारणें किछु कालक बाद पुन: बाजल ——

"हम नाटकसँ सेहो जुड़ल छी "।

"कोन संस्थासँ ?"

"मधुबनी इप्टासँ "

"बहुत खुशीक बात "

प्रकाश कोन अपेक्षा ल' क' हमरा लग आएल रहय से ओ ने कहि पओलक आ ने हम बूझि सकलिऐं। मुदा, एतेक अवश्य जानकारी भेटैत रहल जे नुक्कड़ नाटककेँ मधुबनी जिलामे बहुत लोकप्रिय बना देलक अछि। एक्केटा बिजुलिया भौजीक पचासटा शो कएलक अछि आ सभमे एकर अनिवार्य सहभागिता छैक। मुदा, ई हमर दुर्भाग्य रहल जे एकर एकोटा शो हम नइ देख सकलिऐं। तथापि एतेक विश्वास भैए गेल जे नाटकक प्रति एकर लगन बेजोड़ छैक।

हमहूँ रहबे कएलहुँ आ इहो नाटक करिते रहल आ तखन जँ मंच पर भेट नइ होइतए तँ इहो असंभवे बाला बात भ' जइतै। से भेलैक नहि, एकरासँ मंचपर भेट भैए गेल, मुदा कहिया से स्मरण नहि अछि। हँ, एतेक अवश्य स्मरण अछि जे प्राय: 1995 ई. मे मिथिला सांस्कृतिक पर्व समारोहक अवसर पर हमरे नाटक ओरिजनल कामक मंचन नगर भवन, मधुबनीमे होइत रहय। हमहूँ आमंत्रित रही। जाहि मे दरोगाक भूमिका प्रकाशे केने छल। ओहि नाटकमे ई प्रशंसाक पात्र बनल रहय जकर उल्लेख दैनिक जागरण आ दैनिक हिन्दुस्तान सेहो कएने रहैक। किछु दिनक बाद गाम नइ सुतैए'क मंचन देखलियैक ओहो मे गामक तीनटा बिगड़ल युवकमे सँ एकटा बिगड़ल युवकक भूमिका यैह कएने छल। ओही दुनू मे कयलगेल अभिनयक बदैलत ई हमरो मोन मे बैसि गेल। बादमे बिहार सरकार युवा मंत्रालय, पटना दिस सँ आयोजित कार्यक्रम मे एक बेर फेर हमरे लिखल नाटक हमरो जे साम भैयाक मंचन नगर भवन, मधुबनीमे होइत रहय। हमहूँ आमंत्रित रही। जाहि मे चारुवक्य के भूमिका मे प्रकाश रहै। मंचपर एकरा देखलाक बाद हमरा बड़ अपसोच भेल रहय जे जीवकांतजी एहिठाम नइ छथि। ओ जँ आइ एहिठाम रहितथि तँ एकर अभिनय देखिक' निश्चित अपन बात घुरा लितथि जे 'मिथिलांचलमे एखन ओहन अभिनेता नहि जन्म लेलक अछि'। बहुत विलक्षण आ मुग्ध कर' बाला अभिनय कएने रहएअ। तँ हमरा कह' पड़ल जे चारुवक्य के भूमिका एहन दोसर नइ क' सकैए।

एकर बाद करगिल समस्यापर आधारित नाटक दुलहा पागल भ' गैलै मे सेहो अभिनय कएलक जे हम नइ देख सकलिऐंक। हँ, मधुबनीक डिप्टी कलक्टर श्री दीपनारायण सिंह जी सँ जखन बात भेल तँ कहलनि जे खासक' प्रकाशचन्द्र बड्ड नीक अभिनय कएने छल।

ओना एहि बातक घमर्थन कखनो-कखनो उठिए जाइत अछि जे अभिनेता तँ निर्देशकक हाथक कठपुतली होइत अछि। ओकरा जेना-जेना निर्देशक कहैत छैक तेना-तेना ओ मंचपर करैत अछि। जँ इएह बात सत्य छैक तँ एक्केटा भूमिका जखन दू आदमी करैत अछि तखन किएक ककरो नीक आ ककरो बेजाए भ' जाइत छैक ? एहि आधार पर तँ सृजनात्मक प्रतिभा अपन होइत छैक से मानहिटा पड़त। आ तँ ओ ओहन चारुवक्य क सृजन कएने रहय।

फेर 2005 ई. मे रामानन्द युवा क्लब, जनकपुर धाम (नेपाल) द्वारा आयोजित नाट्य समारोह मे नेपालक अतिरिक्त कोलकाता, दिल्ली, दरभंगा आ मधुबनीक टीमसभ भाग लेने छल। मधुबनीक यात्री संस्था, दिल्लीक यात्री संस्थाक रूप मे प्रवेश पओने छल। कारण , ओहि समयमे अधिकांश यात्रीक

अभिनेतासभ दिल्लीए मे रहैत छल तैँ किछुए नवकेँ समावेश कर' पड़लै आ काश्यप कमलक नाटक गोरखधंधा तैयार भ' गेलै। एहि नाटक मे ओ सूत्रधारक भूमिका कएने रहय जे काफी चर्चित रहलै।

मैथिली रंग जगतमे नव पीढीक कतेको लोक छथि, जे लगातार काज क' रहल छथि मुदा, ओहि जमातमे प्रकाश कतेको कारणे सभहक ध्यान अपना दिस खींचैत अछि। एक त' अपन रंग कालमे , प्रकाशक रंग प्रवाह बड्ड महत्वपूर्ण छैक। दोसर ई जे ___ प्रकाशक द्वारा जराओल गेल सर्वरंग अभियानक दीपक जे प्रभाव मैथिली रंग जगत पर पड़ल अछि ओ आरो बेसी प्रशंसाक पात्र छैक। प्रकाशक रंग प्रवाहक शुरुआत मिथिलाक एकटा छोट छीन गाम घोंघौर स' शुरु होइत छैक। अपन नेनपने सँ गामक रंगमंच सँ जुड़ैत, अपन जिला मधुबनीक नगर इप्टाक कार्यालय सचिव बनल आ इप्टा मे एकर पाँच सालक कार्यकाल अखन तक के ओकर स्वर्णकाल कहल जा सकैत छैक। ओत' सँ निकलिक' विश्वविद्यालय स्तर पर अभिनय मे प्रथम सम्मान सँ सम्मानित होइत राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली मे प्रवेशक चयन प्रक्रियाक अंतिम प्रक्रिया तक शामिल भेल। ओहो कोनो नामी-गिरामी निर्देशकक संग कार्य करबाक अनुभवक बिना। फेर संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा प्रशिक्षण ल'क' ओकरे बाकी कार्यशाला मे कार्यशाला सहायकक रूप मे कतेको राज्य मे अपन ज़िम्मेदारी कैँ सफलतापूर्वक निभाबैत, साहित्य कला परिषद, दिल्लीक रंगमण्डल सँ गुजरैत, सॉग एण्ड ड्रामा डिविजन, नई दिल्ली मे कैजुअल आर्टिस्टक रूप मे चुनबैत आई राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नाई दिल्ली द्वारा अखिल भारतीय स्तरक श्रेष्ठतम रंगशोध पत्रिका रंग प्रसंगक संपादन सहयोगीक रूपमे अपन महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी निभा रहल अछि। ई त' छल प्रकाशक अपन रंगपक्ष , जे कि हमरा सभ कैँ सीधे-सीधे देखाइत अछि। जे दोसर रूप छै ओ ई जे मधुबनी सन छोट जगह मे प्रकाश जे रंगदीप जरौलक अछिओकर परिणाम ई छैक जे आई एहि छोट शहर मे सात-सात टा रंगकर्मी रंगकर्म मे प्रशिक्षणक लेल राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृत्ति ल' चुकल अछि। कतेको रंगकर्मी राष्ट्रीय स्तरक रंगप्रशिक्षण संस्थान सँ प्रशिक्षण प्राप्त केलन्हि अछि।

2006 ई. मे मैथिली लोक रंग, दिल्ली (मैलोरंग) त्रिदिवसीय नाट्य सहोत्सवक आयोजन कएने रहय जाहिमे सहरसा, पटना आ दिल्लीक टीम (मैथिली लोक रंग) भाग लेने रहैक। ई तीनू टीम क्रमश: कनियाँ-पुतरा, पारिजात हरण आ काठक लोक क्रमश: उत्पल झा, कुणाल तथा प्रकाश झा क निर्देशनमे प्रस्तुत कएने रहय। उत्पल झा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली सँ उत्तीर्ण छात्र, कुणाल कैँ दस-पन्द्रह नाटकक निर्देशनक अनुभव आ प्रकाश झा कैँ अभिनय छोड़ि निर्देशनक कोनो अनुभव नहि। तैँ लागल जे एहि दुनू निर्देशकक बीचमे प्रकाश ओहिना दरड़ा जाएत जहिना जाँतक दुनू पट्टाक बीचमे दालि। मुदा से भेलैक नहि, प्रकाश झा आँकड़ जकाँ अड़ले रहि गेल। प्रेक्षक गुम्मी लाधिक' नाटक देखैत रहलाह। मुदा, जत' हँस'क अवसर छलैक ओत' हँसबो कएलाह।

नाटक समाप्त भेलाक बाद प्रकाश दू शब्द कहबाक हेतु हमरा मंच पर बजा लेलक। ओ किएक हमरा बजौलक तकर अनुमान एहि रूपमे लगौलिऐक ___ प्राय: नाटक मे कएल गेल किछु फेर-बदलक मादे किछु कहताह। मुदा ताहि प्रसंगमे हम किछु कहि नइ सकलिऐक। कारण, प्रेक्षक हमर मुँह बन्द क' देने छल। तैँ हम ई बात कहबाक लेल बाध्य भ' गेल छलहुँ जे दुलहन वही जो पिया मन भाए अर्थात नाटक वएह नीक वा निर्देशक वएह नीक जकरा प्रेक्षक गम्भीरता सँ देखलक आ बुझलक। एतेक कहलाक बाद ओ राम गोपाल बजाज जी कैँ बजा लेलकनि। हुनका मंचपर बजएबाक दूटा कारण भ' सकैत अछि ___पहिल, ओ भारतीय रंगमंचक एकटा दिग्गज रंगकर्मी छथि जे मिथिलांचलक सपूत छथि आ दोसर, पहिल बेर निर्देशनक क्षेत्रमे आयल छल तैँ हुनक आशीर्वाद प्रकाशक लेल आवश्यक छलैक। तैँ बजाजजी मंचपर अएलाह आ हमर बातक समर्थन करैत कहलथिन ___मलंगियाजी जे बात कहलनि अछि ताहिसँ हम सहमत छी। प्रकाश कैँ जखन दर्शके सर्टिफिकेट प्रदान क' देलकै तखन हम ओहिपर हस्ताक्षर नइ करिऐं से उचित नइ होएत।

एहि प्रस्तुति के देखलाक बाद हिन्दीक युवा आ संवेदनशील रंगदृष्टि रखनिहार रंग समीक्षक संगम पाण्डे जनसत्ता में लिखने रहथि –

... मंच पर ये सभी पात्र चरित्र के कई बारीक विन्यासों के साथ दिखाई देते हैं। उनके भदेस में कहीं भी कुछ बनाबटी नहीं लगता। और यही वजह है कि कथावस्तु में स्थितियाँ कई बार दोहराई जाकर भी अपनी रोचकता नहीं खोतीं। मंच पर पीछे की ओर दाएँ मंदिर का चबूतरा है। बाईं ओर एक पूरा का पूरा वृक्ष, और चबूतरा एक पूरा परिवेश बनाते हैं। इस परिवेश में साधु की पीतांबरी वेशभूषा एक दिलचस्प कंट्रास्ट बनाती है"।

संगम पाण्डेक उपर्युक्त कथन निश्चित रूपे प्रकाशक नाट्य निर्देशक संग ओकर मंच परिकल्पना आ वस्त्र विन्यासक दृष्टिक सेहो मजबूती प्रदान करैत छैक।

2005 ई. मे स्वास्ति फाउण्डेशन, दिल्ली हमरा प्रबोध साहित्य सम्मान देने छल, जे कलकत्तामे प्रदान कएल गेल। उक्त सम्मानक अवसर पर डॉ. उदय

नारायण सिंह 'नचिकेता' द्वारा रचित एक छल राजा नामक नाटकक मंचन कोकिल मंच, कोलकाता द्वारा कएल गेल छल। हमरा बगलमे बैसलि हमर पत्नी जिनका साक्षर मात्र कहल जा सकैए पूछि बैसलीह

''कखन नाटक समाप्त होएतैक'' ?

एहिपर हम कहलिएनि जे एक चौथाई बाँकी अछि। अवलोकनजन्य थकान सँ ओ अपने-अपने बाजि उठलीह

''एह, तखन तँ आधा घंटा सँ बेसिए बैस' पड़त''।

आब कोनो प्रेक्षकक मुँहसँ निकलल ''बैस' पड़त'' शब्द नाटक प्रदर्शनपर एकटा पैघ प्रश्नचिन्ह लगबैत अछि।

इएह सम्मान 2007 मे मयानन्द मिश्र कँ भेटलनि। ओहि सम्मानक अवसरपर डॉ. नचिकेता द्वारा रचित नायकक नाम जीवन, एक छल राजा , रामलीला, प्रत्यावर्तन आदिमे सँ कोनो एकटा नाटकक मंचन होएबाक चाही से विचार कएल गेल छल। संगहि स्थान बदलिक' दिल्ली पर मोहर लागि गेल छल। उक्त आयोजनक सम्पूर्ण अभिभारा प्रकाश चन्द्र झा कँ भेटल छलैक। तँ ओ नचिकेताक सभ नाटक मंगौलक। गम्भीरता सँ पढलक आ अंतमे एक छल राजापर आबिक' केन्द्रित भ' गेल।

नचिकेताक जतेक नाटक छैक ओहिमे सँ सभसँ नीक नाटक एक छल राजा अछि जे प्राय: 1970 क दसकमे प्रकाशित भेल रहैक। एकरा जँ एना बूझी तँ कहि सकैत छी जे जहिया प्रकाश जन्मों नहि लेने होयत तहिए ई नाटक प्रकाशित भेल रहैक। तँ जतेक जे एहि नाटकक मादे प्रकाशित भेल छल होएतैक ताहिसँ ओ परिचित नहि छल। तथापि ओहिमे सँ एक छल राजा कँ चूनि लेलक से ओकर निर्देशकीय दृष्टिक प्रमाण दैत छैक। कारण, निर्देशक वास्ते नाटक चयन एकटा अहम मुद्दा रखैत छैक।

जँ सत्य पुछल जाए तँ ओ नाटक प्रकाश चन्द्र झाक हेतु एकटा चुनौती भरल काज छलैक। एखन धरि जतेक निर्देशक ओकरा प्रस्तुत कएने छल ओकरा कओमा आ पूर्णविराम सहित मंचपर उतारि दैत छल तँ प्रेक्षककँ पुछ' पड़ैत छलैक जे आब कतेक नाटक बाँकी अछि। एहन स्थिति उत्पन्न होएबाक कारणपर विचार करबासँ पहिने हमरा नाटक कथानकपर विचार सेहो कर' पड़त।

एहि नाटकमे राजा साहेब नामक एकटा जमीन्दार अछि जकर जमीन्दारी पुर्खेक समयसँ धीरे-धीरे कमल जाइत छै। राजा साहेब लग आबिक' विपन्नता पराकाष्ठापर पहुँच जाइत छै। कर्जक बोझ ततेक ने बढि जाइत छै जकरा सधाएब मश्किल भ' जाइत छैक। फजूल खर्ची आ विलासिताक कारणेँ एहि स्थितिमे पहुँचब एकटा नियति छैक। फेर ओही जमीन्दारीमे पलल राजा साहेबक पिताक अवैध संतान धनिकलाल शहर जाइत अछि। ओहिठाम अपन लगन आ परिश्रमसँ काफी धनोपार्जन करैत अछि आ राजा साहेबक हवेली कीनैत अछि। फेर ओहो वएह काजसभ कर' लगैत अछि जे राजा साहेब करैत छलाह।

आब प्रश्न ई उठैत अछि जे एकटा जमीन्दारकँ तोड़िक' दोसर जमीन्दारकँ ठाढ करबाक की औचित्य छैक ? जँ ठाढ भइए जाइत छैक तँ दरबारमे राजा साहेब जकाँ हवेलीमे मोजराक आयोजन करबाक की प्रयोजन छैक ? जखन ई बात स्पष्ट भ' जाइत छैक जे राजा साहेब अपन बेटी मोहिनीक विवाह आर्थिक तंगीक कारणेँ नइ करा रहल छथि तखन ओकर प्रेम प्रसंगक एतेक दृश्यसभ रखबाक कोन प्रयोजन छैक आ अंतमे ओकरा प्रेमीकँ खलपात्र बनएबाक कोन औचित्य छैक ? कोनो नियतिक विरुद्ध बेर-बेर धनिक लालक मुँह सँ प्रतिशोध लेब कहयबाक कोन जरूरी छैक ? राजा साहेब तँ अपन करनीक फल पाबिए गेल छलाह जे हवेली बेचिक' सड़कपर आबि गेल छलाह।

उपर्युक्त सभ प्रश्नपर प्रकाश नीक जकाँ विचार कएने छल। ओकर प्रदर्शन स्क्रिप्ट देखिक' हमरा लागल जे ओकरामे नाटक प्रदर्शनक समझदारी छैक।

नाटकसँ एक दिन पहिने हमरा डेरापर एकटा कार्ड आएल रहय। ओहिपर सपरिवार लिखल रहैक। तँ हम पत्नीसँ पुछलियनि -

''नाटक देख' जएबैक'' ?

''कोन नाटक छै'' ? प्रश्नपर प्रश्न ओ रखलनि।

''एक छल राजा''

''नइ जाएब''।

''किएक''?

''कलकत्ता मे देखने छी। हमरा नइ नीक लागल रहय''।

''चलू ने, निर्देशक बदलल छै, अभिनेता बदलल छै''।

''मुदा नाटक तँ वएह रहतै ने''।

''तैयो देखि लियौ ने''।

नाटक भेलैक। नाटक समाप्त भेलाक बाद नचिकेताजी कँ काफी खुश देखलियनि। एकर मतलब छलैक जे नाटक अपन ऊँचाई पाबि गेल छल। वस्तुत: हमरो बड्ड नीक लागल रहय ई प्रस्तुति। हमर मोन मानि गेल छल जे एकरा नीक निर्देशकक पाँतीमे राखल जा सकैए। जँसे बात नइ रहितै तँ नाटक एहि रूपमे नइ चमकितै। रास्तामे हम पत्नीसँ पुछलियनि –

''केहन लागल नाटक''?

''बहुत बढियाँ''

''तखन कहै छलिऐं जे नइ जाएब''।

''हमरा थोड़बे बुझल छल जे एहन नाटक हेतै''।

ई छलैक एकटा साक्षर मात्र लोकक मूल्यांकन। श्री मायानंद मिश्र, डॉ. गंगेश गुंजन, डॉ. देवशंकर नवीन,

डॉ. ओमप्रकाश भारती आदि दिग्गज विद्वान लोकनि एहि प्रस्तुतिक प्रशंसा कएलथिन। ओना दशरथ जखन भार जनकपुर पठौलथिन तँ जनकपुरबासी मेसँ क्यो बाजि ऊठल–भार तँ बहुत बढियाँ छनि, मुदा अंकुरीक अखुआ टेढ छनि। एहन अखुआ टेढबाला लोक प्रेक्षकक प्रतिक्रिया देखिक' अपनाकेँ चुप्पे राखब उचित बुझलक।

एहि ठाम एकटा बात कह' चाहब– आदमीक क्षमताक स्थानांतरण दोसर क्षेत्रमे सेहो होइत छैक। यदि हम दहिना हाथसँ 'अ' लिखैत छी तँ बामा हाथसँ 'अ' सेहो लिखि सकैत छी। कारण, दहिना हाथक क्षमता बामा हाथमे स्थानांतरित भ' जाइत छैक। एही अवधारणापर लोक कहैत छैक जे बी.ए. भ' क' घास छिलतै तँ मूर्खसँ बढिए जकाँ छिलतै किएक तँ ओ अपन पढ' लिख' बाला क्षमता घास छील' मे लगा देतैक। एहि मनोवैज्ञानिक तथ्यक सत्यापन प्रकाश चन्द्र झाक अभिनयात्मक एवं निर्देशकीय क्षमतासँ जोड़िक' संगठनात्मक क्षमताकेँ सेहो देखल जा सकैए। ओ जतबए नीक अभिनेता तथा निर्देशक अछि ओतबए एकटा सफल संगठनकर्ता सेहो। आ हम सभ कियो जनैत छी जे रंगकर्म मे संगठनात्मक क्षमताक विशेष महत्व छैक।

एहिठाम संगठनात्मक क्षमताकेँ रंगकर्मसँ जोड़िएक' देखल जा सकैत अछि कारण, भरतक नाट्यशास्त्रक पैंतिसम अध्यायमे नाट्यदलक चर्चा आएल अछि जाहिमे सूत्रधार, अभिनेता, काष्ठकार, माली (माल्यकार), स्वर्णकार (मुकुट एवं गहना बनब'बाला), सूचिकार (दर्जी), चित्रकार आदिक चर्चा अछि। हमरा जनैत एहि सभ केँ मिलाक' राख'बाला सूत्रधार छल होएतैक। ईसभ अपन-अपन योगदान नाट्य प्रदर्शनमे दैत छलैक। जँ एकरा सभकेँ मिलाक' नहि राखल जैतैक तँ नाट्यप्रदर्शन असंभव भ' जइतैक। अत: एकटा सम्पूर्ण रंगकर्मीक हेतु संगठनात्मक क्षमता आवश्यक भ' जाइछ।

2005 ई. मे जनकपुर नाट्य महोत्सवक आयोजन कएल गेल रहैक। एहि आयोजन मे यात्री टीम भाग लिअय से हमर हार्दिक इच्छा रहय। मुदा कलाकारसभ बिखरल रहैक। सभ एकठाम जमा होएत आ नाटक करत से संभव नहि बुझाय। तथापि एकबेर जानकारी देब आवश्यक छल। एतदर्थ बीस-बाइसटा मेम्बरमे सँ प्रकाश केँ टेलीफोन कएलिऐक। कारण, ओकर संगठनात्मक क्षमतासँ हम परिचित छलहुँ। दोसर जँ गछियो लितएअ तँ संगठनात्मक क्षमताक अभावमे जएबो करितएअ कि नहि ताहिपर हमर विश्वास नहि छल। खैर, ओ हमर इच्छाकेँ सहर्ष स्वीकार क' लेलक आ पन्द्रह-सत्रह आदमीक टीम ल' क'(दिल्ली सँ) जनकपुरधाम (नेपाल) पहुँच गेल।

सम्प्रति प्रकाश दिल्लीमे मैथिली लोक रंग (मैलोरंग) नामक संस्था चला रहल अछि। एहि संस्थाक एकटा सदस्य दिल्ली रहैत अछि तँ दोसर देवगिरी मे, माने एकटा उत्तरी दिल्ली तँ दोसर दक्षिणी दिल्ली। एहना स्थिति मे मैथिली रंगकर्म केँ जियाक' राखब एकटा कठिन काज भ' जाइत छैक। तथापि ओ एकरा जिआए क' नहि, बल्कि जगजियार क' क' रखने अछि।

इम्हर, जहिया सँ प्रकाश रंग प्रसंग सँ जुड़ल अछि आ डॉ. ओमप्रकाश भारती, स्व. जे.एन. कौशल, महेश आनंद, देवेन्द्र राज अंकुर, प्रतिभा अग्रवाल आदि सन शोधकर्ताक सानिद्ध पौलक अछि ओकर रंग-दृष्टि आरो खुजलैक अछि। मैथिली लोकनाट्य आ रंगमंच पर ओकर शोध आलेख उल्लेखनीय होइत छैक। बाल रंगमंच पर भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय फैलोशिप प्राप्त करनिहार प्रकाश कहियो कहियो कथा सेहो लिखैत अछि। एकरा द्वारा लिखल कथा पाथर बेस चर्चा मे छल। ई कथा बुच्चीक मनोरथ नाम सँ अंतिका मे आ पाथर नाम सँ हिन्दी मे समकालीन भारतीय साहित्य मे प्रकाशित भेल रहै।

हमरा जनैत कर्मठ आ सफल व्यक्ति ओ नहि होइत अछि जे समयक पाछाँ-पाछाँ चलैत अछि, सफल व्यक्ति तँ ओ होइत अछि जे अपन कर्मठतासँ समय केँ अपना लग खींच लैत अछि। इएह गुण हम मृदुभाषी आ मिलनसार प्रकाश मे पबैत छी। किएक तँ एकरासँ पहिने मिथिलांचल सँ कतेको मैथिलीक विद्वानलोकनि दिल्ली अएलाह, मुदा मैथिली रंगकर्मक जड़ि एना भ' क' रोपल नहि भेलनि। प्रकाशक लेल दिल्ली मे हिन्दी रंगमंच मे काज करनाइ बहुत आसान छल मुदा ओ मैथिली रंगकर्म के अपनैलक ई बेसी महत्वपूर्ण अछि। हमरा तँ ओहो दिन देखल अछि जहिया मैथिली रंगकर्म कलकत्तामे बहुत जगजियार छलैक, एकरा बाद ई जगजियारी ऊठिक' पटना आ जनकपुर अएलैक सेहो देखलहुँ आ आइ लगैत अछि जे एहि जगजियारीक एकटा प्रबल दावेदारक रूपमे दिल्ली सेहो ठाढ़ भ' गेल अछि जकर श्रेय निश्चित रूपे प्रकाश चन्द्र झा केँ जाइत छैक। आइ पटना हो, चाहे जनकपुर, चाहे सहरसा, सभकेँ अपन-अपन क्षमता देखएबाक हेतु दिल्लीमे प्लेटफार्म मैथिली लोक रंग (मैलोरंग) प्रदान कएअलक अछि जकर संचालन प्रकाश चन्द्र झा क' रहल अछि। हम मैथिली रंगकर्मक हेतु ओकर दीर्घायु आ सफलताक कामना करैत छी।



महेश मिश्र "विभूति" (१९४३-)

पटेगना, अररिया, बिहार। पिता स्व. जलधर मिश्र, शिक्षा-स्नातक, अवकाश प्राप्त शिक्षक।

पन्थीसँ

तनिक विलमिके सुनिली पन्थी,
अविलम पहुँचब गेहे।
तरुणाईमे कथिक अपेक्षा,
जतबा कहब, बुझब सब नेहे॥

अहाँ पन्थी! पथिक बनिकँ,
जा रहल छी बाटमे।
दृश्य अगणित देखब पन्थी,
भ्रमब नहि जग-हाटमे॥

आओत बाढ़ि जे स्नेह-सलिलकँ,
शपथ, सबल पग राखब।
दुर्बलता जँ व्यापत किञ्चित,
कहू! कोना जल थाहब॥

बिनु जल भवसागर की नदिया,
दहब-भसब नहिं बाबू।
दृढ़-सङ्कल्प पतवार पकड़िकँ,
राखब मन पर काबू॥

होयत हँसारति भरि जगमे,
जँ, बुड़ि जाओत नौका।
अस्तु, सोचब गृद्ध दृष्टि लऽ,
नहिं आओत फेर मौका॥

पुनः कतबा कहब बाबू?
शुभकामना अछि संगमे।
सफल होऊ , सुफल पाऊ,
शुभ रंग आनू रङ्गमे॥

अहाँ पायब सुयश जगमे,
पुलकि पुलकत गात मम्।
पूर्ण पूनम सम जँ देखब,
परम आनन्दित होयब हम॥

अछि निवेदन ईशसँ,
सद्बुद्धि दैथि सुजान कँ।
बड़ आश अछि पंथी अहाँसँ,
करहु मुकलित प्राणकँ॥

सन्तोष (०६.०२.६५)

सन्तोष सरितमे नित नहाय,
बल्कल पहिरी तँ लाज न हो।
बेदाग होय कर्तव्य करी,
हाथी नवीश सँ काज न हो॥

कहू! व्यर्थ झगड़िके धन अरजी,
सत् कर्म बिना सब काज हो।
एक दिन बिन कैंचाके जगसँ,
प्रस्थान करू, तँ लाज न हो॥

भऽ जाय फकीरी ओहिसँ की?
मस्तक ऊँचा सदिकाल रहे।
कहू? भला वो अमीरी की,
लानत जेहि पर कङ्गाल कहे॥

भऽ जाय अमीरी वोहिसँ की?
सत् कीर्ति समुज्ज्वल कर्म करू,
निशि दिन सद्भाव निबाहू जँ।
भगवान् भला करता निश्चय,
कहियौन हुनकहि, नहिं काहूसँ॥

हुनकर लीला अनदेखल अछि,
फल प्राप्त करै छथि विश्वासी।
सुनितहुँ छथि सबहक परमप्रभु,
कारण; वो छथि घट-घट वासी॥

उद् बोधन : ढाढ़स (३१.०७.६३)

मत होउ निराश एक झटका पर,
नित कर्मक ध्यान धरू मनमे।
दुनियाँमे एहिना होइतैं छै,
ई सोचि पुनः उतरू रनमे॥
बहुतोंके एहिना मेल एतऽ,
किन्तु; की साहस छोड़ि देलक।?।
साहस थीक सम्बल आशाके,
जगमे हारल पुनि लाहु लेलक॥
नभमे देखू वो चन्दाके,
जे पूर्ण विकासक क्रमपर अछि।
एक दिन पूनम परिपूरित भऽ,
पुनि ग्रास ह्रास भऽ जाइत अछि॥

नयन निहारि निरखू जगके,
के रहल समान निशि दिन जगमे।?।
उत्थान-पतन क्रम कर्मक अछि,

निर्भीक बनूँ, बिचरू महमे॥

जी तोड़ि परिश्रम करथि कोय,
फल नीक नाहिं, तँ दोष कोन।
विधना के एहिना लीला छन्हि,
तँ, एकरामे किनको दोष कोन॥?॥

बड़ आश केलहुँ शुभ आशाके,
सम्भव केलहुँ नहिं काज कोन।
फलदाता दरजल नाहिं यदि,
तँ, एकरामे किनको लाज कोन॥?॥

भेटत ओतवहि, जे लिखल अछि,
पाथर परके रेखा बुझियौ।
कर्तव्य करू नित निकक हित,
भेटत निश्चय, भागक लेखा बुझियौ॥

श्रम-साध्य मजूरी भेटतैं छै,
ई शास्त्र-पुराण, सुधि जन कहि गेल।
औकतेलासँ भट्टा पाकयऽ?
ई कथ्य युगाब्दक रहि गेल॥

वोपदेव इतिहास-पुरुष,
अमर लेख्य पाणिनी तिनकर।
धीर धैर्य धारण करियौ,
यथा भाग भावी जिनकर॥

पाण्डव के राज भेटल छीनल,
नल दमयन्तीके याद करू।
सिंहासनारुढ़ सियावर भेला,
वसुदेव कोना आजाद करू॥

मधुर स्वप्न (०७.११.६२, रवि श्री विजयादशमी)

मधुर स्वप्न की देख रहल छी,
दत्यतासँ सँदूर भऽ के।
चिरनिशा के गर्भमे,
तल्लीनतासँ निकट भऽ के॥

दुक्खसँ जँ दूर छी तँ,
कहू कोन उपचार हो।
मूक मुद्रा एना कऽ के,
अति दुःखक नैं विस्तार हो॥

या कहू अन्तर्निहित,
दुःखसँ दुःखी छी मनहि-मन,
से कहू सङ्कोच तजि के,
की स्वप्न देखब छनहि-छन॥

मौन रहला पर कोना के,
बुझि सकत पर वेदना।
वेदना के व्यक्त कऽ के,
छाड़ि दी निज कल्पना॥

मधुर स्वप्नक की महत्ता,
कहि दियऽ दू शब्दमे।
हम भ्रमित छी दशा लखिके,
किछु कहू, किछु शब्दमे॥?॥

या कहू किछु विसरि गेने छी,
अहाँ निज ख्यालसँ।
मधुर स्वप्नक ज्वलित ज्वाला,
त्यागि दी अन्तरालसँ॥

सजनि! पता दी अपन क्लेशक,
विषम वेदना मानस के।
वा बहु भाँति व्यथित छी अपने,
हृदयान्तर्गत तामस से॥

कोना वेदना उमड़ल अछि जे,
अगम-अथाह, पता नहिं आय।
अतिशय क्लेशक दुःसह भारसँ,
दबयित छी दयनीय भऽ हाय॥

कहू-कहू! मानस के ओझरी,
मधुर स्वप्न के त्यागू आय।
मधुर यदि दुःखदाई हो,
तुरत त्यागी, कथमपि नहिं खाय॥

अहाँ बेसुधि, हम ससुधि भऽ
कोना जीवन-रथ चलत।
सामंजस्यानन्दक प्रयोजन,
जीवनक रथ अथ चलत॥

सिन्दूर-दानक गीत: "अनुरोध" (१४.०५.६३, सोम)

"प्रिय पाहुन सिन्दूर-दान करू"

सुन्दर सरस समय शुभ सरसल, सिन्दूर हाथ धरू।
उषा निहारथि कमल हस्तके, अविलम कर्म करू॥...॥
नव निर्मित नगरीमे सिञ्चित किञ्चित ख्याल करू।
विलम छाड़ि, सिन्दुर लऽ करमे, हिय प्रभुनाम धरू॥...॥
दर्शक सब व्याकुल होय निरखय,
स्वातीक जल बरसू।
नवजीवनके सृजन करथि प्रभु कर्मक ध्यान धरू॥...॥
कबलौं प्रभु अनुरोध करायब शुभ-शुभ कर्म करू।
मनःपूत मनसाके कऽ के, भवनदमे विहरू॥...॥
शुभ शङ्कर-गौरी मैयाके शुभाशीष हिय मध्य धरू।
विनय "विभूति"क एतवहि प्रभुसँ, युगल जगत् विचरू॥...॥

बादरीक आगमन (२६.०५.६३)

"नभमण्डलमे पवनक रथपर, कारी-कारी बादरि आयल"।
बिजुरि छटकै, ठनका ठनकै, देखि-सुनि जनमन खूब डेरायल॥
चहु दिशि उमड़ल कारी बादरी, बादरि आबिके जल बरसायल।

प्रलयनाद मेघक सुनि-सुनि, वृद्ध जनी
सब नेनहिं नुकायल॥
हकरै बालक वृद्ध जनी सब, लोक कहै
सब माल हेरायल।
बाँस-आम गीरल अनगिनती, क्यो कहै
हमरो महिंस हेरायल॥
लोक कहै बहु भाँति मनोदुःख, प्रिया
कहै मोर प्रिय नहिं आयल।
कामिनी कलपथि, प्रिय नहिं गृह छथि,
विजुरिक धुनि-सुनि जियरा डेरायल॥
रोर मचल अछि चहु दिशि जन-जन,
एतबहिमे अति जल झहरायल।
त्रिषित भूमि "विभूति"मय भेली, तरु-तृण
वो जन-मन हरसायल॥

जगक प्रमान (०९.०६.६३)

डोली उठल बिन खोलीके दुवारसँ,
घुरि नहिं आओत, प्रमान हे।

काँच कचम्बा काटि कुढ़ावोल,
उघल सबटा सामान हे॥

श्वेत वस्त्रसँ मृतक सजाओल,
नित प्रति होत जहान हे।

अचरज के नैं बात बुझि ई,
ई थिक ध्रुवक समान हे॥

चारि जने मिलि कान्ह लगाओल
गमन करत शमशान हे।
पुत्र-प्रणय के परिचय देता,
करता अग्निक दान हे॥

सच् होय अछि "पुत्रार्थे भार्या"
होय छथि पुत्र महान् हे।
कहथि "विभूति" बनब विभूति,
एहि थिक जगक प्रमान हे॥

"अपटुडेट बलिष्ठ युवकसँ" (१५.१२.१९६२)

करू किछु काज बाबू औ,
रतन धन आय पौने छी।
धरा पर अवतरित भऽ के,
एना की मन गमौने छी॥?॥

करू उत्साह किछु मनमे,
चलू सन्मार्गपर निशि-दिन।
चुकाऊ कर्ज माताके-
जे भेटल अछि अहाँके रिन॥

बढ़ाऊ डेगके आगू,
समय तँ कटि रहल अछि औ।
पुनः ऋण बढ़ि रहल अछि जे,
सधाउ आय, नैं राखू शेष तनिको औ॥

पड़ल माता कराहति छथि,
दया के बेच देने छी।
तनिक तँ लाज राखू जे,
एना की मन गमौने छी॥?॥

सुयश पायब समाजीसँ,
धवल यश देश व्यापी औ।
पिता-माता सुकीरति लहि,
अभय वरदान देता औ॥

"अनुरोध" (२८.०९.१९६२)

की कहू? कहलो नैं जाय अछि,
हिय व्यथित, वाणी सबल नहिं,
बुद्धि व्याकुल, व्याल चहु दिश
ज्वाल ऊरमे बढ़ि रहल अछि।
की कहू? कहलो नैं जाय अछि॥

दशा पातर, हाल दयनीय,
आननक सुकुमारताके।
मौन शब्दातीत मुद्रा;-
से हृदयमे चुभि रहल अछि।
की कहू? कहलो नैं जाय अछि॥

प्राण आकुल, विकल की छी,
व्यथा-ज्वालमे जरि रहल छी,
शूल बज्रक पतित नगसँ
बमरि-झहरिके खसि रहल अछि!
की कहू कहलो नैं जाय अछि॥

हृदय दारुण दुःख सहिके,
मात्र प्राणे शेष बाँचल।
एना विह्वल हाल कऽ के,
व्यथा द्विगुणित दऽ रहल छी॥
की कहू? कहलो नैं जाय अछि॥

चन्द्रमुख-मण्डल सुलोचन,
कच-विकच बेहाल की अछि।
वेदनासँ व्यथित भऽ के,
व्यथित अनका कऽ रहल छी।।
की कहू? कहलो नैं जाय अछि॥

बस आश एक, अनुरोध केवल,
मधु-मधुर मुस्कान के।
हेरि चानक स्वच्छ आभा,
करु मुकुल, विकसित प्राण के॥

पुनः मञ्जुल मृदुलाअ के,
हेतु अनुरोधी बनल छी।
मानिनी भऽ मान राखू,
दशा लखि के अति विकल छी॥



मैथिलीपुत्र प्रदीप

१. श्री मैथिली पुत्र प्रदीप (१९३६-)। ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर रचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर' आ 'सभक सुधि अहाँ लए छी हे अम्बे हमरा किए बिसरै छी यै" मिथिलामे लेजेंड भए गेलअछि।-सम्पादक

आध्यात्मिक निबन्ध

ॐ (मा)

एकटा प्रश्न उठि सकैछ, जे मोक्ष कामीक लेल वैदिक कर्मक प्रयोजन? एकर उत्तर ई भऽ सकैछ जे यज्ञ यागादि कर्मक फलश्रुतिमे स्वर्ग प्राप्त करबाक बात कहल गेल अछि। मुदा जे व्यक्ति स्वर्ग नहि चाहैत होथि, मोक्षेटा चाहैत होथि, हुनका लेल वैदिक कर्मक आवश्यकता, ई वृहदारण्यकोपनिषद केर वचनसँ पुष्ट होइत अछि। यथा- " तमेतं वेदानु वचनेनं ब्राह्मणाः विविदिषन्ति यज्ञेन, दानेन तपसा नाशकेन"।

अर्थात्- ब्राह्मणगण वेदाध्ययनसँ कामनारहित यज्ञ, दान एवं तपसँ ओहि ब्रह्मकेँ चिन्हबाक इच्छा करैत छथि। एहि वचनमे अनाशकेन अर्थात् कामनारहित "यज्ञ, दान, तप" विशेष महत्त्व रखैत अछि।

तात्पर्य जे वेदोक्त यज्ञादि कर्म जखन आशक्तिक संग कएल जाइत अछि, तखन ओहिसँ मात्र स्वर्गक भोग प्राप्त होइत अछि। परन्तु जखन बिना आशक्ति रखने निःस्वार्थ भावसँ कयल जाइत अछि, तखन काम-क्रोधसँ मुक्त भऽ कऽ कार्य केनिहारक चित्त शुद्ध भऽ जाइत अछि। ओऽ मोक्षक अधिकारी भऽ जाइत छथि।

श्रीमद्भगवदगीतामे भगवान् श्रीकृष्णक उक्ति अछि- अध्याय १८ (५-६)

यज्ञदान तपः कर्म न साज्यं कार्यमेव तत।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्॥
एतान्यापित कर्माणि संगं त्यक्त्वा फलानि च।
कार्व्यानीति मे पार्थं निश्चितं मतमुत्तमम॥

अर्थात्- यज्ञ, दान, तप आदि कर्मक त्याग नहि करबाक चाही। मुदा ई समस्त कर्म निष्काम भावसँ करबाक चाही। अतएव उपनिषदक 'अनाशकेन' एहि पदकेँ एहिठाम गीताक संगं त्यक्त्वा फलानि च पुष्ट करैत अछि।

अतएव जे मनुष्य अपन आन्तरिक कल्याण चाहैत छथि अर्थात् जन्म-मृत्युक बन्धनसँ मुक्त हेबाक इच्छा करैत छथि, हुनका वैदिक कर्मकाण्डक फलस्वरूप स्वर्गक भोग केर इच्छा नहि राखि कऽ निष्काम भावसँ भगवानक प्रसन्नताक लेल मात्र कार्य करबाक चाही। ई बात मुण्डकोपनिषदमे सेहो आयल अछि। १,२,७.

मनुष्यक चित्त अनेक प्रकारक कुकर्मसँ मलिन भऽ गेल रहैत अछि। एहि सभ मैलकँ हटेबाक लेल सत् कर्म करब आवश्यक अछि। एहि सत्कर्मकेँ करबाक उद्देश्य होइत अछि वैदिक कर्म काण्ड। वेदोक्त कर्म कएलासँ चित्त शुद्ध होइत अछि। जकर बाद ब्रह्म विद्या अथवा ज्ञानक बात सुनलासँ सुफल भेटैत छैक।

उपनयन संस्कारक बाद वेदोक्त कर्म करबाक लोक अधिकारी होइत छथि। वेदक अन्तिम लक्ष्य मोक्षे प्राप्त करब थीक। ईश्वरक उपासना योगक अभ्यास, धर्मक अनुष्ठान, विद्या प्राप्ति, ब्रह्मचर्य व्रतक पालन तथा सत्संग आदि मुक्तिक साधन गानल गेल अछि। कर्मफलक प्राप्तिक हेतु पुनर्जन्मक प्रतिपादन आत्मोन्नत्तिक लेल संस्कारक निरूपण, समुचित जीवन-यापन हेतु वर्णाश्रमक व्यवस्था एवं जीवनक पवित्रता हेतु भक्ष्या-भक्ष्यक निर्णय करब वेदक मुख्य विशेषता थीक। कर्मकाण्ड, उपासना-काण्ड तथा ज्ञान-काण्ड एहि तीनूक वर्णन मुख्यतया वेदमे भेटैत अछि। यज्ञान्तर्गत देवताक पूजा, ऋषि-महर्षिक सत्संग तथा दान ई तीनू क्रिया एक संग होइत अछि। तहिना ब्रह्मचर्य पालनसँ ऋषि-ऋण, यज्ञ द्वारा देव-ऋण तथा संतानोत्पत्तिसँ पितृऋण मुक्त हेबाक आदर्श वाक्य वेदेमे प्राप्त होइत अछि।

पुत्र-वियोगक कारणेँ ई पक्का बैरागी भए गेलाह। गामसँ बाहर भए जंगले-जंगल एकान्तमे वास कए भजन-कीर्तन करए लगलाह। गामक लोकसभ बहुत दिन धरि पाछाँ कएलकनि जे अपने घुरि जाऊ, हमहु सभ अपनेक पुत्रक समान छी, अपनेकेँ कोनो कष्ट नै होएत। मुदा साहेब रामदास पर तकर कोनो प्रभाव नहि पड़लनि, उनटे जतए लोकक आवागमन देखथिन्ह, स्थानकेँ बदलि पुनः निर्जनस्थानमे चलि जाइत छलाह। लोकसभ किछु दिन धरि पाछाँ तँ केलकनि, मुदा अन्तमे हरि-थाकि कए जे ई आब पक्का बैरागी भए गेल छथि, तँ हिनका आब तंग नहि कएल जाए, विचारि कए पाछाँ करब छोड़ि देलकनि।

बैरागी भेलाक बाद ई देशक बहुतो भागमे भ्रमण कएलनि। भजन-कीर्तनक संग योग-साधनामे सेहो लीन भए गेलाह। योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कएलाक पश्चात् केओटीक निवासी बलिरामदासजीसँ दीक्षा ग्रहण कएलनि। दीक्षा ग्रहण कएलाक पश्चातो ई अनेक धर्म स्थानक भ्रमण करैत रहलाह। कहल जाइत अछि जे साहेबरामदास दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेलाह। बाटमे बड़ कष्ट सहए पड़लनि, घाओ भए गेलनि, घाओमे पीब आबि गेलनि, मुदा दण्ड-प्रणाम ओऽ नहि छोड़लनि। दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेलाह। जकर प्रमाण हुनकहि एक कवितासँ भेटैत अछि-

साधुके संगत धरि गुरुक चरण धरि,
आहे सजनी हमहु जाएब जगरनाथहि रेकी।
नहि केओ अन्नदाता संग नहि सहोदर भ्राता,
आहे सजनी माँगि भीखि दिवस गमाएब रे की।
सभ जग भेल भाला गुरुआ अठारह नाला,
आहे सजनी ओहिठाम केओ नहि छोड़ाओल रे की।
सिंह दरबाजा देखि मन मोर लुबधल,
आहे सजनी ओहिठाम पंडा पंडा बेंत बजारल रे की।
साहेब जे गुनि धुनि बैसलहुँ सिर धुनि,
आहे सजनी जगत जीवन निअराएल रे की।

गुरु बलिरामदास मुरिया रामपुरक एक महात्मा शिष्य छलाह तथा अपन गाम केओटा (केओटी)क घनघोर जंगलमे योग साधना करैत छलाह। ई योग साधनामे निष्णात् छलाह। कहल जाइत अछि जे गुरुक बिना वास्तविक ज्ञान असम्भव अछि आ तँ साहेबरामदास एक योग्य गुरुसँ दीक्षा लए, योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कए लेलनि। योग क्रिया पर सिद्धि प्राप्त कए लेलाक बाद जन्म-मरणसँ छुटकारा पाबि जेबाक पूर्ण विश्वास भए गेलनि, से गुरुक प्रसादहिसँ। मोक्ष प्राप्तिमे आब कोनो सन्देह नहि रहि गेलनि, जे जीवनक चरम लक्ष्य थिक। बलिरामदास हिनक दीक्षा गुरु छलथिन, तकर प्रमाण हिनकहि एक कवितासँ भेटैछ-

"गुरु बलिराम चरण धरि माथे, साहेब हरि अपनाया है।
अब तौ जरा-मरण छुटि जैहे, संशय सकल मेटाया है"।

कृष्णक ई अनन्य भक्त छलाह। जगन्नाथपुरीक यात्राक क्रममे बाटहिमे हिनका स्वयं भगवान श्री कृष्ण दर्शन देने छलथिन। आब तँ ई कृष्णक ध्यानमे दिन-राति लागल रहैत छलाह। समाधिस्थ कालमे तँ दुनियाँक कोनो वस्तुक ध्यान नहि रहैत छलनि, ध्यान रहैत छलनि तँ एक मात्र भगवान श्री कृष्ण। जन-श्रुति तँ ईहो अछि जे भगवानक भजनक कालमे जखन ई नाच करैत छलाह तँ स्वयं भगवान श्री कृष्ण सेहो उपस्थित भए संग दैत छलथिन।

साहेब रामदास अनेक तीर्थ-स्थलक दर्शन कएलनि। सांसारिक मोह-मायाकेँ त्यागि वैरागी भए गेलाह, मुदा मिथिला भूमिकेँ नहि त्यागि सकलाह। एक पदमे ओऽ लिखैत छथि, "मिथिला नगरी तोर दान बिनु साहेब होइछ बेहाल" तथा दोसर पदमे "साहेब करुणा करए शीश धुनि मिथिला होइछ अन्धेरि"। एहि पद सभसँ मिथिलाक प्रति हुनक प्रेमक सहज अनुमान लगाओल जाए सकैत अछि। धन्य ई मिथिला भूमि ओऽ धन्य महात्मा साहेब रामदास।

पहिने कहि चुकल छी जे ई जंगलमे एकान्त वास कए भजन-कीर्तन कएल करथि। जतए-जतए ई जाथि ताहि-ताहि ठाम ई अपन खन्ती गारि कुटियाक निर्माण कए एक पाकड़िक गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अनेक जगह पर योगमढ़ी छल आ सबहि ठाम ई पाकड़िक गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अन्तिम योगमढ़ी दरभंगा जिलाक 'पचाढ़ी' गाममे अछि, जे पूर्वमे बूढ़वनक नामे विख्यात छल। एहू ठाम पाकड़िक गाछ रोपने छलाह, जे अद्यावधि वर्तमान अछि। पल्लवित एहि गाछक शोध मानवशास्त्री लोकनि एखनहु कए रहल छथि।

कमलाक तट पर स्थित पचाढ़ी गामक वन आ वृन्दावनक तुलना करब कठिन भए जाइत छल। वृन्दावनसँ एको रत्ती कम शोभा पचाढ़ी (बूढ़वनक) नहि छल। मोरक नाच, सुगाक गान, नाना प्रकारक वन्यजीव प्राणीक निर्भय विचरण करब, भिन्न-भिन्न लता-पुष्पसँ शोभित वनक दृश्य लोककेँ सहजहि आकृष्ट कए लैत छल। एहि स्थानक प्रशंसामे कवीश्वर चन्दा झा लिखैत छथि–

"पाकड़ि वृक्ष सएह कमला तट जएह भजन कुटी विश्राम।
चन्द्र सुकवि मन धरम परमधन धन्य पचाढ़ी ग्राम"॥

पचाढ़ी स्थानक शोभा आब नहि रहि सकल, जे पहिने एक निर्जन स्थान छल, ताहि ठाम आब ग्राम अछि, खेती-पथारी कएल जाइत अछि। वनक तँ आब निशानो नहि रहि गेल अछि, तथापि साहेब रामदासजीक समाधि-स्थलक चारूकात मन्दिर सेहो एक-दू नहि छओ-सातटा अछि। सभमे भोग-रागक व्यवस्था, पुजेगरीक संग-संग सहायकक व्यवस्था सभ मन्दिरमे फराक-फराक अछि। लगभग पाँच कट्ठा जमीनमे फुलबारी अछि। आगत-अतिथिक स्वागत यथासाध्य एखनहु कएल जाइत अछि। साहेब रामदासक नाम पर एकटा संस्कृत महाविद्यालय अछि, जाहिमे निर्धन छात्रकेँ स्थान दिससँ रहबाक व्यवस्था ओ मुफ्त भोजनक व्यवस्था कएल जाइत अछि। पचाढ़ीस्थान मिथिलाक वैभवशाली स्थानमेसँ सर्वप्रमुख अछि। एकर वैभवशालीक पाछाँ राजदरभंगाक महत्वपूर्ण योगदान अछि। तत्कालीन दरभंगा मिथिलेश नरेन्द्रसिंह निःसन्तान छलाह। हुनक पत्नी रानी पद्मावती अतिथि-सत्कार, पूजा-पाठक निमित्त ३०० (तीन सए) बीघा जमीन पचाढ़ी स्थानकेँ दानस्वरूप देने छलथिन। मुदा कहल जाइत अछि जे साहेब रामदास ओहि जमीनक दान-पत्रकेँ प्रज्वलित अग्निमे फेकि देलखिन। शिष्य लोकनिकेँ भिक्षाटन वृत्तिसँ आगत-अतिथिक सेवा सत्कार करए पड़ैत छलनि, जाहिसँ ओ लोकनि तंग आबि गेलाह आ फलस्वरूप ओऽ दान-पत्र पुनः महारानीसँ प्राप्त कए चुप-चाप राखि लेलनि, जे एखनहु धरि सम्पत्तिक रूपमे विद्यमान अछि। किछु जमीन भक्त लोकनि वेतियामे सेहो देने छथि। योग्य शिष्य सभ एहि सम्पत्तिकेँ बढ़ाए लगभग हजार बीघा बनाए देलनि। सरकार किछु जमीनपर सिलिंग लगाए देलक, मुदा व्यवस्थापक लोकनि अधिकांश जमीनकेँ वन-विभागकेँ दए गाछ-वृक्ष लगवाए देलनि। अपेक्षाकृत एखनहु ई स्थान समृद्ध अछि।

साहेबरामदास एक सिद्ध पुरुष छलाह आ तेँ हिनकामे चमत्कारिक गुण स्वाभाविक अछि। चमत्कारसँ सम्बन्धित अनेक कथा हिनकासँ जुड़ल अछि, जाहिमे एक चमत्कारक उल्लेख करब हम उचित बुझैत छी, जे हिनक अन्तः साक्ष्यसँ जुड़ल अछि।

राजा नरेन्द्र सिंहक समयमे पटनाक कोनो मुसलमान नवाब मिथिलापर आक्रमण कए देलक। राजा नरेन्द्र सिंहक सेना ओ नवाबक सेनाक बीच घोर संग्राम भेल, जाहिमे अपार धन-जनक क्षति भेल छल, मुदा राजा नरेन्द्र सिंह ओहिमे स्वयं वीरतापूर्वक युद्ध कएलनि आ शत्रु सेनाकेँ पराजित कएल। ओहि समयमे महात्मा साहेब रामदास नरेन्द्र सिंहक विजयी होएबाक कामना स्वरूप श्रीकृष्णसँ प्रार्थना कएलनि-

"साहेब गिरधर हरहु नरेन्द्र दुःख,
करहु सुखित मिथिलेशहि रे की"।

एहिपर क्रुद्ध भए नवाब हिनका बन्दी बनाए पटनाक कारागारमे बन्द कए देलनि। साहेब रामदास योगबलेँ सभ दिन गंगा-स्नान, संध्या-तर्पण, पूजा-पाठ आदि गंगहि तटपर कएल करथि। कारागारमे रहितहुँ ई क्रम हिनक निरन्तर चलैत रहलनि। लोक सभ हिनका गंगा तटपर सभ दिन देखैत छलनि। नवाबकेँ कोना ने कोना एहि बातक जानकारी भेट गेलनि। नवाबकेँ तँ विश्वास नहि भेलनि तथापि हुनका अपन कर्मचारी सभपर संदेह भेलनि आ ओऽ अपनेसँ कारागारमे ताला लगाए देलनि। तथापि साहेब रामदासक गंगा-स्नानक क्रम नहि टुटलनि। अन्तमे नवाब साहेबरामदासक पएरमे बेड़ी बान्हि कारागारमे ताला लगाए देलनि। साहेबरामदास तत्क्षणहि करुणाद्र भए अपन आराध्य देव श्री कृष्णकेँ पुकारलनि-

"अब न चाहिए अति देर प्रभुजी,
अब न चाहिए अति देर।
विप्र-धेनु-महि विकल सन्त जन,
लियो है असुरगण घेरि"।

गविते छलाह की पएरक बेड़ी ओ फाटकक ताला आदि सभ टूटिकए खसि पड़ल। नवाब आश्चर्य चकित भए गेल। ओ महात्माजीक पएरपर खसि पड़ल। साहेबरामदाससँ क्षमा माँगलक आ बादमे ससम्मान स्वागत कए मिथिला पहुँचाए देल।

एहि तरहक कएक गोट चमत्कार अछि, जेना राजा राघव सिंहक समयमे राजदरभंगामे प्रेत-बाधाकेँ शान्त करब, माटिक भीतकेँ हाँकब। कृष्णाष्टमी, जन्माष्टमी आदि उत्सवक अवसरपर अधिक साधु-सन्तक भीड़ जुटलाक बादो थोड़बहु सामग्रीमे भोजनक अवसरपर भण्डारामे कोनो कमी नहि होएब आदि कतोक चमत्कारिक घटना सभ अछि, जे हिनकासँ जुड़ल अछि। एहि सिद्ध पुरुषक चमत्कारिक घटनासभसँ लोकक हिनका प्रति कतेक श्रद्धा छल से सहजहि अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

साहेबरामदास वैरागी वैष्णव-भक्त-कवि छलाह। पदक रचना करब हिनक साधन छल मुदा साध्य तँ एकमात्र छल

भगवान विष्णुक भजन-कीर्तन करब। कहल जाइत अछि जे ओऽ अपनहि पदक रचना कए सभ दिन भगवानक भजन-कीर्तन कएल करथि। ओऽ भक्तिमार्गी छलाह आ तैँ भक्ति-मार्गक सिद्धांतक अनुरूप पदक रचना कएल करथि। भक्ति मार्गक सभ रसक पदरूपमे रचना कएलनि, मुदा प्रधान रस "मधुरं" रस सएह अछि। भगवानक कोनो एक रूपक ओऽ आग्रही नहि, सगुण-निर्गुण दुनू रूपमे मानैत छलाह, जे अपन मनोगत भाव कवितामध्य व्यक्त कएने छथि।

"निर्गुण सगुण पुरुष भगवान, बुझि कहु साहेब धरइछ ध्यान"।

"धैरज धरिअ मिलत तोर कन्त, साहेब ओ प्रभु पुरुष अनन्त"।

साहेब रामदासक यद्यपि एकमात्र पदावली उपलब्ध अछि, जाहिमे ४७८ टा पद संकलित अछि। मुदा ईएह पदावली हुनक यशकेँ अक्षुण्ण बनाए रखबामे सभ तरहेँ समर्थ अछि। भक्तिक प्रायः सभ विषयपर पदक रचना कएने छथि, यथा- कृष्ण-जन्म, वात्सल्य, वंशीवादन, संयोग-श्रृंगार, रास-लीला, झुलोत्सव आदि। रासलीला परक जेहन पद सभक ई रचना कएने छथि से प्रायः मैथिलीमे आन केओ कवि नहि कएने छथि। हिनक रास-लीला परक पदक विवेचन स्वतंत्र रूपेँ कएल जाए सकैत अछि। कृष्ण-प्रेमक अनन्यता, भक्ति प्रवणता ओ प्रसाद गुण हिनक काव्यक मुख्य गुण कहल जाए सकैत अछि। ऋतुगीत, दिन-रातिक भिन्न-भिन्न समयोपयोगी पदक रचना, जेना-प्राती, सारंग, ललित, विहाग आदिक रचना कएल करथि।

मिथिला पञ्चदेवोपासक सभ दिनसँ रहल अछि। साहेब रामदासक रचनामे सेहो भक्तिक विविध-रूपक दर्शन होइत अछि। कृष्णक तँ ई अनन्य भक्त छलाह मुदा आनो-आन देवी-देवता परक पदक रचना कएने छथि। हिनक हनुमानक फागु परक कविता देखल जाए सकैत अछि। एकरा सन्त लोकनिक फागु सेहो कहल जाए सकैछ-

"प्रवल अनिल कपि कौतुक साजल लंका कएल प्रयाण।

कनक अटारी कए असवारी छाड़थि अगनिक वाण॥

जरए लंक कपि खेलए फगुआ, उड़ए गगन अंगार।

धुँआ वाढ़ि अकासहि लागल दिवसहि भेल अन्धार"।

हिनक रचित एकटा महादेवक गीत सेहो अछि, जकर उल्लेख डॉ. रामदेव झा अपन "शैव साहित्यक भूमिका" नामक ग्रन्थमे कएने छथि-

" पुछइत फिरइत गौरा वटिया हे राम।

कहु हे माइ, जाइत देखल मोर भंगिया हे राम॥

हाथ भसम केर गोला हे राम।

वरद रे चढ़ि कोन नगर गेल भोला हे राम"॥

विरहिणी व्रजाङ्गनाक मनोदशाक एक विलक्षण रूप एहि ठाम सेहो देखल जाए सकैत अछि:

"कमल नयन मनमोहन रे कहि गेल अनेक।

कतेक दिवस भए राखब रे हुनि वचनक टेक॥

के पतिआ लए जाएत रे जहँ वसु नन्दलाल।

लोचन हमर सतओलनि रे छतिआ दए शाल॥

जहँ-जहँ हरिक सिंहासन आसन जेहिठाम।

हमहु मरब हरि-हरि कै मेटि जाएत पीर॥

आदि"

मिथिलाक सन्गीत परम्परा अति प्राचीन ओ समृद्ध अछि। संगीतक रचना तँ विद्यापति ओ हुनकहुँसँ पूर्व होइत आएल अछि, मुदा रहस्यवादी संगीत-काव्य-रचना नवीन रूपमे आएल अछि, जकर प्रवर्तक साधु-सन्त लोकनि भेलाह। जाहिमे सन्त साहेब रामदासक स्थान अग्रगण्य अछि। हिनका लोकनिक रचनाक प्रभाव प्रायः सभ वर्गपर पड़ल। हिनक प्रायः सभ कवितामे रागक उल्लेख अछि। अतः एहिपर संगीत-शास्त्रक अनुकूल शोध-कार्य कएल जएबाक आवश्यकता अछि।

साहेब रामदास परम वैरागी सुच्चा साधु छलाह, भक्त छलाह आ तैँ हिनक भाषापर सधुक्करी ओ तत्काल प्रचलित व्रजभाषाक किछु प्रभाव सेहो पड़ल अछि, तथापि हुनक जे पदावली उपलब्ध अछि से मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध बनएबामे अपन महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कएने अछि। भक्ति-भावनाक सरलता ओ सहजताक दृष्टिएँ हिनक भाषा सरल ओ सहज अछि। भक्ति-भावना परक एहन कविता मैथिली-साहित्यमे प्रायः दुर्लभ अछि। हिनक भक्ति परक गीत एखनहु मिथिलाक गाम-घरमे बुढ़-बुढ़ानुसक ठोरपर अनुवर्तमान अछि, जकर संकलन करब परम आवश्यक अछि।



मनोज मुक्ति

स्मिताक लडाई

पशुपतिनाथक देशमे होइछ व्यभिचार सब भेषमे

आन ठाम त बाते छोडू अबुह सगैत अछि अपनो देशमे।

प्रकृतिक देल ई आँखि, कान ओ बडका नाक आब दुश्मन प्रतीत होइया

सँसारमे अपन अलग छाप छोडने मिथिलावासी,डरपोकक हूलमे सरिक होइया।

अपना समस्त अधिकार सऽभसँ बन्चित होइतो,बँचल छी काइल्हुक आशामे

भ्रष्ट प्रशासन ओ नेताक लोभ सँ, जकडा रहल अछि देश, विदेशीक पाशामे।

एतेक कठीन आ दूर्लभ मनुष्यक जीवन पाओल स्वर्ग समान एही मिथिलामे

मूदा लगैछ जे जन्मजाते अभागल थिकहुँ जे दूर्दशा होइत देखैछी, मिथिलाके अपन आगामे।

सम्पूर्ण श्रृंगार सँ सुशोभित जगतक माय ओ विलक्षणा सीता आई घरसँ निकालल जाऽरहल अछि

मिथिलावासी एम्हर ओम्हरक वात सुनैत, घरक एकटा कोनामे बहादुरी देखाबि रहल अछि।

भऽरहल अछि सस्ता रँग सँ शोणीत जाहिसँ सब छथि नहाएल

कतेक दिन सऽब चुप्पे रहतै, बैसतइ एना नुकाएल?

ताहि सँ,

एहि स्मिताक लडाईमे बचने मात्र सँ काज नई चलत

सम्पूर्ण मैथिलमे नव चेतना भरैत, सबके लडहिटा पडत।



डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' (1938-)

डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' (१९३८-)- ग्राम+पोस्ट- हसनपुर, जिला-समस्तीपुर। पिता स्व. वीरेन्द्र नारायण सिँह, माता स्व. रामकली देवी। जन्मतिथि- २० जनवरी १९३८. एम.ए., डिप.एड., विद्या-वारिधि(डि.लिट)। सेवाक्रम: नेपाल आऽ भारतमे प्राध्यापन। १.म.मो.कॉलेज, विराटनगर, नेपाल, १९६३-७३ ई.। २. प्रधानाचार्य, रा.प्र. सिंह कॉलेज, महनार (वैशाली), १९७३-९१ ई.। ३. महाविद्यालय निरीक्षक, बी.आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, १९९१-९८.मैथिलीक अतिरिक्त नेपाली अंग्रेजी आऽ हिन्दीक ज्ञाता। मैथिलीमे १.नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विराटनगर,१९७२ई.), २.ब्रह्मग्राम(रिपोर्ताज दरभंगा १९७२ ई.), ३.'मैथिली' त्रैमासिकक सम्पादन (विराटनगर,नेपाल १९७०-७३ई.), ४.मैथिलीक नेनागीत (पटना, १९८८ ई.), ५.नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, १९९८ ई.), ६. प्रेमचन्द चयनित कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७. वाल्मीकिक देशमे (महनार, २००५ ई.)।प्रकाशनाधीन: ''विदापत'' (लोकधर्मी नाट्य) एवं ''मिथिलाक लोकसंस्कृति''।भूमिका लेखन: १. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत (डॉ रामदेव झा), २.धर्मराज युधिष्ठिर (महाकाव्य प्रो. लक्ष्मण शास्त्री), ३.अनंग कुसुमा (महाकाव्य डॉ मणिपद्म), ४.जट-जटिन/ सामा-चकेबा/ अनिल पतंग), ५.जट-जटिन (रामभरोस कापड़ि भ्रमर)।अकादमिक अवदान: परामर्शी, साहित्य अकादमी, दिल्ली। कार्यकारिणी सदस्य, भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना। सदस्य, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर। भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली। कार्यकारिणी सदस्य, जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुरधाम, नेपाल।सम्मान: मौन जीकेँ साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार, २००४ ई., मिथिला विभूति सम्मान, दरभंगा, रेणु सम्मान, विराटनगर, नेपाल, मैथिली इतिहास सम्मान, वीरगंज, नेपाल, लोक-संस्कृति सम्मान, जनकपुरधाम,नेपाल, सलहेस शिखर सम्मान, सिरहा नेपाल, पूर्वोत्तर मैथिल सम्मान, गौहाटी, सरहपाद शिखर सम्मान, रानी, बेगूसराय आऽ चेतना समिति, पटनाक सम्मान भेटल छन्हि।राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमे सहभागिता- इम्फाल (मणिपुर), गोहाटी (असम), कोलकाता (प. बंगाल), भोपाल (मध्यप्रदेश), आगरा (उ.प्र.), भागलपुर, हजारीबाग, (झारखण्ड), सहरसा, मधुबनी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, वैशाली, पटना, काठमाण्डू (नेपाल), जनकपुर (नेपाल)।मीडिया: भारत एवं नेपालक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे सहस्त्राधिक रचना प्रकाशित। आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रायः साठ-सत्तर वार्तादि प्रसारित।अप्रकाशित कृति सभ: १. मिथिलाक लोकसंस्कृति, २. बिहरैत बनजारा मन (रिपोर्ताज), ३.मैथिलीक गाथा-नायक, ४.कथा-लघु-कथा, ५.शोध-बोध (अनुसन्धान परक आलेख)।व्यक्तित्व-कृतित्व मूल्यांकन: प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन: साधना और साहित्य, सम्पादक डॉ.रामप्रवेश सिंह, डॉ. शेखर शंकर (मुजफ्फरपुर, १९९८ई.)।चर्चित हिन्दी पुस्तक सभ: थारू लोकगीत (१९६८ ई.), सुनसरी (रिपोर्ताज, १९७७), बिहार के बौद्ध संदर्भ (१९९२), हमारे लोक देवी-देवता (१९९९ ई.), बिहार की जैन संस्कृति (२००४ ई.), मेरे रेडियो नाटक (१९९१ ई.), सम्पादित- बुद्ध, विदेह और मिथिला (१९८५), बुद्ध और विहार (१९८४ ई.), बुद्ध और अम्बपाली (१९८७ ई.), राजा सलहेस: साहित्य और संस्कृति (२००२ ई.), मिथिला की लोक संस्कृति (२००६ ई.)।वर्तमानमे मौनजी अपन गाममे साहित्य शोध आ रचनामेलीनछथि।-सम्पादक।

पंचदेवोपासक भूमि मिथिला

हिमालयक पादप्रदेशमे गंगासँ उत्तर, कोशीसँ पश्चिम एवं गण्डकसँ पूर्वक भूभाग सांस्कृतिक मिथिलांचलक नामे ख्यात अछि। मिथिलांचलक ई सीमा लोकमान्य, शास्त्रसम्मत ओऽ परम्परित अछि। सत्पथब्राह्मणक अंतःसाक्ष्यक अनुसारे आर्यलोकनिक एक पूर्वाभिमुखी शाखा विदेह माथवक नेतृत्वमे सदानीरा (गण्डक) पार कऽ एहि भूमिक अग्नि संस्कार कऽ बसिवास कएलनि, जे विदेहक नामे प्रतिष्ठित भेल। कालान्तरमे एकर विस्तार सुविदेह, पूर्व विदेह, ओऽ अपर विदेहक रूपँ अभिज्ञात अछि। विदेहक ओ प्राथमिक स्थलक रूपमे पश्चिम चम्पारणक लौरियानन्दनगढ़क पहिचान सुनिश्चित भेल अछि। आजुक लौरियानन्दनगढ़ प्राचीन आर्य राजा लोकनि एवं बौद्धलोकनिक स्तूपाकार समाधिस्थल सभक संगम बनल अछि। कालक्रमे अहि इक्षवाकु आर्यवंशक निमि

पुत्र मिथि मिथिलापुत्रक स्थापना कयलनि। प्राचीन बौद्धसाहित्यमे विदेहकँ राष्ट्र (देश) ओऽ मिथिलाकँ राजधानीनगर कहल गेल अछि। अर्थात् मिथिला विदेहक राजधानी छल। मुदा ओहि भव्य मिथिलापुरीक अभिज्ञान एखन धरि सुनिश्चित नहि भेल अछि। तथापि प्राचीन विदेहक सम्पूर्ण जनपदकँ आइ मिथिलांचल कहल जाइछ।

ओऽ मिथिलांचलक भूमि महान अछि, जकर माथेपर तपस्वी हिमालयक सतत वरदहस्त हो, पादप्रदेशमे पुण्यतोया गंगा, पार्श्ववाहिनी अमृत कलश धारिणी गंडक ओऽ कलकल निनादिनी कौशिकीक धारसँ प्रक्षालित हो। एहि नदी मातृक जनपदकेँ पूर्व मध्यकालीन ऐतिहासिक परिवेशमे तीरभुक्ति अर्थात् तिरहुत कहल गेल, जकर सांस्कितिक मूलमे धर्म ओऽ दर्शनक गांभीर्य, कलासभक रागात्मक उत्कर्ष, ज्ञान-विज्ञानक गरिमा ओऽ भाषा-साहित्यक समृद्ध परम्पराक अंतः सलिला अंतर्प्रवाहित अछि। एहि सभक साक्षात् मिथिलाक शैव-शाक्त, वैष्णव, गाणपत्य, सौर (सूर्य) ओऽ बौद्ध-जैनक आस्था केन्द्र एवं ऋषि-मुनिक साधना परम्परामे उपलभ्य अछि। प्रकारान्तरसँ ओहि स्थल सभकँ सांस्कृतिक चेतनाक ऐतिहासिक स्थलक संज्ञा देल जाऽ सकैछ, जकर आइ-काल्हि पर्यटनक दृष्टिसँ महत्व बढ़ि गेल अछि।

मिथिलाक प्रसिद्धि ओकर पाण्डित्य परम्परा, दार्शनिक-नैयायिक चिन्तन, साहित्य-संगीतक रागात्मक परिवेश, लोकचित्रक बहुआयामी विस्तार, धार्मिक आस्थाक स्थल, ऐतिहासिक धरोहर आदिक कारणे विशेष अनुशीलनीय अछि। जनक-याज्ञवल्क्य, कपिल, गौतम, कणाद, मंडन, उदयन, वाचस्पति, कुमारिल आदि सदृष विभूति, गार्गी, मैत्रेयी, भारती, लखिमा आदि सन आदर्श नारी चरित, ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, विनयश्री, चन्दा झा, लाल दास आदि सन आलोकवाही साधक लोकनिक प्रसादे एहि ठामक जीवन-जगतमे आध्यात्मिक सुखानुभूति ओऽ सारस्वत चेतनादिक मणिकांचन संयोग देखना जाइछ। मिथिला आध्यात्म विद्याक केन्द्र मानल जाइछ।

आजुक मिथिलांचलक संस्कृति उत्तर बिहारमे अवस्थित वाल्मीकिनगर (भैँसालोटन, पश्चिम चम्पारण) सँ मंदार (बाँका, भागलपुर) धरि, चतरा-वाराह क्षेत्र (कोशी-अंचल, नेपाल) सँ जनकपुर-धनुषा (नेपाल) धरि ओ कटरा (चामुण्डा, मुजफ्फरपुर), वनगाँव-महिषी, जयमंगला (बेगूसराय), वारी-बसुदेवा (समस्तीपुर), कपिलेश्वर-कुशेश्वर-तिलकेश्वर (दरभंगा), अहियारी-अकौर-कोर्थु(मधुबनी), आमी(अम्बिकास्थान, सारण), हरिहरक्षेत्र (सोनपुर, सारण) वैशाली आदि धरि सूत्रबद्ध अछि। एहि सभ धार्मिक तीर्थस्थल सभक परिवेक्षणसँ प्रमाणित होइछ जे मिथिलांचल पंचदेवोपासक क्षेत्र अछि। कालान्तरमे एहिसँ बौद्ध ओऽ जैन स्थल सभ सेहो अंतर्मुक्त भऽ आलोच्य भूभागकेँ गौर्वान्वित कयलनि।

पंचदेवोपासक क्षेत्रक अर्थ भेल- गणेश, विष्णु, सूर्य, शिव ओऽ भगवतीक क्षेत्र। एहिमे सूर्य सर्वप्राचीन देव छथि एवं शिव सर्वप्राचीन ऐतिहासिक देवता छथि। विघ्नांतक गणेशक पूजन प्राथमिक रूपेँ कयल जाइछ एवं मातृपूजनक संदर्भमे भगवती अपन तीनू रूपमे लोकपूजित छथि अर्थात् दुर्गा, काली, महालक्ष्मी एवं सरस्वती। भगवती शक्तिक आदि स्रोत छथि, जनिकामे सृष्टि, पोषण ओ संहार (लय) तीनू शक्ति निहित अछि। मुदा लोकक लेल ओऽ कल्याणकारिणी छथि। धनदेवी लक्ष्मीक परिकल्पना वैष्णव धर्मक उत्कर्ष कालमे भेल छल एवं ओ विष्णुक सेविका (अनंतशायी विष्णु), विष्णुक शक्ति (लक्ष्मी नारायण) एवं देवाभिषिक्त (गजलक्ष्मी) भगवतीक रूपमे अपन स्वरूपक विस्तार कयलनि। ओना तँ लक्ष्मी ओऽ सरस्वतीकँ विष्णुक पर्श्वदेवीक रूपमे परिकल्पना सर्वव्यापक अछि। लक्ष्मी ओऽ गणेशक पूजन सुख-समृद्धिक लेल कयल जाइछ। प्राचीन राजकीय स्थापत्यक सोहावटीमे प्रायः गणेश अथवा लक्ष्मीक मूर्ति उत्कीर्ण अछि।

पंचदेवोपासना वस्तुतः धार्मिक सद्भावक प्रतीक अछि। मिथिलांचलमे एहि पाँचो देवी-देवताक स्वतंत्र विग्रह सेहो प्राप्त होइछ। भारतीय देवभावनाक विस्तारक मूलमे भगवती छथि, जे कतहु सप्तमातृकाक रूपमे पूजित छथि तँ कतहु दशमहाविद्याक रूपमे। सप्तमातृका वस्तुतः सात देवता सभक शक्ति छथि- ब्रह्माणी (ब्रह्मा), वैष्णवी (विष्णु), माहेश्वरी (महेश), इन्द्राणी (इन्द्र), कौमारी (कुमार कार्तिकेय), वाराही (विष्णु-वाराह) ओऽ चामुण्डा (शिव)। एहि सप्तमातृकाक अवधारणा दानव-संहारक लेल संयुक्त शक्तिक रूपमे कयल गेल छल, जे आइ धरि पिण्ड रूपेँ लोकपूजित छथि। मुदा एक फलक पर सप्तमातृकाक शिल्पांकनक आरम्भ कुषाणकालमे भऽ गेल छल। चामुण्डाकेँ छोड़ि सभटा देवी द्विभुजी छथि। सभक एक हाथमे अम्तकलश एवं दोसर अभयमुद्रामे उत्कीर्ण अछि। मिथिलांचलक लोकजीवनमे जनपदीय अवधारणाक अनुसार सप्त मातृकाक नामावली भिन्न अछि। मुदा बिढ़िक्षया माइ (ज्येष्ठा, आदिमाता, मातृब्रह्म) सभमे समान रूपेँ प्रतिष्ठित छथि। यद्य सप्तमातृकाक ऐतिहासिक प्रस्तर शिल्पांकन एहि भूभागसँ अप्राप्य अछि, मुदा दशमहाविद्याक ऐतिहासिक मूर्ति सभ भीठभगवानपुर (मधुबनी) एवं गढ़-बरुआरी (सहरसा)मे उपलभ्य अछि।

मायानन्द मिश्र

अहाँ की छी

अहाँ प्रलोभनक नाक काट'बला मर्यादा नञि छी

नग्नताकेँ आवरण दैबला नञि छी

सँतुलन राख'बला

ट्रैफिक गाइड जकाँ चौबटियापर ठाढ

दुनू हाथ उठौने अहिँसा नञि छी।

अहाँ छी

कोडोपैरीन खा खा कऽ तत्काल अपन मथदुखी केँ दबबऽ बला क्षुब्ध हिमालय।

अहाँ छी अपन खण्डित रसनाकेँ दाबि

चुपचाप कान'बला सिन्धु।

वस्तुतः अहाँ छी एकटा बिन्दु

जाहिठामसँ अनेक रेखा तँ खीचल जा सकैछ

किन्तु ओ सबटा दुर्जेय चट्टानक

कोनो विराट अन्हार गुफाक अंतहीन घाटीमे

जा क' समाप्त भ' जाइत अछि

सरिपहुँ ई प्रश्न अछि जे अहाँ की छी?



डॉ मित्रनाथ झा (१९५६-)

पिता स्वनामधन्य मिथिला चित्रकार स्व. लक्ष्मीनाथ झा प्रसिद्ध खोखा बाबू, ग्राम-सरिसब, पोस्ट सरिसब-पाही, भाया- मनीगाछी, जिला-मधुबनी (भारत), सम्प्रति मिथिला शोध संस्थान, दरिभङ्गामे पाण्डुलिपि विभागाध्यक्ष ओ एम.ए. (संस्कृत) कक्षाक शिक्षार्थीकेँ एम.ए. पाठ्यक्रमक सभ पत्रक अध्यापन। लेखन, उच्चस्तरीय शोध ओ समाज-सेवामे रुचि। संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी, भोजपुरी ओ उर्दू भाषामे गद्य-पद्य लेखन। राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर सुप्रतिष्ठित अनेकानेक पत्र-पत्रिका, अभिनन्दन-ग्रन्थ ओ स्मृति-ग्रन्थादिमे अनेक रचना प्रकाशित। राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर आयोजित अनेक सेमिनार, कॉनफेरेन्स, वर्कशॉप आदिमे सक्रिय सहभागिता।–**सम्पादक**

विदेह-वैभव

विद्या-वैभव केर गरिमासँ सर्वथा पुक्त जे सिद्ध भूमि।

अन्तर कदापि नहि जे कएलक अप्पन वा आनक थातीमे॥

देलक सदिखन जे पूर्ण ज्ञान निश्छलता ओ कर्मठतासँ।

मद्धिम कखनहुँ नहि पड़य देल, दय तेल ज्ञान केर बातीमे॥

हवि ज्ञानक अप्पन सतत बाँटि, हो बुद्धिक कोनो अनुष्ठान।

शिक्षाक भनहि हो कोनो विधा, वर्जित नहि हिनकर पातीमे।

अक्षुण्ण राखि निज-मर्यादा, अन्यहु क्षेत्रक कएलक विकास।

मिथिला केर तापस ज्ञान-भानुसँ, के-के नहि लेलक प्रकाश॥

मतवैभिन्यक अप्पन महिमा, के नहि जनैछ ई दिव्यभूमि।

तमसँ आच्छादित मार्ग कोनो, त्वरिते पाओल ज्ञानक प्रकाश॥

रहि मध्य मार्ग केर अनुगामी, कामी नहि कोनहु तुच्छ फलक।

कएलक प्रयास विध्वंसक बड़, पर कए न सकल किञ्चित् विनाश॥

होता कोनहु हो, यजमानक ज्ञानक मानक हो ध्यान सदा।

मिथिला केर पावन धरतीपर, गुञ्जित हो ज्ञानक गान सदा॥

भग्न चिन्तन

चिन्ताक तप्त दावानलमे हम की रचनात्मक कार्य करू।

हियमे तँ अबैछ लहरि भावक, पर धार कोना ई पार करू॥

त्रिभुवन केर प्रायः कोनो वस्तु, मानव-चिन्तनसँ दूर नञि।

की भावनाक ई दिव्य महल, होएत हमरासँ पूर नञि॥

लेखनी हमर ई बाजि रहल, की हमरा अपनहि भरि रखबैं।

मानस पट से धिक्कारि रहल, की समय एतबहि भरि रखबँ॥

खाली हाथेँ जाएत सभ क्यो, ई नीक जेकाँ हम जनैत छी।

लेखनीक आइ दुर्दशा देखि, एकान्त मौन भए कनैत छी॥

कारण जनैत छी नहि जाएत भूतलसँ संग एक्कोटा कण।

पर मित्र भाग्यसारणी हमर नहि देलक एहन कोनो यक्षण॥

जेहि अनुपमेय क्षणमे अप्पन भावना अतीतकेँ दोहराबी।

भग्ना वीणा केर रुग्ण तारपर दू आखर हमहूँ गाबी।

मुखीलाल चौधरी

सुखीपुर –१, सिरहा

हाल : बुटवल बहुमुखी क्यापस बुटवल

दिनाड्ढ २०६५ जेठ १४ गते मंगलदिन जनकपुरधाममें लोकार्पण भेल ''समझौता नेपाल''क दोसर प्रस्तुति गीति एल्वम ''भोर'' क गीतके संगही समझौता नेपालक निर्देशक नरेन्द्रकुमार मिश्रजीक साक्षात्कार दिनाड्ढ २०६५ जेठ १८ गते शनिदिन कान्तिपुर एफ़एम़के सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रम ''हेलौ मिथिलामें'' सुनबाक मौका भेटल। संघीय गणतान्त्रिक नेपालक भोरमे समझौता नेपालद्वारा प्रस्तुत कएल गेल गीति एल्बम भोरके लेल समझौता नेपालक निर्देशन नरेन्द्रकुमार मिश्रजीके हार्दिक बधाई एवं शुभकामना। आगामी दिनमें समझौता नेपाल मार्फत गीति यात्राकेँ निरन्तरततासँ गीत या संगीतक माध्यमसँ मिथिलावासी आ मधेशी संगहि सम्पूर्ण आदिबासी थारु में जागरण लावय में सफल होवय आओर मिथिलावासी, मधेशी, आदिवासी थारु सगहि सम्पूर्ण देशवासीमें सदाशयता, सदभावना, सहिष्णुता आ स्नेहमें प्रगाढता बढावमें सफलता प्राप्त होएए, एकरा लेल साधुवाद।

गीतकार सभहक गीत उत्कृष्ट अछि, कोनो गीत वीस नहि सभटा एक्कैस। एकसँ बढी कय एक। गीतकार सभहक गीतके सम्वन्धमें छोटमें अलग अलग किछु कहय चाहैत अछि

रुपा झाजीक गीत शिक्षा प्रति जागरुकता आ चेतबाक सन्देश द�रहल अछि। ज्ञान प्रकाश अछि आओर अज्ञान अन्धकार। अन्धकारसँ वचवाक लेल ज्ञान प्राप्त केनाइ आवश्यक अछि। ''केहनो भारी आफत आवौ, ज्ञानेसँ खदेड'' पाती कोनो समस्या किएक नहि विकराल होएए ज्ञान आ वुद्धि सँ समाधान करल जा सकैत अछि।

पूनम ठाकुरजीक गीत सब सन्तान समान होइछ, बेटा–बेटीमे भेदभाव नहि होयबाक आ करबाह चाही सन्देश दरहल अछि। ''मुदा हो केहनो अबण्ड बेटा, कहता कुलक लाल छी '' सिर्फ एक पातिस आजुक समाजमें बेटा–बेटी प्रति केहन अवधारणा अछि, बतारहल छथि।

मिथिलाके माटि बड पावन छै। संस्कार आ अचार विचार महान छै। आओर ओएह माटिक सपूत साहिल अनवरजी छथि। जहि माटिमें साहिल अनवरजी जकाँ मनुक्ख छथि ओही माटिमे सम्प्रदायिकताक काँट उगिए नहि सकैछ। उगत त मात्र सदभावना, सदाशयता, माया–ममता, स्नेहक गाछ। जेकर गमकसँ सभकेओ आनन्दित रहत आ होएत।

''जतय हिन्नुओ राखि ताजिया,
मान दिएए इसलामके
छठि परमेसरीक कवुलाकय
मुल्लोजी मानथि रामके''

सँ इ नहि लागि रहल अछि ? कि मिथिलाके पावन माटिमें सहिष्णुताक सरिता आ बसन्तक शीतल बसात बहिरहल अछि। धन्य छी हम जे हमर जनम मिथिलाक माटिमें भेल अछि।

धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक गीत सकारात्मकतासँ भरल अछि। समस्या किएक नहि बडका होबय आ कोनो तरहके होय निरास नहि होयवाक चाही आओर सदिखन धैर्य–धारणकय सकारात्मक सोच राखिकय आगाँ बढवाक चाही। संगहि जाहि तरहसँ माँ बाप अपन सन्तानक लेल सदिखन सकारात्मक दृष्टिकोण राखैत छथि, वएह तरहसँ संतानक कर्तव्य होइछ जे ओ सभ अपन वुढ माँ बाप प्रति वहिनाइते दृष्टिकोण अपनावैत। गीतके शुरुके जे चार पाँति

''सँझुका सुरूजक लाल किरिनिया,
नहि रातिक इ निशानी छै
छिटने छल जे भोर पिरितिया,
तकरे मधुर कहानी छै''।

सकारात्मकताक द्योतक अछि। एकर संगहि

''सोना गढीके इएह फल पौलक,
अपने बनि गेल तामसन
वाह बुढवा तैओ वाजैए, हमर बेटा रामसन'' इ पातिसँ मा बापके अपन सन्तानक प्रति प्रगाढ माया ममताक बोध करारहल अछि।

नरेन्द्रकुमार मिश्राजीक गीत इ बतारहल अछि कि संसारमे प्रेम, स्नेह, माया ममता अछि तेँ संसार एतेक सुन्दर अछि। यदि प्रेम, स्नेह, माया ममता हटा देल जाय त संसार निरस भजाएत आ निरस लाग लागत। तेँ हेतु एक दोसरक प्रति प्रेम, स्नेहक आदन प्रादान होनाइ आवश्यक अछि।

आदान-प्रदान भनाए

''आँखि देखय त सदिखन सुन्दर सृजन
ठोर अलगय त निकलय मधुरगर बचन''

पाती सँ प्रेम आ स्नेह वर्षा भरहल अछि, लागि रहल अछि।

वरिष्ट साहित्यकार, कवि, गीतकार द्वय ड्ा राजेन्द्र विमल जी आ चन्द्रशेखर शेखर जीके गीत अपने अपनमे उत्कृष्ट आ विशिष्ट अछि। हिनका सभक गीत सम्बन्धमे विशेष किछु नहि कहिके हिनका सभक गीतक किछु पाती उधृत कयरहल छी, सबटा बखान कए देत।

ड्ा राजेन्द्री विमल जीक पाँतिक

''जगमग ई सृष्टि करए, तखने दिवाली छि
प्रेम चेतना जागि पडए, तखने दिवाली छि
रामशक्ति आगुमे, रावण ने टीकि सकत
रावण जखने डरए, तखने दिवाली छि''

अपने अपनमे विशिष्टता समाहित केने अछि।

ओही तरहे चन्द्रशेखर ॅशेखर जीक गीतक निम्न पांती अपने अपनमे विशिष्ट अछि

''साँस हरेक आश भर, फतहक विश्वासकर

बिहुँसाले रे अधर, मुक्त हो नैराश्य डर

रोक सब विनाशके, ठोक इतिहासकेँ

दग्धल निशाँसकेँ, लागल देसाँसकेँ''

हमर यानी मुखीलाल चौधरीक गीतके सम्बन्धमे चर्चा नहि करब त कृतघ्नता होएत। हमरद्वारा रचित गीत भोरक संगीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिद्वारा परिमार्जित आ सम्पादित कएल गेल अछि। तें एतेक निक रुपमे अपने सभहक आगाँ प्रस्तुत भेल अछि। हमर गीतके इएह रुपमे लाबएमे धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक उदार या गहन भुमिका छैन्ह। एकर लेल प्रेमर्षिजीके हम मुखीलाल चौधरी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन करए चाहैत छी।

सभटा गीतके संगीत कर्णप्रिय लगैत अछि। सुनैत छी त मोन होइत अछि फेर फेर सुनी। कतबो सुनलाक वादो मोन नहि अगहाइत अछि। एतेक निक संगीतक लेल धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीके हार्दिक बधाई आओर आगामी दिन सभमे एहोसँ निक संगीत दय सकैत, एकर लेल शुभकामना आ साधुबाद।

सभ गीतकार, संगीतकार, गायक गायिका इत्यादिक संयोजन कय बड सुन्दर आ हृदयस्पर्शी गीति एल्बम ''भोर'' जाहि तरहसँ हमरा सभहक आगाँ परोसने छथि, एकर लेल भोरक संयोजक रुपा झा जीके हार्दिक बधाई। अन्तमे सभ गीतकार, संगीतकार, गायक गायिका, संयोजक आ समझौता नेपालक निर्देशकके हादिक वधाई।

एन. अरुणा

जन्म निजामाबाद लग एकटा गाममे १९४९ ई.मे। तेलुगुमे पाँचटा कविता संग्रह प्रकाशित।
जयलक्ष्मी पोपुरी, निजाम कॉलेज, ओस्मानिया विश्वविद्यालयमे अध्यापन।

जयलक्ष्मी पोपुरी -तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद
गजेन्द्र ठाकुर-अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद।

ई सेहो अछि प्रवास

अहाँ नहि छी मानैत

मोटा-मोटी ईहो छी प्रवास

एकर गुण

षडयन्त्र जेकाँ

मूल जन्मकालेसँ

''तैयो अछि तँ बेटीये'' अछि ने ई?

कोनो पुरुषक हाथमे तँ जएबाके छैक ने एक दिन

प्रवास

मात्र अमेरिके टा प्रवासक नहिक नहि

नारी सेहो अछि एकटा ई।

अहाँ एकर अवहेलना कए सकैत छी सुविधासँ।

तैयो कतेक कठिन

छोड़ब जिनगी भरिक लेल अपन जन्मस्थान

पाएब एकटा अनचिन्हारक आँगुर?

अहाँ घुरि सकैत छी कखनो काल

मुदा बनि मात्र पाहुन।

जखने हम पएर राखब

कतेक काल धरि अहाँ रहब पुछब हमर लोककेँ।

''जाऽ धरि हम चाही''

इच्छा अछि कहबाक

मुदा श्रृंखला ससरल हमर इच्छापर बहुत पहिनहि।

प्रवास नहि अछि हर्खक वस्तु।

छोड़ि ई मात्र जे समय बितने

बढ़ैत अछि ई बनैत अछि अभ्यास।

नागेन्द्र झा

नवरत्न हाता, पूर्णियाँ

स्व. पञ्जीकार मोदानन्द झासँ सुनल परुए महेन्द्रो मूलक पूर्णियाँ जिलाक शिवनगर ग्रामवासी छलाह। ई पञ्जी प्रबन्धक नीक ज्ञाता छलाह। महाराज दरभङ्गाक चलाओल धौत परीक्षोत्तीर्ण छलाह।

ई लेख पञ्जीकारक विषयक थिक। अतः पञ्जी शब्दक अर्थ की से बूझब आवश्यक। पञ्ज शब्द आएल अछि संस्कृतमे तथा भाषोमे पञ्च शब्दक प्रयोग ५ संख्याक अर्थमे भेटैछ। तैं पञ्ज शब्द ५ संख्यासँ सम्बद्ध अछि। भाषामे हाथक पाँचो आङ्गुर तथा ताशक ५ कैं पञ्जा कहल जाइछ।

पञ्जीमे ५ संख्याक कि प्रयोजन? उत्तर- हमरा लोकनि अर्थात् मैथिल ब्राह्मण ''पञ्चदेवोपासक'' छी। कोनो तरहक शुभ कार्यमे पूजा पञ्चदेवतैक पूजासँ आरम्भ होइछ। तहिना धर्मशास्त्रक अनुसारे कहल गेल अछि जे ''मातृतः पञ्चमीं त्यक्त्वा पितृतः सप्तमीं भजेत्''। अर्थात् प्रकृति (माय)सँ पाँचम स्थान स्थिति कन्याक सङ्ग विवाह नहि करी। ई निषेध कयल गेल।

विवाह सृष्टि प्रयोजनार्थे होइछ आ सृष्टिमे प्रकृतिक प्रयोजन तैं मायसँ पाँचम स्थान स्थित कन्यासँ विवाह निषिद्ध भेल तथा एहि निषेधक कारणसँ सम्भव थिक जे एकर नाम ''पञ्जी'' राखल गेल हो अथवा कन्यादानमे वरक दू पक्ष, कन्याक दू पक्षक अर्थात् दुनू मिलाकैं चारि पक्षक निःश्शेष व्याख्या जाहि पुस्तकमे लिखल जाय आओर पञ्जीकार ओकरा स्वीकार करथि अर्थात् हस्ताक्षर करथि ओऽ भेल पञ्जी।

संस्कृतमे पञ्जी (पञ्जिका) शब्दक अर्थ थिक जे पूर्णतः पदक व्याख्या जाहिमे लिखल गेल हो। अर्थात् ओऽ रजिस्टरो भऽ सकैछ, पुस्तकोक रूपमे भऽ सकैछ, हैन्डनोटोक रूपमे भऽ सकैछ। सरकारी रजिस्ट्री ऑफिसमे रजिस्टर रहैछ। हाटपर मवेशीक बिक्री भेलापर विक्रीनामा लिखल जाइछ। एकर निदान ''याज्ञवल्क्य'' साक्ष्य प्रकरणमे स्पष्ट कयने छथि जे बेचनिहार, खरीददार आ साक्षी सभक पूर्ण पता रहै जैसँ भविष्यमे कोनो तरहक विवाद नहि उठै।

ई अभिलेख (रेकर्ड) वस्तु विक्रयोमे तथा दानमे सेहो राखल जाय। ई तँ कन्यादान प्रकरणमे वर-कन्या दुनूक वंशक पूर्ण सपिण्डक अभिलेख जाहिमे लिखल जाय से भेल पञ्जी आ ओहि पञ्जीमे जे वर-कन्या सपिण्डक अभ्यनाट नहि छथि से लिखनिहार पञ्जीकार कहवैत छथि।

एहि स्थितिमे ईहो ज्ञात होबक चाही जे पञ्जी प्रथा कहियासँ चलल, कियैक चलल?

ई प्रथा हरिसिंह देवक समयसँ प्रचलित भेल अछि। कियैक आरम्भ भेल से कथा स्व. पञ्जीकारे मुहसँ सुनल अछि, जे निम्न थिक।

पञ्जी प्रबन्धक आरम्भक बीज- एक ब्राह्मणी रहथि। ओऽ जाहि गाममे रहथि ओऽ ब्राह्मण बहुल गाम छल। लोक कि पुरुष वा कि स्त्री बिनु पूजा-पाठ केने भोजन नहि करथि। ओहि गामक एक पोखरिपर एक शिवमन्दिर छल। उक्त ब्राह्मणीक नियम छल जे जाऽ धरि उक्त शिव-मन्दिरक महादेवक पूजा नहि करी ताऽ धरि जलग्रहण नहि करी। ई शिव पूजार्थ मन्दिर गेली ओहि समय एक चाण्डाल सेहो पूजार्थ गेल रहए। हिनका देखि हिनकासँ दुराचरणक आग्रह कएलक। ई परम पतिव्रता छलीह। ओकरा दुत्कारैत कहलनि जे ई मन्दिर थिकैक तू केहेन पापी छैं, जो भाग नहि तँ तोहर भला नहि हेतौ। ई कहिते छलीह की शिवलिङ्गसँ एक सर्प फुफकार करैत अवैत ई चाण्डाल भागल।

संयोगवश बाहरसँ एक ब्राह्मणी, ओहि दुनूक वार्तालाप सुनिते छलीह। गामपर आवि मिथ्या प्रचार ओहि चाण्डालक संग कऽ देलनि। गामक लोक हिनका बजाय कहलनि जे अहाँकैं प्रायश्चित करए पड़त। एहि लेल कि अहाँ चण्डालक सङ्गम कएल। ई कहि उठलीह जे के ई कहलक, हमरा तँ ओकरासँ स्पर्शो नहि भेल अछि। मुदा लोककैं विश्वास नहि भेल। प्रायश्चित लिखल गेल (यदीयं चाण्डालगामिनी तदा अग्निस्तापं करोतु) ई लिखि हुनक दहिन हाथपर एक पिपरक पात राखि आ तैपर लह-लहानि आगि राखल गेल। ई पाकि गेलीह। तखन हिनका ग्राम

निष्कासनक दण्ड देल गेल। कनैत-खिजैत लखिमा ठकुराइन नामक पण्डिताकेँ सब बात कहलनि। श्रीमती ठकुराइन प्रायश्चित्त लिखनिहार पण्डितकेँ बजाय कहल जे प्रायश्चित्त गलत लिखल गेल। हम प्रायश्चित्त लिखब। तखन ठकुराइन लिखल जे "यदीयं पतिभिन्न चाण्डाल गामिनी तदा अग्निस्तापं करोतु"। ई वाक्य पूर्ववत् दहिन हाथक पिपरक पातपर राखल गेल तँ ई नहि पकलीह। तखन ई वार्ता महाराज हरिसिंहदेवक ओतय गेल।

तखन उक्त महाराज पण्डित मण्डलीकेँ आमन्त्रित कऽ पुछलनि जे उक्त स्त्रीक पति चण्डाल कोना? तखन विद्वतमण्डली उक्त स्त्रीक पतिक विवाहक शास्त्रानुकूल विचारि देखलनि तँ हुनक विवाह अनधिकृत कन्यासँ भेल तँ हिनकर पति चण्डाल भेलाह। एकर बाद महाराजक आदेशसँ मैथिल ब्राह्मण लोकनिक विवाह पञ्जी बनल।

मैथिल ब्राह्मणमे १६ गोत्रक ब्राह्मण छथि। एकर बाद गाँव-गाँवमे उक्त गोत्रान्तर्गत जे जे लोक छलाह तनिका-तनिका गामक नाम देल गेल एवं मूल कहौलक। पञ्जी मूलक अनुसार बनल, गोत्रक अनुसार नहि। एक गोत्रमे अनेक मूल अछि। गोत्रक नामपर पञ्जी बनैत तँ गामक पता नहि लगैत।

हमर मतसँ पञ्जी-प्रबंध धर्मशास्त्रक अंग थिक। तैं एकर लिखनिहार, अभिलेख (रेकर्ड) रखनिहार एवं एक पढ़निहार व्यक्ति पञ्जीकार (रजिस्ट्रार वा धर्मशास्त्री) थिकाह। कलियुगानुकूल पूर्व समय जेकाँ पञ्जीकारक परामर्श बिनु लेनहुँ विवाहक निर्णय कऽ कन्यादान कऽ लैत छथि जे परम अनुचित थिक।

जे पञ्जीकार हमरा लोकनिक लोकान्तर प्राप्त पूर्व पुरुषक अभिलेख (रेकर्ड) राखि आ वैह विद्या पढ़ि अपन जीवनयापन करैत छथि हुनक आर्थिक स्रोत एक मात्र ईएह जे हमरा लोकनिक सन्तान (वर वा कन्याक) जखन समय आओत तखन हुनक परामर्श शुल्क दऽ ग्रहण करी। से वर्षमे कतेक होइछ। यदि ईएह रास्ता रहत तँ ई विद्या लुप्त भऽ जायत।

एहि पञ्जीक मूल्य सरकारोक न्यायालयमे कम नहि छैक जेकर निम्नांकित एक उदाहरण देखू-

उदाहरण- एक राजपरिवार वंशविहीन भऽ लुप्त भऽ गेल। हुनक सब सम्पत्तिमे सँ किछु सम्पत्ति महाराज दरभंगाकेँ भेल आ किछु सम्पत्ति बनैलीक राजामृत राजपरिवारक उत्तराधिकारीसँ कीनि लेल।

एकर बाद महाराज दरभंगा न्यायालय जाय बनैली राज्यपर ई कहि जे ओऽ (वनैली राज्य) अनधिकृत किनने छथि। मोकदमा बहुतो दिन चलल। दुनू पक्षसँ दिग्गज वकील लोकनि छलाह। उत्तराधिकारक हेतु दुनू पक्षकेँ ई पञ्जी-प्रबन्ध मान्य भेल। जाहिमे बनैली राज्यक पञ्जीकारक रूपमे उक्त पञ्जीकार जनिक विषयमे ई लेख लिखल जाऽ रहल अछि, हिनक पूज्य स्व.पिता तथा ई, दुनू गोटें मोकदमाक बहसक लेल नियुक्त भऽ पञ्जी-प्रबन्ध पुस्तकक अभिलेख न्यायालयक जजकेँ देखओलनि। एकर बाद बनैली राज्य "डिग्री" पओलक त्तथा ई दुनू पिता-पुत्रक मान्य सम्मान कयलक।

एहिसँ सिद्ध भेल जे उक्त पञ्जीकारक पञ्जी सुरक्षित रहि पञ्जीकारक योग्यतोकेँ सिद्ध कएलक।

हिनक निर्लोभताक वर्णन सेहो देखू:-

एक राजदरबारमे कन्यादान उपस्थित छल। ताहिमे परामर्श (सिद्धान्त)क हेतु अनेक पञ्जीकार बजाओल गेल रहथि ताहिमे ईहो रहथि। राजदरबारक बात रहैक। राजाकेँ अपन कन्याक हेतु ई वर पसिन्द रहथिन। ई पञ्जीकार अन्य पञ्जीकारसँ वार्तालापमे कहलथिन जे औ पञ्जीकारजी! ऐ वरक अधिकार तँ नहि होइत छैक। ओऽ उत्तर देलथिन जे अहाँ बताह भेलहुँ हैं। राजाक बात थिकैक। राजाकेँ काज पसिन्द छनि। एहिमे अरङ्गा नहि लगबियौक। नीक पारश्रमिक भेटत। ई मोने-मोन विचारलन्हि जे ऐ पापक भागी (रुपैय्याक लोभमे पड़ि) हम कियैक होउ। किछु कालक बाद बाह्यभूमि (पैखाना) जेबाक बहाना बनाय ओतयसँ भागि अयलाह।

हिनक नैष्ठिकता सेहो तेहने छल। सब दिन स्नानोत्तर सन्ध्या, तर्पण, गायत्री जप, शालिग्रामक पूजा बिनु कएने विष्णु भगवानक चरणोदक तथा तुलसीपात बिनु खएने! अन्न-जल नहि करैत छलाह।

एकर अतिरिक्त कार्तिक मास जखन अबैक तखन भरि मास धात्रीयैक गाछतर हविष्यान्न भोजन करथि। ऐ सँ हुनक पूर्ण नैष्ठिकताक पता चलैत अछि।

नरेश मोहन झा

तुलसिया, किशनगंज

विद्वद्वरेण्य पञ्जीकार मोदानन्द झा

वर्ष १९५४-५५क वार्ता थीक। गृष्मावकाश छल। गामहिं छलहुँ। एक दिन वेरू प्रहर मे दरवज्जहिपर छलहुँ। एक व्यक्ति, अत्यन्त गौरवर्ण, मध्यम ऊँचाई, देदीप्यमान ललाट, प्रशस्त काया, चलबाक कारणँ ललौंछ मुखमण्डल, पैघ-पैघ आँखि, उपस्थित भेलाह। देखितहिं बुझबामे आएल जे कोनो महापुरुष अएलाह अछि। हमर पिता पं. लीलमोहन झा सेहो दलानेपर छलाह। ओऽ परम आह्लादित भए उठि कऽ ठाढ़ भेलाह। झटकि कऽ अरियाति अनलखिन्ह। हमरा सभ जतेक नवयुवक रही- सभकँ कहलन्हि- प्रणाम करहुन्ह। हमरो लोकनि उल्लसित एवं अनुशासित भए प्रणाम कएलियन्हि। बाल्टीमे जल, जलचौकी ओऽ अढ़िया आनल गेल। हुनकासँ पए धोएबाक आग्रह कएल गेलन्हि। हमर पिता जे परोपट्टाक श्रेष्ठ समादृत व्यक्ति छलाह- स्वयं लोटामे जल लए हुनकर पएर धोअय लगलखिन्ह। पुनः अंगपोछासँ पएर पोछि पलंगपर बिछाओल साफ सुन्दर विछाओनपर बैसेलखिन्ह। आ हुनक पएर धोयल जलसँ समस्त घर-आङनमे छिड़काव भेल। एहि बीच सरवत आएल- पान आएल। घरक सभ सदस्यमे एक अद्भुत उल्लास-जेना कोनो इष्टदेव आबि गेल होथि। ओहि बैसारमे तँ बहुत काल धरि कुशलादिक वार्ता होइत रहल। संध्याकाल धरि तँ हमर दरवज्जापर गाम भरिक ब्राह्मणक समूहक समूह उपस्थित होमऽ लागल। ओहि मध्य हमर पिता परिचय करौलन्हि। कहलन्हि- ई थिकाह पंजीकार प्रवर श्री मोदानन्द झा जी लब्ध धौत, शिवनगर, पूर्णियाँ निवासी। हमरा लोकनिक वंश रक्षक। हिनकहिं प्रतापे हमरा लोकनि अपन कुल ओऽ जातिक रक्षा कऽ पबैत छी। हिनक पिता पञ्जीशास्त्र मूर्धन्य पञ्जीकार भिखिया झा बड़ पैघ विद्वान् ओऽ सदाचार पालक। ओहि योग्य पिताक यशस्वी पुत्र छथि पञ्जीकार प्रवर मोदानन्द बाबू। नाम सुनितहिं अकचकयलहुँ। हम पूर्णियाँ कॉलेजक जखन छात्र रही तँ समस्त कुटुम्ब वर्ग बिष्णुपुर गामक मित्रवर्ग जे नवरतन पूर्णियाँमे रहैत छलाह तनिकासँ हिनक नाम बड़ श्रद्धापूर्वक उच्चरित होएत सुनने छलहुँ। अहि साक्षात्कार भेल सन्ता बुझि पड़ल जे जे किछु हिनकर मादे सुनने छलहुँ से बड़ कम छल। निश्चय ई व्यक्ति परम आदरणीय छथि। सांध्यकालीन बैसारमे गामक सभ श्रेष्ठ व्यक्ति अपन-अपन वंशक नवजन्मोत्पत्तिक विवरण लिखबैत गेलखिन्ह। पञ्जीकारजी तत्परतापूर्वक सभक परिचय बड़ मनोयोगसँ लिखैत रहलाह। तखन हमरा बुझाएल जे कोना कऽ हमरा लोकनिक वंश परिचय पछिला हजार वर्षसँ साङ्गो-पाङ्ग उपलब्ध रहल अछि। हमर गाम पञ्जीकार गामसँ १०० कि.मी.सँ अधिके पूर्वमे अवस्थित अछि। यातायातक कोनो सम्यक व्यवस्था पूर्वमे नहि रहल होएतैक। नाना प्रकारक असुविधाक सामना करैत एतैक भू-भागमे पसरल मैथिल ब्राह्मणक यावतो परिचय संग्रहित करब, सुरक्षित राखब आ बेर पड़लापर उपस्थित करब अत्यन्त दुःसाध्य कार्य। यात्रा ओ परिस्थिति जन्य कष्टक थोड़ेको अनुभव नहिं कऽ कें अपन कर्तव्येक प्रधानता दैत निःस्वार्थ भावसँ धर्मशास्त्रक रक्षामे तत्पर एहि इतिहासक संरक्षण सन पुनीत कार्य करैत रहब हिनकहि सन व्यक्तिसँ संभव। प्रातः काल पूज्य पितासँ एकान्तमे पुछलियन्हि जे एतेक कष्ट उठा कऽ परिचय संग्रह करबाक प्रयोजन की? बुझौलन्हि जे अपना लोकनि जे सनातन धर्मावलम्बी से सभटा कार्य मनु, याज्ञवल्क्य, शतपथ, शंख इत्यादि महान् ऋषि लोकनिक देल व्यवस्थापर चलैत छी। मनु विवाहक सन्दर्भमे कहने छथि जे कोनो कन्या ओ वरक विवाह स्वजन, सगोत्र, सपिण्ड ओ समान प्रवरमे नहि हो। एहि हेतु आवश्यक अछि जे सपिण्ड्य निवृत्तिक ज्ञान हो। ताहि हेतु पुरुषाक विवाहादिक विवरण सम्पूर्णतः उपलब्ध हो। एहि धर्मक रक्षा तँ विन पञ्जीकारहिं सम्भव नहि। अन्यथा वर्णसंकरक प्रधानता होएत ओ जातीय रक्षा नहिं होएत। पञ्जीकारक नहिं रहने वंशक इतिहासक ज्ञान नष्ट भए जाएत।

विश्वास जमि गेल। हुनका प्रति मनमे जे आस्था छल से चतुर्गुण भऽ गेल। तकर बाद जखन कखनो ओऽ अएलाह हम ओहि देवत्व भावँ हुनक सम्मान कएल। ओहो पितृवत स्नेह देलन्हि। ओऽ अपन व्यक्तित्वक धनी छलाह। सदाचार पालनमे तत्पर। जखन कखनो हुनकर गामपर जएबाक अवसर भेटल- गमौलहुँ नहि। कतेको बेर हुनकर गाम शिवनगर गेल छी। हुनक ओऽ साफ परिछिन्न दलान। रमनगर फुलवाडी। पञ्जीकारजीक दैनिक चर्या कलम ओऽ खुरपीक संग सम्पन्न होइत छलन्हि। कर्मिष्ठ पुरुषः।



नवेन्दु कुमार झा

समाचार वाचक सह अनुवादक (मैथिली), प्रादेशिक समाचार एकांश, आकाशवाणी, पटना

कोसी क्षेत्रमे आएल भीषण बाढ़िसँ ई क्षेत्र तबाह भऽ गेल अछि। वर्तमान परिदृश्य महान कथाकार फणीश्वर नाथ रेणुक ''परती परिकथा'' दिस लोक ध्यान खींचि रहल अछि। कोसीक मारि सहैत कतेको लाखक आबादीकेँ ओहि दिन राहत भेटल छल जखन कि बिहारक शोक कहल जाएवाला नदी कोसीपर तटबंधक निर्माण भेल छल। आशा जागल जे ई क्षेत्र आब सोना उगलत। ई भेबो कएल। मुदा १८ अगस्त २००८ केँ पूरा परिदृश्य बदलि गेल। सरकारक लापरवाही चाहे ओ केन्द्र सरकारक हो कि राज्य सरकारक ई क्षेत्र एक बेर फेरसँ बालूक ढेर बनि गेल। जे नदी एहि क्षेत्रकेँ बसौलक ओहि नदीक कारण एक बेर फेर क्षेत्र विरान भऽ गेल। विकास दौरसँ ई क्षेत्र चलि गेल पचास वर्ष पाछाँ।

एशिया क्षेत्रमे सभसँ उपजाऊ मानल जाएबला एहि क्षेत्रमे एखन बाँचल अछि तँ ओऽ छथि अपन घर-घरारी छोड़ि शरणार्थी बनल बाढ़ि पीड़ित आ पसरि रहल बिमारी आ बाँचल अछि जिनगी कटबाक आशा। मलेरिया सन महामारीक लेल बदनाम एहि क्षेत्रमे किछु वर्षसँ जे हरियरी देखाइत छल ताहिपर पानि पसरि गेल। गहूम, मकई आ धानक लहराइत खेत देखबाक चिन्तामे लागल अछि लोक। खेतीपर निर्भर एहि क्षेत्रक अर्थव्यवस्थापर जे घाव भेल अछि से कतेक दिनमे भरत से निश्चित नहि बुझि पड़ैत अछि।

ओना तँ एहि क्षेत्रक एकटा पैघ आबादी एखनो प्रवासी छल मुदा जे एखन छलाह तिनको ई बाढ़ि प्रवासी बनबापर विवश कएलक अछि। खेतीक बाद जाहिसँ एहि ठामक अर्थव्यवस्था चलैत छल ओ अछि मनीआर्डर। मनीआर्डरक भरोसे लोक कहुना जिनगी कटैत छल। आब ओकरो अपन जिनगी पहाड़ लागि रहल अछि। राहत शिविर आ सुरक्षित स्थानपर शरण लेने एकटा पैघ आबादीकेँ अपन भविष्य प्रवसी बनबामे बुझि पड़ैत अछि। ओऽ आब बिचारि लेने अछि जे घर गृहस्थीकेँ पटरीपर आनब बिनु प्रवासी बनने संभव नहि अछि। कोसी क्षेत्रक कतेको रेलवे-स्टेशनपर लगातार बढ़ि रहल भीड़ एकर प्रमाण अछि। कतेको माय-बाप-भाइ-बहिन अपन-अपन परिजनकेँ घर-घरारीक चिन्ता नहि करबाक आशा देआ प्रदेशक लेल बिदा कऽ रहल छथि। किएक तँ जिनगी कटबाक एकमात्र रास्ता ओकरा मनीआर्डर बुझि पड़ैत अछि। एहि ठाम तँ सभ किछु उजड़ि गेल अछि। आब एकमात्र आशा प्रवासी बनि रहल परिजनक मनीआर्डर मात्र अछि जाहिसँ फेरसँ घर गृहस्थीकेँ पटरीपर आनल जाऽ सकैत अछि। ओकरा एहि बातक कोनो चिन्ता नहि अछि जे देशक कतेको भागमे बिहारी सभक विरुद्ध गतिविधि चलाओल जा रहल अछि। ओऽ तँ आब ई मानि लेलक अछि जे एहि ठाम एखन कोन जिन्दा छी जे प्रदेशमे कोनो अनहोनी घटनाक शिकार भऽ जाएब। ई एहि बातक प्रमाण अछि जे पेट आगिक सोझाँ प्रदेशमे होमए वाला कोनो तरहक अनहोनीक कोनो मोल नहि अछि। अपन आँखिसँ कोसीक धारमे बहैत अपन लोक, आर-परोस आ परिचितक लहाससँ एहि क्षेत्रक लोक हृदय पाथर भऽ गेल अछि। बाँचल जिनगी कटबाक लेल मृत्युक सामना करएसँ आब कोनो घबराहटि ओकरा नहि छै।

कोसीक तटबन्ध टुटलाक बाद आब सरकारी स्तरपर जाँच, कार्वाई आ आयोगक गठन आदि खानापूर्ति भऽ रहल अछि आ होएत एहिसँ ओकरा कोनो माने मतलब नहि रहि गेल छै। आब चिन्ता छै तँ बस अपन घर-घरारी बसेबाक आ अपन परिवारक भविष्य रक्षा करबाक। बाढ़ि पीड़ितक लहासपर राजनीति, राहत आ बचाव काजक नामपर सरकारी खजाना लुटाएत, वोटक लेल गोलबन्दी होएत मुदा अगिला साल फेर कोसीक तांडव नहि होएत आ राजनेता, अधिकारी आ सरकार अपन जिम्मेदारी निर्वाह करताह एकर कोनो गारंटी नहि अछि।

अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्व

मिथिलांचलक सांस्कृतिक धरोहर महाकवि विद्यापतिक जयन्तीक प्रतीक्षा मिथिलावासी वर्ष भरि करैत छथि। कार्तिक धवल त्रयोदशीकेँ प्रति वर्ष मनाओल जाएवला एहि वार्षिक उत्सवमे

पूरा मनोयोगक संग मिथिलावासी शामिल होइत छथि। एहि क्रममे राजधानी पटनामे आयोजित होमएवाला विद्यापति स्मृति पर्वक प्रतीक्षा सेहो राजधानीक मिथिलावासीकेँ रहैत अछि। मुदा एहि वर्ष एहि आयोजनपर जेना ग्रहण लागि गेल अछि। बढ़ैत संसाधनक बावजूद आयोजक एहि सांस्कृतिक उत्सवक स्वरूप वर्ष-दर-वर्ष छोट कएने जा रहल छथि। ई आयोजन आब इतिहास बनबाक द्वारपर ठाढ़ अछि। पछिला चौबन वर्षसँ प्रति वर्ष आयोजित होमएवाला त्रिदिवसीय कार्यक्रम एहि वर्ष एक दिवसीय होएबाक संवाद अछि। पटनाक हार्डिंग पार्कसँ सचिवालय मैदान आ मिलर हाई स्कूल मैदान होइत ई आयोजन जखन भारत स्काउट मैदान धरि आएल ता धरि ई उम्मीद छल जे ई समारोह अपन पुरान गौरवकेँ फेरसँ प्राप्त करत मुदा जखन एहि समारोहक स्थान परिवर्तित कऽ कापरेटिव फेडरेशन परिसर आबि गेल तऽ स्पष्ट भऽ गेल जे आब आयोजक मात्र खानापूर्ति करबाक लेल एकर आयोजन करैत छथि। आ एहि बेरक सूचनापर गौर करी तऽ स्पष्ट होइत अछि जे आब एहि समारोहक आयोजन मात्र औपचारिकता रहि गेल अछि। कोसी क्षेत्रमे आएल बाढ़ि आयोजक सभकेँ एकटा बहाना बनि गेल अछि आ एहि बहाने एहि समारोहक गौरवपूर्ण इतिहासकेँ समाप्त करबापर लागल छथि।

बाढ़ि मिथिलांचलक नियति अछि। शायदे कोनो वर्ष होएत जखन कि एहि प्राकृतिक आपदाक सामना नहि होइत अछि मुदा एहि बेर कोसीमे आएल बाढ़िसँ आयोजक संस्था चेतना समितिक कर्ता धर्ताकेँ अपन गाम-घर दहाएल तँ हुनक दर्द जागि उठल आ कार्यक्रमक समय-सीमा घटा देलनि। दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी आदि मिथिलांचलक कतेको क्षेत्र सभ साल बाढ़िक मारि झेलैत अछि मुदा बिना रुकावट सभ साल तीन दिवसीय विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन होइत रहल अछि। ओहि क्षेत्र सभक चिन्ता समितिकेँ शायद नहि रहैत छल। ज्यो बाढ़िक समस्याक प्रति एतेक गंभीर छलाह तँ पूर्वमे कतेको बेर आएल बाढ़िक बाद एहि आयोजनकेँ छोट कएल जा सकैत छल से आइ धरि नहि भेल। ज्यो अहू बेर आयोजक एहि समस्याक प्रति गंभीर रहितथि तँ एहि समारोहक माध्यमसँ राजधानीक मिथिलावासीक सहयोग बाढ़ि पीड़ितक मदति लेल लऽ सकैत छलाह। एहन रचनात्मक डेग संस्था उठाएत से संस्थाक कर्ता-धर्ताक आदति नहि रहलनि अछि। एहिसँ समितिकेँ सामूहिक श्रेय भेटैत से तऽ संस्थाक महानुभाव लोकनिकेँ कतहु मंजूर नहि छलनि। ओ तँ व्यक्तिगत श्रेय लेबापर विश्वास करैत छथि।

दरअसल चेतना समितिक जुझारू पदाधिकारी सभमे आब काज करबाक चेतना नहि बचल अछि। नहि तँ ओ एहिपर जरूर चिन्तन करितथि जे एहि समारोहमे प्रतिवर्ष दर्शकक संख्या किए कम भऽ रहल अछि। जखन संस्थाक स्तरसँ दर्शककेँ जोड़बाक कोनो प्रयास नहि भऽ रहल अछि तँ एहिमे दर्शक दिससँ प्रयास होएबाक बात सोचब निरर्थक अछि। ओना आयोजक कतेको वर्षसँ एहि समारोहकेँ विराम देबाक प्रयासमे छथि। कखनो चुनावक बहाना बना तँ कखनो कानून व्यवस्थाक बहाने एहि कार्यक्रमक स्वरूपकेँ छोट क देलनि। एहि वर्ष तँ कोसीक विभीषिका तँ मानू हुनक सभक मनोनुकूल वातावरण दऽ देलक। प्रारम्भमे त्रिदिवसीय आयोजनक तैयारीक बाद एकाएक एकरा एक दिवसीय करब मात्र औपचारिकता लागि रहल अछि जाहिसँ कि जे किछु मैथिली प्रेमी छथि अगिला वर्शसँ अपनहि एहि कार्यक्रमसँ कटि जाथि आ दर्शकक अनुपस्थितिक बहाना बना कार्यक्रमकेँ बंद कऽ देल जाए। ई विडम्बना कहल जा सकैत अछि जे पटनामे शुरू भेल विद्यापति स्मृति पर्वक देखा-देखी प्रदेश आ देशक आन क्षेत्रमे वर्ष दर वर्ष पूरा उत्साहक संग आयोजित भऽ रहल अछि आ एहि ठामक आयोजनक अस्तित्वपर संकट आबि गेल अछि। वास्तवमे चेतना समिति आब किछु फोटोजेनिक चेहरा सभक अखाड़ा बनि गेल अछि जे एकर कार्यालय विद्यापति भवनकेँ अपन दलान बुझि अपनहिमे कुश्ती करैत रहैत छथि। कोसीक विभीषिकाक दर्द मठाधीश लोकनिक संग-संग सभ मिथिलावासीकेँ अछि। कोसीक बाढ़ि पीड़ितक दर्द एहि आयोजन माध्यमसँ सभ मिथिलावासीकेँ जोड़ि सामूहिक रूपेँ बाटल जा सकैत छल। ज्यो से नहि तऽ बाढ़ि पीड़ितक मदति लेल प्रदेश आ देशक कतेको क्षेत्रमे सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमक कएल गेल आयोजन व्यर्थ छल।

मिथिलाक कतेको महान विभूति सभक प्रयासँ शुरू भेल राजधानीक ई सांस्कृतिक उत्सव पूरा देशमे एकटा महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। एहि आयोजनकेँ इतिहास बनेबाक प्रयास करब चिन्ताक विषय अछि। पहिने कार्यक्रमक स्थान छोट करब आ आब एकर समय सीमा घटएलासँ राजधानीक मिथिलावासी मर्माहत छथि। एकरे परिणाम अछि जे छोटे स्तरपर सही राजधानीसँ सटल दानापुर आ राजीवनगरमे किछु वर्षसँ आयोजित भऽ रहल विद्यापति पर्व आब लोकप्रिय भऽ रहल अछि। आब राजधानीक मिथिलावासी चेतना समितिक बदला एहि दुनू स्थानपर होमएवाला आयोजनक प्रतीक्षा करैत छथि। शायद अहूसँ चेतना समिति सचेत होएत आ विद्यापति स्मृति पर्वक अपन पुरान गौरवकेँ पुनर्स्थापित करबाक प्रयास करत।



नीलिमा

भानस भात

मखानक खीर

सामग्री- दूध-१ १/२ किलो, चिन्नी-१०० ग्राम, मखान कुटल- १०० ग्राम, इलाइची पाउडर- स्वाद अनुसार, काजू-१० टा, किशमिश-२०टा

विधि-मखानक पाउडर (कनी दरदरा)क पहिने १/२ किलो ठंढ़ा दूधमे घोरि लिअ, शेष दूध कें खौला लिअ। आब गर्म दूधमे ई घोड़ल मखानक मिश्रण मिला दियौक आर करौछसँ लगातार चलबैत रहियौक जाहिसँ मिश्रण पेनीमे बैसय नहि। जखन खौलय लागय तँ ओहिमे चिन्नी, काजू, किशमिश सभ दऽ कय अन्तिममे इलाइची पाउडर खसाऽ कऽ मिलाऽ कऽ उताड़ि लिअ। मखानक खीर तैयार अछि।

नोट:- मखानकँ सुखलो भुजि कऽ कुटि सकैत छी वा घीमे सेहो भूजि कए कूटि कऽ पाउडर बना सकैत छी।

मेथीक परोठा

सामग्री:-आटा-२५० ग्राम, बेसन-१०० ग्राम, रिफाइन-२५० ग्राम, मेंथी साग-५०० ग्राम, हरिअर मेरचाइ-४टा, आदी- १ इन्चक टुकड़ा, धनी-पात आ नोन-अंदाजसँ।

विधि- मेंथीकँ साफ कऽ कए धोऽ लिअ। मेंहीसँ काटि कए लोहियामे कनी तेल दऽ कय मेंथी पात खसा दियौक। कनी भाप लागि जाय तँ ओहिमे काटल हरियर मेरचाइ, आदी घसल, धनी-पात काटि कय आ नून मिला कय एहि मिश्रणकँ बेसन फेँटल आँटामे मिला दियौक। आँटाकँ कनेक कड़ा कऽ सानि लिअ। पराठा बेल कए तवापर कम आँचपर रिफाइन लगा कए सेकि लिअ। खास्ता मेथीक पराठा तैयार भऽ गेल।

नोट:- अहाँ काँच मेंथी पात कऽ मेंही काटि कऽ, पियाजु सभ मिला कऽ सेहो आँटा सानि सकैत छी।

मुगलई कोबी

सामग्री:-कोबीक टुकड़ा-१/२ किलो, पियाजु महीन काटल-१कप टमाटर, कद्दूकस कएल-१ कप, हरियर मेरचाइ-आदीक पेस्ट-१ चम्मच, नून स्वादानुसार, लाल मिरचाइक पाउडर-१/२ चम्मच, धनियाँ पाउडर-१ चम्मच, हरदि- १ चम्मच, गर्म मसल्ला-१/२ चम्मच, अमचूर-१/२ चम्मच, जीर-१/२ चम्मच, मलाई-१/२ चम्मच, टोमेटो सॉस- १ चम्मच, रिफाइन तेल-२ चम्मच।

विधि:- कोबीक टुकड़ा धोऽ कऽ चालनिमे आधा घंटाक लेल राखि दियौक, जाहिसँ एकर पानि निकलि जाय। फेर लोहियामे तेल गर्म कऽ कोबीकँ हल्का गुलाबी फ्राइ कऽ लिअ आर एकटा पेपरपर निकालि लिअ, जाहिसँ तेल निकलि जाय। एक पैनमे तेल ढारू। ओहिमे जीर दऽ कए पियाज आ आदीक पेस्ट दऽ कय भुजि दियौक। आब सभ टा मसल्ला दऽ कय कनी देरमे आर भुजियौक। मलाएकँ मैश कऽ दऽ दियौक, सॉसकँ सेहो दऽ दियौक आर नीकसँ मिला दियौक। आब एहिमे कोबीक टुकड़ा दऽ कय चम्मचसँ मिला दियौक। फेर एक बाउलमे ओकरा निकालि कऽ ऊपरसँ गरम मसल्ला आर धनियाँ (धनी) पात सजा दियौक आर पड़सि लिअ।

केसर पुलाव

सामग्री:- २ कप बासमती चावल, १ कप मटरक दाना, १ टुकड़ा दालचीनी, १ बड़ी इलायची, ४ टा लौंग, ४ कप पानि, २ टेबुल स्पून घी, १/२ केसर, २ टीस्पून गरम पानि, एकटा पियाजु लम्बा-लम्बा काटल, १ टी स्पून जीर, २ टी स्पून नून।

विधि:-केसरक गरम पानिमे फुलइ लेल दऽ दियौक। चाउरकँ नीकसँ धोऽ कए फुलइ लेल दऽ दियौक। कुकरमे घी गरम कऽ कए ओहिमे प्याज दऽ कए ब्राउन होय धरि फ्राइ कऽ कए प्लेटमे निकालि लिअ। आब एहि गरम घीमे दालचीनी, जीर, इलाइची, लौंग आर नून दऽ दियौक। मटरकँ दऽ कए कनी चलाऊ आर चाउरकँ पानिसँ निकालि अहीमे दऽ दियौक। ऊपरसँ पियाजु आ केसर सेहो दऽ दियौक। ४ कप पानि दऽ कय एक सीटी आबए तक पकाऊ। गरम-गरम केसर पुलाव, रायता वा कोनो रसगर तरकारी संग खाऊ।

मूरक परोठा

सामग्री:-आँटा-२५० ग्राम, बेसन-१०० ग्राम, मूर-२५० ग्राम, रिफाइन तेल-१०० ग्राम, जमाइन-मंगरैल-अंदाजसँ। आदी-१ इन्च टुकड़ा, धनी-पात-दू डाँट, हरियर मेरचाइ ४ टा, नून- अंदाजसँ।

विधि:- मूरकँ धोऽ कऽ कद्दूकस कऽ लिअ। लोहियामे कनी तेल दऽ दियौक। गर्म भेलापर ओहिमे मूर आ सभ मसल्ला खसा दियौक आ ढ़क्कनसँ झाँपि दियौक। कनी भाप आबि जाएत, ओकरा निकालि कऽ ठंढ़ा हेबय दियौक। आब एहि मिश्रणमे नून मिला कय बेसन मिलल आँटामे मिला कऽ सानि लिअ। गोल-गोल पातर-पातर बेल कऽ ताबापर दुनू दिस रिफाइन लगा कए सेकि लिअ। मूरक परोठा तैयार भऽ गेल।

मूरक परोठा बनेबाक एकटा आर विधि अछि, अहाँ मूलीक कद्दूकस कऽ कए ओहिमे सभ मसल्ला मिला लिअ। आब ओकड़ा गाड़ि कए एक दिस राखि लिअ। आब आँटाक गोलीमे थोड़े मूलीक मिश्रण लऽ कऽ नून मिला कऽ भरि लिअ आ बेल कऽ ताबापर रिफाइन दऽ कऽ सेकि लिअ।

नोट:-एहि तरहेँ काँच अनरनेबा आ बन्धा कोबीक परोठा सेहो बना सकैत छी।



निमिष झा

समाचार प्रमुख, हेडलाइंस एण्ड म्यूजिक एफ.एम., 97.2, ललितपुर, नेपाल

विद्यापति

कोनो साहित्यमे किछ साहित्यकारसभ एहन होइत छथि जिनकर जन्म कोनो घटनाक रूपमे होइत अछि आ ओहि घटनासँ सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य प्रभावित भऽ जाइत अछि। ओहन साहित्यकारक साहित्यिक व्यक्तित्व ओहि साहित्यक सर्वाङ्गीण विकासमे वरदानसिद्ध होइत अछि। ओहन साहित्यिक महापुरुष पूर्ववर्ती साहित्यिक परम्परा आदिक सम्यक अनुशीलन पश्चात अपन मान्यता एवम साहित्यिक योजना निर्दिष्ट करैत छथि। अपन कार्यसभक माध्यमसँ युगान्तकारी आ प्रभावशाली रेखा निर्माण कऽ अमरत्व प्राप्त करैत छथि।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे विद्यापति एकटा एहने अतुलनीय प्रतिभाक नाम अछि। सम्पूर्ण मैथिली साहित्य हुनकासँ प्रभावित अछि। हुनकर प्रभाव रेखाकेँ क्षीण करबाक साहित्यिक क्षमता भेल व्यक्ति मैथिली साहित्यक इतिहासमे अखन धरि किओ नहि अछि। विद्यापति मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कवि छथि। हुनकेमे मैथिली साहित्यक सम्पूर्ण गौरव आधारित अछि ।

इतिहासकार दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क शब्दमे विद्यापति आधुनिक भारतीय भाषाक प्रथम कवि छथि। ओ संस्कृत साहित्यक अभेद्य किलाकेँ दृढ़तापूर्वक तोड़ि भाषामे काव्य रचना करबाक साहस कयलनि। हुनकरे आदर्शसँ अनुप्रेरित भऽ शङ्करदेव, चण्डीदास, रामानन्द राय, कवीर, तुलसीदास, मीरावाई, सुरदास सनक महान स्रष्टासभ अपन भक्ति भावनाक माध्यमसँ अपन मातृ भाषाकेँ समृद्ध कयलनि।

मैथिली साहित्यमे विद्यापति युग ओतबे महत्वपूर्ण अछि जतबे अङ्ग्रेजी साहित्यमे शेक्सपियर युग, नेपाली साहित्यमे भानुभक्त युग, बङ्गालीमे रवीन्द्र युग तथा हिन्दीमे भारतेन्दु युग। विद्यापतिक रचनासभमे मिथिला पहिल बेर अपन वैशिष्टय भक्तिभावना, शृङ्गारिक सरसता एवम् मौलिक साङ्गीतिक लय प्रस्फुटित भेल आभाष कयलक अछि। ओकर बाद विद्यापतिक पदावलीसभ जनजनक स्वर बनि सकल तऽ मिथिलामे युगोसँ व्याप्त असमानताक अन्त करैत विद्यापतिक रचनासभ समान रूपसँ लोकस्वरक रूप ग्रहण कऽ सकल।

वास्तवमे विद्यापति युगद्रष्टा रहथि। ओ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिक लेल अथक प्रयास मात्र नहि कयलनि, तत्कालीन समयमे पतनोन्मुख मैथिल समाजक पुनर्संरचनाक लेल सेहो मद्दत पहुँचौलनि। विद्यापतिक प्रादुर्भावक समयमे भारतीय उपमहाद्वीपका प्रायः हरेक भागक सभ्यता आ संस्कृति सङकटपूर्ण अवस्थामे छल। मुसलमानी शासकसभक आतङक चरमोत्कर्षमे रहल ओहि समयमे मैथिल संस्कृतिक रक्षा आवश्यक भऽ गेल छल।

ओहन अवस्थामे विद्यापतिक आगमन मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक विकासक लेल महत्वपूर्ण वरदान सिद्ध भेल। एक दिस मुसलमानी शासकसभक आक्रमण आ दोसर दिस बौद्ध धर्मक बढ़ैत प्रभावक कारण समाजमे सिर्जित वैराग्यक मनस्थितिसँ आक्रान्त मैथिल सभ्यता आ संस्कृति अपन उन्नयनक रूपमे सेहो विद्यापतिकेँ प्राप्त कऽ अपन मौलिकता बचाबयमे सक्षम भेल।

विद्यापति अपन विविध रचनासभक माध्यमसँ सामाजिक पुनर्संगठनक प्रक्रियाकेँ बल देलनि। ओ समाजसँ पलायन भऽ रहल मैथिल युवासभकेँ समाज निर्माणक मूल धारामे प्रभावित करएबाक लेल अथक प्रयास सेहो कयलनि। हुनकर एहने प्रयासक उपज अछि शृङ्गारिक रचनासभ । मुसलमानसभक आक्रमणसँ पीडित आ पलायन भऽ रहल तत्कालीन मिथिलाक युवासभकेँ मुसलमान विरुद्ध प्रयोग कऽ मिथिलाक अस्तित्व रक्षा करबाक लेल विद्यापतिक ई रचनासभ सहयोगी प्रमाणित भेल ।

तत्कालीन समयक लेल विद्यापतिक अहि प्रकारक चातुर्यकेँ कुटनीतिक सफलताक रूपमे देखल जा सकैया ।

समाजमे व्याप्त असमानाता, कुरीति, अन्धविश्वास सहित विभिन्न विसङ्गतिसकेँ मानव प्रेम एवम भाषा उत्थानक भरमे विद्यापति अन्त करबाक काजमे सफल छथि ।

विद्यापतिक सम्पूर्ण रचनासभ शृङ्गार आ भक्ति रससँ ओतप्रोत अछि। कतेको विद्वानसभ विश्व साहित्यमे विद्यापतिसँ दोसर पैघ श्रृंगारिक कवि आन किओ नहि रहल कहैत छथि।

महाकवि विद्यापति तत्कालीन समाजमे प्रचलित संस्कृत, अवहट्ठ आ मैथिली भाषाक ज्ञाता छलथि। ई तीनु भाषामे प्राप्त रचनासभ अहि बातकेँ प्रमाणित करैत अछि।

यद्यपी विद्यापतिक जन्म तथा मृत्युक सम्बन्धमे विभिन्न विद्वानसभक विभिन्न मत अछि। तथापि मिथिला महाराज शिव सिंहसँ ओ दू वर्षक जेष्ठ रहथि। अहि तथ्यक आधार पर विद्वानसभ हुनकर जन्म तिथिकेँ आधिकारिक मानैत छथि। कवि चन्दा झा विद्यापतिद्वारा रचित पुरुष परीक्षाक आधार पर विद्यापति राजा शिव सिंहसँ दू वर्ष पैघ रहथि उल्लेख कयने छथि। जँ ई तथ्यकेँ मानल जायतऽ सन् १४०२ मे राज्यारोहणक समयमे राजा शिव सिंहक उमेर ५० वर्ष छल आ विद्यापति ५२ वर्षक रहथि। अहि आधार पर विद्यापतिक जन्म सन् १३५० मे भेल निश्चित अछि ।

डा.सुभद्र झा, प्रो. रमानाथ झा, पं. शशिनाथ झा आदि विद्वानसभ ई मतकेँ स्वीकार करैत छथि मुदा डा.उमेश मिश्र, डा.जयमन्त मिश्र सहितक विद्वानसभ विद्यापतिक जन्म सन् १३६० मे भेल कहैत छथि ।

अहिना विद्यापतिक मृत्यु प्रसङ्गमे सेहो एक मत नहि अछि। अपन मृत्युक सम्बन्धमे मृत्यु पूर्व विद्यापति स्वयंद्वारा रचित पद विद्यापतिक आयु अवसान कात्तिक धवल त्रयोदशी जानेकेँ तुलनात्मक रूपमे अन्य मत सभसँ अपेक्षाकृत युक्ति संगत मानल गेल अछि। मुदा अहिसँ वर्षक निरुपण नहि भेल अछि ।

विद्यापतिक जन्म भारतक बिहार राज्यक मधुवनी जिल्ला अन्तर्गत बिसफी गाममे भेल छल। ई मधुवनी दरभङ्गा रेलवे लाइनक कमतौल स्टेसन लग अवस्थित अछि। हिनक पिताक नाम गणपति ठाकुर आ माताक नाम गंगादेवी रहनि। हाल विद्यापतिक वंशजसभ सौराठमे रहैत छथि ।

विद्यापति वाल्यकारहिए कुशाग्र वुद्धिक अलौकिक प्रतिभाक रहथि। अपन विद्वान पिताक सम्पर्कमे ओ प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण कयलनि। मुदा औपचारिक रूपमे प्रकाण्ड विद्वान हरि मिश्रसँ शिक्षा ग्रहण कयलनि। तहिना प्रकाण्ड विद्वान पक्षधर मिश्र विद्यापतिक सहपाठी रहनि।

विद्यापति मैथिली साहित्यक धरोहर मात्र नहि भऽ संस्कृतक सेहो प्रकाण्ड विद्वान रहथि। ओ मैथिली आ अवहट्ठक अतिरिक्त संस्कृतमे सेहो अनेको रचना कयने रहथि।

हुनकर रचनासभकेँ तीन भागमे वर्गीकरण कयल जाइत अछि।

क) संस्कृत ग्रन्थ : भू परिक्रमा, पुरुष परीक्षा, शैवसर्वस्वसार, शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत, लिखनावली, गङ्गा वाक्यावली, विभाग्सार, दान वाक्यावली, गया पत्तलक, दुर्गाभक्ति तरङ्गिणी, मणिमञ्जरी, वर्षकृत्य व्यादिभक्ति तरङ्गिणी ।

ख) अवहट्ठ ग्रन्थ : कृतिलता, कृतिपताका

ग) मैथिली ग्रन्थ : गोरक्ष विजय महाकवि विद्यापति तीन भाषाक ज्ञाता रहथि। ओ दू दर्जनसँ बेसी ग्रन्थसभक रचना कयने छथि। हुनकर बहुतो कृति सभ अखन बजारमे उपलब्ध अछि। प्रस्तुत अछि विद्यापतिक ग्रन्थसभक संक्षिप्त विवरण

१) गंगावाक्यावली : अहि ग्रन्थमे गंगा नदी आ एकर तट पर होबय बला धार्मिक कार्य अर्थात कर्म काण्डक विषयमे विस्तृत जानकारी अछि। गंगा वाक्यावलीक रचना विद्यापति रानी विश्वास देवीक आज्ञासँ कयने रहथि। कृतिमे गंगा नदीक स्मरण, कीर्तन, गंगा तट पर प्राण विसर्जनक महात्म्य वर्णन अछि।

२) दानवाक्यावली : राजा नरसिंह दर्पनारायणक पत्नी रानी धीरमतीक आज्ञासँ ई ग्रन्थक रचना भेल अछि। अहिमे सभ प्रकारक दान विधि विधान विस्तार पूर्वक कयल गेल अछि।

३) वर्षकृत्य : अहि ग्रन्थमे वर्ष भरि होबयबला प्रत्येक पावनि तथा शुभ कार्यक विस्तृत विधान प्रस्तुत अछि। तहिना पूजा, अर्चना, व्रत, दान आदि नियमक सम्बन्धमे सेहो चर्चा कयल गेल अछि।

४) दुर्गाभक्तितरंगिणी : दुर्गाभक्तितरंगिणीकेँ दुर्गोत्सव पद्धतिक नामसँ सेहो जानल जाइत अछि। विद्यापति एकर रचना राजा भैरव सिंहक आज्ञासँ कयने रहथि। अहि ग्रन्थमे कालिका पुराण, देवी पुराण, भविष्य पुराण ब्रह्म पुराण, मार्कण्डेय तथा दुर्गा पूजाक पद्धति संग्रहित अछि।

५) शैवसर्वस्वसार : राजा पद्मम सिंहक पत्नी विश्वास देवीक आज्ञासँ रचित अहि ग्रन्थमे महाकवि विद्यापति भगवान शिवक पूजासँ सम्बन्धित सभ विधि विधानक वर्णन कयने छथि। अहि ग्रन्थकेँ शम्भुवाक्यावली सेहो कहल जाइत अछि ।

६) गयापत्तलक : गयापत्तलक ग्रन्थक रचना कोनो राजा या रानीक आदेशसँ नहि भेल अछि। अहि ग्रन्थक सम्बन्ध सामान्य जनतासँ अछि। गयामे

श्राद्ध एवम पिण्ड दान तथा गया जा कऽ पितृ ऋणसँ मुक्त होबाक महात्म्य ग्रन्थमे अछि।

७) विभागसार : विद्यापति विभागसारक रचना राजा नरसिंह देव दर्पनारायणक आदेशसँ कयलनि। अहिमे दानभागक संक्षिप्त मुदा सुन्दर आ आकर्षक विवेचन अछि। मिथिलामे तात्कालीन दायभाग आ उत्तराधिकार सम्बन्धी विधानक लेल ई प्रमाणिक ग्रन्थ मानल जाइत अछि।

८) लिखनावली : राजा शिवसिंह तिरोधान भेलाक बाद विद्यापति रजाबनौलीमे राजा पुरादित्यक आश्रममे अहि ग्रन्थक रचना कयलनि। ई ग्रन्थमे पत्राचार करबाक विधिकेँ स्पष्ट व्याख्या कयल गेल अछि। अपनासँ पैघ, छोट, समान तथा नियम व्यावहारपयोगी सहित चारि प्रकारक पत्रक उल्लेख अछि। ग्रन्थसँ मिथिलाक तात्कालीन सामाजिक आ सांस्कृतिक अवस्थाक परिचय भेटैत अछि ।

९) शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत संग्रह : शैवसर्वस्वसारक रचनाक बाद विद्यापति अहि ग्रन्थक रचना कयने रहथि। अहिमे शैवसर्वस्वसारक प्रमाणभूत पौराणिक वचनक संग्रह अछि ।

१०) व्याडिभक्तितरंगिणी : ई लघु ग्रन्थमे सर्पिणीक पूजाक वर्णन अछि। विभिन्न पौराणिक कथा सभ उल्लेख अछि।

११) द्वैनिर्णय : ई एक तन्त्र शास्त्रीय लघु ग्रन्थ अछि । जाहिमे तन्त्र शास्त्रक गुप्त चर्चा कयल गेल अछि । अहि ग्रन्थसँ विद्यापतिकेँ तन्त्रक सेहो विशद ज्ञान रहल प्रमाणित होइत अछि।

१२) पुरुषपरीक्षा : राजा शिव सिंहक निर्देशन पर रचित ई ग्रन्थकेँ विद्यापतिक उत्तम कोटिक ग्रन्थ मानल जाइत अछि। पुरुषपरीक्षामे वीर कथा, सुवुद्धि कथा, सुविद्य कथा आ पुरषार्थ कथा नामक चारि वर्गक पञ्चतन्त्रक शिक्षाप्रद कथा सभ समाविष्ट अछि। समाजशास्त्री, इतिहासकार, मानवशास्त्री, राजनीति शास्त्री सहित दर्शन एवम साहित्य विधाक व्यक्तिक लेल ई अपूर्व कृति अछि।

१३) भूपरिक्रमा : ई विद्यापतिक अत्यन्त प्रभावकारी ग्रन्थ अछि। राजा देव सिंहक आज्ञासँ भूपरिक्रमाक रचना कयल गेल अछि । ग्रन्थमे वलदेवजीद्वारा कयल गेल भूपरिक्रमाक वर्णन अछि। तहिना नैमिषारण्यसँ मिथिला धरिक सभ तीर्थ स्थलक वर्णन सेहो अछि।

१४) कीर्तिलता : कीर्तिलताक रचना विद्यापति अवहट्ठमे कयलनि अछि आ अहि ग्रन्थमे राजा कीर्ति सिंहक कीर्ति कीर्तन अछि। मिथिलाक तात्कालीन राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक स्थितिक अध्ययनक लेल ई ग्रन्थ महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि। ग्रन्थसँ विद्यापतिक प्रौढ़ काव्य कलाक प्रमाण भेटैत अछि। तहिना विकसित काव्य प्रतिमाक दर्शन सेहो होइत अछि।

१५) कीर्तिपताका : अहि ग्रन्थमे राजा शिवसिंहक बहुत चतुरतापूर्वक यशोवर्णन अछि। ग्रन्थक रचना दोहा आ छन्दमे अछि। ग्रन्थक आरम्भमे अद्र्धनारीश्वर, चन्द्रचूड शिव आ गणेशक बन्दना अछि। कीर्तिपताका खण्डित रूपमे मात्र उपलब्ध अछि। एकर ९ सँ २० धरिक जम्मा २१ टा पृष्ठ अप्राप्त अछि। तीसम पृष्ठमे राजा शिव सिंहक युद्ध पराक्रमक वर्णन अछि।

१६) गोरक्षविजय : ई एक एकांकी नाटक अछि। अहिमे विद्यापतिक नूतन प्रयोग सेहो अछि। गोरक्षनाथ आ मत्स्येन्द्रनाथक कथा पर नाटक आधारित अछि। ग्रन्थक रचना राजा शिव सिंहक आदेशसँ कयल गेल छल।

१७) मणिमंजरी नाटिका : ई एक लघु नाटिका अछि। नाटिकामे राजा चन्द्रसेन आ मणिमंजरीक प्रेमक वर्णन अछि।

१८) मैथिली पदावली : विद्यापतिक मैथिलीमे रचित पदावलीक संग्रहित ग्रन्थ अछि मैथिली पदावली। लिखित संकलनक अभावमे विद्यापतिक गीत अपन माधुर्यक कारण लोक कण्ठमे जीवित छल आ बहुत बाद एकर समग्र रूपमे संकलित करबाक प्रयास कयल गेल। यद्यपी अनेक संग्रहसभमे विद्यापतिक गीतक संकलित भेल अछि। पदावलीमे राधा एवम कृष्णक प्रेम प्रसंग गेय पदमे प्रकाशित अछि।

हाइकू

चाँदनी राति
नीमक गाछ तर
जरैछ आगि।

गरम साँस
छिला गेलैक ठोर
प्रथम स्पर्श।

परिचित छी
जीवनक अन्तसँ
मुदा जीयब।

बहैछ पछबरिया
जरै उम्मिदक दीया
उदास मोन।

पीयाक पत्र
किलकिञ्चत् भेल
उद्दीप्त मोन

श्रम ठाढ़ छै
श्रमिक पड़ल छै
मसिनि युग।

मृत्युक नोत
जीबाक लेल सिखु
देब बधाइ।



नूतन झा

गाम: बेल्हवार, मधुबनी, बिहार; जन्म तिथि : ५ दिसम्बर १९७६; शिक्षा - बी एस सी, कल्याण कॉलेज, भिलाई; एम एस सी, कॉर्पोरेटिव कॉलेज, जमशेदपुर; फैशन डिजाइनिंग, निफ्ट, जमशेदपुर।

बारातीसत्कार

आजुक आधुनिक परिवेशमे विवाहक पुरान मान्यता आर विधि विधान अपन प्रतीकात्मक स्वरूपमे शेष बचल अछि। दिन पर दिन ओकर स्थान अपव्यय सँ परिपूर्ण परिपाटी लऽ रहल अछि। हम सब पौराणिक आ' तर्कसंगत विचारक अवशेष मात्र देखि रहल छी। आब निरंतर जीवनशैलीमे आधुनिकताक समावेष भऽ रहल अछि। एकर किछु प्रत्यक्ष लाभो अछि, जेनाकि बढ़ियाँ शिक्षा आ' स्वास्थ्य व्यवस्था। किन्तु आधुनिकताक दुष्परिणामक सूचि बनाबी तऽ ओ' अनन्त रहत।

विवाहादिमे जे आडंबर आ' विलासितापूर्ण प्रदर्शन होइत अछि ओकर निर्वाह सर्व साधारणक लेल काफी कठिन अछि।पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा कएलाक बाद एक साधारण कन्यापक्ष विवाह समारोहक उच्चवर्गीय प्रदर्शनक आर्थिक आघात कँ कोना सहत? विभिन्न प्रकारक ताम-झाम युक्त महग व्यवस्थाक निर्वाह बहुत कष्टकारी होइत छैक। किछु घंटाक शोभा बढ़ाब' लेल वा विवाह समारोह कँ कथित रूप सँ अविश्वसनीय बनाबए केर दवाब सँ लोक हजारों लाखों टाका पानिमे बहा दैत अछि। नब पीढ़ीक सुशिक्षित लोक कँ बुझबाक चाही जे विवाहकँ अविस्मरणीय बनाबैत छैक दू परिवारक आपसी स्नेह आ' सम्बन्ध। विवाहकँ अविस्मरणीय बनाबैत छैक ओकर सफलता जाहि लेल मात्र निष्ठा आ' विश्वासक प्रचुरता चाही, टेंट हाउस भोज व्यवस्था वा महग कपड़ा लत्ता आर गहना जेवर नञि। ई सभ कृत्रिम साधनक माँग मध्यम वर्गीय परिवारक लेल सीमित रहय तखने कल्याण अछि।

अपव्यय सँ बचि कऽ यदि नवयुगक वर कन्या अपन सूझ बूझ सँ गरिमामय सम्बन्धक शुरूआत करथि तऽ ई सभक हितमे होयत।कन्यापक्ष पर वरपक्ष द्वारा बारातीक भव्य स्वागतक दबाब देखि बड़ा दुख होइत अछि। स्वागत तऽ हृदय सँ हुअक चाही रूपैया पैसा सँ नहिं। एकटा गरीब परिवारक व्यथा संवेदनशील व्यक्तिकँ आडंबरक प्रति आर कठोर बनाबए लेल पर्याप्त अछि।

एक कविक कविताक किछु पंक्ति उल्लेखित अछि :

''कोना करू बरियाती जी अहाँक सत्कार यौ ।

धानो नहि भेल हमरा रब्बियो के नञि आस यौ ॥

कठिन समय छैक सुनियउ भारी परिवार यौ।

रूख सुख जे भेटए कए लिअ स्वीकार यौ॥

सम्बन्ध बनाबऽ एलहुँ अहाँ राखू हमरो लाज यौ।

घर द्वारो टूटल फाटल दलान पर नहि खाट यौ॥

दिन राति पेट भरय लय करि कऽ रोजगार यौ।

खानपियनि द नहि सकलहुँ छी बहुत लाचार यौ॥"

आउ हम सब अहि आडंबरक समूल नाश कऽ मिथिलाक गरिमा बढ़ाबी।

जानकी-नवमी

वैशाख मासक शुक्ल पक्षक नवमी तिथि कँ जानकी-नवमी मनाओल जाइत अछि। लोक ओहि दिन व्रत राखैत छथि आ' सीताजीक पूजा अर्चना करैत छथि। सीता माता लक्ष्मीजीक अवतार मानल गेल छथि, तैँ ई मान्यता अछि जे ई व्रत कएलासँ सुख एवम् सम्पत्तिक प्राप्ति होइत अछि। एहि वर्ष ई पाबनि अंग्रेजी तारिख १३ मई, २००८ मंगल दिन कँ अछि।

कथा अछि जे राजर्षि जनकजी कँ सीताजी शैशवावस्थामे अही दिन प्राप्त भेल रहथिन्ह।राजा जनक जनकपुरक राजा छलाह आ' संतानहीन जाहिसँ एहि दुःख सँ पीड़ित छलाह।एक दिन कोनो शुभ कार्यक प्रयोजन सँ ओ' खेतमे हर जोतए गेलाह। ओही बीच हुनकर हरसँ लागि एक स्वर्णक कलशमे सँ एक दिव्य बालिका प्रकट भेलीह, जिनका राजा जनक आ' हुनकर पत्नी सुनयना गोद लऽ लेलखिन। बालिकाक नाम सीता राखल गेल जकर अर्थ होइत अछि हर। देवी सीताक जानकी नाम सेहो पड़ल अछि।

किन्वदन्ति अछि जे सीताजी लक्ष्मी माताक अवतार देवी वेदवतीक पुनर्जन्म रूप छलीह। ऋषि कुषध्वजक पुत्री वेदवती परम सुन्दरी छलीह आ स्वयम् कँ विष्णु देव कँ प्रति अर्पित कएने छलीह। अनेक राजासँ आयल विवाहक प्रस्ताव अस्वीकृत क दैत छलीह। अहि कारणसँ ओ अहंकारी रावण के सेहो मना कऽ देलन्हि जाहि द्वारे हुनका रावणक अत्याचार सहए पड़लन्हि।दुःखी भय वेदवती प्रतिज्ञा लेलन्हि जे ओ अपन पुनर्जन्ममे रावणक विनाशक कारण बनतीह आ स्वयम्के अग्निमे भष्म कँ' लेलन्हि।एहि बीच मन्दोदरि गर्भवती भेलीह। अपन पतिक कुकृत्य द सुनलाक बाद ओ' अपन भावी संतानकँ ल क आशंकित भ गेलीह।ओ' अपन नइहर गेलीह आ' अपन माता पिताक संग तीर्थ करय लगलीह। जन्मक समय नजदीक अएला पर ओ' अपन संतानक लेल आश्रय ताकए लगलीह। तखने संजोगसँ संतानहीन राज जनकक खिस्सा सुनलन्हि आ' समय पाबि अपन पुत्रीकँ राजाक पथमे नुकाबएमे सक्षम भऽ गेलीह।किछु लोक इहो कहैत छथि, जे संभवत: सीताजीक जन्मक बाद हुनका पानिमे बहा' देल गेल छल आ' संयोगसँ ओ' जनकजीक खेत लग कात लगलीह।

कथा इहो प्रचलित अछि जे राक्षसक अत्याचारसँ हताहत ऋषि मुनिक शोणित एक कलशमे एकत्रित कऽ भूमिमे गाड़ि देल गेल छल। बादमे ओहि कलशसँ सीताजीक जन्म भेल। जन्मक पाछाँ खिस्सा चाहे जे होअए उद्देश्य त रावणक नाशे रहए। एकर सांकेतिक अर्थ इएह अछि जे 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। अर्थात् जतए स्त्रीक आदर होइत अछि ततए देवताक निवास होइत अछि आ' ओकर विपरीत स्त्रीक अपमान करनिहार दुखद अंत पाबैत छथि।

किछु लोक मानैत छथि जे सीताक जन्म फाल्गुन मासक कृष्ण पक्षक अष्टमी तिथिकँ भेल छन्हि।



ओमप्रकाश झा

गाम, विजइ, जिला-मधुबनी।

मिथिले तक नहि छथि मैथिल- ओमप्रकाश झा

गप्प अछि नवंबर 2007 केर, एहि समयमे हम गोवा न्यूज (जे कि गोवा अवस्थित अंग्रेजी क्षेत्रीय न्यूज चैनल छल) मे काज करैत रही। गोवामे सोलहम अंतराष्ट्रीय मैथिली परिषदक सम्मेलन भेल छ्ल, जकर अध्यक्षता श्री विनय कुमार झा ,चीफ़ विजिलेंस,गोवा स्टेट केलथि। एहि कांफ़रेंसक एकटा छोट सनक अंश यू-टयूब साइट पर सेहो उपलब्ध अछि। एहि कार्यक्रमकँ कवर करबाक भार अपन संस्थासँ हमरे भेटल छ्ल। एहि कार्यक्रमक दौरान बहुत रास चित्र जे स्पष्ट भऽ कऽ सोझाँ आयल ओऽ ई सभ छल.......

1. बहुत रास मैथिल छतीसगढ आ मध्य प्रदेशमे बसल छथि। हालांकि आब हुनका सबहक मातृभाषा मैथिली नहि रहि गेल अछि। यदि आओर तहमे जाई तँ ओऽ लोकनि मैथिली भाषा बिसरि चुकल छथि, तथापि मिथिलासँ ओतबेक स्नेह आ लगाव छन्हि, जतबाक हमरा सबकँ अछि। हुनकर सबहक पुस्त बहुत पहिने ओतए चलि गेल रहथिन्ह। गप्प करीब 4-5 पुस्त पहिनेक अछि।

2. दिल्लीक नांगलोई इलाकामे सेहो किछु रास मैथिल छथि, जे कि अपन जीवन-यापनक क्रममे कतेक रास आन आन व्यवसाय सब अपना लेने छथि। संगहि देशक भिन्न- भिन्न भागमे कतेको ठाम मैथिल लोकनि वृहद समुदायक संग रहि रहल छथि। ओना भाषा एहिमे सँ बहुतो गोटेक हरा गेल अछि।

3. एकटा आरो गप्प जे कि सामने आयल ओऽ छल, जे कि गोवाकँ मैथिले ब्राह्मण सब बसेने छथि आ एकर प्रमाण स्कन्द पुराणमे भेटैत अछि। हम अहाँ कँ ई बात कहि दी, जे कि गोवन (गोवाक वासी) सबहक मातृभाषा कोंकणी अछि मुदा एहि भाषाक बहुतो रास शब्द मैथिली भाषाक अछि। किछु शब्दक बारेमे हम अहाँ सबकँ कहि रहल छी, जेना कि अदहन (भातक लेल गरम कएल गेल पानि), पाहुन (गेस्ट), मधुर आदि। ओहो सब कोजगरा दिन लक्ष्मी पूजा करैत छथि। रहन-सहनक स्तर अपना सबसँ बहुत हद तक मिलैत अछि। आओर तहमे गेनाय अखन उचित नहि अछि।

कार्यक्रममे कतेको मिथिला-विभूति सब उपस्थित छलाह। वर्तमानमे दिल्ली पुलिसमे वरिष्ठ अधिकारी श्री उज्जवल मिश्र ओहि ठाम तत्कालीन डी.आइ.जी. छलाह। भारतक विभिन्न भागक संगे नेपालक किछु रास प्रतिनिधि सब सेहो पहुंचल छलाह। एहि कार्यक्रमक कवर करबाक लेल गोवा न्यूज आ नेपाल टीवी (नेपालक) चैनल पहुंचल छल, जखन कि बड़का-बड़का मैथिल पुरोधा सब गोवामे विभिन्न मीडिया लेल काज करैत छथि। बादमे जहन हुनका सबसँ जिज्ञासा बस पुछलियन्हि तँ कुनू ने कुनू ओहने बहाना बना लेलाह, जेना कि जखन प्रधानमंत्री स्व० राजीव गांधीक समयमे मधुबनी के एम०पी० हनान अंसारी लोक सभामे मैथिली कँ अष्टम सूचीमे जोरबाक लेल आवाज बुलंद केलथि **तँ** श्री भोगेन्द्र झा जी जे कुनू बहान्ना बनेने रहथि। हम एकर तहमे नहि जाय चाहब, सब गोटे बुझि रहल छी। अल्पज्ञ कहु वा किशोर हमरा मोनमे कतेको प्रश्न उठए लागल जे एनामे मैथिली कोना बचल रहत।

हयऔ, हमर भाषा कुनू अन्य भाषा सँ कनिको कमजोर नहि अछि। हमरा लोकनि अंग्रेजी बाजैत छी, आधुनिक परिधान पहिरैत छी, सबटा बड़ड नीक बात अछि। मुदा एहि तमाम चीजक मूल्यक रुपमे अपन भाषा आ संस्कृति **कँ** उत्सर्ग केनाय हमरा नहि पचि रहल अछि। ई तँ ओहने गप्प भेल जेना किछु रास लोककँ आर्थिक तंगी नहि रहलाक बादो दोसरसँ कर्ज लेबाक प्रवृति होय छन्हि।

परिवर्तनक फ़ेज सँ गुजरि रहल अपन समाज कहीं त्रिशंकु **तँ** नहि बनि रहल अछि।एखन बस एतबे।

मीडिया कतअ ल जा रहल अछि?

गप आरुषि कांड के करी वा मिथिलांचल मे आयल कोसी के कहरक या हाल मे दिल्ली मे भेल सिरीयल बम ब्लाष्टक। यदि अहां सब पछिला किछु दिनका मीडिया के इतिहास पर नजरि

डालि तअ देखु जे ओ कि परोसि रहल अछि आ विडंबना देखु,दर्शक/पाठक के जे ओ ओकरा यथावत ग्रहण करबाक लेल बाध्य छथि। मीडिया के भूमिका के लेल अपना अहि ठाम एकटा कहावत 'खशी के जान जाय,आ खाय वला के स्वादे नहि' वला सहत प्रतिशत ठीक बैस रहल अछि। हमरा बुझा रहल अछि जे अहां सब सनक पाठक लेल मीडियाक छवि के आओर उजागर केनाय उचित नहि हैत।

अहि स छोड़ि यदि मीडिया के आंतरिक संरचना पर ध्यान दी त जतेक निम्न काटि वा अहु स खराब जैं कुनु शब्द होय त संबोधनक स्वरुप ल सकैत छी। यदि टीवी पर देखाय वला सुन्दर चेहरा वा अखबार/मैगजिन मे लिखै वला पुरोधा सब के निजी जीवन मे झांकि क देखब त ओहि मे स अधिकतर व्यक्ती के व्यक्तित्वक समीक्षा केलाक बाद मोन घृणित भ जायत। मुदा विडंबना देखु जे सब गोटे सब बात बुझैत बेबस छी। जे मीडिया दोसरक स्टिंग आपरेशन करैया कि ओकरा लेल सेहो स्टिंग आपरेशन नहि होयबाक चाहि? मुदा इ के करत? हम सब त बगनखा पहिरने छी।

बहुतो मैथिल पुरोधा सब मीडिया के शिर्ष पद सब के सुशोभित क रहल छथि,मुदा कि मजाल जे ओ कखनो सत्य बाजि दैथ। हमहु ओहि भीड़ मे कतौह के कतौ शामिल छी,इ कहैत कोनो लाज नहि भ रहल अछि। कहियो तिलक जेकां पत्रकार होयत छलाह। मुदा आजुक पत्रकार सब समाज के धनाढय वर्ग मे स आबैत छथि।

पाठकगण अहां सब मे स जे कियो मीडियाकर्मी होयब त हमरा माफ़ क देब,मुदा कि हम सब इ दोहरा चरित्र जीवन जिबअ स मुक्त नहि भ सकै छी? अपन पूर्वज के रुप मे मंडण,अयाची,जनक आ विद्यापति के संतान हम सब कतह जा रहल छी? अहां सब मे स जे कियो मीडिया के नजदिक स नहि देखने होय त कोनो निकट परिचित जे अहि क्षेत्र मे काज क रहल हेताह,हुनका स पुछि लेबन्हि। जैं सत्य बाजअ चाहताह त सच्चाई स अवगत भ जायब।

कोना बचत मिथिलाक स्मिता ?

आई जहन अपना सबहक चहुतरफ़ा विकास भ रहल अछि त हम सब अपन महत्वांक्षा के पाबि के अत्यधिक प्रसन्न भ रहल छी,हेबाको चाही। मुदा कि महत्वाकांक्षा के रथ पर सवार भ कअ हम सब कतेक मगरुर नहि भ गेल छी जे अपन स्मिता अपना स कोसो दूर पाछु छुटि रहल अछि। मुदा तकरा समेतनिहार कियो नहि अछि। आय अपना अहिठामक युवा वर्ग अत्यधिक दिग भ्रमित भ रहल अछि,ओकरा कियो सहि मार्ग दर्शक नहि भेट पाबि रहल अछि। अखुनका समय कतेको पाबनि तिहार क महिना आबि गेल अछि आ कतेको गाम मे दुर्गा पूजा के अवसर पर सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कैल जायत अछि मुदा किछु वर्ष पूर्व मे चलु-आइ सअ आलो पहिले हर गाम मे युवक सब नाटक खेलाय छलाह,महिनोतक रामलिला ले आयोहन होयत छल,ओ सब आय कतह चलि गेल छथि। कि आर्केस्ट्रा आ परोसी (तवायफ़) के नाच मे ओ सब हरा गेल छथि। परोसजी के कार्यक्रम इ असर पड़ैत अछि जे मंदिरक कार्यकर्ता सब सेहो एकर मजा उठाबअ लागैत अछि। इमहर मौका पाबि कुकुर,बिलाड़ि मैया के प्रतिमा के सेवा मे लागि जाइया। देखने हैब जे कुकुर मुर्ती के चाटि रहल अछि। उमहर हम सब अपन तीन पुस्तक (पुरुखा) संग माने बाप- बेटा आ पोता समेत बाईजी पर पाई लुटाबय के अवसर के नहि गवांबैत छी। अधिकतर गोटे अहि स अवगत होयब।

दोसर कतअ जा रहल अछि अपन संस्कार? हयउ,आब शायद कतौ महिनो तक चलैबला रामलिलाक तम्बु गाम मे देखायत होयत? हम अपन छोट सनक अनुभव अपने संग बांटअ चाहब। पहिले रामलीला के टोली के कियो माला (मने एक दिनक भोजन) उठेनिहार नहि होइ,माने इ जे मात्र पेटे पर जे टीम सबहक मनोरंजनक वास्ते तैयार रहैत छल,ओकरा अपन समाज नकारि देलक मुदा आखन प्रायःहर छोट पैघ शहर अतह तक कि देशक राजधानी मे दुर्गा पूजा के अवसर पर लाखो आदमी रामलीलाक खुब लुफ़्त उठबैत छैथ। कतो कतो तअ रामलीला देखै के लेल टिकट सेहो लागैत अछि,कि हम झूठ बाजि रहल छी। एना मे दु टा गप्प जे हमरा स्पष्ट भेल-पहिल जे लोक के ओहि प्रति ओ रुझान नहि रहलन्हि जे कि बाईजी के नाच मे वा कौआल-कौआली मे जे कि राति भरि सबके गरिया क चलि जाइया आ हजारो आदमी मंदिरक आस पास ततबाक गोत गोबर कअ दैत छथि जे अगिला किछु महिना तक उमहर नहिये जाय मे कुशल बुझैत छी। अहि स गामक कलाक ह्रास खूब पैघ स्तर पर भेल अछि,सब गोटे बुझिति अंजान छी।

तेसर आ गंभीर गप्प इ जे समाज मे जे भाई चारा मे छल कि ओ खत्म भ गेल अछि। कि अपन समाज ततेक गरीब तअ नहि भ गेल अछि जे आहिठम दस गोटे के भोजन करेनाय आय कठिन भ गेल अछि। एकर एकटा छोट सनक उदाहरण हम देबए चाहैत छी जे जौं अहाँ सब मे स किछु आदमी दिल्ली-बंबई स कमा क मास दिनक लेल गाम जायत होय तअ अनुभव करैत होयब जे गाम मे बीतल समय के संगे संग अपनेक मेंटिनेन्स पर होय वला खर्च मे कटौति सेहो सबगोटे व्यक्तीगत अनुभव के गहराई स देखु। अखन बस अतेबैक।

इति



डॉ पालन झा

ग्राम-हरौली, कुशेश्वरस्थान।

एम. ए. (मैथिली), सन्त साहेब रामदास पर डॉ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' केर निर्देशनमे पी.एच.डी.। संप्रति बी. डी. जे. कॉलेज, गढ़बनैलीमे मैथिली विभागाध्यक्ष। सम्पादक।

सन्त साहेब रामदास

साम्प्रदायिक अर्थे मैथिली साहित्यमे सन्त कविक रूपमे साहेब रामदासक प्रमुख स्थान अछि। पचाढ़ी स्थानक महंथ बंशीदासजीक सानिध्यमे कवीश्वर चन्दा झा हिनक पदावलीक संकलन कए १९०१ ई. मे प्रकाशित कएने छथि। एहि पदावलीमे परिचयक क्रममे कवीश्वर चन्दा झा लिखैत छथि:

''शिवलोचन मुख शिव सन जखन, साहेब रामदास तिथि तखन।

प्रबल नरेन्द्र सिंह मिथिलेश, शासित छल भल तिर्हुत देश॥''

अर्थात् ११५३ साल (१७४६ ई.) मध्य महाराज नरेन्द्र सिंहक राज्यकालमे ई रहथि।

छादनसँ न्याय-तत्त्व-चिन्तामणि कर्ता गंगेश उपाध्याय वंश कुलोद्भव साहेब रामदास ''कुसुमौल'' ग्रामक (जरैल परगना, जिला- मधुबनी) एक मैथिल ब्राह्मण छलाह।हिनक छोट भाइक नाम कुनाराम ओऽ एकमात्र प्राणसमप्रिय पुत्र 'प्रीतम' छलनि। हिनक पूरानाम साहेब राम झा छलनि, मुदा अन्य सन्त कवि जकाँ ईहो अपन नामक आगाँ भक्ति-भावनासँ 'दास' शब्द जोड़ि लेलनि। साहेब रामदासक पदावलीमे लगभग ४७८ टा पद संकलित अछि। एहि कविता मध्य ई अपन नाम साहेबराम, साहेबदास, साहेब, साहेबजन सेहो रखने छथि।

साहेबरामदास आरम्भहिसँ भक्ति-प्रवण विचारक लोक छलाह। ई सदिखन ईश्वरहिक ध्यान-चिन्तनमे लीन रहैत छलाह। सन्यास ई बादमे ग्रहण कएलनि। एहि पाछाँ एकटा दुखद घटना घटित भेल- हिनका एकमात्र पुत्र 'प्रीतम' छलनि। ओ अधिक समय दुखित रहए लगलाह। युवावस्था छलनि। एकबेर प्रीतम अधिक दुखित भए गेल छलाह। हिनक जीवनक अन्तिम कालक भान भए जएबाक कारणेँ साहेबरामदासविकल भए कानए लगलाह। मरण शय्या पर रहितहुँ प्रीतमकेँ एहन दुःखद दृश्य देखि नहि रहल गेलनि आ ओऽ अपन पितासँ पुछैत छथिन, ''बाबूजी! अपने एतेक विकल किएक भए रहल छी? पिता उत्तर दैत छथिन ''पुत्रक आवश्यकता एहि चतुर्थ अवस्थामे होइत छैक, से तँ अपने हमरा पहिने छोड़ि कए जाए रहल छी, तेँ ई सोचि-सोचि खिन्न चित्त भए व्याकुल भए रहल छी''। पुत्र प्रीतम प्रत्युत्तर दैत कहैत छथिन, ''ई संसार असार थिक, क्षणभंगुर थिक, एहिमे स्त्री-पुत्र-पुत्री केओ अपन नहि थिक, ई सभटा अनित्य थिक, माया-मोह थिक। सभटा स्वार्थमूलक थिक तेँ एहि सभसँ माया-मोह रखनाइ अनुचित थिक। हम तँ अपनेक भगवन्-भजनमे विघ्न मात्र छलहुँ, आब अपने निर्विघ्नपूर्वक भगवन्-भजनमे लागि जाऊ''। एतेक बात कहैत देरी प्रीतमक प्राण-पखेरू उड़ि गेलनि। साहेब रामदास विकल भए कानि-कानि कए गाबए लगलाह-

''प्रीतम प्रीति तेजि भेल परदेसिआ हो''

साहेब रामदासकेँ प्रीतमक देहावसानसँ बड़ आघात लगलनि, प्रीतमक उपदेशकेँ धारण कए परिवार-समाजकेँ तिलाञ्जलि दए सन्यास ग्रहण कए लेलनि।

पुत्र-वियोगक कारणेँ ई पक्का बैरागी भए गेलाह। गामसँ बाहर भए जंगले-

जंगल एकान्तमे वास कए भजन-कीर्तन करए लगलाह। गामक लोकसभ बहुत दिन धरि पाछाँ कएलकनि जे अपने घुरि जाऊ, हमहु सभ अपनेक पुत्रक समान छी, अपनेकँ कोनो कष्ट नै होएत। मुदा साहेब रामदास पर तकर कोनो प्रभाव नहि पड़लनि, उनटे जतए लोकक आवागमन देखथिन्ह, स्थानकँ बदलि पुनः निर्जनस्थानमे चलि जाइत छलाह। लोकसभ किछु दिन धरि पाछाँ तँ केलकनि, मुदा अन्तमे हारि-थाकि कए जे ई आब पक्का बैरागी भए गेल छथि, तँ हिनका आब तंग नहि कएल जाए, विचारि कए पाछाँ करब छोड़ि देलकनि।

बैरागी भेलाक बाद ई देशक बहुतो भागमे भ्रमण कएलनि। भजन-कीर्तनक संग योग-साधनामे सेहो लीन भए गेलाह। योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कएलाक पश्चात् केओटीक निवासी बलिरामदासजीसँ दीक्षा ग्रहण कएलनि। दीक्षा ग्रहण कएलाक पश्चातो ई अनेक धर्म स्थानक भ्रमण करैत रहलाह। कहल जाइत अछि जे साहेबरामदास दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेलाह। बाटमे बड़ कष्ट सहए पड़लनि, घाओ भए गेलनि, घाओमे पीब आबि गेलनि, मुदा दण्ड-प्रणाम ओऽ नहि छोड़लनि। दण्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेलाह। जकर प्रमाण हुनकहि एक कवितासँ भेटैत अछि-

साधुके संगत धरि गुरुक चरण धरि,
आहे सजनी हमहु जाएब जगरनाथहि रेकी।
नहि केओ अन्नदाता संग नहि सहोदर भ्राता,
आहे सजनी माँगि भीखि दिवस गमाएब रे की।
सभ जग भेल भाला गुरुआ अठारह नाला,
आहे सजनी ओहिठाम केओ नहि छोड़ाओल रे की।
सिंह दरबाजा देखि मन मोर लुबधल,
आहे सजनी ओहिठाम पंडा पंडा बेंत बजारल रे की।
साहेब जे गुनि धुनि बैसलहुँ सिर धुनि,
आहे सजनी जगत जीवन निअराएल रे की।

गुरु बलिरामदास मुरिया रामपुरक एक महात्मा शिष्य छलाह तथा अपन गाम केओटा (केओटी)क घनघोर जंगलमे योग साधना करैत छलाह। ई योग साधनामे निष्णात् छलाह। कहल जाइत अछि जे गुरुक बिना वास्तविक ज्ञान असम्भव अछि आ तँ साहेबरामदास एक योग्य गुरुसँ दीक्षा लए, योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कए लेलनि। योग क्रिया पर सिद्धि प्राप्त कए लेलाक बाद जन्म-मरणसँ छुटकारा पाबि जेबाक पूर्ण विश्वास भए गेलनि, से गुरुक प्रसादहिसँ। मोक्ष प्राप्तिमे आब कोनो सन्देह नहि रहि गेलनि, जे जीवनक चरम लक्ष्य थिक। बलिरामदास हिनक दीक्षा गुरु छलथिन, तकर प्रमाण हिनकहि एक कवितासँ भेटैछ-

"गुरु बलिराम चरण धरि माथे, साहेब हरि अपनाया है।
अब तौ जरा-मरण छुटि जैहे, संशय सकल मेटाया है"।

कृष्णक ई अनन्य भक्त छलाह। जगन्नाथपुरीक यात्राक क्रममे बाटहिमे हिनका स्वयं भगवान श्री कृष्ण दर्शन देने छलथिन। आब तँ ई कृष्णक ध्यानमे दिन-राति लागल रहैत छलाह। समाधिस्थ कालमे तँ दुनियाँक कोनो वस्तुक ध्यान नहि रहैत छलनि, ध्यान रहैत छलनि तँ एक मात्र भगवान श्री कृष्ण। जन-श्रुति तँ ईहो अछि जे भगवानक भजनक कालमे जखन ई नाच करैत छलाह तँ स्वयं भगवान श्री कृष्ण सेहो उपस्थित भए संग दैत छलथिन।

साहेबरामदास अनेक तीर्थ-स्थलक दर्शन कएलनि। सांसारिक मोह-मायाकँ त्यागि वैरागी भए गेलाह, मुदा मिथिला भूमिकँ नहि त्यागि सकलाह। एक पदमे ओऽ लिखैत छथि, "मिथिला नगरी तोर दान बिनु साहेब होइछ बेहाल" तथा दोसर पदमे "साहेब करुणा करए शीश धुनि मिथिला होइछ अन्धेरि"। एहि पद सभसँ मिथिलाक प्रति हुनक प्रेमक सहज अनुमान लगाओल जाए सकैत अछि। धन्य ई मिथिला भूमि ओऽ धन्य महात्मा साहेब रामदास।

पहिने कहि चुकल छी जे ई जंगलमे एकान्त वास कए भजन-कीर्तन कएल करथि। जतए-जतए ई जाथि ताहि-ताहि ठाम ई अपन खन्ती गारि कुटियाक निर्माण कए एक पाकड़िक गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अनेक जगह पर योगमढ़ी छल आ सबहि ठाम ई पाकड़िक गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अन्तिम योगमढ़ी दरभंगा जिलाक 'पचाढ़ी' गाममे अछि, जे पूर्वमे बूढ़वनक नामे विख्यात छल। एहू ठाम पाकड़िक गाछ रोपने छलाह, जे अद्यावधि वर्तमान अछि। पल्लवित एहि गाछक शोध मानवशास्त्री लोकनि एखनहु कए रहल छथि।

कमलाक तट पर स्थित पचाढ़ी गामक वन आ वृन्दावनक तुलना करब कठिन भए जाइत छल। वृन्दावनसँ एको रत्ती कम शोभा पचाढ़ी (बूढ़वनक) नहि छल। मोरक नाच, सुगाक गान, नाना प्रकारक वन्यजीव प्राणीक निर्भय विचरण करब, भिन्न-भिन्न लता-पुष्पसँ शोभित

वनक दृश्य लोककँ सहजहि आकृष्ट कए लैत छल। एहि स्थानक प्रशंसामे कवीश्वर चन्दा झा लिखैत छथि–

''पाकड़ि वृक्ष सएह कमला तट जएह
भजन कुटी विश्राम।
चन्द्र सुकवि मन धरम परमधन धन्य
पचाढ़ी ग्राम''॥

पचाढ़ी स्थानक शोभा आब नहि रहि सकल, जे पहिने एक निर्जन स्थान छल, ताहि ठाम आब ग्राम अछि, खेती-पथारी कएल जाइत अछि। वनक तँ आब निशानो नहि रहि गेल अछि, तथापि साहेब रामदासजीक समाधि-स्थलक चारूकात मन्दिर सेहो एक-दू नहि छओ-सातटा अछि। सभमे भोग-रागक व्यवस्था, पुजेगरीक संग-संग सहायकक व्यवस्था सभ मन्दिरमे फराक-फराक अछि। लगभग पाँच कट्ठा जमीनमे फुलबारी अछि। आगत-अतिथिक स्वागत यथासाध्य एखनहु कएल जाइत अछि। साहेब रामदासक नाम पर एकटा संस्कृत महाविद्यालय अछि, जाहिमे निर्धन छात्रकँ स्थान दिससँ रहबाक व्यवस्था ओ मुफ्त भोजनक व्यवस्था कएल जाइत अछि।

पचाढ़ीस्थान मिथिलाक वैभवशाली स्थानमेसँ सर्वप्रमुख अछि। एकर वैभवशालीक पाछाँ राजदरभंगाक महत्वपूर्ण योगदान अछि। तत्कालीन दरभंगा मिथिलेश नरेन्द्रसिंह निःसन्तान छलाह। हुनक पत्नी रानी पद्मावती अतिथि-सत्कार, पूजा-पाठक निमित्त ३०० (तीन सए) बीघा जमीन पचाढ़ी स्थानकँ दानस्वरूप देने छलथिन। मुदा कहल जाइत अछि जे साहेब रामदास ओहि जमीनक दान-पत्रकँ प्रज्वलित अग्निमे फेकि देलखिन। शिष्य लोकनिकँ भिक्षाटन वृत्तिसँ आगत-अतिथिक सेवा सत्कार करए पड़ैत छलनि, जाहिसँ ओ लोकनि तंग आबि गेलाह आ फलस्वरूप ओऽ दान-पत्र पुनः महारानीसँ प्राप्त कए चुप-चाप राखि लेलनि, जे एखनहु धरि सम्पत्तिक रूपमे विद्यमान अछि। किछु जमीन भक्त लोकनि वेतियामे सेहो देने छथि। योग्य शिष्य सभ एहि सम्पत्तिकँ बढ़ाए लगभग हजार बीघा बनाए देलनि। सरकार किछु जमीनपर सिलिंग लगाए देलक, मुदा व्यवस्थापक लोकनि अधिकांश जमीनकँ वन-विभागकँ दए गाछ-वृक्ष लगवाए देलनि। अपेक्षाकृत एखनहु ई स्थान समृद्ध अछि।

साहेबरामदास एक सिद्ध पुरुष छलाह आ तँ हिनकामे चमत्कारिक गुण स्वाभाविक अछि। चमत्कारसँ सम्बन्धित अनेक कथा हिनकासँ जुड़ल अछि, जाहिमे एक चमत्कारक उल्लेख करब हम उचित बुझैत छी, जे हिनक अन्तः साक्ष्यसँ जुड़ल अछि।

राजा नरेन्द्र सिंहक समयमे पटनाक कोनो मुसलमान नवाब मिथिलापर आक्रमण कए देलक। राजा नरेन्द्र सिंहक सेना ओ नवाबक सेनाक बीच घोर संग्राम भेल, जाहिमे अपार धन-जनक क्षति भेल छल, मुदा राजा नरेन्द्र सिंह ओहिमे स्वयं वीरतापूर्वक युद्ध कएलनि आ शत्रु सेनाकँ पराजित कएल। ओहि समयमे महात्मा साहेब रामदास नरेन्द्र सिंहक विजयी होएबाक कामना स्वरूप श्रीकृष्णसँ प्रार्थना कएलनि-

''साहेब गिरधर हरहु नरेन्द्र दुःख,
करहु सुखित मिथिलेशहि रे की''।

एहिपर क्रुद्ध भए नवाब हिनका बन्दी बनाए पटनाक कारागारमे बन्द कए देलनि। साहेब रामदास योगबलेँ सभ दिन गंगा-स्नान, संध्या-तर्पण, पूजा-पाठ आदि गंगहि तटपर कएल करथि। कारागारमे रहितहुँ ई क्रम हिनक निरन्तर चलैत रहलनि। लोक सभ हिनका गंगा तटपर सभ दिन देखैत छलनि। नवाबकँ कोना ने कोना एहि बातक जानकारी भेट गेलनि। नवाबकँ तँ विश्वास नहि भेलनि तथापि हुनका अपन कर्मचारी सभपर संदेह भेलनि आ ओऽ अपनेसँ कारागारमे ताला लगाए देलनि। तथापि साहेब रामदासक गंगा-स्नानक क्रम नहि टुटलनि। अन्तमे नवाब साहेबरामदासक पएरमे बेड़ी बान्हि कारागारमे ताला लगाए देलनि। साहेबरामदास तत्क्षणहि करुणाद्र भए अपन आराध्य देव श्री कृष्णकँ पुकारलनि-

''अब न चाहिए अति देर प्रभुजी,
अब न चाहिए अति देर।
विप्र-धेनु-महि विकल सन्त जन,
लियो है असुरगण घेरि''।

गविते छलाह की पएरक बेड़ी ओ फाटकक ताला आदि सभ टूटिकए खसि पड़ल। नवाब आश्चर्य चकित भए गेल। ओ महात्माजीक पएरपर खसि पड़ल। साहेबरामदाससँ क्षमा माँगलक आ बादमे ससम्मान स्वागत कए मिथिला पहुँचाए देल।

एहि तरहक कएक गोट चमत्कार अछि, जेना राजा राघव सिंहक समयमे राजदरभंगामे प्रेत-बाधाकँ शान्त करब, माटिक भीतकँ हाँकब। कृष्णाष्टमी, जन्माष्टमी आदि उत्सवक अवसरपर अधिक साधु-सन्तक भीड़ जुटलाक बादो थोड़बहु सामग्रीमे भोजनक अवसरपर भण्डारामे कोनो कमी नहि होएब आदि कतोक चमत्कारिक घटना सभ अछि, जे हिनकासँ जुड़ल अछि। एहि सिद्ध पुरुषक चमत्कारिक घटनासभसँ लोकक हिनका प्रति कतेक श्रद्धा छल से सहजहि अनुमान कएल जाए सकैत अछि।

साहेबरामदास वैरागी वैष्णव-भक्त-कवि छलाह। पदक रचना करब हिनक साधन छल मुदा साध्य तँ एकमात्र छल भगवान विष्णुक भजन-कीर्तन करब। कहल जाइत अछि जे ओऽ अपनहि पदक रचना कए सभ दिन भगवानक भजन-कीर्तन कएल करथि। ओऽ भक्तिमार्गी छलाह आ तँ भक्ति-मार्गक सिद्धांतक अनुरूप पदक रचना कएल करथि। भक्ति मार्गक सभ रसक पदरूपमे रचना कएलनि, मुदा प्रधान रस "मधुरं" रस सएह अछि। भगवानक कोनो एक रूपक ओऽ आग्रही नहि, सगुण-निर्गुण दुनू रूपमे मानैत छलाह, जे अपन मनोगत भाव कवितामध्य व्यक्त कएने छथि।

"निर्गुण सगुण पुरुष भगवान, बुझि कहु साहेब धरइछ ध्यान"।

"धैरज धरिअ मिलत तोर कन्त, साहेब ओ प्रभु पुरुष अनन्त"।

साहेब रामदासक यद्यपि एकमात्र पदावली उपलब्ध अछि, जाहिमे ४७८ टा पद संकलित अछि। मुदा ईएह पदावली हुनक यशकें अक्षुण्ण बनाए रखबामे सभ तरहें समर्थ अछि। भक्तिक प्रायः सभ विषयपर पदक रचना कएने छथि, यथा- कृष्ण-जन्म, वात्सल्य, वंशीवादन, संयोग-श्रृंगार, रास-लीला, झुलोत्सव आदि। रासलीला परक जेहन पद सभक ई रचना कएने छथि से प्रायः मैथिलीमे आन केओ कवि नहि कएने छथि। हिनक रास-लीला परक पदक विवेचन स्वतंत्र रूपें कएल जाए सकैत अछि। कृष्ण-प्रेमक अनन्यता, भक्ति प्रवणता ओ प्रसाद गुण हिनक काव्यक मुख्य गुण कहल जाए सकैत अछि। ऋतुगीत, दिन-रातिक भिन्न-भिन्न समयोपयोगी पदक रचना, जेना-प्राती, सारंग, ललित, विहाग आदिक रचना कएल करथि।

मिथिला पञ्चदेवोपासक सभ दिनसँ रहल अछि। साहेब रामदासक रचनामे सेहो भक्तिक विविध-रूपक दर्शन होइत अछि। कृष्णक तँ ई अनन्य भक्त छलाह मुदा आनो-आन देवी-देवता परक पदक रचना कएने छथि। हिनक हनुमानक फागु परक कविता देखल जाए सकैत अछि। एकरा सन्त लोकनिक फागु सेहो कहल जाए सकैछ-

"प्रवल अनिल कपि कौतुक साजल
लंका कएल प्रयाण।
कनक अटारी कए असवारी छाड़थि
अगनिक वाण॥
जरए लंक कपि खेलए फगुआ, उड़ए
गगन अंगार।
धुँआ वाढ़ि अकासहि लागल दिवसहि
भेल अन्धार"।

हिनक रचित एकटा महादेवक गीत सेहो अछि, जकर उल्लेख डॉ. रामदेव झा अपन "शैव साहित्यक भूमिका" नामक ग्रन्थमे कएने छथि-

"पुछइत फिरइत गौरा वटिया हे राम।
कहु हे माइ, जाइत देखल मोर भंगिया
हे राम॥
हाथ भसम केर गोला हे राम।
वरद रे चढ़ि कोन नगर गेल भोला हे
राम"॥

विरहिणी व्रजाङ्गनाक मनोदशाक एक विलक्षण रूप एहि ठाम सेहो देखल जाए सकैत अछि:

"कमल नयन मनमोहन रे कहि गेल
अनेक।
कतेक दिवस भए राखब रे हुनि वचनक
टेक॥
के पतिआ लए जाएत रे जहँ वसु
नन्दलाल।
लोचन हमर सतओलनि रे छतिआ दए
शाल॥
जहँ-जहँ हरिक सिंहासन आसन
जेहिठाम।
हमहु मरब हरि-हरि कै मेटि जाएत
पीर॥
आदि"

मिथिलाक सन्गीत परम्परा अति प्राचीन ओ समृद्ध अछि। संगीतक रचना तँ विद्यापति ओ हुनकहुँसँ पूर्व होइत आएल अछि, मुदा रहस्यवादी संगीत-काव्य-रचना नवीन रूपमे आएल अछि, जकर प्रवर्तक साधु-सन्त लोकनि भेलाह। जाहिमे सन्त साहेब रामदासक स्थान अग्रगण्य अछि। हिनका लोकनिक रचनाक प्रभाव प्रायः सभ वर्गपर पड़ल। हिनक प्रायः सभ कवितामे रागक उल्लेख अछि। अतः एहिपर संगीत-शास्त्रक अनुकूल शोध-कार्य कएल जएबाक आवश्यकता अछि।

साहेब रामदास परम वैरागी सुच्चा साधु छलाह, भक्त छलाह आ तँ हिनक भाषापर सधुक्करी ओ तत्काल प्रचलित व्रजभाषाक किछु प्रभाव सेहो पड़ल अछि, तथापि हुनक जे पदावली उपलब्ध अछि से मैथिली साहित्यकें समृद्ध बनएबामे अपन महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कएने अछि। भक्ति-भावनाक सरलता ओ सहजताक दृष्टिएँ हिनक भाषा सरल ओ सहज अछि। भक्ति-भावना परक एहन कविता मैथिली-साहित्यमे प्रायः दुर्लभ अछि। हिनक भक्ति परक गीत एखनहु मिथिलाक गाम-घरमे बुढ़-बुढ़ानुसक ठोरपर अनुवर्तमान अछि, जकर संकलन करब परम आवश्यक अछि।



श्री डॉ. पंकज पराशर (१९७६-)

मोहनपुर, बलवाहाट चपराँव कोठी, सहरसा। प्रारम्भिक शिक्षासँ स्नातक धरि गाम आ सहरसामे। फेर पटना विश्वविद्यालयसँ एम.ए. हिन्दीमे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। जे.एन.यू.,दिल्लीसँ एम.फिल.। जामिया मिलिया इस्लामियासँ टी.वी. त्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। मैथिली आ हिन्दीक प्रतिष्ठित पत्रिका सभमे कविता, समीक्षा आ आलोचनात्मक निबंध प्रकाशित। अंग्रेजीसँ हिन्दीमे क्लॉद लेवी स्ट्रॉस, एबहार्ड फिशर, हकु शाह आ ब्रूस चैटविन आदिक शोध निबन्धक अनुवाद। 'गोवध और अंग्रेज' नामसँ एकटा स्वतंत्र पोथीक अंग्रेजीसँ अनुवाद। जनसत्तामे 'दुनिया मेरे आगे' स्तंभमे लेखन। रघुवीर सहायक साहित्यपर जे.एन.यू.सँ पी.एच.डी.। **सम्पादक**

रावलपिंडी

1.

रावलपिंडी सँ आइयो बहुत दूर लगैत छैक लाहौर
बहुत दूर...
जतय स्वतंत्रता केर समवेत स्वर
प्रचंड नरमेधक इतिहास मे बदलि गेल छल

दूर-दूर होइत समय मे अनघोल करैत
अनंत स्वर-श्रृंखला...
जेहो सब छल निकट
सेहो दूर भेल जा रहल अछि
दूर-दूर होइत बहुत किछु
आब विलीन भेल जा रहल अछि

चारू दिशा मे टहलैत इंसाफी मरड़ आ छड़ीदार लोकनि
इंसाफ करबाक लेल अपस्यांत
वर्तमान सँ भविष्य धरि
अगुताएल छथि इतिहासो मे घुरि कए
इंसाफ करबाक लेल

2.

जखन हम फोन पर होइत छी खांटी मातृभाषी
बजैत मायक लेल चिंताहरण बोल
आ कि टैक्सी रोकैत हमर ड्राइवर करीम खान
अविश्वास आ आश्चर्य भरल स्वर मे पुछैत अछि-
-भाय तोंय हिंदुस्तानी छहो?
हमरा अब्बा सँ तनी मिलभो-
हुनि बोलइ छथिन इएह बोली
जे तोंय अखनी बोलइ रहो
आ शनैः शनैः पसरि जाइत अछि हमरा टैक्सी मे आकुल-व्याकुल अविभाजित देशक भागलपुर
लाहौरक बाट मे

3.

हमरा डाकघरक मोहर मे आइयो कायम अछि मुंगेर
आ एतय कतरनी धानक चूड़ा मोन पाड़ैत करीम खानक वृद्ध पिता

दुनिया सँ जयबा सँ पूर्व एक बेर
जाइ चाहैत छथि अपन देसकोस
एकटा देश भेटबाक बादो ओ तकैत छथि
अप्पन देसकोस!

अपन देस सँ नगर-नगर बौआइत
पहुँचल छी रावलपिंडी
जतय आइयो पछोड़ धयनैं अछि हमर
अप्पन देसकोस!

कोस-कोस पर परिवर्तित होइत पानि
एतेक दूर ओहिना लगैत अछि
जेहन अपन गाम केर इनारक
आ दस कोस पर परिवर्तित होइत बोली
साठि-एकसठ बरखक बादो ओहने लगैत अछि
जेहन आजुक भागलपुरक

पन्ना त्रिवेदी

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

आमद

हे विदेशी!

देखाऊ हमरा एहन दृश्य

यदि अछि कोनो एहन

बिनु प्रकाश

बिनु गद्दाक ओछाओन

बिनु छाह

जतए

नहिए अछि

चुप्पीक अंश

व्यथित हृदयक ध्वनि

नहिए ध्वनिक आँगुरक नोकक स्पर्श

देखाऊ हमरा ओ दृश्य

यदि अछि कोनो एहन

हौ विदेशी!

जतए

केओ नहि करैछ एकत्रित

स्वासक (मालगुजारि)।

परमेश्वर कापड़ि

अपन अपन माय

सबके नव नेपाल, समृद्ध आ संघात्मक नेपालक सुन्दर चित्र बनएबाक बेगरता रहनि। उमटुमाएल त' बहुतो गोटे रहथि धरि चुनुआ बिछुआ, नामी–गरामी सातटा कलाकारके अपन बुमि ई भार देल गेलनि। भार अबधारि सब एहि निहुछल काजमे लागि जाइत गेला।

केओ धर– मुडी, केओ हाथ त' केओ टाङ्ग, केओ पयर त केओ बाहिँहाथ बनाबऽमे तन्मय भ गेलाह।

देखिते देरि समकँ सभ अगि बना बनाक अनलनि।

आहिरेबा। जखनि जे सबके द्धारा बनाएल नेपाल मायक आगि एकठाम जोडिक देखलनि त ओ आकृति कुरुपे नहि विद्रुप आ राक्षसी लगैत छल। ई चित्र देखिते निर्माणक आग्रही संरचनावादी लोक भडकिक आन्दोलन पर उतारु भगेल।

असलमें ई नारी चित्र भेलै कि नहि सेहे विवादक विषय बनि गेल।

भेल कि रहै त जे पयर बनएने रहथि से रहथि माटिक मूर्तिकार आ पएर एहन सुकोमल माने परी रानीक सुन्नर पयरसन रहै। माय माये होइछै। मायक पयर धरती परक लोकक रेहल खेहल आ कर्मठ पयर होएबाक चाही ने से रहबे नहि करए। मुँह जे बनएने रहथि से अमूर्त पेन्टिङ्गक रहैक। आँखि किदन त नाक निपत्ता। केश दोसरे रङ्गके, पश्चिमी कटिङ्गके। फडफरायल ठाढ, किछु लट ओम राएल बेहाल। हाथ धातु मूर्तिकारद्धारा बनाएल रहैक त धर काठ मुर्तिकारद्धारा बनाएल कोकनल, निरस। लगै जेना मेहन जोदर्डो सभ्यताक वा पाषणकालक उत्खनन कएल गेल हो। तहिना कटि आ ओद्रभाग हिन्दी फिल्मक आइटम गर्लक कपचि छपटिक ल आएल सनके। बेनङ्गन निर्लज।

बात निर्विवाद छलै जे समरसताके अभावमे ई मूर्तिपूर्णे नहि भेलै। गढनिसब बेमेल बानि उबानि। बेलुरा रहैक।

असफलता पर पछताबा कोनो कलाकारके नहि रहैक। अहँकारी हेठी सबके मनमे। आब ऐ बात पर घोंघाउज कटाउँज होइत होइत अरारि आ मारि पीट धरिक नौबत आबि गेलै। से केना त जेना एखनि नेपालक क्षेत्रीय मुद्दाक बलिधिङ्गरोक विवाद।

काष्ठकलाबाला कहथि हपरा के अदुस अधलाह कहत, तेकरा हम बसिलेस पाङ्गि देबै। पेन्टर रङ्गकर्मीके अपन हठ हमर सृजनाके चिन्ह बुमके एकरा सबके दृष्टिए दम नै छन्हि। चित्रकारके अपने राग। पाषाणमुर्तिकारक अपने ठक ठक। सब अपन बातके इर बान्हि, गिठर पारि अडल जे मायक चित्र हमरे कल्पना भावना अनुसार बनए।

सह लहके बाते कोन अपना आगूमे सबके सब अदने, निकम्मे बुमथि। घोल घमर्थन, गेङ्ग छेंटके वैचारिक दर्शन कहैत सब हुडफेर फेरने घुमए।

अपना अपनीके सब तानहिबला, सुनबाला निठाहे नइ।

लोकमे सब रङ्गके, सब तौंतके लोक रहैछ ने। ओइमेस एगोटे आगू अएलाह आ थोडथम्ह लगबैत कालाकार सहित सबके बम्बोधित करैत कहलन्हि हमर बात पहिने ध्यानस सुनैत जाऊ। बात हम पयरस सुरु करैत छी, मूहँस नहि। पहिने पयरेस एहि दुआरे जे हमरासबके सँस्कृतिमे सबसँ पहिने पयरे पूजल जाइत अछि। पयरे चलिक केओ अबैत अछि। पयरेपर केओ ठाढ होइत अछि। पयरै लक्ष्मी होइत अछि। आगत अतिथिके पयरे पवित्र मानल जाइत अछि। प्रवेशके पयर देव कहल जाइत अछि। माने पयरे प्रथम अछि। कर्मशील भेने बन्दनीय आ ई लक्ष्मीपात्र अछि। ताहि दुआरे पयरेस चित्रक निर्माण शुरु हुअओ।

पीयूष ठक्कर

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

सांध्य बेला

साँझ होइते

शिशिर आह पर्वतक

आच्छादित कएल आकाश

अविलम्ब पड़त सम्पूर्ण आकाश फाँसमे

एहि पर्वतक छाहक

पर्वतकेँ भेटत अकाश

प्रकाशकेँ छाह

शरीर सुतत

हृदय दुखित

ओहिना जेना

ईश्वरकेँ भेटल मनुक्ख



प्रकाश झा

सुपरिचित रंगकर्मी। राष्ट्रीय स्तरक सांस्कृतिक संस्था सभक संग कार्यक अनुभव। शोध आलेख (लोकनाट्य एवं रंगमंच) आ कथा लेखन। राष्ट्रीय जूनियर फेलोशिप, भारत सरकार प्राप्त। राजधानी दिल्लीमे मैथिली लोक रंग महोत्सवक शुरुआत। मैथिली लोककला आ संस्कृतिक प्रलेखन आ विश्व फलकपर विस्तारक लेल प्रतिबद्ध। अपन कर्मठ संगीक संग मैलोरंगक संस्थापक, निदेशक। मैलोरंग पत्रिकाक सम्पादन। संप्रति राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्लीक रंगमंचीय शोध पत्रिका रंग-प्रसंगक सहयोगी संपादकक रूपमे कार्यरत।–**सम्पादक**

बाल-बुदरुकक लेल कविता

(मिथिलामे सभसँ उपेक्षित अछि मिथिलाक भविष्य; यानी मिथिलाक बच्चा। मैथिली भाषामे बाल-बुदरुक लेल किछु गीतमय रचना अखन तक नहि भेल अछि जकरा बच्चा रटिक' हरदम गाबए-गुनगुणावए होअए जाहिसँ बच्चा मस्तीमे रहै आ ओकर मानसिक विकास दृढ़ होअए। एहि ठाम प्रस्तुत अछि बौआ-बच्चाक लेल किछु बाल कविता।) चित्र: प्रीति ठाकुर

बिलाड़ि

बाघक मौसी तूँ बिलाड़ि
म्याऊँ म्याऊँ बजै बिचारि,
मुसबा के हपसि क' खाई
कुतबा देख भागि जाई।

बाघ

मौसी तूँ बिलाड़ि के
बाघ छौ तोहर नाम,
जंगल के तूँ राजा छँ
बा''' बा''' केनाइ तोहर काम।

गैया

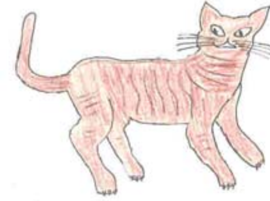
बाबा यौ! अबै यै गैया
हरियर घास चड़ै यै गैया,
मिठगर दूध दै यै गैया
हमर सभहक मैया गैया।

कुतबा

दिन मे सुतै, राति मे जगै,
चोर भगाबै कुतबा।
रोटी देखिक' दौड़ल अबै,
नाड़डि डोलाबै कुतबा।
अनठिया के देखिते देरी,
भौं''' भौं''' भुकै कुतबा।

हाथी

झूमै-झामैत अबै हाथी,
लम्बा सूढ़ हिलाबै हाथी,
सूप सनक कान, हाथी,
कारी खटखट पैघ हाथी।

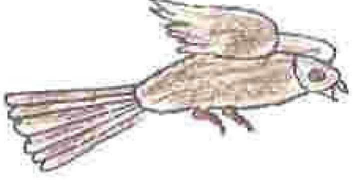


चिड़ै/जानवर



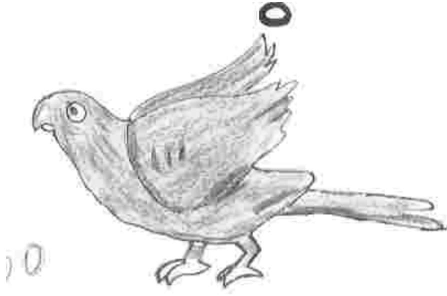
सुग्गा, मेना, कौआ, बगरा,
चिड़ै-चुनमुन के नाम छै।
गैया, बरद, बिलाड़ि, कुतबा
सभके दादी पोसै छै

कौवा



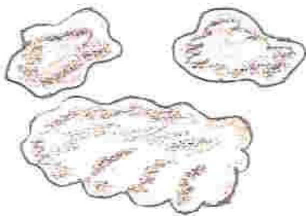
चार पर बैसलौ कार कौआ,
कारी खटखट देह कौआ।
कॉव-कॉव कुचरौ कौआ,
रोटी ल' क' उड़तौ बौआ॥

सुग्गा



हरियर सुग्गा पिजड़ामे
राम राम रटै छै।
कुतरि-कुतरि क' ठोर स'
मिरचाई लौंगिया खाई छै ॥

मेघ



कारी-कारी मेघ लगै छै,
झर-झर झिस्सी झहरै छै।
लक-लक लौका लौकै छै,
झमझम-झमझम बरसै छै।
फह-फह फूँही पड़ै छै,
टपटप-टपटप टपकै छै।

दीयाबाती



सुक-सुकराती दीयाबाती, दादी सूप पिटतै।
छुड़छुड़ी, अनार, मिरचैया, खूब फटक्का फोड़बै।
जगमग जगमग दीप जराक' हुक्का लोली भँजबै।

नानी



माँ के माँ हमरे नानी,
मामा के माँ हमरे नानी।
मौसी के माँ हमरे नानी,
खिस्सा सुनाबै हमरा नानी।

छैठ परमेसरी

आइ छै खड़ना खीर रातिमे, दादी सबके देतै
ढाकी, केरा,कूड़ा ल' क', घाट पर हमहू जेबै
भोरे __भोर सूरज के ,अरघ हमहू देखेबै
ठकुआ, मधूर, केरा, भुसवा हाउप हाउप खेबै



प्रकाश झा

ग्राम+पो.- कठरा, भाया-पुटाई, थाना- मनीगाछी, दरभंगा, बिहार (भारत)

हमर मिथिलाक दर्शन

मैथिल छी हम, मैथिली बजबामे अछि कोन लाज

देश हो वा परदेश ज्यो हम करै छी ओऽ तऽ काज

मिथिला के याद करबैछ सदिखन, विद्यापतिजी माथपर शोभैत पाग।

हमरा लोकनिक पिता जनक, बहिन सीता, बहनोइ छथि राम

कमला-कोशी अछि चरण जकर पखारैत ओ अछि हमर मिथिला धाम।

मैथिल कवि लोकनिक पोथीमे पढ़ैत रहैत छी जे खिस्सा

मनमे उठैत रहैत अछि जिज्ञासा जे आओर कतेक बाकी अछि प्रशंसा

कोइलिक कु-कू राग सुनि मोन म मारऽ...लगैत अछि टीस

तखने किछु काल बाद नम्र हृदय सऽ निकलैत अछि गोसाउनिक गीत

विद्यापति, मण्डन, अयाची आ मैथिलपुत्र प्रदीप

हिनकर लोकनिक सुन्दर लेखन पढ़ि मोनमे जड़ैत अछि शब्दक दीप

एहि मातृभूमिपर पान, मखान, खराम कऽ अछि एकटा इतिहास

बाढ़-बोन के आड़ि-धुरपर बैस, नीक लगैछ मडुआ रोटी- सागक स्वाद।

चहु ओर हरियाली, घर फूसक, लच-लच करैत ओऽ खरहीक टाट।

भोरे सुइत-उठि कए बाधमे सुन्दर लगैत अछि शीतल घास।

घरक चारपर कुम्हर, कदीमा आओर सजमनिक अछि लत्ती पसरल

नजरि नञि लागए कोनो डैनियाहीके, ताहि लऽ एकटा खापैड़मे कारी-चून लेपल राखल।

पछबाड़ि कातक बारीमे राखल एकटा कटही गाड़ी पुरान

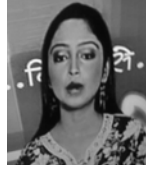
बाबू-कक्का चौकपर बैसल, बाबा धेने छथि दलान।

आब कतेक हम विवरण करबए, शब्दसँ अछि ठेक भरल

मिथिलांचलमे मैथिली भाषाक लेल छी हम मैथिल भिड़ल

मिथिला चित्रकला एखनो धरि केने अछि राज देश-विदेश

संगहि प्रकाशझाक ई प्रस्तुति पढ़ि बुझबइ एकटा छोट सनेस।



प्रीति

(प्रीति अभियंत्रणक छात्रा छथि संगमे नेपाल १ टी.वी. मे दैनिक मैथिली कार्यक्रमक होस्ट छथि।)

१.

बियाह एकटा रिश्ता के एहन अटूट बंधन अछि जकरा सामाजिक मान्यता प्राप्त छैक आ एक खास अवस्था में सब स्वेच्छा सअ अहि बंधन में बंधय चाहैत अछि। प्राचीनकाल में स्वयंबर के प्रचलन छल। यानि महिला के स्वयं वर चुनवाक सामाजिक आजादी छलन्हि। कालांतर में सामाजिक स्थिति में बदलाव आयल। बहु विवाह या दोसर वियाह पहिनुहुं व्याप्त छल मुदा महिला के नहि भेटल ई आजादी। आइयो कमोबेश दोसर वियाह पर समाज महिला के प्रति ओतेक उदार शायद नहि अछि जतेक उदार ओ पुरूषक दोसर वियाह पर अछि।

दोसर वियाह के बारे में जौं सच पुछी त समाज पुरूख के संग दैत अछि। पहिने त समाज में बहु वियाहक प्रथा छल मुदा आब यद्यपि एकरा मान्यता नहि छैक तथापि समाज सँ ई प्रथा पूर्णत: खत्म नहि भेल अछि। दोसर वियाह जौं विधुर द्वारा या कोनो खास विशेष परिस्थिति में कयल जाय त एकर कारण बुझवा में अबैत अछि पर यदि मात्र शौक, दहेजक लोभ Sया छद्म आधुनिकता के होड़ में कयल जाय त ई अक्षम्य अपराध अछि। अहि मादे समाज आ स्वयं पुरूष के अपन सोच बदलबाक आवश्यकता अछि।

समय बदलल संगहि लोक के सोच सेहो बदलल अछि। मुदा एखनो नहि बदलल अछि महिला के मादे पुनर्विवाह या दोसर वियाह पर समाजक नजरिया। जौं पुरूष क सकैत छथि दोसर वियाह त किएक नहि परित्यक्ता, विधवा महिला के सेहो भेटबाक चाही ई अधिकार। कतेक नींक महिला होयत जौं जवान के संतानहीन विधवा के पुनर्विवाह के अनिवार्य बना देल जाय आ बाकियो के स्वेच्छा पर छोड़ि देल जाय। जौं ई भ सकय संभव त नहि सिर्फ समाज सअ महिला आ पुरूषक भेदभाव किछु कम होयत अपितु बल्कि समाज द्वारा उपेक्षित आ एक तरहे त्यागल महिला पुन: समाज के मुख्यधारा में शामिल भय अपन जीवनक नैराश्य सअ मुक्ति पाबि सकलीह।

२.

कोजागरा पावनि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा के मनाओल जाइत अछि। नवविवाहित लड़का लेल अहि पावनि के विशेष महत्व अछि या कहू त ई पावनि खासकय हुनके सभक लेल छन्हि। नवका बरक लेल ई पावनि तहिने महत्वपूर्ण अछि जेहन नवविवाहिता लेल मधुश्रावनी। फर्क यैह अछि जे मधुश्रावनी कतेको दिन लम्बा चलैय बला पावनि अछि आ अहि में नव कन्या लेल बहुत रास विधि-विधान अछि जखनकि कोजागरा मुख्यतःमात्र एक दिन होइत अछि।

जहिना मधुश्रावनी में कनिया सासुरक अन्न-वस्त्रक प्रयोग करैत छथि तहिना कोजागरा में बर सासुर सं आयल नव वस्त्र धारण करैत छथि। कोजागरा के अवसर पर बर के सासुर सँ कपड़ा-लत्ता, भार-दोर अबैत छन्हि। अहि भार में मखानक विशेष महत्व रहैत अछि। यैह मखान गाम-समाज मे सेहो बरक सासुरक सनेस के रूप मे देल जाइत अछि। सासुर सँ आयल कपड़ा पहिरा बरक चुमाओन कयल जाइत अछि। बरक चुमाओन पर होइत अछि बहुत रास गीत-नाद।

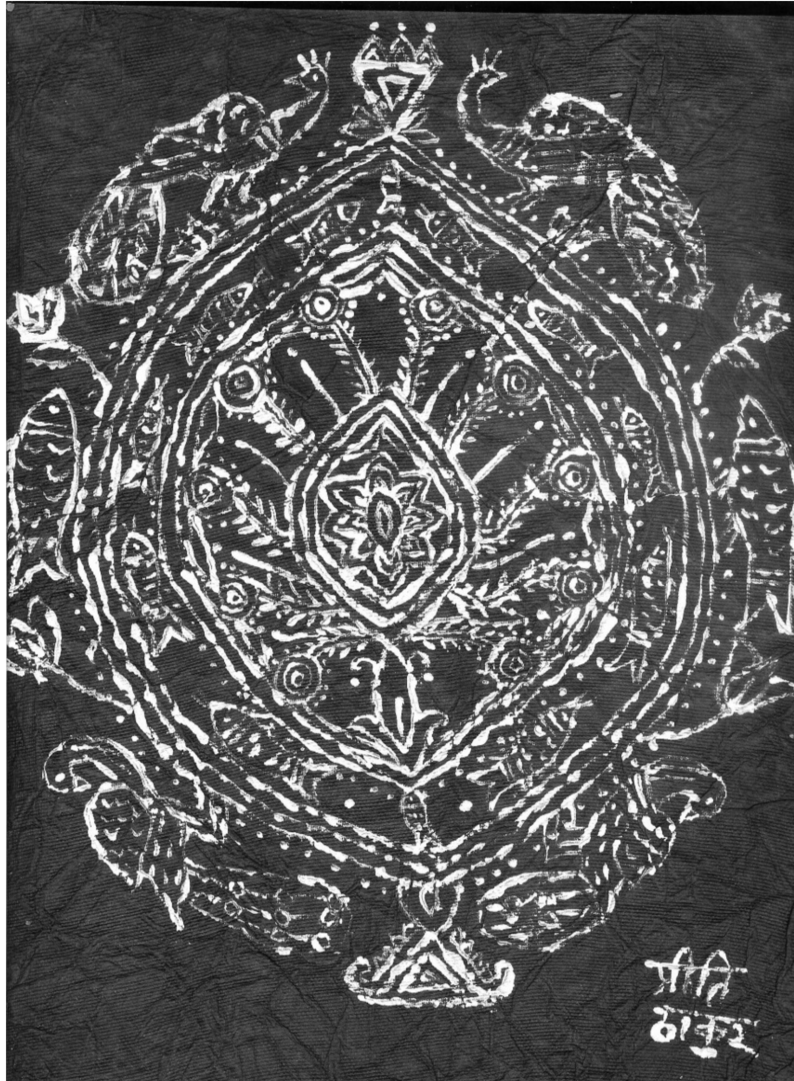
कोजागरा में नींक जकाँ घर-आंगन नीपी-पोछि दोआरी सँ भगवतीक चिनवारि धरि अरिपन देल जाइत अछि। भगवती के लोटाक जल सँ घर कयल जाइत अछि। चिनबार पर कमलक अरिपन दय एकटा विटा में जल भरि राखि ओहि पर आमक पल्लव राखि तामक सराई में एकटा चांदी के रूपैया राखि लक्ष्मी के पूजा कयल जाइत अछि। राति में अधपहरा दखिक बरक चुमाओन कयल जाइत अछि। आंगन में अष्टदल अरिपन द ओहि पर डाला राखि कलशक अरिपन द ताहि में धान द कलश में आमक पल्लव राखल जाइत अछि। एकटा पीढ़ी पर अरिपन देल जाइत अछि जे अष्टदलक पश्चिम राखल जाइत अछि। चुमाओनक डाला पर मखान, पांच टा नारियल, पांच हत्था केरा, दही के छांछ, पानक ढोली, गोटा सुपारी, मखानक माला आदि राखि पान, धान आ दूबि सँ वर के अंगोछल जाइत अछि तहन दही सँ चुमाओन कयल जाइत अछि। चुमाओन काल में बर सासुर सँ आयल कपड़ा पहिरि पीढ़ी पर पूब मुँहे बैसैत छथि।

पुरहरक पातिल के दीप सँ वर के चुमाओन सँ पहिने सेकल जाइत छथि। फेर कजरौटा के काजर स ँ आँखि कजराओल जाइत छन्हि। तकर बाद पाँच बेर अंगोछल जाइत छन्हि। तखने होइत छन्हि चुमाओन। चुमाओनक बाद वरकैं दुर्वाक्षत मंत्र पढ़ि कम सँ कम पाँच टा ब्राह्मण दूर्वाक्षत दैत छन्हि। फेर पान आ मखान बांटल जाइत अछि। आ अगिला दिन धरि मखान गाम घर में बाँटल जाइत अछि।



प्रीति ठाकुर

गाम जगेली पूर्णियां





प्रेमचन्द मिश्र

गाम बरहारा, जिला-मधुबनी

अनाम कथा

पी. सी. मिश्र गामक एकटा कम पढ़ल-लिखल युवक छथि, उम्र करीब २४ वर्ष। ६ साल पहिने गामसँ दिल्ली आयल छलाह। संघर्षरत जीवनसँ सफर करैत आब ठीक-ठाक अवस्थामे छलाह यानि ताहि समयमे एकटा मध्यम् वर्गक युवककेँ तनख्वाह जे हैत से तनख्वाह पावैत छलाह आ संगे गामसँ अयलाक बाद दिल्लीमे किछु नीक लोकक संपर्कमे रहलासँ अंग्रेजी फर्राटेसँ बजैत छथि यानि कि अंग्रेजी बजैत काल कियो नहि कहि सकैत छनि जे ओ पढ़ल-लिखल कम छथि। ताहि कारण लोककेँ कहैत छथिन सत्यता- जे हम पढ़ल-लिखल कम छी- तँ लोक मजाक बुझैत अछि। एकटा प्राइवेट कम्पनी, जे ट्रैवेल एजेन्टक काज करैत अछि, मे पी.सी.मिश्र रंजीतक, जे हुनकर रिश्तामे भागिन छथिन मुदा कम्पनीमे उच्च पदपर छथिन्ह, केर संग कज करैत छथि। पी.सी.मिश्र विवाह योग्य भऽ गेल छथिन, पिताजी बुढ़ापामे प्रवेश कऽ लेने छथिन। ओऽ चाहैत छथि जे जहिना पैघ भाई सभक विवाह भऽ गेल छनि, हुनको विवाह कऽ देल जाय। कारण एकटा छोट भाई सेहो छनि, रुपैय्या पाइ कमा लैत छथि आ अपन आब कोन भरोस। कखन छी कखन नहि छी। चुंकि जमाना बदलि गेल छैक, ताहि हेतु पी.सी.मिश्रासँ संपर्क केलन्हि जे लोक सभ बहुत परेशान करैत छथि अहाँक विवाह लेल, से की कहैत छी। हुनकर जवाब छलनि, जे पिताजी हमर किछु शर्त अछि विवाहमे। तँ पिताजी कहलखिन- ठीक छै, रातिमे भौजीसँ गप्प करायब, ठीक छै। रातिमे भोजनक बाद पी.सी.मिश्रा जी भौजीक द्वारा अपन शर्त पठेलन्हि- एक विवाहमे रुपैय्या पैसाक आदान-प्रदान नहि, यानि बिना पैसाक विवाह-आदर्श विवाह। दोसर लड़की पढ़ल-लिखल आ अंग्रेजी बजनाय अनिवार्य ताकि बच्चाक शिक्षा उच्च होय। तेसर द्विरागमन जल्दी होय ताकि साल भरि जे अपन संस्कार यानी विध-विधानमे कम खर्च होयत। चारिम जिनका ओहिठाम विवाह होय ओ हमर तुलनामे गरीब होय ताकि हुनका ओहिठाम सम्मान बेसी भेटत।

ई सभ शर्त सुनि हुनकर पिताजी कहलनि- हम शर्तसँ बहुत प्रसन्न छी, लेकिन सभ शर्त हमरासँ भऽ सकत मुदा दोसर शर्त हमरा विश्वास नहि अछि की गामक लोक पूरा करए देत वा नहि। ताहि हेतु कहबनि जे एहन कुनू भेट जानि तँ ओऽ हमरा कहि देत। ई बात रंजीतकेँ पता लगलनि, तँ ओहो सोचलन्हि जे कोनो सम्पर्कक आदमीसँ पी.सी.मिश्राक विवाह करल जाय तँ उत्तम। ई दू-चारि ठाम बजलाह जाहिमे "श्रीमति महारानी मिश्रा" जे रंजीतक भाभी आ पी.सी. मिश्राक रिश्तामे भौजी छलथिन केँ सेहो पता लगलन्हि। अपन छोट बहिन अनीता झाक ननदि छलथिन सोनी आ हुनकर उम्र १९ साल रहनि। ओऽ अपन बाबूजी श्री भरत झाकेँ कहलथिन जे ई कथा मुफ्तमे भऽ जाएत। ओऽ अपन जमाय दिलीप झाकेँ फोनसँ संपर्क केलन्हि। दिलीप झाक बाबूजी १० साल पहिने स्वर्गवासी भऽ गेल छथिन, ताहि हेतु बहिन सोनीक विवाह दिलीप झा आ विनय झाकेँ करबाक छनि। ई सभ बात सुनि दिलीप झा अपन पत्नी अनीताकेँ कहलथिन जे ई काज बुझू मँगनीमे भऽ जाएत। ई बात सुनिते अनीता कहलथिन जे अहाँ देरी नहि करू आ जयपुर जाऊ। बुझू लक्ष्मी चलि कऽ आबि गेल छथि। ई बात ओऽ विनय झाकेँ सेहो कहलन्हि आ सोनीक दूटा नीक फोटो लऽ जयपुर आबि गेलाह। आब महारानी रंजीतक द्वारा पी.सी.मिश्राकेँ जयपुर बजेलन्हि। होलीक बहन्ना बना कय अपन दफ्तरसँ रंजीत आ पी.सी.मिश्रा जयपुर गेलाह। साँझक हवाई जहाजसँ जयपुर पहुँचलाह। पहुँचलाक उपरान्त चाय-पानिक बाद महारानी पी.सी.मिश्रासँ बजलीह- बौआ विवाह कहिया करब, आब तँ लगन आबय बला छैक आ विवाह योग्य भय गेल छी। हम काकासँ बात करू? पी.सी.मिश्र हँसैत कहलन्हि- जे भौजी हमर किछु शर्त अछि, से जँ पूरा भय जायत तँ हम विवाह एखन

कय लेब। ई गप सुनि महारानी कहलथिन बुझू बौआ जे अहाँक विवाह भऽ गेल आ अपन बातसँ पलटब नहि। पी.सी. एकरा एकटा मजाक बुझि ठहक्का लगा कऽ हँसऽ लगलाह। तावत लगभग रातिक ११ बाजि गेलैक। महारानी कहलथिन- चलू खाना खाऽ लिअ, रुकू हम खाना लगावैत छी। रातुक भोजनमे दू तोर भेल, एक बेर भोजनक लेल बैसलाह पी.सी.मिश्रा, रंजीत ठाकुर आ रामानन्द मिश्रा। भोजनक उपरान्त ओऽ तीनू गोटे पहिल तलपर गेलाह सुतक लेल। दोसर बेर फेर भोजन लागल जाहिमे भरत झा, दिलीप झा, राजू झा व नूनू झा ___राजू आ नूनू झा महारानीक छोट भाई छथिन-, फेर सभ अपन-अपन बिस्तरपर सुतक लेल गेलाह। भोर भेल चायक आयोजन भेल। सातो गोटे भरत झा, दिलीप झा, रामानन्द मिश्रा, राजू झा, नूनू झा, रंजीत ठाकुर, पी.सी.मिश्रा व महारानी चायक पश्चात् गप्प करए लगलाह। महारानी बजलीह-बौआ विवाह कहिया तक करब। मजाकक स्वरमे पी.सी.मिश्रा बजलाह- देखियौक आब जल्दी करब, कारण जे बाबूजीक फोन आयल छल जे लोक सभ परेशान करैत अछि विवाहक लेल, तँ आब जल्दी भऽ जाएत। ई सुनिते भरत झा बजलाह जे कतेक पैसा लेताह। पी.सी.मिश्रा कहलथिन जे एहन कोनो बात नहि छैक। ई शब्द पूरा होइसँ पहिने बीचेमे रंजीत बजलाह- लड़की जँ नीक भेटत तँ कोनो पाई-रुपैया नहि। ई शब्द सुनिते पाछूसँ महारानीक माय बजलीह- जे कही तँ अनीताक ननदिसँ करा दियौन, लड़की तँ बड़ भव्य छथिन, सज्जन-भव्य व धार्मिक प्रकृतिक घरक, सभटा काज आ लूरि-व्यवहार जनैत छथिन्ह। ई बात पूरा भेलाक बाद महारानी बजलीह जे ओझा ओतेक पाई कतएसँ देथिन्ह। ताहिपर रंजीत बजलाह- पाइक कोनो प्रश्न नहि छैक, हुनकर किछु शर्त छन्हि ओऽ चारूटा शर्त दोहरेलन्हि। ताहिपर दिलीप झा बजलाह- हम चारू शर्तसँ परिपूर्ण छी। ई बात सुनि रामानन्द मिश्र बजलाह जे जल्दीमे काज नहि होयबाक चाही। पहिने ई शर्तपर चिन्तन कैल जाऊ। कारण जे सवाल दू टा जिनगीक अछि आ शर्तक कोनो जवाब नहि अछि। एहन सोच तँ बहुत कम लोकक होइत छनि, ताहि हेतु पुनर्विचार करू।

ई बात पूरा भेलाक बाद दिलीप झा बजलाह जे लड़कीक फोटो देख लेल जाओ आ हमहु पढ़ल-लिखल छी आ पेशासँ एकटा प्राइवेट शिक्षक छी ताहि हेतु शिक्षाक महत्व बुझैत छी। ई बात सुनिते भरत झा बजलाह- रंजीत ई (फोटो दैत) लिअ आ अहाँ सभ देख लिअ। हम भीम बाबू (समधि) सँ बात कऽ लैत छी। बिच्चेमे रंजीत फोटो लैत आ पी.सी.मिश्राक हाथ पकड़ैत पहिल तलसँ ऊपर छतपर गेलाह आ मजाकक तौरपर बजलाह जे देखू भाई जँ अहाँ नहि करब तँ हमही दोसर विवाह कय लेब। हमरा तँ लड़की बहुत पसन्द अछि। ई कहैत पी.सी.मिश्रकेँ हाथ फोटो पकड़ेलन्हि। फोटो बहुत आकर्षक छल। पी.सी.मिश्र कहलथिन- फोटो तँ बहुत आकर्षक अछि, हमरा किछु सन्देह भऽ रहल अछि। रंजीत उत्तर देलन्हि- भाभी झूठ नहि कहतीह। संदेहक मतलब अछि भाभीपर शक करब। ताहिपर पी.सी.मिश्रा जवाब देलन्हि- हम शकक नजरिसँ नहि देखैत छी, चलू जे छथि, ई तँ हमर शर्तमे नहि शामिल अछि। लेकिन लड़की पढ़ल-लिखल अवश्य चाही। सुन्दर-खराब कोनो बात नहि अछि ई बात करैत दुनू नीचाँ अएलाह। एतबामे महारानी पुनः चाह अनलन्हि, फेर चाहक चुश्की लैत रंजीत बजलाह- देखू सभ बात बुझू भऽ गेल। आगू बात जे बरियाती ६५-७५ तक जाएब आ सत्कारमे कोनो तरहक शिकायत नहि। ई बात सुनैत दिलीप झा बजलाह जे सरकार हम गरीब छी, हमरासँ संभव नहि अछि ७५ टा बरियाती, हमरा किछु छूट देल जाऊ! लेकिन सत्कारमे कोनो त्रुटि नहि होएत। ई बातक बिच्चेमे महारानी बजलीह जे लड़काकेँ एकटा अंगूठी आ दू भरीक सोनाक चेन (सीकरी) आ लड़कीक नामसँ ५१,०००/-क फिक्स डिपोजिटक कागज ओझाजी दऽ देथिन, बरियाती ५१ टाक बात फाइनल, बस आब ने बौआ। ने ई किछु बजताह आ ने ओझा किछु बजताह! आर खान-पीन दिन घरक प्रत्येक सदस्यकेँ नीक आ ५ टूक कपड़ा। बस रंजीत आब किछु नहि बाजू आ ओझाजी अहूँकेँ एतेक तँ करए पड़त। रंजीत किछु बजैक उत्सुकता देखबैत छलाह की बिचमे भरत झा बजलाह जे फेर विवाहसँ एक साल तक दुनू दिस लड़की वलाक काज छैक, रंजीत ताहि हेतु आब बुझू जे ई बहुत महग भऽ गेल।

भरत झा बजलाह जे चलु कुल मिलाकय बात बरियातीक ६५ टा आ आब दिनक निर्णय कएल जाएत। तखनहि प्रेमचन्द्र बजलाह जे ई निर्णय गामपर बाबूजी करताह कारण जे हमरा बहुर सर-कुटुम छथि आ सभकेँ सूचना (नोत-हकार) सेहो देनाय छैक। भरत झा बजलाह- ई सत्य अछि, कोनो बात नहि, हम दिन ताकैत छी आ फोन कय देबनि वा भेँट कऽ लेल जाएत। बस किछु समय पश्चात् पतराक अनुसार दिन भेल- २०, २१ अप्रील आ २,३ मई। ई सूचना देल गेल, फेर बड़हरा (गाम)सँ किछु दिन बाद सूचित भेल जे २१ अप्रील क ठीक रहत, तदुपरान्त प्रेमचन्दकेँ पिताजी गामसँ कहलथिन जे कपड़ाक खरीदारी दिल्लीमे कऽ लिअ आ जेवर सभ एहिठाम (गाममे) खरीदब। कपड़ा खरीदल गेल, विवाहक, कनियाक लेल, कनिया बहीन लेल, भौजीक लेल, मायक लेल आ विधकरीक लेल आ घरक प्रत्येक सदस्यक लेल।

२१ अप्रील कय दिनक विवाह छल। कन्या पक्ष आ वर पक्षक बीच सहमति छलनि जे दिनक विवाह छैक ताहि हेतु हाथ धरएके लेल समयसँ पहुँचब आ बात भेल जे दू आदमी हाथ धरैक लेल अएताह। एम्हर वर पक्षक ओहिठाम सबेरेसँ चहल-पहल छल। गाम-गामक बच्चा वा स्त्रीगण दू दिन पहिनेसँ आयल छल। पुरुष लोकनि सेहो सबेरे पहुँचलाह कारण जे दिनक विवाह छै ताहि हेतु बरियाती सेहो जल्दी जयबाक विचार छल आ दूरी वा सड़कसँ सभ अवगत छलाह। गामक धाय-माय सेहो एक अँगनासँ दोसर अँगना कय रहल छली। ताबत धरि लगभग २ बाजि गेल घड़ीक अनुसार लेकिन कन्या पक्षक कोनो पता नहि देखि बच्चा सभहक भीतरक उत्साह कम भऽ रहल छल! करीब चारि बजेक लगभग एकटा आदमी राजू, दिलीप झाक जेठ सार, संवाद लऽ कय अयलाह जे किछु विलम्ब भय गेल ताहि लेल क्षमा करब। लगभग ५ बजेक करीब एकटा मार्शल (गाड़ी) दरबाजापर लागल। ओहि गाड़ीसँ चारि टा सज्जन उतरलाह आ एकटा चारि सालक बच्चा सेहो, कुल मिला कय पाँच! ई देखितहि दाइ-माइ कनफुसकी करए लगलीह जे कहने छलथिन दू आदमी आ पहुँचलाह पाँच! पुरुष वर्ग आगन्तुकक सेवामे जुटलाह। विश्वनथवा सभकेँ पानिसँ पएर धोबि कय अपन काज सम्पन्न कयलक। तावत कियो ठंढ़ा पानि अनलक आ ई काज सभ पूरा भेलाक बाद पुरुष वर्ग बजलाह जे अँगनामे दाय-माय सब कने अहाँ सभ अपन काज जल्दी करू, कारण जे पहिलेसँ विलम्ब भऽ गेल अछि। अँगनामे गोसाउनिक आ ब्राह्मणक गीत शुरू भेल। सभ दाय-माय अँगनाक माँझमे मरबापर गीत गावैत छलीह तावत एकटा बच्चा एकटा लोकल ब्रिफकेश लऽ कय पहुँचल। प्रेमचन्द पश्चिम दिशाक घरमे पलंगपर बैसल भौजी आ बहिनसँ वाच कय रहल छलाह। ब्रिफकेशकेँ देखि विभा (बहीन) भौजीसँ कहलथिन अहाँ सभ बात करू, हम कनी ब्रिफकेशक समान देखैत छी आ ओऽ मरबा दिश निकलि पड़लीह! तावत धरि एकटा बुजुर्ग महिला ब्रिफकेश खोललन्हि। प्रेमचन्द्रक नजरि पड़ि गेल तौलियापर जे पीयर रंगक दु-सूतीक छल। ई देखते दाय-माय एक दोसरकेँ मुँह दिश देखऽ लगलीह जे ई केहेन आदमी अछि, आयल अछि मार्शलसँ आ कपड़ा देखियौ। तौलियाकेँ देखिते प्रेमचन्दक क्रोध आसमानकेँ छूबि लेलक। ओऽ दू डेगमे बरन्डा फानि कय मरबापर पहुँचलाह आ कपड़ा साड़ी आ ब्रिफकेश देखैत बजलाह जे दाय-माय ई बन्द करू आ गीत-नाद सेहो। हम विवाह नहि करब। ई सुनिते बिभा हुनका सम्हारैत बजलीह, बौआ की भेल अहाँकेँ? अपन क्रोधकेँ शान्त करू, दलानपर लोक सभ की कहताह। दू मिनटमे अँगनामे गीतक बदलामे सन्नाटा भय गेल। आब दाय-माय गीत की कहती, सभ कहलथिन जे अहाँ चुप रहू, की हेतै। अहाँ एतेक खर्च कएलहुँ, तिलक नहि लेलहुँ आ कपड़ा वा समानक लेल की हल्ला करैत छी। प्रेमचन्दक जवाब छलनि, जे हम विवाह नहि करब। ई बात भए रहल छल की गीतक अवाज बन्द सूनि ४-५ टा बुजुर्ग पुरुष वर्ग दरवाजासँ अँगना पहुँचलाह आ ई दृश्य देखि सभ हुनका बुझाबय लगलाह आ कहलथिन दाय-माय अहाँ सभ आगू काज करू! आ ओ लोकनि प्रेमचन्दकेँ पुनः पछबरिया घरमे लय गेलाह। किछु पुरुष वर्ग आगन्तुक देख-भाल कय रहल छलाह। पुरुष-वर्ग मे सँ एकटा काका पुछलथिन जे बौआ की भेल, शान्तिसँ बाजू। बिभा एकटा गिलासमे पानि दैत कहलन्हि जे कपड़ा सभ नीक नहि छैक काका। काका बजलाह जे ई तँ छोट बात अछि। ई तुक्षताक प्रतीक छी! अहाँ शान्त रहू, अहाँकेँ केहेन चाही हम मँगवा दैत छी। एक घंटामे बजारसँ उपलब्ध भय जायत! प्रेमचन्द जवाब देलखिन जे काका, बात कपड़ाक नहि अछि, कारण जे हम स्पष्ट कहने छलियनि जे हमरा किछु नहि चाही। लेकिन जँ अपने किछु अनबए तँ समान नीक कम्पनीक चाही। ई तँ हमरा बेवकूफ बनओलथि! हमरा बातक दुःख अछि! जँ अपनेकेँ हमरा बातपर विश्वास नहि अछि तँ भौजी (महारानी) केँ पुछल जाय! आ अबाज देलखिन यै भौजी, अहाँ एम्हर आऊ! भौजी शब्द सुनिते महारानी उपस्थित भेलीह आ बजलीह जे बौआक बात १००% सही छनि। कन्यागत गलत काज कयने छथि, एहिमे कोनो सन्देह नहि! ई बात पूरा होमयसँ पहिने बिच्चेमे प्रेमचन्द बजलाह जे हम विवाह नहि करब कारण जे कि पता ? ओ हमरा लड़कीमे सेहो ठकताह। लेकिन बात आब इज्जत आ मान-मर्यादाक अछि, जँ विवाह नहि होएत तँ दुनू पक्षक इज्जत बर्बाद भय जायत! एक-दिश इज्जत, मान-मर्यादा आ दोसर दिशसँ दू-टा जिनगीक प्रश्न। समस्या जटिल अछि, कोनो सन्देह नहि! लेकिन छी तँ मैथिल आ मान-मर्यादासँ पैघ जिनगी नहि अछि। जे मान-मर्यादा ककरो लेल अभिशाप बनि जाइत अछि! हम सभ मैथिल जे किछु छी, बाप-दादाक पाग छी, जिनगीक कोनो मोल नहि! मोनमे एक हजार प्रश्न अबैत अछि जे हम मैथिलगण विश्वमे सभसँ बेशी चतुर छी आ तखनो सभसँ पाछू छी, तेकर की कारण अछि? हमरा नजरिमे जे हम सभ भूतकेँ बेशी महत्व दैत छी आ भविष्यकेँ गला दबा दैत छी, सेहो बहुत आसानीसँ हमरा लोकनिकेँ कनियो हिचकिचाहटि नहि होइत अछि! प्रेमचन्दक एकेटा उत्तर छलनि जे किछु बीति जाएत, हम विवाह नहि करब। कारण जे हमरा आब हुनका सभ (कन्यापक्ष) पर विश्वास नहि अछि। दाय-माय गीत तँ गबैत छलीह लेकिन

श्वरमे उदासी गीत छल। गोसाउनिक (हे जगदम्बा जगत माँ काली प्रथम प्रणाम करै छी हे), लेकिन श्वर सुनयमे लागैत छल जेना उदासी गाबैत छथि। अँगनाक माहौल खराब भय गेल छल। लगभग एक घंटा बीति गेलाक उपरान्त जखन कोनो तरहसँ मानैत नहि देखि भीम मिश्र (प्रेमचन्दक पिताजी) बजलाह- आब हमरोसँ बर्दाश्त नहि भय रहल अछि आ हमरो निर्णय अछि से अहाँ सुनू- जँ अहाँ विवाह नहि करब तँ हम आत्म हत्या कय लेब। आब अहाँक हाथमे गेंद अछि! निर्णय अहाँकेँ लेबाक अछि जे की करब। पहिल निर्णय विवाह ओहि लड़कीसँ करब आकि दोसर निर्णय हमर दाह-संस्कार करब? कारण हम अपन जिबैत अपन पुरुखाक इज्जत नहि गवाँ सकैत छी। ई कहि ओ ओहिठामसँ उठि चलि पड़लाह। हुनका उठिते सभ पुरुषवर्ग ठाढ़ भय गेलाह आ एकक बाद एक दरबज्जा दिस बिदा भेलाह। हुनका (भीम मिश्र) केँ बुझबैत जे अहूँ एना नहि करू, ओ बात मानताह अहाँक आ अहाँसँ पैघ हुनकर अपन भविष्य नहि छनि। सभ मड़वापर ठाढ़ गप्प करैत छलाह। एतबेमे प्रेमचन्द घरसँ निकललाह आ आँखिमे दहो-बहो नोरक मुद्रामे पिताक पएर पर खसैत बजलाह जे हमरा माफ करू आ करुण स्वरमे बजलाह, जखन श्रवण कुमार मातृ-पितृक लेल अपन प्राण न्योछावर कय देलन्हि तँ हम अपन पिताक लेल अपन भविष्यक बलिदान दैत छी। लेकिन किछु शर्त अछि, भीम मिश्र बजलाह- मंजूर अछि। पहिल शर्त हम कन्यागतक समान नहि लेब दोसर हुनकर गाड़ीपर नहि जाएब तेसर देल गोरलगाइक रुपैया नहि लेब। ई शब्द सुनैत सभ दाय-माय समेत उपस्थित पुरुषवर्ग आ नेना-भुटकाक हृदय सेहो करुण भय गेल! प्रेमचन्दकेँ उठबैत भीम मिश्र करुण स्वरमे बजलाह- हे दाय-माय। जल्दी-जल्दी अपन काज करू। हजामकेँ अबाज दैत कहलथिन- अहाँ जल्दीसँ स्नानी चौकी धो कऽ आनू। फेर अबाज देलखिन- भोजी पाहुनकेँ जल्दीसँ खानाक व्यवस्था करू! ई शब्द सुनितहि सभ बिहारि जेना काज करए लगलाह आ लगभग २०-२५ मिनटमे सभटा काज भऽ गेल। एतबामे जयदेव मिश्र बसकेँ दरबज्जापर लगबैत सभ बरियातीकेँ बसमे बैसबैत बजलाह- भीम भैया हम बसमे सभकेँ बैसा लेलहुँ। अहाँ- मार्शल दिश इशारा करैत- बैसू। प्रेमचन्दक आँखिसँ गंगा-जमुनाक धार जकाँ नोर बन्द होइके नाम नहि लैत छलनि। बड़की भौजी एक आँखिमे काजर कऽ आबथि जा दोसर आँखिमे करतीह ताधरि ओ काजर नोरक रूपमे परिवर्तित भय नीचाँ चलि आबनि। हुनकर बुझ्झु अधा आँचर नोरमे भीजि कय गुलाबी साउथ शिल्कक साड़ी काजरमय भय गेलनि आ हुनका किछु खबरि तक नहि! एहि तरहेँ ओहिठाम हाथधरीक विध पूरा भेल आ बर आ बरियाती प्रस्थान कयलक!

ड्राइवर गाड़ीकेँ तेज चलाबयके प्रयास करैत लेकिन गामसँ तीन कि.मी. क बाद रस्ता सेहो नीक नहि। गाड़ी आगू जायके नाम नहि लैत छल जेना सभटा केँ मुहछी मारि देने हो। कोनो तरहेँ वर आ बरियाती गन्तव्य तक पहुँचल। ओहिठामक दृश्य तँ बहुत रमणीय छल। नीक पंडाल जे बहुत नीक सुसज्जित नीक-नीक मधुर स्वरमे मैथिली कैसेट सँ स्टीरियोक अवाज मोन मोहित कय रहल छल। ई दृश्य देखि बरियाती लोकनिकेँ विश्वास नहि भेलनि जे एहिठाम हमर बैसबाक व्यवस्था अछि! ओ सभ तुलना करए लगलाह ब्रिफकेश आ कपड़ाक जे वरक लेल गेल छल आ ओहि सजावटक। हुनका लोकनिकेँ विश्वास नहि होइत छलनि जे समान एहिठामसँ गेल अछि। तावत अवाज आबए लागल जे अपने सभ बैसल जाऊ, सरकार ठाढ़ कियैक छी? ओम्हर सँ दिलीप झाकेँ कियो अवाज देलखिन जे हजमा कतऽ गेलाह। बरियातीकेँ पएर धो कय शुद्धिकरणक विध पूरा करबाऊ! पंडालमे सभटा आधुनिक सुविधा उपलब्ध छल! किछु नवतुरिआ लोकनि पेपसी आ पेयजल तँ कियो बिगजीक समान बन्द डिब्बामे ल कय उपस्थित भेलाह! बरियाती लोकनि शहरी मजा लऽ रहल छलाह। लेकिन प्रेमचन्दक आँखिसँ नोर बन्द हो से नामे नहि लऽ रहल छल। ओ मोने-मोन अतेक दु:खी छलाह जेना शमसान घाटमे कोनो मुर्दाक अन्तिम संस्कार हो। करीब बीस मिनटक बाद गामक नवतुरिआ लड़की आ नेना भुटका पंडालक पाछूसँ अबाज देलथिन जे वरकेँ कहियन्हु कनि पागक लटकैत भागकेँ आगूसँ उठा देथिन ताकि ओ लोकनि वरकेँ देखि सकथि। किछु नवतुरिआ लड़का सभ मजाक करैत छल वरक प्रति- एतवामे आज्ञा-डाला आयल आ ई विध सेहो पूरा भेल। ओम्हर परिछनक लेल आय-माय अयलीह आ परिछनक लेल प्रेमचन्द बिदा भेलाह मुदा हुनकर डेग आगू नहि होइन। चलथि जेना महुअकक चालि हो, किछु जवान लड़की मजाकमे बाजथि जे बड़ शान्त आ सुशील छथि वर, तँ कियो किछु जे खाना खाऽ कय नहि आयल छथि। प्रेमचन्द कोनो जवाब नहि देथि जेना गामपर सभटा क्रोध छोड़ि आयल होथि। कारण छल पिताक देल वचन जे जाधरि अपने लोकनि रहबए हम किछु नहि बाजब आ तकर बाद जँ आगू ओ गलती करताह तँ हम नहि छोड़बनि हुनका सभकेँ। परिछन भेल आ विवाहक शुरुआत भेल। ओम्हर बरियाती लोकनिक स्वागतमे कोनो कमी नहि। सभ समान पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध छल। विवाहक अन्तिम विध छल सोहाग देब। सभ बरियातीगण प्रस्थान करत। एहि बीचमे दुनू पक्ष वार्ता कयलनि जे द्विरागमन संगे होय कारण भीम मिश्रकेँ कनी डर भऽ रहल छलनि, लोककेँ चिन्हबामे देरी नहि लगलनि, जे एकरा

सभकेँ लड़काकेँ एकटा नीक कुरता देबाक उपाय नहि छैक आ पंडाल लगैत अछि जेना पैघ घरक काज हो। विवाह तँ भेल मुदा दू सालक बाद अगर द्विरागमन हो तँ ई किछु देत तँ अपमान वा कलहक कारण। द्विरागमनक दिन पक्का भऽ गेल एगारहम दिन। सोहागक उपरान्त श्री भीम मिश्र प्रेमचन्दकेँ बजाकय एकान्तमे ५-७ टा गणमान्यक संग बुझेलखिन जे संगे द्विरागमनक हम बात कय लेलहुँ आ अहाँकेँ इच्छा अछि जे किछु नहि लेबाक अछि तँ आब ओ लड़की हमर आदमी भेलीह, पुतोहु भेलीह। हम अपन आदमीकेँ एहनठाम नहि छोड़ब कारण जे ओ हिनके रूपमे रंगि जेतीह। ई सभ बुझबैत श्री भीम मिश्र प्रेमचन्दकेँ भरोसा दैत कहलथिन जे हम अपन पुतोहुकेँ अपना रंगमे रंगि लेब। अहाँ चिन्ता नहि करब आ चतुर्थी दिन गाम जरूर आयब तखन बात करब। ई शब्द कहैत ओ विदा भय गेलाह।

प्रेमचन्द आब कोबरघरमे छथि। विधकरी आ किछु घरक सदस्यगण सेहो छथि। ओ उदासीक कारण पुछलथिन। ओ किछु नहि बजलाह। करीब ५-७ बेर अलग-अलग दाय-मायक शब्द सुनिकय उत्तर देलखिन जे एखन नीन्द आबि रहल अछि, भोर भेलापर बात करब। ई बात सुनैत सभ एका-एकी घरसँ बाहर भेलीह। कोबरमे नीचाँमे बिस्तर लगाओल गेल। प्रेमचन्द सुतबाक प्रयास जरूर केलन्हि, मुदा आँखिसँ नोर पुनः आबय लगलनि। करीब २०-२५ मिनटक बाद एकटा जनानी कोबरमे प्रवेश कएलक लेकिन हुनका ऊपर कोनो प्रभाव नहि पड़लनि, आँखिसँ अश्रु पूर्ववत निकलैत रहलनि। ओ जनानी किछु काल धरि ठाढ़ रहल आ तावत पाछूसँ अवाज भेल जे प्रणाम करू, ठाढ़ भय की कय रहल छी। मुदा प्रेमचन्दक ऊपर कोनो असर नहि कारण ओ पहिने कहने छलाह जे हम भोर भेलापर किनकोसँ बात करब। तखने हुनका बुझना गेलनि जे हमर पएरकेँ कियो स्पर्श कय रहल अछि आ लहठीक खन-खनाहटि सेहो आयल। ई अवाज सुनैत आ पएरक स्पर्श अनुभव करैत ओ पहिनेसँ बेशी अनभिज्ञताक परिचय देलखिन आ जहिना छलाह ओहिना रहि गेलाह जेना हुनका कोनो खबरि नहि। बस पएर स्पर्शक दू-मिनट बाद ओ जनानी वापस भेल। ओ मोनमे सोचैत छल जे ई जरूर नव विवाहिता छलीह। लेकिन ई बात गुप्त राखएमे नीक जे हम सुतल छलहुँ, हमरा कोनो बातक खबरि नहि। किछु समय पश्चात् भोर भेल। भोरमे निन्न आबए लगलनि। ओ घर बन्न कए सूतय लेल चलि गेलाह। कोबरमे दू पहर बितलाक बाद गामक दाय-मायक झुण्ड तँ कखनो दू-चारि गोटेक आवाजाही छल। आब सभकेँ पएर छूबि प्रणामक सेहो प्रावधान अछि कारण जे हम मैथिल छी। साँझमे मौहकक विध पूर्ण भेल। पुनः रात्रिमे बिस्तरपर विश्रामक लेल गेलाह। लगभग दस-पन्द्रह मिनट बाद अनुभव भेलनि जे पुनः कोनो जनानी प्रवेश कए रहल अछि। ओ पुनः पएरक स्पर्श कय रहल अछि आ ओ अहिठाम बैसल अछि। प्रेमचन्दकेँ निन्न तँ नहि लागल छलन्हि मुदा निन्नक बहन्ना जरूर भेटलन्हि कारण विवाहक रात्रिमे ओ नहि सूतल छलाह। ओ दिनमे दुपहरिया बादसँ जागल छलाह। करीब दू घण्टा बैसि ओ जनानी पुनः वापस भेलीह। पुनः तेसर राति ओ जनानी पुनः अएलीह आ पूर्ववत अपन कर्ममे लिप्त भय गेलीह, यानी चरण-स्पर्श कए बैसि रहलीह। लगभग चारि-पाँच घंटा धरि ओ बैसलि रहलीह आ पएर धय निकलबाक कोनो चेष्टा नहि कय रहलि छलीह, जेना हुनकर प्रतिज्ञा हो जे आशीर्वाद कानमे जरूर सुनी। एतबेमे प्रेमचन्दकेँ एकटा शरारत सुझलनि आ ओ बहन्ना केलन्हि जेना पूरा निन्नमे होथि। ओ करोट बदलि कय पएरकेँ स्थानान्तर कय देलथिन। एकरा बाद ओ जनानी पुनः ओहिठामसँ हिलय के कोशिश नहि केलक। प्रेमचन्द तँ करोट लेलन्हि मुदा ओ जनानी पूर्ववत छलि जेना माटिक मूर्ति हो जेकरा कियो ओहिठाम बैसल अवस्थामे राखि बिसरि गेल हो। चारिम राति पुनः ओहि जनानीक प्रवेश भेल आ ओ अपन कर्तव्यमे पूर्ववत छल। प्रेमचन्द बजलाह- हमरा कोन कारणसँ परेशान कय रहल छी? अहाँ के छी? हम की कपट देने छी जे अहाँ प्रति रात्रिमे आबि हमर पएरकेँ स्पर्श करैत छी? हमर निन्नकेँ कोन कारणसँ खराब कय रहल छी? ई बात सुनिते ओ जनानी लाजसँ शरीरकेँ सकुचा लेलक। जेना लजबिज्जीक पातमे किछु स्पर्श भेलापर ओ सिकुरि जाइत अछि ठीक ओहि प्रकारसँ ओ बाला सिकुरि गेलीह। कोनो उत्तर नहि भेटलापर प्रेमचन्द पुनः निन्नक बहन्ना बना कए फोंफ काटए लगलाह। किछु समय उपरान्त ओ बाला कोबरसँ निकलि गेलीह। करीब दू-तीन घंटा पश्चात् विधकरी कोबरमे प्रवेश कय अवाज देलन्हि जे मिसरजी उठथु, नहा लथु। नित्यक्रियासँ निवृत्त भऽ स्नान भेल। हरक पालोपर बैसाकए नवविवाहिता संग पुनः विवाह शुरू भेल- चतुर्थीक विध सभ। आजुक दिन नुनगर-चहटगर भोजन भेटलन्हि आ प्रेमचन्द घरक लेल प्रस्थान करबाक तैयारीमे छलाह तँ रिश्तामे ज्येष्ठ साढ़ू कहलन्हि जे साढ़ू भाइ, हमरो जेबाक अछि। संगे चलब। हम हुनके दू-पहियापर बैसि गाम अयलहुँ। किछु काल पश्चात् पुनः गाममे भोजन कय प्रेमचन्द एम्हर-ओम्हर निकलय के प्रयास जरूर केलन्हि, लेकिन ओ ओहिठाम सँ निकलि नहि सकलाह। पुनः साँझमे पिताजी आ ज्येष्ठ भ्रातृगणक दवाबमे सासुर घुरि कए अएलाह। रात्रि-भोजनक पश्चात् विश्रामक लेल कोबर गेलाह। करीब मध्यरात्रिमे पुनः ओहि बालाक प्रवेश भेल। ओ अपन काजमे व्यस्त छलीह। प्रेमचन्द

पुनः निन्नक बहन्ना कयलनि। फेर मोन पड़लनि जे गामसँ जखन आबय लगलाह तँ बड़की भौजी किछु ज्वेलरी देने छलथिन जे ई कनियाँकेँ मुँहबजना छी, दऽ देबय, तखन सुतब। जेबीसँ निकालि कय ओ बालाकेँ कहलथिन, ई अहाँक समान अछि, लऽ लेब। हमरा निन्न आबि रहल अछि, सूति रहल छी।

निन्न की होयतनि, शरीर तँ लगभग चारि-पाँच दिनमे आधा भय गेल रहनि। दिमागमे सोच जे पैसि गेलनि! ने खेनाइ-पिनाइ नीक जेकाँ ने निन्न। एकदम चिरचिरा स्वाभावक भय गेल छलाह। मध्यरात्रिमे प्यास लगलन्हि तँ पानिक लोटा ताकि रहल छलाह। ओ बाला हुनका एकटा गिलासमे लगभग ठंढा भऽ गेल दूध बढ़ेलखिन। प्रेमचन्द कहलथिन जे ई दूध छी, हमरा प्यास लागल अछि, ई राखि देल जाओ। मुदा ओ नहि रखलन्हि। हुनका संग समस्या छल जे ओ घोघमे छलीह, भरि रातिक जागलि छलीह आ कहियो बाजल नहि छलीह। ई सभ कारणेँ ओ हाथमे दूधक ग्लास लऽ तपस्याक मुद्रामे ठाढ़ रहलीह। प्रेमचन्दकेँ लगेमे लोटामे राखल पानि भेटलन्हि आ ओ पानि पीबि कए पुनः सुतबाक प्रयासमे छलाह। हुनका की जिज्ञासा भेलनि जे देखियै ई बाला कतेक काल धरि ठाढ़ भय गिलाससँ भरल दूध रखैत अछि। लगभग एक घण्टा बीति गेल मुदा ओ तपस्यामे लीन छथि ई देखि प्रेमचन्दकेँ दया आबि गेलनि आ दूधक गिलास हाथसँ लय दू-चारि घोंट पीबि गिलास राखि देलन्हि। पुनः परिचय भेल। प्रेमचन्दक प्रश्नक उत्तरक समय ओ बाला थर-थर काँपि रहल छलीह, जेना कसाइकेँ देखि छागरक आँखिमे डर।

प्रेमचन्द- नाम?

-सोनी।

-कतेक पढ़ल छी?

-दसम बोर्ड फेल छी।

-सत्य या झूठ?

-ई ध्रुव सत्य अछि।

ई बात सुनिते प्रेमचन्दक आँखिमे पुनः गंगा-यमुनाक धारा प्रवाहित भय गेलन्हि तँ सोनी रुदन अवस्थामे बजलीह- हम अपनेसँ झूठ नहि बाजि सकैत छी। हमरा क्षमा करू। हमरा जे सजा देब से कम अछि। आ हुनको आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलन्हि।

-अपने शरीरसँ विकलांग तँ नहि छी?

-नहि।

-अपने कोनो बीमारीसँ ग्रसित तँ नहि छी?

-नहि।

-अपने जिबैत किनका लेल छी?

-अहाँ हमर गरदनि दबा दिअ तँ हमरासँ बेशी भाग्यशाली कियो दोसर नहि होएत।

-अपनेक सभसँ पैघ लक्ष्य?

-अहाँक खुशी।

-अपने कानि रहल छी, कारण?

-अहाँक कष्ट देखि बर्दाश्त नहि भऽ रहल अछि।

-अहाँ जुनि कानू सोनी। एहिमे अहाँक कोनो दोष नहि अछि।

-आइ हम मरि गेल रहितहुँ तँ अहाँकेँ कष्ट नहि भेल रहैत।ई तँ ईश्वरक बनायल विधिक विधान छी! एकरा कोनो शक्ति नहि काटि सकैत छैक।

-देखू, एहि दुनियाँमे दू तरहक लोक होइत अछि- आशावादी आ पुरुषार्थवादी। हम आशावादी पुरुष नहि छी, पुरुषार्थवादी छी आ आशावादीसँ घृणा करैत छी। कारण आशावादी पुरुष या औरत मेहनती नहि होइत अछि। अपने कोन तरहक छी?

-हम धार्मिक प्रवृत्तिक छी आर धर्ममे बहुत विश्वास अछि, ताहि हेतु आशावादी छी!

ई सुनि प्रेमचन्दक मोनमे आर बेशी तकलीफ बढ़ि गेलन्हि। एहि तरहेँ चतुर्थीक राति दुनू नव-विवाहित जोड़ी कटलन्हि। प्रेमचन्द फेर अपन गाम घुरि गेलाह।

साँझ भेल, भौजीसभकेँ भेलन्हि जे प्रेमचन्द पुनः गाम जएताह। मुदा कोनो प्रतिक्रिया नहि देखि पुछल गेलन्हि तँ उत्तर आएल जे आब द्विरागमनक लेल हम उपस्थित होएब सासुरमे, नहि तँ आब दिल्ली घुरि जाएब। अन्यथा हमर पीड़ाकेँ बढ़ाओल नहि गेल जाऊ। हमरा आब जीवित रहय के कोनो इच्छा नहि अछि। कोनो मनोरथ नहि अछि। हमर कोनो भविष्य नहि अछि!

द्विरागमन भेल, कनियाँ सासुर अयलीह। भड़फोरीक पश्चात् प्रेमचन्द दिल्ली उपस्थित भेलाह। अपन कम्पनीक काम-काज सम्हारलथि। काजपर तँ जाथि मुदा अन्तरात्मामे कतेक प्रश्न अबन्हि। कारण जे जीबाक आशाक किरण लगभग अन्तिम चरणमे पहुँचि गेल छलन्हि। आब कोनो मनोरथ नहि, नहिए जिनगीक कोनो लक्ष्य बाँचि गेल छलन्हि। आ एकर कारण मैथिल समाजक किछु महानुभावक विचार आ कृत्य अछि, संगहि मैथिल समाजक किछु प्रावधान सेहो जिम्मेदार अछि। एहि प्रकारेँ नहि जानि कतेक मैथिल नव-युवक-युवतीकेँ अपन करुण जिनगी जीबाक लेल मजबूर होमए पड़ैत अछि।



डॉ. प्रेमशंकर सिंह (१९४२-)

ग्राम+पोस्ट- जोगियारा, थाना- जाले, जिला- दरभंगा। 24 ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, भागलपुर-812001(बिहार)। मैथिलीक वरिष्ठ सृजनशील, मननशील आ अध्ययनशील प्रतिभाक धनी साहित्य-चिन्तक, दिशा-बोधक, समालोचक, नाटक ओ रंगमंचक निष्णात गवेषक, मैथिली गद्यकेँ नव-स्वरूप देनिहार, कुशल अनुवादक, प्रवीण सम्पादक, मैथिली, हिन्दी, संस्कृत साहित्यक प्रखर विद्वान् तथा बाङला एवं अंग्रेजी साहित्यक अध्ययन-अन्वेषणमे निरत प्रोफेसर डॉ. प्रेमशंकर सिंह (२० जनवरी १९४२)क विलक्षण लेखनीसँ एकपर एक अक्षय कृति भेल अछि निःसृत। हिनक बहुमूल्य गवेषणात्मक, मौलिक, अनूदित आ सम्पादित कृति रहल अछि अविरल चर्चित-अर्चित। ओऽ अदम्य उत्साह, धैर्य, लगन आ संघर्ष कऽ तन्मयताक संग मैथिलीक बहुमूल्य धरोरादिक अन्वेषण कऽ देलनि पुस्तकाकार रूप। हिनक अन्वेषण पूर्ण ग्रन्थ आ प्रबन्धकार आलेखादि व्यापक, चिन्तन, मनन, मैथिल संस्कृतिक आ परम्पराक थिक धरोहर। हिनक सृजनशीलतासँ अनुप्राणित भऽ चेतना समिति, पटना मिथिला विभूति सम्मान (ताम्र-पत्र) एवं मिथिला-दर्पण, मुम्बई वरिष्ठ लेखक सम्मानसँ कयलक अछि अलंकृत। सम्प्रति चारि दशक धरि भागलपुर विश्वविद्यालयक प्रोफेसर एवं मैथिली विभागाध्यक्षक गरिमापूर्ण पदसँ अवकाशोपरान्त अनवरत मैथिली विभागाध्यक्षक गरिमापूर्ण पदसँ अवकाशोपरान्त अनवरत मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ अभिवर्द्धित करबाक दिशामे संलग्न छथि, स्वतन्त्र सारस्वत-साधनामे।

कृति-मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरुषार्थ ओ विद्यापति, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७५.नाट्यान्वाचय, शेखर प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रपाणिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००५, ८.ईक्षण, ऋचा प्रकाशन भागलपुर २००८ ९.युगसंधिक प्रतिमान, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८

मौलिक हिन्दी: १.विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन, प्रथमखण्ड, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना १९७१ २.विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन, द्वितीय खण्ड, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना १९७२, ३.हिन्दी नाटक कोश, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली १९७६.अनुवाद: हिन्दी एवं मैथिली- १.श्रीपादकृष्ण कोल्हटकर, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली १९८८, २.अरण्य फसिल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१ ३.पागल दुनिया, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१, ४.गोविन्ददास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००७ ५.रक्तानल, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८.लिप्यान्तरण-१. अङ्कीयानाट, मनोज प्रकाशन, भागलपुर, १९६७।

सम्पादन- १. गद्यवल्लरी, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९६६, २. नव एकांकी, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९६७, ३.पत्र-पुष्प, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९७०, ४.पदलतिका, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९८७, ५. अनमिल आखर, कर्णगोष्ठी, कोलकाता, २००० ६.मणिकण, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ७.हुनकासँ भेट भेल छल, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००४, ८. मैथिली लोकगाथाक इतिहास, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ९. भारतीक बिलाड़ि, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, १०.चित्रा-विचित्रा, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ११. साहित्यकारक दिन, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता, २००७. १२. वुआड़िभक्तितरङ्गिणी, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८, १३.मैथिली लोकोक्ति कोश, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, २००८, १४.रूपा सोना हीरा, कर्णगोष्ठी, कोलकाता, २००८।

पत्रिका सम्पादन- भूमिजा २००२–**सम्पादक**

बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग

अतीत आ भविष्यक संग सम्बन्ध स्थापित कऽ कए साहित्य अपन अस्तित्वक सत्यताक उद्घोषणा करैछ। विश्व-मानव अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक साहित्यक गवाक्षसँ अतीतक गिरिगह्वरक गुफामे प्रवाहित जीवन-धाराक अवलोकन करैछ आ अपन गम्भीरतम उद्देश्यक विविध प्रकारक साधन भूल आ संशोधन द्वारा प्राप्त करैत अपन भावी जीवनकँ सिंचित होइत देखबाक उत्कट अभिलाषा रखैछ। अतीतक प्रेरणा आ भविष्यक चेतना नहि तँ साहित्य नहि। अतीत, वर्तमान आ भविष्यक कड़ीक अनन्त शृंखलाक रूपमे भावक सृष्टि होइत चल जाइछ आ मानव अपन प्रगतिक नियमादि, सिद्धान्तादिकँ अपन वास्तविक सत्ताक विकासक मंगल कंगन पहिरि कए अपन दुनू हाथसँ आवृत्त कयने रहैछ। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१-१९४१)क कथन छनि जे विश्व-मानवक विराट जीवन साहित्य द्वारा आत्मप्रकाश करैछ। एहन साहित्यक आकलनक तात्पर्य काव्यकार एवं गद्यकारक जीवनी, भाषा तथा पाठ सम्बन्धी अध्ययन तथा साहित्यक विविध विधादिक अध्ययन करब मात्र नहि, प्रत्युत ओकर सम्बन्ध संस्कृतिक इतिहाससँ अछि, मानव-मनसँ, सभ्यताक इतिहासमे साहित्य द्वारा सुरक्षित मनसँ अछि।

उन्नैसम शताब्दीमे भारतवर्षमे नवजागरणक प्रबल ज्वार उठल। तकर कोनो प्रभाव मिथिलांचलपर नहि पड़ल, कारण मिथिलावासी प्राचीन परम्पराक पृष्ठपोषक रहलाक कारणेँ संस्कृत शिक्षामे लागल रहलाह आ अंग्रेजी शिक्षा तथा पाश्चात्य विचारधाराक महत्वकँ नहि स्वीकारलनि। नवजागरणक फलस्वरूप षष्ठ दशकमे भारतीय परतन्त्रताक बेड़ीसँ मुक्त होएबाक निमित्त सन् १८३७ ई. मे सिपाही विद्रोह कएलक। मिथिलाक नव शासक मैथिलीकँ कोनो स्थान नहि देलनि। एहि दशकक अन्तिम बेलामे मिथिलाक प्रशासन ''कोर्ट ऑफ वाड्‌र्स''क अधीन चल गेल जकरप्रभाव मिथिलापर पड़लैक। जे एहिठामक निवासीकँ प्रथमे-प्रथम पश्चिमक स्पर्शानुभूति भेलनि। किन्तु दुर्भाग्य भेलैक जे ''कोर्ट ऑफ वाड्‌र्स'' द्वारा मिथिलाक भाषा मैथिली आ ओकर लिपिकँ बहिष्कृत कऽ कए ओकरा स्थानापन्न कयलक उर्दु आ फारसी तथा देवनागरी। मिथिलेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह (१८५८-१९९८)क गद्देनशीन भेलापर उन्नैसम शताब्दीक अष्टदशकोत्तर कालमे मिथिलावासीक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जीवनमे नव चेतनाक संचार भेलैक। हुनक चुम्बकीय व्यक्तित्व, कृपापूर्ण व्यवहार, विद्या-व्यसन आ असीम देशभक्ति एवं दानशीलताक फलस्वरूप विद्वान साहित्य सर्जककँ आकृष्ट कएलक। हुनक उत्तराधिकारी मिथिलेश महाराज रमेश्वर सिंह (१८९८-१९२९) सेहो उक्त परम्पराकँ कायम रखलनि।

उन्नैसम शताब्दीक अष्टदशकोत्तर कालमे भारतीयमे अभूतपूर्व जनजागरण भेलैक, जकर फलस्वरूप स्वतन्त्रता संग्रामक नव स्फुलिंग जागृत भेल आ ओऽ सभ स्वतन्त्रताक निमित्त अत्यधिक सचेष्टताक संग सन्नद्ध भेलाह, जकर प्रभाव साहित्य सृजनिहारपर पड़लनि। यद्यपि शताब्दीक अन्तिम वर्ष धरि धार्मिक आ सांस्कृतिक चिन्तनपर रुढ़िवादिताक पुनः प्रकोपक विस्तृत छायासँ बौद्धिक आ साहित्यिक प्रगतिक समक्ष अवसादपूर्ण वातावरणक परिव्याप्त भऽ गेलैक। तथापि मैथिली साहित्य जगतमे उत्कर्ष अनबाक निमित्त अपन परम्परागत परिधानक परित्याग कऽ नव प्रवृत्तिक रचनाकारक प्रादुर्भाव भेल जाहिमे मातृभाषानुरागी आ प्रकाशनक सौविध्यसँ साहित्य नव रूप धारण करय लागल जकर नेतृत्व कयलनि कवीश्वर चन्दा झा (१८३०-१९०७), कविवर जीवन झा (१८४८-१९१२), पण्डित लालदास(१८५६-१९२१), परमेश्वर झा (१८५६-१९२४), तुलापति सिंह (१८५९-१९१४), साहित्य रत्नाकर मुन्शी रघुनन्दन दास (१८६८-१९४५), मुकुन्द जा बक्शी (१८६०-१९३८), जीवछ मिश्र (१८६४-१९२३), चेतनाथ झा (१८६६-१९२१), खुद्दी झा (१८६६-१९२७), मुरलीधर झा (१८६८-१९२९), जनार्दन झा ''जनसीदन'', सर गंगानाथ झा (१८७२-१९४१), दीनबन्धु झा (१८७३-१९५५), रामचन्द्र मिश्र (१८७३-१९३८), बबुआजी मिश्र (१८७८-१९५९), गुणवन्तलालदास (१८८०-१९४३), कुशेश्वर कुमर (१८८१-१९४३), विद्यानन्द ठाकुर (१८९०-१९५०), कविशेखर बदरीनात्र झा (१८९३-१७४), पुलकितलालदास (१८९३-१९४३), गंगापति सिंह (१८९४-१९६१), उमेश मिश्र (१८९६-१९६७), धनुषधारीलालदास (१८९६-१९६५), भोलालालदास (१८९७-१९७७), अमरनाथ झा (१८९७-१९५५), राजपण्डित बलदेव मिश्र (१८९७-१९६५), कुमार गंगानन्द सिंह (१८९८-१९७०), ब्रजमोहन ठाकुर (१८९९-१९७०) एवं रासबिहारीलालदास आदि-आदि जे विविध साहित्यिक विधादिक जन्म देलनि आ एकरा सम्वर्धित करबाक दृढ़ सन्कल्प कयलनि।

वस्तुतः विगत शताब्दी मैथिली साहित्यक हेतु एक क्रान्तिकारी युगक रूपमे प्रस्तुत भेल। अंग्रेजी राज्यक स्थापना देशक साहित्यिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक, आर्थिक आ सामाजिक क्षेत्रमे एक नव स्फूर्ति प्रदान कऽ कए मिथिलांचलक जीवन-शैली आ सोचक पुनर्संस्कार कयलक। एहि शताब्दीमे आधुनिक शिक्षा, छापाखाना आ सरल यातायातक सुविधाक अभाव रहितहुँ मैथिलीमे साहित्य सृजनक परम्परा वर्तमान रहल। बहुतो दिन धरि मैथिली साहित्य संस्कृत साहित्यक प्रतिछाया सदृश रहल। एहिमे साहित्यिक एवं अन्य प्रकारक लेखन निरन्तर होइत रहल। दुइ विश्व युद्धक बीचक कालमे मैथिली साहित्यक सर्वांगीन समुद्धारक चेतना अनलक। एहि कालक लेखनमे ई नव मनोदशा प्रतिफलित भेल आ साहित्यक विभिन्न विधामे उल्लेख्य योग्य परिवर्तन भेल।

राजेन्द्र पटेल

गुजराती कवि

गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई द्वारा। अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

१

हम किएक कऽ रहल छी अनुभव
धरा बिन शाखक
बिना एहि हाथक?

पसारैत दूर आ विस्तृत
जीवित साँपक ताकिमे
ई सभ हाथ एक दोसरमे ओझराएल
आ समाप्त होइत मात्र नहक वृद्धिमे।

बाबाक छड़ीक पकड़िसँ
बसक ठाढ़ होएबला लटकल चक्र
मुट्ठी अनैत अछि वैह अविचल शून्याकाश।
ओकर कए अनुभूति
ई सभ खेंचल कार कौआक हाथ
घुमि जाएत आकाश दिस
सभटा खेत अंकुरित प्रफुल्लित

पृथ्वीक गत्र-गत्रक
पाँजर खेतमे औँगठल
बाँहि जकाँ।
सभटा हरक फारक चेन्ह
भाग्य रेखा हाथक।

पंक्ति जोखि सकैए
मात्र हाथक लम्बाई
नहि एकर जड़ि
पहिने हम कए सकी एकर निदान
हाथक आक्रमण जड़िपर
श्वेत धरापर
रोशनाईसँ पसरल
अपन नव अंकुरित आँखिए
उड़ि गेल नव-जनमल पाँखिए
ओहि धूसरित गगनक पार
आब
सभटा मस्तिष्क कोशिकामे
हाथ रहैछ अहर्निश
प्रवेश कए रहल गँहीर आर गँहीर जड़िमे



राजेन्द्र विमल (1949-)।

चामत्कारिक लेखन-प्रतिभाक स्वामी राजेन्द्र विमल नेपालक मैथिली साहित्यक एक स्तम्भ छथि। मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक हकमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि। सुललित शब्द चयन एवं भाषामे प्राञ्जलता डा. विमलक लेखनक विशेषता रहलनि अछि। अपन सिद्धहस्त लेखनसँ ई कोनहु पाठकक हृदयमे स्थान बना लैत छथि। कथा आ समालोचनाक सङ्गहि मर्मभेदी गीत गजल लिखबामे प्रवीण डा. विमलक निबन्ध, अनुवाद आदि सेहो विलक्षण होइत छनि। कम्मो लिखिकऽ यथेष्ट यश अरजनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। खास कऽ मानवीय संवेदनाक अभिव्यक्तिमे हिनक कलम बेजोड़ देखल जाइत अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि। जनकपुरधामक देवी चौक स्थित हिनक घर सदति साहित्यक जिज्ञासुसभकअखाड़ाजकाँबनलरहैतअछि।–**सम्पादक**

गजल

१.

नयनमे उगै छै जे सपनाकेर कोँढ़ी
फुलएबासँ पहिने सभ झरि जाइ छै
कलमक सिनूरदान पएबासँ पहिने
गीत काँचे कुमारेमे मरि जाइ छै
चान भादवक अन्हरिये
कटैत अहुरिया
नुका मेघक तुराइमे हिंचुकै छल जे
बिछा चानीक इजोरिया
कोजगरामे आइ
खेलए झिलहरि लहरिपर
ओलरि जाइ छै
हम किछेरेपर विमल ई बूझि गेलियै
नदी उफनाएल उफनाएल
कतबो रहौ
एक दिन बनि बालू पाथरक बिछान
पानि बाढ़िक हहाकऽ हहरि जाइ छै
के जानए कखन ई बदलतै हवा
सिकही पुरिवाकेर नैया डूबा जाइ छै
जे धधरा छल धधकैत धोंवा जाइ छै
सर्द छाउरकेर लुत्ती लहरि जाइ छै
रचि-रचिकऽ रूपक करै छी सिंगार
सेज चम्पा आ बेलीसँ सजबैत रहू
मुदा सोचू कने होइ छै एहिना प्रिय
सींथ रंगवासँ पहिने धोखरि जाइ छै

२.

जगमग ई सृष्टि करए तखने दिवाली छी
प्रेम चेतना जागि पड़ए तखने दिवाली छी
जीर्ण आ पुरातनकेँ हुक्का-लोली बनाउ
पलपल नव दीप जरए तखने दिवाली छी
स्नेहकेर धार बहत बनत जग ज्योतिर्मय
हर्षक फुलझड़ी झरए तखने दिवाली छी
अनधन लछमी आबए दरिदरा बहार हो
रङ्गोली रङ्ग भरए तखने दिवाली छी
रामशक्ति आगूमे रावण ने टीकि सकत
रावण जखने डरए तखने दिवाली छी

तृष्णा

आइ फेर बहु-बदला भेलैए कहाँ दन!...गे दाइ, गे दाए!

रजदेबाके बहु सिकिलिया आ देबलरैनाके बहु सोनावती। सिकिलिया ओना छै मोसकिलसँ अढ़ाइ हाथक मौगी मुदा सउँसे गोर देहमे गजगज मासु करै छै। देखिते होएत जे काँचे चिबा जाइ। टोङि देबै, बन्न दऽ सोनित फेकि देतै। देहपर जेना इस्त्री कएल होइ; छिहलैत आ गतानल अंगअंग। देबलरैनके मुँहसँ तँ कहिया सऽ ने लेर चूबैत रहै- लसलस। देबलरैना-बहु सोनाबती, रोलल-छोलल, पोरगर करची सन लचलच करैत देह। रजदेबाके ततराटक लागि जाइक- देखैक तँ देखिते। एक्के टोलमे दसे घरक तऽ फरक हएतै दुनूक घरमे। छिनरझप्पबाली सोनावतियो केहन मन सरभसी जे जखने रजदेबासँ नयन मिलै कि छट्ट दऽ बिहुँसि उठै अंग-अंग-जेना लौका लौकि गेल होइ भीतरे भीतर। उपर सऽ सतबरती जे बनैय। रजदेबा माने राजदेव मंडल, अंचल अस्पतालमे चपरासी अछि। बाप ओकरा जनमऽ सँ पहिनहि सरग सिधारि गेल रहथिन्ह। पोसल केऽ तऽ माए। एकटा बहीन रहै चंचलिया। सभ कहै कुमरठेल्ली। सउँसे गाम अनघोलकएने

रहै छौंड़ी। कहियो खेसारीक झारमे पकड़ल जाइक, कहियो राहरि खेतमे केयो देखि लैक। कहिने कते आगि भगवान देहमे देने रहथिन्ह। चंचलियाक माय कहै जे ई देहक आगि थोड़बे रहैक, पेटक आगि रहै, पेटक। आब जे रहौक, मुदा ओ मारलि गेलि। ओकरा लऽ कऽ दू टा मनसामे झगड़ा भऽ गेलैक। जगदिसबा कहै जे हमर धरबी अछि, मनमोहना रिक्साबला कहै जे हम्मर माल अछि। चंचलिया दुन्नूकेँ दूहै छलि। से बरदास्स नहि भेलै मनमोहना रिक्साबलाकेँ। ताड़ीक झोंकमे रिक्साक पुरना चेनसँ तेना ने ततारऽ लगलै जे होशे ने रहलै। सउँसे देहसँ सोनित बहि रहल छलै आ ओ मुँह बाबि देने छलि। परिवारमे विधवा माय छलै, स्वयं छल, सिकिलिया छलै आ पाँच बरखक बेटा रहै। बेटा बड़ड सुन्नर आ बड़ ठोला! चंचलिया तऽ संसारसँ उठिए गेलै। आब परिवारक सुखाएल आँतक घघरा मिझएबाक लेल सोनित सुखएबाक जिम्मेबारी रजबेक छलै। जूआमे चुपचाप कान्ह लगा देलक आ बहए लागल। बहु रहै चमचिकनी, फरदेबाल आ फसलीटीबाली। रोज गमकौआ तेल चाही, स्नो-पाउडर चाही। रङसँ ठोर नइँ रङब, लिपेस्सी चाही। सिनेमामे चसकलि। जी-मुँह चलिते रहइ। पनपियाइमे घुघनी-मुरही, कचरी भरि पोख। दुसंझी। रोज-रोज माध-मासु गमकैत रहउ आङनभरि- ने किछु तऽ डोका-ककरि। आकि कछुएक झोर। कतेक दिनसँ एक जोर परबा पोसक लेल रगड़ा कए रहलि छलि साँयसँ। छमकि कए एमहर, छमकि कए ओमहर। राति-राति भरि झूलन देखए, सलहेसक नाचमे खतबैया टोलक झुलफिया या नटुआक नाच आ सतरोहनाक बिपटइ देखि-देखि कऽ लहालोट भऽ जाए। रजबाकेँ ई सभ सतखेल्ली मौगिक लच्छन बुझाइक, तैँ रोज बतकुटौअलि होइ। रिक्साबला देबलरैनासँ यारी रहै रजदेबाकेँ। देबलरैना सिकलियाके बड़ पसिन्न। कारण रहै जे देबलरैना सेहो सलहेसक नाचमे ढोलकिया रहै। ईह ढोलक बजबैकाल ओकर कनहा जे उपर-नीचाँ होइ छल- गुम-गुमुक-गुमुक...गुम गुमुक गुमुक! .. बेर-बेर झुलफी मुँहपर खसि पड़ै जकरा ओ ओहिना छोड़ि दैक। मुँहपर बुनकिआएल ओसक बूँद सन पसेना! ओ मोनहि मोन अपन साँय रजदेबासँ देबलरैनाक मिलान करै। ... कहाँ देबलरैना, कहाँ रजदेबा। रजदेबाक मुँहपर चौबीस घंटा जेना विपत्तिके झपसी लधने रहै। घोघनमुँहा एक रत्ती ने सोहाइ सिकिलियाकेँ। मगर करओ तऽ की करओ? सिङार-पटार कए एकान्तमे एसगर बिछाओनपर पड़ि रहय आ कल्पना करए-साँय जे बदलतै! देबलरैना फुलपेन्ट पेन्हि कऽ, चसमा पेन्हि कऽ बाबू-भैया नाहित जे रिक्शापर बैठिकऽ रिक्सा चलबइ हइ तऽ सिनेमाके गोबिना माउत कऽर हइ। .. मानली जे ताड़ी-दारू पीबै हइ, त की भेलइ। सुनइ छिऐ जे कहाँदुन ताड़ी-दारु पीलै हइ मनसासुन तऽ ओकरा देहपर राछच्छी सबार भऽ जाइ छै, मौगीके छोड़ने ने छोड़ै छै।..धौर, केनाकऽ सकैत होतै देबलरैना बहु।..रजदेबा ला धन्न-सन! बिछाओनोपर जाएत त खाली घरेके समेस्सा। ..रङ आ लस!! .. देहो हाथ छूबैतऽ खौंझा कऽ छूटत!..

देबलरैनाके बँसुरीके आवाज सुनएलै। ..दारू पीकऽ अबै छै तऽ आङनमे बैसिकऽ बँसुरी टेरऽ लगै छै।..अहाहाहा..की राग, की तान।..सोनाबतीके तऽ लीरीबीरी कऽ दै छै। फेर दुनू परानीमे मुँहाठुट्ठी होइत-होइत पिटापिटौअल शुरू भऽ जाइत छै।..सोनाबतीके कहब छै जे मरदाबा जे कमाइ हए से तऽ दारू पानीमे उड़ा दै हए, सिनेमामे गमा दै हए आ सूतऽ लागी हरान रहै हए।..पेटमे अन्न नैआ..

"मनसा तऽ रजदेबो हइ"- सोचैए सिकिलिया- "ओकरा सूतऽ के मन नै होइ हइ?..केरबा आमसन मुँह लटकओने रहैए!" सिकिलियाके अपने हँसी लागि जाइ छै।

"दोसजी कहाँ गेलखिन"?- अरे, ई बारह बजे रातिमे सोनाबती!!..

"की हइ, हे"?- बाँसक फट्टक खोलिकऽ सिकिलिया बाहर अबैत अछि।..छौंड़ाक बाप तऽ नै एलैगऽ अस्पताल सऽ।..लैटडिपटी (नाइट ड्यूटी) हइ।.."

"बहीन की कहियो दुखके बात। आइ फेनू मनसा मारलकगऽ।"

"कइला?"

"धुर। की जान गेलिऐ कोन बढ़मकिटास हइ देहपर।..हमर तऽ जान लऽ लेलक।..अन्न-पानी जरि गेलै, जी-जाँघमे खौंत फुकने रहै छै चौबीस घंटा। __बलू, चल नऽ सूतऽ।..सुतना बेमारी धऽ लेलकैगऽ।"..सोनाबती घौलेघौले बजैत रहल। जोर-जोरसँ घोल-चाउर भेलै तँ बुढ़िया रजदेबामाइ टुघरि कऽ अङनामे आएल- गे, की भेलउ गऽ? चुप, लबरी। साँइयो बहुके बातके कहूँ एते घोलफचक्का भेलै गऽ?"

सोनाबती घेओना पसारलकि। रित्ती रित्ती कऽ फाटल, सतरह ठामसँ गिरह बान्हल अपन नूआ आ अङिया देखओलकि। घरबाली अन्न बेत्रेक मरै छै आ ओ दारु-ताड़ी पीबिकए बेमत्त भेल रहै छै। घरमे लाल छुट्टी नै दै छै। दारू पी कऽ सेजपर ओकर गत्रगत्रमे दाँत गड़ा दै छै!

"इस्स!" रजदेबाबहुके मुँहसँ अनायासे बहार भऽ गेलै। भीतर चीनीक गरम पाक जेना टघरि रहल छलै। ओ गत्रगत्र देबलरैनाक हबकबाक कल्पनामे हेरा गेलि।

"हे बहीन!..मनसा नै भोगतओ तँ ई देह लऽ कऽ की करबा।..एक दिन अँचियापर तऽ सबहक देह जरै छै!"- रजदेबा-बहु समझओलकै। रजदेबामाइ दुरदुरओलकै। ताबत डिप्टीसऽ रजदेबो घूरि अएलै। आङनमे ठहाठहि इजोरियामे चमकैत सोनाबतीक मुँह चमकैत देखलक। नयन मिललै, सोनावती विहुँसि देलकि, जेना रजनीगंधा फूल झरझरा गेलै। मोनप्राण गमैक उठलै। रजदेबा बाजल किच्छु नैं। बस पुछलकै- "की भेलौ गऽ भौजी?" सोनावती फेर सउँसे खेरहा दोहरओलकि।...

सिकिलिया चौल कएलकै- ''साँय बदलबे?''

''सहे तऽ ने उपाइ हइ।..तोहर डागदरसनके साँय हउ गजै छे।..अस्पतालमे काम करै हउ। ने दारू, ने पानी। घरगिरहस्थी डेबने हउ। भरिमुँह कोनो छौंड़ी मौगी जरे बोलबो ने करइ हउ। अपन काम से काम। एहन महाभारथ पुरुख हमर भागमे कहाँ?..''

सिकिलियाकँ देह जरि गेलै- हइ गोबरके चोत महाभारत कहाँदुन! मनसरभसी। अपना साँय महकै छनि आ छौंड़ाक बाप जरे केना रसिया-रसिया, सिलिया बतिआइ हए।

''बहीन, तौँ घर जा।..तोहर साँयके दोसरकँ सम्हारि देत ओ? जे अपन साइँयो के कसमे ने रखलक, से मौगी कथिके?'' आ सिकिलिया रजदेबाक बाँहि पकड़ि घरदिशि घीचय लागलि। रजदेबामाइके पित्त लहरि गेलै। सोनाबत्ती कनिकाल थरभसाएलि, फेर बाजलि-''दोस जी!..हम आइ घरे नैं जबे..फेन ''निम्मन सऽ कूटत।..'' ओकर आकृति कातर छलै।

''अहाँ जाउ। लोक फरेब जोड़त''।

रजदेबा समझओलकै। ओ घूरि गेलि। सभ अप्पन-अप्पन फट्टक लगा लेलक। मुदा, भोरे उठल रजदेबा जँगलझार लेऽ तँ देखलक जे देबलरैनाके बहु दरबज्जापर एकटा फेकल तरकुन्नीपर ओंघराएलि छै, घर नैं गेलउ।..कनिकाल ओ टुकुर-टुकुर ओकर मुँह तकैत रहल। केना निभेर भऽकऽ सूतलि छै, दुधपीबा पिहुआजेकाँ। नूआँ-बस्तर अस्त-व्यस्त। बिन तेलकूँडक जट्टा पड़ल, भुल्ल भऽ गेल पैघ पैघ केश, भुँइयापर एमहर-ओमहर जौंड़ जेकाँ लेटाएल।

ओकरा देवलरैनापर बड्ड तामस भेलै। सोन-सनक सोनावती अन्न-वस्त्र बेत्रेक झाम भऽ गेलै- बीझ लागल ताम-सन। एखनो जँ नहा धो देल जाइक आ सिङार कऽ दै तऽ झकाझक भऽ जएतै। मुदा दोस तऽ दारू पीकऽ मस्त रहै छै। सलहेसक नाचमे ओकर ढोलकक गुमकीपर खतबैया टोलक कतेको छौंड़ी-मौगी ओकरापर जान दैत छै। दोसजी, खत्ता-पैन, चर-चाँचर, राहरि-कुसियारक खेत, भुसुल्ला घर, पोखरिक भीर जत्तहि पओलक, तत्तहि छौंड़ी-मौगी लऽकऽ...। राम-राम।..एहन गुनमन्तीके एना काहि कटबै हइ, दोसजी निम्मन नहि करै हइ!

बड़ समझओलकै रजबा सोनाबतीके। सोनाबती नैं गेलै। देबलरैनाके धन्न-सन। खोजैत-खोजैत एक्के बेर सुरुज जखन नीचाँ अएलै तऽ बँसुरी टेरैत आएल। सोनाबतीके भरिपाँज पकड़ि कए चुम्माचाटी लेबए लागल। सबहक सामने! दरूपिबाके कोन लाज आ बीज। रजबामाइके हँस्सी लागि गेलै। सोनाबत्ती मनसाकँ धकेलि देलकै, मनसा धाँय दऽ चारूनाल चित्त खसल। बिच्चे आङनमे।..चटाक!...मनसा उठिकए एक चाट देलकै। मौगी घेओना पसारलकि। मनसाकँ धन्न-सन।..दोसजी अस्पतालमे रहै।

सिकिलियाक बेटाके ''मैंगोफ्रूटी''क खाली डिब्बा कतहु सड़कपर फेकल भेटि गेल रहै। ओ ओहिमे पानि धऽधऽ पीबै छल। सिकिलियाक नजरि पड़लै- ''केहन लगइ हउ?'' छौंड़ा हँसि देलकै- आमके रस नहिंता!..पीबे?''

सिकिलियाक मोन भेलै- एक बेर ओहो पीबि कए देखैत। ओ बड़का-बड़का बाबू-भैया सबके पीबैत देखने रहै।..मुदा, ओइमे तऽ पतरसुट्टी फोंफी लागल रहै, एइमे कहाँ हइ?.. ओ बड़ा ललचाएल दृष्टिसँ फ्रूटीक डिब्बाकँ देखि रहलि छलि।

''दोस्तिनी, पीयब?''-देवलरैना टुभ दऽ पूछि बैसल। दोस्तिनीक आँखिमे फ्रूटीक लालच, पतिसँ उलहन, अभावजन्य वेदना लक्काबाज देवलरैनाकँ झक् दऽ लौकि गेलै।

''चलू दोस्तिनी, फ्रूटियो पीयब, सिनेमो देखब आ होडरोमे खाएब। घूमैत-घूमैत राति तओले च्हलि आएब''। देवलरैना बजलै आ फेर कोन जादूके बान लगलै कहिने, सिकिलिया चट दऽ ओकर रिक्सापर बैसि गेलि। सभ मुँहे तकैत रहि गेलै। ओ जे गेलै सिकिलिया से फेर ६ महीना नैं घुरलै। सोनाबती रजबाके घरसऽ टकसऽ के नाम नैं लै। पऽर भेल, पंचैती भेल। दुनू मौगीमे सँ कोनो अपन-अपन साँय लग घुरबाक लेल तैयार नहि भेलि।

छओ मासक बाद दुनू अपन-अपन मनसा लग कनैत-कनैत घूरलि-ढाकीक ढाकी सिकाइत नेने। सिकिलिया आ सोनाबती एक दोसरक गरदनि पकड़ि झहरा देमए लागलि। सिकिलियाक घेओनाक आशय छल- देबलरैनाके मुँह महकै छै, ओ बदमास अछि, गुन्डा अछि, निसेबाज अछि, लापरवाह अछि; स्वार्थी अछि आदि-आदि। सोनावती छाती पीटिपीटि बेयान करै छलि- रजबा गुम्मा अछि, बहुसँ बेसी मायकें मानै अछि, दिनराति पाइ लेऽ खटै अछि आ सभ पाइसँ घरे चलबै अछि, बहु ले कहियो कचरी- मुरही नै अनने अछि। कहियो सिनेमा नैं जाइ अछि, बहुकें चुम्मा नैं लैत अछि..आदि...आदि...

दुनू अपन-अपन ओरिजिनल साँय लग घूरि गेलि।

मनोविज्ञानक प्रोफेसर सत्यनारायण यादव कहलैन्हि- यार, जे भेटैत छै, तकर मोल नै बुझाइ छै। जकर पति गंभीर छै ओकरा चंचल पतिक लेल मोन पनिआइ छै, जकर चंचल छै से गंभीर पतिक लेल सिहाइए..इएह क्रम छै...नो वन इज परफेक्ट..

एक दिन सिकिलिया आ सोनावती सुनू एक-एकटा कोनो मनसा संगे उरहरि गेलै- ओहो एक्के दिन। रजदेबामाइ भोरेसँ आसमान माथपर उठा लेलकि- ''जुआनी कक्कर ने उमताइ हइ..फेनू बान्ह हइकि नै।..समाज आ पलिवारके बन्हन टूटि जतइ तऽ मनसा-मौगी जिनगी भरि अहिना भँड़छि-भँड़छि कए मरि जतइ...

प्रो. सत्यनारायणक व्याख्या छैन्हि-

म्यान इज पोलिग्यामस बाइ नेचर..इट इज सोसाइटी ह्विच च्यानलाइजेज सेक्स एनर्जी..सओ मुँह, सओ बात!..सबसँ बड़का सत्य जे सोनाबती, सिनकिलिया दुनू उरहरि गेल!



डा. रमानन्द झा 'रमण'

जन्म: 02 जनबरी,1949, शिक्षा-एम.ए., पीएच.डी., आजीविका-भारतीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)।

प्रकाशन: मौलिक- समीक्षा 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली नऽव कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. बेसाहल,2003, 6. भजारल, 2005., 7. निर्यात कैसे शुरू करें? हिन्दी- रिजर्व बैंक, पटनाक प्रकाशन **सम्पादित** 8. मैथिलीक आरम्भिक कथा, 1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 10. जनार्दनझा' जनसीदनकृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. चेतनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. तेजनाथ झाकृत सुरराजविजय नाटक (1919), 1994, 13. रासबिहारीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीबछ मिश्रकृत रामेश्वर (1916), 1996, 15. भेटघाँट (भेटवार्ता), 1998, 16. रूचय तँ सत्य ने तँ फूसि, 1998, 17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. यदुवर रचनावली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विवरण, 2005, 20. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003, 21. पण्डित गोविन्द झाः अर्चा ओ चर्चा, 1997 प्रबन्ध सम्पादक, 22. कवीश्वर चेतना, 2008, चेतना समिति, पटना अनुवाद 23. मौलियरक दू नाटक, 1991, साहित्य अकादमी, 24. छओ बिगहा आठ कटठा, 1999, साहित्य अकादमी, 25. मानवाधिकार घोषणा Universal Declaration of Human Rights २००७(यूनेसको), 26. राजू आ' टाकाक गाछ, 2008 रिजर्व बेंक -वित्तीय शिक्षा योजना के अन्तर्गत **पत्रिका सम्पादन-सह-सम्पादन** 1. प्रयोजन, 1993 (मासिक), 2. कोषाक्षर (हिन्दी) 1982, 3. घर बाहर, त्रैमासिक, चेतना समिति, पटना **कार्यशाला** 1. National Workshop on Literary Translation,- Dec 20.1991 to January 12,02,1992, Sahitya Akademi, New Delhi2.Bonds Beyond the Borders (India-Nepal civil society interaction on Cross Border issues) -Consulate General of India, Birgunj, Nepal and B.P. Koirala India-Nepal Foundation-May 27-28, 20062.Preparation of Intensive Course in Maithili- ERLC, Bhubneswar जूरी 6th Inter National Maithili Drama Festival,1992 -Biratnagar, Nepal पुरस्कार- सम्मान
1. जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार, 1994-95, राजभाषा विभाग,बिहार सरकार, मैथिली नऽव कविता पुस्तक पर, 2. भाषा भारती सम्मान, 2004-05 छओ बिगहा आठ कटठा, (अनुवाद) CIIL, मैसूर।–**सम्पादक**।

बहुत दिनक बाद मिथिलाक ग्रामांचल मे सगर राति दीप जरयक

आयोजन भेल अछि। ओना एहिसँ पूर्व हटनी (19.05.2001) आ ओहूसँ पहिने घोघरडीआ (22.10.1994) आ' डयौढ. (29.04.1990)मे आयोजित भेल छल। शहरे शहरे बौआए सगर राति गाम दिस एक बेर आएल अछि। एहि लेल अशोक कुमार झा 'अविचल'धन्यवादक पात्र तँ छथिहे। हुनक गौँआँ लोकनि सेहो ओहिना धन्यवादक पात्र छथि।

मुजफ्फरपुरसँ रहुआ-संग्राम धरिक सगर रातिक यात्रामे कतेको बेर निराशाजनक स्थिति आएल। कतेको गोटय एहि रतिजग्गापिकनीकके बन्द करबाक परामर्श देल, मुदा काठमाण्डूसँ कोलकाता, विराटनगरसँ वनारस जनकपुरसँ राँची, देवघरसँ पूर्णियाँ, सुपौलसँ जमशेदपुर धरि सगर रातिक दीप जरैत रहल। नव नव कथाकार अपन नवनव कथाक संग अपनाकँ जोड़ैत गेलाह। विभिन्न स्थानक मातृभाषा अनुरागीक स्नेह आ सहयोग एकरा भेटैत गेलैक। सगर रातिक दीप अवाधित रूपे जरैत रखबा लेल ओ ओलोकनि टेमी बातीक ओरिआओन सुरुचिपूर्वक करैत रहलाह। जे सबएकरा अजगूत बुझैत छलाह, सहटि लग आबि अपने आखिए देखल, विश्वास भेलनि। सगर राति दीप जरय कोन पृष्ठभूमिमे आ प्रयोजनवश शुरू भेल छल, आयोजन हेतु कोन कोन शर्त आवश्यक छलैक, तकरा स्पष्ट करबाक हेतु हम प्रथम तीन संयोजक द्वारा प्रेषित आमंत्रण पत्रक सारांश प्रस्तुत करब।सगर राति दीप

जरयक अवधारणाक जन्म किरण जयन्तीक अवसर पर 01 दिसम्बर, 1989 कँ लोहनामे साहित्यकार लोकनिक बीच भेल। मुदा साकार भेल प्रभास कुमार चैधरीक माध्यमसँ। ओहि अवधारणा कँ साकारकरबाक उद्देश्यसँ प्रभास कुमार चैधरी साहित्यकार लोकनिकँ आमन्त्रित करैत छओ जनवरी 1990क पत्र द्वारा अनुरोध कएने छलाह-आदरणीय, अपने कँ विदित होएत जे किरण जयन्तीक अवसरपर लोहनामे एकत्रित साहित्यकार लोकनि निर्णय लेलनि जे पंजाबी साहित्यकार लोकनि द्वारा आयोजित 'दीवा जले सारी रात' जकाँ भरि राति कथा पाठक आयोजन घूमि-घूमि कए विभिन्न स्थान पर साहित्यकार लोकनिकआवास पर होअय। पहिल आयोजन 24 दिसम्वर,1989 के ँ कटिहारमेअशोकक डेरा पर राखल गेल छल जेस्थगित भए गेल एक दुखद घटनाक कारणेँ। आगू ओ लिखैत छथि-हमरा पत्र द्वारा ई समाचार भेटल आ एहिआयोजनक प्रारम्भ मुजफ्फरपुरमे करबाक आग्रह सेहो। हम एहि निर्णयकस्वागत करैत दिन राति कथा पाठ आ परिचर्चाक अष्टयामक आयोजन 21 जनवरी 1990, रविदिन राखल अछि। सादर आमंत्रित छी। अपनेक उपस्थितिये पर आयोजनक सफलता निर्भर अछि। अपने 21 तारीखकेँ भोरे दस बजे पहुँचि जाए हमर कार्यालय जकर पाछाँ हमर निवास सेहो अछि। ई स्थान मुजफ्फरपुरक प्रसिद्ध देवी स्थानक सामने अछि। कोनो तरहकअसुविधा नहि होएत। 21 तारीखके ँ दिनुका भोजनोपरान्त कार्यक्रम शुरु होएत, जे प्रातधरि चलत। कथापाठ (नव लिखल कथा) ओ ओहिपर विशेष चर्चा होएत। अपन अएबाक सूचना पत्र द्वारा पहिनहि दए दी तँ विशेष सुविधा रहत। अगिला कार्यक्रमक स्थान आ तिथिक निर्णय एहीठाम कार्यक्रममे लेल जाएत। डेओढ, कटिहार, दरभंगा,पटना आ जनकपुरमे कार्यक्रम करबाक विचार अछि। अहाँक आगमानक प्रतीक्षा मे"- प्रभास कमार चैधरी।



एही प्रकारेँ सगर रातिक अवधारणाकँ प्रभास कुमार चैधरी साकार कएल। हुनक पत्नी ज्योत्सना चौधरी करतेबताक आंगनक गृहपत्नी जकाँआगत साहित्यकारक स्वागत करैत भरि राति टेमी उसकबैत रहलीह। पति द्वारा आयोजित साहित्यिक कार्यक्रममे पत्नी द्वारा भरि राति टेमी उसकाएब आ अतिथिक स्वागतमे तत्पर रहबाक दोसर आ सेहो दू बेर उदाहरण प्रस्तुत कएलनि अछि काठमाण्डूक दूनू आयोजनमे श्रीमती रूपा धीरू। पहिल सगर रातिक आयोजनमे रमेश (थाक), शिवशंकर श्रीनिवास (बसात मे बहैत लोक), विभूति आनन्द (अन्यपुरुष), अशोक (पिशाच), सियाराम झा 'सरस' (ओहिसाँझक नाम), प्रभास कुमार चैधरी (खूनी) रवीन्द्र चैधरी, आदि कथा पढल। डा.नन्दकिशोर हिन्दी कथाक पाठ कएने छलाह। अध्यक्षता कएल रमानन्द रेणु। कथाकार लोकनिक अतिरिक्त कथाचर्चामे भाग लेलनि जीवकान्त, भीमनाथ झा, मोहन भारद्वाज, डा. रमानन्द झा 'रमण'। पठित कथापर चर्चाक उपरान्त डा.रमण अपन कथा विषयक आलेख शैलेन्द्र आनन्दक कथा यात्राक पाठ कएल। साहित्यकारकस्वाभिमानक रक्षाक हेतु चर्चाक क्रममे निर्णय भेल जेसमाद पर सगर रातिक आयोजनक भार लेबाक अनुरोध स्वीकार नहि कएलजाएत। आमंत्रित कएनिहार लेल स्वयं उपस्थित भए सहभागी बनब आवश्यककए देल गेल।एकर निर्वाह अद्यावधि भए रहल अछि। एक शब्दमे कहि सकैत छी, इएह शर्त सगर रातिक प्राण थिकैक। जीवकान्तक अनुरोध पर

दोसर सगर राति डेओढमे तीन मासक बाद करबाक निर्णय भेल। एहिठाम हम दोसर (डेओढ) आ तेसर (दरभंगा)क संयोजक द्वाराप्रेषित पत्रक अंश प्रस्तुत करब जाहिसँ सगर रातिक लक्ष्य तँ स्पष्ट होएबे करत पत्र लिखबाक क्रम कोन स्थितिमे सम्प्रति अछि, सेहो बुझा जाएत। डेओढ आयोजनक संयोजक जीवकान्त लिखैत छथि-मैथिली भाषाककथाकार लोकनि एकठाम बैसथि अपन नव रचना पढथि आ ओहि पर टीकाविश्लेषण करथि कथाक गति देबामे सामूहिक प्रयत्न करथि। एहि उद्देश्यसँकथा रैलीक आयोजन डेओढमे कएल जाइछ-सृजनात्मक उपलब्धि लेल एकरा स्मरणीय बनेबा मे अपन योगदान करी।दोसर आयोजनमे प्रो.रमाकान्त मिश्र, कीर्तिनारायण मिश्र, वातारानन्द वियोगी, नवीन चैधरी आदि संग भए गेलाह। डा.भीमनाथ झा आ प्रदीप मैथिलीपुत्र दूनू गोटे संयुक्तरूपेँ आयोजनक भार लेल जे श्री विजयकान्त ठाकुरक सौजन्यसँ चिनगी मंच द्वारा दरभंगामे सम्पन्न भए सकल। तेसर सगर रातिक संयोजक डा.भीमनाथ झा लिखैत छथि-पत्र पत्रिकाक एहि संक्रान्ति कालमे साहित्यमे संवादहीनताक स्थिति आबि गेलअछि, कथाक स्थिति तँ आर दयनीय। स्पष्टतः कथा लेखनमे गतिरोध देखलजा रहल अछि। एकरे दूर करबाक इच्छुक किछु युवा साहित्यकर्मी कथा संवाद लेल गोष्ठीक आयोजनक निर्णय लेलनि। दरभंगाक आयोजन एकटा नव अध्याय लिखाएल। से थिक एहि अवसर पर पोथीक लोकार्पण। सगर रातिक अवसर पर लोकार्पित पोथीक नामावली विवरण मे देल गेल अछि। तथापि ई उल्लेखनीय अछि जे एहिअवसर पर लोकार्पित होअए बला पहिल पोथी थिक पण्डित श्री गोविन्द झाक कथा संग्रह सामाक पौतीं। प्रभास कुमार चैधरी, जीवकान्त आ भीमनाथ झाक पत्रसँ सगर रातिक आयोजनक, लक्ष्य आ कोन परिस्थितिमे सगर राति दीप जरय सनकार्यक्रम शुरू

भेल छल, स्पष्ट अछि। सगर रातिक नियमक अनुसारदरभंगाक आयोजनमे चारिम सगर राति तीन मासक बाद जनकपुरमे डा धीरेन्द्रक अनुरोध पर आयोजित करबाक निर्णय भेल। मुदा कोनो कारणवशआयोजनमे विलम्ब होइत देखि पण्डित दमनकान्त झाक पटना आवास पर पण्डित श्रीगोविन्द झाक संयोजकत्वमे चारिम आयोजन भेल। प्रसिद्ध कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' अध्यक्षता कएल आ कथा पाठ कएल। निशा भाग रातिमे व्यासजी अध्यक्षताक भार राजमोहन झाकेँ सौपि देने छलाह। प्रदीप बिहारी पहिल बेर एहीठाम सम्मिलित भए अगिला आयोजन बेगूसरायमे करबाक भार लए लेलनि। दमन बाबू आ व्यासजी नहि छथि। दूनू गोटे मोन पड़ि रहल छथि। प्रभास कुमार चैधरीक अन्तिम सहभागिता बेगूसरायमे सम्पन्न उनतीसम सगर रातिमे छल। डा. धीरेन्द्र अन्तिम बेर बिट्ठो मे कथा पढ़ने छलाह। वनारसमे सगर रातिक उदघाटन कएने छलाह हिन्दीक प्रख्यात साहित्यकार ठाकुर प्रसाद सिंह। एहिठाम हमर आँखिक समक्ष हुनका लोकनिक स्मृति साकार भए गेल अछि। ओना मजफ्फरपुरसँ प्रभास कुमार चैधरीक संयोजकत्वमे सगर रातिक यात्रा आरम्भ भेल छल। मुदा केन्द्र रहल पटने। पटनामे सात खेप सगर राति अयोजित भेल अछि। सगर रातिक यात्राक विस्तृत वर्णन आ खण्ड खण्डमे विश्लेषण प्रस्तुत अछि। ओकर संक्षिप्त उल्लेख प्रस्तुत अछि।

कटिहार सगर रातिमे नवानीमे आयोजनक निर्णय भेल छल।संयोजक मोहन भारद्वाज प्रो. सुरेश्वर झाकेँकथाकार रूपमे प्रस्तुत कएल। ओतय श्यामानन्दचैधरी आ झंझारपुरक तात्कालीन डी.एस.पी. सरदार मनमोहन सिंह सम्मिलित भेलाह। ओ बरोबरि सम्मिलित होइत रहलाह। पंजाबक कलमकेँ मिथिलाक फूलबाड़ीमे चतरल देखि प्रमुदित होइत छलाह। सुरेश्वर झा डा. राम बाबूक सौजन्यसँ सकरीमे आयोजन कएल। सकरीमे ए.सी.दीपक अएलाह। नेहरामे आयोजन भेल। नेहरामे मन्त्रेश्वर झा सम्मिलित भेलाह। विराटनगरसँ जीतेन्द्र जीत अएलाह। नेहरामे सगर रातिक अवसरपर पठित कथाक एक प्रतिनिधि संग्रह प्रकाशित करबाक निर्णय भेल। डा.तारानन्द वियोगी एवं रमेश सहर्ष दायित्व ग्रहण कएल। कथा संग्रह श्वेत पत्र प्रकाशित भेल। श्वेत पत्रमे पैटघाट धरि पठित कथासँ बीछल कथा संगृहीत अछि। सगर राति दीप जरय कार्यक्रमकेँजीतेन्द्र जीत नेहरासँ विराटनगर, नेपाल पहुंचाओल। विराटनगरसँ बनारस आ बनारससँ पटना। पटनामे बुद्धिनाथ झा, अर्धनारीश्वर, रा.ना.सुधाकर केदार कानन, अरविन्द ठाकुर संग भेलाह तँ सगर राति सुपौल पहुंचि गेल। सुपौलसँ बोकारो, ओतयसँ पैटघाट आ पैटघाटसँ रमेश रंजन जनकपुरधाम लए गेलाह। जनकपुरधामसँ इसहपुर। इसहपुरसँ श्यामानन्द चैधरी झंझारपुर आनल। ओतयसँ घोघरडीहा, बहेरा सुपौल आ फेर सुपौल सँ धीरेन्द्र प्रेमर्षि काठमाण्डू लए गेलाह।काठमाण्डूसँ रामनारायण देव राजविराज आ ओतयसँ कोलकातामे प्रभास कुमार चैधरी सगर रातिक रजत जयन्ती आयोजित कएल। कहबाक तात्पर्य जे नव-नव लोकक अबैत रहलासँ सगर रातिक आयोजन बढैत गेल। किन्तु जतय कतहु अग्रिम प्रस्तावक संकट होइत छलैक प्रभास जी आ फेर कमलेश जी ठाढ़ छलाह। किछु आयोजकक अनुरोध बरोबरि अशोकजीक पाकेटमे पेंडिंग रहैत छलनि। बेगूसरायसँ श्याम दरिहरे संग भेलाह अछि।ओहो कौखन आ कतहु आयोजन लेल तत्पर छथि।जेना जेना किछु लोक संग होइत गेलाह अछि, ओहिना किछु गोटेअपनाकेँ असम्वद्ध सेहो करैत गेलाह अछि। एकर मुख्यतः तीनि टा कारण अछि-

1. अस्वास्थ्य,
2. पठित कथाक प्रतिक्रिया पर खौझा कए असंगत प्रहार, आ'
3. प्रतिक्रिया सूनि हतोत्साहित होएब, एवं
4. कार्यालयीन व्यस्तता।

एहि बीच नियमित एवं सक्रिय रूपसँ सहभागी बनैत कतेको साहित्यकार अस्वास्थ्य अथवा वार्धक्यक कारणँ आब सम्मिमलित नहि भए पाबि रहल छथि। जाहि मे प्रमुख छथि पण्डित श्री गोविन्द झा, रमानन्द रेणु, सोमदेव, जीवकान्त, मोहन भारद्वाज आदि। पठित कथा पर अपन स्पष्ट मंतव्यसँ चर्चाकेँ जीवन्त बनौनिहार प्रो. रमाकान्त मिश्र कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक प्रतिक्रियासँ आहत भेला पर सकरीक बाद अपनाकेँ पूर्णतःसमेटि लेलनि। विविधा पर साहित्य अकादमीक पुरस्कारक विरोधमे केदार काननक नेतृत्वमे कलमल सुपौलक साहित्यकारक प्रतिक्रियाक कारणँ डा.भीमनाथ झा जाएब छोड़ि देलनि। जे प्रभास जीक मनौअलि पर पण्डित गोविन्द झाक गाम इसहपुर जएबाक लेल तैआर भेल छलाह। तकर बाद कमे ठाम गेलाह अछि। श्वेतपत्र मे अपन कपचल कथासँ आहत जीतेन्द्र जीत अपन बाट काटि लेलनि। किछु गोटे एहि आशाक संग संवद्ध भेल छलाह जे लोक प्रशंसाक महल ठाढ कए देत, तकर पूर्ति नहि भेला पर उत्साह कमि गेलनि। किछु गोटेक मास्टरी नव आगन्तुक लेल आतंककारी एवं अनुत्पादक भए गेल अछि। सगर रातिक प्राण थिक अप्रकाशित आ अपठित कथाक पाठ। ओहि पर श्रोता अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि। ई प्रतिक्रिया तात्कालिक होइछतँ सम्भव रहैत छैक जे पुनः सुनला वा पढला पर भिन्न प्रतिक्रिया हो। एहि सक्रियताक तीन प्रकारक सकारात्मक प्रभाव अछि-

1. रचनात्मक सक्रियतामे वृद्धि,
2. कथाक शिल्पमे सुधारक अवसर आ'
3. व्यक्तित्वमे सहनशीलताक गुण बढेबाक अवसर।

पहिल सगर रातिमे प्रायः आठ टा कथाक पाठ भेल छल। कथाकसंख्या

क्रमशः बढैत गेल। सबसँ बेसी कथाकारक सहभागिता महिषीमे भेल छल। एहि बीच जतेक कथा संग्रह छपल अछि, अधिकांश कथा सगर रातिक अवसर पर पठित आ चर्चित अछि। वयोवृद्ध साहित्यकार श्यामानन्द ठाकुर बहेरामे संग भेलाह।ओहिठामसँ संग छथि। हुनक सक्रियताक अनुमान एहीसँकए सकैत छी जे ओ प्रत्येक आयोजन लेल दू टा कथा लिखैत छथि।

एमहर आबि पठित कथाक चर्चाक स्वरूप बदलि गेल अछि। पहिने पठित कथाधरि अपन प्रतिक्रिया सीमित राखल जाइत छल। मुदा आब व्यक्त विचारकँ कटबा पर विशेष ध्यान रहैत अछि। एहिसँ पक्ष विपक्षक स्थिति बनि जाइछ। कतेकोठाम अप्रीतिकर स्थिति उत्पन्न भए गेल अछि। चर्चाबहकय नहि एहि लेल प्रभासजी पूर्ण सतर्क रहैत छलाह। हुनक अभाव खूब खटकैत रहैत अछि।कवि सम्मेलन मनोरंजनक हेतु आयोजित होअय लागल अछि।रचनात्मक स्पर्धा अथवा सक्रियताक महत्व गौण छैक। तँ कवि लोकनि गओले गीत गबैत छथि। मुदा सगर रातिक अवसर पर अप्रकाशित एवंअपठित कथा पढबाक वाध्यताक कारणेँ रचनात्मक सक्रियता बढल अछि।

एक बेर व्यासजी गोविन्द बाबूकँ परामर्श दैत कहने छलथिन्ह जे धूमि घूमि भरि राति जागब अहाँक स्वास्थ्य लेल ठीक नहि अछि। गोविन्द बाबूक उत्तर छल जे हमरा एहिसँ उर्जा प्राप्त होइत अछि। आंकड़ा कहैत अछि ओ सबसँ बेसी भरि राति ओएह बैसलाह अछि तथा सबसँ बेसी हुनके व्यक्तिगतपोथीक लोकार्पण एहि अवधिमे भेल अछि। ई थिक सगर रातिक रचनात्मक प्रभाव। रचनाकारकँ उर्जस्वित रखबाक महान अवसर। कवि सम्मेलनमे आयोजककँ विदाइक व्यवस्था करय पड़ैत छनि। सगर राति एहि व्याधिसँ मुक्त अछि। सहभागी सत्यनारायणक पूजाक हकारजकाँ अबैत छथि आ भोर होइते घूमि जाइत छथि। एहिमे व्यावसायिकता नहि अछि, ई मातृभाषा प्रेमक सन्देश दैत अछि।सगर रातिक आयोजन विभिन्न स्थान पर भेलासँ स्थानीय विद्वत समाज आकर्षित होइत छथि। एकर प्रभाव ओहि स्थानक मैथिलीक सक्रियता पर पड़ैत अनुभव कएल गेल अछि। सगर राति दीप जरय समानधर्माकँ भरि राति एकठाम रहबाक अवसर दैत अछि। विचारक आदान प्रदानक केन्द्र स्वतः मैथिली भाषा आ साहित्य भए जाइत अछि। एहिसँ परिचय आ अनुभवक क्षेत्रक विस्तार होइछ। मैथिलीक रचनाकारमे भावात्मक संवद्धता बढैत अछि।सगर राति दीप जरयक निरन्तर आयोजनसँ मैथिली कथा लेखनक क्षेत्रमे शान्तिपूर्ण क्रान्ति आबि गेल अछि। आन भाषाभाषी आ सात्यिकारकबीच मैथिलीक कथाकारक प्रतिष्ठा बढ़ल अछि। विशेषतः एहि हेतु जे मैथिलीक कथाकार दूर-दूरसँ अपन पाइ खर्च कए पहुचैत छथि। कथा पढैत आ सुनैत छथि। अपन कथा पर लोकक प्रतिक्रिया धैर्यपूर्वक सुनैत छथि। आ फेर अग्रिम आयोजनमे सम्मिलित होएबाक संकल्पक संग घूमि जाइत छथि। जे सगर राति कथाकार लेल कल्पित भेल छल,समाजक सुधी समाजक अन्तःकरण मे प्रवेश कए मैथिली भाषा साहित्यक पक्षमे अनुकूल वातावरणबनेबामे सार्थक भूमिकाक निर्वाह कए रहल अछि। जहिआ सगर राति प्रारम्भ भेल छल आ एखनुक जे स्थिति अछि ओहि मे गुणात्मक आ परिमाणात्मक दूनू प्रकारक परिवर्तन स्पष्ट अछि। विकासक ई दिशा आ गति निश्चिते शुभलक्षण थिक। एहि शुभ लक्षणक उदाहरण तँ इएह थिक जे दरभंगाक पहिल आयोजनमे पहिले पहिल दू टा पोथीक लोकार्पण भेल छल आ स्वर्ण जयन्तीक अवसर पर 36 टा पोथी लोकार्पित भेल। विद्वानलोकनि कहि सकैत छथि कोन भाषाक मंच पर एकबेर 36 टा पोथीक लोकार्पण भेल अछि।दरभंगामे एकटा अमेरिकन नागरिक मैथिलीमे कथाक पाठ कएने छलाह। सगर राति दीप जरयक दृष्टिसँ बोकारो उर्वर छल, एम्हर आबि राँची, जमदेशपुर देवघर पूर्णियां आदि स्थान मैथिली लेल जगरना कएलक अछि,इहो शुभ लक्षण थिक।मुदा, सगर रातिक लोकप्रियता आ बिना वर.विदाइक साहित्यकार एवं साहित्यानुरागीक उपस्थितिक उपयोग कतहु कतहु कथा पाठ एवं ओहि पर चर्चासँ भिन्न प्रयोजन सिद्धि लेल सेहो भए गेल अछि। जे सगर रातिक मूल अवधारणाक अनुकूल नहि अछि। ओहिसँ बचबाक चाही। सहरसामे दोसर खेप सगर रातिक आयेजन 21 जुलाई, 2007 कँ भेल छल। सगर राति आयोजनक एक प्रमुख आकर्षण अछि भेटघाँट। ओहिसँ बाहरक साहित्यकार वंचित रहलाह। उपस्थितिक प्रसंग सूनि जीवकान्त जी 22 जुलाई, 2007क अपन पोस्ट कार्डमे लिखलनि अछि-

'सहरसा कथा गोष्ठीक खबरि भेल। कथा गोष्ठी भूतकालक वस्तु भेल। लेखन काज लेखक सभ छोड़ने जाइत छथि। सेमिनार, तकर प्रचलनबढ़ल अछि। टी.ए./डी.ए./भेटघाँट ई सभ भए गेँबू जे लेखकीय ल तझअस्मिताक अहंकार पुष्ट भेल आ' एक दोसराकँ बल देल। सरकारी मान्यताक बाद भाषामे अनेक राजरोग उत्पन्न होइत छैक। मैथिली निरपवाद रूपे पहिनेसँ बेसी रोगाहि भेल छथि। जिबैत रहओ।'हमरा विश्वास अछि सगर रातिक नियमित आयोजन मैथिलीके राजरोगसँ मुक्त रखबामे सफल होएत। साहित्य अकादेमी सँ वर्ष 2007 लेल पुरस्कृत प्रहरी प्रदीप बिहारीक कथा संग्रह सरोकारक प्रायः समस्त कथा सगर राति दीप जरयक अवसर पर लोक सुनने अछि। आ' ओहि पर अपन-अपन प्रतिक्रिया व्यक्त कएने अछि। सगर रातिक ई पहिल उपलब्धि थिकैक। एहि उपलब्धि पर मैथिली एहि शान्ति क्रान्तिक एक प्रतिभागीक रूपमे गर्व अनुभव करैत छी आ'कामना करैत छी इतिहास दोहराइत रहय।



रामाश्रय झा "रामरग" (1928- 2009)

विद्वान, वागयकार, शिक्षक आ मंच सम्पादक छथि।

मैथिली भाषामे श्री रामाश्रय झा "रामरंग" केर रचना।

१.राग विद्यापति कल्याण- एकताल (विलम्बित)

स्थाई- कतेक कहब गुण अहाँकेँ सुवन गणेश विद्यापति विद्या गुण निधान।
अन्तरा- मिथिला कोकिला किर्ति पताका "रामरंग" अहाँ शिव भगत सुजान॥

स्थायी - - सा रेगमंप गरेसा
ऽ ऽक ते ऽऽऽ क,कऽ

रे सा (सा), निध निसा रे निधप़ ध़नि सा सारे गरे रेगमंप (मं)
ह ब ऽ ऽऽ गु न ऽअ हां,ऽऽ केऽ ऽ सुव नऽ ऽऽऽऽ ऽ ग
प प धनि धप धनिसां - -रे सांनि धप (प)ग रे,सा रेगमंप ग, रेसा
ने स विऽ द्याप तिऽऽ ऽ ऽवि द्या गुन निधा न, क तेऽऽऽ क,क

अन्तरा पप निध निसां सांरें
मिथि लाऽ ऽऽ कोकि

सां निसांरेंगं रें सां रें सां रें नि सांरे नि धप प (प) ग रेसा
ला ऽ की ऽऽऽ तिं प ता ऽ ऽऽ का ऽऽ रा म रं ग अ

रे सासा ध़निप़ध निसा -सा रेगमंप - ग सारे सा,सा रेगमंप ग, रेसा
हां शिव भऽ,ग तऽ ऽसु जाऽऽऽ ऽ ऽ न ऽ, क ते ऽऽऽ क,कऽ

***गंधार कोमल, मध्यम तीव्र, निषाद व अन्य स्वर शुद्ध।

२.राग विद्यापति कल्याण त्रिताल (मध्य लय)

स्थाई- भगति वश भेला शिव जिनका घर एला शिव, डमरु त्रिशूल बसहा बिसरि उगना भेष करथि चाकरी।
अन्तरा- जननी जनक धन, "रामरंग" पावल पूत एहन, मिथिलाक केलन्हि ऊँच पागड़ी॥

स्थाई-

रे
भ

सा गमं प मं प - - मंग - रे सा सारे नि सा -, नि
ग तिऽऽ व श ऽ ऽ भे ऽ ला ऽ शि ऽ व ऽ ऽ जि

ध़ नि सा रे सा नि प़ ध़ नि ध़ प़ नि सा - - सा
न का ऽ घ र ऽ ऽ ए ऽ ला ऽ शि व ऽ ऽ ड

रे ग मं प प प नि ध प मं प धनि सां सां गं
म रु ऽ त्रि शू ऽ ल ब स हा ऽ बि सऽ ऽऽ रि उ

रें सां नि रें सां नि ध प मं प पनि ध प - -ग -- रे
ग ना ऽ ऽ भे ऽ ष क र थि चाऽ ऽ कऽ ऽरी ऽऽ, भ

अन्तरा प
ज

प नि सां सां सां - - ध नि - ध नि नि सां रें सां -, नि
न नी ऽ ज न ऽ ऽ ऽ ऽ क ध न ध न ऽ, रा

नि सां गं रें सां सां नि ध नि सां नि ध प ग

मं प नि सां सां नि ध प मं प पनि ध प- -ग रे
थि ला ऽ क के ल न्हि ऊँ ऽ च पाऽऽ गऽ ऽड़ी ऽऽ,भ

***गंधार कोमल, मध्यम तीव्र, निषाद दोनों व अन्य स्वर शुद्ध।

३.श्री गणेश जीक वन्दना

राग बिलावल त्रिताल (मध्य लय)
स्थाई: विघन हरन गज बदन दया करु, हरु हमर दुःख-ताप-संताप।

अन्तरा: कतेक कहब हम अपन अवगुन, अधम आयल ''रामरंग'' अहाँ शरण।
आशुतोष सुत गण नायक बरदायक, सब विधि टारु पाप।

स्थाई

नि
ग प ध नि सा नि ध प ध नि
ध प म ग म रे
वि ध न ह र न ग ज ब
द न द या ऽ क रु

ग ग म नि ध प म ग ग प
म ग म रे स सा
ग रु ऽ ह म र दु ख ता
ऽ प सं ता ऽ प ऽ

अन्तरा

नि

रें
प प ध नि सां सां सां सां
सां गं गं मं गं रें सां ___
क ते क क ह ब ह म अ
प न अ व गु न ऽ

रे
सां सां सां सां ध नि ध प
ध ग प म ग ग प प
अ ध म आ य ल रा म
रे ऽ ग अ हां श र ण

ध प म ग म रे सा सा सा
सा ध - ध नि ध प
आ ऽ शु तो ऽ ष सु त ग
ण ना ऽ य क व र
धनि संरें नि सां ध नि ध प
पध नि ध प म ग म रे
दाऽ ऽऽ य क स ब बि
ध टाऽ ऽ रु ऽ पा ऽ ऽ प

४. मिथिलाक वन्दना

राग तीरभुक्ति झपताल

स्थाई: गंग बागमती कोशी के जहँ धार, एहेन भूमि कय नमन करूँ बार-बार।
अन्तरा: जनक यागवल्क्ष्य जहँ सन्त विद्वान, ''रामरंग'' जय मिथिला नमन तोहे बार-बार॥

स्थाई

रे ग म प म ग रे सा
गं ऽ ग ऽ बा ऽ ग म ऽ ती

प
सा नि ध़ प़ नि नि सा रे सा
को ऽ शी ऽ के ज हं धा ऽ र

सा
म ग रेग रे प ध म पनि सां सां
ए हे नऽ ऽ भू ऽ मि कऽ ऽ य

प
सां नि प ध (ध) म ग रे सा सा
न म न क रुँ बा ऽ र बा र

अन्तरा

प पध म प नि नि सां सां
ज नऽ क ऽ ऽ या ग्य व ऽ ल्क

रें रें गं मं मं गं रें सां
ज हं सं ऽ त वि ऽ द्वा ऽ न
ध प
सां नि प ध म प नि सां सां सां
रा म रं ऽ ग ज य मि थि ला
प
सां नि प ध (ध) म ग रे सा सा
न म न तो हे बा ऽ र बा र

५. श्री शंकर जीक वन्दना

राग भूपाली त्रिताल (मध्य लय)

स्थाई: कतेक कहब दुःख अहाँ कय अपन शिव अहूँ रहब चुप साधि।
अन्तरा: चिंता विथा तरह तरह क अछि, तन लागल अछि व्याधि,
''रामरंग'' कोन कोन गनब सब एक सय एक असाध्य॥

स्थाई

प ग ध प ग रे स रे स ध
सा रे ग रे ग ग
क ते क क ह ब दुः ख अ
हाँ कय अ प न शि व

ग ग रे ग प ध सां पध
सां ध प ग रे सा ___
अ हूँ ऽ र ह ब चु प साऽ
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ धि ऽ

अन्तरा

प ग प ध सां सां सां सां
ध सां सां सां रें सां सां
चिं ऽ ता ऽ वि था ऽ त र
ह त र ह क अ छि

सां सां ध - सां सां रें रें
सं रे गं रें सां ध प
त न ला ऽ ग ल अ छि व्या
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ धि ऽ

सां ध प ग रे स रे सा
ध स रे ग रे ग ग
रा ऽ म रं ऽ ग को न को
ऽ न ग न ब स ब

ग ग ग रे ग प ध सां पध
सां ध प ग रे सा ___
ए क स य ए ऽ क अ साऽ
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ध्य ऽ



श्री रामलोचन ठाकुर

जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। प्रकाशित कृति- इतिहासहन्ता, माटिपानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्वा (कविता संग्रह), बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनुदित कविता), जा सकै छी, किन्तु किए जाउ(अनुदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आंखि मुनने: आंखि खोलने (निबन्ध)। —— सम्पादक

पास करबाक लेल

उत्तर पुस्तिका आपस रखिते
पुछि बैसैत छथि मैम
अर्धवसना बाब्ऽकेशी
वय विलम्वित नवल वेशी
सोनाक वर्ग शिक्षिका-
देखलहुँ, बड़ कमजोर अछि नेना अहाँक
कने नीक जकाँ करिऔक गाइड...
कमजोर त ई नहि अछि मैम
आ जहाँधरि छैक बात करबाक गाइड
से स्कूल त ताही लेल पठाओल जाइत अछि
अंग्रेजीक एक पत्र मे पचासी
आ दोसर मे किएक अबैत छैक पचीस
सोचबाक बात इहो की नहि थिक?
विहुँसैत बजैत छथि मैम
पाश्चात्य शिक्षा-संस्कृतिक सेविका
वैश्वीकरण मेनका-
खाता त देखबे कएल
लिखने अछि मात्र दूटा पेज
तें ने कहल हम
कमजोर ओ नहि अछि
पढ़बैत छिऐक स्वयं हम
लिखबे नहि कएलक
से बात भेल अन्य
परंच एहिठाम नम्बर नहि देल गेलैक
से भेल नहि बोधगम्य...
ओहिना बिहुँसैत पुछैत छियनि हम
देखबैत पुस्तिकाक पंक्ति विशेष
आश्चर्य चकित सन भेल कहै छथि मैम-
गलती लिखने अछि
संयुक्त परिवार सुखी परिवार!
त एहि मे गलती की छैक?
रिक्तस्थान मे ओ लिखि देलक संयुक्त
मैम, संयुक्त परिवार आ
बसुधैव कुटुम्वकम् केर संस्कारमे पालित
हमर पौत्र केना लिखि पाओत
छोट परिवार नीक...
मुदा
पोथी मे सएह छैक
इएह ने कहब अहाँ
आ पास करबाक लेल
उएह सिखए पड़तैक
आर की-की सिखए पड़तैक एकरा
जिनगी मे करबाक लेल पास?
मैम चुपचाप निहारैत रहि जाइत छथि
हमर मुह निर्निमेष
विदा लैत छी हम
कहैत- वेश!!

(२६.१०.२००८)

किछु क्षणिका (हाइकू)

१. भोजक पान
सासुरक सम्मान
पुनिमाक चान

२. हाथीक कान
नटुआक बतान
एक समान

३. दूरक चास
गामक कात बास
कोन विश्वास

४. बाँझीक फूल
महकारीक फल
के कहै भल

५. दादुर-गान
डोकाक अभियान
वेथे गुमान

६. हिजरा-नाच
ओकिल केर साँच
की ६ की पाँच

(२६.१०.२००८)

राम नारायण देव

उठल मधेशी कयल हुँकार
लऽके रहत, अप्पन अधिकार
जन जनकेँ, एके आवाज
सबहक माँग, मिथिला राज्य
अप्पन भाषा, अप्पन सँस्कृति
अप्पन अर्थनीति, अप्पन राजनीति
मधेशी आन्दोलनक इएह सन्देश
अप्पन बात, अप्पन परिवेश
निरकुश राजतन्त्रक भेल अवसान
भेंटल लोकतन्त्रक बरदान
मेची–महाकाली उमडिगेल अछि
राज्यशक्ति मुकिगेल अछि
उठू बन्धू, उठाउ तखआरि
भगाउ सामन्ती राजदरवार
गठन करु गणतन्त्रक सरकार
करु राज्यक पुर्नसँरचना
समावेसी लोकतन्त्र आ
समानुपातिक कल्पना
अप्पन विकार, अप्पन विचार
आव कियो नहि रहत, शिक्षित वेरोजगार
छोडू आपसी मेल, करु विकासक मात्र खेल
उखाडि फेकू, राजाक ताज
तखन भेटत अप्पन स्वराज
जन–जनके एके आवाज
सबहक माँग, मिथिला राज्य।



प्रोफेसर रत्नेश्वर मिश्र (१९४५-)

पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा। अनुवादक, निबन्धकार। प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास, भवभूति (दुनू अनुवाद)।

मिथिला विभूति पं मोदानन्द झा-प्रोफेसर रत्नेश्वर मिश्र

पूर्णियाँ जिलाक पंजीकार परिवारमे उत्पन्न पं. मोदानन्द झा आधुनिकताक कसौटीपर अनुदार मुदा पारम्परिकताक कसौटीपर उदार, विद्वान आ विद्वत्ताक सत्संगति लेल आतुर, विलक्षण प्रतिभासँ सम्पन्न व्युत्पन्नमतित्व वाला मिथिलाक अत्यन्त सम्मानित पंजीकार छलाह। पंजीशास्त्र हुनका पूर्णतः अधिगत छलनि आ ओ पंजीसँ जुड़ल ककरहु कोनो जिज्ञासाक समाधान लेल सदैव तत्पर रहैत छलाह। ओ वस्तुतः मिथिलाक विभूति छलाह जनिकर स्मृतिक संरक्षणार्थ जे किछु कयल जायत से थोड़ होयत।

पूर्णियाँ जिलाक रसाढ़ ग्रामक रहनिहार पं मोदानन्द झा पड़वे महेन्द्रपुर मूलक ब्राह्मण छलाह आओर विस्तृत कृषि-भूमिक कारणे बादमे शिवनगर ग्राममे रहय लगलाह। रसाढ़ आ शिवनगर दुनू धर्मपुर परगनान्तर्गत अवस्थित अछि। १९१४ ई.मे उत्पन्न ओ अपन माता-पिताक एक मात्र पुत्र छलाह। परम्परासँ हुनकर परिवार पंजीकारहिक छलनि आ हुनक पिता भिखिया झा ई व्यवसाय करितो रहथिन। ओ मुदा नीक कृषक रहथि आ हुनकर बेसी समय ओहिमे लगनि। हुनका २०० एकड़सँ बेशीक जोत रहनि। ओ अपने प्रायः शिक्षितो नहियें जकाँ रहथि, मुदा अपन पुत्रकँ नीकसँ नीक शिक्षा दिआयब हुनकर अभीष्ट रहनि। मोदानन्द झा स्वयं बुझबा जोगरक भेलापर अपन कौलिक व्यवसाय आ प्रतिष्ठाक पुनरुद्धार करबा लेल कृतसंकल्प भेलाह।

अपन बाल्यावस्थाक संस्मरण बजबाक क्रममे ओ प्रायः बाजथि जे ओ बड़ए प्रसन्नता आ आह्लादक समय छल। ओ माता-पिताक दुलरुआ त छलाहे, काका-काकी तथा आन सम्बन्धी आ कुटुम्बी जनक स्नेह सेहो हुनका प्रचूर प्राप्त छलनि। ओ दैनिक कृत्य आ विद्यालयसँ बाँचल समयमे माछ मारथि आ ई बहुत दिन धरि हुनकर प्रिय मनोरंजन रहनि। ओ एक बेर बहुत गम्भीर रूपेँ बीमार पड़लाह। वस्तुतः तहिया पूर्णियाँ जिलामे मलेरिया आ कालाजार महामारीक रूपमे पसरल छल। आ कहबी छलैक जे “जहर खाउ ने माहुर खाउ, मरैक होइ तऽ पूर्णियाँ जाउ”। हुनकर माता एक सम्पन्न कुलक महिला रहथिन आ ओ अपन पुत्रक रुग्णताक समाप्ति लेल किछु करबा लेल तत्पर छलीह। हुनकहि जिदपर २०० रुपया फीस दऽ कलकत्तासँ डाक्टर मँगाओल गेल। चारि पंडित अहर्निश हुनकर रुग्णावस्थामे दुर्गा सप्तशती आ गीताक पाठ करैत रहलाह। हुनकर माता स्वयं ताधरि अन्न ग्रहण नहि कयलथिन जा हुनकर पुत्र पथ्य ग्रहण करबा जोगरक नहि भेलनि। कलकत्तासँ आयल डॉक्टरक तऽ अन्य विदाइ कैले गेलनि, पाठ केनिहार ब्राह्मणो लोकनिक आ पुत्रक आरोग्य-लाभक उपलक्ष्यमे गाम-टोलक लोक सभकँ भोज सेहो खोआओल गेल। मुदा पिताक आकांक्षा छलनि पुत्रकँ विद्वान् देखबाक आ विद्यार्थीक लेल गण्य करक-चेष्टा, वक ध्यान, श्वान-निद्रा तथा अल्पाहारी आदि लक्षणसँ जन्मतः परिपूर्ण मोदानन्द झा लेल समय अयलनि गृह-त्यागी होयबाक।

दस वर्षक अल्पायुमे हुनका वर्तमान मधुबनी जिलान्तर्गत सौराठ गाम विद्याध्ययन लेल पठाओल गेलनि। ओतय हुनक गुरु आ आश्रयदाता रहथिन ख्यातनाम पंजीकार पं.विश्वनाथ प्रसिद्ध निरसू झा, जनिकर पिता लूटन झा मोदानन्द झाक मौसा रहथिन। पंजीशास्त्रक अध्ययन लेल सामान्यतः पन्द्रह वर्षक कालावधि समुचित मानल गेल छैक मुदा मोदानन्द झा दसे-एगारह वर्षमे गुरु-कृपासँ निष्णात भेलाह। ओना ओऽ पन्द्रह-बीस वर्ष धरि लगातार गुरु सान्निध्यमे सौराठ रहलाह आ बादोमे आजीवन, विशेष रूपसँ वार्षिक वैवाहिक सभाक अवसरपर सौराठ अबैत-जाइत रहलाह आ ताहि क्रममे बाटमे दरभंगा स्थित हमर नरगौना निवासपर ओऽ कनियो देर लेल अवश्य आबथि। हमर पिता डॉ. मदनेश्वर मिश्र लेल हुनका विशेष स्नेह आ सम्मान रहनि आ हमर एक पितृव्य पं. नागेश्वर मिश्रक ओऽ सम्बन्धमे साढ़ू रहथिन। हमर एकटा पीसा स्व. दिगम्बर झा हुनकर पितियौत रहथिन। जे हो, विद्याध्ययन समाप्त भेलापर राज-दरभंगा द्वारा आयोजित धौत परीक्षामे १९४० मे ओऽ सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयलनि। हुनका संग उत्तीर्णता प्राप्त केनिहार अन्य दू महत्वपूर्ण

पंजीकार छलाह ककरौरक हरिनन्दन झा आ सौराठक शिवदत्त मिश्र। एहि सफलता लेल महाराज सर कामेश्वर सिंहक हाथे तीनू गोटाकँ धोती देल गेलनि, मुदा सर्वोच्च घोषित भेलाक कारणेँ मोदानन्द झाकँ दोशाला सेहो देल गेलनि। पारम्परिक मिथिलामे धौत परीक्षामे उत्तीर्ण भेनाय बड़का सम्मान होइत छल मुदा ताहूमे सर्वोच्चता पायब तँ अनुपमे छल। तहियासँ अनवरत ओऽ अपन जीवन-पर्यन्त मिथिलाक प्रायः सर्वाधिक समादृत पंजीकार रहलाह।

मोदानन्द झाकँ पाबि पंजीकारक व्यवसाय धन्य भेल। १९६२ मे निरसू झाक दिवंगत भेलापर ओऽ सौराठ प्रतिवर्ष नियमपूर्वक वैवाहिक सभामे मात्र अपन नाम बढ़यबा लेल नहि बल्कि अपन गुरुक ऋण अदाय करबाक विचारसँ सेहो जाथि। ताधरि निरसू बाबूक दुनू बालक छोट रहथिन आ पंजीकारी नहि करथि। हुनकर जेठ बालक प्रोफेसर (डॉ.) कालिकादत्त झा, जे सम्प्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक संस्कृत विभागक अध्यक्ष रहथि आ विगत लगभग दस-पन्द्रह वर्षसँ दरभंगामे रहि रहल छथि (पहिने मगध विश्वविद्यालय, गयामे रहथि) आब सक्रिय रूपेँ अधिकार जँचबा आ सिद्धान्त लिखबाक काज करय लागल छथि। ताहिसँ पहिने मोदानन्दे बाबू अपन गुरुक ओहिठाम अयनिहार लोकनि लेल सिद्धान्तादि लिखथिन। ततबे नहि ओऽ निरसू बाबूक पुत्र लोकनिकँ पंजी-ज्ञान ओएह देलथिन आ आइयो कालिकादत्त बाबू गुरु रूपहि हुनका प्रति श्रद्धा रखैत छथि।

मोदानन्द बाबू पंजीकारीक व्यवसायसँ जे धनार्जन करथि ताहिसँ सन्तुष्ट छलाह। सिद्धान्त लिखबासँ तथा विदाइसँ हुनका पर्याप्त कमाइ होइन आओर खेत-पथारसँ सेहो नीक आय होइत छलनि।

कमाइसँ बेसी हुनकर अभिरुचि ज्ञानक विस्तारमे आ पंजीसँ सम्बन्धित विषयपर शोध करबामे छलनि। मैथिलीक महान् विद्वान, आलोचक आ समीक्षक डॉ. रमानाथ झाक संग ओऽ पृथक-पृथक विभिन्न मूलक विख्यात छवि, विद्वान् आ राजा-जमीन्दार सबहक वंश-परिचय तैयार करबा दिस प्रवृत्त भेलाह आ तकरहि परिणाम छल पूर्णियाँक प्रसिद्ध बनेली राजवंशक परिचयात्मक पुस्तक अलयीकुल प्रकाशक प्रकाशन। आन एहन प्रकारक कृत्य नहि तैयार कयल जा सकल तकर हुनका क्षोभ छलनि। हुनकर शोधपरक सोचक अंग छल एक अन्य परियोजना जाहिक अन्तर्गत विशिष्ट गाममे बसनिहार मैथिल ब्राह्मण सभक बीजी पुरुष धरिक परिचयात्मक विवरण तैयार करब अभीष्ट छल। ओऽ सर्वप्रथम कोइलख गामक सम्बन्धमे एहन रचना लिखलनि। ओऽ हमरा तकर कतिपय अंश सुनेबो कयलनि। हुनकर इच्छा रहनि जे उक्त रचनाक प्रकाशन हो मुदा से आइ धरि नहि भऽ सकल अछि। उपर्युक्त दुनू प्रकारक शोध परियोजनाक पंजीकार समाजमे सामान्यतः आलोचना भेलैक कियैक तँ ओऽ अपन रचनामे एहनो विवरणक सन्निवेश करय चाहैत रहथि जे पंजीकारीक व्यवसायमे प्रकाशित करब वर्जित कहल जाइत छैक- वस्तुतः ओऽ विवरण सभ दूषण पञ्जीक अंग होइत छैक जाहिमे व्यक्ति आ परिवार विशेषक सम्बन्धमे ज्ञात अशोभनीय आ अप्रकाश्य बात उल्लिखित रहैत छैक। एहि क्रममे एक तेसर परियोजना, जाहिपर ओऽ उन्नैस सय पचासहिक दशकमे कार्य आरम्भ कयलनि छल, ओहन पञ्जीकार परिवार लग उपलब्ध पाण्डुलिपिक संग्रह करब जाहि परिवारमे आब क्यो पंजीकारीक व्यवसायमे नहि रहि गेल रहथि आ हुनकर पंजी-पोथी सभ नष्ट भऽ रहल छलनि। पिताक मृत्यु भऽ गेलासँ हुनकर दरभंगा सम्पर्क घटि गेलनि आ पूर्णियाँमे पारिवारिक सम्पत्तिक प्रबन्धनमे अपेक्षाकृत बेसी समय लगबय पड़नि। तथापि हुनकर शोध-दृष्टि बनल रहलनि आ ओऽ अपेक्षा करथि जे सामाजिक विज्ञानमे आधुनिक शोध तकनीकसँ परिचित क्यो व्यक्ति हुनका संग रहि उपर्युक्त परियोजना सभ तँ पूर्ण करबे करथि पंजीसँ सम्बन्धित आनोआन विषयपर काज करथि। हुनकर ई अभिलाषा नहि पूर्ण भेलनि मुदा हुनक पुत्र मोहनजी, जे पञ्जीकारीक पैत्रिक व्यवसायमे लागि क्रमिक रूपेँ कौलिक प्रतिष्ठाक विस्तार कय रहल छथि। आ अनुकरणीय रूपसँ पितृभक्त सेहो छथि, एहि दिशामे भविष्यमे क्रियाशील भऽ सकैत छथि।

स्वयं शोधपरक दृष्टि आ रुचि रखनिहार मोदानन्द बाबू जिज्ञासु लोकनिक मदति करबालेल सदति तत्पर रहैत रहथि। हमरा कमसँ कम दू अवसरपर एकर लाभ भेटल। हम १९८७-८८मे बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटनाक अनुरोधपर बिहारक एक पूर्व मुख्यमंत्री पं. विनोदानन्द झाक जीवनी लिखि रहल छलहुँ मुदा हुनकर वंश-परिचय कतहु प्राप्य नहि छल। आधा-छिधा भेटबो कयल तँ प्रामाणिक नहि। हम कैकटा पंजीकारसँ एहि सम्बन्धमे जिज्ञासा कयलहुँ मुदा व्यर्थ। मात्र मोदानन्द बाबू सूचना देलनि जे हुनकर एक परिजन स्व. गिरिजानन्द झा गंगाक दक्षिण बसल मैथिल ब्राह्मण आ पंडा सभक वंशावली तैयार करबाक स्तुत्य प्रयास कयलनि आ अपना संग शिवनगर स्थित हुनकर घरमे जाऽ ओहि संग्रहमे विनोदानन्द झाक वंश परिचय तकबाक चेष्टो कयलनि, मुदा हुनकर पंजी-पोथी सभ व्यवस्थित आ संगठित नहि भेलाक कारणेँ से संभव नहि भेल। जे हो, हमरा ई अवश्य ज्ञात भऽ गेल जे यदि स्व. गिरिजानन्द झाक पोथी-पंजी व्यवस्थित नहि कयल गेलनि तऽ गंगाक दक्षिण बसल मैथिल ब्राह्मण लोकनिक पूर्वजसँ सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना सभ लुप्त भऽ जेतैक कियैक तँ गिरिजानन्द बाबूक परिवारमे आन किनकहु पंजीकारीक व्यवसायमे रुचि नहि छनि। दोसर अवसर छल जखन भारतीय इतिहास शोध परिषदक अनुरोधपर हमरा पूर्णियाँ जिलाक धमदाहा ग्राममे उत्पन्न सुविज्ञात इतिहासकार प्रोफेसर जगदीश चन्द्र झाक अंग्रेजीमे लिखल विलक्षण पोथी ''माइग्रेशन ऐन्ड एचीवमेन्ट्स ऑफ मैथिल पंडित्सः दि माइग्रैन्ट स्कौलर्स ऑफ मिथिला (८००-१९४७)क १९९० मे समीक्षा लिखबाक छल। ओहि पोथीक परिशिष्टमे कम-सँ-कम तीन पंडित (१) महामहोपाध्याय नेनन प्रसिद्ध दीनबन्धु झा, (२)

म.म.भवनाथ झा आ(३)म.म.गुणाकर झा केर वंश परिचय देल छल किन्तु लेखककेँ हुनका लोकनिक मूल ज्ञात नहि भऽ सकलनि। मोदनन्द बाबू क्षण भरि ध्यानस्थ भेलाह आ कहलनि जे ई लोकनि क्रमशः खौवालय सुखेत, नरौने पूरे आ खौवालय नाहस मूलक छलाह। एतय ई कहब आवश्यक जे मूल आ एक-दू खाढ़िक व्यक्तिक नाम देल रहलापर आन सम्बन्धित सूचना देव संभव छैक मुदा उपर्युक्त उदाहरणमे तँ उनटा बात छैक आ तैयो मोदानन्दे बाबू सन पंजीकार छलाह जे वांछित सूचना तत्काल देबामे समर्थ भेलाह। ओ ओहि पुस्तकमे उल्लिखित पन्द्रह खनाम मूलक प्रसिद्ध विद्वान् गोकुलनाथ, हुनक पिता पीताम्बर आ पुत्र रघुनाथक विषयमे बतौलनि जे ओ तीनू मिथिलाक बारह सडयन्त्री अथवा सर्वज्ञाता विद्वान् मे सँ छलाह। गोकुलनाथक पितामहक नाम रामभद्र छलनि, रामचन्द्र नहि। एतबहि नहि ओ इहो बतौलनि जे मिथिलाक एक घुमक्कड़ विद्वान् ककरौर वासी पड़वे महेन्द्रपुर मूलक गुणाकर झाक एक वंशज धीरेन्द्र झा सेहो छलाह जे आइसँ लगभग चारि सय वर्ष पूर्व बंगाल जाय ओतुक्का ब्राह्मण सभक पंजी-सूचनाक संशोधन-संवर्द्धनक क्रममे अनेक ब्राह्मणेतर व्यक्ति सभकँ ब्राह्मणक रूपमे पंजीमे परिगणित कय देलथिन। अपन पंजी-पोथीमे उक्त धीरेन्द्र झा अपनाकँ आ अपन पिताकँ पंजी पंचानन कहि सम्बोधित कयलनि अछि। एहन कतेको सूचना मोदानन्द बाबू जिज्ञासु व्यक्ति सभकँ दैत रहैत छलथिन।

ओ अपन समाजमे अपन विद्वता, उदारता आ सहज सम्प्रेषणीयताक कारणेँ सर्वत्र समादृत रहथि। हम जखन छोट छलहुँ, आइसँ प्रायः पचास वर्ष पूर्व, ओ हमर गाम विष्णुपुर अथवा पूर्णियाँ शहर स्थित हमर डेरा आबथि तऽ सम्पूर्ण परिवार हुनकर सम्मानमे सन्नद्ध रहैत छल। ओ सभक छुइल भोजन कहियो नहि कयलनि। बेसी काल सभ सामग्री दऽ देल जाइन तऽ ओ अपन पाक अपनहि करथि। हमरा बूझल अछि जे कैक बेर हमर सभसँ जेठ पित्ती, पूर्णियाँक अत्यन्त समादृत ओकील आ भरि बिहारमे सभसँ बेसी अवधि धरि सरकारी ओकील रहनिहार स्व. कपिलेश्वर मिश्र अपन हाथें हुनका लेल पाक करथिन। हमरा परिवारमे तऽ हुनका सदैव सम्मान भेटबे करैत रहनि मुदा अन्यत्रो कम नहि। एक बेरक घटना सुनबैत ओ कहने छलाह जे ओ वर्तमान बांग्ला देशक एक मैथिल ब्राह्मण बहुल गाम बोधगाम गेल छलाह जतय हुनका प्रचुर विदाइ तऽ भेटबे कयलनि ओतुका लोक सभ हुनकर पएर पखारि चरणोदक सेहो लेने रहनि।

मोदानन्द बाबू अपन चिन्तनमे एक तरहँ प्रगतिशील आ सुधारक सेहो रहथि। हुनकर चेष्टा रहनि जे पंजीकार लोकनि मात्र अधिक सँ अधिक धनार्जन मे लागि अपन वृत्तिक प्रतिष्ठार्थ सेहो सोचथि। हुनका ई नीक नहि लगनि जे पंजीकार सभ एक दोसराक प्रति द्वेष भावसँ कार्य करथि। हुनकर इच्छा रहनि जे सभ मिलि पंजी आओर पंजीकारक संस्थाकँ जीवन्त बनाबथि तथा समाजमे हुनका सभकँ जे आदर प्राप्त रहनि तकर लाभ लए समाजकँ दिशा निर्देश देथिन। ओ राजदरभंगाक निर्देशमे चलि रहल पंजी व्यवस्थाक प्रजातंत्रीकरणक पक्षमे रहथि जाहिसँ ब्राह्मण समाजक सभ वर्गक प्रतिनिधि मिलि ओहिना परमानगी दय जातीय स्तरीकरणमे समय-समयपर वांछित परिवर्तन करथि जेना राज दरभंगाक तत्वावधानमे अतीतमे कैक बेर कयल गेल छलैक। जे कोनो ब्राह्मण परिवार पंजी-व्यवस्था विहित रीतिसँ नीक वैवाहिक सम्बन्ध करथि तनिकर स्तरोन्नयन करबाक ओ पक्षमे रहथि। १९६६ मे हमर पित्ती डॉ. रामेश्वर मिश्रक विवाह जखन सोनपुर (उजान) वासी प्रसिद्ध श्रोत्रिय ब्राह्मण स्व. दुर्गेश्वर ठाकुरक कन्यासँ स्थिर भेलनि तँ मोदानन्द बाबू राजसँ परमानगी प्राप्त करबामे तऽ सहयोगी भेबे केलथिन, सौराठमे अधिकांश पंजीकारक बैसक बजाय सभक सहमतिसँ हमर प्रपितामह लाल मिश्रक सभ सन्तति लेल कन्हौली पाँजिक स्थापना सेहो करबौलनि। ओ प्रायः खभगड़ा (अररिया जिला) वासी स्व. बालकृष्ण झाक परिवार आ कतिपय आनो परिवार लेल एहने स्तरोन्नयनक पक्षमे रहथि। हुनकर मन्तव्य रहनि जे जमीन्दारी प्रथाक उन्मूलनसँ आन अनेक संस्थाक संग पंजी व्यवस्थाक सेहो बड़ क्षति भेलैक। जमीन्दार लोकनि परम्परा आ संस्कृतिक सम्पोषक रहथि मुदा आब हुनकर स्थान लेनिहार सरकार अथवा कोनो आन संस्था से काज ताहि रूपेँ नहि कऽ पाबि रहल अछि। पंजीकार लोकनिक दुर्दशाक एक कारण जमीन्दारक समाप्ति सेहो भेल। हुनका सन्तोष रहनि जे पटनाक मैथिली अकादमी सन संस्था हुनक जीवन पर्यन्तक सेवाक मान्यता दय हुनका सम्मानित कयने छलनि, मुदा से संभव भेल छल अकादमीक तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. मदनेश्वर मिश्रक व्यक्तिगत प्रयाससँ, अन्यथा आन किछु श्रोत्रिय, योग्य आ कुलीन परिवारकँ छोड़ि अनेकशः मैथिल ब्राह्मण परिवारेकँ जखन पंजीकार अथवा हुनका द्वारा कयल सिद्धान्तक प्रयोजन नहि रहलनि तऽ ब्राह्मणेतर समाज आ प्रायशः तकरहि प्रतिनिधि सरकार पंजीकारक स्थितिमे सुधारक कोनो यत्न कियैक करत।

मिथिला विभूति स्व. मोदानन्द झाक स्मृतिक संरक्षणार्थ ई सर्वतोभावेन वांछनीय अछि जे पूर्णियाँमे हुनका द्वारा सुविचारित शोध परियोजना सभपर काज करबाओल जाय, स्व. गिरिजानन्द झा सन मिथिला भरिमे पसरल पञ्जीकार लोकनिक ओतय उपलब्ध ओ पंजी-पांडुलिपि सभक संग्रह कयल जाय जे आब कतिपय कारणसँ उपयोगमे नहि रहि गेल अछि, मैथिल मूल ग्राम सभक अभिज्ञान प्राप्त कयल जाय तथा ज्ञात अथवा अज्ञात मैथिल ब्राह्मण परिवारक विशिष्टताक प्रचारार्थ परिचयात्मक विवरणिका तैयार करबाओल जाय। पंजी व्यवस्था निश्चयतः पतनोन्मुख अछि मुदा मोदानन्द बाबूक बताओल मार्गपर जौं शोध कार्य कयल गेल तऽ मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहासक अभूतपूर्व सेवा होयत।



डा. रेवतीरमण लाल

मधुश्रावनी

मधुश्रावनी आएल
मन-मन हर्षए
चहुँदिस साओन
सुन्दर घन वर्षए
काँख फुलडालि
मुस्कथि कामिनी
मलय पवन
सुगन्धित शीतल
दमकए दामिनी
नभ मंडलमे घनघोर
मानू जल नहि वर्षए
ई विरही यक्षक नोर
झिंगुर बेंङ्ग गुञ्जए
जल थल अछि चहुँओर।



रोशन जनकपुरी

डर लगैए

नाचि रहल गिरगिटिया कोना, डर लगैए
साँच झूठमे झिझिरकोना, डर लगैए
कफन पहिरने लोक घुमए एम्हर ओमहर
शहर बनल मरघटके बिछौना, डर लगैए
हमरे बलपर पहुँचल अछि जे संसदमे
हमरे पढ़ाबे डोढ़ा-पौना, डर लगैए
आङनमे अछि गुम्हरि रहल कागजके बाघ
घर घरमे अछि रोहटि-कन्ना, डर लगैए
आँखि खोलि पढ़िसकी तऽ पढ़ियौ आजुक पोथी
घँटकट्टीसँ भरल अछि पन्ना, डर लगैए
चलू मिलाबी डेग बढ़ैत आगूक डेगसँ
आब ने करियौ एहन बहन्ना, डर लगैए



रूपा धीरू

जन्मस्थान-मयनाकडेरी, सप्तरी, श्रीमती पूनम झा आ श्री अरूणकुमार झाक पुत्री।स्थायी पता- अञ्चल- सगरमाथा, जिल्ला-सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-कोइली कानए, माटिसँ सिनेह (कविता), भगता बेङक देश-भ्रमण (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रेमर्षिसँग मैथिलीमे सहअनुवाद, सङ्गीतसम्बन्धी कृति-राष्ट्रियगान, भोर, नेहक वएन, चेतना, प्रियतम हमर कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम भेल तरघुस्कीमे, सुरक्षित मातृत्व गीतमाला, सुखक सनेस। सम्पादन-पल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, सम्पादन-सहयोग, हमर मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ५ आ कक्षा 9-10 क ऐच्छिक मैथिली विषय पाठ्यपुस्तकक भाषा सम्पादन), पल्लवमिथिला, प्रथम मैथिली इन्टरनेट पत्रिका, वि.सं. २०५९ माघ (साहित्यिक), सम्पादन-सहयोग।–**सम्पादक**

अङ्केजल काँट

नहि जानि बहिना किएक
आइ तोँ बड़ मोन पड़ि रहल छह
आ ताहूसँ बेसी तोहर ओ
छहोछित्त कऽ देबवला
मर्मभेदी वाण।

बहिना तोँ कहने रहऽ हमरा
ऐँ हइ बहिना!
एहन काँट भरल गुलाबकेँ
अपन आँचरमे एना जे सहेजने छह
तोरा गड़ैत नहि छह?
तोँ उत्तर पएबाक लेल उत्सुक छलह
मुदा हम मौन भऽ गेल रही
आ तोँ मोनेमोन गजिरहल छलह।
हँ बहिना, ठीके
हमरो तोरेजकाँ
अपन जिनगीमे फूलेफूल सहेजबाक
सपना रहए
आ अगरएबाक लालसा रहए तोरेजकाँ
अपन जिनगीपर
मुदा की करबहक...!
मोन पाड़ह ने
छोटमे जखन अपनासभ
ती-ती आ पँचगोटिया खेलाइ
बेसी काल हमहीँ जीतैत रही
मुदा जिनगी जीबाक खेलमे
हम हारि गेल छी बहिना।
काँट काँटे होइ छै बहिना
गड़ै कतहु नहि
मुदा हम काँटेकेँ अङेजि लेने छी
मालिन जँ काँटकेँ
नइ अङेजतै बहिना तँ फेर गुलाब महमहएतै कोना?



रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'

ग्राम+पत्रालय-त्योंथा, भाया-खिरहर, थाना-बेनीपट्टी, जिला-मधुबनी, सम्प्रति कोलकाता मे स्नातक स्तर मे अध्यनरत, साहित्यिक गतिविधि मे सेहो सक्रिय, दर्जन भरि रचना पत्र-पत्रिकादि मे प्रकाशित। सम्पादक

बूथ कैप्चरिंग

कोन पाप लागल से ने जानि
घुरि अयलहुँ मोनक बात मानि
नोकरी सँ ने भेटैत अवकाश
ने करितहुँ हम ई गाम वास
अयलहुँ तऽ लागय सभटा नीक
अछि ने मुदा किछुओ ठीक
आब गामक हवा अछि बिगड़ल
अछि स्वार्त जल सँ सभ भीजल
तथापि रहैत छलहुँ हर्षित
भेल समाजक हेतु समर्पित
मुदा आयल बइमनमा चुनाव
बढ़ल लोक सभक आब भाव
ग्रामीण सभ मिलि कयलक बैसार
भेल ओ जे छल ने आसार
सभ क्यो कयलक आग्रह प्रगाढ़
जे होऊ अहाँ एहि बेर ठाढ़
सोचल दी कोना लोकक बात काटि
सेवाक अवसर देलक आइ माटि
बनि एहि पंचायतक हम मुखिया
रहय देबै ने ककरो दुखिया
सोचि बनल मुखियाक प्रतिनिधि
कल जोड़ि पोस्टर छपओलहुँ सविधि
प्रचार मे जुटलहुँ दिन-राति
विरुद्ध मे ठाढ़ भेल कतेको पछाति
भेल शुरू मारामारी-गड़ागड़ौवल
कएक ठाम भेल लठा-लठौवल
भेटल सभ कैँ दू-चारि गोट नोट
खसलहि दोसरेक हक मे वोट
तइयो नहि भेटलै संतोष
छपलक बूथ मिलि सभ दोस
परिणाम सुनि भेलहुँ स्तब्ध
भऽ गेल छल हमर जमानत जब्त
घर सँ निकलैत आब होइछ लाज
किएक कयलहुँ हम एहन काज
बैसब ने मुदा निश्चित आब
हेबे करतै फेरो चुनाव
होयब ठाढ़ हम फेर जा
पोसब गुंडा आब कएकटा
उगि गेलैछ हमरो दू गोट सिंग
करब हमहुँ आब बूथ कैप्चरिंग

सच्चिदानन्द यादव

सप्तरी

आई हम ठाढ़ भेल छी-

आई हम ठाढ़ भेल छी
चौबटियापर नइँ,
बाट तऽ एक्केटा छै
मुदा ओकरा रुकय पडतै
जे हमरा एतय अनलकै
हम ठाढ़ भेल छी ठीक ओहिना
जेना कपड़ाक दोकानमे पुतरा
सभदिन नव नव पहिरनमे
ठाढ़ भेल रहै छै
आ, किनयबला देखै छै
उन्टापुन्टाकऽ ।



सन्तोष मिश्र

एना किए ?

एकटा स्त्री,
हमर घरकँ सबहे काज कऽ दैअ
समय समय पर आबिकऽ
हमर जरुरत पुरा क दैअ
एहिके बाध ओ
परतरि दैअ
मुदा एना किए ?

जहिया हम असगरे रहैछी
तहिया ओ हमरा संग राति बितऽबैय
कखनो तिर त कखनो तार
कहियो राईके बनादै पहाड़
कखनो हमरा लेल आखिमे नोर
आ कखनो हमरासँ दूर
मुदा एना किए ?

कि ईहे त प्रेम नहि ?
कि ईहो प्रेम छै ?
हमरा कोनो बेगरता होए
ओ सेहो पुरा कऽ दैअ

गलती जौ भऽगेल हमरासँ
त डटबो करैए
मुदा एना किए ?

ओकर आँखिमे,
एकटा भावना रहैछैक
ओकरा विश्वास रहैछैक हमरे पर
तैयो ओ हमरा डटैत रहैए
मुदा एना किए ?

किछु जौं कहि दिऐ त
भऽजाइए टोका चाली बन्द
ओकर मूँह बन्द भइयोक
ओकर आँखि,
अपन प्रेमक गीत कहैए
मुदा एना किए ?

किछु समय बाद
जेना किछु भेले नहि हुए
जेना ओ हमरासँ चिन्तीते नहि हुए
तहिना ब्यवहार करैए
मुदा एना किए ?



सतीश चन्द्र झा

राम जानकी नगर,मधुबनी, एम. ए. दर्शन शास्त्र

समप्रति मिथिला जनता इन्टर कालेन मे व्याख्याता पद पर 10 वर्ष सँ कार्यरत, संगे 15 साल सं अप्पन एकटा एन.जी.ओ. क सेहो संचालन।

चिकड़ि रहल अछि शब्द आबि क'
निन्न पड़ल निश्बद्द राति मे।
अछि उदंड, उत्श्रृखल सबटा
नहि बूझत किछु बात राति मे।
केना करु हम बंद कान के
उतरि जाइत अछि हृदय वेदना।
बैसि जाइत छी तैं किछु लिखय
छीटल शब्द हमर अछि सेना।
कखनो कोरा मे घुसिया क'
बना लैत अछि कविता अपने
जुड़ल जाइत अछि क्लांत हृदय मे
शब्द शब्द के हाथ पकड़ने।

कविता मे किछु हमर शब्द के
नहि व्याकरणक ज्ञान बोध छै।
सबटा नग्न, उघार रौद मे
नेन्ना सन बैसल अबोध छै।
कखनो शब्द आबि क' अपने
जड़ा दैत अछि प्रखर अग्नि मे।
कखनो स्नेह,सुरभि, शीतलता
जगा दैत अछि व्यग्र मोन मे।
क्षमा करब जौ कष्ट हुए त'
पढ़ि क' कविता शब्दक वाणी।
शब्द ब्रह्म अछि नहि अछि दोषी
छी हमही किछु कवि अज्ञानी।



शैलेन्द्र मोहन झा

लेखक उक्ति हुनकर परिचयमे। सम्पादक। सौभाग्यसँ हम ओहि गोनू झाक गाम, भरवारासँ छी, जिनका सम्पूर्ण भारत, हास्यशिरोमणिक नामसँ जनैत अछि। वर्तमानमे हम टाटा मोटर्स फाइनेन्स लिमिटेड, सम्बलपुरमे प्रबन्धकक रूपमे कार्यरत छी।

चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय !

एक दिनक गप्प अछि, हमर मित्रगण हमरा कहय लगला -

शैलेन्द्र, अहाँ कँ कोनो गर्ल फ़्रैन्ड नहिं?

हम कहलियनि - दोस, ई भारत अछि, इन्गलैन्ड नहिं!

अखन गर्ल फ़्रैन्डक जरूरत नहिं,

अखन त पढय - लिखय के दिन अछि, प्रेम करय के मुहुर्त नहिं!!

सब मित्र कहय लगला, हम अनाडी छी

जौं कोनो छौरी फ़ँसाबी, तखने हम खिलाडी छी

ई सब हमरा सहल नहिं गेल,

बिना ई दुस्कर्म कयने रहल नहिं गेल

फ़ेर की छ्ल? हम ताकय लगलहुँ एकटा फ़्रैन्ड,

फ़्रैन्ड नहिं, गर्ल फ़्रैन्ड......

मुदा एकटा मुश्किल छ्ल -

हमरा छौरी सब स लगैत छ्ल बड़्ड डर

जौं हुनक सैन्डल गेल पडि, त इज्जत जायत उतरि

तैयो हमरा प्रमाणित करय के छ्ल, कहुना कय एकटा छौडी पटबय के छ्ल

त कुदि पडलौं मैदान मे या ई कहु श्मशान मे,

कियाकि, पिटला के बाद ओत्तहि जायब, फ़ीरि क मुंह नहिं देखायब

बन्हलहुं माथ पर कफन, कय सब डर के करेज में दफन

निकलि पडलहुँ हम बाट मे, एक छौरी के ताक मे

सब सँ पहिने प्रार्थना कयलहुँ -

हे किशन कन्हैया! अहाँ त अहि कर्म में खिलाडी छी

हमरो खिलाडी बना दिअ,

हमरा सोलह हजार गोपी नहिं, केवल एकटा छौडी फ़ँसवा दिअ

अडाँक बड़्ड गुणगान करब,

फ़ँसिते छौरी, सवा रुपैया के प्रसाद चढायब

हम सोचलहुँ, शायद आंखि मारला सं छौरी पटै छैक!

हमरा कि बुझल छल, आँखि मारला सं छौरी पीटै छैक

भागि कय घर अयलहुँ, आर पहिल सप्पत खेलहुँ

फ़ेर कहियो आँखि नहिं मारब.

फ़ेर सोचलहुँ - पहिने बतियायब, फ़ेर घुमायब तहन फ़ँसायब

हँ, ई ठीक रहत!

देखलहुं एकटा छौरी, त आंखि हमर फ़रकल....

फ़ेर की छ्ल? हम कहलौं-

पोखरि सन आँखि तोहर, केश जेना मेघ,

फ़ूल सन ठोढ तोहर, कहियो असगर में त भेट!

कहलहुँ हम एतबे की भय गेली ओ लाल,

ओ मारलीह एहन थप्पड, भेल गाल हमर लाल

कनबोज सुन्न भेल हमर, आंखि भेल अन्हार

सूझय लागल तरेगन, भेल दुपहरिया में अन्हार

सरधुआ, करमघट्ठु, बपटुगरा आर अभागल

देखू कपार हम्मर, ई विशेषण हाथ लागल

एतबे नहिं........

ओ करय लगलीह हल्ला, जूटय लागल मोहल्ला

हम कहलहँ - ई कोन काज केलहुँ? कियाक गाम के बजेलहुँ

नहिं पटितौं हमरा सं, ई आफ़त कियक बजेलहुं

फ़ेर की छल?

पिटय लगलहुँ हम आर पीटय लगला गौंआँ

मुँह कान तोडि देलक, अधमरु कय क छोरलक

ई कोन काल घेरलक, मरय में नहिं छल भांगठ,

हम भागि घर एलहुँ, दुबारा सप्पत खेलहुँ -

फ़ेर आंखि नहिं मारब, नै गीत हम गायब,

फ़ेर छौरी नहिं फ़ंसायब, नै जान हम गमायब,

आर भूलि कय अंग्रेजी, हम मैथिल बनि जायब!

आर भूलि कय अंग्रेजी, हम मैथिल बनि जायब!!

सपना

सुतल रही दुपहरियामे तँ देखलौ हम एक सपना

भेल विवाह हमर यै भौजी कनिया चान्द के जेना

हम्मर, टुटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे...

जहन भँट भेल हुनकर हम्मर, भेलहुँ हम प्रसन्न

देखि कऽ हुनकर रूप हे भौजी, भय गेलौँ हम दङ

नाम पुछलियनि हुनकर हम तँ कहलनि ओऽ जे रजनी

स्वप्न सुन्दरी ओऽ बनि गेलि हम्मर हृदयक रानी

हमरा पुछली कहु हे साजन केहन हम लगै छी?

हम कहलियनि सुनु हे सजनी अहाँ चान्द लगै छी

चन्दामे तँ दागो छै, हाँ बेदाग लगै छी

आँखि अहाँक ऐश्वर्या जेहन नाक अछि जूही चावला

केश अहाँक अछि नीलम जेहन गाल वैजन्तिमाला

एहि के बाद पुछलियनि हमहू केहन हम लगै छी?

कहय लगलि खराब छी, छी अहूँ ठीक-ठाक

लेकिन एहि यौवनमे साजन भेलहुँ कोन टाक*

कनिक लगै छी सन्नी जेना, किछु-किछु राहुल राय

किछु-किछु गुण गोविन्दा बाला, यैह अछि हम्मर राय

तहन कहलियनि चलु हे सजनि घूमए लेल दरभंगा

अहाँ लेल हम सारी किनब, अपनो लेल हम अंगा

दू टा टिकट अछि उमा टाकीजक, अगले-बगले सीट

दुनू गोटे बैस कऽ देखब "ममता गाबय गीत"**

हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ

तखने जगा देलक पिंटूआ, तखने जगा देलक पिंटुआ***, नीन्दसँ हम उठि गेलहुँ

हम्मर टूटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे......

*= हमर केश किछु बेशी कम अछि

**= प्रसिद्ध मैथिली सिनेमा

***= हमर छोट भाई



शक्ति शेखर

पिता-श्री शुभनाथ झा, गाम- मोहनपुर, भाया-हरलाखी, जिला-मधुबनी।

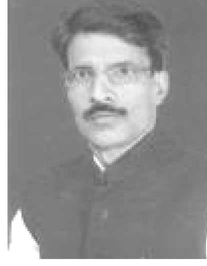
कखन बदलब हम

बहुत तामस होइए भगवानक एहि कृत्यसँ जे ओऽ अपन उपस्थिति मिथिलांचलमे दर्ज केनाय शायदे कोनो साल बिसरै छथि। मुदा हमरा सबकेँ एहि भयावह स्थितिसँ लड़बाक अलावा आओर कोनो रस्तो तँ नहि अछि। जी, हम बात कऽ रहल छी, एखन बिहारमे आयल बाढिक संदर्भमे। अनुमान लगायल जाऽ रहल अछि, जे अहि बाढिक चपेटमे करीब 50 लाख लोक आयल छथि। सभ साल जुलाई-अगस्तक मास अबिते बिहारक लोक आतंकित भऽ जाइत छथि।सबहक मोनमे ई डर रहै छनि, जे एहि बेर केकर घर उजरतौ। लोकसब भरि साल दिन राति मेहनत कऽ एकटा घर बनाबैत छथि, किछु पूंजी जमा करैत छथि,मुदा की होइए एहि सभसँ? ई बाढि तँ कोनो आतंकवादीसँ बेसी भयावह होइत अछि जे हर बेर कतेको गामकेँ, कतेको बिगहा जमीनकेँ अपन अंदर समेट लैत अछि। संबधित विभाग बाढिकेँ लऽ कऽ सब जानकारी राखितो कोनो तरहक कदम नहि उठाबैत अछि। शायद ई बाढि हुनका सभक लेल आमदनीक एकटा स्त्रोत जे होइ-ए। पछुलका बाढि सभक राहत-अनुदानपर नजर दौड़ाबी तँ निधोक एक बात कहनाइ अनुचित नहि होयत, जे बाढिसँ कतेको लोक करोड़पति सेहो भऽ गेलाह। ईश्वरक लीला देखियौक, जे एक दिस एहि बाढिसँ सभ बेर कतेको लोक (शायद अनुमान लगेनाय असंभव अछि) केर सब चीज **लुइटे** जाय छनि, तँ दोसर दिस बाढि घोटालाक अभियुक्त आओर कतेको लोक करोड़पतिक गिनतीमे आबि गेलाह। ओहि दृश्यक बारेमे सोचल जाय, जे पूर्णियामे बाढिक डरे अपन छत पर बैसल चारि सालक बच्चा भूखसँ अपन दम तोड़ि देलक, ओहि लोकक बारेमे सोचि, जिनका खेनाय तँ दूर पिबऽ के लेल पानि तक नहि भेटि रहल **छनि**। लोकक चापाकल बाढिक पानिमे डुबि गेल छनि। हिनका सभ लग किएक नहि पहुंचि पाबि रहल छनि राहत सामाग्री। कहिं एहन **तँ** नहि जे फ़ेर सँ कतेको **लोक** एहि बाढिमे करोड़पति बनए वला छथि। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह बिहारक बाढिकेँ राष्ट्रीय आपदा घोषित तँ कऽ देलन्हि मुदा पीड़ितक लेल ई सांत्वना मात्र अछि। केन्द्र सरकार दिससँ बिहारक बाढि पीड़ितक लेल 1000 करोड़ रुपया अनुदानक राशि देल गेल अछि। मुदा एहि अनुदानक राशिक **विषय**मे अखनो कतेको बाढि पीड़ित केँ मालूम नहि चलि सकल अछि। जिनका अहि बारेमे जानकारी भेटबो कैल तँ निश्चित ओऽ सोचने हेताह कि शायदे एहि राशिमे सँ हुनका सभकेँ किछु भेटत। केन्द्र सरकार ई राशि तँ दऽ कऽ अपन बाढि पीड़ितसँ तँ अपन पल्ला झाड़ि लेलाह, मुदा बाढि पीड़ित तक ई राशि कोना पहुंचि सकत, एहि बारेमे हुनकर ध्यान नहि गेल अछि। एक बेर फ़ेरसँ कहब जे ई अनुदानक राशि सब विभाग तक बटैत बटैत दस प्रतिशतो बाढि पीड़ित तक नहि पहुंचि सकत। आओर हँ, बाढिक दोगमे जे सभसँ पैघ चीज होइत अछि ओऽ अछि राजनीति। कतेको नेता सभ एहि बाढि पीड़ितक लेल आगिमे घी देनाय जेहेन काज करैत छथि। राज्य सरकार केँ दोषी ठहराबैत नेता सब ओहि जगह अपन

सीट सुनिश्चित करबाक फ़िराकमे रहैत छथि। हेलीकाप्टरसँ बाढि क्षेत्रक सर्वेक्षण करैत बहुतो नेतासभकेँ अतबो जानकारी नहि रहैत छनि जे ओऽ कोन क्षेत्रक दौड़ा कऽ रहल छथि। पता एहि बातसँ लगायल जाऽ सकैत अछि जे नेतासभ ओहि क्षेत्रक कतेक ज्ञान रखने छथि। इमहर राज्य सरकार सेहो कहां चुप रहए वला। ओऽ केन्द्रपर निशाना साधैत छथि तँ केन्द्र राज्य सरकार पर। एहि राजनीतिमे पिसाइत तँ बाढि पीड़ित छथि। कोनो बात नहि, समय आबि गेल अछि एकजुटता देखाबएबाक आऽ मदति करबाक....बाढि पीड़ितक संग, बाढि पीड़ितक लेल। तखने हम स्वतंत्र भारतक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक भऽ सकैत छी।

जोगार

'हम आपको दिखा रहे हैं कि कैसे फ़ला आदमी किसी मामले को दबाने के लिए दुसरे को पैसा दे रहे है। यह हमारे चैनल के स्टिंग आपरेशन का नतिजा है जो सिर्फ़ दिखा रही है।' जी,इ पंक्ती अछि आजुक समय के सब घटना स अपना सब के देखा रहल इलेक्ट्रोनिक चैनल के। अपना के सब स ऊपर पहुंचाबय के लेल ओ सब हथकंडा अपना लैत अछि। विडंबना इहो देखु जे सब चैनल वला अपना के राजा हरिश्चंद्र के सत्य नीति पर आधारित बताबैत अछि। बहुतो चैनल वला सब कोनो काज के तह तक पहुचबाक लेल हमेशा एकटा हथकंडा अपनाबैत अछि जाहि के सहि युग मे स्टिंग आपरेशन कहल जाइत अछि। माने इ जे हम इ हम देखा रहल छी जे बस अहाँक लेल अछि आ सत्य अछि। मुदा कहल जाय तँ एकटा सत्य मीडिया खास क इलेक्ट्रोनिक मीडिया मे एहि शब्दक बोलबाला अछि। जी,हम बात क रहल छी 'जोगार' के। आजुक युग मे बहुतो युवा के रुझान पत्रकारिता दिस झुकि रहल छैन। लाखो रुपया ओ सब अहि पत्रकारिता के पढाई पर खर्च क दैत अछि। शायद किछ उम्मीद के संग जे ओहो सब एक दिन अहि क्षेत्र मे अपन नाम रौशन करताह। मुदा कि होइया अतेक पढाई लिखाई कएलासँ? पढाई के संग संग कतेको लोकनि के पत्रकारिता मे काज करबाक लेल जोगार सेहो लगाबअ पड़ै छैन। एक तरह स कहू त डीग्री डिप्लोमा स पहिले कोनो चैनल मे पहुंचबाक लेल हुनका सब के सब स पहिले त जोगार लगाबहे पड़ै छैन। अनुचित नहि हैत जौं कहि त जे पत्रकारीता क्षेत्र मे घुसबाक लेल सब स जरुरी जोगार होयत अछि। आब त कतेको चैनल सब आ अखबार एजेंसी सब अपन-अपन संस्थान सेहो खोलि लेने अछि,इ कहि क जे पढाई समाप्ती के बाद हुनका सब के ओहि चैनल आ अखबार एजेंसी मे काज देल जायत। साधारण वर्ग सब पत्रकारिता के पढाई करलाक बादो ओ सब अहि संस्थान मे नामांकन नहि ल सकैत छथि। चैनल वला सब के अहि कदम स साधारण तबका वला युबासब के अहि चैनल मे काज खोजनाय पहाड़ खोदनाय एहन भ रहल अछि। सोचल जाय जे ओ चैनल वा अखबार एजेंसी वला सब अपन संस्थानक विद्यार्थी कँ छोड़ि क दोसर गाटे के किएक काज देत। बड पैघ पैघ गप्प करैत छथि इ चैनल वा अखबार वला सब जे भारत मे बेरोजगारी अहि हद तक बढि रहल अछि आ दोसर दिस अपने जोगारक मंत्र पर काज दैत अछि। ध्यान दि जे अखन समाचार चैनल वा अखबार एजेंसी मे काज क रहल छथि,ओहि मे स एहन कतेक व्यक्ती छथि जिनकर कोनो नहि कोनो संबंध अहि क्षेत्रक माफ़िया सब स नहि छैन। प्रतिशत मे देखल जाय त जोगार वला सबहक प्रतिशत शायद 80 तक पहुंच जायत। एक तरह स कहि त जे अहि पत्रकारीता क्षेत्र मे ज्यादा स ज्यादा दिन तक टिकबाक लेल जिगार रहनाय आवश्यक अछि। ओना त सब क्षेत्र मे जोगार अपन एक अलग स्थान राखैत अछि मुदा पत्रकारीता क्षेत्र के लेल एकर महत्व विशेष मे भ जायत अछि। पत्रकारीता के देशक चारिम स्तंभ मानल जायत अछि आ इ स्तंभ जोगार पर टिकल अछि। कि जिनका लक जोगार नहि अछि,ओ पत्रकारीता क्षेत्र मे काज नहि क सकैत छथि? फ़ैसला ओहि सब लोकनि के लेबअ पड़तैन जे अहि मे संलिप्त रहै छथि,जिनकर नाम ल क जोगार लगाबअ पड़ैत अछि,ओहि सब युवासब के लेल के काल्हि के भविष्य छथि।



डॉ शंभु कुमार सिंह

जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] ''मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन'' विषय पर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।–**सम्पादक**

दूभि

09 मई 2008 क बात थिक। गाम गेल रही। साँझ चारि बजे तरकारी किनबा आ घुमबाक लाथे तिरंगा चौक दिस चलि गेलहुँ, घुरैत काल स्कूल लग अबैत-अबैत दीया-बातीक बेर भ' गेलैक। गरमीक दिन छलैक मोन भेल कनी काल स्कूलक ओहि प्रांगणमे सुस्ता ली जतय कहियो बैसि हम अपन पाठ याद करैत रही। जहिना बैसबाक उपक्रम कयलहुँ कि एकटा अप्रत्याशित स्वर सुनबामे आयल... हे बाउ! ओतय नहि एमहर आउ। हम चौंकि गेलहुँ, देखैत छी तँ सरिपहुँ एकटा स्त्री हमरा सोझामे ठाढ़ छलीह आ बैसबाक आग्रह क' रहल छलीह। हम बैसि गेलहुँ, हमरा सम्मुख ओ स्त्री सेहो बैसि गेलीह। हम साश्चर्य ओहि स्त्रीकेँ देखय लागलहुँ जिनक रूप-रंग किछु एना रहनि--- हरितवर्णक शरीर ताहिपर हरियर रंगक मैल,पुरान-सन साड़ी जे कहुना हुनकर स्त्रीयांगकेँ झाँपने रहनि, ताहूमे कतोक ठाम पियन लागल, शेष शरीर उघारे बुझू। सम्पूर्ण शरीरमे छोट-पैघ घाव जाहिसँ पीज बहैत रहनि। एक-दू ठाम मैला सेहो लागल, जे दुर्गन्ध करैत छल। बामा जाँघ पर ढ़ल-ढ़ल करैत फोका, दहिना जाँघ पर गोदना जकाँ कोनो विशिष्ट आकृति, दुनू हाथ नोछड़ल जकाँ, माथक केश गोबरछत्ता जकाँ जाहिमे शिखर, पान-पराग, तुलसी, रजनीगंधा, माणिकचंद गुटखा, आदिक फाटल-चिटल पुड़िया, अखबार, कागदक टुकड़ी, जड़लका सिगरेटक पुत्ती आ टुकड़ी, सुखल गोबर, सूगरक मैला आदि-आदि सभ ओझरायल। एहि नारीक विचित्र ओ दयनीय दशा देखि हमर उत्कंठा बढ़ि गेल।

हम पुछलियनि-- अहाँ के छी?

ओ कहलनि-- हम दूभि थिकहुँ। वैह दूभि जाहि पर अहाँ एखन बैसल छी। वैह दूभि जतय बैसि अहाँ नेनपनमे नीरजक कविता पढ़ैत छलहुँ ''यह जीवन क्या है निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है, सुख-दुख के दोनो तीरों से चल रहा राह मनमानी है...।''

हम फेर पुछलियनि अहाँक एहन दुर्दशा किएक ?

ओ बजलीह--- बाउ, हम देखि रहल छी जे अहाँ तखनसँ हमर अंग-प्रत्यंगकेँ खूब नीक जकाँ निहारि नेने छी। पहिने अहाँ बताउ, हमरा सुनबामे आयल अछि जे अहाँ साहित्यमे उच्च शिक्षा प्राप्त केने छी, ओहुमे मैथिली सन सरस साहित्यमे।

हम कहलियनि–सत्ते कहलहुँ।

तखन संभव भ' सकय त' हमर एहि दयनीय दशाकेँ अहाँ कोनो पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित करबा दिऔक। आ ओ आश्वस्त हैत बाजय लगलीह–बाउ, हमर शरीर स्कूलक एहि हातामे पसरल दूभिक प्रतीक थिक तैँ हरियर। हमरा माथ पर जे अहाँ गुटखा, सिगरेटक टुकड़ी, अखबार आ कागदक टुकड़ी देखैत छी से एहि स्कूलक छौंड़ा-छौंड़ी सभक किरदानी थिक, हम अहाँकेँ कहैत जाइत छी आ अहाँ एमहर-ओमहर नजरि दौड़ा-दौड़ा क' देखने जाउ....। हमर देह जे घावसँ दागल अछि से सिगरेटक जड़लका पुत्तीसँ, हाथ जे नोछड़ल देखैत छी से थिक मोद बाबू (मुखियाजी) क नोकरक किरदानी, ओ सभ दिन एतय आबि छिल्ला छिलैत अछि, दिनमे कैक बेर सूगर, महिस, गाय, बकरी आदि हमरा दूषित करैत रहैत यै, बाम जाँघ पर ई ढ़ल-ढ़ल फोका थिक वैह मंगरूआक लोकक किरदानी, ओ काल्हि राति चूल्हिक अँगोरा हमरा देह पर फेंकि देलक, आ हमरा दहिना जाँघ परक ई चेन्ह जकरा

अहाँ गोदना बुझि रहल छी से वस्तुतः कोन चीजक आकृति थिक से हमरा कहितहुँ लाज लागि रहल ऐ, साँझहिकेँ, माने एखनसँ कनी कालक पश्चाते देखबैक जे एहि गामक गँजेरी छौंड़ा सभ हेज बनाकेँ आओत, सिगरेटमे भरि कए गाँजा पीयत आ हमरा झरका-झरका कए एहन अश्लील आकृति बनबैत अछि, हे! ओहिठाम देखियौक..., ई जे मैला देखि रहल छी, से थिक एहि आस-पड़ोसक स्त्रीगणक काज, कने रतिगर भेलाक बादे एक दिस सँ पथार जकाँ बैसि जाइत छथि। हे! ओमहर देखियौक हत्ताक कछेड़मे... की कहू बाउ, जीयब दूभर भ' गेल अछि।

(एकटा दीर्घस्वास लैत) ओ फेर बाजय लगलीह--बाउ, अहाँकेँ अपन नेनपनक बात स्मरण अछि ने ? ताहि दिन प्रातः 10 बजे (प्रायः) स्कूल पहुँचलाक पश्चाते सभसँ पहिने सरस्वती वन्दना होइत छलैक जाहिमे शिक्षक-छात्र सभ क्यो भाग लैत छलाह। तकरा बाद श्रीवास्तव मास्टर साहेब सभ नेनाकेँ एक पतियानीसँ बैसा दैत छलाह, आ ओसब नेना एकहक टा कागद आ आन-आन सभ प्रकारक गंदगी सभ चुनि-बीछि लैत छल। हमर काया एकदम साफ भ' जाइत छल। कक्षा सभमे जखन हाजरी होइत छलैक तँ नाम पुकारल जाइत छलैक, हरेराम, युगलकिशोर, शंभु, कुमारसंभव, चन्द्रकला, रहीम, कौशल्या, कतेक मधुर आ सार्थक नाम! सुनि कए मोन तृप्त भ' जाइत छल। साँझ के नेना सब कबड्डी आ खो-खो खेलाइत जखन गिर जाइत छल तँ हम ओकरा बेसी चोट नहि लागय दियैक, वात्सल्यक अनुभव करैत छलहुँ तहिया। शनि केँ विशेष आयोजन होइत छलैक। शनिचराक गुर-चाउर बाकुटक-बाकुट नेना सभ खाइत छल, की कहू बाऊ, अहाँ सभक हाथ सँ गिरलाहा गुर-चाउर खयबा लेल हमहुँ शनि दिनक प्रतीक्षा करैत छलहुँ। दोसर पहरमे सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत छलैक। "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर, हे माय अहाँ बिनु आस ककर...। कखन हरब दुःख मोर हे भोला बाबा...। दुनियाँ मे तेरा है बड़ा नाम, आज मुझे भी तुमसे पर गया काम....।" अहाँकेँ तँ स्मरण हेबे करत बाउ रमाकान्त एकबेर गयने छलाह "चल चमेली बाग मे मेवा खिलाऊँगा....." ताहिपर मोलवी मास्टर साहेब हुनका चुत्तर पर ततेक ने छौंकी मारने रहनि जे बेचारेक सभटा मेवा घोसड़ि गेल रहनि। आ अहाँकेँ ओ अन्त्याक्षरी वला बात याद अछि की नहि? तहिया अन्त्याक्षरी मे कविताक पद्य सभ पढ़ल जाइत छलैक, अहाँ एकबेर 'य' पर अटकि गेल रही, गाब' लगलहुँ–"ये मेरा दीवानापन था...." अहाँकेँ मोलवी साहब बजा कए पुछने छलाह "यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ......अहाँ काल्हिये ने याद केने छलहुँ, तँ बिसरि कोना गेलहुँ ? " आ तकरा बाद हुनक छड़ी आ अहाँक दुनू हाथ। एकदिन रविशंकरक चुगली एकटा नेना क' देने रहैक जे "मास्टर साहेब ई अपन ककाक जड़लका बीड़ी पीबैत रहय" एहि लेल श्रीवास्तव मास्टर साहेब रविशंकरकेँ रौद मे एक घंटा धरि अहीठाम मुरगा बना देने रहथि। ताहिदिन ककर मजाल रहैक जे एहि स्कूलक हाता मे क्यो गाय, महीस, आ बकड़ी-छकड़ी ल' कए घुसि जायत। यैह मोद बाबू (मुखियाजी) क नोकर एतय एकबेर छिल्ला छिलय बैसल रहय, मुखियाजी हुनका ततेक ने गारि-बात दलकैक, तकर ठेकान ने।

ओ बजने जाइत छलीह आ हम अपन अतीतलोकमे विचरण क' रहल छलहुँ। अचानक हम हुनका टोकि देलियनि-- अच्छा एकटा बात कहू, आइ काल्हि की एहन व्यवस्था नहि छैक एतय? आब तँ देखै छियै जे ताहि दिन सँ बेसी सरकारक ध्यान शिक्षा पर छैक। लोक सेहो जागरूक भेल अछि शिक्षाक प्रति। हम त' देखि रहल छी जे नीक भवन अछि, पानि पीबा लेल कल अछि, मूत्रालय अछि, शौचालय अछि, उचित संख्यामे शिक्षकगण छथि, आब की चाही?

ओ बजलीह-- औ बाउ! अहाँ जे किछु बजलहुँ सेहो साँचे थिक मुदा अहाँ आइ एलहुँ काल्हि चलि जायब। हम तँ कतोक बरखसँ एतहि छी आ प्रत्यक्षदर्शी छी, तैँ हमहुँ जे कहल आ जे कहब से फूसि नहि। एतय दूई भवन मे चारि टा कक्ष छैक आ विद्यार्थी 400 सयक करीब, एक तिहाई बच्चा कक्षमे बैसैत छैक आ शेष एहि हातामे आ ओहि बड़क गाछतर घुड़दौड़ करैत रहैत छैक, क्यो गुटखा, क्यो....., क्यो चरैत महिसक सींग पर दय ओकरापर चढ़बाक अभ्यास करैत अछि तँ क्यो........। शौचालय, मूत्रालयकेँ अहाँ एकबेर देखि अबियौक एकोटामे पल्ला नहि लागल छैक, उपरसँ ततेक दुर्गन्ध जे राम कहू! अहाँ काल्हि आबि कए देखि लेब। ई तँ परसू जलघर बाबूक बेटीक बियाह छलनि ताहिलेल ओ अप्पन कल एतए लगौने छलाह, आ शौचालयमे बोराक चट्टी। काल्हिए कलो खुलि जेतैक ? एतय गड़लाहा पाइपे टा स्कूलक छैक। की कहू, कल जहिना लागै छैक पाँचे-दस दिनमे क्यो चोरा लैत छैक। हे लियह! कुकुरक झौहड़ि सुनि रहल छी ने अहाँ ? बराती सभ जे काल्हि भोरमे चूरा-दही खा-खा क' पात सभ स्कूलक पछुआड़ि मे फेकने छल ततहि कुकुर सभ लड़ि रहल अछि।

खैर! छोड़ू ई सब बात। आब पढ़ाईक व्यवस्था सुनू--- अहाँ केँ तँ बुझले हैत जे हमरा सभक दयानिधान मुखमंत्रीजी कॉन्ट्रेक्ट पर कैक लाख लोककेँ बिना कोनो परीक्षे-तरीक्षे नेने मास्टर बना देलथिन, सेहो की जे गामक लोक गामहिमे शिक्षक हेताह। तैँ ढ़ोरहाय-मंगडू सब शिक्षक बनि-बनि एतय आबि गेल छथि, जिनकामे सँ कतोक केँ तँ अपन नामो.....। प्रार्थना आब नहि होइत छैक। जँ कहियो काल होइतो छैक तँ चारि सय मे सँ चारिये टा नेनाक मुँहसँ स्पष्ट शब्द बहराइत छैक बाँकी सब आऊँ-आऊँ, ऊँ-ऊँ करैत

रहैत छैक। हाजरी मे नाम पुकारल जाइत छैक- डबलू, बबलू, डेजी, रोजी, स्वीटी.....। शनिचराक प्रथा उठि गेल छैक। सांस्कृतिक कार्यक्रम एखन धरि होइत छैक, एखनो गीत गाओल जाइत छैक–''एक आँख मारूँ तो पर्दा हट जाये, दूजा आँख मारूँ कलेजा फट जाये.........। तनी सा जींस ढीला कर.... आदि।'' एक दिनक बात कहैत छी, एकटा विद्यार्थी गाना शुरू कएलक– ''चोली के पीछे क्या है......'' आकि सबटा मास्टर ठेठिया-ठेठिया क' हँस' लागलाह। मंजय मास्टर साहेब कैं नहि रहल गेलनि ओ नेनाकैं डाँटि कय बैसा देलथिन। ताहिपर, मंतोष मास्टर साहेब आ मंजय मास्टर साहेबमे नीक जकाँ बाझि गेलनि।

मंजय मास्टर साहेब कहलैथ–मेरा मानना है कि इसमें बच्चे का कोई दोष नहीं है, अगर यही गाना गाना उस बच्चे की मजबूरी है, तो हम एक शिक्षक होने के नाते इसी गाने के प्रति उसके दृष्टिकोण को बदल सकते हैं, बस एक वाक्य में समझाकर की, ''चोली के पीछे, 'माँ' होती है, जिसका अमृतपान करके हम, आप, सबके शरीर को जीवन मिला है।''

एहि घटनाक बाद सभ शिक्षक मिलि कए मंजय बाबूक नव नामकरण कय देलकनि 'मायराम'। तहिया सँ ओहि कागमंडली मे हंस सदृश्य मंजय बाबूक बुधिये हेरा गेलनि। एकटा आर गप्प सुनू, यैह पिछले शनि दिनक बात छैक, अन्त्याक्षरी चलैत रहैक, एक सँ बढ़िकए एक कटगर फिल्मी गाना सब नेना लोकानि गबैत छल, अचानक 'य' पर एकटा दल अटकि गेलैक..... एकटा बच्चा उठल आ कहलक, ''यह लघु सरिता का बहता जल, कितना शीतल, कितना निर्मल.......।''

एकटा मास्टर साहेब ओहि बच्चाकैं लगमे बजौलकनि आ कहलथि-- ''अहाँ काल्हिये ने अपन मम्मी-पप्पाक संग सिनेमा देख' सहराता गेल रही, ओहि सिनेमाक गाना, ये गोरी गोरी बाँहे, ये तिरछी तिरछी.......,बिसरि गेलहुँ ? बड़ भोदू छी अहाँ।''

दुभि रानीक कथा चलितहि रहनि की एहि बीचमे हमरा एकटा आर नारीक कर्कश स्वर सुनाए पड़ल... ''गै माय के छियै ई मुनसा! ऐतेक कालसँ एतय की क' रहल छैक? बुझैत नहि छैक जे ई लोक-बेदक, बाहर-भीतर करबाक बेर छैक?''

हमर ध्यान ओमहर गेल, अन्हारमे बुझा पड़ल जे तीन-चारिटा स्त्रीगण एम्हरे बढ़लि चलि आबि रहल छलीह। हम जा एमहर ताकी ताधरि दूभिरानी निपत्ता ! हमहुँ उठि कए घर दिस चलि देलहुँ।

ओहि भरि राति हमरा निन्न नहि भेल। कारण छल जे हम ई निर्णय नहि क' सकलहुँ जे ओ सरिपहुँ दुभिए छलीह आ कि हमरा मोनक भ्रम ? जतेक सोचैत गेलहुँ ओतेक ओझराइते गेलहुँ, मुदा एकटा बात हमरा मोनमे घर क' लेलक जे ई घटना एकटा कथाक रूप अवश्य ल' सकैत अछि। काल्हिए हमरा मैसूर जेबाक रहय। सोचलहुँ एकर पांडुलिपि बना कए कोनो पत्रिकाक संपादक लग प्रेषित क' देबैक, जँ ई कथा छपि गेल तँ हमहुँ अपन सीना तानि कए कहब जे ''हम मैथिलीक कथाकार छी'' सोझे-सोझ मैथिलीक एम.ए., पी-एच.डी. कहयलासँ कोनो प्रतिष्ठा नहि। मैथिली पढ़ि जँ मैथिलीक कथाकार, साहित्यकार नहि कहयलहुँ, तँ मैथिली पढ़बे किएक कएलहुँ ? हँ एकटा समस्या तँ रहिये गेल, एहि कथाक शीर्षक की दिऐक ? चलू जेहने कथा तेहने शीर्षक, 'दूभि'।

जा ग' जाग' महादेव !

मिथिला, अनादिकालसँ धर्म, शिक्षा, साहित्य संस्कृति आदिक विशिष्टताक लेल अद्वितीय रहल अछि। एतय एक-सँ बढ़ि कए एक मुनि, मनीषी, तपस्वी भेल छथि, जिनका सभक उपदेश आ आचरण आइयहुँ ओतबे प्रासंगिक अछि। मुदा अनेकानेक कारणसँ आइ बड़ तीव्र गतिएँ सामाजिक विवर्तन भ' रहल छैक। एहि बदलैत सामाजिक परिस्थितिमे कोन वस्तु आ संस्कार ग्राह्य छैक आ कोन अग्राह्य ताहि विषयकैं ल' क' लोकमे भयंकर द्वन्द्व आ संघर्षक स्थिति उत्पन्न भ' गेल छैक। मूल रूपसँ पाश्चात्यवादी सभ्यताक अन्धानुकरण ओ आन-आन कारणैं, लोक अपन सभ्यता, संस्कृति, सँ विमुख भेल जा रहल अछि, परिणामस्वरूप, समाजमे भूख, भय, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध, बेरोजगारी आदिक समस्या दिनानुदिन गंभीर भेल जा रहल छैक। लोक एहि सभ समस्यासँ मुक्तिक लेल अपस्यांत अछि, बैचैन अछि। ओकरा कोनो रस्ता नहि भेटि रहल छैक। मानसिक अशांतिक शांतिक लेल लोक भगवानक शरण मे आबि रहल अछि (ओकरा लागै छैक आब यैह टा रस्ता बचि गेल अछि)। यैह कारण अछि आइ जतय देखू ततहि थोकमे धर्मक दोकान खुजि गेल छैक। हमरो संग सैह भेल, विभिन्न प्रकारक विसंगति आ झंझावात तेना ने हमरा नचार क' देलक जे हमहुँ अंततः धर्महिक शरण मे गेलहुँ।

ई संयोगे छल जे ताहिदिन हमरा सभक दिस धर्मक एकटा टटका दोकान खुजल छलैक- जाग' जाग' महादेव! मिथिलाक लेल ई कोनो नव धर्म आ नव संप्रदाय नहि छलैक, हँ, एकटा बात नव अवश्य कहि सकैत छी जे एहिमे बस अहाँ देवाधिदेव महादेवकैं 'गुरू' बना लिअ, आ कि सभ समस्या छू मंतर। हम अपन अनुभव कहि रहल छी, जहिया सँ हम महादेवकैं गुरू बनैलियन्हि हमर सभटा समस्या सरिपहुँ छू-मंतर भेल जा रहल अछि। महादेवमे दम छनि, से हमर धारणा दिनानुदिन दृढ़ भेल जा रहल अछि। यैह कारण थिक

जे कतहुँ अबैत-जाइत, माने जतय कतहुँ महादेवक मंदिर, फोटो देखैत छी, मोने-मोन जाग' जाग' महादेव! कह' लागैत छी।

यैह परसूका बात थिक हमरा एक आवश्यक काजे गामसँ सहरसा जयबाक रहय, ने जानि कोन कारणेँ ओहिदिन गाड़ी-घोड़ा बन्न छलैक, हम पयरे चलि देलहुँ। हमरा गामसँ लगभग 10 कि.मी. क दूरी पर महादेवक एकटा मंदिर छैक, बड़ भव्य, प्राचीन आ सिद्ध। गरमीक दिन रहैक, रौद कपारे पर लागैक। सोचलहुँ मंदिरमे जाग' जाग' महादेव ! क' लैत छी, आ कने काल प्रांगणक एहि विशाल बरक गाछतर चबूतरा पर सुस्ता लेब। मंदिरमे माथ टेकि चबूतरा लग आबि बैसि गेलहुँ। हमर मोन कने अशांत रहय तैँ ओतय ध्यानक मुद्रामे बैसि महादेवक स्मरण कर' लागलहुँ, आकि एहन आभास भेल जे सरिपहुँ साक्षात् महादेव हमरा समक्ष आबि गेलाह।

आबितहि पुछलैथ__की यौ शिष्य! की हाल-चाल ?

हम कहलियनि-- हे गुरू! से तँ अहाँ जनिते छी ?

ओ कहलनि-- चिन्ता जुनि करू शिष्य! सभ समाधान भ' जेतैक।

हम कहलियनि-- हे महादेव! जखन अहाँ लग सभ समस्याक एतेक त्वरित उपचार अछि तखन अपनेक एहि संसारमे एतेक प्रकारक रोग-शोक, व्यभिचार, अनाचार, अत्याचार आदि किएक ?

ओ कहलनि-- शिष्य, ''मोन चंगा तँ कठौत मे गंगा'' अहाँ पहिने हमर अस्तित्वकेँ स्वीकार करैत छलहुँ ? नहि ने? मुदा आइ जखन अहाँक मोनक श्रद्धा जागृत भेल तँ देखिये रहल छी जे हम साक्षात् अहाँक समक्ष उपस्थित छी।

हम कहलियनि-- एकर माने भेल जे अहाँ अपन शिष्ये टा पर कृपा करैत छी, वैह टा अहाँक संतान थिक, आ आर सभ ? की ई प्रश्न अहाँक 'जगतपिता' उपाधि पर प्रश्न चिह्न नहि अछि?

ओ कहलिन-- कथमपि नहि शिष्य हमरा लेल सभक मान बरोबरि अछि। जाधरि धर्म आ कर्मक गणितकेँ लोक नहि बूझत ताधरि ई समस्या, ई भेद रहबे करतैक। एहिमे हमर कोन दोख। अहीं जे अपन सभ काज-धन्धा छोड़ि कय एतय दिन-राति जाग'जाग' महादेव! करैत रहब तँ अहाँकेँ की बुझाइत अछि जे महादेव....।

हे महादेव! हमरा सन मन्द-बुद्धि, धर्म आ कर्मक तत्त्वकेँ कोना बुझत? हम तँ बस एक्कहिटा चीज बुझैत छी, महादेव! आर किछु नहि।

बस! बस! बस! अहाँक श्रद्धा, विश्वास आ सत्कर्म सैह थिकाह महादेव, सत्यं शिवं सुन्दरम्।

हे महादेव! ई बूझब तँ हमरालेल आर जटिल भ' गेल, सत्य, सुंदर आ शिव केँ बुझ'क सामार्थ्य हमरा कतय?

अपन संस्कार, संस्कृति, लोकाचार, भाषा-साहित्य, धार्मिक आचरण, आदिकेँ बुझू, यैह सत्य थिक, यैह सुंदर थिक, यैह शिव थिक।

बेस, आब कने-कने बुझलहुँ। हे महादेव! आर सभ छोड़ू एकटा बात बताऊ,

एहि गामक अधिकांश लोकनि पढ़ल-लिखल छथि, ज्ञानी छथि, अपन परंपरा, अपन संस्कारादिक प्रति जागरूक छथि तकर पश्चातो हमरा बुझने कतहुँ ने कतहुँ........।

औ शिष्य! आइ-काल्हि जे जतेक बेसी पढ़ल-लिखल लोक छथि से ततबे बेसी मूर्ख।

ई अहाँ की कहि रहल छी, एहन भ' सकैत अछि जे कखनहुँ-कखनहुँ पढ़लो-लिखलो लोकसँ गलती भ' जाइत छैक, मुदा तकर जतेक परिमाण अहाँ बता रहल छी से बात हमरा नहि पचि रहल अछि।

औ शिष्य! कहब तँ छक द' लागत। ई कोनो गुटका (पान-मसाला) छियैक जे पचि जायत। अहीं कहू, अहाँ जे भरि दिनमे 10 पुड़िया गुटखा खा जाइत छी से कोना? ओहि पुड़िया पर नहि लिखल छैक जे ''तम्बाकू चबाना स्वास्थ के लिए हानिकारक है''। हे ओहि महाशयकेँ देखियौक, ओ राजधानीक जानल-मानल डॉक्टर छथि, घंटे-घंटे पर सिगरेट (ओहो किंग साइज) पीबैत छैक, जखन की सभटा सिगरेटक पैकेट पर लिखल रहैत छैक, ''धुम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है'' एतबे किएक, हे ओमहर ओहि होर्डिंग पर पढ़ियौक- ''सिगरेट पीने से कैंसर होता है, जनहित मे जारी, कैप्सटन फिल्टर, आखिरी कश तक मजेदार।''

(हमर माथ शरम सँ झुकि गेल) से जे हो मुदा एहिठामक लोक धर्माचारी आ........।

महादेव–हँ, हँ, से त' अवश्ये, तहिया सँ ठीके आइ काल्हि हमर पूजा पाठ करयबलाक संख्या बढ़ि गेल अछि। मुदा ....।

मुदा की ?

आब लोकमे ओ भाव नहि रहलैक।

आब लोक हमर पूजा कर' नहि अबैयै, हमरासँ 'डील' कर' अबैये।

बुझलहुँ नहि, कने स्पष्ट करू।

की-की सभ स्पष्ट करी शिष्य! सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्थामे घून लागि गेल छैक। एकहकटा जँ फरिछा-फरिछा अहाँकेँ कह' लागी तँ कैक दिन धरि एहिना अहाँ केँ ध्यानमग्न रह' पड़त। जिज्ञासा कएलहुँ अछि तँ लिअ हम किछु 'डील' केर बानगी अहाँकेँ सुना दैत छी.....

एकटा (बालक)--- हे महादेव! बाप कहैत छलाह पढ़'क लेल तँ हम गुल्ली-डंडा खैलयबामे भरि साल मस्त रहलहुँ, एहिबेर कहुना पास करा दिय' तँ ......

एकटा नवयुवक - हे महादेव! एहिबेर देवघर जयबाकाल हमरा जाहि 'मालबम' सँ परिचय भेल छल तकरहिसँ हमर बियाह करा दिअ तँ.....

एकटा नवयुवती– हे महादेव! अहाँ हमरा कोनो नीक निर्देशकक सिनेमामे माधुरी दीक्षितक 'धक-धक' वला रोल दिआ देब तँ......

दोसर नवयुवती--- हे महादेव! अहाँक देल गेल रूप गुण सँ संपन्न रहितहुँ हमर बियाह नहि भ' रहल अछि, हमर माय-बाप विक्षिप्त भ' गेल छथि। एहि दुनियाँ सँ सबटा दहेजक दानव कैँ एक्कहि दिन उठा लिअ तँ....

एकटा प्रौढ़– हे महादेव! जानैत-बुझैत 'मनीगाछी'क कोठा पर बेर-बेर जाइत रहलहुँ तैँ आइ 'एडस' सन लाईलाज बीमारीसँ ग्रस्त छी–जँ अहाँ हमरा एहि सँ मुक्ति दिया दी तँ....

एकटा बेरोजगार– हे महादेव! पढ़ि-लिखि कए झाम गुड़ैत छी, जँ अहाँ हमरा एकबेर लादेनसँ भेंट करा दी तँ........

एकटा वृद्ध दम्पति- हे महादेव! अपनेक दयासँ हमरा बेटा-पुतोहुकैँ कोनो कमी नहि, मुदा हमरा दुनू परानीक पेट ओकरा सभक लेल पहाड़ सदृश छैक। जँ अहाँ हमरा एहि जन्मसँ मुक्ति दिया दी तँ अगिला जनममे ....

एकटा राजनेता– हे महादेव! हमरा पार्टीक सरकार बन'मे एक्केटा सीट घटैत छैक। हम निर्दलीय महाप्रलय सिंह कैँ तीन करोड़ टका देब' लेल तैयार छी अहाँ ओकर मति फेरि दिऔक, जँ हमर सरकार बनि गेल तँ.............

एकटा व्याख्याता– हे महादेव! भरि जिनगी चोरि आ जोगाड़क बलैँ नीक अंक सँ पास होइत रहलहुँ आब व्याख्याता छी। छौंडा सभकैँ ततेक ने नेतागिरीक चस्का लगा दिऔक जे साल भरि महाविद्यालय आ विश्वविद्यालयमे ताला लटकले रहय। जँ एहन संभव भ' जाय तँ.....

एकटा अछूत- हे महादेव! एक्के हार-मांस, एक्के खून, तकरा पश्चातो लोक हमरा अछूत बुझैये। हमरा संग जे भेल से भेल हमरा बेटाकैँ एहन दंश नहि झेलय पड़य। जँ एहन भ' गेल तँ....

एकटा शराबी --- हे महादेव! पीबैत-पीबैत, सभटा धन-सम्पति स्वाहा भ' गेल। तीन दिनसँ एक्को ठोप नहि भेटल अछि, हम अपन बेटी सुगियाकैँ ओहि दारूवाला लग.....जँ एक्को बोतल दिआ दी तँ....

मैथिली (भाषा) हे महादेव! अहाँ तँ जानिते छी जे हमर गौरव, मान, मर्यादा, कहियो मिथालाकैँ के कहए जगत्ख्याति प्राप्त कएने छल, मुदा आइ अपनहि घरमे हम उपेक्षित छी। ओना आइ काल्हि मैथिलीक लेल तथाकथित संघर्षकर्ता लोकानि एतयसँ दिल्ली धरि धरना-प्रदर्शन कर' चलि जाइत छथि, मुदा सबटा फुसि थिक, सबटा मिथ्याडंबर, तैँ जाधरि हमरा अप्पन घरमे सम्मान नहि भेटत ताधरि हम अपन गौरवकैँ पुनः प्राप्त नहि क' सकैत छी। जँ एहने स्थिति रहलैक तँ भ' सकैछ जे हम कहियो निर्वस्त्र भ' जाएब। हे जगतपति! अहाँ मैथिल लोकनिमे मैथिलीक प्रति नवजागृति आनि दिऔक। एहिसँ अहाँकैँ सेहो लाभ हैत-- फेर कवि विद्यापतिक श्रुतिमाधुर्य नचारीसँ अहाँक मंदिरक वातावरण आप्लावित भ' जाएत। हम कंगालिन छी, हमरा अहाँकैँ देबाक लेल किछु अछिए नहि, तैं हम की 'डील' करी ! हे महादेव सुतल किएक छी, जागू ! एहि अबलाक व्यथा सूनू-जाग' जाग' महादेव.....

मैथिली ततेक जोरसँ चीकरलीह जे हमर ध्यान दुटि गेल। ने जानि आब कहिया महादेव दर्शन देताह।

आह्वान

भारत भूमिक नवतुरिया
हमर कविताक आह्वान सनू
भ' तन्मय अपन कान खोलि
छथि बाजि रहल भारती से सुनू
हे भारत ! ई भारती थिक
अति विवश भाव भंगिमा नेने
हिल रहल ठोर किछु कहबा लेल
प्रेरित क' रहल किछु करबा लेल
कखनहुँ अहाँक कखनहुँ हमर
एहि लेल बाट निहारैत छथि
बस त्राहि-माम पुकारैत छथि
छथि कहथि देखू हमर ई दशा
शोणित सँ रंजित श्वेत वसन
नखसँ शिख धरि अछि जख्म भरल
लूटि रहल हमर अछि अमन-चैन
पंजाब,असम,गुजरात,आँध्र
कश्मीर सहित अन्यान्य प्रान्त
अछि सिसकि रहल भ' भयाक्रान्त
छल कहियो
उत्तुंग गर्वसँ हम्मर सिर
प्रकृति प्रदत्त पावन कश्मीर
केसरिया सेब क' रहल श्रृंगार
लहलह-हरियर बाग निशात
उज्जर बर्फशिला बाँटि रहल छल
शांतिकेर संदेश उधार
छल बहैत जतय शीतल समीर
चहुँदिस आब बरसैत अछि गोली
नहि खेलू, नहि खेलू रोकू ई खूनक होली
जाति-धर्मक उन्माद भड़का
जे उन्मादी अहाँकैँ लड़ाबैत छथि
हुनकर तँ कुरसीक प्रश्न छैक
मुदा की यैह अहाँक मानवता थिक ?
(18-08-2008,मैसूर)

शीला सुभद्रा देवी (१९४९-)

कैकटा तेलुगु पद्य संग्रह प्रकाशित। १९९७ ई. मे तेलुगु विश्वविद्यालयसँ उत्तम लेखकक पुरस्कार प्राप्त।

तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद जयलक्ष्मी पोपुरी द्वारा जे निजाम कॉलेज, ओस्मानिया विश्वविद्यालयमे अध्यापन करैत छथि।

गजेन्द्र ठाकुर (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद)।

पसीझक काँट

बाड़ीमे लगाओल पसीझक काँट गहना लेल
केना ओऽ सभ पसरैत अछि सोहड़ैत!
चुपचाप बुनैत रस्ता आच्छादित करैत स्थान।

भीड़-भाड़ सभठाम
सभ कोणमे काँटबला पसीझक झाड़
सभ, सभ रोकैत स्नेहक अनवरुद्ध प्रवाह
चिन्तन विखण्डित पड़ि काँटक मध्य
वाणी अवरुद्ध फँसि कोनो झाड़
मस्तिष्क उर्ध्वपतित चुपचाप
हृदय बनैछ मात्र एकटा अंग
आ मौन करैत राज यांत्रिक रूपे॥
मुनैत, बहत नहि बसाल एकताक
तेनाकेँ ठुसैत
सभक आश कोनहुना निकसी आकाश।

मुदा की अछि विस्तृत खेत मध्य?
कतए गेल फूलक क्यारी फुनगैत मित्रताक
हिलबैत अपन माथ आमंत्रणमे?

कतए गेल ओ चाली सभ अपन तन्तुसँ बढ़ैत?
सभकेँ समेटैत ओ लता-कुञ्जक मंडप कतए गेल
छोड़ि मात्र अशोक आ साखुक वृक्ष
जे पसारि रहल आकाश मध्य अपन हाथ
नीचाँ देखैत विश्वकेँ
घासक पात सन तुच्छ?
यदि हम मोड़ी आ घुमी घोरैत अपनाकेँ नोरमे
वेधए बला मोथा नहि भोकैत अछि मात्र पएर वरन् आँखि सेहो।
सभठाम लोक उन्मुक्त ठाममे
मानवीय सम्पर्कसँ घृणा करैत
परिवर्तित कएलक नगरकेँ सेहो बोनमे।
पसारैत काँट सभ ठाम
परिवर्तित भेल पसीझक झाड़मे
साँसक फुलब पसरैत चारू दिश
दोसराक संवेदना नहि आबए दैछ विचार
जिनगी भेल उसनाइत खेत सन।
इच्छा भागबाक पएर केने आगाँ।
आश्चर्य, मथि नहि सकैत छी, आँठा धरि।
देखि सकी जौँ अपनेकेँ मात्र
भीतरसँ बाहर पसीझक काँट मात्र।



शीतल झा

जनकपुर, नेपाल

विधानसभा, संघीय संरचना आ मिथिला राज्यक औचित्य

हिमालय पर्वत श्रृडखला करिब मध्य भागमे चीनक तिब्बतसँ दक्षिण, भारतक बिहार आ उत्तर प्रदेशसँ उत्तर आ पूर्व तथा पश्चिम बंगालसँ पश्चिम एकटा आयताकार देश नेपाल अछि। २४० वर्षपूर्व गोराखक एकटा लडाकू राजा पृथ्वीनारायण शाह हिंसक बलसँ दक्षिण पूर्व आ पश्चिमक देशसभपर आक्रमण करैत गेल आ सुन्दर उपत्यका काठमाण्डूसहित एकटा नमहर देश बनौलक। एकर सीमा दक्षिणमे कतऽ धरि रहैक, तकर आधिकारिक रुपसँ कतहु उल्लेख नहि अछि। खस शासकद्वारा शासित गोरखा राज्यक दमनपूर्ण विस्ताकरक वाद एकर नाम कहिया नेपाल रहल से निर्णायक प्रमाण नहि भेटैछ। दक्षिणमे मिथिला आ अवधसन ऐतिहासिक गणराज्यपर सेहो ई हिंसापूर्ण ढंगसँ षडयन्त्रपूर्वक आक्रमण कएलक। एहि क्रममे व्रिटिशकालीन भारतकद्वारा प्रतिरोध आ युद्ध कएल गेलाक वाद १८१६ क सुगौली सन्धिसँ ई वर्तमान सीमाङ्कित देश, बनल जाहिमे १८६० क सन्धिसँ दानस्वरुप प्राप्त पश्चिमक ४ जिलासँ एकर वर्तमान स्वरुप निर्धारित भेल।

ड्ड देशक राजनीतिक शासन व्यवस्था राजतन्त्रात्मक छैक आ एकर राज्य संरचना एकात्मक। एकर शासकीय प्रवृति निरंकुशात्मक छैक आ सामाजिक आर्थिक व्यवस्था सामन्ती छैक।

ड्ड एकर सामाजिक मानवशास्त्रीय संरचना ९क्यअष्य(बलतजचयउययिनष्अब क्तिचगअतगचभ० मंगोलाइड केकेशियन प्रजातिसँ बनल अछि, जाहिमे निग्रोवाइड आ एस्टोल्वाइड प्रजाति सेहो अल्प संख्यामे बसल अछि। कैकेरियनक आर्य शाखा तँ मुख्य रहैत अछि।

ड्ड हिमालय क्षेत्र आ पहाड क्षेत्रमे लिम्बु, राई, तामाङ, नेवार, मगर, गुरुङ, शेर्पा जाति तथा जनजातिक वास छैक तँ दक्षिणक समतल मैदानी भूभाग तराइ्रमे आर्यमूलक जाति जनजातिसभक वास छैक। दुनू क्षेत्रमे पिछड़ल जनजाति, आदिवासीसभक वास सेहो छैक, जाहिमे मिश्रित मूलक संख्या उल्लेखनीय छैक।

मूख्यतः कर्णाली प्रदेशक आर्य मूलक खस जातिक गोरखा राज्य वर्तमान सम्पूर्ण नेपालपर शासन करैत अछि। तँ ई राजनीतिक, प्रशासनिक, न्यायिक प्रभाव विस्तारक क्रमे प्रत्येक जातीय क्षेत्रमे प्रवेश कऽ सामाजिक, भाषिक, जातीय संरचनाकँ तोड मडोर कऽ देने छैक आ नेपालकँ कथित रुपँ राष्ट्र कहि प्रस्तुत करैत छैक। वस्तुतः सामाजिक विकासक अध्ययनमे देखल जाए तँ नेपाल एकटा नहि, विभिन्न राष्ट्रसँ बनल एक देश अछि, जतऽ एक्कहिटा खस जातिक एकल राज्यशासन छैक।

२. मिथिला

नेपालक दक्षिणी समतल भूभागकँ तराई अथवा मधेश कहल जाइत छैक। एतऽ अवध आ मिथिलासन पौराणिक महिमामण्डित ऐतिहासिक समृद्धताप्राप्त गणराज्य छल, जकरा मुगल व्रिटिश शासन दमन करैत गेल आ अन्ततः शाहवंशीय राजाक सङ्ग वाँटि लेलक। १८१६ क सन्धि मिथिलाकँ खण्डित कएलक। जाहि मिथिलाक सीमा कोशीसँ पश्चिम, गण्डकसँ पूर्व, गंगासँ उत्तर आ हिमालसँ दक्षिण छलैक, तकर आइ इतिहास छैक, भूगोल नहि छैक। जँ कि एकर भाषा, संस्कृति, जीवित छैक तँ बाटल बाँटल शरीरक आधारपर कहि सकैत छी सिमरौनगढ़सँ पूर्व, झापासँ पश्चिम आ महाभारत महाड़सँ उत्तर मिथिला जीवित अछि अहिल्याजकाँ जीर्णोद्धारक प्रतीक्षामे अछि, उद्धारक बाट जोहि रहल अछि।

३. संविधान

देशमे शासन व्यवस्था कायम करबाक लेल बनाओल गेल मूल कानूनकँ संविधान कहल जाइत छैक। सभ कानून, ऐन, नियम एकरे सीमाक भीतर रहि बनाओल जाइत छैक।

लोकतन्त्रक मुख्य आधार आ एकटा प्रमाण संविधान होइत छैक।

नेपालमे २००४ सालमे पहिलबेर कोनो संविधान नामक चीज प्रस्तुत भेल रहैक। ओना ताहिसँ पूर्व १९१० मे एकटा ऐन सेहो बनल रहैक। तत्पश्चात २००७ सालमे अन्तरिम शासन विधान आ २०१५ सालमे नेपाल अधिराज्यक संविधान आएल। २०१५ सालक संविधान एकदलीय पञ्चायती व्यवस्था देलक आ तकर अन्त्य २०४६ सालक आन्दोलन कएलक। २०४७ सालमे एकटा अन्तरिम सरकार बनाकऽ तकराद्वारा नेपाल अधिराज्यक संविधान २०४७ लागू कएल गेल। ई सभ संविधान राजतन्त्रात्मक एकात्मक, एकात्मक अछि आ राज्य सत्तापर, राज्यपर, प्रशासनपर एक धर्म, एक भाषा, एक जातिकँ प्रमुखता आ अधिकारक मान्यता देने छल। राजाद्वारा प्रदत्त ओ संविधानसभ राजाक अधिकारकँ सर्वोपरि मानैत आएल छल। मुदा ०६२÷०६३ मे भेल जनआन्दोलन भाग २ सँ ई मान्यता ढहैत गेल आ एखन देश संविधानसभाद्वारा अर्थात जनताक प्रतिनिधिद्वारा निर्मित संविधानक निर्माण करत।

४. संविधानसभा

संविधान बनएबाक लेल जनताद्वारा चुनल प्रतिनिधिसभक समूह एवं सभाकँ संविधानसभा कहल जाइत छैक। सार्वभौमसत्ता सम्पन्न जनता अपनाकँ अनुशासित आ शासित रहबाक लेल जाहि तरहक शासन व्यवस्थाकँ चलएबाक लेल अपने पठाओल प्रतिनिधि द्वारा कानूनक ग्रन्थ तैयार करबाबैक आ घोषणा करबबैक, ताहि जनप्रतिनिधिमूलक सभाकँ संविधानसभा कहैत छैक।

५. संविधानसभाक अनुभव

(क) उत्तर अमेरिका : ब्रिटेनद्वारा शासित अमेरिकाक १३ राज्य स्वतन्त्र भेलापर ५५ सदस्यीय संविधानसभा निर्माण कऽ तकर अनुमोदन अमेरिकी जनतासँ करबाकऽ अप्रिल ३०, १९८९ मे घोषणा कएलक।

(ख) फ्रान्स : अपनहि देशक सामन्ती नायक सम्राट सोलहम लुइक विरुद्ध संविधानसभा वना १७९१ मे लागू कएलक।

(ग) रुस : १९१८ मे संविधानसभा तँ बनल मुदा संविधान लागू नहि भऽ सकल।

(घ) भारत : ब्रिटिस शासनसँ मुक्तिक लेल ३८९ सदस्यीय संविधानसभा बनल मुदा पाकिस्तानक विभाजनक बाद रहल २९९ सदस्यीय सभाद्वारा आ डा.राजेन्द्र प्रसादद्वारा ई घोषित भेल।

(ङ) दक्षिण अफ्रिका : गोर आ कारीक बीच भेल संघर्ष संविधानसभाक मार्फत अन्त्य भेल। सर्वपक्षीय सम्मेलनमार्फत ४९० सदस्यीय संविधानसभाक निर्माण भेल आ संविधान बना जनअनुमोदन कराओल गेल आ घोषणा कएल गेल।

विभिन्न देशक अनुभवक आधारपर नेपालमे बननिहार संविधानसभामे निम्न तरहक विशेषता होएब वाञ्छनीय रहितैक —

(क) जनसंख्याक अनुपातमे निर्वाचन क्षेत्र निर्धारण कएल जाइक आ प्रत्येक जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक, दलित, महिला, मधेशीक ओहि अनुपातमे क्षेत्र आरक्षित कऽ प्रत्यक्ष निर्वाचनसँ जनप्रतिनिधिक पठा संविधानसभाक निर्माण कएल जइतैक।

(ख) अन्तरिम संसदसँ संविधान मसौदा तैयार कऽकऽ ओकरा जनमतसंग्रहद्वारा निर्माण कएल जइतैक, मुदा प्रत्यक्ष मतादान वा समानुपातिक प्रणाली दुनू कायम कएल गेलैक। एहिसँ अल्पविकसित देशक जनतामे भ्रम आ अनावश्यक गड़बड़ी उत्पन्न मऽ सकैत छैक।

आब पूर्ण समानुपातिक प्रणाली बहुतो राष्ट्रिय दलक संगहि प्रत्येक जातीय, जनजातीय, क्षेत्रीय समूहकसभक सेहो मांग रहलाक कारण ओकरे लागू कएनाइ सार्थक संविधानसभाक आधार तैयार कऽ सकैत अछि।

६. समावेशीकरण तथा समानुपातिक समावेशीकरण

सत्ताक स्वरुप, शासन, प्रशासनमे देशक प्रत्येंक जाति, जनजाति, अःल्पसंखयक जाति, विभिन्न भाषिक समूह, सांस्कृतिक समूह, आदिवासी, महिला, क्षेत्र आदि सभक प्रवेश नहि भेल तँ शासन पद्धति जनासँ दूर रहि जाइत अछि आ ताहूमे लोकतन्त्र तें मात्र कथित सभ्रान्त वर्गक खास जातिक हाथक दमनक माध्यम बनि जाइत अछि। तँ जातीय, भाषिक संख्याक समानुपातिक समावेशीकरणसँ मात्र लोकतान्त्रिक शासन पद्धति मजबूत आ दीर्घजीवी भऽ सकैत अछि।

(क) जनसंख्याक समानुपातिक निर्वाचन क्षेत्र निर्धारण कऽ ओहि क्षेत्रसँ ओहि ठामक मूल जाति, भाषाभाषीक मात्र प्रतिनिधित्व कराओल जाए।

(ख) जनसंख्याक समानुपातिक रुपमे सरकारक प्रत्येक अंगमे अथवा न्यूनाधिक रुपमें सभ क्षेत्र, वर्ग, जाति, लिगंक उपस्थित कराओल जाए।

(ग) सुरक्षा, प्रहरी, प्रशासन, राजनीति, राजनीतिक संस्था प्रत्येकमे समानुपातिक रूपमे प्रवेश कराओल जाए वा न्यूनाधिक रुपमे प्रारम्भ कराओल जाए आ किछु जातिक लेल प्रारम्भमे आरक्षित कएल जाए।

एहि तरहेँ देखलापर आगामी शासन पद्धति समानुपातिक होएबाक लेल संविधानसभा समानुपातिक भेनाइ आवश्यक अछि आ तकरा लेल अन्तरिम संसद आ अन्तरिम सरकार, निर्वाचन आयोगकँ सेहो समानुपातिक भेनाई आवश्यक अछि आ एहि तरहक सुरक्षाक व्यवस्था कएनाइ सेहो आवश्यक अछि।

७. एहि तरहेँ वनल संविधानसभा नेपालक नव राज्य संरचना कऽ सकैत अछि आ संघीय संरचनादिस लऽ जा सकैत अछि —

(क) राज्य (प्रान्त, प्रदेश) : भाषा, संस्कृति, जाति, धर्म आदिक आधारपर बनल अथवा बनाओल राजनीतिक,

आर्थिक, प्रशासनिक अधिकारसम्पन्न राजनीतिक भूक्षेत्रकँ राज्य कहैत छैक।

(ख) संघ :—एहन, राज्य सभस वनल राजनीतिक शक्ति सम्पन्न केन्द्रीय सत्ता के संध कहै छ। आंशिक सार्वभौमिकता, स्वतन्त्रता, आत्म निर्णयक अधिकार प्राप्त सभ मिल क सार्वभौम सत्ता केन्द्रके प्रदान करैछ आ एहि राज्य संरचना के संघीय संरचना कहल जाइत अछि।

८. नेपाल संघीय होएबाक आवश्यक अछि —कारण :—

(क) नेपाल विभिन्न प्रजाति, जाति, जनजाति, धर्म, भाषा, संस्कृति के देश छै। एहि सभ के देशक मूलधारमे लएवाक लेल।

(ख) लोकतान्त्रिक व्यवस्थाके समानुपातिक समावेशीकृत करबाक लेल।

(ग) संघीय सरकार आ राज्य सरकार भेला स प्रत्येक नागरिक अपन योग्यता व्यवस्था अनुकूल उपयोग करबाक लेल।

(घ) राज्य भीतर अनेक प्रशासनिक न्यायिक निकाय विकेन्द्रित विकाश राज्य क्षेत्रक कार्य सम्पादन ओहि राज्यक जनताके निर्णय अनुसार हौइछै।

(ङ) ओहि राज्यक भीतरक प्राकृतिक सम्पदा जल, जमीन, जंगल खनिज पदार्थ पर ओहि राज्यक जनताक अधिकार होइछ, ओकर अधिकतम प्रयोग ओतहिक जनता करैछ।

(च) उदयोग आदि विकास कार्य पर राज्यक नियन्त्रण रहैछ आ ताहि के लेल अन्य राज्य स, विदेश स सम्बन्ध स्थापित क सकैअ।

(छ) ओहि राज्यक प्रमुख भाषा प्रशासन, न्यायिक क्षेत्र आदि मे निर्वाध रुपमेँ प्रयोग क सकैत अछि जहि स राज्यक जनता सामाजिक न्याय, मानवीय विकास स वंचित नहि भ सकैत अछि।

(ज) अपन मातृभाषा, स्वत : कायम भेल सम्पर्क भाषा, ग्रहित शिक्षाक भाषाक सुविधा भेला सँ प्रशासनिक, शैक्षिक वैदशिक सुरक्षा सेवा आदि मे नीक संख्या मे राज्यक युवा, शिक्षित वर्ग प्रवेश होएत।

(झ) कोनो खास प्रजातिक, राष्ट्रक, जातिक, जनजातिक, भाषाभाषिक, धार्मिक, सांस्कृतिक समुदायक इतिहास, संस्कृति, भाषा, भेष, कला , साहित्य, परम्परा कँ सरक्षण आ सम्बर्धन कए पहिचान के सुनिश्चत आ सुरक्षित करबाक लेल।

(ञ) कोनो प्रजातीय, जातीय, धार्मिक, भाषिक समुदाय के दोसर वर्ग स शोषण दमन स मुक्ति के लेल।

(ट) पृथकवादी आन्दोलन के रोकवाक लेल।

(ठ) एकात्मक राज्य व्यवस्था परुर्ण रुप स असफल भगेल अछि। तै संघीय संरचना आवश्यक अछि।

९. संघीय संरचनाक आधार :—

संघक भीतर राज्यक संरचना क आधार निम्न होइछ

(क) ऐतिहासिक रुप स निर्मित राष्ट्र (..... जाति) के आधारपर

(ख) प्रकृतिक रुपसँ निर्मित भूखण्डकँ आधार पर।

(ग) जातीय वाहुल्यता के आधारपर

(घ) धर्म अथवा धार्मिक सम्प्रदायक आधार पर

(ङ) संस्कृतिके आधार पर अथवा सांस्कृतिक सामीप्यताक के आधार पर।

(च) भाषा क आधार पर

(छ) प्रकृतिक सम्पदाक आवण्टनके आधार पर।

(ज) विकसित नया अवस्था, सोचक, आधारपर।

१०. एहि आधारसभ के देखैत आ नेपालमैं चलैत जातीय आन्दोलन सभ केँदेखैत आ ओकर मांग सभ कँ देखैत नेपालकँ निम्न संघीय राज्यमे विभाजित कएनाई आवश्यक छै :—

(क) लिम्बुवान किरांत राज्य

(ख) खुम्बुवान

(ग) नेवा राज्य नेवार राज्य

(घ) तामाङ साम्बलिंग

(ङ) तमुवान गुरुङ राज्य

(च) मगरात मगर राज्य

(छ) खसान खस राज्य

(ज) थरुहट थारु राज्य

(झ) अवध अवधी राज्य

(ञ) भोजपुरी भोजपुरी

(ट) मिथिला मिथिला (विदेह)

संघीय विधाजनक लेल नया, तथ्यपूर्ण जनगणना आवश्यक अछि, आ ऐतिहासिक रुप स वसल जाति के सामूहिक निर्णय के आधारपर राज्यक नामकरण कएनाई आवश्यक अछि।

सम्पूर्ण नेपाल मे खस जातिक मिश्रित अवस्था भेलो स कोनो जातीय क्षेत्रक इतिहास आ ओकर भावना नहिं मेटाएल अछि।

११. मिथिला —संघीय संरचनामे मिथिला राज्य किएक चाही :—

(क) मिथिला प्रागऐतिहासिक भूमि अछि आ पुराणवर्णित देश अछि।

(ख) मिथिला आर्यजातिक आधार क्षेत्र आ आर्य संस्कृतिक निर्माण भूमि अछि।

(ग) कोशी गण्डक, गंगा, हिमालय के विचमैँ स्थित ई भूमि निश्चित भूखण्ड प्राप्त कएने अछि।

(घ) ऐतिहासिक कालखण्डमे एकरापर अनेक आक्रमण होइतोमे ई आर्य जातिक वाहुल्यताक क्षेत्र छै।

(ङ) एकर अपन वहुत समृद्ध संस्कृति छै।

(च) एकर भाषा हजारौं वर्ष पूर्वक इतिहास देखवैत अछि आ वहुत समृद्ध अछि।

(छ) मिथिला गणराज्यक इतिहासक साक्ष्य अछि।

(ज) एकर खास आर्थिक जीवन प्रणाली छैक।

(झ) सामुहिक, देवी देवता स ल ''क'' पारिवारिक देवता प्रति आस्थाक संस्कार छै।

(ञ) मिथिलामे अखनो लोक निर्मित, नियम कानून छै समग्रमैं मिथिला के एकटा सझिया मनोभावना छैक जाहिस ई एकटा राष्ट्र छै आ एकरा संघीय संरचनामे राज्य होएबाक पूर्ण नैसर्गिक अधिकार छै।

(क) मिथिलाक सम जातीके,

राजनीतिमे, प्रशासनमे समानुपातिक उपस्थिति के लेल।

(ख) उद्योग, कृषि, पर्यटन, जंगल, जल सभ स अधिकतम् लाभ, लेबाक लेल।

(ग) नदी नियन्त्रण, सिंचाई सडक वाँध, विद्युत आदि के लेल संघीय सरकार स आ विदेश स सम्बन्ध स्थापित कए मिथिला वासी के उत्थान लेल।

(घ) मिथिला स उठाओल कर ... के उचित व्यवस्थापन कए राज्यक द्रुत विकाश लेल।

(ङ) मिथिलामे प्रयोग होइत सभ भाषा मे सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालय सभमे कामकाज करवाक लेल।

(च) सरकारी सेवामे कामकाज करबाक अवसर के लेल। अर्थात वेरोजगारी समस्या समाधानमे सहयोग करवाक लेल।

(छ) मिथिलाक पावनि तिहार मे छुट्टी पएवाक लेल।

(ज) मिथिलाक दलित, उत्पीडित, पिछडल वर्ग, जनजाति आदिवासी, महिला, अल्प संख्यक कँ लेल विशेष अवसर के लेल।

(झ) मिथिलाक लोकगाथा (सहलेश, लोरिक) लोकनृत्य लोकधुन लोककला, लोकगीत, लोकनाट्य आदि के रक्षा आ प्रचार प्रसारक लेल।

(ञ) पौराणिक मिथिलाक राजधानी जनकपुर सहित मिथिलाक एक खण्ड, एकर लिपि, साहित्य भाषा, संस्कृति जीवन शैली सभ जीवित अछि तै रक्षाक लेल आ विश्वस्तर मे एकर सभ्यताके, विशेषताके फैलावक लेल।

(ट) नेपाल मे भेल कोनो लोकतान्त्रिक आन्दोलन, जातीय मुक्ति के आन्दोलनमे मिथिलाके अग्र, उग्र भूमिका रहलैक, सपूत वलिदान देल कै तै संघीयता के लेल अधिक रक्त श्राव रोकवाक लेल।

१२. मिथिला राज्यक सीमा :___

(क) प्राचीन, मिथिलाक सीमा छलैक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूर्वमे कोशी, पश्चिम मे गंडक। ई मिथिला १८१६ क सुगौली सन्धि पश्चात् खंडित भेल। अखन एकर जीवित भूगोल पर जीवित इतिहास छै, जीवित लिपि भाषा, जीवित संस्कृति जीवन्त जिवन शैली, जीवन्त मनोभावनाक अधिकार अनुसार सीम्रौन गढ स पूर्व, झापा स पश्चिम महाभारत पर्वत श्रृंखला स दक्षिण आ नेपाल भारत वीचक सीमा स उत्तर मिथिला छैक, आ मिथिला राज्य होएबाक चाहि।

(ख) झापा मधेश मे रहितो मे एत सतार, राजवंशी जनजातिक बसोवास छैक, आ ओकर अपन इतिहास, संस्कृति, मांग आ संघर्ष छै तै ओतए, नव आगन्तुक खस भाषी के छोडि ओकर सभके आत्म निर्णयके अधिकार अनुसार मिथिलामेँ समाहित कएल जाए अथवा स्वायत्तता देल जाए।

(ग) वारा, पर्सा भोजपुरी भाषाक क्षेत्र छै। मैथिली भाषा स फरक छै परन्तु एकर संस्कृति, आर्थिक जीवन मिथिला के समान छै। खसवादी सत्ताके दृष्टिकोण व्यवहार एकरो प्रति ओहने छै तै एकरो आत्मनिर्णय के आधारपर मिथिला मे समाहित कएल जाए अथवा स्वायत्तता देल जाए।

१३. मधेश आ मिथिला :___

(क) मेची स महाकाली तकके सम्पूर्ण समतल मूमि ___मधेश एकहि सत्तास दमित अछि, दलित अछि, उत्पीडित अछि, प्रताडित अछि, उपेक्षित अछि। सम्पूर्ण मधेशी एकहि मनोविज्ञान एकहि मनोदशा लक जीवित अछि। एकरा प्रतिक शोषणक स्वरुप समान छैक तै तकर संघर्षक निशाना एकहिटा भाषीक वर्ग छै।

(ख) खस प्रभुत्ववादी सत्ता, मैथिली, भोजपुरी अविधि कहिक उपेक्षा, अवहेलना नहि करे छै समष्टिमे मात्र मधेशी कहै छै।

(ग) थारु जातिके खस शासक पहाडी नहि बुझै छै आ थारु अपना के मधेशी बुझ स भय महसुस करै छै। तथापी ओ संघीयता के संघर्षमे प्रमुख शक्ति भए सकैतधै छै। आ इएह सोच स मधेशमे वसल प्रत्येक जनजाति, द्रोणवार, सतार राजवंशी, झागड सभके देखनाइ आवश्यक छै आ ओकरा सबके एहि संघर्षमे स्थापित कएनाई आवश्यक छै।

(घ) मधेशक आन्दोलन खस सत्ता के विरुद्ध राजनीतिक आन्दोलन छै आ मिथिलाक आन्दोलन माथिक, सांस्कृतिक, जातीय आन्दोलन निहित राजनीतिक आन्दोलन छै तै संघीयता के आन्दोलन के अन्तरवस्तु लेने छै।

(ङ) मधेश आन्दोलन केन्द्र स्थल मिथिला क्षेत्र रहैत अछि आ मानव अधिकार राजनीतिक अधिकार प्राप्तिके आन्दोलन के केन्द्र सेहो मिथिला क्षेत्र रहैत अछि। तै मधेश आन्दोलन के मिथिला आन्दोलन स जोडनाई आ मिथिला आन्दोलन के मधेश आन्दोलन के रुपमेँ विकसित कएनाई रणनीतिक सोच राखव आवश्यक छै।

१४. मिथिला आ गणतन्त्र :___

मिथिला राज्यक लेल अथवा मिथिलाक मुक्तिके लेल नेपालमे संघीय शासन आवश्यक शर्त छै। संघीय शासन के लेल गणतन्त्र आ लोकतन्त्र आवश्यक शर्त छै आ अन्ततः लोकतन्त्र के स्थापनाके लेल, एकर सशक्तता के लेल, एकर दीर्घायु के लेल गणतन्त्र आवश्यक छै।

१. गणतन्त्र ___जन्मक आधारपर विशेषाधिकार सहित शासक विना के शासन पद्धति सत्ताक स्वरुप के गणतन्त्र कहैत छै। सार्वभौमिक जनता जनप्रतिनिधि द्वारा राष्ट्र प्रमुख निर्माणक पद्धति के गणतन्त्र कहैत छैक अर्थात् राजा विना के शासन पद्धति।

२. नेपाल गणतन्त्रात्मक देश होएबाक चाही ___कारण ?

(क) कथित एकिकरण वलातु सैनिक वल स हिंसा द्वारा भेल छै।

(ख) राजतन्त्रक मूल चरित्र निरंकुश, निर्मम, अत्याचारी होइत आएल छै।

(ग) सत्तामे, सेनामे, प्रशासनमे, न्यायालय दमनकारी नीति स पकड वना

क आम वर्ग कँ निर्मम शोषण दमन करैत छै।

(घ) कोनो प्रकारक, नया सोच, वैज्ञानिक चिन्तन जनअधिकार आ प्रगति विरोधि भेनाई राजतन्त्रक मूल ऐतिहासिक चिन्तन आ चरित्र छै।

(ङ) एक देश एक राज्य, एक राज्य एक राष्ट्र, एक राष्ट्र एक जाति, एक जाति एक धर्म, एक धर्म एक संस्कृति, एक संस्कृति एक भाषा, एक भाषा एक भेष आदि प्रकारक निरंकुश एकात्मक नीति लैत आएक छै।

(च) लोकतन्त्रके स्थायीत्व, मानवअधिकारक वहाली, कानूनी राज्यक स्थापना स्वतन्त्र, न्यायपालिका के लेले राजतन्त्र उच्छेदन आवश्यक छै।

(छ) जनताके बलीदानी संघर्ष स आएल लोकतन्त्र के साथ सदा घोर षडयन्त्र करैत आएल छै।

(ज) निम्न जाति आ वर्ग के सत्तासँ दुर राखि दानवीय व्यवहार कएनाई के दैविक अधिकार बुझै छै।

(झ) कोनो प्रजाति जाति , जनजाति, भाषाभाषी के पहिचान के दमन करैत आएल छै आ दमन मे सेना, प्रशासन, अदालत, मातृहन्त कँ प्रयोग करैत आएल छै।

(ञ) मधेशी के सदा विदेशी सावित करै मे व्यस्थ रहै त आएल छै।

(ट) मिथिला के साथ वहुत वडका धोखा, षडयन्त्र, गद्दारी करैत आएल छै, जहन मिथिलाक सेना स सहयोग ल क भंग कए देने छै।

(ठ) जातीय अधिकार के सुनिश्चित, सुरक्षित रखवाक लेल आवश्यक संघीय संरचनाके स्थापनाक लेल गणतन्त्र आवश्यक छै।

१५. सघीयता आ वर्गीय आन्दोलन :

किछु राजनीतिक आ बौधिक वर्गमे भ्रम रहैंछ आ भ्रम श्रृजना करैछ जे संघीय आन्दोलन वर्गीय आन्दोलनकँ कमजोर करैत छै आ संघीय आन्दोलन जातीय सम्प्रदायिक सद्भाव के दूषित छै। मुदा ई भ्रम मात्र अछि। शोषण के स्वरुप आ गति जतेक स्पष्ट आ तीब्र होइछ आ वर्गीय आन्दोलन के गुण लैत जाइत अछि आ सम्पन्न वर्ग आ ''सभ्य'' जाति के भितर निर्मित शोषण आ शोषितक चरित्र लबैत अछि त ओ मात्र अधिकार आन्दोलन नहिं, जाति, क्षेत्र हितक आन्दोलन मात्र नहिं मानव विकाशके क्रम मे भेल वर्गीय आन्दोलन अछि। (आ कोनो वर्गीय आन्दोलनकारी के संघीय आन्दोलनके समर्थन करबाक चाही) मिथिला आन्दोलन सेहो वर्गीय आन्दोलन अछि जतए एकटा राष्ट्र, समृद्ध संस्कृति, भाषा, साहित्य, शोषण आ दमनके शिकार अछि।

१६. मिथिला आ जातीय आन्दोलन :

जाति स्वरुप, चरित्र, इतिहास, आ ओहि जातिपर होइत शोषण दमके मात्रा, जातीय आन्दोलनके दिशा र स्वरुप निर्धारण करैछ। (सामाजिक संरचनाके भित्रके विभिन्न जातिकै तह, हिन्दु धर्माबलम्बीके विभिन्न जातपर होइत भेदभाव, आ शोषण सेहो आन्दोलन के समय आ स्वरुप निर्धारण करैछ। तथापि छोट आ सामयिक अन्तर विरोध एकर मुख्य आन्दोलन के असर नहिं क सकैछ आ प्रधान अन्तर विरोध के समाधान मात्र ओहि अन्तर विरोध के समाधान क सकैछ। मिथिलाके भित्तरकँ विभिन्न द्वन्द्व मुख्य द्वन्द्व के समाधान कर में आएल वाधा राजनीतिक वैचारिक आन्दोलन के मार्फत मात्र अन्त्य कएल जाए सकैछ।

१७. मिथिला आ जनजातीय आन्दोलनः

जनजाति स्वतः शोषित दमित आ अविकसित होइत अछि। ओकरा पर सदियौं स शोषण भ रहल अछि। मुदा आब ओहो अपना अधिकार के लेल अनवरत संघर्ष क रहल अछि। नेपालमँ जनजाति कोनो विकसित आ कोनो अविकसित अछि। दुनु के स्वायत्तता चाही। किछु जनजाति सैनिक प्रहरी सेना स जुडल अछि। मुदा अधिकारस वंचित। ओ पहाड मे आ मे आ मधेश मे सेहो अछि। मधेशक आन्दोलन दुनु के अधिकारके लेल कएल संघर्ष मे सहयोग कएलक अछि। मिथिला क्षेत्र मे जे जनजाति अछि तकरा मिथिला राज्य समानुपाति अधिकारस वंचित नहिं करत से ओकरा विश्वास नहिं भैरहल छै आ पहाडके जनजाति स मिथिला तथा मधेश आन्दोलन के निक जकाँ नहिं जोडल जा रहल अछि। दुनु ठामक जनजाति के विश्वास मे लेनाई आवश्यक अछि।

१८. मधेश, मिथिला आ थारु आन्दोलनः

जनजाति में थारु क संख्या वेसी छै आ मात्र मधेश में लगभग पूर्व स पश्चिम तक अधिकांश जिल्लामें। ई जाति अलग पहिचानक जाति छै क एकर अपन भाषा आ किछु संस्कृति अलग छै। जाहि क्षेत्र में स्थित छै ताहि ठामक भाषा स जुडल छै। शारिरिक बनौट मंगलाइड सन छै मुदा सांस्कृतिक सम्बन्ध मधेश के साथ जुडल छै। ई स्वतन्त्र आन्दोलन नहिं क सकैअ आ मधेशी आन्दोलन स जुड स डराइछै। मधेशी आन्दोलन के अंगा खस सत्ता एकरा प्रयोग करै छै। कहिओ आ कोनो आन्दोलन के विरुद्ध में उतारि दैत छै। वहुत सज्जन जनजाति भेला के कारण ई आसानी स ओहि षडयन्त्र में फंसि जायत छै आ मधेश आ मधेशी कें विरुद्धमे ठाढ भ जाइत छै। एकरा जनजाति आन्दोलन स नीक जकाँ जोडनाई वहुत जरुरी छै, तहन एकरा मिथिला आन्दोलन में समानुपाति अधिकार आ समानुपाति अधिकार क्षेत्र के लेल विश्वास में ल एकर विश्वास प्राप्त केनाई आवश्यक छै।

१९. नेपालक मिथिला आ भारतक मिथिला :

सुगौली सन्धि मिथिला के दु खण्डमें त वांटि देलक, मुदा राजनीतिक सीमा स मिथिलाक भाषा, संस्कृति साहित्यक सम्बन्ध नहि तोडि सकल। आई दुनु देशमें मिथिला राज्यक मांग उठि रहन छै। अइस हुनु देशक शासक

वर्ग के किछु भय भरहल छै। दुनु देशक मिथिला आन्दोलन के भावनात्मक सम्बन्ध छै आ दुनु के नैतिक समर्थन छै जे नैसर्गिक छै। दुनु राजनीतिक स्वतन्त्रता कायम राखए चाहैछै, दुनु अखण्डता के सम्मान करै छै। ई वात दुनु देशक सत्ता के वुझक चाही आ हमरा सभ के कर्तव्य जे दुनु सत्ताके बुझा देवक चाही। संघीय संरचनामें दुनु मिथिला अलग अलग राज्याधिकार चाहेछै, जेना वंगाल, पंजाव इत्यादि वंगला देशकें आ पाकिस्तान में सेहो छै।

२०. आत्म निर्णय के अधिकार आ मिथिला :___

व्यक्तिगत, जातिगत क्षेत्रगत, राष्ट्रगत रुपमें स्वतन्त्र पहिचानकें साथ राजनीतिक प्रशासनिक निर्णय के अधिकार आत्मनिर्णय के अधिकार अछि। आर्थिक जीवन अपने शैली में संचालन केनाई आत्मनिर्णय के अधिकार क्षेत्र छै, अनुशासित स्वतन्त्रता के अधिकार आत्मनिर्णय के अधिकारके मूल मर्म छै। कोनो व्यक्ति दोसर व्यक्ति पर, कोनो जाति दोसर जाति पर कोनो राष्ट्र दोसर राष्ट्र पर अनाधिकार के प्रयोग कएनाई के पूर्ण नियन्त्रण आत्मनिर्णयक अधिकार कै। क्षेत्रीय, जातीय, राष्ट्रिय दमन, शोषण, शासन, प्रशासन स मुक्ति के अधिकार मात्र आत्म निर्णय के आत्म निर्णायक अधिकार छै।

मिथिला एकटा स्वतन्त्र ऐतिहासिक राष्ट्र छलै तै एकरा आत्मनिर्णय के अधिकार छै, जे राजनीतिक सीमा मे प्रशासनिक शासकीय दमन स मुक्त होएक।

२१. मिथिला आ जातीय स्वायत्तता :___

सीमित राजनीतिक आर्थिक अधिकार सहित के खास क्षेत्र में खास जाति अर्थात राष्ट्र के प्रादेशिक शासन के जातीय स्वायत्तता कहल जाइछै। ई आत्म निर्णय के अधिकार के अर्ध तथा नियन्त्रित प्रयोग छै। आत्म निर्णय के अधिकार के स्वायत्तता में घेर देनाई आ स्वायत्ततताके जातिगत रुपमें प्रयोग केनाई अव्यवहारिक छै खासक मिश्रित सामाजिक संरचनाके देशमें आ क्षेत्रमें। मिथिला संघीय संरचनामे पूर्ण राज्यधिकार प्रयोग करए चाहैत अछि कोनो केन्द्रीय सत्ता स निर्धारण कएल सीमित अधिकार सहित कें कथित स्वायत्तता नहिं।

२२. मिथिला आ दलित आन्दोलन :___

ई हरेक दमन आ उत्पीडन स मूक्ति के युग छै। राजनीतिक आर्थिक शोषण मात्र नहिं, सामाजिक उत्पीडन स मुक्ति के लेल प्रत्येक देश में, प्रत्येक राष्ट्र मे, प्रत्येक समाज में आन्दोलन तीव्र भगेल छै। एकरा समयमे स्वीकार कएनाई प्रत्येक लोकतन्त्रवादीके कर्तव्य छै। सामाजिक न्याय उपलब्ध करबैत राजनीतिक रुपमे प्रत्येक अंग में सम्मानपूर्वक उपस्थित कएनाई राज्य के कर्तव्य छै। मिथिला स्वयं उपेक्षित उत्पीडित अछि। तैं एकरा कतहु के दलित आन्दोलनके हार्दिक समर्थन सहयोग करैत मिथिलाक दलित मुक्तिके आन्दोलन में सामेल होइत, ओकर अगुवाई करैत मिथिला राज्य के स्थापना में गति स आगाँ बढत।

२३. मिथिला आ राजनीतिक दल :___

देशमें वर्तमान में सक्रिय राजनीतिक दल सभ मे संघीय संरचना के विषयमे स्पष्ट धारणा वाहर नदि आएल अछि। संविधानत : स्वीकार कएले पर एहि विषय मे पार्टीक संघ विरोधी धारणा बाहर अवैत अछि। संघीय संरचना बनाएब, ताहिमे कपटपूर्ण अभिव्यक्ति अबैत अछि। किछु दल के नीति इ रहि आएल अछि जे सम्पूर्ण मधेश के एकटा राज्यके रुपमे आवक चाही। ई संघीय मान्यता नेपाल मे कतेक व्यवहारिक हेतै? पौराणिक मिथिला के संशोधनसहित के एकटा राज्य बना कए मधेश में अन्य राज्य सेहो उपयुक्त होएत। हरेक क्षेत्र के आन्दोलित कए समग्र मे मधेश के खसवादी प्रभुत्व स मुक्त कएल जा प्रत्येक दल आ कथित वुद्धिजिवी संघीय संरचना के स्वीकार करैत, मुक्त मधेश के मान्यता दैत मिथिला राज्यके स्थापना मे सहयोग करैक, ईहए संघीय मान्यता अनुकुल हेतै।

२४. मिथिला आ महिला आन्दोलन :___

मिथिला सदा नारी के सम्मान करैत आएल अछि। तै नारी अधिकार के कुण्ठित नहिं कए सकैअ। महिला अधिकार, महिला सशक्तिकरण द्वारा महिला आन्दोलन के मिथिला आन्दोलन स जोडिक ल जेनाई जरुरी छै। किछ दशक स मिथिलाके महिला के अनावश्यक अन्तरमुखी वनावल गेल छै आ एहि मे नेपालक जडिआएल सामन्ती सामाजिक राजनीतिक व्यवस्थाक खास भूमिका छै। तैं मिथिला के लोकतान्त्रिक राज्य निर्माण मे अधिकार सम्पन्न महिलाके भूमिका अति आवश्यक छै।

२५. मिथिला आ कथित पिछडल आ आगा बढल वर्ग ९ द्यबअपधबचम ायच धबचम :___

मिथिलाक डोम सेहो सम्पत्तिशाली छल। एकरा साथ अछुत क व्यवहार नहिं छलै। गणराज्यक नायक जनकक कालमे समतामूलक समाजक प्रमाण भेटछ। तथापि मिथिला एकटा देश छल जतए सब जाति जातक बसोबास स्वभाविक छल आ अछि। अखन लोकतान्त्रिक व्यवस्था मे सभ जाति जातके समानुपातिक समावेशीकृत उपस्थिति मिथिला राज्यके प्रत्येक अंग आ निकाय में रहत से घोषित नीति अछि। मिथिला कोनो एकटा जाति के नहिं, कथित उच्च जाति के कथमपि नहिं। योग्यता क्षमता अनुसार समानुपातिक रुपमें सहभागी केनाई आवश्यक अछि। इएह मिथिला निर्माण के आधार रहत।

२६. मिथिला आ मानक मैथिली :___

मानव शास्त्री आ भाषा शास्त्रीक अनुसार केव भाषा नहिं बजैअ, सब बोली १मष्बभिअतक० बजैअ। समरुप बोली के समग्र रुप भाषा होइछ। मुदा जाहि बोलीक बेसी संचार होइछ जाहि बोली मे विशेष रचना प्रकाशित होइछ, जाहि बोली के बेसी पाठक होइछ जाहि बोलीक व्यक्ति सत्ता पर नियन्त्रण करैछ जाहि बोली द्वारा प्रकाशन, न्याय सम्पादन होइछ, जाहि बोलीके विद्धान व्याकरणक रचना करैछ, ओहए बोली भाषा बनिक समाजपर प्रभाव पारैत अछि। तै कोनो बोली कथित उच्च वर्गके भए सकैछ, तै ओकरा मानक भाषा बुझनाई ओतेक उचित नहिं आ अइस कोनो जाति के राज्ययन्त्रपर नियन्त्रण के शंका केनाई उचित नहि। तै मिथिला में वर्तमान में वाजए जाए बाला प्रत्येक बोली के सम्मान करत, सभ भाषाके सम्मानकरत आ वहु भाषिक नीति राखि राज्य संचालन करत।

२७. मिथिला राज्य स्थापना के लेल नीतिगत कार्यक्रम :——

(क) जनता, लोकतन्त्र, मानवअधिकार के विरोधी, जाति, भाषाक अधिकार के प्रधान शत्रु राजतन्त्र अछि। तै जनताके मित्र शक्ति लोकतन्त्रवादी, मानव अधिकारवादी, कानूनी राज्यक पक्षधर आदि शक्ति आ संगठन स मिलक गणतन्त्र लएवाक लेल अथक संघर्ष आवश्यक छै।

(ख) प्रत्येक जाति, जनजाति, आदिवासी, दलित उत्पीडित वर्ग पिछडल वर्ग, अल्प संख्यक जाति, मानव अधिकरावादी सबस मिलक, संघीय संरचना केल कठोर संघर्ष आवश्यक अछि।

(ग) मधेशक प्रत्येक जाति, जनजाति, भाषा भाषीक समुह, महिला मुस्लिम सभके साथ कार्यगत एकता करैत खस सत्ता स सम्पूर्ण मधेश के मुक्त कएनाई बेसी आवश्यक छै।

(घ) संघीय संरचनाक मर्म, भावना अनुसार मधेशमे आत्म निर्णायक आधार पर मिथिला क्षेत्रक प्रत्येक वर्ग के आन्दोलित कए मिथिला राज्यके लेल सहमति जुटएनाय आवश्यक अछि।

२८. कार्यदिशा :——

१. संघीय संरचना विना मुक्त मधेशक कल्पना तथा मुक्त मधेश विना मिथिला राज्यक कल्पना असम्भव होएत से बुझि चेतना मूलक कार्यक्रम सम्पूर्ण मधेशमे आवश्यक अछि।

२. खस सत्ता वर्गिय समुदाय के दिमाग स ई भय हटैनाई जरुरी छै आ चेतना देनाई जरुरी छै जे कोनो जाति, भाषा के संरक्षण, सम्मान संघीय संरचनामे मात्र संभव छै। जन अधिकार सम्पन्न लोकतन्त्र संघीय संरचनामे मात्र संभव छै।

३. कोनो सत्ता, दलीय सरकारक निरंकुशता के न्यून करवाक लेल संघीय संरचना मात्र आधार छै।

४. संघीय शासन प्रणाली सं देश खण्डित नहिं होइछ। अर्थात संघीय शासन देश के विखण्डन स बचवैत अछि। अर्थात् संघीय संरचना विखण्डनवाद के स्थायी समाधान अछि।

२९. मिथिला राज्य निर्माण वाधक चिन्तन :——

अन्तरिक

१(क) मिथिला के लेल कोनो राजनीतिक संगठन नहि अछि। आ एहके लेल कोनो संघर्ष नहिं अछि।

(ख) भाषा संस्कृति करे लेल कोनो एकिकृत संगठन नहि अछि।

(ग) कोनो स्थापित नेतृत्व नहिं अछि।

(घ) भाषा, संस्कृति के आन्दोलन के लोकतान्त्रिक आन्दोलन, मानव अधिकार वादी आन्दोलन स जोडक, लएजवाक चिन्तन या प्रयास नहिं अछि।

(ङ) एहिके लेल किछ भ रहल आन्दोलन, वौद्धिक व्यक्तित्व सभक मात्र अछि, जिनकामे स्वाभिमान कम, अहंकार वेसी, संयोजन करवाक क्षमता कम फुट करवाक क्षमता वेसी छन्हि।

वाह्य

(क) खस जाति समग्र संघ के विरोधी चिन्तन रखैत अछि अपना के सदा केन्द्रीय सत्ताके भागी बुझैछथि आ नेपाल के अपन पुर्खा के अर्जन सम्पत्ति बुझै छथि।

(ख) समग्र मधेश एकराज्यक नारामे सत्ताधारी वर्ग विखण्डन के गंध देखैत अछि आ मिथिला तथा संघीय संरचना के विरुद्ध सोचेत अछि।

(ग) संघीय आन्दोलन के नेतृत्व कएनिहार, दल या व्यक्ति के हिन्दी भाषा प्रति आसक्ति स मातृभाषा प्रेमी विचकैत छथि आ खसवादी सेहो एहिमे किछु रहस्मय दुर्गन्ध सुंधवाक प्रयास करैत अछि।

निश्कर्ष :——

नेपाल के सत्ताधारी, वर्ग संकट के घड़ी सँ गुजरि रहल अछि। देश अखन अधिकार प्राप्तिकँ नयाँ मोडपर ठाढ अछि। अधिकार सँ वंचित उत्पीडित वर्ग, जाति आन्दोलनमे कुदि पडल अछि। संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्र माग एकर अचूक औषधि छेक। प्रत्येक प्रभुसत्तावादी सामन्ती चिन्तन एहि आन्दोलन के पाछा धकेल चाहैत अछि आ आन्दोलन ओकरा किनार पर खसवैत आगा बढि रहल अछि। आउ, समाजक स भ वर्ग, आन्दोलन मे भाग लिअ आ नैसर्गिक अधिकार स्थापित करु।

सन्दर्भ सामाग्री :——

(क) संविधानसभा, संघीय संरचना, मिथिला राज ——अवधारण १——शीतल झा

ख) संघीय स्वशासन तिर ....वृषेश चन्द्र लाल

(ग) संघीय शासन व्यवस्थाको आधारमा राज्यको पुन : संरचना —— अमरेश नारायण झा

(घ) मूल्यांकन मासिक।



शेख मोहम्मद शरीफ

प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफक जन्म आन्ध्र प्रदेशक कडापा जिलामे भेल छल।



जयलक्ष्मी पोपुरी

निजाम कॉलेज, ओस्मानिया विश्वविद्यालयमे अध्यापन।

जुम्मा-शेख मोहम्मद शरीफ

प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफ लिखित तेलुगु कथा।

तेलुगुसँ अंग्रेजी अनुवाद जयलक्ष्मी पोपुरी

गजेन्द्र ठाकुर (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद)।

हमर अम्मीक निर्दोष मुखमंडल अबैत अछि हमर आँखिक सोझाँ, चाहे आँखि बन्द रहए वा खुजल रहए। ओहि मुखक डर हमर विचलित करैत अछि। एखनो हुनकर डराएल कहल बोल हमर कानमे बजैत रहए-ए। ई दिन रहए जुम्माक जाहि दिन मक्का मस्जिदक बीचमे बम विस्फोट भेल रहए। सभ दिस कोलाहल, टी.वी. चैनल सभपर घबराहटिक संग हल्ला, पाथरक बरखा, आदंक आ खुनाहनि।

हम काजमे व्यस्त छलहुँ जखन फोन बाजल। फोन उठेलहुँ तँ दोसर दिस अम्मी छलीह..हुनकर फोन ओहि समय नीक आ सहज लागल।

एहिसँ पहिने कि हम "अम्मी.." कहितहुँ ओ चिन्तित स्वरेँ "हमर बाउ...!" कहलन्हि।

"की अहाँकेँ ई बुझल छल...?" हम पुछलियन्हि।

"हँ एखन तुरत्ते हमरा ई पता चलल..अहाँ सतर्क रहब! ...लागै-ए अहाँ आइ मस्जिद नहि गेल रही हमर बाउ।" हम हुनका डरसँ सर्द अवाजमे बजैत सुनलहुँ।

जिनगीमे पहिल बेर हमर मस्जिद नहि जएबासँ ओ प्रसन्न भेल छलीह। ई विचार हमरा दुख पहुँचेलक। की हमर अम्मी ई गप बाजि रहल छलीह? ई ओ छथि जे हमरासँ ई पूछि रहल छथि? ई हमर अम्मी छथि जे एहि तरहँ डरलि छथि? हमर मस्तिष्क विचारक विस्फोटसँ भरि गेल आ स्मृतिक बाढ़िमे बहए लागल।

हमर अम्मीकेँ जुम्माक नवाज आस्थाक दृष्टिसँ नीक लगैत छलन्हि। ओ कोनो चीजक अवहेलना कऽ सकैत रहथि मुदा जुम्माक दिन नमाजक नहि, से ओ हमरा सभकेँ ओहि दिन घरमे नहि रहए दैत रहथि। अब्बा सेहो हुनकर दामससँ नहि बचि पाबथि जे ओ घरपर रहबाक प्रयास करथि। हुनकर सन डीलडौल बलाकेँ सेहो हाथमे टोपी लए मस्जिद चुपचाप जाए पड़न्हि।

हमरा सभक घरमे काजसँ दूर भागए बला, आलसी बच्चा, शिकारी हम आ हमर अब्बा हरदम मस्जिद नहि जएबा लेल बहन्नाक ताकिमे रहैत छल। हमर अब्बा भोरेसँ छाती तनैत कहैत रहैत छलाह जे आइ जुम्मा अछि से कोनो हालतिमे मस्जिद जएबाके अछि। मुदा जखने समय लग अबैत रहए हुनकर बहन्ना शुरू- " अरे! अखने कादोमे हम खसि पड़लहुँ..." हमर अम्मी लग कोनो रस्ता नहि बचन्हि। जे से, तखन ओ हमरा सेहो मस्जिद नहि पठा सकैत छलीह...हमरा नहबैत, हमर कपड़ा धोबैत, ओ कोना कऽ सकितथि? तैयो ओ हाथमे छड़ी लेने आँगन आबथि, हमरापर गुम्हरैत, हमर पुष्ट पिटान करैत आ हमरा अँगनामे कपड़ा जकाँ टँगैत। से हम ई चोट खएबासँ नीक बुझैत रही नमाजे पढ़ब। हमर आलसपना मस्जिद पहुँचिते अकाशमे उड़ि जाइत रहए।

एक बेर ओतए पहुँचिते हम दोसर बच्चा सभ संग मिझरा जाइत रही आ सभटा नीक वरदानक लेल प्रार्थना करैत रही- जेना हमर अब्बा लग खूब पाइ होन्हि, हमर अम्मीक स्वास्थ्य नीक भऽ जान्हि, हमर पढ़ाईमे मोन लागए आ की की।

हमर अम्मा बुझाबथि- "हमरा सभकेँ मस्जिद मात्र वरदान प्राप्त करबाक लेल नहि जएबाक चाही, हमर बाउ..हमरा सभकेँ नमाज पढ़बाक चाही...अल्लामे आस्था हेबाक चाही। ओएह छथि जे हमर सभ कल्याण देखैत छथि"।

जखन दोसर हुनका हमर उपराग देन्हि जे हम नमाज काल आस्ते-आस्ते गप करैत रहै छी तँ ओ हमरा आस्तेसँ दबाड़ि बाजथि- "हमर बाउ, प्रार्थनाक काल बजबासँ अपनाकेँ रोकू...कमसँ कम मस्तिष्कमे दोसर तरहक विचारकेँ अएबासँ रोकू। बगलमे बम किएक ने फाटय तैयो सर्वदा अपन मस्तिष्ककेँ अल्लापर केन्द्रित राखू..."। हुनका ओहि दिन एहि गपक अन्देशा नहि रहन्हि जे

एक दिन ठीकेमे मस्जिदमे बम फाटत। से आश्चर्य नहि जे ओ एतेक आत्मविश्वाससँ बाजि रहल छलीह। आब जखन ठीकेमे बम विस्फोट भेल अछि, हुनका ई अनुभव भऽ रहल छन्हि जे कतेक भयावह ई भऽ सकैत अछि।

हम हुनकर वेदनाकेँ नहि देखि पाबि रहल छी। ओ डरायलि छलीह। ओ नमाजसँ डरायल छलीह। ओ अल्लासँ सेहो डरायल छलीह।

"अम्मी..."। हम उद्यत भऽ कहलहुँ।

"हमर बेटा..."। ओ दोसर कातसँ बजलीह। "अहाँ आइ मस्जिद नहि गेलहुँ, नहि ने, हमर बाउ"? ओ फेरसँ कहलीह।

हमर हृदय डूमि रहल रहए। शब्द हमर संग छोड़ि रहल रहए। हमर कंठ सूखि रहल रहए। हम घुटनक अनुभव कएलहुँ। विचार ज्वारि जकाँ हमरा भीतर उठि रहल छल। हमरा लागल जे क्यो हमरा ठेलि कए सोखिं कए भूतमे लऽ जाऽ रहल अछि।

२

जुम्माक दिन मस्जिदसँ घुरलाक बाद हम सभटा घटनाक आवृत्ति अम्मी लग करैत छलहुँ। हम नमाजक एकटा छोट संस्करण हुनका लगमे करैत छलहुँ। हमरा प्रार्थना पढ़ैत देखि ओ हमरा आलिंगन मे लऽ चुम्मा लैत छलीह, "अल्ला हरदम अहाँक रक्षा करताह, हमर बाउ..."। ओ हमरा आशीर्वाद दैत रहथि। तखन हम निर्णय कएलहुँ जे जऔँ हमरा कोनो ज्ञानप्राण अछि तँ हमरा कोनो नमाज नहि छोड़बाक चाही। सभ जुम्माकेँ ओ नमाजक महत्वपर बाजथि आ मस्जिद जएबापर जोड़ देथि। आन चीजक अतिरिक्त ओ एहि गपक विषयमे बाजथि जे कुरान अही दिन बनाओल गेल रहए, कि मनुक्ख अपन कर्मक लेल अही दिन उत्तर दैत अछि आ जे विश्व जीवन रहित जे कहियो होएत तँ सेहो अही दिन होएत।

हमर माथ, छोट रहितो, ई गप बुझि गेल जे जुम्मा किएक मुसलमान लेल पवित्र अछि।

सभ बच्चा जुम्मा दिन साँझ धरि स्कूलमे रहैत छलाह, मात्र हम दुपहरियाक बादे स्कूल छोड़ि दैत छलहुँ, मस्जिद जएबाक बहन्ने झोरा झुलबैत घर घुरैत छलहुँ। हमर अम्मी शिक्षकसँ परामर्श कए केने छलीह।

दोसर छात्र सभ हमरा एतेक शीघ्र घर जाइत देखि ईर्ष्या करैत छलाह। ओ हमरा भाग्यशाली बुझैत छलाह आ अपनो मुस्लिम होएबाक मनोरथ करैत छलाह।

हुनकर ईर्ष्यालु मुख देखि हम भीतरे-भीतर हँसैत रही। हम खुशी-खुशी घर घुरैत रही जेना हाथीक सवारी कएने होइ।

हमर अम्मी ओहि महत्वपूर्ण उपस्थितिक लेल हमरा तैयार करैत रहथि-गरम पानिसँ नहबैत रहथि, हमर आँखिमे काजर लगबैत रहथि, हमर केशक लटकँ टोपीक नीचाँ समेटि कए राखथि। हम सभ दिन तँ हाफ पैंटमे रहैत छलहुँ मुदा ओहि दिन उजरा कुरता पैजामामे चमकैत छलहुँ।

दोसर स्त्रीगण हमरा देखि अपन हाथ हमर मुखक चारू दिस जोरसँ घुमाबथि आ कोनो दुष्टात्माकेँ भगाबथि आ कहथि, "जखन जुम्मा अबैत अछि अहाँ जुम्माक सभटा चक लए अबिते ने छी"!!

अहाँ जुम्माक साँझमे ई खुशी सभ घरमे देखि सकैत छी, दरगाह केर फ्रेम कएल चित्रक सोझाँमे जड़ैत लैम्प, अगरबतीक सुगन्धी वायुमे हेलैत; अपन माथ झँपने स्त्रीगण घरक भीतर-बाहर होइत; आ नारिकेलक दाम दोकानक खिड़कीपर बढ़ैत। दरगाह केर फ्रेम कएल चित्र पर नारिकेल चढ़ेबाक विधक वर्णन एतए अहाँ नहि छोड़ि सकैत छियैक।

किएक तँ हमर अब्बाकेँ अर्पण विधक ज्ञान नहि छलन्हि से ओ हजरतकेँ छओटका रस्तासँ घर अनैत रहथि। हमर अम्मी ई सिखबाक लेल हुनकर पछोर धेने अबैत रहथि।

"अहाँकेँ ई अन्तरो नहि बुझल अछि कलमा..आकि गुसुल...हमरा अहाँसँ निकाह करेबाक लेल अपन अम्मी-अब्बाकेँ दोषी बनाबए पड़त...कियो अहाँसँ नीक हुनका सभकेँ नहि भेटलन्हि, अहाँसँ हमर बियाह (निकाह) करेलथि। आब बच्चो सभ अहींक रस्ता पकड़लथि ..." ओ हुनकासँ एहि तरहेँ विवादपर उतरि जाथि।

"अहाँ ..घरक...ई उत्पीड़न हमरा लेल असह्य भऽ गेल अछि.."। पजरैत, ओ मस्जिद जाइत रहथि लाल-पीयर होइत हजरतकेँ घर अनबा लए।

हजरत नारिकेलक अर्पण विध पूरा करबाक बाद अपन मुँह आ पएर धोकए आ अपन दाढ़ीमे ककबा फेरि बाहरमे खाटपर बैसैत रहथि। एहि बीच हमर अम्मी फोड़ल नारिकेलक गुद्दा निकालि ओकर कैक भाग कए ओहिमे चिन्नी मिलाबथि। ओ तखन एहि मिश्रणकेँ बाहर हातामे जमा भेल सभ गोटेमे बाँटथि। ओ अन्तमे हमरा लेल राखल दू-तीन टा टुकड़ी लेने हमरा लग आबथि।

हम शिकाइत करियन्हि, " इएह हमरा लेल बचल अछि? "हमरा सभकेँ अल्लाकेँ अर्पित कएल वस्तु नहि खएबाक चाही, हमर बेटा..हम दोसरामे एकरा बाँटी तैयो जऔँ हमरा सभ लेल किछु नहि बचए"। ओ हमरा शान्त करथि।

हुनकर मीठ बोल हमरा मोनसँ नारिकेलक पर्याप्त हिस्सा नहि भेटबाक निराशाकेँ खतम कए दैत छल। बादमे हमर पिता आ हजरत साँझमे अबेर धरि बैसि गप करैत रहथि। अपन वस्त्र बदलि सामान्य वस्त्रमे हम, अपना संगी सभक संग पड़ोसक एकटा निर्माण स्थलपर बालूक ढेरपर खेलाय लेल चलि जाइत रही।

ई सभ सोचि हमर आँखिमे नोरक इनार बनि गेल...

"हमर पुत्र, अहाँ किएक नहि बाजि रहल छी? की भेल? हम डरक अनुभव कऽ रहल छी...बाजू..." हमर अम्मी पुछैत रहलीह। ओना तँ हैदराबाद एनाइ तीन बरख भऽ गेल मुदा एको दिन हम नमाज नहि पढ़लहुँ। असमयक पारीमे काज करबा अनन्तर हम ईहो बिसरि

गेलहुँ जे नमाज पढ़नाइ की छियैक। "अम्मी.." हम उत्तर लेल शब्द तकैत बजलहुँ। "अम्मी, हम कहिया हैदराबादमे नमाज पढ़बाक लेल मस्जिद जाइत छी जे अहाँ एतेक चिन्तित भऽ रहल छी"? हम पुछलहुँ।

हम मोन पाड़लहुँ ओहि दिनकेँ जखन ओ हैदराबाद आएल रहथि कारण हम कहैत रहियन्हि जे हम हुनका हैदराबाद नगर देखेबन्हि। मुदा हैदराबाद आबि अपन विरोध देखबैत ओ बजलथि, "हम कतहु जाए नहि चाहैत छी...हमरापर किएक पाइ खर्च कऽ रहल छी"? हम हुनकर मोनक गप बुझैत रही। ओ हमरापर बोझ नहि बनए चाहथि, मुदा हम हुनकर विरोधपर ध्यान नहि देलहुँ। हमर जोर देलापर ओ एक बेर अएलीह। हम हुनकर हाथ पकड़ि रस्ता पार करबामे मदति करियन्हि। एक बेर खैरताबादक लग सड़क पार करबा काल हुनकर आँखि नोरसँ आर्द्र भऽ गेलन्हि।

"अहाँ कतए जन्म लेलहुँ...कतए अहाँ बढ़लहुँ...अहाँ कतेक टा भऽ गेलहुँ? अहाँ एहि पैघ नगरमे कोना रहैत छी? अहाँ बहुत पैघ भऽ गेलहुँ... ओ बड़ाई करैत कानए लगलीह।

अहाँ जखन बच्चा रही तखन हम अहाँकेँ नानीगाम बससँ लऽ गेल रही। हम अहाँक हाथ कसि कऽ पकड़ने रही कि अहाँ कतहु हेराऽ ने जाइ। आब अहाँ एतेक पैघ भऽ गेलहुँ जे हमर हाथ पकड़ि बसपर चढ़बामे मदति करी"। ई कहैत ओ नोरक द्वारे ठहरि गेलीह। ओ खखसलीह, "खुस...खुस..." परिश्रमसँ अपन श्वास वापस अनलन्हि।

ओ जखन भूतकेँ मोन पाड़ि रहल छलीह हम हुनका सान्त्वना देलियन्हि आ हुनकर नोर पोछलियन्हि।

"अम्मी...हम एतए जीबाक इच्छासँ अएलहुँ। हम साहस केलहुँ आ कतेक रास कठिन क्षणकेँ सहन कएलहुँ। जखन दुखित रही, हम अपनेसँ दबाइ लए ले जाइ आ संगमे तखनो प्रयत्न करी।, ई सभ अम्मी...ई सभ अहाँक आशीर्वादसँ भेल, आकि नहि? एहि नगरमे अपना कहि कऽ संबोधित करए बला हमर क्यो नहि अछि, तखनो हम एतए बिना असगर रहबाक अनुभूतिक रहैत छी"। अपन आँखिक नोर पोछि कऽ ओ हमरा आशीर्वाद दैत कहलन्हि, "दीर्घायु रहू हमर पुत्र"।

समस्याक आरम्भ तकर बाद भेल।

"सभ जुम्मा..जुम्मा...अहाँ नमाज पढ़ए छी हमर बाउ"? ओ पुछलन्हि।

"नहि माँ। कहू ने, कखन हमरा पलखति भेटैत अछि"?

"अहाँकेँ कहियो समय नहि भेटत, मुदा अहाँकेँ करए पड़त, एकरा छोड़बाक कोनो गुन्जाइश नहि अछि। मुस्लिमक रूपमे जन्म लेबाक कारण अहाँकेँ, कमसँ कम सप्ताहमे एक दिन समय निकालए पड़त", ओ कहलन्हि।

आगाँ कहलन्हि, "धनिक आ गरीब नमाजक काल संग अबैत अछि। ओ सभ कान्हमे कान्ह मिलाए नमाज पढ़ैत छथि। ओहि दिन ई बेशी गुणक संग अबैत अछि। एक बेर हरेलापर अहाँ ओ आशीष कहि घुरा नहि सकैत छी। ताहि द्वारे धनिक आ एहनो जो लाखमे रुपैयाक लेनदेन करैत छथि, अपन व्यवसायकेँ एक कात राखि नमाज पढ़ैत छथि। दोकानदार सभ सेहो अपन व्यवसाय बन्न कऽ दैत छथि बिना ई सोचने जे कतेक घाटा हुनका एहिसँ हेतन्हि। संगहि ओ गरीब सभ जे प्रतिदिनक खेनाइक जोगार नहि कऽ पबैत छथि, सेहो नमाज पढ़ैत छथि"।

हमरा डर छल जे हमर माँ ओएह पुरान खिस्सा फेरसँ तँ नहि शुरू कऽ देतीह। विषय बदलि कऽ हम कहलियन्हि, "की अहाँकेँ बुझल अछि जे एतए निजाम नवाब द्वारा निर्मित एकटा पैघ मक्का मस्जिद अछि..."?

"एहन अछि की? हमरा अहाँ ओतए नहि लऽ चलब"? ओ उत्साहसँ बजलीह।

"जखन अहाँ ओतए पहुँचब तँ हमरा नमाज पढ़बा ले अहाँ नहि ने कहब"। हम विनयपूर्वक प्रार्थना कएलियन्हि।

"हमर बाउ...अहाँ ई की कहैत छी...हम अहाँकेँ ई सुझाव अहाँक अपन भलाइ लेल दैत छी"।

"ठीक छैक..चलू चली"! हम सभ ओतएसँ बस द्वारा सोझे मस्जिद गेलहुँ। ओ चारमीनार दिस देखलन्हि जे मस्जिदक मीनारसँ बेशी पैघ रहए।

"अम्मी ओ छी चारमीनार। हम पहिने ओतए चली..आकि मस्जिद"? हम पुछलियन्हि।

"ओतए चारमीनारमे की अछि हमर बाउ"?

"ओतए किछु नहि अछि...कोनो दिशामे देखू एके रंग लागत। मुदा अहाँ ऊपर चढ़ि सकैत छी। ओतएसँ अहाँ मक्का मस्जिद स्पष्ट रूपमे देखि सकैत छी...आब देरी भऽ गेल अछि। हम चारमीनार बादमे देखि सकैत छी...अखन तँ हमरा सभ मस्जिद देखी"। ओ स्वीकृति देलन्हि।

मस्जिदक भीतरमे शान्ति रहए। शान्तिक साम्राज्य छल। ई शीतल, सुखकारी आ विस्तृत रहए। आगन्तुकक आबाजाही बेशी रहए। अम्मी भीतर जएबामे संकोच कऽ रहल छलीह कारण स्त्रीगण सामान्यतः मस्जिदमे नहि प्रवेश करैत छथि। मुदा ओ किछु बुरकाधारी स्त्रीगणकेँ ओतए देखि ओम्हर बढ़ि गेलीह।

अपन साड़ी (नूआ) ओरकेँ माथपर लैत ओ बजलीह, "हमहूँ अपन बुरका आनि लैतहुँ नें"? घरसँ चलैत काल ओ एहि लेल कहने रहथि मुदा ई हम रही जे हुनका एकरा पहिरएसँ रोकने रही। अपन काजपर हुनका लेल एकरा छोड़नाइ सम्भव नहि छलन्हि मुदा हम एहि नव स्थानपर हुनका एहि झंझटसँ मुक्ति देमए चाहैत रही। मुदा अपन सम्प्रदायक स्त्रीगण बीचमे बिना बुरका पहिरने ओ अपनाकेँ बिना चामक अनुभव कऽ रहल छलीह। जखन हम हुनका स्तंभित आ थरथराइत चलैत देखलियन्हि तखन हम हुनका बुरका नहि पहिरए देबाक लेल लज्जित अनुभव कएलहुँ। तैयो अपन रक्षा करैत हम कहलियन्हि, "हम कोना ई बुझितहुँ अम्मी जे हमर सभकेँ मस्जिद घुमबाक ब्योँत लागत"।

ओ किछु नहि बजलीह।

"एहिसँ कोनो अन्तर नहि पड़ैत अछि...आऊ"। हम बादमे ई कहि हुनका भीतर लऽ गेलहुँ। ओ हमर संग अएलीह। हम सभ अपन चप्पल कातमे रखलहुँ जाहिसँ बादमे ओकरा लेबामे आसानी होअए। कतेक गोटे मस्जिदक सीढ़ीयेपर आलती-पालथी मारि कए बैसल रहथि। परबाक संग खेलाइत किछु गोटे ओकरा दाना खुआ रहल रहथि। किछु परबा उड़ि गेल आ किछु आन घुरि कए उतरल। किचु परबा पानिक चभच्चाक कातमे बैसि कऽ एम्हर-ओम्हर ताकि रहल रहए, एकटा आह्लादकारी दृश्य। अम्मी हुनकाँ आश्चर्यित भऽ देखलन्हि। बादमे ओ हमर पाछाँ अएलीह जखन हम सीढ़ीक ऊपर प्लेटफॉर्मपर पहुँचलहुँ।

प्लेटफॉर्मकेँ चारू दिस देखैत ओ चिकरि कए बजलीह, "हमर बाउ, एक बेरमे कतेक गोटे एतए बैसि कऽ नमाज पढ़ि सकैत छथि"?

"हमरा नहि बुझल अछि अम्मी...कैक हजार हमरा लागए-ए। रमजानक दिनमे लोक चारमीनार धरि बैसि कऽ नमाज पढ़ैत छथि"। हम उत्तर देलियन्हि। "हँ, ई टी.वी. मे देखबैत अछि" अम्मी प्रत्युत्तर देलन्हि। ओ एकरा नीकसँ चीन्हि गेल रहथि, हम अपनामे सोचलहुँ। चारू कात देखाऽ कऽ अन्तिममे हम हुनका मस्जिदक पाछाँ लऽ गेलहुँ। पथारक फलक चिड़ैक मलसँ मैल भेल रहए। परबा सभ देबालक छिद्रमे खोप बनेने रहए।

ओ मीनारक देबालकेँ छूबि आ आँखिसँ श्रद्धापूर्वक सटा कऽ अति प्रसन्न भऽ गेलीह।

"एतए नमाज पढ़ब पवित्र गप अछि, हमर बाउ", ओ कहलन्हि। हमराएहि बेर कोनो अति सम्वेदना नहि भेल।

"हँ। ठीके, हम एतए कमसँ कम एक बेर नमाज अवश्य पढ़ब"। हम अपनाकेँ कहलहुँ।

हम जतए रहैत छी मक्का मस्जिद ओतएसँ बड़ड दूर अछि। जुम्मा आ छुट्टीक दिन बससँ एतए अएनाइ बड़ड दुर्गम अछि। तैयो, अगिला बेर हम एतहि नमाज पढ़बाक प्रण कएलहुँ।

"हम अगिला सप्ताह् एतए आबि नमाज पढ़ब अम्मी", हम कहलियन्हि। ओ प्रफुल्लित अनुभव कएलन्हि आ हमरा दिस आवेशसँ देखलन्हि।

"एहि सभ ठाम नमाज पढ़बामे अपनाकेँ धन्य बुझबाक चाही", ओ कहलन्हि।

"अहाँक अब्बा ओतेक दूर रहैत छथि, ओ की नमाज पढ़बाक लेल एतए आबि सकैत छथि? अहाँ अही नगरमे छी..एतए नमाज पढ़ू", ओ कहलन्हि। "नहि मात्र एतए, जतए कतहु पुरान मस्जिद होए ततए नमाज पढ़ू। कतेक प्रसिद्ध लोक एतए नमाज पढ़ने होएताह। एहि सभ ठाम नमाज पढ़लाक बाद कोनो घुरए केर गप नहि अबैछ। अल्ला अहाँकेँ निकेना रखताह"।

हम मस्जिदमे एना ठाढ़ रही जेना जादूक असरि होए। हम हुनकर गप सुनलहुँ, कान पाथि कऽ। बादमे, बाहर निकललाक बाद हम सभ किछु बिसरि गेलहुँ। अपन मस्जिद जएबाक प्रतिज्ञाकेँ सेहो हम कात राखि देलहुँ। ओही संध्यामे हम अम्मीकेँ बस-स्टैण्डपर छोड़लहुँ। तकर बादा दू टा जुम्मा बीतल, मुदा से एना बीतल जेना ओ कोनो जुम्मा नहि छल। आब बम विस्फोटक एहि समाचारक बाद हम जुम्मासँ भयभीत छी।

"अम्मी...अहाँकेँ ईहो बुझल अछि जे कोन मस्जिदमे बम फूटल छल"? हम फोनपर पुछलियन्हि।

"कोनमे हमर बाउ"? ओ उत्सुक भऽ पुछलन्हि।

"अहाँ एक बेर हैदराबाद आएल रही, मोन पाडू? हम नञि अहाँकेँ एकटा मस्जिदमे लऽ गेल रही...मक्का मस्जिद...पैघ सन? ओतहि, ओही मस्जिदमे...खुनाहनि ओही मस्जिदमे अम्मी...खसैत लहाश.. अहाँ कहने रही जे कियो जे ओतए नमाज पढ़त, धन्य होएत...ओही मस्जिदमे अम्मी"। हम कहलियन्हि। "छोट बच्चा सभ...ओकर सभक देह खोनमे लेपटाएल...खून सँ भीजल परबा सभ सेहो मरल..."।

नोर अनियन्त्रित दुखमे बहए लागल। हम बाथरूम लग नोर पोछबाक लेल गेलहुँ। हुनक हृदय हमर काननि देखि फाटए लगलन्हि। ओ सेहो कानए लगलीह। हम आगाँ कहलहुँ, "अम्मी, नहि कानू...अब्बाकेँ होएतन्हि जे हमरा किछु भऽ गेल अछि...हुनका कहियन्हि जे हम नीकेना छी"।

कनैत ओ हमरा पुछलन्हि, "फोन नहि राखब हमर बाउ"।

"जल्दी अम्मी, कहू"।

"अहाँ चलि आउ...गाम चलि आउ...हमर गप सुनू"।

"हमरा किछु नहि भेल अछि अम्मी"।

"बाहर नहि जाएब..हमर बाउ"।

"ठीक छैक अम्मी"।

"ओहि मस्जिदमे नहि जाएब, हमर बाउ"।

हमर हृदय फटबा लेल फेर तैयार अछि। हम हुनका ई आश्वासन दैत जे ओहि मस्जिदक लगो कोनोठाम हम नहि जाएब, फोन रखलहुँ।

मुदा विचारक आगम बढ़ैत रहल। कतेक विभिन्नता! कतेक परिवर्तन काल्हिसँ! ई हमर अम्मी छथि जे एना बाजि रहल छथि? ई ओ छथि जे हमरा ई बाजि रहल छथि जे मस्जिदक लगो कोनोठाम नहि जाऊ? अल्ला कोनो आन भऽ गेल छथि अपन बच्चाक प्रेमक आगाँ? अपन खूनक आगाँ अल्ला अस्वादु भऽ गेलथि? नमाज विरोधक योग्य भऽ गेल? अल्ला माफी दिअ! क्षमा करू! आन जुम्माकेँ कोनो खुनाहनि नहि हो..औज बिल्लाही..मिनाशैतान...निर्राजीम.. बिस्मिल्लाह इर्रहमा निर्रहीम...!

(ओहि सभ अम्मीजानकेँ समर्पित जिनका मक्का मस्जिदक बाद अपनाकेँ हमर अम्मी जकाँ परिवर्तित होमए पड़लन्हि...लेखक)



सुशांत झा

ग्राम+पत्रालय-खोजपुर

सम्प्रति सुशांत जी इंडिया न्यूजमे कॉपी राईटर छथि,-मिथिला विश्वविद्यालयसँ स्नातक (इतिहास), तकर बाद आईआईएमसी (भारतीय जनसंचार संस्थान) जेएनयू कैम्पससँ टेलिविजन पत्रकारितामे डिप्लोमा (2004-05) ओकरबाद किछु पत्र-पत्रिका आ न्यूज वेबसाईटमे काज, दूरदर्शनमे लगभग साल भरि काज। इंडिया न्यूज फेर प्रेसब्रिफ डॉट इन मे चाकरी।–सम्पादक

की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?

हमर गाम खोजपुरसँ करीब एक किलोमीटर दक्षिण दिस बलिराजपुर नामक एकटा गाम छैक। ई गाम मुधुबनी जिला मुख्यालयसँ करीब 34 किलोमीटर उत्तर-पूब दिसामे छैक। एतय एक टा प्राचीन किला छैक जे 365 बिगहामे पसरल छैक आ एकर देखभाल भारत सरकारक पुरातत्व विभाग क रहल अछि। किलाक खुदाई भेलापर एहिमे सँ मृदभांड आ विभिन्न तरहक बस्तु निकलल आ सोनाक सिक्का सेहो भेटलैक। किलाक बाहर जे बोर्ड लागल छैक ताहि के मुताबिक ई किला मौर्यकालीन हुअक चाही। किला के कात करोटमे जे गाम छैक ओहिमे भाँति-भाँतिक किंवदन्ति पसरल छैक, किलाक विषयमे। जतेक लोक, ततेक तरहक बात। किछु लोकक कथन छन्हि जे ई किला राक्षस राज बलिक राजधानी छलै -आ किछु गोटा तँ राजा बलिकेँ देखबाक सेहो दावा केलन्हि अछि। साँझ भेलाक बाद लोक सभ किला दिस जाइसँ बचए चाहैत छथि। भऽ सकैत अछि जे ई अफवाह सरकारी कर्मचारी लोकन्हि फैलेने हुएआए-कारण जे ओकरा सभकेँ ड्यूटी करएमे कनी आराम भऽ जाइत छैक। लोक सभ राजा बलिक डरे किछु चोरबऽ नञि चाहए छैक।

किला अद्भुत छैक। किलाक देबार भग्नावस्थामे रहितहु अपन यौवनक याद दिआ रहल अछि। किलाक देबार एतेक चाकर छैक जे ओदृपर तँ आसानी सँ एकटा रथ निकलिये जाइत हेतैक। देबारमे लागल ईंटा दू-दू फीट नमहर आ लगभग गोटेक फुट चाकर छैक। चीनक देबारसँ कम मोट नहि हेतैक ई अपन यौवन कालमे। किलामे एकटा पोखरि छैक, ककरो नहि बूझल छैक, जे कहिया खुनाऐ ई पोखरि। बूढ़-पुरानक कहब छन्हि जे ई पोखरि राक्षसक कोरल अछि। किछु लोकनिक तँ ई मत छन्हि जे एहिमे एकटा सुरंग सेहो छैक-जकर रस्ता कतओ आर निकलैत छैक। सुनैत छियैक जे घ्राज-परिवारक सदस्यकँ आपातकालमे बाहर निकालैक लेल एहन सुरंग बनायल जाइत छलैक। किलाक कात-करोटमे जे गाम छैक तकर नाम सेहो ऐतिहासिक। किलाक पूब दिस छैक फुलबरिया नामक गाम आ ओकर बगलमे सटल छैक गढ़ी गाम..जे आब अप्रभ्रंश भऽ कऽ गरही भऽ गेलैए। किलाक पच्छीम दिस छैक रमणी पट्टी नामक गाम आ ओहिसँ सटल छैक भुपट्टी। किलाक दक्षिणमे छैक बिक्रमशेर, जतय प्राचीन सूर्य मंदिरक अवशेष भेटलैए। ई बात ध्यान देबाक जोग जे सूर्य मंदिर देशमे बड़ड कम जगह छैक। बलिराज गढ़क खुदाई पहिल बेर 1976 मे भेलैक, जखन केन्द्रमे साइत डॉ0 कर्ण सिंह एहि बिभागक मंत्री छलाह। गढ़क उद्धारक लेल मधुबनीक पूर्व सांसद भोगेन्द्र झा आ कुदाल सेनाक अध्यक्ष सीताराम झाक बड़ड योगदान छन्हि। किछु इतिहासकार लोकनिक कहब छन्हि, जे ई किला बंगालक पालवंशीय राजा लोकनिक किला भ सकैत अछि वा फेर मौर्य सम्राटक उत्तरी सुरक्षा किला भऽ सकैत अछि। ओना किछु गोटेक कहब छन्हि जे एकर बड़ड संभावना- जे ई किला मिथिलाक प्राचीन राजधानी सेहो भऽ सकैत अछि।

एकर पाछू ओ ई तर्क दैत छथिन्ह, जे एखुनका जे जनकपुर अछि, ओ नव जगह अछि आ ओतुक्का मंदिर १८हम शताव्दीमे इंदौरक महाराणी दुर्गावतीक द्वारा बनबाएल गेल अछि। विद्वान लोकनि जनकपुरक ऐतिहासिकताक संदिग्ध मानैत छथि। हमरा एहि संबंधमे एकटा घटना मोन पड़ि रहल अछि। १० साल पहिने पटनामे वैशालीक एकटा सज्जन हमरा भेटलाह आ कहलन्हि जे बलिराज गढ़ वास्तबमे मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि। हुनकर कहब छलन्हि जे ह्वेनसांगक एकटा विवरणक मुताबिक पाटलिपुत्रँस एकटा खास दूरी पर वैशाली अछि, वैशालीसँ एतेक दूरीपर काठमांडू (काष्ठमंडप) अछि आ काठमांडूक दच्छिन आ पूब दिशामे मिथिलाक प्राचीन राजधानी छैक। एखुनका जनकपुर ओहि मापदंडपर सही नञि उतरि रहल अछि। पता नञि एहि बातमे कतेक सत्यता छैक। एकर अलावा, रामायणमे सेहो मिथिलाक प्राचीन राजधानीक संदर्भमे किछु संकेत छैक। रामायणक संकेत सेहो बलिराजपुरकेँ मिथिलाक राजधानी होएबाक संकेत कय रहल अछि।

सांसद भोगेन्द्र झाक मुताबिक, राजा बलिक राजधानी महाबलीपुरम भर सकैत अछि, जे दच्छिन भारतमे छैक। सभसँ पैघ बात ई जे पूरा मिथिलामे बलिराजपुरसँ पुरान कोनो किला नहि अछि, जे मिथिलाक प्राचीन राजधानी होएबाक दावा कय सकए। किलाक भीतर उबड़-खाबड़ मैदान छैक, जे राजमहलक जमीनक भीतर धँसि जएबाक प्रमाण अछि। एतय एकाध जगह खुदाई भेलैए आ ओहीमे काफी कीमती धातु आ समान भेटलैक अछि। अगर एकर ढ़ंगसँ खुदाई कएल जाय तँ नञि जानि कतेक रहस्य परसँ आवरण उठि जायत। एखन धरि सरकारक तरफसँ कोनो ठोस प्रयास नहि भऽ पाओल अछि, जञिसँ बलिराज गढ़क प्राचीनताकँ दुनियाक सोझाँ रखबाक कोसीस कएल जाय। बस एकटा कामचलाऊ सड़कसँ एकरा बगलक गाम खोजपुरसँ जोड़ि देल गेलैक आ इतिश्री कय देल गेलैक।

यदि बलिराज गढ़क खुदाई ढ़ंगसँ कएल जाय आ एतय एकटा नीक संग्रहालय बना देल जाय तँ बढ़िया काज होयत। मिथिलांचलक हृदयस्थलीमे रहबाक कारणेँ एतय मिथिला पेंटिंगक कोनो संस्थान वा आर्ट गैलरी सेहो खोलल जा सकैत अछि। एकटा नीक(चाकर आ चिक्कन हाईवे) क संग नीक विज्ञापन बलिराजगढ़क पर्यटक सभकँ निगाहमे आनि सकैत अछि। एहिसँ इलाकाक गरीबी दूर करबामे सेहो मदद भेटत। यदि एकरा बुद्धा सर्किट वा रामायण सर्किटक अंग बना लेल जाय तँ आर उत्तम।

मिथिला मंथन

१.

मिथिलांचल क्षेत्र बिहार मे सबसँ पिछड़ल मानल जाइत अछि, अगर प्रतिव्यक्ति आय, साक्षरता और प्रसवकाल मे जच्चा-बच्चा के मृत्यु के मापदंड बनायल जाय तोप्रँ मिथिलांचल देश के सबस गरीब आ पिछड़ल इलाका अछि। एकर किछु कारण त अहि इलाका के भौगोलिक बनावट अछि लेकिन ओहियो सँ पैघ कारण एहि इलाका मे कोनो नीक नेतृत्व के आगू नै एनाई अछि। आजादी लगभग 60 वर्ष बीत गेलाक बाद देश में जहि हिसाब स आर्थिक असमानता बढ़ि गेलैक अछि ओहि में बिहार आ खासकए मिथिला सामने एकटा बड्ड पैघ संकट छैक जे ई आआंर पाछू नै फेका जाय। उदाहरण के लेल ई आंकड़ा आंखि खोलि दै बला अछि जे एकटा गोआ मे रहय बला औसत आदमी के प्रतिव्यक्ति आमदमी एकटा औसत बिहारी सं सात गुना बेसी छैक आ एकटा पंजाबी के आमदनी पांच गुना बेसी छैक। बिहारो मे अगर क्षेत्रबार आंकड़ा निकालल जाय त बिहार के दक्षिणी(एखुनका गंगा पार मगध आ अंग) एवम पश्चिमी ईलाका बेसी सुखी अछि, आ ओकर जीवनशैली सेहो दू पाई नीक छैक। त एहन में सवाल ई जे फेर रस्ता की छैक। की मिथिलांचल के लोक एहिना दर-दर के ठोकर खाईके लेल दुनियां में बौआईत रहता अथवा हुनको एक दिनि विकास के दर्शन हेतन्हि।

मिथिलांचलक ई दुर्भाग्य छैक जे एकर एकटा पैघ हमरा हिसाब सँ आधा सँ बेसी इलाका बाढ़ि में डूबल रहैत छैक। बाढ़ि के समस्या निदान सिर्फ राज्य सरकार के मर्जी सँ नहि भ सकैत बल्कि अहि में केंद्रसरकार के सहयोग चाही। पिछला साठि साल मे बिहार क नेतागण अहिपर कोनो गंभीर ध्यान नहि देलन्हि जकर नतीजा अछि जे बाढ़ एखन तक काबू मे नहि आबि रहल अछि। पछिला कोसी के आपदा एकर पैघ उदाहरण अछि, आब नेतासब के आँखि कनी खुललन्हि अछि, लेकिन एखन सँ मेहनत केल जायत त अहि मे कमस कम 20 साल लागत।

बाढ़ि सिर्फ संपत्ति के नाश नहि करैत छैक, बल्कि आधारभूत ढ़ांचा जेना सड़क, रक्षेवे आ पुल के खत्म क दैत छैक। एहन हालत मे कोनो उद्योग के लगनाई सिर्फ दिन मे सपना देखैक बराबर अछि।

किछु गोटाके कहब छनि जे बिहार मे उद्योग धंधा कएल जाल बिछाकएकर विकास केल जा सकैछ। लेकिन जखन सड़क आ विजलिये नहि अछि त केना उद्योग आओत। दोसर बात ई जे पिछला अविकासक चक्रक फलस्वरुप आबादीक बोझ एतेक बढ़िगेल अछि जे पूरा इलाका मे कोनो खाली जमीन नहि अछि जतय पैघ उद्योग लगायल जा सकय। सिंगूर के उदाहरण सामने अछि। महाशक्तिशाली वाममोर्चा के सरकार के जखन बंगाल मे 1000 एकड़ जमीन नै ताकल भेलैक त एकर कल्पना व्यर्थ जे दरभंगा आ मधुबनी मे सरकार कोनो पैघ उद्योग के जमीन दै। दोसर बात इहो जे पूरा मिथिला के पट्टी मे, मुजफ्फरपुर सँ ल क कटिहार तक कोनो पैघ संस्था-चाहे ओ शैक्षणिक होई या औद्योगिक- नै छै जे एकमुश्त 3-4 हजार लोक के रोजगार द सकै। हमरा इलाका मे शहरीकरण के घनघोर अभाव अछि। जतेक शहर अछि ओ एकटा पैघ चौक या एकटा विकसित गाँव स बेसी नहि।एकटा ढंग के इंजिनियरिंग या मेडिकल कालेज नहि, एकटा यूनिवर्सिटी नहि। कालेज सब केहन जे 4 साल में डिग्री द रहल अछि। एक जमाना मे प्रसिद्ध दरभंगा मेडिकल कालेज मे टीचर के अभाव छैक आ कालेज जंग खा रहल अछि। हम सब एहन अकर्मण्य समाज छी जे कोसी पर एकटा पुल बनबैक मांग तक नै केलहुँ,हमर नेता हमरा ठेंगा देखबैत रहला। आब जा क रेलवे आ रोड पुल के बात भ रहल अछि।कुल मिलाकरइलाका मे सिर्फ 8-10 प्रतिशत लोक शहर में रहैत छथि, ई ओ लोक छथि जिनका सरकारी नौकरी छन्हि। ई शहर कोनो उद्योग के बल पर नहि विकसित भेल। बाकी आबादी-लगभग 40 प्रतिशत दिल्ली आ पंजाब मे अपन कीमती श्रम औने-पौने दाम मे बेच रहल अछि। मिथिला के श्रम पंजाब मे फ्लाईओवर आ शार्पिंग माल बनाब मे खर्च भ रहल अछि, कारण कि हमसब एहेन माहौल नहि बनौलिएकि जे ओ श्रम अपन घर मे नहर या सड़क बनब मे खर्च होअए।

तखन सवाल ई जे फेर उपाय की अछि। हमरा ओतय पैघ उद्योग नहि लागि सकैछ, रोड नहि अछि बाढ़ि के समस्या विकराल अछि, त हमसब की करी। लेकिन नहि, मिथिला के विकास एतेक पाछू भ गेलाक बाद एखनों कयल जा सकैछ। आ अहि विषय मे कय टा विचार छैक।

किछु गोटा के कहब छन्हि जे एखुनका बिहारक सरकार मगध आ भोजपुर के विकास पर बेसी ध्यान द रहल छैक। एकर वजह जे सत्ता मे

पैघ नेता ओही इलाका के छथि, लेकिन दोसर कारण इहो जे ओ इलाका बाढ़िग्रस्त नहि छैक। पैघ प्रोजेक्ट के लेल ओ इलाका उपयुक्त छैक। उदाहरणस्वरुप-एनटीपीसी, नालंदा यूनिवर्सिटी आ आयुध फैक्ट्री-ई तमाम चीज मगध मे अछि। दोसर बात ई जे नीक कनेक्टिविटी भेला के कारणे भविष्य मे जे कोनो निवेश बिहार मे हेतैक ओ सीधे एही इलाका मे जेतैक। कुलमिलाक आबै बला समय मे बिहार मे क्षेत्रीय असमानता बढ़य बला अछि। एहि हालत मे किछु गोटा अलग मिथिला राज्यक मांग क रहल छथि, आ हमरा जनैत संस्कृति स बेसी-अपन आर्थिक विकास के लेल ई मांग उचित अछि।

मिथिला विकास माडेल की हुअके चाही।मिथिला के जमीन दुनिया के सबस बेसी उपजाऊ जमीन अछि। हमसब पूरा भारत के सागसब्जी आ अनाज सप्लाई क सकैत छी। लेकिन ओ सब्जी दरभंगा सं दिल्ली कोना जायत। एहिलेल फोरलेन हाईवे आ रेलवे के रेफ्रजेरेटर डिब्बा चाही। दोसर गप्प हमर इलाका के एकटा पैघ रकम दोसर राज्य मे इंजिनियरिंग आ मेडिकल कालेज चल जाईत अछि। हमरा इलाका मे 50 टा इंजिनीयरिंग कालेज आ 10 टा मेडिकल कालेज चाही। ई कालेज भविष्य में विकास के रीढ़ साबित होयत। हमरा इलाका मे छोट-छोट उद्योग जेना साफ्टवेयर डेवलपमेंट या पार्टपुर्जा बनबै बला फैक्ट्री चाही जहि मे 100-200 आदमी के रोजगार भेटि जाय। लेकिन एहिलेल 24 घंटा विजली चाही। ई कतेक दुर्भाग्य के बात जे बगल के झारखंडक कोयला के उपयोग त पंजाब में बिजली बनबैक लेल भ जाय छैक लेकिन हमसब एकर कोनो उपयोग नहि क रहल छी। आई अगर हमरा अपन इलाका मे 24 घंटा बिजली भेटि जाय त पंजाब जाय बला मजदूर के संख्या में कम सं कम आधा कमी त पहिले साल भ जायत। भारत के दोसर राज्य सिर्फ आ सिर्फ अही इलाका के सस्ता श्रम के बले तरक्की क रहल अछि। हमसब ई जनितो किछु नहि क रहल छी, ई दुर्भाग्य के गप्प।

मिथिला मे पढ़ाई लिखाई के प्राचीन परंपरा रहलैक अछि लेकिन सुविधा के अभाव मे ई धारा हाल मे कमजोर भेल अछि। खासकए महिला शिक्षा के दशा-दिशा त आर खराब अछि। एकटा लड़की कतेको तेज कियेक ने रहेए ओ 10 सं बेसी नहि पढ़ि सकैत अछि कारण घरक क्षेत्र कालेज नहि छैक। हमरा अगर तरक्की करय के अछि त इलाका मे एकटा महिला यूनिवर्सिटी त अवश्ये हुअके चाही, संगहि सरकार के ईहो दायित्व छैक जे हरेक ब्लाक में कमस कम एकटा डिग्री कालेज के स्थापना होअए। देश के विकास मे अहि इलाका के संग कतेक भेदभाव कएल गेलैक आ हमर नेतागण कतेक निकम्मा छथि-एकर पैघ उदाहरण त ई जे इलाका मे एकहुटा केंद्रीय संस्थान नहि छैक। एकटा यूनिवर्सिटी नहि, एकटा कारखाना नहि। आब जा क कटिहार मे अलीगढ यूनिवर्सिटी, दरभंगा में आईआईटी आ बरौनी मे फेर सं खाद कारखाना के पुनर्जीवित करैक बात कयल जा रहल अछि। हमरा याद अछि जे साल 1996 तक दरभंगा तक मे बड़ी लाईन नहि छलैक। हमसब कुलमिलाकर, कोनो तरहक संपत्ति के निर्माण नहि करैत छी। हमसब अपन आमदनी दोसर राज्य भेज दै छियैक-बेटा के बंगलोर मे इंजिनीयरिंग करबै सँ ल क दियासलाई तक खरीदै मे। हमर पूंजी अपन राज्य, अपन इलाका के विकास में नहि लागि रहल अछि। एहि स्थिति के जाबत काल तक नहि बदलल जायत हम किछु नहि क सकैत छी।

२.

प्रवीण आई अमेरिका चलि गेल। ओकरा एल एंड टी के प्रोजेक्ट पर शिकागो पठा देल गेलै। लेकिन ओकरा संग पढ़ैवाली पूनम के भाग्य ओहन नहि छलैक। ओ दू बच्चा के मां बनि अपन स्वामी के सेवा में अपन जिंदगी बिता रहल अछि। बितला समय याद करैत छी त लगैत अछि जे पूनम के संग बड़ड अन्याय भेलैक। बात सन् 95 के हतैक, हमर बोर्ड के रिजल्ट आबि गेल छल। ओहि समय पूनम आ प्रवीण छट्ठा भे पढैत छल। जाहि स्कूल में पढ़ैत छल ओहि में चारि टा मास्टर छलैक जे बेसीकाल खेतिए बारी भे लागल रहैत छलैक।

पूनम क्लास में फर्स्ट अबैत छल आ प्रवीण सेकेंड...लेकिन छट्ठा के बाद प्रवीण के बाबू जी ओकरा ल क कटक चलि गेलखिन्ह जतय ओ एकटा दुकान में काज करैत छलखिन्ह। पूनम कँ घरक हालत अपेक्षाकृत ठीक छलैक, ओकर बाबूजी सरकारी सेवा में छलखिन्ह, लेकिन पूनम दसवीं से आगू नहि पढि सकल। ओकरा इंटर में मधुबनी के झुमकलाल महिला कालेज में नामो लिखा देल गेलैक लेकिन बाद में ओ आगू नै पढ़ि सकल। लेकिन प्रवीण राउरकेला सं इंजीनरिंग केलाक बाद एल एंड टी में प्लेस्ड भ गेल आ कंपनी ओकरा शिकागो पठा देलकै।

एक दिन हमर दीदी पूनम के पूछवो केलकैक जे ओ कियेक ने बीए में नाम लिखेलक, त पनमक जवाब छलैक जे ओकर मां-पप्पा के बीच ओकर पढ़ाई के ल क नित दिन घोंघाउज होइक। ओकर बेसी पढ़नाई पूनम के विवाह में बाधा बनि रहल छलैक। तीन बहिन में सबस पैघ पूनम के दहेज एकटा बड़ड पैघ समस्या छलैक। दू साल के बाद पूनमक विवाह भ गैलैक आ जे पूनम क्लास भे फर्स्ट अबैत छल ओ जीवन के दौड़ भे सदा के लेल सेकेंड भ गेल। पूनम के तमाम टैलेंट आब सिलाई-कढ़ाई आ स्वेटर के नब डिजाइन सीख में खप मे लगलैक।

आई हमरा गाम में प्रवीण के टैलेंट के धूम मचल छैक। मिथिला के तमाम दहेजदाता ओकर दरवाजा पर आबि चुकल छथि, लेकिन सवाल ई जे कि पूनम के आगू नै पढ़ि पबै में कि सिर्फ दहेज टा एकटा कारण छलैक या किछू आउर...? मानि लिय जे दहेज नहियों रहितैक त की पूनम के अपन घर लग नीक कालेज भेटि जयतैक ? हम सोचैत छी जे यदि पूनम के जन्म कर्नाटक या केरल में भेल रहितैक त भ सकैछ ओ इंजिनीयर बनि जाईत आ एल एंड टी ओकरो शिकागो भेजि दैतैक। लेकिन ई सवाल एखनो नीतीश कुमार अथवा अर्जुन सिंह के एजेंडा में नहि छन्हि। नै जानि कतेको लाख पूनम

आई चिचिया-चिचिया क ई सवाल अहि व्यवस्था सं पूछि रहल अछि।

हमर ई पोस्ट हिंदी के हमर ब्लाग आम्रपाली(amrapaali.blogspot.com)... ओहि पर एकटा टिप्पणी अछि जे सब साधन सबके नहि देल जा सकैत छैक, आगू बढ़य बला के खुदे के जिजीविषा हुअके चाही। लेकिन हमर कथन ई अछि जे प्रवीण के संग कोनो जीजिविषा नहि छलैक-ई पुरुष प्रधान समाज के एकटा दुखद अध्याय छैक जे हजारो प्रवीण के त कोटा स ल क बंगलोर तक डोनेशन पर भेज देल जाइत छैक लेकिन लाखों पूनम एखनों आशाके बाट जोहि रहल अछि। की ई सरकार के कर्तव्य नहि छैक जे ओ पूनम सब के उचित पढ़ाई के व्यवस्था करैक..?.

ई कतेक दुर्भाग्य केर बात अछि जे बिहार में एखन हाईस्कूल खोलै पर प्रतिबंध लागल छैक। एखन 5 किलोमीटर के दायरा में बिहार में एकटा हाईस्कूल छैक। कोनो लड़की के लेल ई कोना संभव छैक जे ओ पांच किलोमीटर पढ़य लेल हाईस्कूल जाय। आब बिहार सरकार हाईस्कूल में लड़की सबके साइकिल द रहल छैक लेकिन की सिर्फ हाईस्कूल तक के पढ़ाई उपयुक्त छैक..? दोसर बात ई जे बिहार सनहक राज्य में जतेक सामान्य ग्रेजुएशन के सीट नै छैक, कर्नाटक आ महाराष्ट्र में ओहि स बेसी इंजिनीयरिंग के सीट छैक।

एखन तक राज्य में एकोटा महिला विश्वविद्यालय आ तकनीकी विश्वविद्यालय नै छैक। हुअके तँ ई चाही छल जे बिहार में 20-25 साल पहिनहि हर जिला- आ ब्लाक में एकटा कॉलेज खोलि देबाक चाही छलैक। आब के जमाना त इंजिनीयरिंग आ एमबीए कॉलेज खोलक छैक। एहन हालत में ओहि खाई के के भरत जे बिहार आ दोसर राज्य के बीच में बनि गेलैक अछि। फेर ओएह सवाल सामने अछि- की अबैयो बला समय में पूनम इंजिनीयरिंग कालेज में जेती....?



श्यामल किशोर झा

लेखकीय नाम श्यामल सुमन, जन्म १०।०१।१९६० चैनपुर जिला सहरसा बिहार, स्नातक। शिक्षा:अर्थशास्त्र राजनीति शास्त्र एवं अंग्रेजी, विद्युत अभियंत्रणमे डिपलोमा, प्रशासनिक पदाधिकारी,टाटा स्टील, जमशेदपुर,स्थानीय समाचार पत्र सहित देशक अनेक पत्रिकामे समसामयिक आलेख, कविता, गीत, गजल, हास्य-व्यंग्य आदि प्रकाशित, स्थानीय टी वी चैनल एवं रेडियो स्टेशनमे गीत गजल प्रसारण, कैकटा कवि सम्मेलनमे सहभागिता ओ मंच संचालन।–**सम्पादक**

प्यास

हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!
भूख लागल अछि एखनहुँ, उमरि बीत गेल!!
हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!
नौकरी की भेटल, अपनापन छूटल!
नेह डूबल वचन केर आश टूटल!!
दोस्त यार कतऽ गेल, नव-लोक अपन भेल!
गाम केर हम बुधियार, एतऽ बलेल!!
हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!
आयल पावनि-त्योहार, गाम जाय केर विचार!
घर मे चर्चा केलहुँ तऽ, भेटल फटकार!!
नहि नीक कुनु रेल, रहय लोक ठेलम ठेल!
कनियाँ कहली जाऊ असगर, आ बन्द करू खेल!!
हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!
की कहू मन के बात, छी पड़ल काते कात!
लागय छाती पर आबि कियो राखि देलक लात!!
घर लागय अछि जेल, मुदा करब नहि फेल!
नवका रस्ता निकालत, सुमन ढ़हलेल!!
हमर गाम छूटि गेल, पेट भरवाक लेल!



श्याम सुन्दर शशि

जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ, एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रवासक अरब ब्यूरोमे कार्यरत। सम्पादक

मरदे कि बरदे

भगवान भाष्करक प्रचण्ड प्रतापकेँ सम्हारि सकब धरती मैआक वास्ते कठिन भऽ रहल छलनि। मैया अपरतीव छलीह। चण्डलवाक प्रलयंकारी रौद्र अवतारसँ अपने बाचथु कि अपन सखा सन्तानकेँ बचाबथु? ''अपन मथा साहुर, साहुर'' करबाक अवस्था सेहो नहि छल। मिथिलाक धरती थोरै छैक जे यत्र तत्र सर्वत्र हरियरी रहतै। लोक अपनो जुराएत आ लोकोकेँ जुरौतैक? ई कतार छै भाई। कतार। एत्त गाछ वृक्ष कत पावि? धनीमानीलोक ऐजुवा (वगैचा) लगबैत छथि। जेना लोक धीया पूताकेँ दूध पियाकऽ पोसैत अछि। तहिना पोसैत अछि एतुका सेखसभ गाछ-वृक्ष। ककरो मजाल छै जे ओहि गाछक नीचाँ सुस्ता लेत..। तुरन्त वन-विनाश कानूनक अन्तर्गत शख्त कार्यवाही भऽ जएतैक। आ ओऽ गाछ वृक्ष होईतो नहि अछि सुस्तैवा योग्य। एक कविक कवित जकाँ ''वड़ा हुआ तो क्या हुआ लम्बे पेड़ खजुर। पंछीको छाया नही फल लागे अति दूर..'' डारँ मोरवाक योग्य छाहरि नहि। बूझि परैत छल, दोहाक समुद्र वाष्प भऽ कऽ उड़ि जाएत। सड़क उपरके अलकरा पघलि रहल छल। सरकार एहि गरमीक महिनामे दुपहरमे काज करबापर पाबन्दी लगौने छैक। तथापि देश विदेशक मजुरसभ अपन-अपन ओभर टाईम पका रहल छल। भगवान भाष्करसंगक महासमरमे लागल छल। धरती पुत्रलोकनि। धरती तँ आखिर धरती छैक ने। अपन जनम धरती हो कि करम धरती...।

एहि रौदसँ बेपरवाह लक्ष्मण पैघ-पैघ डेग मारैत आगाँ बढ़ि रहल छल। कोनो अभेद्य लक्ष्यकेँ भेदन करबाक योजनामे आगू बढ़ि रहल चोटाएल, हारल योद्धा जेकाँ। एहि बेरक समरमे विजयश्री प्राप्त करबाक दृढ़ सन्कल्पित छल ओऽ। ओकरा ठेकान नहि छलै जे ओकर समग्र देह घामे पसिने भिजी गेल छैक। ओऽ कारी झामर भऽ गेल अछि। ओऽ बस आगू बढ़ि रहल छल, अपन गंतव्य दिस। ओकर गन्तव्य छलै, दोहाक अतिव्यस्त इलाकामे अवस्थित नेपाली दूतावास। जतए ओकर प्रेयसी गत एक सप्ताहसँ शरणागत छैक। मुदा किछुए किलोमीटरक दूरीपर अवस्थित रहलाक बावजूदो ओऽ हुनकासँ भेटि नहि सकल अछि। ओऽ सीधा दूतावासमे प्रवेश कएकऽ मुदा तुरन्ते पाछाँ घुमि गेल। चार दिवालीक ओटमे ठाढ़ भऽ जिन्सपेन्टक पछिला जेबीसँ कंघी निकाललक। केस सीटलक। कपड़ा मिलौलक। आ कनेक सतर्क कदमसँ दूतावासक मेन गेटकेँ पार कएलक। दूतावास परिसरमे रहल नेबोक गाछक ओटमे बैसि ओकर प्रेयसी केस झारि रहल छलै। ओएह घुरमल-घुरमल केस। सुराही सन कमर आ सुडौल शरीर। पीठपर करिकवा तिलसँ ओऽ आओर निधोख भऽ गेल। ओऽ ओकरे रेशमा छैक। आगूसँ देखू कि पाछोसँ। ईस्स। ओकरा मोनमे टिस जेकाँ उठलै। मोन भेलै जे पाछेसँ जाऽ भरि पाजकेँ पकड़िली आ गत ९ महिनाक हिसाब-किताब माँगी। ओऽ आगू सेहो बढ़ल मुदा रेशमाक केश जखनसँ खुजल रहैक तखनेसँ दूतावासक चौकीदार सेहो ओकरे दिस ताकि रहल छलै। लक्ष्मणकेँ हिम्मति नहि भेलै अपने प्रेयसीक हाथ धरि पकड़बाक। जहन दुनूक आँखि मिललैक तँ दुनूक नयनसँ अनन्त अश्रुधारा बहि गेलै। एक दिस लक्ष्मण छल, दोसर दिस रेशमा आ बीचमे रहैक गाछ। जकरा साक्षी राखि दुनू ९ महिनाक हिसाब किताब फरियौलक। लक्ष्मण एतबे बाजल ''हम तँ बरद जेकाँ बहिए रहल छी, एहि मरुभूमिमे, अहाँ दुधपिया बौवाकेँ छोड़िकऽ किएक आबि गेलौ?''

कतारक मैथिल भेड़ा चरवाह-

कतारक सदरमुकाम दोहासँ लगभग एक सय किलोमीटर दूर जमालिया स्थित मरुभूमिक छातीपर बनाओल गेल भेड़ाक गोहियाक आगू ठाढ़ भऽ एक गोट युवक सिटी बजा रहल छल। महाभारतकालीन कृष्ण जकाँ। जनु अपन गोप आ गोपीकेँ लग बजेबाक उपक्रम कऽ रहल हो। मुदा एहि मरुभूमिमे ने गाई अएबाक कोनो सम्भावना छलै आ ने

गोपी। मुदा बकरी आ भेड़ा धरि अवश्य आबि गेल ओकर सिसकारी सुनिकए। दिनभरि ५० डिग्रीक ताप छोड़ि स्वयं थकित सुरुज भगवान संध्या रानीसँ रसकेलि करबाक धुनमे पश्चिमाचलगामी वाट पकड़ि लेने छलाह। पश्चिमसँ आवएवला सेनुताएल प्रकाश मरुभूमिक वालुपर पड़ि मलिछाह आकृति बना रहल छल। मरुभूमि पिलिया ग्रस्त रोगी जकाँ बेजान देखना जाऽ रहल छल। पछिया हवा सांय सांय कऽ रहल छल। हावाक गतिसंग वालुक छोट-छोट कण उड़ि-उड़ि राहगीरकेँ घायल बना रहल छल। बूझि पड़ैत छल जे प्रलयकेर पूर्व संकेत हो। चारुकात वियावान मरुभूमि आ एहिमे उगल एक आध बबूरक पौध। हम बेर-बेर सोचैत रहैत छी जे धन्य बबूर, ऊँट आ सार्कदेशक दुखिया मजुरसभ जे एहि भूमिकेँ धरती होएबाक ओहदा प्रदान करैत छैक। अन्यथा...??



मुदा ओऽ युवक शान्त छल। एक क्षणक बाद सुरुज अस्त भऽ जएतै, सगर सन्सार अन्हार भऽ जएतै आ सयौ विगहामे पसरल मरुभूमिपर कारी रंगक चादर ओछा जाएत। ओऽ अन्हार होएबासँ पहिनहि अपना अधकि भेड़ा आ बकरी गोहियामे घुसियावए चाहैत छल। कर्तव्य परायण मनुपुत्रक रूपमे अपन दायित्व निर्वाह करए चाहैत छल।

एहि तरहेँ अपन ईसारापर कृष्ण जकाँ भेड़ा-बकड़ीकेँ नचावएवला युवक के नाम छल महेन्द्र कापर। नेपालक सिरहा जिल्लाक कमलाकात भेड़िया गामक ई मैथिल युवक, विजुली, पिवाक पानि, सड़क आ स्वास्थ्यादि सुविधासँ विहीन एहि मरुभूमिमे गत एक वर्षसँ एहिना भेड़ा वकरी चड़वैत अछि। महेन्द्र कापर मात्र नहि, एहि मरुभूमिक विभिन्न भागमे बनाओल गेल विभिन्न भेड़ा, बकड़ी आ ऊट बथान तथा लगाओल गेल वगैचामे हजारौं नेपाली, भारतीय, वंगलादेशी, श्रीलंकन आ सुडियन मजुरसभ काज करैत अछि। अपना सभ दिस एक गोट कहबी नहि छैक जे, ''जएवह नेपाल, संगहि जएतह कपार''। तहिना ई युवक सभ अपन करम भोगि रहल अछि। ओऽ सभ अबैत काल जे दोहा देखने छल, चकमक विजुलीवत्ती देखने छल आ चिक्कन चुनमुन फोरलेन सड़क देखने छल से घुरैत काल फेर देखत। ओकरा सभक वास्ते दोहा सहर दिल्ली दूर छैक।



महेन्द्र जमालियाक एहि अन्कन्टार मरुभूमिमे गत एक वर्षसँ काज करैत अछि। ओकरा जिम्मामे दू सय भेड़ा आ बकड़ी छैक। हमरा सभकेँ देखिते ओकर आँखिमे विशेष प्रकारक चमक व्याप्त भऽ गेलै, मुखमण्डलपर खुशीक रेखा नाचए लगलैक। साँझ पड़ि रहल छैक ओकरा लालटेम नेसवाक छैक, रातुक खाना बनेवाक छैक आ खुला आकाशक नीचाँ तरेगन गनैत राति बितेवाक छैक। गत एक वर्षसँ महेन्द्रक ई दैनिकी बनि गेल छैक। ईजोरिया रातिक चानकेँ देखि ओऽ अतिशय प्रसन्न होइत अछि, ''ई चान हमरो बाऊ आ माय आउर सेहो देखैत होतै नञि''? ओकर निश्चल प्रश्न हमरा भावुक बना देने छल।

ओऽ भेड़ा आ बकरीकेँ गोहियामे गोतैत अछि। पठरूसभकेँ दूध पियबैत अछि। चारा रखैत अछि आ चैन भऽ हमरा सभसँ गप्प करवा वास्ते बैसि जाइत अछि। ओऽ एक वर्ष पूर्व कतार आएल छल। मानव तस्करसभ ओकरा कहने रहैक जे वगैचाक काज छैक। ओऽ सोचने रहय जे फलफूलमे पानि पटाएव, रोपव उखारव आ रियाल कमाएव मुदा से भेलै नहि। ओऽ भेड़ा चरवाह बनि कऽ रहि गेल। असलमे महेन्द्र अपने निरक्षर अछि। ओकर कतार आगमनके उद्देश्य छलै गाममे घर बनाएव आ बेटा-बेटीकेँ बोर्डिंग स्कूलमे पढ़ाएव। मुदा ओकर एक वर्षक श्रमसँ ई संभव नहि भऽ पाओल छैक। एक वर्षमे तँ महाजनकेँ ऋणो नहि फरिछाओल छैक। एहि वास्ते ओकरा आओर दू वर्ष एहि मरुभूमिक वालुकेँ फाकय परतैक। अवैत काल दलाल ओकरासँ ७५ हजार रुपैया लेने रहैक। जे ओऽ महाजनसँ ऋण लऽ कऽ चुकता कएने छल।

जहन महेन्द्रक गप्पक बखारी खुजलै तँ फेर बन्द होएवाक नामे नहि लैक। ओकरा तँ ओहि गोहियामे राति बितैवाक छलै मुदा हमरा सभकेँ सय किलोमीटर दूर दोहा अएवाक छल। हमरा सभक धरफड़ीकेँ ओऽ अकानि गेल छल। कहलक सर, कहियोकाल अवैत जाइत रहब। भेड़ा बकड़ी संगे रहैत-रहैत ओहने भऽ गेल छी, देखियौ चाहो पानिक लेल नहि पुछलहुँ। आ कपड़ा लपेटल एकगोट पानिक बोतल आगाँ बढ़ा देलक। ''हमरा सभक फ्रिज बुझू कि एयर कन्डीशन ईहे अछि''।



गर्मीसँ सुखाएल कण्डकेँ पानिसँ भिजाओल आ अपन गन्तव्य दिस आगाँ बढ़ि चललहुँ। लगभग दश किलोमीटर वाट तय कएलाक बाद हमरा लोकनि जमालिया नगरमे पहुँचलहुँ। मुसलमान धर्मावलम्बी सभक रोजा खोलवाक समय भऽ गेल रहै। सड़क कातमे बनाओल गेल चबुतरापर नाना प्रकारक व्यंजन साँठल जाऽ रहल छल। लोक विस्मील्लाह करवालेल तैयार छलाह। हमरा मोन पड़ल महेन्द्रके गोहियामे राखल खवुज (कतार सरकारक सस्ता दरक रोटी) आ प्याउजक धेसर। एसगर महेन्द्र एखन नून, मिरचाई आ तेल प्याउजक संग खवुज दकरि रहल हएत। एतए ओकरेद्वारा पोसल गेल खस्सीक विरयानीक स्वाद लऽ रहल अछि मालिक आउर।

दोहा, कतार, जमलिया।



श्रीधरम (1974-)

युवा कथाकार समालोचक, जन्म चनौरागंज, मधुबनी। हिन्दी साहित्यमे एम.ए.पी.एच.डी।

फानी

पंच सभ एकाएकी कारी मड़रक दुअरा पर जमा हुअ' लागल छल। दलान पर चटाइ बिछा देल गेल रहै। देबालक खोधली मे राखल डिबिया धुआँ बोकरि रहल छल। मात्र रामअधीन नेताक अयबाक देरी रहै।

बिना रामअधीन नेताक पंचैती कोना शुरु भ' सकैए? डोमन पाँच दिन पहिनहि सँ पंच सभक घूर-धुआँ मे लागल छल। डोमन चाहैत रहए जे सभ जातिक पंच आबय, मुदा रामअधीन नेता मना क' देने रहै, ''बाभन-ताभन कें बजेबैं तँ हम नइँ पँचैती मे रहबौ। जातिनामा पँचैती जातिए मे होना चाही।'' डोमन कें नेताजीक बात काटबाक साहस नइँ भेलै। रामअधीन आब कोनो एम्हर-ओम्हर वला नेता नइँ रहलै, दलित पाटीक प्रखंड अध्यक्ष छिऐ। थानाक बड़ाबाबू, सीओ, बीडीओ, इसडीओ सभ टा चिन्है छै। कुर्सी पर बैसाक' कनफुसकी करै छै। मुसहरी टोलक बिरधापेंशनवला कागज-पत्तर सेहो आब नेतेजी पास करबै छै। कोन हाकिम कतेक घूस लै छै, से सभ टा रामअधीन नेता कें बूझल छै। कारी मड़र तँ नामे टाक माइनजन, असली माइनजन तँ आब रामअधीने नेता किने?

डोमन पँच सभ कें चटाइ पर बैसा रहल छल आ सोमन माथा-हाथ देने खाम्ह मे ओङठल, जेना किछु हरा गेल होइ। टोल भरिक मौगी सभ कारी मड़रक अँगना मे घोदिया गेल रहै–सोमन आ डोमनक भैयारी-बँटवारा देख' लेल। ओना दुनू भाइक झगड़ा आब पुरना गेल रहै। मौगी सभक कुकुर-कटाउझ सँ टोल भरिक लोक आजिज भ' गेल रहय तँ रामअधीन नेता डोमन कें तार द'क' दिल्ली सँ बजबौलकै। सभ दिनक हर-हर खट-खट सँ नीक बाँट-बखरा भइए जाय।

झगड़ाक जड़ि सीलिंग मे भेटलाहा वैह दसकठबा खेत छिऐ जे सोमनक बापे कें भेटल रहै। रामअधीन नेताक खेतक आरिये लागल दसकठबा खेत। कैक बेर रामअधीन नेता, सोमनक बाप पँचू सदाय कें कहने रहै जे हमरे हाथैं खेत बेचि लैह, मुदा पँचू सदाय नठि गेल रहै। रामअधीन नेता आशा लगौने रहए जे बेटीक बियाह मे खेत भरना राखहि पड़तनि, मुदा पँचू सदाय आशा पर पानि फेर देने छलै। एकहक टा पाइ जोगाक' बेटीक बियाह सम्हारि लेलक तँ खेत नइँ भरना लगेलक। मरै सँ चारि दिन पहिनहि पँचू सदाय सोमन आ डोमन कें खेतक पर्ची दैत कहने रहै- ''ई पर्ची सरकारक देल छिऐ, जोगाक' रखिहैं बौआ, जोगबिहैं। नइँ। दस कट्ठा कें बिगहा बनबिहैं, भरि पेट खाइत देखिक' सभकें फट्टै छनि। बगुला जकाँ टकध्यान लगेने रहैए''।

डोमन बापक मुइलाक बाद परदेश मे कमाय लागल रहय आ सोमन गामे मे अपन खेतीक संग-संग मजूरी। फसिलक अधहा डोमनक बहु रेवाड़ीवाली कें बाँटि दैक। मुदा, जेठकी दियादिनी महरैलवाली कें ई बड़ड अनसोहाँत लागै, ''मर्र, ई कोन बात भेलै, पसेना चुवाबै हमर साँय, चास लगाब' बेर मे सभ निपत्ता आ बखरा लेब' बेर गिरथाइन बनि जायत। लोकक साँय बलू गमकौआ तेल-साबुन डिल्ली से भेजै हय त' हम कि हमर धीया-पुत्ता आरु सुङहैयो ले' जाइ हय्।''

सभ दिन कने-मने टोना-टनी दुनू दियादिनी मे होइते रहै। मुदा, ओहि दिन जे भेलै...

सोमन गहूँम दौन क' क' दू टा कूड़ी लगा देलक आ नहाय ले' चलि गेल। गहूमक सूँग देह मे गड़ैत रहै। रेवाड़ीवाली अपन हिस्सा गहूम पथिया मे उठाब' लागल रहए कि देखते जेना महरैलवाली कें सौंसे देह मे फोंका दड़रि देलकै, ''रोइयाँ नइँ सिहरै हय जेना अपने मरदबाक उपजायल होइ।'' रेवाड़ीवाली कोना चुप रहितय ? कोनो कि खेराअँत लै छै? झट द' जवाब देलकै, ''कोनो रंडियाक जिरात नइँ बाँटै हय कोइ अधहाक मालिक छिऐ छाती पर चढ़िक' बाँटि लेबै।'' ''रंडिया'' शब्द महरैलवालीक छाती मे दुकैम जकाँ धँसि गेलै-''बरबनाचो...के लाज होइ हय बजैत साँय मुड्डा भेजै हय आइँठ-कुइठ धोइ क' आ एत' ई मौगी थिराएल महिंस जकाँ टोले-टोल डिरियायल फिरै हय, से बपचो...हमरा लग गाल बजाओत।'' सुनिते रेवाड़ीवालोक देह मे जेना जुरपित्ती उठि गेलै ओ हाथ चमकबैत महरैलवालीक मुँह लग चलि गेल, ''ऐ गै धोंछिया निरासी! तूँ बड़ सतबरती गै! हे गै उखैल क' राखि देबौ गै। भरि-भरि राति सुरजा कम्पोटर पानि चढ़ा-चढ़ा क' बेटीक ढीढ़ खसेलकौ से ककरा स' नुकायल हौ गै? कोना बलू फटा-फटि बेटी दीन क' ससुरा भेज देलही।''

बेटीक नाम सुनिते महरैलवालीक तामस जवाब द' देलकै झोंटा पकड़िक' रेवाड़ीवाली कें खसा देलक। दुनू

एकदोसराक झोँट पकड़ने गुत्थम-गुत्थी भेल। ओम्हर सँ सोमनक बेटा गँगवा हहासल-फुहासल आयल आ मुक्के-मुक्की रेवड़ीवाली कें पेटे ताके मार' लागल। रेवाड़ीवाली एसगर आ एमहर दू माइ-पूत। कतेक काल धरि ठठितय, ओ बपहारि काट' लागल। टोल पड़ोसक लोक सभ जमा भ' गेल रहै, दुनू कें डाँटि-दबाड़ि क' कात कयलक। दुनू दियादिनीक माथक अधहा केस हाथ मे आबि गेल रहै।

ओहि राति रेवाड़ीवालीक पेट मे तेहन ने दरद उखड़लै जे सुरज कम्पोटर पानि चढ़ा क' थाकि गेलै, मुदा नइँ सम्हरलै। चारिये मासक तँ भेल रहै, नोकसान भ' गेलै। बेहोसियो मे रेवाड़वाली गरियबिते रहलै, "ई डनियाही हमरा बच्चा कें खा गेल। सोचै हय कहुना निर्वंश भ' जाय जे सभ टा सम्पैत हड़पि ली। डनियाहीक बेटा मरतै। धतिंगबाक हाथ मे लुल्ही-करौआ धरतै। काटल गाछ जकाँ अर्रा जेतै..."।

दोसरे दिन रेवाड़ईवाली थाना दौगल जाइत रहे, रिपोट लिखाव'। रस्ता सँ रामअधीन नेता घुरेने रहै, "समाजे मे पँचैती भ' जेतौ" आ नेताजी सोमन कें मार'-मारक' छूटल रहै, "रौ बहि सोमना। मौगी कें पाँज मे राखबें से नै। आइए सरबे सब परानी जहल मे चक्की पिसैत रहित'। मडर केस भ' जइतौ। सरबे हाइकोट तक जमानति नहि होइत।" सोमन भीतर धरि काँपि उठल रहय। नहि जानि पँचैती मे की सभ हेतै। एक मोन भेलै, जाय आ पटुआ जकाँ महरैलवाली कें डंगा दैक। 'ई, छिनरी के हरदम फसादे वेसाहैत रहैए।' रामअधीन नेताक अबिते पँचैतीक करबाइ शुरु भ' गेलै। फौदारक चीलम सँ निकलैत धुँआक टुकड़ी किछु दूर उपर उठि बिला जाइत रहे गंधक माध्यम सँ अपन उपस्थितिक आभास दैत रहय।

"हँ त' डोमन किऐ बैसेलही हैं पँचैती, से पँच कें कहबिही किने" रामअधीन नेता बाजल। डोमन ठाढ़ होइत बाजल, "हम परदेस कमाइ छिऐ। रेवाड़ीवाले एत' एसगर रहै हय। पँचू सदाय बलू भैयाक बाप रहै त' हमरो बाप रहै। हमहुँ पँचूए सदायक बुत्र स' जनमल छिऐ आ बोए कें सरकार जमीन देने रहै महंथ स' छीनिक। अइ जमीन पर जतने अधिकार एकर हइ ओतने हमरो हय। तहन जे स'ब मिलि क' रेवाड़ीवालीक गँजन केलकै, तकर निसाफ पँच आरु क' दइ जाउ। हमरा आर कुछो नइँ कहनाइ हय।" सब चुप...फेर नेतेजी सोमन कें टोकलकै, "की रौ। तोहर की कहनाम छौ?"

"आब हम बलू की कहबै ? जे भ' गेलै से त' घुरिक नइँ एतै ग'। समाज आरूक बीच मे छिऐ। जते जुत्ता मारै कें हइ, मारि लौ। दुनू मौगी रोसाएल रहै, तहन त' बलू ओकर नोकसान भ' गेलै तँ ओकर दिख त लोक नइँ देतै। तहन जे भ' गेलै से भ' गेलै। पंच आरू मिलिक' बाँट-बखरा क' दौ। खेतो कें आ घरो कें। झगड़े समाप्त भ' जेतै।"

"रौ बहिं सिमना, बात कें लसियबही नइँ। तहन त' अहिना ककरो कियो खून क' देतै आ समाज मुँह देखैत रहतै। कोना बभना आरू पुक्की मारै जाइ हइ से तूँ सभ की जान' गेलही। परसू बेलौक पर सार मुखिया हमरा देखि-देखिक' हँसैत रहय, चुटकी लैत रहय, "की हौ रामअधीन! जहन टोले नइँ सम्हरै छ' त' बिधायक बनलाक बाद पूरा एलाका कोना सम्हरतह? सुनै छिय' एहि बेर टिकट तोरे भेटत'। चल' अइहबा मे पार लागिऐ जेत'।..." नेताजी गुम्हरल, "टिकटेक नाम सुनिक' सार सब कें झरकै छनि, आगू की सभ जरतनि?" रामअधीन नेता एक बेर मोँछ कें चुटकी सँ मीड़ि उपर उठेक फेर आक्रामक मुद्रा बनबैत बाजल, "सुनि ले बहिं, से सभ नइँ हेतौ। गलती दुनू के छौ। पाँच-पाँच हजार दुनू कें जुर्बाना देम' पड़तौ, जातिनाम खाता मे।" नेताजीस्वाभाविक गति सँ पुन: एक बेर मोंछक लोली कें चुटकी पर चढ़बैत मड़र कका दिस देखलनि, "की हौ मरड़ कका बजैत किऐ ने छहक?" मड़र कका बदहा जकाँ मूडी डोला देलकै।

डोमन भाइ सँ बदला लैक धुन मे एखन धरि गुम्हरि रहल छल, मुदा नेताजीक बात सुनिते झमान भ' खसल। एक मोन भेलै, कहि दै–जे भेलै से भेलै भैयारी मे। नइँ करेबाक य' पंचैती। ई किन बात भेलै ! हमरे बहु मारियो खेलक आ जुर्बान सेहो हमहीं दियौ, मुदा चुप रहल। डरें बाजल नइँ भेलै। डोमन कें देखल छै जे रामअधीन नेता पंचैती नइँ माननिहार कें कोना ताड़क गाछ मे बान्हिक' पीटै छै। एखन धरि जुर्बाना वला पचासो हजार टाका जातिनाम खाता मे गेल हेतै, मुदा हिसाब? ककर बेटी बियेलैहँ जे रामअधीन नेता सँ हिसाब माँगत!

रामअधीन नेताक पी.ए. जकाँ हरदम संग रहनिहार मोहन सदाय बाजि उठल, "की रौ सोमना, हम दुनू भाइ स' पुछै छियो; कहिया तक पाइ जमा क' देमही ? एक सप्ताह स' बेसीक टेम नइँ देल जेतौ। अहि पाइ स' कोनो छिनरपन नइँ हतै, सारबजनिक काम हेतै। दीना-भदरीक गहबर बनतै।"

"कतौ स' चोरी कए क' त' नइँ आनबै हमर हालति बलू ककरो स' नुकाएल त' नइँ हय।" सोमन कलपल।

मोहन सदाय कें रामअधीनक कृपा सँ जवाहर-रोजगार वला ठिकेदारी सभ भेट' लागल छै। सीओ, बीडीओ कें चेम्बरे मे बंद क' दैत अछि आ मनमाना दस्तखत करा लैत अछि तँ ओकरा सभटा भजियायल छै जे घी किना निकालल जाइत छै। ओ सभक चुप्पी कें तौलैत मड़रककाक नाड़ी पकड़लक "की हौ मड़र कका! तोरा आरूक की बिचार छह? दीना भदरीक गहबर मे ओ पाइ लागि जाए त' नीके किने ?"

मरड़ कका आइ दस साल सँ हरेक पंचैती मे अहिना दीना-भदरीक गहबर बनैत देखि रहलछै' मुदा एखनो दीना-भदरीक पीड़ी पर ओहिना टाँग अलगा क' कुकूर मुतिते छै। मड़रकका मने-मन कुकूर कें गरियेलक, "सार, कुकूरो कें कतौ जगह नइँ भेटै हय, देबते-पितरक पीड़ी कें घिनायत।" खैनीक थूक कंठ धरि ठेकि गेल रहै, पिच्चा द' फेकैत बाजल' "जे तूँ सभ उचित बुझही !"

पंचैती मे रामधीन नेता आ मोहन सदाय बजैत जा रहल छल। बाकी सभ पमरियाक तेसर जकाँ हँ मे हँ मिलबैत। सोमन पंच सभक मुँह ताकि रहल अछि,

मुदा दिन भरिक हट्टाक थाकल-ठेहियायल पंच सभक मुँह स्पष्ट कहै छै जे कतेक जल्दी रामअधीन नेता निर्णय दै आ ओ सभ निद्राक कोरा मे बैसि रहय। मड़र ककाक हुँहकारी सँ मोहन सदायक मनोबल एक इँच आरो उपर उठलै। ओ बाजल, ''नगदी ई दुनू भाइ जमा क' सकत से उपाय त' नइँ छै तहन पाइ कोना एकरा सभ कँ हेतै, तकरो इन्तिजाम त' आइए भ'' जेबाक चाही। आब अहि ले' दोसर दिन त' बैसार नइँ हेतै। हमर एक टा प्रस्ताब छै जे दुनू भाइक सझिया दसकठबा खेत ताबत केओ दस हजार मे भरना ल' लौ। जहिया दुनू भाइ पाइ जमा क' देतै तहिया खेत घुरि जेतै।'' बिना ककरो विचार लेनहि मोहन सदाय डाक शुरु क' देलक, ''बाज'के लेबहक! जमीन अपने टोला मे रहतै बभनटोली मे नइँ जेनाय छै खपटा ल'क''।

सभ चुप्प!

फेर मोहन सहाय बाजल, ''जँ नइँ कियो लेबहक त' नेताजी सोचतै, टोलक इज्जति त' बलू बचाब' पड़तै ओकरे किने।'' अंतिम श्ब्द बजैत मोहन सदायक आँखि नेताजीक आँखि सँ टकरा गेलै। मड़र कका आँखि मुनने भरिसक कुकूरे कँ खिहारि रहल छलाह। खैनीक सेप मुँह मे एतेक भरि गेल रहनि जे कने घोंटाइयो गेलनि। खूब जोर सँ खखसैत बजलाह, :सुनि ले' बहिं पिछला बेर जकाँ एहू बेर नइँ पजेबा खसि क' उठि जाइ।'' मड़र ककाक शंका मे आरो एक-दू गोटा अपन हामी भरलक। मोहन सदाय पहिनहि सँ तैयार रहय, झट द' बाजि उठल, ''नइँ हौ। दसक हहास बलू अपना कपार पर के लेत? जुर्बानाक पाइ देबते-पितर मे जेतै। दीना-भदरी संगे जे सार गद्दारी करत, तकरा घर पर खढ़ो बचतै ? घटतै त' एक-दू हजार नेताजी अपन जेबियो स' लगा देतै। कोनो अंत' जेतै? धरम-खाता मे जमा रहतै। बभना आरू जेहन डीहबारक गहबर बनेलकै, ओहू स' निम्मन दीना-भदरीक गहबर बनतै।''

महरैलवाली बड़ी काल सँ मुँह दबने रहय। आब ओकर धैर्य जबाव द' देलक, ''हइ के हमर जमीन लेतै? दीना-भदरीक गहबर बनै ले' हमरे जमीन हइ। मोंछवला सभ बेहरी द'क' बनेतै से नइँ।'' रेवाड़ीवालीक हृदय सेहो आब बर्फ भ' गेल रहय। दियादनीक बात मे ओकरो मौन समर्थन रहै।

रामअधीन नेता कँ कहियो-कहिओ दिन तका क' तामस उठै छै जहन ओकरा मोनक विपरीत कोनो काज होइत छै। एहन परिस्थिति मे नेताजी टोल भरिक छौड़ी-मौगी सँ गारिक माध्यम सँ लैंगिक संबंध स्थापित क' लैत छथि। ''छिनरी कँ तूँ बीच मे बजनाहार के? हम सोमना नइँ छी, ततारि देब।'' नेताजी मारैक लेल हाथ उठेलनि। महरैलबाली नेताजीक लग मे आरो सटैत बाजल, ''माय दूध पियेने हइ त' मारि क' देख लौ।'' नेताजीक हाथ थरथरा गेलनि मुदा मुँह चालू ''मुँह सम्हारि क' बाज मौगी नइँ त' चरसा घीचि लेबौ। आगि-पानि बारि देबौ, देखै छी कोना गाम मे तूँ रहि जाइत छें।''

''है केहन-केहन गेलै त' मोछवला एलै। बहरा गाम मे रहि जेबै तें जमीन पर नइँ ककरो चड़ह' देबै। ई नेतबा आरू गुरमिटी क'क जमीन हड़प चाहै हय। जमीन भरना लेनिहार कँ त' खपड़ी स' चानि फोड़ि देबै। दीना-भदरी गरीबेक जमीन लेतै। अइ नेतबा आरूक कपार पर हरहरी बज्जर खसतै। घुसहा पंच सभ कँ मुँह मे जाबी लागि गेल हय। निसाफ बात बजैत लकबा नारने हइ।''

महरैवालीक ई हस्तक्षेप सोमनक पक्ष कँ आरो कमजोर क' देलकै। पंच सभ सोमन कँ धुरछी-धुरछी कर' लगलै। फौदार कहलकै, ''त' रौ बहिं सोमना, ई मौगी ठिके झँझटिक जड़ि छियौ। एकरा अँगना क' बइलेबँ से नइँ? गाइरे सुनबै ले' पंच आरू कँ बजेलही हें।'' सोमन कँ भरल सभा मे ई बेइज्जती बड़ अखड़लै ''जहन मरदा-मरदी बात होइ हय त' ई मौगी किऐ बीच मे टपकै हय।'' सोमन, महरैलवालीक ठोठ पकड़ि क' अँगना मे जा क' धकेलि देलक। महरैवाली आँगने सँ गरियाबैत रहल, ''अइ मुनसा कँ त' जे नइँ ठकि लइ।]

बोहा दौ सभ टा। नेतबा सभ त' तौला मे कुश द'क' रखनै हय।''

आब नेताजीक तामस मगजो सँ उपर चढ़ि गेल, ''ई सार सभ ओना नइँ सुधरत। एखने बभना आरू दस टा गारि दैतनि आ चारि डंटा पोन पर मारितन्हि त' तुरते पंचैती मानितय। कोन सार पंचैती नइँ मानत से हमरा देखनाइ यए।'' नेताजीक ठोरक लय पर मोंछो थरथरा रहल छल ! ''सरबे सभ कँ हाथ-पयर तोड़िक' राखि देबनि। घर मे आगि लगा क' भक्सी झोंका झौकि देबनि। देखै छी कोन छिनरी भाइ दरोगा हमरा खिलाफ एन्ट्री लैयए।'' चारू भर श्मशानक नीरवता पसरि गेल छल। पंच सभ आगाँक बात कँ रोकबाक लेल डोमन आ सोमन दिस याचक दृष्टएँ ताकि रहल छल। मोहन सदाय कागत-कजरौटी निकालैत सोमनक कान मे बाजल, ''की विचार छौ, फसाद ठाढ़ करबें?'' आ फेर सोमनक थरथराइत औंठा पकड़िक' कजरौटी मे धँसा देलक। अही बीच महरैलवाली वसात जकाँ हहाइत आयल आ दुनू हाथ सँ कागत आ कजरौटी कँ पकड़ि क' ओहि पर सूति रहल! ओ बाजय चाहैत रहय, मुदा मुँह सँ आवाज नहि निकलि रहल छलै। रामअधीन नेता कागत आ कजरौटी महरैलवालीक हाथ सँ छीन' चाहैत छल, मुदा महरैलवाली पाथर भ' गेल रहय। जेना ओ कागत नहि, ओ दसकठवा खेत हो जकरा ओ अपना छाती सँ अलग नहि कर' चाहैत रहय।

''छिनरी कँ तू एना नहि मानवें।'' महरैलवालीक मुँह पर घुस्सा मारैत ओकर मुट्ठी कँ हल्लुक कर' चाहलक।

एम्हर रेवाड़ीवालीक चेहरा तामसे लाल भ' गैल रहै। ओकर सभ टा विद्रोह नेता सभक कूटनीति कँ बुझिते पिघलि गेल रहै। ओ डोमनक देह झकझौरैत बाजल, ''बकर-बकर की ताकै छ'। मार' ने पूतखौका नेतबा आरू कँ। जब खेते नहि बचत' त' बाँटब' की?'' रेवाड़ीवालीक ई रूप देखि नेताजीक हाथ ढील हुअ' लागल। पंच सभ हतप्रभ रेवाड़ीवाली दिस ताक' लागल।



सुभाष साह

गाम-अरनाहा, जिला सरलाही, नेपाल। वर्तमानमे लंदन मेट्रोपोलिटन विश्वविद्यालयसँ बी.बी.ए.कए रहल छथि। सामाजिक कार्य, मैथिलक जुटान, सांस्कृतिक कार्यक्रम संचालनमे विशेष रुचि। यू.के. केर मधेसीक संगठन ANMUK केर सक्रिय सदस्य आ सम्प्रति सचिव। नेतृत्व क्षमताक गुण संगहि प्रखर वक्ता।–**सम्पादक**

लन्दनमे नेपाल मेला २००८
(लन्दनसँ श्री सुभाष शाहक रिपोर्ट)





लन्दन शहरमे पिकाडिली सर्कस नामक स्थान पर नेपाल एमबैशीक सहायता सऽ २१ आऽ २२ सितम्बर २००८ कऽ अहि मेलाक आयोजन कैल गेल छल जाहिमे नेपाल के पर्यटन मंत्री आदरणीया सुश्री हिशिला यामी नेपालक राजदूत श्री मुरारी राज शर्मा खैतान ग्रुपके चेयरमैन एवम् मैनेजिंग प्रेसिडेंट श्री राजेन्द्र खैतान आदि सहित अन्य दिग्गज सब उपस्थित छलैथ।अतऽ इहो घोषणा कैल गेल जे साल २०११ के पर्यटन वर्षक रूपमे मनाओल जायत। सुश्री यामी सऽ हम सब अहू बात पर विचारविमर्श केलहुं जे 'लुम्बिनी' के पर्यटक सबलेल बेसी आकर्षक बनाबऽ लेल की कैल जा सकैत अछि।यामीजी अहि बात लेल प्रतिबद्ध भेली जे ओ सीता मैया एवम् बुद्धदेवक इतिहास सऽ सम्बन्धित स्थानके विकासमे यथाशक्ति योगदान देती।





श्री नवीन कुमार एवम् सुश्री सुनीता शाह द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक परिधानक फैशन शो अत्यन्त सफल रहल।हमरा सब अन्मुक (ANMUK- Association of Nepali Madheshis in UK) के सदस्य सबलेल अहि आयोजनक सफलता बहुत पैघ





प्रोत्साहन अछि।

(आभार- अन्मुक के वेबसाएट जाहि सऽ फोटो प्राप्त भेल)



सुभाष चन्द्र यादव

कथाकार, समीक्षक एवं अनुवादक, जन्म ०५ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल। आरम्भिक शिक्षा दीवानगंज एवं सुपौलमे। पटना कॉलेज, पटनासँ बी.ए.। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्लीसँ हिन्दीमे एम.ए. तथा पी.एह.डी.। १९८२ सँ अध्यापन। सम्प्रति: अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, पश्चिमी परिसर, सहरसा, बिहार। मैथिली, हिन्दी, बंगला, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, स्पेनिश एवं फ्रेंच भाषाक ज्ञान।

प्रकाशन: घरदेखिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९९९, बिहाड़ि आउ (बंगला सँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प लोक, सुपौल, १९९५, भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, २००१, राजकमल चौधरी का सफर (हिन्दी जीवनी) सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१, मैथिलीमे करीब सत्तरि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी मे अनेक अनुवाद प्रकाशित।

भूतपूर्व सदस्य: साहित्य अकादमी परामर्श मंडल, मैथिली अकादमी कार्य-समिति, बिहार सरकारक सांस्कृतिक नीति-निर्धारण समिति। **सम्पादक**

कनियाँ-पुतरा

जेना टांग छानै छै, तहिना ऊ लड़की हमर पएर पाँज मे धऽ लेलक आ बादुर जकाँ लटैक गेल। ओकर हालत देख ममता लागल। ट्रेनक ओइ डिब्बा मे ठाढ़ भेल-भेल लड़की थाइक कय चूर भऽ गेल रहै। कनियें काल पहिने नीचे मे कहुना बैठल आ बैठलो नै गेलै तऽ लटैक गेल।

डिब्बा मे पएर रोपै के जगह नै छै। लोग रेड़ कय चढ़ै-ए, रेड़ कय उतरै-ए। धीया-पूता हवा लय औनाइ छै, पाइन लय कानै छै। सबहक जी व्याकुल छै। लोग छटपटा रहल-अय।

हम अपने घंटो दू घंटा सऽ ठाढ़ रही। ठाढ़ भेल-भेल पएर मे दरद हुअय लागल। मन करय लुद सिन बैठ जाइ। तखैनिये दूटा सीट खाली भेलै, जइ पर तीन गोटय बैठल। तेसर हम रही जे बैठब की, बस कनेटा पोन रोपलौं। ऊ लड़की ससैर कय हमरा लग चैल आयल। पहिने ठाढ़ रहल, फेर बैठ गेल। फेर बैठले-बैठल हमर टांगमे लटैक गेल। जखैन ऊ ठाढ़ रहय तऽ बापक बाँहि मे लटकल रहय। ओकरा हम बड़ी काल लटकल देखने रहिऐ। ओकर बाप अखैनियों ठाढ़े छै। छोट बहीन आ भाय ओकरे बगल मे नीचे मे बैठल औंघा रहल छै।

ऊ जे टांग छानने ऐछ, से हमरा बिदागरी जकाँ लाइग रहल-अय। जाइ काल बेटी जेना बापक टांग छाइन लै छै, तेहने सन। ने ऊ कानै-अय, ने हम कानै छी। लेकिन ओकर कष्ट, ओकर असहाय अवस्था उदास कऽ रहल-अय। हम निश्चल-निस्पंद बैठल छी। होइए हमर सुगबुगी सऽ ओकर बिसबास, ओकर असरा कतौ छिना नै जाय। हाथ ससैर जाइ छै तऽ ऊ फेर ठीक सँ टांग पकैड़ लै अय।

लड़की दुबर-पातर आ पोरगर छै। हाथ मे घड़ी। प्लास्टिकक झोरा मे राखल मोबाइल। लागै छै नौ-दस सालक रहय। मगर कहलक जे बारह साल के ऐछ। सतमा मे पढ़ै-अय आ ममिऔत भाइक बियाह मे जा रहल-अय।

बेर-बेर जे हाथ ससैर जाइत रहै से आब ऊ हमर ठेंगहुन पर मूड़ी राइख देलक-अय। जेना हम ओकर माय होइ अइ। ओकर माय संग मे नै छै। कतय छै ओकर माय? जकर कनहा पर, पीठ पर, जाँघ पर कतौ ऊ मूड़ी राइख सकैत रहय। हम ओकर माथ पर हाथ देलिऐ। ऊ और निचेन भऽ गेल जेना।

एक बेर गाड़ीक धक्का सऽ ऊ ससैर गेल; सोझ भेल आ आँइख खोललक। एक गोटय कहलकै- दादा कय कसि कय पकड़ने रह।

अंतिम टीशन आइब रहल छै। सब उतरै लय सुरफुरा लागल-अय। अपन-अपन जुत्ता-चप्पल, कच्चा-बच्चा आ सामान कय लोग ओरियाबय लागल-अय। राइत बहुत भऽ गेल छै। सब कय अपन-अपन जगह पर जायके चिन्ता छै। बहुत गोटय ठाढ़ भऽ गेल ऐछ। ऊ लड़कियो। हमहूँ ठाढ़ भऽ कऽ

अपन झोरा उतारै छी। तखनियें नेबो सन कोनो कड़गर चीज बाँहि सऽ टकरायल। बुझा गेल ई लड़कीक छाती छिऐ। हमर बाँहि कने काल ओइ लड़कीक छाती सऽ सटल रहल। ओइ स्पर्श सऽ लड़की निर्विकार छल; जेना ऊ ककरो आन संगे नै, बाप-दादा या भाय-बहीन सऽ सटल हो।

ओकर जोबन फूइट रहल छै। ओकरा दिस ताकैत हम कल्पना कऽ रहल छी। अइ लड़कीक अनमोल जोबनक की हेतै ? सीता बनत की दरोपदी ? ओकरा के बचेतै ? हमरा राबन आ दुरजोधनक आशंका घेरने जा रहल ऐछ।

टीशन आइब गेलै। गाड़ी ठमैक रहल छै। लड़की हमरा देख बिहुँसै–अय; जेना रुखसत माइंग रहल हो। ई केहन रोकसदी ऐछ! ने ऊ कानै छै, ने हम कानै छी। ऊ हँसै-अय, हमहँ हँसै छी।लेकिन हमर हँसी मे उदासी अय।

डाक्टर सूर्यनाथ गोप

दिघवा, सप्तरी

आत्मा

मैथिलीकेँ बेचिकऽ

पैन्ट सर्टपर टाईकोट कसिकऽ

माथपर ढाका टोपी चढाकऽ

बगलमे भारतीय दुतावासक झोरा लटकाकऽ

एहि युगक सभसँ बडका विसंगति ___

डाक्टर सूर्यनाथ गोप

एक हाथमे पासपोर्ट भिसा मुठियबैत

दोसर हाथमे हिन्दीक झण्डा फहरबैत

हिनहिनाईत

गिनगिनाईत

जारहल छथि

मौरिसस

अन्तर्राष्ट्रिय हिन्दी सम्मेलनमे



तूलिका

गाम रुद्रपुर, जिला मधुबनी।





उमेश कुमार महतो

उमेश कुमार- पुत्र श्री केशव महतो, बहादुरगंज

तीन मूरी बला....

एकटा राजा रहए। ओकरा एकटा बेटा रहए। ओकर राजपाट खूब शांति सँ चलैत रहए। राजा जखन बीमार भेलए तँ बेटाकँ कहलकए।

१. फी कओरमे सीरा खाइले।

२. द्वारपर हाथी बन्हबा कऽ राखय ले।

३. वैर भाव नहीं राखएले।

४. बाहर निकलैपर छाँहमे रहबा ले।

राजकुमार एकर अर्थ नहि बुझि पओलक। राजा मरि गेलैक।

राजकुमार राजा बनि गेल।

पिताजीक गपपर ओ अमल करए लागल।

१. फी कोरमे सीरा खेबाक मतलब ओ बुझलकै जे सभ दिन खस्सी कटबा कए सीरा खेनाइ आ बचल मासु नोकर सभ कँ देनाइ आ ओ सएह करए लागल।

२. द्वारपर ओ एकटा हाथी कीन कए रखबा देलक आ चारि टा नोकर ओकर देखभाल लेल राखि देलक।

३. ओ सभटा बैरक गाछ काटि कए हटा देलक।

४. ओ दू टा नोकर राखलक जे गाछ काटि कए जतए जतए राजा जाइत रहए ओतए-ओतए लए जाइत रहए।

एना किछु दिन ओ राजपाट चलेलक। एना करिते-करिते राजपाट खतम भए रहल छलैक, कारण खर्चा बेसी भए गेलै आ आमदनी कम, सभ गाछ कटि गेलैक।

गामक एक बुजुर्ग सँ ओ पुछलक जे हमर राजपाट किएक खतम भए रहल अछि। तँ ओ बुजुर्ग ओकरा बुझेलक जे जाऊ आ तीन मूरी बला आदमी सँ पुछू।

चारू तरफ राजा खोजलक मुदा तीन मूरी बला आदमी ओकरा नहि भेटलैक। फेर ओही बुजुर्ग आदमी सँ पुछलक जे हमरा तँ तीन मूरी बला आदमी नहि भेटल।

बुजुर्ग कहलकै जे ७० बरख सँ ८० बरखक आदमी कँ तीन मूरी बला कहल जाइत छैक कारण जे जखन ओ बैसैत अछि तँ ओकर मूरी झुकि जाइ छैक आ ठेहुन ऊपर उठि जाइत छैक आ से ओ तीन मूरी जकाँ भए जाइत छैक।

राजा एहेने एकटा मनुक्खकँ ताकि क' पुछलक।

"पिताजी मरए से पहिने की की बतेने रहथि"। ओ तीन मूरी बला मनुख पुछलक।

राजा कहलक।

"ओ बतेलथि-

१. फी कओरमे सीरा खाइले।

२. द्वारपर हाथी बन्हबा कए राखए ले।

३. वैर भाव नहीं राखए ले।

४. बाहर निकलैपर छाँहमे रहबा ले"।

"पहिलाक मतलब छी- एक पाव डेढ़का मांछ लए कए बनबा कए खाउ ओकर सभ कओरमे सीरा भेटत।

दोसराक मतलब घरक आगाँ घूर लगा देबा लए जाहिसँ द्वारपर हरदम १० गोटे बैसल रहत।

तेसरक मतलब झगड़ा-झाँटि सँ दूर रहि दोस्ती मिलान सँ रहू।

चारिमक मतलब दू रुपैयाक छाता लऽ छाहमे चलू"। तीन मूरी बला मनुक्ख बतेलक।

एकरापर अमल केलापर राजाक राजपाट वापस आबए लगलैक।



श्री उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

जन्म-1951 ई. कलकत्तामे।1966 मे 15 वर्षक उम्रमे पहिल काव्य संग्रह 'कवयो वदन्ति'| 1971 'अमृतस्य पुत्राः'(कविता संकलन) आ' 'नायकक नाम जीवन'(नाटक)| 1974 मे 'एक छल राजा'/'नाटकक लेल'(नाटक)। 1976-77 'प्रत्यावर्त्तन'/ 'रामलीला' (नाटक)। 1978मे जनक आ' अन्य एकांकी। 1981 'अनुत्तरण' (कविता-संकलन)। 1988 'प्रियंवदा' (नाटिका)। 1997-'रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य' (अनुवाद)। 1998 'अनुकृति'- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। 1999 'अश्रु ओ परिहास'। 2002 'खाम खेयाली'। 2006मे 'मध्यमपुरुष एकवचन' (कविता संग्रह)। भाषा-विज्ञानक क्षेत्रमे दसटा पोथी आ' दू सयसँ बेशी शोध-पत्र प्रकाशित। 14 टा पी.एच.डी. आ' 29 टा एम.फिल. शोध-कर्मक दिशा निर्देश। बड़ौदा, सूरत, दिल्ली आ' हैदराबाद वि.वि.मे अध्यापन। संप्रति निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर।–-**सम्पादक**

नो एंट्रीः मा प्रविश

(चारि-अंकीय मैथिली नाटक)

नाटककार

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

(मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध प्रयोगधर्मी नाटककार श्री नचिकेताजीक टटका नाटक, जे विगत 25 वर्षक मौनभंगक पश्चात् पाठकक सम्मुख प्रस्तुत भ' रहल अछि।)

पहिल अंक जारी....विदेहक एहि आठम अंक 15 अप्रैल 2008 सँ|

नो एंट्रीः मा प्रविश

(चारि-अंकीय मैथिली नाटक)

पात्र परिचय

पर्दा उठितहि

ढोल पिपही, बाजा गाजा बजौनिहार सब
दूटा चोर, जाहि मे सँ एक गोटे पॉकिट मार आ
एकटा उचक्का
दू गोट भद्र व्यक्ति
प्रेमी
प्रेमिका
बाजार सँ घुरैत प्रौढ़ व्यक्ति
बीमा कंपनीक एजेंट
रद्दी किनै बेचैबला
भिख-मंगनी
रमणी-मोहन
नंदी भृंगी
कैकटा मृत सैनिक

बाद मे

नेता आ नेताक एक-दूटा चमचा/ अनुयायी
अभिनेता
वाम-पंथी युवा
उच्च वंशीय महिला

अंत मे

यम
चित्रगुप्त

प्रथम कल्लोल

[एकटा बड़का टा दरबज्जा मंचक बीच मे देखल जाइछ। दरबज्जाक दुनू दिसि एकटा अदृश्य मुदा सक्कत देवार छैक, जे बुझि लेबाक अछि कखनहु अभिनेता लोकनिक अभिनय कुशलता सँ तथा कतेको वार्तालाप सँ से स्पष्ट भ' जाइछ। मंच परक प्रकाश व्यवस्था सँ ई पता नहि चलैत अछि जे दिन थिक अथवा राति, आलीक कनेक मद्धिम, सुर संगत होइत सेहो कने मरियल सन।

एकटा कतार मे दस बारह गोटे ठाढ़ छथि जाहि मे कैकटा चोर उचक्का, एक-दू गोटे भद्र व्यक्तित मुदा ई स्पष्ट जे हुनका लोकनिक निधन भ' चुकल छन्हि। एकटा प्रेमी युगल जे विष-पान क' कए आत्म-हत्या कैल अछि, मुदा एत' स्वर्गक (चाही त' नरकक सेहो कहि सकै छी) द्वार लग आबि कए कने विह्वल भ' गेल छथि जे आब की कैल जाइक। एकटा प्रौढ व्यक्तित जे बजारक झोरा ल' कए आबि गेल छथि बुझाइछ कोनो पथ दुर्घटनाक शिकार भेल छथि बाजार सँ घुरैत काल। एकटा बीमा कंपनीक एजेंट सेहो छथि, किछु परेशानी छनि सेहो स्पष्ट। एकटा रद्दीबला जे रद्दी कागजक खरीद बिक्री करैत छल, एकटा भिखमंगनी एकटा पुतलाकँ अपन बौआ (भरिसक ई कहै चाहैत छल जे वैह छल ओकर मुइल बालक अथवा तकर प्रतिरूप) जकाँ काँख तर नेने, एक गोट अत्यंत बूढ़ व्यक्ति सेहो, जनिक रमणी प्रीति एखनहु

कम नहि भेल छनि, हुनका हमसब रमणी मोहने कहबनि।

सब गोटे कतार मे त' छथि, मुदा धीरजक अभाव स्पष्ट भ' जाइछ। क्यो-क्यो अनकाकेँ लाँघि आगाँ जैबाक प्रयास करैत छथि, त' क्यो से देखि कए शोर करय लागैत छथि। मात्र तीन चारिटा मृत सैनिक जे कि सब सँ पाछाँ ठाढ़ छथि, हुनका सबमे ने कोनो विकृति लखा दैछ आ ने कोनो हड़बड़ी।

बजार-बला वृद्ध: हे हे हे देखै जाउ... देखि रहलछी कि नहि सबटा तमाशा... कोना कोना क' रहल छइ ई सब!

की ? त' कनीटा त' आगाँ बढ़ि जाई!

[एकटा चोर आ एकटा उचक्का केँ देखा कए बाजि रहल छथि, जे सब ओना त' चारिम तथा पाँचम स्थान पर ढ़ाढ छैक, मुदा कतेको काल सँ अथक प्रयास क' रहल अछि जे कोना दुनू भद्र व्यक्ति आ प्रेमी प्रेमिका युगलकेँ पार क' कए कतारक आगाँ पहुँचि जाई!]

बीमा एजेंट: [नहि बूझि पबैत छथि जे ओ वृद्ध व्यक्ति हुनके सँ

किछु कहि रहल छथि कि आन ककरहु सँ। बजार-

बला वृद्ध सँ आगाँ छल रद्दी बेचैबला आ तकरहु

सँ आगाँ छलाह बीमा बाबू।] हमरा किछु कहलहुँ ?

बाजारी: अहाँ ओम्हर देखब त' बूझि जायब हम की कहि

रहल छी आ ककरा दय...! *[अकस्मात् अत्यंत*

क्रोधक आवेश मे आबि] हे रौ! की बुझै छहीं...

क्यो नहि देखि रहल छौ ? [*बीमा बाबू कें बजारक झ़ोरा थम्हबैत* -] हे ई धरू त'! हम देखै छी।

[कहैत शोर करैत आगाँ बढ़ि कए एकटा चोर आ उचक्का केँ कॉलर पकड़ि कए घसीटैत पुनः पाछाँ चारिम-पाँचम स्थान पर ल' अबैत छथि, ओसब वाद प्रतिवाद कर' लगैत अछि -]

चोर: हमर कॉलर कियै धरै छी ?

उचक्का: हे बूढ़ौ! हमर कमीज, फाड़ि देबैं की ?

बाजारी: कमीजे कियैक ? तोहर आँखि सेहो देबौ हम फोड़ि!

की बूझै छँ ? क्यो किछु कहै बाला नहि छौ एत'?

उचक्का: के छै हमरा टोकै बला एत'? देखा त' दिय' ?

चोर: आहि रे बा! हम की कैल जे हमर टीक धैने छी?

दोसर चोर: (जे कि असल मे पॉकिट मार छल) हे हे,

टीक छोड़ि दी, नंगड़ी पकड़ि लियह सरबा क!

चोर: (गोस्सा सँ) तोँ चुप रह! बदमाश नहितन!

पॉकिटमार: (अकड़ि कए) कियै ? हम कियै नहि बाजब ?

उचक्का: (वृद्ध व्यक्तिक हाथ सँ अपना कँ छोड़बैत) ओय खुदरा!

बेसी बड़बड़ैलें त'... (हाथ सँ इशारा करैत अछि गरा काटि देबाक)

पॉकिटमार: त' की करबें ?

उचक्का: *(भयंकर मुद्रामे आगाँ बढ़ैत)* त' देब धड़ सँ गरा कँ

अलगाय... रामपुरी देखने छह ? रामपुरी *? (कहैत एकटा चाकू बहार करैत अछि।)*

चोर: हे, की क' रहल छी... भाइजी, छोड़ि दियौक ने!

बच्चा छै... कखनहु कखनहु जोश मे आबि जाइ छै!

भद्र व्यक्ति 1: *(पंक्तिक आगाँ सँ)* हँ, हँ... छोड़ि ने देल जाय!

उचक्का: *[भयंकर मुद्रा आ नाटकीयता कें बरकरार रखैत पंक्तिक आगाँ दिसि जा कए... अपन रामपुरी* चाकू कें दोसर हाथ मे उस्तरा जकाँ घसैत] छोड़ि दियह की मजा चखा देल जाय ? *[एहन भाव* भंगिमा देखि दुनू भद्र व्यक्ति डरै छथि प्रेमी युगल अपनहिमे मगन छथि; हुनका दुनू कँ दुनियाक आर किछु सँ कोनो लेन-देन नहि...] की ?

[घुरि कए पॉकिट मार दिसि अबैत... तावत् ई

सब देखि बाजारी वृद्धक होश उड़ि जाइत छनि...

ओ चोरक टीक/कॉलर जे कही... छोड़ि दैत छथि

घबड़ा कए] की रौ ? दियौ भोंकि? आ कि...?

चोर: उचकू भाइजी! बच्चा छै... अपने बिरादरीक

बुझू...! [आँखि सँ इशारा करै छथि।]

उचक्का: *[अट्टहास् करैत]* ऐं ? अपने बिरादरीक थिकै ?

[हँसब बंद कए- पूछैत] की रौ ? कोन काज करै

छँ?

[पॉकिट-मार डरेँ किछु बाजि नहि पबैत अछि मात्र दाहिना हाथक दूटा आङुर कें कैंची जकाँ चला कए देखबैत छैक।]

उचक्का: पॉकिट-मार थिकेँ रौ ? [पुनः हँस' लागै छथि-छूरी कँ तह लगबैत']

चोर: कहलहुँ नहि भाईजी ? ने ई हमरा सन माँजल चोर

बनि सकल आ ने कहियो सपनहु मे सोचि सकल

जे अहाँ सन गुंडा आ बदमाशो बनि सकत!

उचक्का: बदमाश ? ककरा कहलेँ बदमाश ? आँय!

पॉकिट-मार: हमरा, हुजूर! ओकर बात जाय दियह! गेल छल

गिरहथक घर मे सेंध देब'... जे आइ ने जानि कत्ते टका-पैसा-गहना भेटत! त' पहिले बेरि मे

जागि गेल गिरहथ, आ तकर चारि चारिटा

जवान-जहान बालक आ सँगहि आठ आठटा

कुकुर... तेहन ने हल्ला मचा देलक जे पकड़ि कए

पीटैत पीटैत एत' पठा देलक! *[हँसैत... उचक्का सेहो हँसि दैत अछि]* आब बुझु! ई केहन चोर थिक!

(मुँह दूसैत) हमरा कहैत छथि!

[कतारक आनो-आन लोक आ अंततः सब गोटे हँसय लागैत छथि]

भद्र-व्यक्तित 1: आँय यौ,चोर थिकौं? लागै त' नहि छी चोर

जकाँ...

चोर: किएक ? चोर देख' मे केहन होइत छैक ?

पॉकिट-मार: हमरा जकाँ...! (कहैत, हँसैत अछि, आरो एक-दू

गोटे हँसि दैत छथि।) चललाह भिखारी बौआ बन'... ?

की ? त' हम तस्कर-राज छी! *[कतहु सँ एकटा*

टूल आनि ताहि पर ठाढ़ होइत... मंचक आन

दिसिसँ भाषणक भंगिमा मे] सुनू, सुनू, सुनू, भाई भगिनी! सुनू सब गोटे! श्रीमान्, श्रील 108

श्री श्री बुद्धि-शंकर महाराज तस्कर सम्राट आबि

रहल छथि! सावधान, होशियार! *[एतबा कहैत टूल*

पर सँ उतरि अपन हाथ-मुँहक मूकाभिनयसँ

एहन भंगिमा करैत छथि जेना कि भोंपू बजा

रहल होथि... पाछाँ सँ भोंपू ___ पिपहीक शब्द

कनिये काल सुनल जाइछ, जाबत ओ 'मार्च' करैत

चोर लग अबैत अछि...]

चोर: *[कनेक लजबैत]* नहि तोरा हम साथ लितहुँ ओहि

रातिकेँ, आ ने हमर पिटाइ देखबाक मौके तोरा

भैटतिहौक! [कहैत आँखि मे एक-दूइ बुन्न पानि

आबि जाइत छैक।]

पॉकिट-मार: आ-हा-हा! एहि मे लजबैक आ मोन दुखैक कोन

गप्प?

[थम्हैत, लग आबि कए] देखह! आइ ने त'

काल्हि-चोरि त' पकड़ले जाइछ। आ एकबेर जँ भंडा-

फोड़ भ' जाइत अछि त' बज्जर त' माथ पर खसबे

करत! सैह भेल... एहि मे दुख कोन बातक ?

उचक्का: *(हँसैत)* हँ, दुखी कियै होइ छहक?

बाजारी: *[एतबा काल आश्चर्य भए सबटा सुनि रहल छलाह।*

आब रहल नहि गेलनि ___अगुआ कए बाजय लगलाह]

हे भगवान! हमर भाग मे छल स्वस्थहि शरीर मे बिना कोनो रोग-शोक भेनहि स्वर्ग मे जायब... तैँ हम एत' ऐलहुँ, आ स्वर्गक द्वार पर ठाढ छी क्यू मे...! मुदा ई सब चोर उचक्का जँ स्वर्गे मे जायत, तखन केहन हैत ओ स्वर्ग रहबाक लेल ?

पॉकिट-मार: से कियै बाबा ? अहाँ की बूझै छी, स्वर्ग त' सभक

लेल होइत अछि! एहि मे ककरहु बपौती त' नञि।

बाजारी: [बीमा एजेंट केँ] आब बूझू! आब....

चोर सिखाबय गुण केर महिमा,

पॉकिट मारो करै बयान!

मार उचक्का झाड़ि लेलक अछि,

पाट कपाट त' जय सियाराम!

[चोर-उचक्का-पॉकिट-मार ताली दैत अछि, सुनि कए चौंकैत भिख-मंगनी आ प्रेमी-युगल बिनु किछु बुझनहि ताली बजाब' लागैत अछि।]

चोर: ई त' नीक फकरा बनि गेल यौ!

पॉकिट-मार: एम्हर तस्कर-राज त' ओम्हर कवि-राज!

बाजारी: *(खौंझैत')* कियै ? कोन गुण छह तोहर, जकर

बखान करै अयलह एत'?

पॉकिट-मार: *(इंगित करैत आ हँसैत)* हाथक सफाई... अपन

जेब मे त' देखू , किछुओ बाकी अछि वा नञि...

बाजारी: [बाजारी तुरंत अपन जेब टटोलैत छथि _त' हाथ

पॉकिटक भूर देने बाहर आबि जाइत छनि। आश्चर्य

चकित भ' कए मुँह सँ मात्र विस्मयक आभास होइत छनि।] जा!

[बीमा बाबूकेँ आब रहल नञि गेलनि। ओ ठहक्का पाड़ि कए हँस' लगलाह, हुनकर देखा देखी कैक गोटे बाजारी दिसि हाथ सँ इशारा करैत हँसि रहल छलाह।]

चोर: [हाथ उठा कए सबकेँ थम्हबाक इशारा करैत] हँसि त'

रहल छी खूब!

उचक्का: ई बात त' स्पष्ट जे मनोरंजनो खूब भेल हैतनि।

पॉकिट-मार: मुदा अपन-अपन पॉकिट मे त' हाथ ध' कए देखू!

[भिखमंगनी आ प्रेमी-युगल केँ छोड़ि सब क्यो पॉकिट टेब' लागैत' छथि आ बैगक भीतर ताकि-झाँकि कए देख' लागैत छथि त' पता चलैत छनि जे सभक पाइ, आ नहि त' बटुआ गायब भ' गेल छनि। हुनका सबकेँ ई बात बुझिते देरी चोर, उचक्का, पॉकिट-मार आ भिख-मंगनी हँस' लागैत छथि। बाकी सब गोटे हतबुद्धि भए टुकुर- टुकुर ताकिते रहि जाइत छथि]

भिखमंगनी: नंगटाक कोन डर चोर की उचक्का ?

जेम्हरहि तकै छी लागै अछि धक्का!

धक्का खा कए नाचब त' नाचू ने!

खेल खेल हारि कए बाँचब त' बाँचू ने!

[चोर-उचक्का पॉकिट-मार, समवेत स्वर मे जेना धुन गाबि रहल होथि]

नंगटाक कोन डर चोर कि उचक्का!

आँखिएक सामने पलटल छक्का!

भिख-मंगनी: खेल खेल हारि कए सबटा फक्का!

समवेत-स्वर: नंगटाक कोन डर चोर कि उचक्का ?

[कहैत चारू गोटे गोल-गोल घुर' लागै छथि आ नाचि नाचि कए कहै छथि।]

सब गोटे: आब जायब, तब जायब, कत' ओ कक्का ?

पॉकिट मे हाथ दी त' सब किछु लक्खा!

नंगटाक कोन डर चोर कि उचक्का!

बीमा-बाबू: *(चीत्कार करैत)* हे थम्ह'! बंद कर' ई तमाशा...

चोर: (जेना बीमा-बाबूक चारू दिसि सपना मे भासि रहल

होथि एहन भंगिमा मे) तमाशा नञि... हताशा....!

उचक्का: *(ताहिना चलैत)* हताशा नञि... निराशा!

पॉकिट-मार: [पॉकिट सँ छह-सातटा बटुआ बाहर क' कए देखा ___

देखा कए] ने हताशा आ ने निराशा, मात्र तमाशा...

ल' लैह बाबू छह आना, हरेक बटुआ छह आना!

[कहैत एक एकटा बटुआ बॉल जकाँ तकर मालिकक

दिसि फेंकैत छथि आ हुनका लोकनि मे तकरा

सबटाकेँ बटौर' लेल हड़बड़ी मचि जाइत छनि। एहि

मौकाक फायदा उठबैत चोर उचक्का-पॉकिटमार

आ भिख-मंगनी कतारक सब सँ आगाँ जा' कए ठाढ

भ' जाइत छथि।]

रद्दी-बला: *[जकर कोनो नुकसान नहि भेल छल-ओ मात्र मस्ती क' रहल छल आ घटनासँ भरपूर आनन्द ल' रहल छल।]* हे बाबू भैया लोकनि! एकर आनन्द नञि अछि कोनो जे "भूलल-भटकल कहुना क' कए घुरि आयल अछि हमर बटुआ"। *[कहैत दू डेग बढा' कए नाचिओ लैत' छथि।]* ई जे बुझै छी जे अहाँक धन अहीं कैं घुरि आयल... से सबटा फूसि थिक!

बीमा-बाबू: *(आश्चर्य होइत)* आँय ? से की ?

बाजारी: *(गरा सँ गरा मिला कए)* सबटा फूसि ?

भद्र-व्यक्ति 1: की कहै छी ?

भद्र-व्यक्ति 2: माने बटुआ त' भेटल, मुदा भीतर ढन ढन!

रद्दी-बला: से हम कत' कहलहुँ ? बटुओ अहींक आ पाइयो

छैहे! मुदा एखन ने बटुआक कोनो काज रहत' आ ने पाइयेक!

बीमा-बाबू: माने ?

रद्दी-बला: माने नञि बुझलियैक ? औ बाबू! आयल छी सब

गोटे यमालय... ठाढ़ छी बन्द दरबज्जाक सामने...

कतार सँ... एक दोसरा सँ जूझि रहल छी जे के

पहिल ठाम मे रहत आ के रहत तकर बाद...?

तखन ई पाइ आ बटुआक कोन काज ?

भद्र-व्यक्ति 1: सत्ये त'! भीतर गेलहुँ तखन त' ई पाइ कोनो काज

मे नहि लागत!

बाजारी: आँय ?

भद्र-व्यक्ति2: नहि बुझिलियैक ? दोसर देस मे जाइ छी त' थोड़े

चलैत छैक अपन रुपैया ? *(आन लोग सँ* सहमतिक अपेक्षा मे-) छै कि नञि?

रमणी-मोहन: (जेना दीर्घ मौनता के तोड़ैत पहिल बेरि किछु ढंग

केर बात बाजि रहल छथि एहन भंगिमा मे... एहि

सँ पहिने ओ कखनहु प्रेमी-युगलक लग जाय

प्रेमिका कँ पियासल नजरि द' रहल छलाह त'

कखनहु भिख-मंगनिये लग आबि आँखि सँ तकर

शरीर कँ जेना पीबि रहल छलाह...) अपन प्रेमिका

जखन अनकर बियाहल पत्नी बनि जाइत छथि

तखन तकरा सँ कोन लाभ ? *(कहैत दीर्घ-श्वास* त्याग करैत छथि।)

बीमा-बाबू: *(डाँटैत)* हे...अहाँ चुप्प रहू! क' रहल छी बात

रुपैयाक, आ ई कहै छथि रूप दय...!

रमणी-मोहन: हाय! हम त' कहै छलहुँ रूपा दय! *(भिख-मंगनी*

रमणी-मोहन लग सटल चलि आबै छैक।)

भिख-मंगनी: हाय! के थिकी रूपा?

रमणी-मोहन: "कानि-कानि प्रवक्ष्यामि रूपक्यानि रमणी च...!

बाजारी: माने ?

रमणी-मोहन: एकर अर्थ अनेक गंभीर होइत छैक... अहाँ सन

बाजारी नहि बूझत!

भिख-मंगनी: *[लास्य करैत]* हमरा बुझाउ ने!

[तावत भिख-मंगनीक भंगिमा देखि कने-कने बिहुँसैत' पॉकिट मार लग आबि जाइत अछि।]

भिख-मंगनी: *[कपट क्रोधेँ]* हँसै किये छें ? हे... *(कोरा सँ पुतलाकेँ*

पॉकिट-मारकेँ थम्हबैत) हे पकडू त' एकरा... (कहैत

रमणी-मोहन लग जा कए) औ मोहन जी! अहाँ की

ने कहलहुँ, एखनहु धरि भीतर मे एकटा छटपटी

मचल यै'! रमणी-धमनी कोन बात' कहलहुँ ?

रमणी-मोहन: धूर मूर्ख! हम त' करै छलहुँ शकुन्तलाक गप्प,

मन्दोदरीक व्यथा... तोँ की बुझबैं?

भिख-मंगनी: सबटा व्यथा केर गप बुझै छी हम... भीख मांगि-

मांगि खाइ छी, तकर माने ई थोड़े, जे ने हमर शरीर

अछि आ ने कोनो व्यथा... ?

रमणी-मोहन: धुत् तोरी! अपन व्यथा तथा छोड़, आ भीतर की

छैक, ताहि दय सोच! (कहैत बंद दरबज्जा दिसि देखबैत छथि-)

पॉकिट-मार: (अवाक् भ' कए दरबज्जा दिसि देखैत) भीतर ? की

छइ भीतरमे... ?

रमणी-मोहन: (नृत्यक भंगिमा करैत ताल ठोकि- ठोकि कए) भीतर?

"धा धिन धिन्ना... भरल तमन्ना!

तेरे-केरे-धिन-ता... आब नञि चिन्ता!"

भिख-मंगनी: *(आश्चर्य भए)* माने ? की छैक ई ?

रमणी-मोहन: *(गर्व सँ)* 'की' नञि... 'की' नञि... 'के' बोल!

बोल- भीतर 'के' छथि ? के, के छथि?

पॉकिट-मार: के, के छथि?

रमणी-मोहन: एक बेरि अहि द्वारकेँ पार कयलेँ त' भीतर भेटती

एक सँ एक सुर नारी,उर्वशी ___ मेनका रम्भा... *(बाजैत- बाजैत जेना मुँहमे पानि आबि जाइत छनि--)*

भिख-मंगनी: ईः! रंभा...मेनका...! *(मुँह दूसैत)* मुँह-झरकी

सब... बज्जर खसौ सबटा पर!

रमणी-मोहन: *(हँसैत)* कोना खसतैक बज्जर ? बज्र त' छनि देवराज

इन्द्र लग! आ अप्सरा त' सबटा छथि हुनकहि नृत्यांगना।

[भिख-मंगनीक प्रतिक्रिया देखि कैक गोटे हँस' लगैत छथि]

पॉकिट-मार: हे....एकटा बात हम कहि दैत छी ई नहि बूझू जे

दरबज्जा खोलितहि आनंदे आनंद!

बाजारी: तखन ?

बीमा-बाबू: अहू ठाम छै अशांति, तोड़-फोड़, बाढ़ि आ सूखार ?

आ कि चारू दिसि छइ हरियर, अकाससँ झहरैत

खुशी केर लहर आ माटिसँ उगलैत सोना ?

पॉकिट-मार: किएक ? जँ अशांति, तोड़-फोड़ होइत त' नीक... की

बूझै छी, एत्तहु अहाँ जीवन बीमा चलाब' चाहै छी की ?

चोर: (एतबा काल उचक्का सँ फुसुर-फुसुर क' रहल

छल आ ओत्तहि, दरबज्जा लग ठाढ़ छल एहि

बात पर हँसैत आगाँ आबि जाइत अछि) स्वर्गमे

जीवन-बीमा ? वाह! ई त' बड्ड नीक गप्प!

पॉकिट-मार: देवराज इंद्रक बज्र.. बोलू कतेक बोली लगबै छी?

उचक्का: पन्द्रह करोड़!

चोर: सोलह!

पॉकिट-मार: साढे-बाईस!

बीमा-बाबू: पच्चीस करोड़!

रमणी-मोहन: हे हौ! तोँ सब बताह भेलह ? स्वर्गक राजा केर बज्र,

तकर बीमा हेतैक एक सय करोड़ सँ कम मे ? *[कतहु सँ एकटा स्टूलक जोगाड़ क' कए ताहि पर चट दय ठाढ़ भ' कए-]*

पॉकिट-मार: बोलू, बोलू भाई-सब! सौ करोड़!

बीमा-बाबू: सौ करोड़ एक!

चोर: सौ करोड़ दू ___

रमणी-मोहन: एक सौ दस!

भिख-मंगनी: सवा सौ करोड़!

चोर: डेढ़सौ करोड़...

भिख-मंगनी: पचपन ___

चोर: साठि ___

भिख-मंगनी: एकसठि ___

[दूनूक आँखि मुँह पर 'टेनशन' क छाप स्पष्ट भ' जाइत छैक।]

चोर: *(खौंझैत)* एक सौ नब्बै...

[एतेक बड़का बोली पर भिख-मंगनी चुप भ' जाइत अछि।]

पॉकिट-मार: त' भाई-सब! आब अंतिम घड़ी आबि गेल अछि ___

190 एक, 190 दू, 190...

[ठहक्का पाड़ि कए हँस' लगलाह बाजारी, दूनू भद्र व्यक्ति आ रद्दी-बला-]

पॉकिट-मार: की भेल ?

चोर: हँस्सीक मतलब ?

बाजारी: *(हँसैते कहैत छथि)* हौ बाबू! एहन मजेदार मोल-

नीलामी हम कतहु नञि देखने छी!

भद्र-व्यक्ति 1: एकटा चोर...

भद्र-व्यक्ति 2: त' दोसर भिख-मंगनी...

बाजारी: आ चलबै बला पॉकिट-मार...

[कहैत तीनू गोटे हँस' लागै छथि]

बीमा-बाबू: त' एहि मे कोन अचरज?

भद्र-व्यक्ति 1: आ कोन चीजक बीमाक मोल लागि रहल अछि ___

त' बज्र केर!

भद्र-व्यक्ति 2: बज्जर खसौ एहन नीलामी पर!

बाजारी: *(गीत गाब' लागै' छथि)*

चोर सिखाबय बीमा महिमा,

पॉकिट-मारो करै बयान!

मार उचक्का झाड़ि लेलक अछि,

पाट कपाट त' जय सियाराम!

दुनू भद्र-व्यक्ति: *(एक्कहि संगे)* जय सियाराम!

[पहिल खेप मे तीनू गोटे नाच'-गाब' लागै छथि। तकर बाद धीरे-धीरे बीमा बाबू आ रद्दी-बला सेहो संग दैत छथि।]

बाजारी: कौआ बजबै हंसक बाजा

भद्र-व्यक्ति 1: हंस गबै अछि मोरक गीत

भद्र-व्यक्ति 2: गीत की गाओत ? छल बदनाम!

बाजारी: नाट-विराटल जय सियाराम!

समवेत: मार उचक्का झाड़ि लेलक अछि।

पाट-कपाटक जय सियाराम!

[चोर-उचक्का-पॉकिट-मार ताली दैत अछि, सुनि कए चौंकैत भिख-मंगनी आ प्रेमी-युगल बिनु किछु बुझनहि ताली बजाब' लागैत अछि।]

(क्रमशः)



श्री बैकुण्ठ झा

पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-२४-०७-१९५४ (ग्राम-भरवाड़ा, जिला-दरभंगा), शिक्षा-स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र),पेशा-शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीत कऽ रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक ''हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी कऽ लेखन। अहि के अलावा हिन्दी मे लगभग १५ उपन्यास तथा कहानीक लेखन।–**सम्पादक**

दुनियाँ तँ ई धोखा अछि

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम
ऊगि रहल पनिसोखा अछि। दुनियाँ...
कौआ कर्र-कर्र करकराय रहल,
आँगनमे धान सुखाय रहल।
पेपर रेडियो टी.वी.पर
नेतहुँ तँ शोर मचाय रहल।
हो जिन्दा मुर्दा गाय-महीश
वृद्धा-पेंशन हो या खरात-
हर ठाम कमीशन खाय रहल,
हँसि-हँसि कय गाल बजाय रहल।
आजुक युग के ई शोभा अछि,
ई मान बराईक नोभा अछि। दुनियाँ..
दुनियाँमे अछि सब चोर-चोर,
जकरा हिस्सा नईं भेंटि रहल-
मचबै सगरो तऽ वैह शोर।
काटय केउ सेन्ह अन्हरियामे,
लूटय तऽ केउ इजोरियामे
केउ ठूसय हीरा वोरियामे
बन्दूक बनैत अछि गोहियामे
अछि सबहक सरदार सिपाही
ऊठय निश्चिन्त ओढ़ढ़ियामे
ईमान जतय घर टाटक अछि
ई महल अटारी पापक अछि
दुनियाँ तँ ई धोखा अछि
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण
ऊगि रहल पनिसोखा।

(१६.०९.९१)

लिखलौं कतेक पत्र कर जोरि जोरि कऽ

बूझब ओ छल नोरक जगहकँ छोड़ि-छोड़ि कऽ
लिखलौं...
झहरै तऽ बूँद सावनमे, खुब झूमि-झूमि कऽ
बरसै तऽ नोर नित, कपोल चूमि-चूमि कऽ
लिखलौं...
मुरझाय बन तराग बाग तऽ ओ गृष्ममे,
पावस उमंग घोरि रहल, आईपवनमे,
लिखईत छी पाँति हम, ई कलम बोरि-बोरि कऽ।
लिखलौं कतेक...
भेटत नम बूँद फेर, जखन हिम जे पिघलि जैत,
आओत कोना ओ बाढ़ि औ! सरिता सेहो सुखैत
ई लिखि रहल छी आई, आँखि फोड़ि-फोड़ि कऽ।
लिखलौं कतेक...
तोरि-गेरि-तोरि कऽ

मुहब्बतमे तऽ तरपब भाग्यमे लिखला प्रभुसबके

रही जौं दूर प्रियतमसँ सजाये मौत त ओ थिक। रही...२

यक्षक विरह छल वर्षकेँ जनलक जगत सगरो-

जहाँ वर्षो विरह के बात छै-

वनवास त ओ थिक। जहाँ...२

ई उपवन ओ शिखा पर्वत आ कल-कल बहि रहल सरिता

अगर अली अछि नज उपवनमे त सुन्दरता कतय ओ थिक। मुहब्बत...

चितवन हो यदि चंचल आ तन

यौवनसँ हो भारी

मगर पावसमे पहु परदेश हो

यौवन कहाँ ओ थिक।

मुहब्बत...

परदेश

रुन-झुन बाजय पायल हमर फूजल बान्हल केश

औ मोर पाहुन धेलहुँ योगिन वेश।

डाढ़ि-डाढ़िपर फुद-फुद्दी सभ फुदकि रहल,

खढ़-खढ़केँ समटि बनौने केहन महल

करै परिश्रम मिल कय दुनू नईं छन्हि कोनो क्लेश।औ..

बिजुलीसँ चमकै घर, मुदा अन्हरिया यौ।

टिम-टिम दीप करै छै ओतय अन्हरिया औ

दिन गनैत छी बीति रहल अछि राति कहाँ अछि शेष औ...

सीता शक्ति राम सौम्य जग-प्राण बनल।

पौलनि जगमे नाम घूमि जंगल-जंगल॥

महल त्यागि वनवाश गेलन्हि बना तपस्विन वेश!

औ मोर...

जतबय दुःख हम कहब अहाँ ततबै बुझबै

नहिं पहुँचत जौं पत्र अहाँ नहिंये जनबै

जड़तै तेल कोना नईं घरमे पहु जकर परदेश।

औ मोर...

(२०.१०.९१)

रहि-रहि आँचर उड़ि जाय किया

अहाँ आँचर समटि लजई किया। रहि-रहि..

देखि बागमे सुमन व्यवहार करू,

उठा निज नयनकेँ चारि करू,

अली हर कलीसँ फुस-फुसाय किया। रहि रहि..

चमन छी अहाँ खिलि रहल अय सुमन।

लटसँ लिपटि घूमि चूमन पवन

पड़य जतय नजरि लिपटि जाय किया! रहि रहि...

भार सहय कोना करि केहरि अहाँक

राग माधुरी सुनाबय पायल के झनक

देखि अहाँ के हिरदय जुराय किया।

रहि रहि आँचर..

परदेश गेलहुँ

हमरो छोड़लहुँ, छोड़लहुँ माय के छोड़ि देलहुँ घरद्वार

परदेश गेलहुँ...

सोनू-मोनू झगड़ा कय-कय हमरो माथ भुकाय रहल

बहिकिरनी तऽ नईं अछि घरमे, कहू करत के हमर टहल?

बौआ सब बौआय रहल अछि, पढ़तै कथी कपार!

परदेश गेलहुँ..

जन-वन किल्लौल करै छै, कोना जेबै हम दरबज्जा

बौआ दौड़ल छल सड़कपर, गेलहुँ रोटी भेल भुज्जा

माय छथि बूढ़, छी एसगर घरमे कोना उठत ई भार!

परदेश गेलउँ। हमरो...

अहाँ जनै छी लोक केहन अछि, के कऽ देतै हाट-बजार,

साल-साल त बाढ़ि अबै छै,उजरै छै सबके संसार,

हेतै समुद्र आँगन-घर सगरो,के कउ देतै पार!

परदेश गेलउँ। हमरो छोड़लौ...



वासुदेव सुनानी,

ओड़िया कवि

ओड़ियासँ अंग्रेजी अनुवाद शैलेन राउत्रॉय आ अंग्रेजीसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर द्वारा

अनुमति

हमरा अनुमति अछि श्रीमान!

हम कए ली विश्राम कनेक काल?

अहाँक आदेशानुसार
छाह कँ देने अछि बहारि,
बत्तू कँ देने छी खोआए,
अहाँक नालाकँ कए देने छी साफ,
नहि रहत कोनो दुर्गन्ध आब।

हमर अछि ढोल बजबए बला मधुमाछी
युगसँ अहाँक मनोरंजनार्थ
आ हमर आँगुर स्थिरताक राखए आश
हम करी विश्राम थोड़बे काल?

हम करैत छी अनुभव पुरखाक स्वेद
हमर देव, हमर मृतात्मा।

ताहि लेल प्रिय श्रीमान्
घंटा भरिक विश्राम मात्र अभिवादन जकाँ
किएक तँ हमर दुर्गन्ध, स्वेदक आ किछु आन वस्तुक।
हम करए छी प्रतीक्षा अहाँक नीक समय तृप्तिक
संगहि अपन कीट-संक्रमित जिनगीक समाप्तिक संकेतक।

प्रतीक्षा सेहि भरि दैत अछि थकान, श्रीमान् प्रियवर
विशेषकए लाख बरखक जहुँ ई होए।

से हम करए छी विश्राम थोड़ेक काल, श्रीमान्?
कारण हमरो सन् तुच्छकँ बुझल छैक छोट-मोट विद्रोहक कला।



विभा रानी

(लेखक- एक्टर- सामाजिक कार्यकर्ता)

बहुआयामी प्रतिभाक धनी विभा रानी राष्ट्रीय स्तरक हिन्दी व मैथिलीक लेखिका, अनुवादक, थिएटर एक्टर, पत्रकार छथि, जिनक दर्ज़न भरि से बेसी किताब प्रकाशित छन्हि आ कएकटा रचना हिन्दी आ मैथिलीक कएकटा किताबमे संकलित छन्हि। मैथिली के 3 साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकक 4 गोट किताब "कन्यादान" (हरिमोहन झा), "राजा पोखरे में कितनी मछलियां" (प्रभास कुमार चाऊधरी), "बिल टेलर की डायरी" व "पटाक्षेप" (लिली रे) हिन्दीमे अनूदित छन्हि। समकालीन विषय, फ़िल्म, महिला व बाल विषय पर गंभीर लेखन हिनक प्रकृति छन्हि। रेडियोक स्वीकृत आवाज़क संग ई फ़िल्म्स डिविजन लेल डॉक्यूमेंटरी फ़िल्म, टीवी चैनल्स लेल सीरियल्स लिखल व वॉयस ओवरक काज केलन्हि। मिथिलाक 'लोक' पर गहराई स काज करैत 2 गोट लोककथाक पुस्तक "मिथिला की लोक कथाएं" व "गोनू झा के किस्से" के प्रकाशनक संगहि संग मिथिलाक रीति-रिवाज, लोक गीत, खान-पान आदिक वृहत खज़ाना हिनका लग अछि। हिन्दीमे हिनक 2 गोट कथा संग्रह "बन्द कमरे का कोरस" व "चल खुसरो घर आपने" तथा मैथिली में एक गोट कथा संग्रह "खोह स' निकसइत" छन्हि। हिनक लिखल नाटक 'दूसरा आदमी, दूसरी औरत' राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह भारंगममे प्रस्तुत कएल जा चुकल अछि। नाटक 'पीर पराई'क मंचन, 'विवेचना', जबलपुर द्वारा देश भरमे भ रहल अछि। अन्य नाटक 'ऐ प्रिये तेरे लिए' के मंचन मुंबई व 'लाइफ़ इज नॉट अ ड्रीम' के मंचन फ़िनलैंडमे भेलाक बाद मुंबई, रायपुरमे कएल गेल अछि। 'आओ तनिक प्रेम करें' के 'मोहन राकेश सम्मान' से सम्मानित तथा मंचन श्रीराम सेंटर, नई दिल्लीमे कएल गेल। "अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो" सेहो 'मोहन राकेश सम्मान' से सम्मानित अछि। दुनु नाटक पुस्तक रूप में प्रकाशित सेहो अछि। मैथिलीमे लिखल नाटक "भाग रौ" आ "मदद करू संतोषी माता" अछि। हिनक नव मैथिली नाटक अछि बलचन्दा।

विभा 'दुलारीबाई', 'सावधान पुरुरवा', 'पोस्टर', 'कसाईबाड़ा', सनक नाटक के संग-संग फ़िल्म 'धधक' व टेली -फ़िल्म 'चिट्ठी'मे अभिनय केलन्हि अछि। नाटक 'मि. जिन्ना' व 'लाइफ़ इज नॉट अ ड्रीम' (एकपात्रीय नाटक) हिनक टटका प्रस्तुति छन्हि।

'एक बेहतर विश्व-- कल के लिए' के परिकल्पनाक संगे विभा 'अवितोको' नामक बहुउद्देश्यीय संस्था संग जुड़ल छथि, जिनक अटूट विश्वास 'थिएटर व आर्ट-- सभी के लिए' पर अछि। 'रंग जीवन' के दर्शनक साथ कला, रंगमंच, साहित्य व संस्कृति के माध्यम से समाज के 'विशेष' वर्ग, यथा, जेल- बन्दी, वृद्धाश्रम, अनाथालय, 'विशेष' बच्चा सभके बालगृहक संगहि संग समाजक मुख्य धाराल लोकक बीच सार्थक हस्तक्षेप करैत छथि। एतय हिनकर नियमित रूप से थिएटर व आर्ट वर्कशॉप चलति छन्हि। अहि सभक अतिरिक्त कॉर्पोरेट जगत सहित आम जीवनक सभटा लोक आओर लेल कला व रंगमंचक माध्यम से विविध विकासात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम सेहो आयोजित करैत छथि। सम्पादक

भाग_रौ

(संपूर्ण मैथिली नाटक)

लेखिका - विभा_रानी

पात्र - परिचय

मंगतू
भिखारी बच्चा 1
भिखारी बच्चा 2
भिखारी बच्चा 3
पुलिस
यात्री 1
यात्री 2
यात्री 3
छात्र 1
छात्र 2
छात्र 3
पत्रकार युवक
पत्रकार युवती
गणपत क्का
राजू - गणपतक बेटा
गणपतक बेटी
गुंडा 1
गुंडा 2

गुंडा 3
हिज़ड़ा 1
हिज़ड़ा 2
किसुनदेव
रामआसरे
दर्शक 1
दर्शक 2

आदमी
तांबे
स्त्री - मंगतूक माय
पुरुष - मंगतूक पिता

"भाग_रौ"

(संपूर्ण मैथिली नाटक)

विभा रानी

दृश्य: 1

(ट्रेनक दृश्य। (ट्रेन नञि भ' क' ई कोनो हाट- बजार अथवा मेला-ठेला सेहो भ' सकैत अछि।) ट्रेन मे महिला आ पुरूष यात्री। भीख माँग' बला तीन टा बच्चा चढ़ैत अछि। एक के गरदनि मे हारमोनियम, दोसराक हाथ मे पाथरक दू टा खपटा। तेसरक हाथ मे खँजुड़ी। तेसर बच्चा उमिर में सभ सँ छोट। तीनू क तीनू फाटल, चीकट कपड़ा मे अछि। बच्चा नं. 1 हारमोनियम पर सभ' स' नवीन फिल्मी गीतक धुन बजाक गाबि रहल अछि। दोसर बच्चा खपटा बजा-बजाक' ओकरा संगे गएबाक प्रयास क' रहल अछि। छोटका बच्चा खंजड़ी बजा रहल अछि आ गीतक पंक्ति पकड़बाक प्रयास मे आधा-छिया पंक्ति गबैत अछि। तीनूक स्वर; सुर-ताल में कोनो एकरूपता नञि अछि। सभस' छोटका; बच्चा नं. 3 सभ स' पाई मँगैत अछि। किओ देइत अछि, किओ डपटैत अछि, किओ कोनो दोसर दिस तकैत अछि, किओ आँखि मूनि लेइत अछि।)

(ट्रेन रूकैत अछि। तीनू बच्चा उतरि जाइत अछि। मंचक एकटा कोन्टी मे तीनू ठाढ़ भ' क' दिनु भरका कमाई गिनैत अछि।)

बच्चा 1: कतेक?

बच्चा 2: साढ़े एगारह।

बच्चा 1: बस? भरि दिन ट्रेने-ट्रेने घूमल आ तइयो साढ़े एगारहे? अकरा मे त' अपना सभक लेल चाहो-मूढ़ी नञि। (सभस' छोटका बच्चा स') आँए रौ, खाए लेल भरि थारी आ माँग' मे सभ स' पिछारी! ठीक स' माँगै कियै नै छें रे?

(बच्चा 3 बिटिर-बिटिर तकैत रहैत अछि।) मुँह की निहारि रहल छें? हम कोनो की गोविंदा छी कि रितिक रोशन। आ तोहों आमिर खान नञि छें। जतेक गरीब छें, तकरो स' बेसी गरीब बनल रह। तखने दू टा पाइ भेटतौ।

बच्चा 3: (सहमैत) ई पटना छै कि दानापुर?

(दुनू बच्चा ई सुनि हठात ठठा पड़ैत अछि। छोटका फेर बिटिर-बिटिर मुंह तकैत रहैत अछि।)

बच्चा 3: रौ बूड़ि। ई पटना नञि छै, जकरा ककरो स' नञि पटै छै। दानापुर माने दाना स' पूरम पूरा। हमर आओरक पेट मे त' मरल सनकिरबो नञि अछि। की करबहीं रौ जानि क' की हम कत' छी?

बच्चा 1: भूख लागलए।

बच्चा 2: तकरा लेल पटना-दानापुर मे रहब जरूरी छै? भूख त' कखनो आ कतहु लागि जाइ छै। दम धर।

बच्चा 3: पटना सिटी?

बच्चा 2: ऊँ हूँ। पटना साहेब। सिटी त' कहिया ने बदलि गेलै।

बच्चा 1: रौ बता, सिटी स' साहेब भ' गेला से' की भ' गेलै? की बदलि गेलै?

बच्चा 2: बदलि गेलै ने? जनाना स' मर्दाना भ' गेलै।

बच्चा 1: माने? (गंभीर भ' क')

बच्चा 2: माने.. सिटी जनाना आ साहेब मर्दाना (दुनू हँसैत अछि। बच्चा 3 ओहिना बिटिर-बिटिर मुंह तकैत रहैत अछि)

बच्चा 1: नाम बदल' स' तकदीर सेहो बदलै छै की? सिटी स' साहेब भ' गेलै त' हमरा आओरक भूख-पियासक रंग बदलि गेलै की? अपना आओर के काज भेटलौ? पाइ भेटलौ? तहन कियैक एतेक मगजमारी? पटना कि दानापुर कि साहेब की फारबिसगंज.. हूँह!

बच्चा 3: (उसाँस भरिक') भूख लागल अछि।

बच्चा 1: रौ सार! जो, कोनो हाथी पकड़ि ला आ घोंटि जो। सार.. भूख लागलए, भूख लागलए.. नकिया देलक ईत'..

बच्चा 2: आजुक समाचार?

बच्चा 2: बच्चा बेमार। हजारो नेन्ना मरि गेलै, खाएक अभाव मे..

बच्चा 3: हमरा खाए ला दे। नञि त' हमहू मरि जाएब।

बच्चा 1: त' मरि जो। प्रधानमंत्री छें जे मरि जेबें त' देसक काज-धंधा थम्हि जेतै।

बच्चा 3: परधानमंत्री कोनो खायबला चीज होइ छै। केहेन होइ छै? कत' भेटै छै?

बच्चा 2: (ओकर बात पर धेयान देने बेगर) तों कोना बुझलही? तों त' अखबार नञि पढ़ै छें।

बच्चा 1: टेसन मे टीबी छै ने। ओकरा मे देखलियै। बढ़िया स' बूझाब' लेल मँगतुआ त' अछिए।

बच्चा 2: ओकरा कोना बूझल छै?

बच्चा 1: ओ पढुआ छै। अखबार पढ़ै छै।

बच्चा 2: भिखमंगो सभ अखबार पढ़ै छै? बाप रौ!

बच्चा 1: ओ कीनै नञि छै। प्रेसक बाहर बैसै छै। चौकीदार ओकरा द' दै छै अखबार।

बच्चा 3: भीख मे अखबार! भीख मे चाह-मूढ़ी.. (बजैत-बजैत थम्हि जाइ छै: दुनू बच्चा ओकरा घूरै छै।)

बच्चा 2: मंगतू सभटा पढ़ि लेइत छै?

बच्चा 1: हँ, रौ। पूरा अखबार चाटि जाइत छै। पूरा दुनियाक हाल ओकरा बूझल रहै छै। ओ पढ़ल छै।

बच्चा 3: पढ़ल की होइ छै? पटना-दानापुर जकाँ कोनो टेसन छै की?

बच्चा 2: (स्नेह स') तो नञि बुझबे अखन।

बच्चा 1: पढ़ल बहुत पैघ चीज होइत छै। पढ़ि-लिखि क' लोक बहुत पैध-पैध लोक बनि जाइत अछि। मुदा अपना आओरक तकदीर मे ई नञि अछि।

बच्चा 2: (भरोस दियबैत) नञि छै त' नञि छै। मंगतुआ छै नें पढ़ल-लिखल। अपने बिरादरीवाला। अपना आओर स' गप्प-सप्प सेहो करै छै। दुनिया जहानक समाचार त' दइते छै।

(अई बेर तेसरका बच्चा कएक बेर हाथ मुँह स' भूख लगबाक संकेत द' चुकल अछि। सभ बेर दुनू बच्चा ओकरा घूरैत अछि। तेसरका सभ बेर डेराक शांत भ' जाइत अछि।)

बच्चा 1: हे.. देख ओम्हर! अपन गोबिन्दा।

बच्चा 3: ई कोनो नव भिखमंगा ऐलै की? आब त' आओरो भीख नञि भेटत। .. भूख..

बच्चा 2: मंगतुआ छै।

बच्चा 3: ई एतेक पैघ घर ओकर छै? आ तइयो भीख..

बच्चा 1: धुरि बुडि.बक। ई अखबारक ओफीस छियै। अई ठाँ क सभस' पैध अखबारक ओफीस।

बच्चा 2: ऐँ मारल! ओ गुड्डी बकाट्टा। बुझा गेल जे ओकरा पढ़ब-लिखब कोना एलै।

बच्चा 1: अखबारक बगल में रहला स' किओ पढ़ि जाइ छै। मू.ढ़ीक दुकान लग रहला स' मूढ़ी भेटि जाइत छै?

बच्चा 3: मूढ़ी.. भूख..

दुनू: चोप!

बच्चा 2: कोनाक' ऊ पढ़ि गेलै तहन?

बच्चा 3: हमहू पढ़ब।

बच्चा 1: रौ, कुकुरक नांगरि। पढ़िक' की बनबही? सोनिया गांधी कि मनमोहन सिंह?

बच्चा 2: राबड़ी देवी। पढ़क जरूरते नञि।

बच्चा 3: (खिसिया क') पढ़ा नञि देबें, खाए लेल नञि देबें, त' करब की? मूति!

बच्चा 2: पढ़ाईक गेरंटी नञि । खाएक गेरंटी त' आओरो नञि।

बच्चा 1: कोना पढ़बही रे? मंगतुआ गप्प दोसर छै। ओकरा लग टेम छै। ओकरा भीखो खूब भेटै छै?

बच्चा 3: पढ़ले सन्ते ने! हमहू पढ़ि लेब त' हमरो बेसी भीख भेटत।

बच्चा 1: चल, चल ..

बच्चा 3: कोम्हर? हमरा भूख लागलए।

बच्चा 2: मंगतुआ लग चल। ओकरा खेनाइयो-पिनाई बहुत रास भेटै छै?

बच्चा 3: पढ़िक' भीख मांगला स' खेनाइयो फ्री.. हमरा पढ़ए दे।

बच्चा 1: (दुनू क हाथ पकड़िक एक दिस ल' जाइत) चल, चल पानि सेहो बरस' बला छै। चल ओम्हर (दुनू रास्ता क्रॉस करबाक अभिनय करैत अछि। तेसरका पाछा रहि जइत अछि। दोसरका ओकरा पार करबाक इशारा करैत अछि। तेसरका डेराइत अछि। दोसरका फेर एम्हर अछि। ओकरा एक धौल लगाबैत अछि। फेर खींचिक' रोड पार करैत अछि। पार क' क' तीनू मंगतू लग पहुंचइत अछि। एक गोट मोटरी, एक गोट कटोरा, किछु पाइ ओकरा लग पड़ल अछि। प्रकाश तीनू बच्चाक संगे-संगे आब मंगतू पर।)

बच्चा 1: की रौ मंगतुआ। की भ' रहल छौ।

मंगतू: के? ओह! चनरा, गोबरा, झुनमा रौ! आ बइस, केहेन चलि रहल छौ धंधा-पानी?

बच्चा 2: भीख माँगब धंधा पानी होइ छै? आ सेहो अई अंधड़ पानि में!

बच्चा 1: हमरा त' फूटलो आँखि नञि सोहाइये ई बरखा- बुन्नी। लोक आओर घर मे, आफिस में बन्न। दुकान दौरी सेहो ठप्प। लोक आओरक धंधा-पानी नञि त' हमरा आओर के भीख के देत?

मंगतू: हमरा त' बड़ड नीक लगैय' ई बरिसात। चारू दिस हरियाली, मोन के बड़ड सोहाओन लगैत अछि।

बच्चा 1: पेट भरल रहला पर बनरनियो रानी मुखर्जी लागै छै।

बच्चा 2: अपना घर मे बइसक' चाह पकौड़ी उड़ाब' मे केकरा मजा नञि एतै?

(चाह पकौड़ीक नाम स' बच्चा 3 फेर हाथ स' भूख बतबइत अछि।)

बच्चा 1: हमरा आओरक कोनो ठेकाने नञि! देखै छियै नें जे जहन पानि बरसै छै, तहन भिजैत माय कोरा मे भीजैत बच्चा के ल' क' बिल्डिंगे-बिल्डिंग, घरे-घर बउआ अबैत छै। मुदा कतहु-कोनो चौकीदार ओकरा अपना बिल्डिंग के नीचा आसरा नञि देई छै।

मंगतू: छै। तइयो पानि बरसै छै त' नीक लागै छै। देह मे जिनगी सुरसुराय लागै छै। पानि छै तैं। जिनगी छै नै रौ..! (स्वर बदलिक') आ, तों सभ भिंगमे कियै। तोरा-आओर के त' घर छौ। हमरा जकाँ नञि छौ ने।

बच्चा 1: हँ, सहीए । तोरा नाहित नञि छियै रौ। रहितियैक त' भरि दिन ई टरेन, ऊ बस, नञि करैत रहितहुँ। लोकक लात-बात नञि सुनतहुँ। ई गर्दनि देख.. चिकरि-चिकरि के बाँस जतेक पैध भूर भ' गेल अछि।

बच्चा 2: आ जे दू टा पाइ भेटै छै, ओहू में पुलिस, दादा सभक..

(ओ बाजिए रहल अछि कि एकटा पुलिस डंडा घुमबैत ओम्हर अबैत अछि। तीनू के देखिते तीनू पर ताबड़तोप. डंडा बरसाब' लगैत अछि। तीनू एम्हर-ओम्हर बचबाक प्रयास करैत अछि। ओही मे देह छीपि-छीपि के पुलिस से नञि मारबक नेहोरा करैत अछि। मंगतूक सेहो प्रयास। अई क्रम मे एक -दू डंडा ओकरो लागि जाइत अछि।)

पुलिस: सार सभ! फेर एम्हर आबि गेलँ। चढ़बे बस ट्रेन में माँग' लेल भीख, आ करबैं पाकिटमारी।

बच्चा 1: नञि साब! हम सभ त'..

पुलिस: चोप.. भोसड़ी के.. सार, बहिनक इयार! ई डंडा एम्हर स' घुसतौ त' मुँह दने निकलतौ। चल भाग, जो ओई गल्ली मे।

(तीनू पुलिसक बताओल गल्ली मे भागि जाइत अछि। पुलिसबाला विजयी भाव स' बस स्टैंड पर ठाढ़ लोक आओर के देखैत अछि आ फेर मंगतू दिस।)

मौज कर रो बाउ, मौज कर। तोहरे भाग मे मौज लिखल छौ। ऐहेन ने देह बना के आएल छें जे मौजे-मौज छौ।

(कहैत ओ गल्ली दिस बढ़ैत अछि।) क्रमश



श्री विद्यानन्द झा

पञ्जीकार प्रसिद्ध मोहनजी

जन्म-09.04.1957, पण्डुआ, ततैल, ककरौड़ (मधुबनी), रशाढ़य (पूर्णिया), शिवनगर (अररिया) आ' सम्प्रति पूर्णिया। पिता लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया|पितामह-स्व. श्री भिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन,32 वर्षक वयससँ पञ्जी-प्रबंधक संवर्द्धन आ संरक्षणमे संलग्न। सम्पादक

ॐ

॥श्री गणेशाय नमः॥

"सृष्टि चक्र"

आदिमे शून्य छल शून्यसँ शान्ति छल।
शून्य केर सत्ता दिग-दिगन्त व्याप्त छल।
शून्यक विधाता शून्यसँ आक्रान्त छल।
शून्यसँ प्रारम्भ भए शून्यहिसँ विराम छल।

विधिना विधान कएल रचना संसार कएल।
खेत पथार पोखरि ओ जीवक संचार कएल।
दिति ओ अदितिसँ सृष्टिक विस्तार कएल।
कर्म सभक बान्हि बान्हि धरतीपर आनि धएल।

शून्यक विखंडनसँ वृत्तक विस्तार भेल।
पोखरि ओ झांखड़ि पर्वत पहाड़ भेल।
नदी-नद तालाब ओ वनस्पति हजार भेल।
जीव जङ्गम स्थावर ओ गतिमान संसार भेल।

चन्द्र सूर्य नक्षत्र ओ वायु वारिद नीर।
धरा-गगन धरि व्याप्त भेल विद्युत ओ समीर।
सभतरि पसरल तेज पुञ्ज चकाचौंध गम्भीर।
तम-तम करइत दिन दुपहरिया नयन भरल ओ नीर।

जल चर- थलचर- नभचर नाना।
अप्पन-अप्पन धएलक बाना।
विविध भेष ओ भाषा नाना।
कएलक निज-निज गोत्र बखाना।

विष ओ अमृत संग जनमि गेल।
स्नेह-प्रेम-आघात प्रगट भेल।
दोस्त-महिम कुटुम्ब अमरबेल।
चतरि-चतरि चहुँओर पसरि गेल।

एक दिशि जनमल चोर-उचक्का।
दोसर दिशि भलमानुष सुच्चा।
सृष्टि हेतु- समधानल सभटा।
प्रभु सभ करथि हुनक ई छिच्छा।

गोङ बधिर बजबैका नाङ्गर।
श्वेत-श्याम सत्वर ओ अजगर।
दीर्घकाय ओ दुव्वर पातर।
सभटा रचलैन्हि ओ विश्वम्भर।

भूख रचल प्यास रचल।
श्रम ओ संधान रचल।
रोग रचल व्याधि रचल।
औषध अपार रचल।

काम भूख दाम भूख वासनाक उग्रभूख।
शान-मान-दान भूख भूखक हजार रूप।
ई भूख ओ भूख भूखक विद्रूप रूप।
भूख मुदा बढ़िते गेल धधकैत विकराल रूप।

शाम-दाम-दण्ड भेद शासन कुशासन।
काम-क्रोध-लोभ-मोह विरचल "महाशन"।
राग-द्वेष-प्रेम-वैर पसरल हुताशन।
सृष्टि चक्र चलैत रहल वैदिक ऋचा सन।....।

घर बनल गाम बनल नगर ओ धाम बनल।
जनता जरल सन नेता भगवान बनल।
देशक खेवैया झुठ्ठा बेइमान बनल।
भक्तिक भभटपन पण्डा शैतान बनल।
सृष्टि चक्र चलैत रहल वैदिक ऋचा सन।...

पाद-टिप्पणी:

१. वारिद-मेघ
२. समधानल-ओरियाकऽ
३. छिच्छा-स्वभाव
४. संधान-अन्वेषण,खोज
५. महाशन-विष्णु
६. हुताशन-अग्नि.



विनीत उत्पल (१९७८-)।

आनंदपुरा, मधेपुरा। प्रारंभिक शिक्षासँ इंटर धरि मुंगेर जिला अंतर्गत रणगांव आऽ तारापुरमे। तिलकामांझी भागलपुर, विश्वविद्यालयसँ गणितमे बीएससी (आनर्स)। गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालयसँ जनसंचारमे मास्टर डिग्री। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्लीसँ अंगरेजी पत्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्लीसँ जनसंचार आऽ रचनात्मक लेखनमे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कनफ्लिक्ट रिजोल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामियाक पहिल बैचक छात्र भऽ सर्टिफिकेट प्राप्त। भारतीय विद्या भवनक फ्रेंच कोर्सक छात्र।

आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता पाठ, परिचर्चा आदि प्रसारित। देशक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे विभिन्न विषयपर स्वतंत्र लेखन। पत्रकारिता कैरियर- दैनिक भास्कर, इंदौर, रायपुर, दिल्ली प्रेस, दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली, फरीदाबाद, अकिंचन भारत, आगरा, देशबंधु, दिल्ली मे। एखन राष्ट्रीय सहारा, नोएडा मे वरिष्ट उपसंपादक।–सम्पादक

ककर गलती

कतेक दिवससँ
सोचैत रही
जे
गाम जाएब
परञ्च
दिल्लीक उथल-धक्कासँ
मुक्त होएब तखन नञि।

पिछला दशहरामे
जखन गाम पहुँचलहुँ
तऽ आड़ि पकड़ि टोल
घुसैत रही।
ओहि ब्रह्मबाबाक ठामपर
एकटा स्त्रिगन बैसल रहथि
की कहू, धक्कसँ रहि गेलहुँ
कंठक थूक कंठहिमे सूखि गेल

स्त्रिगन कोनो भूत नहि छलीह
ओऽ कोनो डायन-जोगिन नहि
रहथि
ओऽ गौरी दाई छलीह
बियाहक ठामे साल
विधवा भऽ गेलीह

ताहि दिनसँ ओऽ नवयुवती
उजरा नुआ पहिरैत छथि
सीथमे चुटकी भरि सेनूर नहि
गुमसुम रहैत समय काटि रहल
छथि।

तऽ हुनका देखि कऽ
हरदम सोचैत छी
की यैह मिथिला थिक

यैह हमर संस्कृति थिक
जे मन कैँ मारि कए एकटा
नवयुवती जीवन काटि रहल अछि
ओकरा कियो देखनिहार नहि छैक

ओ नवयुवतीक मांग
जुआनीमे उजड़ि गेल
ताहि दिनसँ हुनकापर

की बितैत होयत
पति बीमारीसँ मरि गेलखिन

एकरामे गौरी दायक की दोष
दोष तऽ हुनक पिताक छनि
जिनका वरक बीमारीक जानकारी
नहि छल
मुदा ओहो की करताह
घटक बनि कऽ गेल रहथि
द्वितीकार जे बतोलथि
सैह ने सत्य मानितथि

ई गप सच छल
जे गौरी दाय
अपन पिताक गलतीक
सजा भोगि रहल छथि
भाग्यकेँ कोसि रहल छथि

आब की कही
देश-परदेशमे तऽ
वर- कनिया बदलि जाइत अछि
जेना हर छः मास पर
बदलैत छी हम अपन अंगा

मुदा, ई गौरी दाय
बीसेक साल बादो
नहि बदललीह
ओहि दिनसँ
पतिक वियोगमे
दिन-राति घुटैत छथि

कियो कतहुसँ खुशियोमे
हुनका नोत नहि दैत छथि
कियो अपन नवजातकेँ
खेलाबए ले
नहि दैत छथि

की करती गौरी दाय
कियो हुनका देवी कहैत अछि
तऽ डायन-जोगिन कहबासँ
लोक-वेद पाछुओ नहि रहैत
छथि।

समर्पण

(कथक नृत्यांगना पुनीता शर्माक लेल)

जीवनक जीवंतता कि
मनुष्यक मनुष्यता कि
जेहन मोन, जेहन भाव
तहिने होइत समर्पण भाव

नर्तकी जखन राग मालकौस मे
स्टेज पर रोशनीक चकाचौंध मे
अपन संपूर्ण प्रतिभाक प्रदर्शन करैत छथि
देरवू तखन की होइत अछिराग,
की होइत अछि भाव देखू तखैन
कि हैत छथि राग, कि हैत छथि
भाव

लागत जेना हुनकर देह मे
नर्तकीक आत्मा नहि
देवता बैस गेल
जे जेना नचाबि रहल छैक
तहिना नर्तकी नाचैत छथि

कि कि ठाठ
कि करि ओइ चक्करक वर्णन
शब्दो तँ ओतेक नहि अछि
त कोना करी
समर्पण भावक वर्णन

अहां जकर बेटी होएब
अहाँ जकर बहिन होएब
मुदा, अहाँ जकरा सँ
प्रेम करैत होएब
ई सब कतेक खुशनसीब होइत

जे नर्तकी
अपन संपूर्ण अस्तित्व
नृत्य मे झोंइक दैत छथि
हुनकर प्रेम वा पुरुष
वा समर्पन जरूर संपूर्ण होइत.



देवांशु वत्स

मैथिली चित्र-श्रृंखला (कॉमिक्स)

जन्म- तुलापट्टी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनमे एम.ए। हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजरात राज्य शाला पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा आठम कक्षाक लेल विज्ञान कथा "जंग" प्रकाशित (2004 ई.)-सम्पादक
















नताशा
© देवांशु वत्स
एक दिन नताशाक ओहिठाम चोइर भ' गेलै.....
तोहर पापा कहैत रहो जे डेढ लाखक समान चोइर भ' गेले.....
मुदा माय कहैत रहो पौने दू लाखक....... से किया ???
कका, नै बुझलिय, वैह सदमा स' ददा क' हर्ट अटैक भ' गेले.......
...माय हुनकर इलाजो केर खर्चा....
.........जोड़ि दैत छथिन !!!
नताशा
© देवांशु वत्स
आ ऽ ऽ ऽ करू त बुची !
आऽ ऽ ऽ
गै मा...हो बाप
कन' कालक बाद
डाक्टर सेहाब कतेक पाइ भ' गेल ?
visit : www.devanshuvatsa.com
E-mail - devanshuvatsa@gmail.com
दू सौ टका मात्र !
दू सौ ? मुदा बोर्ड पर त' पचासे टका लिखल य'...
हां, मुदा अहॉंक बचियाक बपरहैर सुनि हमर....
....तीन टा पेसैंट परा गेले ?



नवीन नाथ झा (नवनीत)

जन्म २०.०१.१९४०, बी.ए.ऑनर्स सह एल.एल.बी., पिता- श्री बैद्यनाथ झा, गाम- भटोत्तर (चकला), जिला पूर्णिया

दया करू माँ

अहाँक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽ कँ अपनाबू माँ।

अहीँके चरण-कमलमे रमल छी माँ,

दुःखी मन दोसर राह नै, सुझै अछि माँ

चोट बहुत खायल छी माँ, दुनियासँ ठुकराईल माँ

दया करु माँ, दया कऽ कँ अपनावू माँ॥१॥ अहाँ...

माँ अपन आँचरक शीतल, सुरभित,

हवासँ ताप एवम् कष्ट हरु माँ,

परञ्च, मिलल नहि प्रतिदान कनेको,

हर पगपर स्वार्थक लीला,

चलन जगतक निराले माँ

अहाँक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽकँ अपनाबू माँ॥२॥

(जगत) संसार माया जालमे फँसल अछि माँ,

दुनियां आतंकसँ आक्रान्त अछि माँ,

अज्ञानताक-अंधकारसँ भरल अछि माँ

अनुशासनक कमी खलै अछि माँ॥

अहाँक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽकँ अपनाबू माँ...॥३॥

अपन परायाक ज्ञान घटल अछि,

अधर्मक, अकर्मक बाजार गर्म अछि

एहि जगसँ अज्ञानताक-अंधकार दूर करू माँ-

अहींक शरणमे आएल छी माँ, ताप रहहाँ...॥४॥

दुखी जनक दुःख दूर करू माँ

सत्कर्मक भाव जन-जनमे

अविलम्ब आबिकँ अहीं भरू माँ।

अहींक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽकँ अपनावू माँ॥५॥

विश्व कल्याणक भाव सभमे जगा दियो माँ,

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् क ज्ञान सभमे भरि दियो माँ

वसुधैव कुटुम्बक विचार सन्चारित कऽ दियो माँ

अहींक शरणमे आएल छी माँ, दया कऽकँ अपनावू माँ

"अस्तु"

विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (1878-1952)

भजन भैरवी

आब मन हरि चरनन अनुराग।
त्यागि हृदयके विविध वासना दम्भ कपट सब त्याग॥
सुत बनिता परिजन पुरवासी अन्त न आबे काज।
जे पद ध्यान करत सुर नर मुनि तुहुं निशा आब जाग॥
भज रघुपति कृपाल पति तारों पतित हजार
बिनु हरि भजन बृथा जातदिन सपना सम संसार
रामजी सन्त भरोस छारि अब सीता पति लौ लाग॥

॥ राग विहाग ॥

को होत दोसर आन रम बिनु॥ जे प्रभु जाय तारि अहिल्या जे बनि रहत परवान॥ जल बिच जाइ गजेन्द्र उबारो सुनत बात एक कान॥ दौपति चीर बढ़ाई सभा बिच जानत सकल जहान॥ रामजी सीता-पति भज निशदिन जौ सुख चाहत नादान॥

चैत के ठुमरी

चैत पिया नहि आयेल हो रामा चित घबरायेल।।
भवनो न भावे मदन सताबे नैन नीन्द नहि लागल॥
निसिवासर कोइल कित कुहुकत बाग बाग फूल फूलल॥
रामजी वृथा जात ऋतुराजहि जौंन कन्त भरि मिललरामा॥
चित घबरायेल चैत पिया नहि आयल॥

मानक मैथिली

1. नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली आ 2. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

1. नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. **पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार:** पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओलोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोकबेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोटसन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽकऽ पवर्गधरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽकऽ ज्ञधरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

२. **ढ आ ढ़ :** ढ़क उच्चारण ''र् ह''जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ ''र् ह''क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आनठाम खालि ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्दसभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३. **व आ ब :** मैथिलीमे ''व''क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। एहिसभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४. **य आ ज :** कतहु-कतहु ''य''क उच्चारण ''ज''जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएवला शब्दसभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, याबत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५. **ए आ य :** मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।

प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्दसभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारूसहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे ''ए''केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ ''य''क प्रयोगक प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-

कतहु लिखल जाएब सेहो ''ए''क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६. **हि, हु तथा एकार, ओकार :** मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आनहु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७. **ष तथा ख :** मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८. **ध्वनि-लोप :** निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमेसँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (' / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़' गेलाह, क' लेल, उठ' पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।

(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९. **ध्वनि स्थानान्तरण :** कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटिकऽ दोसरठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु(माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्दसभमे ई नियम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

१०. **हलन्त()क प्रयोग :** मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्दसभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषासम्बन्धी नियमअनुसार हलन्तविहीन राखल गेल अछि। मुदा व्याकरणसम्बन्धी प्रयोजनक लेल अत्यावश्यक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि। प्रस्तुत पोथीमे मथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सरल आ समीचीन पक्षसभकेँ समेटिकऽ वर्ण-विन्यास कएल गेल अछि। स्थान आ समयमे बचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनिकी दृष्टिसँ सेहो सरल होबऽवला हिसाबसँ वर्ण-विन्यास मिलाओल गेल अछि। वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषीपर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेबऽ पड़िरहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एकरूपतापर ध्यान देल गेल अछि। तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषतासभ कुण्ठित नहि होइक, ताहूदिस लेखक-मण्डल सचेत अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक कहब छनि जे सरलताक अनुसन्धानमे एहन अवस्था किन्नहु ने आबऽ देबाक चाही जे भाषाक विशेषता छाँहमे पडि जाए। हमसभ हुनक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ चलबाक प्रयास कएलहुँ अछि।

पोथीक वर्णविन्यास कक्षा ९ क पोथीसँ किछु मात्रामे भिन्न अछि। निरन्तर अध्ययन, अनुसन्धान आ विश्लेषणक कारणे ई सुधारात्मक भिन्नता आएल अछि। भविष्यमे आनहु पोथीकेँ परिमार्जित करैत मैथिली पाठ्यपुस्तकक वर्णविन्यासमे पूर्णरूपेण एकरूपता अनबाक हमरासभक प्रयत्न रहत।

कक्षा १० मैथिली लेखन तथा परिमार्जन महेन्द्र मलंगिया/ धीरेन्द्र प्रेमर्षि संयोजन- गणेशप्रसाद भट्टराई

प्रकाशक शिक्षा तथा खेलकूद मन्त्रालय, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र,सानोठिमी, भक्तपुर

सर्वाधिकार पाठ्यक्रम विकास केन्द्र एवं जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र, सानोठिमी, भक्तपुर।

पहिल संस्करण २०५८ बैशाख (२००२ ई.)

योगदान: शिवप्रसाद सत्याल, जगन्नाथ अवा, गोरखबहादुर सिंह, गणेशप्रसाद भट्टराई, डा. रामावतार यादव, डा. राजेन्द्र विमल, डा. रामदयाल राकेश, धर्मेन्द्र विह्वल, रूपा धीरू, नीरज कर्ण, रमेश रञ्जन

भाषा सम्पादन- नीरज कर्ण, रूपा झा

2. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

1. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन

ठाम

जकर, तकर

तनिकर

अछि

अग्राह्य

अखन, अखनि, एखेन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकर, तेकर

तिनकर।(वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)

ऐछ, अहि, ए।

2. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैक्लपिकतया अपनाओल जाय:भ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

3. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

4. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाय जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

5. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत:जैह,सैह,इएह,ओऐह,लैह तथा दैह।

6. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।

7. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाय। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

8. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाय। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

9. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाय वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

10. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:-हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'क' क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

11. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

12. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाय।

13. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाय, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

14. हलंत चिह्न नियमतः लगाओल जाय, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

15. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा क' लिखल जाय, हटा क' नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाय, यथा घर परक।

16. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाय। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रा पर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

17. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाय।

18. समस्त पद सटा क' लिखल जाय, वा हाइफेनसँ जोड़ि क' , हटा क' नहि।

19. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी (ऽ) नहि लगाओल जाय।

20. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाय।

21.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जाय। जा' ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाय। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाय।

ह./- गोविन्द झा ११/८/७६ श्रीकान्त ठाकुर ११/८/७६ सुरेन्द्र झा "सुमन" ११/०८/७६



श्रुति प्रकाशनसँ

1. पंचदेवोपासना-भूमि मिथिला - मौन
2. मैथिली भाषा-साहित्य (20म शताब्दी) - प्रेमशंकर सिंह
3. गुंजन जीक राधा (गद्य-पद्य-मिश्रित) - गंगेश गुंजन
4. बनैत-बिगड़ैत (कथा-गल्प संग्रह) - सुभाषचन्द्र यादव
5. कुरुक्षेत्रम्-अन्तर्मनक, खण्ड-1 सँ 7 (लेखकक छिड़िआयल पद्य, उपन्यास, गल्प-कथा, नाटक-एकाङ्की, बालानां कृते, महाकाव्य, शोध-निबन्ध आदिक समग्र संकलन) - गजेन्द्र ठाकुर
6. विलम्बित कइक युगमे निबद्ध (पद्य-संग्रह) - पंकज पराशर
7. हम पुछैत छी (पद्य-संग्रह) - विनीत उत्पल
8. नो एंट्री : मा प्रविश (चारि कल्लोलक मैथिली नाटक) - उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
9. विभारानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)
10. मैथिली अंग्रेजी शब्दकोश
11. English Maithili Dictionary
12. पञ्जी प्रबंध

(10–12) गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा, पञ्जीकार विद्यानन्द झा

Sole Distributor
AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi - 110002
Tel.: 011-23288341 Mob.: 9968170107